श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी

जैन कोन्फरन्स

स्वर्ण-जयन्ती-ग्रन्थ

स्थापना
सन १९०६
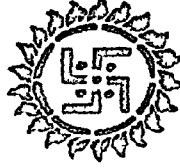
स्वर्ण-जयन्ती
सन १९५६

संपादक

भीखालाल गिरधरलाल शेठ

धीरजलाल के० तुरखिया

प्रकाशक

अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फरन्स

१३९० चाँदनी चौक, दिल्ली

[तेरहवाँ अधिवेशन]

भीनासर-बीकानेर

ता० ४-५-६ अप्रैल ५६

ई० स०
१९५६

वी० सं० २४८२
वि० सं० २०१२

आमुख

श्री अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स के ५० वर्षीय स्वर्ण-जयन्ती अधिवेशन के शुभ-प्रसंग पर कॉन्फरन्स के संक्षिप्त इतिहास-ग्रन्थ को प्रकाशित करते हुए अति हर्ष होता है। इस इतिहास का प्रकाशन का भी एक लघुतम इतिहास है। आज से छ माह पूर्व कॉन्फरन्स का इतिहास प्रकाशित करने का विचार उत्पन्न हुआ था और तभी इस विचार को मूर्त रूप देने का निर्णय भी किया गया। किसी भी इतिहास के आलेखन के लिये तद्रूप लेखन-सामग्री व्यवस्थित सपादन करने की समय-मर्यादा, तथा जैन समुदाय की सक्रिय सहानुभूति होना नितान्त आवश्यक है। किन्तु समयाभाव तथा कार्याधिकता के कारण इस स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ को चाहिए जैसा समृद्ध नही बना सके इसके लिये हमे खेद है। तदपि ग्रन्थ के गौरव को बढाने के लिये यथाशक्य प्रयत्न किया है। हमको ज्ञात है कि इस जयन्ती-ग्रन्थ को चिरस्मरणीय बनाने के लिये इसके अन्तर्गत अनेक विषयो का समावेश करना अत्यावश्यक था किन्तु हमे यथासमय श्रावक-सघों श्रीमन्तों, विद्वानों तथा सस्थाओं के परिचय-पत्र नही मिल सके अत इस ग्रन्थ मे स्थान नहीं दे सके। इसके लिये हम क्षमा-प्रार्थी है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि यह ग्रन्थ स्था० जैन समाज की भावी डिरेक्टरी बनाने मे अवश्यमेव उपयोगी सिद्ध होगा।

यह ग्रन्थ निम्नोक्त नौ परिच्छेदो मे विभक्त किया गया है —

प्रथम-परिच्छेद मे—जैन सस्कृति, धर्म, साहित्य व तत्वज्ञान का सक्षिप्त परिचय

द्वितीय परिच्छेद मे—स्थानकवासी जैनधर्म का सक्षिप्त इतिहास

तृतीय-परिच्छेद मे—स्था० जैन कॉन्फरन्स का सक्षिप्त इतिहास

चतुर्थ-परिच्छेद मे—स्था० जैन कॉन्फरन्स की विशिष्ट प्रवृत्तिया

पचम-परिच्छेद में—स्था० जैन साधु-सम्मेलन का सक्षिप्त इतिहास

षष्ठम-परिच्छेद मे—स्था० जैनधर्म के उन्नायक मुनिराजों का सक्षिप्त परिचय

सप्तम परिच्छेद मे—वर्तमान स्था० साधु-साध्वी नामावली, स्था० जैन धर्म के उन्नायक श्रावकों का सक्षिप्त परिचय

अष्टम-परिच्छेद मे—स्था० जैन शिक्षण सस्थाओं, श्रीसघो, प्रकाशन सस्थाओ तथा पत्र पत्रिकाओं का सक्षिप्त परिचय

सक्षेपत इस जयन्ती ग्रन्थ मे स्था० जैन समाज के चतुर्विध श्रीसघ का सक्षिप्त परिचय देने का यथा-शक्य प्रयत्न किया गया है।

जैन शिक्षण सस्थाओं, प्रकाशन सस्थाओं और पत्र-पत्रिकाओं का इस ग्रन्थ मे नाम-निर्देश के साथ परिचय देने का भरसक प्रयत्न किया है। विलब से मेटर आने के कारण विशेष परिचय दे नहीं सके है इसके लिये क्षमार्थी हैं।

इस ग्रन्थ मे सार और असार का हसवृत्तिवत् विवेक करके सारवस्तु को ग्रहण करने तथा योग्य सूचना भिजवाने की विनम्र प्रार्थना है। ताकि भविष्य मे उसका सदुपयोग किया जा सके।

जिन २ धर्म प्रेमी बन्धुओं ने इस ग्रन्थ के गौरव को वृद्धिंगत करने मे अपने नाम अग्रिम ग्राहकश्रेणी में लिखवाये है तथा लेखन, सशोधन एव प्रकाशनादि कार्यो मे सक्रिय सहकार प्रदान किया है उन सबको हम इस स्थल पर आभार मानते हैं।

दिल्ली

ता० २६-३-१९५६

निवेदक

भीखालाल गिरधरलाल सेठ

धीरजलाल के० तुरखिया

सपादक—स्वर्ण-जयन्ती-ग्रन्थ

प्रथम-परिच्छेद

जैन-संस्कृति, धर्म, साहित्य व तत्त्वज्ञान का संक्षिप्त-परिचय

संस्कृति का स्रोत

संस्कृति का स्रोत ऐसे नदी के प्रवाह के समान है जो अपने प्रभव-स्थान से अन्त तक अनेक दूसरे छोटे-मोटे जल-स्रोतों से मिश्रित, परिवर्धित और परिवर्तित होकर अनेक दूसरे मिश्रणों से भी युक्त होता रहता है और उद्गमस्थान मे पाए जाने वाले रूप, रस, गन्ध तथा स्वाद आदि में कुछ न कुछ परिवर्तन भी प्राप्त करता रहता है। जैन कहलाने वाली सस्कृति भी उस सस्कृति-सामान्य के नियम का अपवाद नहीं है। जिस सस्कृति को आज हम जैन-सस्कृति के नाम से पहचानते हैं उसके सर्वप्रथम आविर्भावक कौन थे और उनसे वह पहिले-पहल किस स्वरूप में उद्‌गत हुई इसका पूरा पूरा सही वर्णन करना इतिहास की सीमा के बाहर है। फिर भी उस पुरातन-प्रवाह का जो और जैसा स्रोत हमारे सामने है तथा वह जिन आधारों के पट पर बहता चला आया है उस स्रोत तथा उन साधनों के ऊपर विचार करते हुए हम जैन-सस्कृति का हृदय थोड़ा बहुत पहिचान पाते हैं।

जैन-सस्कृति के दो रूप

जैन-सस्कृति के भी, दूसरी सस्कृतियों की तरह, दो रूप हैं। एक बाह्य और दूसरा आन्तर। बाह्य रूप वह है जिसे उस सस्कृति के अलावा दूसरे लोग भी आँख, कान आदि बाह्य इन्द्रियों से जान सकते हैं। पर सस्कृति का आन्तर-स्वरूप ऐसा नहीं होता। क्योंकि किसी भी सस्कृति के आन्तर-स्वरूप का साक्षात् आकलन तो सिर्फ उसी को होता है जो उसे अपने जीवन मे तन्मय कर ले। दूसरे लोग उसे जानना चाहें तो साक्षात् दर्शन कर नहीं सकते। पर उस आन्तरसस्कृतिमय जीवन बिताने वाले पुरुष या पुरुषों के जीवन-व्यवहारों से तथा आस-पास के वातावरण पर पड़ने वाले उनके प्रभावों से वे किसी भी आन्तर-रूप का, सस्कृति का अन्दाजा लगा सकते है। सस्कृति का हृदय या उसकी आत्मा इतनी व्यापक और स्वतत्र होती है कि उसे देश, काल, जात-पात, भाषा और रीति-रस्म आदि बाह्य-स्वरूप न तो सीमित कर सकते है और न अपने साथ बांध सकते हैं।

जैन-संस्कृति का हृदय-निवर्त्तक-धर्म

अब प्रश्न यह है कि जैन सस्कृति का हृदय क्या चीज है? उसका संक्षिप्त जवाब तो यही है कि निवर्त्तक धर्म जैन सस्कृति की आत्मा है। जो धर्म निवृत्ति कराने वाला अर्थात् पुनर्जन्म के चक्र का नाश करने वाला हो या उस निवृत्ति के साधनरूप से जिस धर्म का आविर्भाव, विकास और प्रचार हुआ हो वह निवर्त्तक-धर्म कहलाता है। यह निवर्त्तक-धर्म, प्रवर्त्तक-धर्म का बिल्कुल विरोधी है। प्रवर्त्तक-धर्म का उद्देश्य समाज व्यवस्था के

साथ-साथ जन्मान्तर का सुधार करता है, न कि जन्मान्तर का उच्छेद। प्रवर्त्तक-धर्म के अनुसार काम, अर्थ और धर्म, तीन पुरुषार्थ हैं। उसमे मोक्ष नामक चौथे पुरुषार्थ की कोई कल्पना नहीं है। प्रवर्त्तक धर्मानुयायी जिन उच्च और उच्चतर धार्मिक अनुष्ठानों से इस लोक तथा परलोक के उत्कृष्ट सुखों के लिए प्रयत्न करते थे उन धार्मिक अनुष्ठानों को निवर्त्तक-धर्मानुयायी अपने साध्य मोक्ष या निवृत्ति के लिए न केवल अपर्याप्त ही समझते बल्कि वे उन्हें मोक्ष पाने मे बाधक समझ कर उन सब धार्मिक अनुष्ठानों को आत्यन्तिक हेय बतलाते थे। उद्देश्य और दृष्टि में पूर्व-पश्चिम जितना अन्तर होने से प्रवर्त्तक-धर्मानुयायियों के लिए जो उपादेय वही निवर्त्तक-धर्मानुयायियों के लिए हेय बन गया। यद्यपि मोक्ष के लिए प्रवर्त्तक-धर्म बाधक माना गया पर साथ ही मोक्षवादियों को अपने साध्य मोक्ष-पुरुषार्थ के उपादेयरूप से किसी सुनिश्चित मार्ग की खोज करना भी अनिवार्य-रूप से प्राप्त था। इस खोज की सूझ ने उन्हें एक ऐसा उपाय सुझाया जो किसी बाहरी साधन पर निर्भर न था। वह एकमात्र साधक की अपनी विचार शुद्धि और वर्त्तन-शुद्धि पर अवलंबित था। यही विचार और वर्तन की आत्यन्तिक शुद्धि का मार्ग निवर्त्तक धर्म के नाम से या मोक्ष-मार्ग के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

हम भारतीय-संस्कृति के विचित्र और विविध ताने-बाने जांच करते हैं तब हमें स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि भारतीय आत्मवादी दर्शनों मे कर्म-काण्डी मीमांसक के अलावा सभी निवर्त्तक धर्मवादी है। अवैदिक माने जाने वाले बौद्ध और जैन-दर्शन की संस्कृति तो मूल मे निवर्त्तक धर्मस्वरूप है ही पर वैदिक समझे जाने वाले न्याय-वैशेषिक, सांख्य, योग तथा औपनिषद्-दर्शन की आत्मा भी निवर्त्तक-धर्म पर ही प्रतिष्ठित है। वैदिक हो या अवैदिक सभी निवर्त्तक-धर्म, प्रवर्त्तक-धर्म को या यज्ञ-यागादि अनुष्ठानों को अन्त मे हेय ही बतलाते है। और वे सभी सम्यग्ज्ञान या आत्म-ज्ञान को तथा आत्मज्ञानमूलक अनासक्त जीवन-व्यवहार को तथा आत्मज्ञानमूलक अनासक्त जीवन व्यवहार को उपादेय मानते है एव उसी के द्वारा पुनर्जन्म के चक्र से छुट्टी पाना सम्भव बतलाते हैं।

निवर्त्तक-धर्म के मन्तव्य और आचार

शताब्दियों ही नहीं बल्कि सहस्राब्दि पहिले से लेकर जो धीरे-धीरे निवर्त्तक-धर्म के अङ्ग-प्रत्यङ्ग रूप से अनेक मन्तव्यों और आचारों का भ० महावीर-बुद्ध तक के समय मे विकास हो चुका था वे सक्षेप मे ये हैं :—

१ आत्म शुद्धि ही जीवन का मुख्य उद्देश्य है, न कि ऐहिक या पारलौकिक किसी भी पद का महत्त्व।

२ इस उद्देश्य की पूर्ति मे बाधक आध्यात्मिक मोह, अविद्या और तज्जन्य तृष्णा का मूलोच्छेद करना।

३ इसके लिए आध्यात्मिक ज्ञान और उसके द्वारा सारे जीवन व्यवहार को पूर्ण नितृष्ण बनाना। इसके वास्ते शारीरिक, मानसिक, वाचिक, विविध तपस्याओं का तथा नाना प्रकार के ध्यान, योग-मार्ग का अनुसरण और तीन, चार या पाच महाव्रतो का यावज्जीवन अनुष्ठान करना।

४ किसी भी आध्यात्मिक वर्णन वाले वचनों को ही प्रमाणरूप से मानना, न कि ईश्वरीय या अपौरुषेय रूप से स्वीकृत किसी खास भाषा मे रचित ग्रन्थों को।

५. योग्यता और गुरुपद की कसौटी एकमात्र जीवन की आध्यात्मिक शुद्धि, न कि जन्मसिद्ध वर्ण-विशेष। इस दृष्टि से स्त्री और शूद्र तक का धर्माधिकार उतना ही है, जितना एक ब्राह्मण और क्षत्रिय पुरुष का।

६. मद्य, मास आदि का धार्मिक और सामाजिक-जीवन मे निषेध । ये तथा इनके जैसे लक्षण जो प्रवर्त्तक-धर्म के आचारो और विचारो से जुदा पड़ते थे वे देश मे जड जमा चुके थे और दिन-ब-दिन विशेष बल पकड़ते जाते थे।

निर्ग्रंथ जैन-धर्म

न्यूनाधिक उक्त लक्षणों को धारण करने वाली अनेक सस्थाओ और सम्प्रदायों मे एक ऐसा पुराना निवर्त्तक धर्मी सम्प्रदाय था, जो भ० महावीर के पहिले बहुत शताब्दियों से अपने खास ढग से विकास करता जा रहा था। इसी सम्प्रदाय मे पहिले अभिनन्दन ऋषभदेव, यदुनन्दन, नेमिनाथ और काशीराजपुत्र पार्श्वनाथ हो चुके थे, या वे इस सम्प्रदाय मे मान्य पुरुष बन चुके थे। इसी सम्प्रदाय के समय-समय पर अनेक नाम प्रसिद्ध रहे। यति, भिक्षु, मुनि, अणगार, श्रमण आदि जैसे नाम तो इस सम्प्रदाय के लिए व्यवहृत होते थे पर जब दीर्घ-तपस्वी महावीर इस सम्प्रदाय के मुखिया बने तब सभवत' वह सम्प्रदाय 'निर्ग्रन्थ' नाम से विशेष प्रसिद्ध हुई। आज 'जैन' शब्द से महावीर-पोषित सम्प्रदाय के 'त्यागी', 'गृहस्थ' सभी अनुयायिओं का जो बोध होता है इसके लिए पहिले 'निगथ' और 'समणोवासग' आदि 'जैन शब्द व्यवहृत होते थे।

जैन-संस्कृति का प्रभाव

यों तो सिद्धान्ततः सर्वभूतदया को सभी मानते है पर प्राणिरक्षा के ऊपर जितना जोर जैन-परपरा ने दिया, जितनी लगन से उसने इस विषय मे काम किया उसका नतीजा सारे ऐतिहासिक-युग मे यह रहा है कि जहा-जहा और जब-जब जैन लोगों का एक या दूसरे क्षेत्र मे प्रभाव रहा सर्वत्र आम जनता पर प्राणिरक्षा का प्रबल सस्कार पडा है। यहा तक कि भारत के अनेक भागो मे अपने को अजैन कहने वाले तथा जैन विरोधी समझने वाले साधारण लोग भी जीव-मात्र की हिसा से नफरत करने लगे है। अहिंसा के इस सामान्य सस्कार के ही कारण अनेक वैष्णव आदि जैनेतर परम्पराओं के आचार-विचार पुरानी वैदिक-परम्परा से बिल्कुल जुदा हो गए है। तपस्या के बारे मे भी ऐसा ही हुआ है। त्यागी हो या गृहस्थ सभी जैन तपस्या के ऊपर अधिकाधिक झुकते रहे हैं। इसका फल पड़ौसी समाजो पर इतना अधिक पड़ा है कि उन्होने भी एक या दूसरे रूप से अनेकविध सात्विक तपस्याए अपना ली हैं। और सामान्य रूप से साधारण जनता जैनो की तपस्या की ओर आदरशील रही है। यहां तक कि अनेक बार मुसलमान सम्राट् तथा दूसरे समर्थ अधिकारियों ने तपस्या से आकृष्ट होकर जैन-सम्प्रदाय का बहुमान ही नहीं किया हैं बल्कि उसे अनेक सुविधाए भी दी हैं, मद्य-मास आदि सात व्यसनों को रोकने तथा उन्हे घटाने के लिए जैन-धर्म ने इतना अधिक प्रयत्न किया है कि जिससे वह व्यसनसेवी अनेक जातियो मे सु-समर्थ हुआ है। यद्यपि बौद्ध आदि दूसरे सम्प्रदाय पूरे बल से इस सुसस्कार के लिए प्रयत्न करते रहे पर जैनो का प्रयत्न इस दिशा मे आज तक जारी है और जहा जैनो का प्रभाव ठीक-ठीक है वहा इस स्वैर-विहार के स्वतत्र युग मे भी मुसलमान और दूसरे मासभक्षी लोग भी खुल्लम-खुल्ला मद्य-मांस का उपभोग करने मे सकुचाते है। लोकमान्य तिलक ने ठीक ही कहा था कि गुजरात आदि प्रान्तों मे जो प्राणिरक्षा और निर्मांस-भोजन का आग्रह है वह जैन-परम्परा का ही प्रभाव है।

जैन-विचारसरणी का मौलिक सिद्धान्त यह है कि प्रत्येक वस्तु का विचार अधिकाधिक पहलुओ और अधिकाधिक दृष्टिकोणों से करना और विवादास्पद विषय मे बिल्कुल अपने विरोधी-पक्ष के अभिप्राय को भी उतनी

ही सहानुभूति से समझने का प्रयत्न करना जितनी कि सहानुभूति अपने पक्ष की ओर हो। और अन्त में समन्वय पर ही जीवन व्यवहार का फैसला करना। यों तो यह सिद्धान्त सभी विचारकों के जीवन में एक या दूसरे रूप से काम करता ही रहता है। इसके सिवाय प्रजाजीवन न तो व्यवस्थित बन सकता है और न शांति लाभ कर सकता है। पर जैन विचारकों ने उस सिद्धांत की इतनी अधिक चर्चा की है और उस पर इतना अधिक जोर दिया है कि जिससे कट्टर-से-कट्टर विरोधी सम्प्रदायों को भी कुछ-न-कुछ प्रेरणा मिलती ही रही है। रामानुज का विशिष्टाद्वैत, उपनिषद् की भूमिका के ऊपर अनेकान्तवाद ही तो है।

जैन-परम्परा के आदर्श

जैन-सस्कृति के हृदय को समझने के लिए हमें थोडे से उन आदर्शों का परिचय करना होगा जो पहिले से आज तक जैन परम्परा में एक से मान्य हैं और पूजे जाते हैं। सब से पुराना आदर्श जैन-परम्परा के सामने - देव और उनके परिवार का है। भ० ऋषभदेव ने अपने जीवन का बहुत बडा भाग उन जवाबदेहियों को बुद्धि पूर्वक अदा करने मे बिताया जो प्रजापालन की जिम्मेवरी के साथ उन पर आ पडी थी। उन्होंने उस समय के बिल्कुल अपढ़ लोगों को लिखना पढ़ना सिखाया, कुछ काम-धन्धा जानने वाले वनचरों को उन्होंने खेती-बाडी तथा बढ़ई, कुम्हार आदि के जीवनोपयोगी धन्धे सिखाए, आपस में कैसे बरतना, कैसे समाज-नियमों का पालन करना यह सिखाया। जब उनको महसूस हुआ कि अब बडा पुत्र भरत प्रजाशासन की सब जवाबदेहियों को निबाह लेगा तब उसे राज्य-भार सौंप कर गहरे आध्यात्मिक प्रश्नों की छान-बीन के लिए उत्कट तपस्वी होकर घर से निकल पड़े।

ऋषभदेव की दो पुत्रियां ब्राह्मी और सुन्दरी नाम की थीं। उस जमाने मे भाई-बहिन के बीच शादी की प्रथा युगल-युग में प्रचलित थी। सुन्दरी ने इस प्रथा का विरोध करके अपनी सौम्य तपस्या से भाई भरत पर ऐसा प्रभाव डाला कि जिससे भरत ने न केवल सुन्दरी के साथ विवाह करने का विचार ही छोड़ा बल्कि वह उसका भक्त बन गया। ऋग्वेद के यमीसूक्त मे भाई यम ने भगिनी यमी की लग्न-मांग को तपस्या मे परिणत कर दिया और फलत भाई-बहिन के लग्न की युगल-युग में प्रतिष्ठित प्रथा ही नाम-शेष हो गई।

ऋषभ के भरत और बाहुबली नामक पुत्रों में राज्य के निमित्त भयानक युद्ध शुरू हुआ। अन्त मे द्वन्द्व युद्ध का फैसला हुआ। भरत का प्रचण्ड-प्रहार निष्फल गया। जब बाहुबली की बारी आई तो समर्थतर बाहुबली को जान पड़ा कि मेरे मुष्टि-प्रहार से भरत की अवश्य दुर्दशा होगी तब उसने उस भ्रातृविजयाभिमुख क्षण को आत्मविजय में बदल दिया। उसने यह सोचा कि राज्य के निमित्त लडाई मे विजय पाने और वैर, प्रतिवैर तथा कुटुम्ब-कलह के बीज बोने की अपेक्षा सच्ची विजय अहकार और तृष्णा-जय मे ही है। उसने अपने बाहुबल को क्रोध और अभिमान पर ही जमाया और अवैर से वैर के प्रतिकार का जीवन-दृष्टान्त स्थापित किया। फल यह हुआ कि अन्त मे भरत का भी लोभ तथा गर्व खर्व हुआ।

एक समय था जब कि केवल क्षत्रियों मे ही नहीं पर सभी वर्गों में मांस खाने की प्रथा थी। नित्यप्रति के भोजन, सामाजिक-उत्सव, धार्मिक-अनुष्ठान के अवसरों पर पशु-पक्षियों का वध ऐसा ही प्रचलित और प्रतिष्ठित था जैसे आज नारियलों और फलों का चढ़ाना। उस युग मे यदुनन्दन नेमिकुमार ने एक अजीब कदम उठाया। उन्होंने अपनी शादी पर भोजन के वास्ते कत्ल किये जाने वाले निर्दोष पशु-पक्षियों की आर्त्त मूक वाणी से सहसा पिघल कर निश्चय किया कि वे ऐसी शादी न करेंगे जिसमें अनावश्यक और निर्दोष पशु पक्षियों का वध होता

हो। उस गम्भीर निश्चय के साथ वे सबकी सुनी अनसुनी करके बारात से शीघ्र वापिस लौट आए। द्वारका से सीधे गिरनार पर्वत पर जाकर उन्होंने तपस्या की। कौमारवय मे राजपुत्री का त्याग और ध्यान-तपश्चर्या का मार्ग अपना कर उन्होंने उस चिर-प्रचलित पशु-पक्षी-वध की प्रथा पर आत्म-दृष्टान्त से इतना सख्त प्रहार किया कि जिससे गुजरात-भर में और गुजरात के प्रभाव वाले दूसरे प्रान्तों मे भी वह प्रथा नाम-शेष हो गई और जगह-जगह आज तक चली आने वाली पिंजरापोलों की लोकप्रिय सस्थाओं मे परिवर्तित हो गई।

भ० पार्श्वनाथ का जीवन-आदर्श कुछ और ही रहा है। उन्होंने एक बार दुर्वासा जैसे सहजकोपी तापस तथा उनके अनुयायियों की नाराजगी का खतरा उठाकर भी एक जलते सांप को गीली लकड़ी से बचाने का प्रयत्न किया। फल यह हुआ कि आज भी जैन प्रभाव वाले क्षेत्रों मे कोई साप तक को नहीं मारता।

दीर्घ-तपस्वी महावीर ने भी एक बार अपनी अहिंसा वृत्ति की पूरी साधना का ऐसा ही परिचय दिया। जब जगल मे वे ध्यानस्थ खड़े थे, एक प्रचण्ड विषधर ने उन्हे डस लिया, उस समय वे न केवल ध्यान मे अचल ही रहे बल्कि उन्होंने मैत्री-भावना का उस विषधर पर प्रयोग किया जिससे वह 'अहिंसा-प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्याग.।' इस योगसूत्र का जीवित उदाहरण बन गया। अनेक प्रसगो पर यज्ञ-यागादि धार्मिक कार्यो मे होने वाली हिंसा को तो रोकने का भरसक प्रयत्न वे आजन्म करते ही रहे।

ऐसे ही आदर्शों से जैन-सस्कृति उत्प्राणित होती आई है और अनेक कठिनाइयों के बीच भी उसने अपने आदर्शों के हृदय को किसी न किसी तरह सभालने का प्रयत्न किया है, जो भारत के धार्मिक, सामाजिक और राजकीय इतिहास मे जीवित है। जब कभी सुयोग मिला तभी त्यागी तथा राजा, मन्त्री तथा व्यापारी आदि गृहस्थों ने जैन-सस्कृति के अहिंसा, तप और सयम के आदर्शों का अपने ढग मे प्रचार किया।

संस्कृति का उद्देश्य

सस्कृति मात्र का उद्देश्य है मानवता की भलाई की ओर आगे बढ़ना। यह उद्देश्य तभी वह साध सकती है जब वह अपने जनक और पोषक राष्ट्र की भलाई मे योग देने की ओर सदा अग्रसर रहे। किसी भी सस्कृति के बाह्य अङ्ग केवल अभ्युदय के समय ही पनपते हैं और ऐसे ही समय वे आकर्षक लगते हैं। पर संस्कृति के हृदय की बात जुदी है। समय आफत का हो या अभ्युदय का, उसकी अनिवार्य आवश्यकता सदा एक सी बनी रहती है। कोई भी सस्कृति केवल अपने इतिहास और पुरानी यशोगाथाओं के सहारे न जीवित रह सकती है और न प्रतिष्ठा पा सकती है जब तक वह भावी निर्माण मे योग न दे। इस दृष्टान्त से भी जैन-सस्कृति पर विचार करना सगत है। हम ऊपर बतला आए हैं कि यह सस्कृति मूलत प्रवृत्ति, अर्थात् पुनर्जन्म से छुटकारा पाने की दृष्टि से आविर्भूत हुई। इसके आचार-विचार का सारा ढाचा इसी लक्ष्य के अनुकूल बना है। पर हम यह भी देखते हैं कि आखिर मे वह सस्कृति व्यक्ति तक सीमित न रही। उसने एक विशिष्ट समाज का रूप धारण किया।

निवृत्ति और प्रवृत्ति

समाज कोई भी हो वह एक मात्र निवृत्ति की भूल भुलैयों पर न जीवित रह सकता है और न वास्तविक निवृत्ति ही साध सकता है। यदि किसी तरह निवृत्ति को न मानने वाले और सिर्फ प्रवृत्तिचक्र का ही महत्त्व मानने वाले आखिर में उस प्रवृत्ति के तूफान और आंधी मे ही फसकर मर सकते हैं तो यह भी उतना ही सच है कि प्रवृत्ति का आश्रय बिना लिये निवृत्ति हवा का किला ही बन जाता है। ऐतिहासिक और दार्शनिक सत्य यह है कि

प्रवृत्ति और निवृत्ति एक ही मानव-कल्याण के सिक्के के दो पहलू हैं। दोष, गलती, बुराई और अकल्याण से तब तक कोई नहीं बच सकता जब तक वह साथ उसकी एवज मे सद्‌गुणों की पुष्टि और कल्याणमय प्रवृत्ति में बल न लगावे। कोई भी बीमार केवल अपथ्य और कुपथ्य से निवृत्त होकर जीवित नहीं रह सकता। उसे साथ-ही-साथ पथ्य सेवन करना चाहिए। शरीर से दूषित रक्त को निकाल डालना जीवन के लिये अगर जरूरी है तो उतना ही जरूरी उसमे नए रुधिर का सचार करना भी है।

निवृत्तिलक्षी प्रवृत्ति

ऋषभ से लेकर आज तक निवृत्तिगामी कहलाने वाली जैन-सस्कृति भी जो किसी न किसी प्रकार जीवित रही है वह एक मात्र निवृत्ति के बल पर नहीं किन्तु कल्याणकारी प्रवृत्ति के सहारे पर। यदि प्रवर्त्तक-धर्मी ब्राह्मणों ने निवृत्ति मार्ग के सुन्दर तत्त्वों को अपनाकर एक व्यापक कल्याणकारी सस्कृति का ऐसा निर्माण किया है जो गीता मे उज्जीवित होकर आज नये उपयोगी स्वरूप मे गाधीजी के द्वारा पुनः अपना सस्करण कर रही है तो निवृत्तिलक्षी जैन-संस्कृति को भी कल्याणाभिमुख आवश्यक प्रवृत्तियों का सहारा लेकर ही आज की बदली हुई परिस्थिति मे जीना होगा। जैन-सस्कृति मे तत्त्वज्ञान और आचार के जो मूल नियम है और वह जिन आदर्शों को आज तक पू जी मानती आई है उनके आधार पर वह प्रवृत्ति का ऐसा मगलमय योग साध सकती है जो सबके लिए क्षेमकर हो।

श्रमण-परम्परा के प्रवर्तक

श्रमण-धर्म के मूल प्रवर्तक कौन कौन थे, वे कहाँ कहाँ और कब हुए इसका यथार्थ और पूरा इतिहास अद्यावधि अज्ञात है पर हम उपलब्ध साहित्य के आधार से इतना तो नि शक कह सकते हैं कि नाभिपुत्र ऋषभ तथा आदि विद्वान् कपिल ये साम्य धर्म के पुराने और प्रबल समर्थक थे। यही कारण है कि उनका पूरा इतिहास अ धकार ग्रस्त होने पर भी पौराणिक-परपरा में से उनका नाम लुप्त नही हुआ है। ब्राह्मण-पुराण ग्र थों मे ऋषभ का उल्लेख उग्र तपस्वी के रूप मे है सही पर उनकी पूरी प्रतिष्ठा तो केवल जैन परपरा मे ही है, जब कि कपिल का ऋषि रूप से निर्देश जैन कथा-साहित्य मे है फिर भी उनकी पूर्ण प्रतिष्ठा तो साख्य-परपरा मे तथा साख्यमूलक पुराण ग्र थों मे ही है। ऋषभ और कपिल आदि द्वारा जिस आत्मौपम्य भावना की और तन्मूलक अहिंसा-धर्म की प्रतिष्ठा जमी थी उस भावना और उस धर्म की पोषक अनेक शाखा-प्रशाखायें थीं जिनमे से कोई बाह्य तप पर, तो कोई ध्यान पर, तो कोई मात्र चित्तशुद्धि या असगता पर अधिक भार देती थी, पर साम्य या समता सब का समान ध्येय था।

जिस शाखा ने साम्यसिद्धि-मूलक अहिंसा को सिद्ध करने के लिए अपरिग्रह पर अधिक भार दिया और उसी मे से अगार–गृह–ग्र थ या परिग्रहबधन के त्याग पर अधिक भार दिया और कहा कि जब तक परिवार एव परिग्रह का बधन हो तब तक कभी पूर्ण अहिंसा या पूर्ण साम्य सिद्ध हो नहीं सकता, श्रमणधर्म की वही शाखा निर्ग्र न्थ नाम से प्रसिद्ध हुई। इसके प्रधान प्रवर्तक नेमिनाथ तथा पार्श्वनाथ ही जान पड़ते हैं।

वीतरागता का आग्रह

अहिंसा की भावना के साथ साथ तप और त्याग की भावना अनिवार्य रूप से निर्ग्र न्थ धर्म मे ग्रथित तो हो ही गई थी परतु साधकों के मन मे यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि बाह्य तप और बाह्य त्याग पर अधिक भार

देने से क्या आत्मशुद्धि या साम्य पूर्णतया सिद्ध होना सम्भव है? इसी के उत्तर मे से यह विचार फलित हुआ कि राग-द्वेष आदि मलिन वृत्तियों पर विजय पाना ही मुख्य साध्य है। इस साध्य की सिद्धि जिस अहिंसा, जिस तप या जिस त्याग से न हो सके वह अहिंसा, तप या त्याग कैसा ही क्यों न हो पर आध्यात्मिक दृष्टि से अनुपयोगी है। इसी विचार के प्रवर्तक 'जिन', कहलाने लगे। ऐसे जिन अनेक हुए है। सच्चक, बुद्ध, गोशालक और महावीर ये सब अपनी अपनी परम्परा मे जिन रूप से प्रसिद्ध रहे हैं परतु आज जिनकथित जैन धर्म कहने से मुख्यतया महावीर के धर्म का ही बोध होता है जो राग-द्वेष के विजय पर ही मुख्यतया भार देता है। धर्म विकास का इतिहास कहता है कि उत्तरोत्तर उदय मे आने वाली नयी-नयी धर्म की अवस्थाओं मे उस-उस धर्म की पुरानी अविरोधी अवस्थाओं का समावेश अवश्य रहता है। यही कारण है कि जैन धर्म निर्ग्रन्थ-धर्म भी है और श्रमण-धर्म भी है।

श्रमण-धर्म की साम्य दृष्टि

अब हमे देखना यह है कि श्रमण-धर्म की प्राणभूत साम्य-भावना का जैन परपरा मे क्या स्थान है? जैन श्रुत रूप से प्रसिद्ध द्वादशांगी या चतुर्दश पूर्व मे 'सामाइय'—'सामायिक' का स्थान प्रथम है, जो आचारांग सूत्र कहलाता है। जैनधर्म के अतिम तीर्थंकर महावीर के आचार विचार का सीधा और स्पष्ट प्रतिबिम्ब मुख्यतया उसी सूत्र मे देखने को मिलता है। इसमे जो कुछ कहा गया है उस सब मे साम्य, समता या सम पर ही पूर्णतया भार दिया गया है।' 'सामा' इस प्राकृत या मागधी शब्द का सबध साम्य, समता या सम से है। साम्य-दृष्टिमूलक और साम्य-दृष्टि पोषक जो जो आचार विचार हों वे सब सामाइय-सामायिक रूप से जैन परपरा मे स्थान पाते है। जैसे ब्राह्मण-परपरा मे सध्या एक आवश्यक कर्म है वैसे ही जैन-परपरा मे भी गृहस्थ और त्यागी सब के लिए छः आवश्यक कर्म बतलाये है जिनमे मुख्य सामाइय है। अगर सामाइय न हो तो और कोई आवश्यक सार्थक नहीं है। गृहस्थ या त्यागी अपने-अपने अधिकारानुसार जब-जब धार्मिकजीवन को स्वीकार करता है तब तब वह 'करेमि भते! सामाइय' ऐसी प्रतिज्ञा करता है। इसका अर्थ है कि हे भगवन्! मैं समता या समभाव को स्वीकार करता हूँ। इस समता का विशेष स्पष्टीकरण आगे के दूसरे ही पद मे किया गया है। उसमे कहा है कि मैं सावद्ययोग अर्थात् पाप व्यापार का यथाशक्ति त्याग करता हूँ। 'सामाइय' की ऐसी प्रतिष्ठा होने के कारण सातवीं सदी के सुप्रसिद्ध विद्वान जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण ने उस पर विशेषावश्यकभाष्य नामक अति विस्तृत ग्रथ लिख कर बतलाया है कि धर्म के अगभूत श्रद्धा, ज्ञान और चारित्र ये तीनों ही 'सामाइय' हैं।

सच्ची वीरता के विषय में जैन धर्म

साख्य, योग और भागवत जैसी अन्य परपराओ मे पूर्व काल से सम्यदृष्टि की जो प्रतिष्ठा थी उसीका आधार लेकर भगवद्गीताकार ने गीता की रचना की है। यही कारण है कि हम गीता मे स्थान-स्थान पर समदर्शी साम्य, समता जैसे शब्दो के द्वारा साम्यदृष्टि का ही समर्थन पाते है। गीता और आचाराग की साम्य भावना मूल मे एक ही है, फिर भी वह परपरा भेद से अन्यान्य भावनाओ के साथ मिलकर भिन्न हो गई है। अर्जुन को साम्य भावना के प्रबल आवेग के समय भी भैक्ष्य-जीवन स्वीकार करने मे गीता रोकती है और शस्त्रयुद्ध का आदेश करती है, जब कि आचाराग सूत्र अर्जुन को ऐसा आदेश न कर के यही कहेगा कि अगर तुम सचमुच क्षत्रिय वीर हो तो साम्यदृष्टि आने पर हिंसक शस्त्रयुद्ध नहीं कर सकते बल्कि भैक्ष्यजीवन पूर्वक आध्यात्मिक शत्रु के साथ युद्ध के द्वारा ही सच्चा क्षत्रियत्व सिद्ध कर सकते हो। इस कथन की द्योतक भरत-बाहुबली की कथा

जैन साहित्य मे प्रसिद्ध है, जिसमें कहा गया है कि सहोदर भरत के द्वारा-उग्र प्रहार पाने के बाद बाहुबली ने जब प्रतिकार के लिए हाथ उठाया तभी समभाव की वृत्ति के आवेग मे बाहुबली ने भैक्ष्यजीवन स्वीकार किया पर प्रतिप्रहार करके न तो भरत का बदला चुकाया और न उससे अपना न्यायोचित राज्यभाग लेने का सोचा। गांधीजी ने गीता और आचारांग आदि मे प्रतिपादित साम्य भाव को अपने जीवन में यथार्थ रूप से विकसित किया और उसके बल पर कहा कि मानव सहारक युद्ध तो छोड़ो, पर साम्य या चित्तशुद्धि के बल पर ही अन्याय के प्रतिकार का मार्ग भी ग्रहण करो। पुराने सन्यास या त्यागी जीवन का ऐसा अर्थ-विकास गांधीजी ने समाज मे प्रतिष्ठित किया है।

साम्य-दृष्टि और अनेकान्तवाद

जैन-परपरा का साम्य-दृष्टि पर इतना अधिक भार है कि उसने साम्य-दृष्टि को ही ब्राह्मण-परपरा मे लब्धप्रतिष्ठ ब्रह्म कहकर साम्यदृष्टिपोषक सारे आचार विचार को 'ब्रह्मचर्य' 'बम्भचेराई' कहा है, जैसा कि बौद्ध मे परपरा ने मैत्री आदि भावनाओं को ब्रह्मविहार कहा है। इतना ही नहीं पर धम्मपद और शांतिपर्व की तरह जैन ग्रथ में भी समत्व धारण करनेवाले श्रमण को ही ब्राह्मण कहकर श्रमण और ब्राह्मण के बीच का अंतर मिटाने का प्रयत्न किया है।

साम्य-दृष्टि जैन परपरा मे मुख्यतया दो प्रकार से व्यक्त हुई है—(१) आचार मे (२) विचार मे। जैन धर्म का बाह्य अभ्यन्तर, स्थूल-सूक्ष्म सब आचार साम्य-दृष्टि मूलक अहिंसा के केन्द्र के आस-पास ही निर्मित हुआ है। जिस आचार के द्वारा अहिंसा की रक्षा और पुष्टि न होती हो ऐसे किसी भी आचार को जैन-परपरा मान्य नहीं रखती। यद्यपि सब धार्मिक-परपराओं ने अहिंसा-तत्त्व पर न्यूनाधिक भार दिया पर जैन परपरा ने उस तत्त्व पर जितना भार दिया है और उसे जितना व्यापक बनाया है उतना भार और उतनी व्यापकता अन्य धर्म परपरा में देखी नहीं जाती। मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतग और वनस्पति ही नहीं बल्कि पार्थिव जलीय आदि सूक्ष्मातिसूक्ष्म जन्तुओं तक की हिंसा से आत्मौपम्य की भावना द्वारा निवृत्त होने के लिए कहा गया है।

विचार मे साम्य-दृष्टि की भावना पर जो भार दिया गया है उसी मे से अनेकान्त-दृष्टि या विभाज्यवाद का जन्म हुआ है। केवल अपनी दृष्टि या विचारसरणी को ही पूर्ण अन्तिम सत्य मान कर उस पर आग्रह रखना यह साम्य दृष्टि के लिए घातक है। इसलिए कहा गया है कि दूसरों की दृष्टि का भी उतना ही आदर करना जितना अपनी दृष्टि का। यही साम्य दृष्टि अनेकान्तवाद की भूमिका है। इस भूमिका मे से ही भाषाप्रधान स्याद्वाद और विचारप्रधान नयवाद का क्रमश विकास हुआ है। मीमासक और कपिल दर्शन के उपरांत न्याय दर्शन मे भी अनेकान्तवाद का स्थान है। महात्मा बुद्ध का विभाज्यवाद और मध्यममार्ग भी अनेकान्त दृष्टि के ही फल हैं, फिर भी जैन परपरा ने जैसे अहिंसा पर अत्यधिक भार दिया है वैसे ही उसने अनेकान्त दृष्टि पर भी अत्यधिक भार दिया है। इस लिए जैन-परपरा मे आचार या विचार का कोई भी विषय ऐसा नहीं है जिस पर अनेकान्तदृष्टि लागू न की गई हो तो जो अनेकान्त दृष्टि की मर्यादा से बाहर हो। यही कारण है कि अन्यान्य परपराओं के विद्वानों ने अनेकांत-दृष्टि को मानते हुए भी उस पर स्वतत्र साहित्य रचा नहीं है, जब कि जैन परपरा के विद्वानों ने उसके अंगभूत स्याद्वाद, नयवाद आदि के बोधक और समर्थक विपुल स्वतत्र साहित्य का निर्माण किया है।

अहिंसा

हिंसा से निवृत्त होना ही अहिंसा है। यह विचार तब तक पूरा समझ मे आ नहीं सकता जब तक यह न बतलाया जाय कि हिंसा किस की होती है और हिंसा कौन और किस कारण से करता है और उसका परिणाम क्या है। इसी प्रश्न को स्पष्ट समझाने की दृष्टि से मुख्यतया चार विद्यायें जैन परपरामे फलित हुई हैं-(१) आत्मविद्या (२) कर्मविद्या (३) चारित्रविद्या और (४) लोकविद्या। इसी तरह अनेकांत-दृष्टि के द्वारा मुख्यतया श्रुतविद्या और प्रमाणविद्या का निर्माण व पोषण हुआ है। इस प्रकार अहिंसा, अनेकांत और तन्मूलक विद्यायें ही जैन धर्म का प्राण है जिस पर आगे सक्षेप मे विचार किया जाता है।

आत्मविद्या और उत्क्रान्तिवाद

प्रत्येक आत्मा चाहे वह पृथ्वीगत, जलगत, या वनस्पतिगत हो या कीट, पतग, पशु, पक्षी-रूप हो या मानव रूप हो वह सब तात्त्विक दृष्टि से समान है। यही जैन आत्मविद्या का सार है। समानता के इस सैद्धान्तिक विचार को अमल मे लाना उसे यथासभव जीवन व्यवहार के प्रत्येक क्षेत्र मे उतारने के भाव से प्रयत्न करना यही अहिंसा है। आत्मविद्या कहती है कि यदि जीवन-व्यवहार मे साम्य का अनुभव न हो तो आत्म साम्य का सिद्धान्त कोरा वाद मात्र है। समानता के सिद्धान्त को अमली बनाने के लिए ही आचारांग-सूत्र के अध्ययन मे कहा गया है कि जसे तुम अपने दु ख का अनुभव करते हो वैसे ही पर दुःख का अनुभव करो। अर्थात् अन्य के दुःख का आत्मीय दु ख रूप से सवेदन न हो तो अहिंसा सिद्ध होना सभव नहीं।

जसे आत्म समानता के तात्त्विक विचार मे से अहिंसा के आचार का समर्थन किया गया है वैसे ही उसी विचार मे से जैन-परपरा मे यह भी आध्यात्मिक मतव्य फलित हुआ है कि जीवगत शारीरिक, मानसिक आदि वैपम्य कितना ही क्यों न हो पर आगतुक है-कर्ममूलक है, वास्तविक नहीं है। अतएव क्षुद्र अवस्था मे पडा हुआ जीव भी कभी मानवकोटि मे आ सकता है और मानव कोटिगत जीव भी क्षुद्रतम वनस्पति अवस्था मे जा सकता है, इतना ही नहीं बल्कि वनस्पति जीव विकास के द्वारा मनुष्य की तरह कभी सर्वथा बधनमुक्त हो सकता है। ऊ च-नीच गति या योनि का एव सर्वथा मुक्ति का आधार एक मात्र कर्म है। जैसा कर्म, जैसा सस्कार या जैसी वासना वैसी ही आत्मा की अवस्था, पर तात्त्विक रूप से सब आत्माओं का स्वरूप सर्वथा एक-सा है जो नैष्कर्म्य अवस्था मे पूर्ण रूप से प्रकट होता है। यही आत्मसाम्यमूलक उत्क्रान्तिवाद है।

कर्म-विद्या

जब तत्त्वत सब जीवात्मा समान है तो फिर उनमे परस्पर वैपम्य क्यों? तथा एक ही जीवात्मा मे कालभेद से वैपम्य क्यों? इस प्रश्न के उत्तर मे से ही कर्मविद्या का जन्म हुआ है। जैसा कर्म वैसी अवस्था यह जैन मान्यता वैपम्य का स्पष्टीकरण तो कर देती है, पर साथ ही साथ यह भी कहती है कि अच्छा या बुरा कर्म करने एव न करने में जीव ही स्वतत्र है, जैसा वह चाहे वैसा सत् या असत् पुरुषार्थ कर सकता है और वही अपने वर्तमान और भावी का निर्माता है। कर्मवाद कहता है कि वर्तमान का निर्माण भूत के आधार पर और भविष्य का निर्माण वर्तमान के आधार पर होता है। तीनों काल की पारस्परिक सगति कर्मवाद पर ही अवलंबित है। यही पुनर्जन्म के विचार का आधार है।

वस्तुत. अज्ञान और रागद्वेष ही कर्म है। अपने-पराये की वास्तविक प्रतीति न होना अज्ञान या जैन परपरा के अनुसार दर्शन मोह है। इसी को साख्य, बौद्ध आदि अन्य-परपराओं मे अविद्या कहा है। अज्ञान जनित

इष्टानिष्ट की कल्पनाओं के कारण जो-जो वृत्तियां, या जो-जो विकार पैदा होते हैं वही सक्षेप में राग-द्वेष कहे गये हैं। यद्यपि राग द्वेष हिंसा के प्रेरक हैं पर वस्तुतः सब की जड़ अज्ञान-दर्शन मोह या अविद्या ही है, इसलिए हिंसा की असली जड़ अज्ञान ही है। इस विषय मे आत्मवादी सब परम्पराए एकमत हैं।

आध्यात्मिक जीवन की आधार-शिला चारित्र-विद्या

आत्मा और कर्म के स्वरूप को जानने के बाद ही यह जाना जा सकता है कि आध्यात्मिक उत्क्रान्ति मे चारित्र का क्या स्थान है। मोक्षतत्त्वचिंतकों के अनुसार चारित्र का उद्देश्य आत्मा को कर्म से मुक्त करना ही है। चारित्र के द्वारा कर्म से मुक्ति मान लेने पर भी यह प्रश्न रहता ही है कि स्वभाव से शुद्ध ऐसे आत्मा के साथ पहले पहल कर्म का सबध कब और क्यों हुआ या ऐसा सबध किसने किया? इसी तरह यह भी प्रश्न उपस्थित होता है कि स्वभाव से शुद्ध ऐसे आत्मतत्त्व के साथ यदि किसी न किसी तरह से कर्म का सबध हुआ मान लिया जाय तो चारित्र के द्वारा मुक्ति सिद्ध होने के बाद भी फिर कर्म सबध क्यों नहीं होगा? इन दो प्रश्नों का उत्तर आध्यात्मिक सभी चितकों ने लगभग एक सा ही दिया है। सांख्य-योग हो या वेदान्त, न्यायवैशेषिक हो या बौद्ध इन सभी दर्शनो की तरह जैन दर्शन का भी यही मतव्य है कि कर्म और आत्मा का सबध अनादि है क्योंकि उस सबध का आदिक्षण सर्वथा ज्ञानसीमा के बाहर है। सभी ने यह माना है कि आत्मा के साथ कर्म अविद्या या माया का सबध प्रवाह रूप से अनादि है फिर भी व्यक्तिरूप से वह कर्मवासना की उत्पत्ति जीवन मे होती रहती है सर्वथा कर्म छूट जाने पर जो आत्मा का पूर्ण शुद्ध रूप प्रकट होता है उसमे पुन: कर्म या वासना उत्पन्न क्यों नही होती इसका खुलासा तर्कवादी आध्यात्मिक चिंतको ने यों किया है कि आत्मा स्वभावत. शुद्ध पक्षपाती है। शुद्ध के द्वारा चेतना आदि स्वभाविक गुणों का पूर्ण विकास होने के बाद अज्ञान या रागद्वेष जैसे दोष जड से ही उच्छिन्न हो जाते हैं अर्थात वे प्रयत्नपूर्वक शुद्धि को प्राप्त ऐसे आत्मतत्त्व मे अपना स्थान पाने के लिए सर्वथा निर्बल हो जाते हैं।

चारित्र का कार्य जीवनगत वैषम्य के कारणों को दूर करना है, जो जैन परिभाषा मे 'सवर' कहलाता है। वैषम्य के मूल कारण अज्ञान का निवारण आत्मा की सम्यक् प्रतीति से होता है और रागद्वेष जैसे क्लेशों का निवारण माध्यस्थ्य की सिद्धि से। इसलिए आन्तर चारित्र मे दो ही बातें आती हैं। (१) आत्मज्ञान विवेक ख्याति (२) माध्यस्थ्य या रागद्वेष आदि क्लेशों का जय। ध्यान, व्रत, नियम, तप, आदि जो-जो उपाय आन्तर चारित्र के पोषक होते है वे ही बाह्य चारित्र रूप से साधक के लिए उपादेय माने गये हैं।

आध्यात्मिक जीवन की उत्क्रान्ति आन्तर-चारित्र के विकासक्रम पर अवलम्बित है। इस विकासक्रम का गुणस्थान रूप से जैन परपरा में अत्यत विशद और विस्तृत वर्णन है। आध्यात्मिक उत्क्रान्ति-क्रम के जिज्ञासुओं के लिए योगशास्त्रप्रसिद्ध मधुमती आदि भूमिकाओं का बौद्धशास्त्र-प्रसिद्ध सोतापन्न आदि भूमिकाओं का, योगवाशिष्ठप्रसिद्ध अज्ञान और ज्ञान भूमिकाओं का, आजीवक परपरा प्रसिद्ध मदभूमि आदि भूमिकाओं का और जैन परपरा प्रसिद्ध गुणस्थानो का तथा योगदृष्टियों का तुलनात्मक अध्ययन बहुत रसप्रद एव उपयोगी है, जिसका वर्णन यहाँ सभव नहीं। जिज्ञासु अन्यत्र प्रसिद्ध लेखों से जान सकता है।

मैं यहाँ उन चौदह गुणस्थानों का वर्णन न करके सक्षेप मे तीन भूमिकाओं का ही परिचय दिये देता हूं, जिनमे गुणस्थानो का समावेश हो जाता है। पहिली भूमिका है बहिरात्म, जिसमे आत्मज्ञान या विवेक-ख्याति का उदय ही नहीं होता। दूसरी भूमिका अन्तरात्म है जिसमे आत्मज्ञान का उदय होता है पर रागद्वेष

आदि क्लेश मंद होकर भी अपना प्रभाव दिखलाते रहते है। तीसरी भूमिका है परमात्म। इसमे रागद्वेश का पूर्ण उच्छेद होकर वीतरागत्व प्रकट होता है।

लोक-विद्या

लोकविद्या में लोक के स्वरूप का वर्णन है। जीव—चेतन और अजीव—अचेतन या जड़ इन दो तत्त्वों का सहचार ही लोक है। चेतन-अचेतन दोनों तत्त्व न तो किसी के द्वारा कभी पैदा हुए है और न कभी नाश पाते हैं फिर भी स्वभाव से परिणामान्तर पाते रहते हैं। ससार काल मे चेतन के ऊपर अधिक प्रभाव डालने वाला द्रव्य एकमात्र जड़-परमाणुपुंज-पुद्गल है, जो नानारूप से चेतन के सबध मे आता है और उसकी शक्तियों को मर्यादित भी करता है। चेतन-तत्त्व की साहजिक और मौलिक शक्तिया ऐसी हैं जो योग्य दिशा पाकर कभी न कभी उन जड़ द्रव्यों के प्रभाव से उसे मुक्त भी कर देती है। जड़ और चेतन के पारस्परिक प्रभाव का क्षेत्र ही लोक है और उस प्रभाव से छुटकारा पाना ही लोकान्त है। जैन-परम्परा की लोकक्षेत्र विषयक कल्पना साख्ययोग, पुराण और बौद्ध आदि परम्पराओ की कल्पना से अनेक अशों मे मिलती जुलती है।

जैन-परम्परा न्यायवैशेषिक की तरह परमाणुवादी है, सांख्ययोग की तरह प्रकृतिवादी नहीं है तथापि जैन-परम्परा समत परमाणु का स्वरूप साख्य-परम्परा-समत प्रकृति के स्वरूप के साथ जैसा मिलता है वैसा न्यायवैशेषिक-समत परमाणु स्वरूप के साथ नही मिलता, क्योंकि जैन समत परमाणु साख्य समत प्रकृति की तरह परिणामी है, न्यायवैशेपिक समत परमाणु की तरह कूटस्थ नही है। इसी लिये जैन एक ही साख्य समत प्रकृति पृथ्वी, जल, तेज, वायु आदि अनेक भौतिक सृष्टियों का उपादान बनती है वैसे ही जैन समत एक ही परमाणु पृथ्वी, जल, तेज आदि नानारूप मे परिणत होता है। जैन परम्परा न्यायवैशेषिक की तरह यह नही मानती कि पार्थिव, जलीय आदि भौतिक परमाणु मूल से ही सदा भिन्न जातीय है। इसके सिवाय और भी एक अन्तर ध्यान देने योग्य है। वह यह कि जैन समत परमाणु वैशेषिक समत परमाणु की अपेक्षा इतना अधिक सूक्ष्म है कि अन्त मे वह साख्य समत प्रकृति जैसा ही अव्यक्त बन जाता है। जैन परम्परा का अनन्त परमाणुवाद प्राचीन साख्य समत पुरुष बहुत्वानुरूप प्रकृतिबहुत्ववाद से दूर नही है।

जैनमत और ईश्वर

जैन-परपरा सांख्योग मीमासक आदि परपराओं की तरह लोक को प्रवाह रूपसे अनादि और अनत ही मानती है। वह पौराणिक या वैशेषिक-मत की तरह उसका सृष्टि-संहार नहीं मानती। अतएव जैन परपरा में कर्ता संहर्ता रूप से ईश्वर जैसे स्वतत्र व्यक्ति का कोई स्थान ही नही है। जैन सिद्धान्त कहता है कि प्रत्येक जीव अपनी-अपनी सृष्टि का आप ही कर्ता है। उसके अनुसार तात्त्विक दृष्टि से प्रत्येक जीव मे ईश्वरभाव है जो मुक्ति के समय प्रकट होता है। जिसका ईश्वर-भाव प्रकट हुआ है वही साधारण लोगों के लिए उपास्य बनता है। योगशास्त्र समत ईश्वर भी मात्र उपास्य है। कर्ता-संहर्ता नहीं, पर जैन और योगशास्त्र की कल्पना मे अन्तर है। वह यह कि योगशास्त्र-समत सदा मुक्त होने के कारण अन्य पुरुषो से भिन्न कोटि का है, जबकि जैनशास्त्र समत ईश्वर वैसा नहीं है। जैनशास्त्र कहता है कि प्रयत्नसाध्य होने के कारण हर कोई योग्य-साधन ईश्वरत्व लाभ करता है और सभी मुक्त समानभाव से ईश्वररूप से उपास्य हैं।

श्रुत विद्या और प्रमाण विद्या

पुराने और अपने समय तक मे ज्ञात ऐसे अन्य विचारकों के विचारों का तथा अपने स्वानुभवमूलक अपने विचारों का सत्यलक्षी सग्रह ही श्रुतविद्या है। श्रुतविद्या का ध्येय यह है कि सत्यस्पर्शी किसी भी विचार या विचारसरणी की अवगणना या उपेक्षा न हो। इसी कारण से जैन परम्परा की श्रुतविद्या नव नव विद्याओं के विकास के साथ विकसित होती रही है। यही कारण है कि श्रुतविद्या मे सग्रह नयरूप से जहां प्रथम सांख्य-समत सदद्वैत लिया गया वहीं ब्रह्माद्वैत के विचार-विकास के बाद सग्रहनय रूप से ब्रह्माद्वैत-विचार ने भी स्थान प्राप्त किया है। इसी तरह जहां ऋजुसूत्र नयरूप से प्राचीन बौद्ध क्षणिकवाद सग्रहीत हुआ है वहीं आगे के महायानी विकास के बाद ऋजुसूत्र नयरूप से वैभाषिक, सौत्रान्तिक, विज्ञानवाद और शून्यवाद इन चारों प्रसिद्ध बौद्ध-शाखाओं का सग्रह हुआ है।

अनेकान्त-दृष्टि का कार्यप्रदेश इतना अधिक व्यापक है कि इसमे मानव-जीवन की हितावह ऐसी सभी लौकिक-लोकोत्तर विद्यायें अपना अपना योग्य स्थान प्राप्त कर लेती हैं। यही कारण है कि जैन श्रुतविद्या मे लोकोत्तर विद्याओं के अलावा लौकिक विद्याओं ने भी स्थान प्राप्त किया है।

प्रमाणविद्या मे प्रत्यक्ष, अनुमिति आदि ज्ञान के सब प्रकारों, का उनके साधनों का तथा उनके बलाबल का विस्तृत विवरण आता है। इसमे भी अनेकान्त-दृष्टि का ऐसा उपयोग किया गया है कि जिससे किसी भी तत्त्वचिंतक के यथार्थ विचार की अवगणना या उपेक्षा नहीं होती, प्रत्युत ज्ञान और उसके साधन से सबध रखने वाले सभी ज्ञान-विचारों का यथावत् विनियोग किया गया है।

यहां तक का वर्णन जैन परपरा के प्राणभूत अहिंसा और अनेकान्त से सबध रखता है। जैसे शरीर के बिना प्राण की स्थिति असभव है वैसे ही धर्म-शरीर के सिवाय धर्मप्राण की स्थिति भी असभव है। जैन परपरा का धर्म-शरीर भ घ-रचना, साहित्य, तीथ, मन्दिर आदि धर्मस्थान, शिल्पस्थापत्य, उपासनविधि, प्रथसग्राहक भांडार आदि अनेक रूप विद्यमान हैं। यद्यपि भारतीय-सस्कृति विरासत के अविकल अध्ययन की दृष्टि से जैनधर्म के ऊपर सूचित अगों का तात्त्विक एव ऐतिहासिक वर्णन आवश्यक एवं रसप्रद भी है।

जैनागम

बारह अंग:—अब यह देखा जाय कि जैनों के द्वारा कौन-कौन से ग्रन्थ वर्तमान में व्यवहार मे आगमरूप से माने गये हैं ?

जैनों के तीनों सम्प्रदायों मे इस विषय मे तो विवाद है ही नहीं कि सकल श्रुत का मूलाधार गणधर ग्रथित द्वादशाग है। तीनो सम्प्रदाय में बारह अगों के नाम से विषय मे भी प्राय: ऐकमत्य है। वे बारह अग ये हैं —

(१) आचार, (२) सूत्रकृत, (३) स्थान, (४) समवाय, (५) व्याख्याप्रज्ञप्ति, (६) ज्ञातृधर्मकथा, (७) उपासकदशा, (८) अतकृद्दशा, (९) अनुत्तरौपपातिकदशा, (१०) प्रश्नव्याकरण, (११) विपाकसूत्र, (१२) दृष्टिवाद।

तीनों सम्प्रदाय के मत से अन्तिम अग दृष्टिवाद का सर्वप्रथम लोप हो गया है।

स्थानकवासी के आगम-ग्रन्थ

श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय के मत से दृष्टिवाद को छोड कर सभी अग सुरक्षित हैं। अगबाह्य के विषय मे स्था० सप्रदाय का मत है कि सिर्फ निम्नलिखित ग्रन्थ ही सुरक्षित हैं।

अ गबाह्य मे १२ उपांग, ४ छेद, ४ मूल और १ आवश्यक इस प्रकार सिर्फ २१ ग्रंथ का समावेश है, वह इस प्रकार से है:—

बारह उपांग—(१) औपपातिक (२) राजप्रश्नीय (३) जीवाभिगम (४) प्रज्ञापना (५) सूर्यप्रज्ञप्ति (६) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति (७) चन्द्रप्रज्ञप्ति (८) निरयावली (९) कल्पवतसिका (१०) पुष्पिका (११) पुष्पचूलिका (१२) वृष्णिदशा।

शास्त्रोद्धार मीमांसा मे (पृ० ४१) आ० अमोलखऋषिजी म०ने लिखा है कि चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति ये दोनों ज्ञाताधर्म के उपाग है। इस अपवाद को ध्यान मे रख कर क्रमशः आचारांग का औपपातिक इत्यादि क्रम से अंगों के साथ उपांगों की योजना कर लेना चाहिए।

४ छेद—१ व्यवहार २ बृहत्कल्प ३ निशीथ ४ दशा-श्रुतस्कन्ध।

४ मूल—१ दशवैकालिक २ उत्तराध्ययन ३ नन्दी ४ अनुयोग और १ आवश्यक इस प्रकार सब मिलकर २१ अग बाह्यग्रथ वर्तमान मे है।

२१ अंगबाह्य ग्रन्थों को जिस रूप मे स्थानकवासियों ने माना है, श्वेताम्बर मूर्तिपूजक उन्हें उसी रूप मे मानते है। इसके अलावा कई ऐसे ग्रथों का भी अस्तित्व स्वीकार किया है जिन्हें स्थानकवासी प्रमाणभूत नहीं मानते या लुप्त मानते है।

स्थानकवासी के समान उसी सम्प्रदाय का एक उपसम्प्रदाय तेरहपथ को भी ११ अग और २१ अगबाह्य ग्रथों का ही अस्तित्व और प्रामाण्य स्वीकृत है, अन्य ग्रथों का नहीं।

यद्यपि वर्तमान मे कुछ स्थानकवासी विद्वानों की, आगम के इतिहास की दृष्टि जाने मे तथा आगमों की निर्युक्ति जैसी प्राचीन टीकाओं के अभ्यास से, वे यह स्वीकार करने लगे है कि दशवैकालिक आदि शास्त्रों के प्रणेता गणधर नहीं किन्तु शय्यभव आदि स्थविर है तथापि जिन लोगो का आगम के टीका-टिप्पणियों पर कोई विश्वास नहीं तथा जिन्हें सस्कृत टीका ग्रन्थों के अभ्यास के प्रति ध्यान नहीं है उन का यही विश्वास प्रतीत होता है कि अग और अगबाह्य दोनो प्रकार के आगम के कर्त्ता गणधर ही थे, अन्य स्थविर नहीं।

आगमों का विषय

जैनागमों मे से कुछ तो ऐसे है जो जैन आचार से सम्बन्ध रखते है जैसे आचाराग, दशवैकालिक आदि। कुछ उपदेशात्मक है जैसे उत्तराध्ययन, आदि। कुछ तत्कालीन भूगोल और खगोल आदि सम्बन्धी मान्यताओं का वर्णन करते हैं जैसे जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, सूर्य प्रज्ञप्ति आदि। छेदसूत्रों का प्रधान विषय जैन साधुओ के आचार सम्बन्धी औत्सर्गिक और आपवादिक नियमो का वर्णन व प्रायश्चित्तो का विधान करता है। कुछ ग्रन्थ ऐसे हैं जिनमे जिनमार्ग के अनुयायियोंका चरित्र दिया गया है जैसे उपासकदशाग, अनुत्तरोपपातिक दशा आदि। कुछ मे कल्पित कथाए देकर उपदेश दिया गया है जैसे ज्ञातृधर्म कथा आदि। विपाक मे शुभ और अशुभ-कर्म का विपाक कथाओं द्वारा बताया गया है। भगवती सूत्रमे भगवान महावीर के साथ हुए सवादो का सग्रह है। बौद्धसुत्तपिटक की तरह नाना विषयके प्रश्नोत्तर भगवती मे सगृहीत है।

दर्शनके साथ सम्बन्ध रखने वालों मे खासकर सूत्रकृत, प्रज्ञापना, राजप्रश्नीय, भगवती, नन्दी, स्थानांग, समवाय और अनुयोग सूत्र मुख्य हैं।

सूत्रकृत मे तत्कालीन मन्तव्योका निराकरण करके स्वमत की प्ररूपणा की गई है। भूतवादियों का निराकरण करके आत्माका पृथक अस्तित्व बतलाया है। ब्रह्मवाद के स्थान मे नानात्मवाद स्थिर किया है। जीवन और शरीरको पृथक बताया है। कर्म है। और उसके फलकी सत्ता स्थिर की है। जगदुत्पत्ति के विषय मे नानावादों का निराकरण करके विश्वको किसी ईश्वर या ऐसे ही किसी व्यक्ति ने नहीं बनाया, वह तो अनादि अनन्त हैं, इस बात की स्थापना की गई है। तत्कालीन विनयवाद, अक्रियावाद और अज्ञानवाद का निराकरण करके सुसस्कृत क्रियावाद की स्थापना की गई है।

प्रज्ञापनामे जीवके विविध भावों को लेकर विस्तार से विचार किया गया है।

राजप्रश्नीय मे पार्श्वनाथ की परम्परा मे हुए केशीश्रमण ने श्रावस्ती के राजा पएसी के प्रश्नों के उत्तर मे नास्तिकवाद का निराकरण करके आत्मा और तत्सम्बन्धी अनेक बातों को दृष्टान्त और युक्ति पूर्वक समझाया है

भगवतीसूत्र के अनेक प्रश्नोत्तरों मे नय, प्रमाण आदि अनेक दार्शनिक विचार बिखरे पड़े हैं।

नन्दीसूत्र जैन दृष्टि से ज्ञान के स्वरूप और भेदोंका विश्लेपण करनेवाली एक सुन्दर कृति है।

स्थानांग और समवायांग की रचना बौद्धों के अगुत्तरनिकाय के ढग की है। इन दोनों मे भी आत्मा, पुद्गल, ज्ञान, नय और प्रमाण आदि विषयों की चर्चा की गई है। भगवान् महावीर के शासन मे हुए निन्हवों का वर्णन स्थानांग मे है। ऐसे सात व्यक्ति बताए गये हैं जिन्होंने कालक्रम से भगवान् महावीर के सिद्धातों की भिन्न भिन्न बात को लेकर अपना मतभेद प्रगट किया है। वे ही निन्हव कहे गये है।

अनुयोग मे शब्दार्थ करने की प्रक्रिया का वर्णन मुख्य है किन्तु प्रसङ्ग से उसमें प्रमाण और नय का तथा तत्त्वों का निरूपण भी अच्छे ढग से हुआ है।

जैन तत्त्वज्ञान का मूल तत्त्व—अनेकान्त

जैनधर्म का मूल

कोई भी विशिष्ट दर्शन हो या धर्म पन्थ, उसकी आधारभूत—उसके मूल प्रवर्तक पुरुष की—एक खास दृष्टि होती हैं, जैसे कि—शकराचार्य की अपने मतनिरूपण मे 'अद्वैतदृष्टि' और महात्मा बुद्ध की अपने धर्म-पन्थ प्रवर्तन मे 'मध्यम प्रतिपदा दृष्टि' खास दृष्टि है। जैनदर्शन भारतीय दर्शनों मे एक विशिष्ट दर्शन है और साथ ही एक विशिष्ट धर्म—पन्थ भी है, इसलिए उसके प्रवर्तक और प्रचारक मुख्य पुरुषों की एक खास दृष्टि उसके मूल मे होनी ही चाहिए और वह है भी। यही दृष्टि अनेकान्तवाद है। तात्त्विक जैन विचारणा अथवा आचार व्यवहार कुछ भी हो वह सब अनेकान्त-दृष्टि के आधार पर किया जाता है और उसी के आधार पर सारी विचार धारा फैलती है। अथवा यों कहिये कि अनेक प्रकार के विचारों तथा आचारों मे से जैन विचार और जैनाचार क्या है ? कैसे हो सकते हैं ? इन्हें निश्चित करने वा कसने की एक मात्र कसौटी भी अनेकान्त दृष्टि ही है।

अनेकान्त का विकास और उस का श्रेय

जैन-दर्शन का आधुनिक मूल-रूप भगवान महावीर की तपस्या का फल है। इसलिए सामान्य रूप से यही समझा जा सकता है कि जैन-दर्शन की आधार भूत अनेकान्त-दृष्टि भी भगवान महावीर के द्वारा ही पहले पहल स्थिर की गई या उद्भावित की गई होगी। परन्तु विचार के विकास क्रम और पुरातन इतिहास के चिंतन करने से साफ मालूम पड़ जाता है कि अनेकान्त दृष्टि का मूल भगवान महावीर से भी पुराना है। यह ठीक है कि जैन साहित्य मे अनेकान्त दृष्टि का जो स्वरूप आजकल व्यवस्थित रूप से और विकसित रूप से मिलता है वह स्वरूप भगवान महावीर के पूर्ववर्ती किसी जैन या जैनेतर साहित्य मे और उसके समकालीन बौद्ध साहित्य मे अनेकान्त दृष्टि-गर्भित बिखरे हुए विचार थोड़े बहुत मिल ही जाते है। इसके सिवाय भगवान महावीर के पूर्ववर्ती भगवान पार्श्वनाथ हुए हैं जिनका विचार आज यद्यपि उन्ही के शब्दों मे--असल रूप में नहीं पाया जाता फिर भी उन्होंने अनेकान्त दृष्टि का स्वरूप स्थिर करने मे अथवा उसके विकास मे कुछ न कुछ भाग जरूर लिया है, ऐसा पाया जाता है। यह सब होते हुए भी उपलब्ध-साहित्य का इतिहास स्पष्टरूप से यही कहता है कि २५०० वर्ष के भारतीय साहित्य मे जो अनेकान्त-दृष्टि का थोड़ा बहुत असर है या खास तौर से जैनवाङ्मय मे अनेकान्त दृष्टि का उत्थान होकर क्रमश विकास होता गया है और जिसे दूसरे समकालीन दार्शनिक विद्वानों ने अपने-अपने ग्रन्थों मे किसी न किसी रूप मे अपनाया है उसका मुख्य श्रेय तो भगवान महावीर को ही है, क्योंकि जब हम आज देखते है तो उपलब्ध जैन-प्राचीन ग्रथों मे अनेकान्त दृष्टि की विचार धारा जिस स्पष्ट रूप में पाते हैं उस स्पष्ट रूप मे उसे और किसी प्राचीन ग्रन्थ मे नही पाते।

जैन विचारकों ने जितना जोर और जितना पुरुषार्थ अनेक दृष्टि के निरूपण में लगाया है, उसका शतांश भी किसी दर्शन के विद्वानों ने नही लगाया। यही कारण है कि आज जब कोई 'अनेकान्तवाद' या 'स्याद्वाद' का उच्चारण करता है तब सुनने वाला विद्वान् उससे सहसा जैन दर्शन भाव ग्रहण करता है। आजकल के बड़े-बड़े विद्वान् तक भी समझते हैं कि 'स्याद्वाद' यह तो जैनों का ही एक वाद है। इस समझ का कारण है कि जैन विद्वानो ने स्याद्वाद के निरूपण और समर्थन मे बहुत बड़े बड़े ग्रन्थ लिख डाले है, अनेक युक्तियों का आविर्भाव किया है और अनेकान्तवाद के शस्त्र के बल से ही उन्होने दूसरे दार्शनिक विद्वानों के साथ कुश्ती की है।

इस चर्चा से दो बातें स्पष्ट हो जाती है--एक तो यह कि भगवान महावीर ने अपने उपदेशो मे अनेकान्तवाद का जैसा स्पष्ट आश्रय लिया है। वैसा उनके समकालीन और पूर्ववर्ती दर्शन प्रवर्तको मे से किसी ने भी नहीं लिया है। दूसरी बात यह कि भगवान महावीर के अनुयायी जैन आचार्यो ने अनेकान्त दृष्टि के निरूपण और समर्थन करने मे जितनी शक्ति लगाई है उतनी और किसी भी दर्शन के अनुगामी आचार्यो ने नहीं लगाई।

अनेकांत दृष्टि के मूल तत्त्व

करते हैं या शंकराचार्य उपनिषदों के आधार पर जिस ढंग से सत्य का प्रकाशन करते हैं उससे भ० महावीर की सत्य प्रकाशन की शैली जुदा है। भ० महावीर की सत्य प्रकाशन शैली का ही दूसरा नाम 'अनेकान्तवाद' है। उसके मूल मे दो तत्त्व है—पूर्णता और यथार्थता। जो पूर्ण है और पूर्ण होकर भी यथार्थ रूप से प्रतीत होता है वही सत्य कहलाता है।

अनेकान्त की खोज का उद्देश्य और उसके प्रकाशन की शर्तें

वस्तु का पूर्ण रूप मे त्रिकालाबाधित—यथार्थ दर्शन होना कठिन है, किसी को वह हो भी जाय तथापि उसका उसी रूप मे शब्दों के द्वारा ठीक-ठीक कथन करना उस सत्यद्रष्टा और सत्यवादी के लिए भी बड़ा कठिन है। कोई उस कठिन काम को किसी अंश मे करने वाले निकल भी जाए तो भी देश, काल, परिस्थिति, भाषा और शैली आदि के अनिवार्य भेद के कारण उन सब के कथन में कुछ न कुछ विरोध या भेद का दिखाई देना अनिवार्य है। यह तो हुई उन पूर्णदर्शी और सत्यवादी इनेगिने मनुष्यों की बात, जिन्हें हम सिर्फ कल्पना या अनुमान से समझ या मान सकते है। हमारा अनुभव तो साधारण मनुष्यों तक परिमित है और वह कहता है कि साधारण मनुष्यों मे भी बहुत से यथार्थवादी होकर भी अपूर्ण दर्शी होते है। ऐसी स्थिति मे यथार्थवादिता होने पर भी अपूर्ण दर्शन के कारण और उसे प्रकाशित करने की अपूर्ण सामग्री के कारण सत्यप्रिय मनुष्यों की भी समझ मे कभी-कभी भेद आ जाता है और संस्कार भेद उनमे और भी पारस्परिक टक्कर पैदा कर देता है। इस तरह पूर्णदर्शी और अपूर्णदर्शी सभी सत्यवादियों के द्वारा अन्त मे भेद और विरोध की सामग्री आप ही आप प्रस्तुत हो जाती है या दूसरे लोग उनसे ऐसी सामग्री पैदा कर लेते है।

ऐसी वस्तुस्थिति देख कर भ० महावीर ने सोचा कि ऐसा कौन सा रास्ता निकाला जाय जिससे वस्तु का पूर्ण या अपूर्ण सत्यदर्शन करने वाले के साथ अन्याय न हो। अपूर्ण और अपने से विरोधी होकर भी यदि दूसरे का दर्शन सत्य है, इसी तरह अपूर्ण और दूसरे से विरोधी होकर भी यदि अपना दर्शन सत्य है तो दोनो को ही न्याय मिले, इसका भी क्या उपाय है? इसी चिंतनप्रधान तपस्या ने भगवान को अनेकान्तदृष्टि सुझाई, उनका सत्य संशोधन का संकल्प सिद्ध हुआ। उन्होंने उस मिली हुई अनेकान्तदृष्टि की चाबी से वैयक्तिक और सामष्टिक जीवन की व्यावहारिक और पारमार्थिक समस्याओं के ताले खोल दिये और समाधान प्राप्त किया। तब उन्होंने जीवनोपयोगी विचार और आचार का निर्माण करते समय उस अनेकान्त दृष्टि को निम्नलिखित मुख्य शर्तों पर प्रकाशित किया और उसके अनुसरण का अपने जीवन द्वारा उन्हीं शर्तों पर उपदेश दिया। वे शर्तें इस प्रकार हैं —

१—राग और द्वेषजन्य संस्कारों के वशीभूत न होना अर्थात् तेजस्वी मध्यस्थ भाव रखना।

२—जब तक मध्यस्थ भाव का पूर्ण विकास न हो तब तक उस लक्ष्य की ओर ध्यान रखकर केवल सत्य की जिज्ञासा रखना।

३—कैसे भी विरोधी भासमान पक्ष से न घबराना और अपने पक्ष की तरह उस पक्ष पर भी आदरपूर्वक विचार करना तथा अपने पक्ष पर भी विरोधी पक्ष की तरह तीव्र समालोचक दृष्टि रखना।

४—अपने तथा दूसरों के अनुभवों में से जो-जो अंश ठीक जचें, चाहे वे विरोधी ही प्रतीत क्यों न हों—उन सबका विवेक—प्रज्ञा से समन्वय करने की उदारता का अभ्यास करना और अनुभव बढ़ने पर पूर्व के समन्वय में जहां गलती मालूम हो वहां मिथ्याभिमान छोड़ कर सुधार करना और इसी क्रम से आगे बढ़ना।

अनेकान्त साहित्य का विकास

भगवान महावीर ने अनेकान्त दृष्टि को पहिले अपने जीवन में उतारा था और उसके बाद ही दूसरों को इसका उपदेश दिया था इसलिए अनेकान्त दृष्टि की स्थापना और प्रचार के निमित्त उनके पास काफी अनुभव बल और तप बल था। अतएव उनके मूल उपदेश में से जो कुछ प्राचीन अवशेष आजकल पाये जाते हैं उन आगमग्रन्थों में हम अनेकान्त दृष्टि को स्पष्टरूप से पाते हैं सही, पर उसमें तर्कवाद या खण्डनमण्डन का वह जटिल जाल नहीं पाते जो कि पिछले साहित्य में देखने में आता है। हमें उन आगम ग्रन्थों में अनेकान्त दृष्टि का सरलस्वरूप और संक्षिप्त विभाग ही नजर आता है। परन्तु भगवान के बाद जब उनकी दृष्टि पर सम्प्रदाय कायम हुआ और उसका अनुगामी समाज स्थिर हुआ तथा बढ़ने लगा, तब चारों ओर प्रज्ञा होने पर हमले होने लगे। महावीर के अनुगामी आचार्यों में त्याग और प्रज्ञा होने पर भी, महावीर जैसा स्पष्ट जीवन का अनुभव और तप न था। इसलिए उन्होंने उन हमलों से बचने के लिए नैयायिक गौतम और वात्स्यायन के कथन की तरह कथावाद के उपरान्त जल्प और कहीं कहीं वितण्डा का भी आश्रय लिया है। अनेकान्त दृष्टि का जो तत्त्व उनको विरासत में मिला था उसके संरक्षण के लिए उन्होंने जैसे बन पड़ा वैसे कभी वाद किया, कभी जल्प और कभी वितण्डा। परन्तु इसके साथ ही साथ उन्होंने अनेकान्त दृष्टि को निर्दोष स्थापित करके उसका विद्वानों में प्रचार भी करना चाहा और इस चाहजनित प्रयत्न से उन्होंने अनेकान्त दृष्टि के अनेक मर्मों को प्रकट किया और उनकी उपयोगिता स्थापित की। इस खण्डन-मण्डन, स्थापन और प्रचार के करीब दो हजार वर्षों में महावीर के शिष्यों ने सिर्फ अनेकान्तदृष्टि विषयक इतना बड़ा ग्रन्थ समूह बना डाला है कि उसका एक खासा पुस्तकालय बन सकता है। पूर्व पश्चिम और दक्खिन-उत्तर हिन्दुस्तान के सब भागों में सब समयों में उत्पन्न होने वाले अनेक छोटे बड़े और प्रचन्ड आचार्यों ने अनेक भाषाओं में केवल अनेकान्तदृष्टि और उसमें से फलित होने वाले वादों पर दण्डकारण्य से भी कहीं विस्तृत, सूक्ष्म और जटिल चर्चा की है। शुरू में जो साहित्य अनेकान्त दृष्टि के अवलम्बन से निर्मित हुआ था उसके स्थान पर पिछला साहित्य, खास कर तार्किक साहित्य —मुख्यतया अनेकान्तदृष्टि के निरूपण तथा उसके ऊपर अन्य वादियों के द्वारा किये गये आक्षेपों के निराकरण करने के लिए रचा गया। इस तरह सम्प्रदाय की रक्षा और प्रचार की भावना में से जो केवल अनेकान्त विषयक साहित्य का विकास हुआ है उसका वर्णन करने के लिए एक खासी जुदी पुस्तिका की जरूरत है। तथापि इतना तो यहां निर्देश कर देना ही चाहिए कि समन्तभद्र और सिद्धसेन, हरिभद्र और अकलङ्क, विद्यानन्द और प्रभाचन्द्र, अभयदेव और वादिदेवसूरि तथा हेमचन्द्र और यशोविजयजी जैसे प्रकाण्ड विचारकों ने जो अनेकान्तदृष्टि के बारे में लिखा है वह भारतीय दर्शन साहित्य में बड़ा महत्त्व रखता है और विचारकों को उनके ग्रन्थों में से मनन करने योग्य बहुत कुछ सामग्री मिल सकती है।

फलितवाद

अनेकान्तदृष्टि तो एक मूल है, उसके ऊपर से और उसके आश्रय पर विविध वादों तथा चर्चाओं का शाखाप्रशाखाओं की तरह बहुत बड़ा विस्तार हुआ है। उसमें से मुख्य दो वाद यहां उल्लिखित किये जाते योग्य हैं— एक नयवाद और दूसरा सप्तभंगीवाद। अनेकान्तदृष्टि का आविर्भाव आध्यात्मिक साधना और दार्शनिक प्रदेश में हुआ इसलिए उसका उपयोग भी पहले पहल वहीं होना अनिवार्य था। भगवान के इर्दगिर्द और उनके अनुगामी आचार्यों के समीप जो-जो विचार धाराएं चल रहीं थीं उनका समन्वय करना अनेकान्तदृष्टि के लिए आवश्यक

था। इसी प्राप्त कार्य मे से 'नयवाद' की सृष्टि हुई। यद्यपि किसी-किसी नय के पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती उदाहरणों में भारतीय दर्शन के विकास के अनुसार विकास होता गया है। तथापि दर्शन प्रदेश में से उत्पन्न होने वाले नयवाद की उदाहरणमाला भी आज तक दार्शनिक ही रही है। प्रत्येक नय की व्याख्या और चर्चा का वि-हुआ है पर उसको उदाहरण माला तो दार्शनिकक्षेत्र के बाहर से आई ही नहीं। यही एक बात यहां समझाने को पर्याप्त है कि सब क्षेत्रों के व्याप्त करने की ताकत रखने वाले अनेकान्त का प्रथम आविर्भाव किस क्षेत्र में हुआ और हजारों व र्षों के बा द तक भी उसकी चर्चा किस क्षेत्र तक परिमित रही ?

भारतीय दर्शनों मे जैन दर्शन के अतिरिक्त, उस समय जो दर्शन अति प्रसिद्ध थे और पीछे से जो अति प्रसिद्ध हुए उनमे वैशेषिक, न्याय, सांख्य, औपनिषद-वेदान्त, बौद्ध और शाब्दिक—ये ही दर्शन मुख्य हैं। इन प्रसिद्ध दर्शनों को पूर्ण सत्य मानने मे वस्तुत तात्त्विक और व्यावहारिक दोनों आपत्तियां थीं और उन्हें बिल्कुल असत्य कह देने मे सत्य का घात था इस लए उनके बीच मे रहकर उन्हीं मे से सत्य के गवेषण का मार्ग रूप मे लगों के सामने प्रदर्शित करना था। यही कारण है कि हम उपलब्ध समग्र जैन-वाङ्मय मे नयवाद के भेद प्रभेद और उनके उदाहरण तक उक्त दर्शनों के रूप में तथा उनकी विकसित शाखाओं के रूप में ही पाते हैं। विचार की जितनी पद्धतियां उस समय मौजूद थीं, उनके समन्वय करने का आदेश—अनेकान्तदृष्टि ने किया और उसमें से नयवाद फलित हुआ जिससे कि दार्शनिक म [illegible]री कम हो, पर दूसरी तरफ एक एक वाक्य पर अधैर्य और नासमझी के कारण पण्डितगण लड़ा करते थे। एक पण्डित यदि किसी चीज को नित्य कहता तो दूसरा सामने खड़ा होकर यह कहता कि वह तो अनित्य है, नित्य नहीं। इसी तरह फिर पहला पण्डित दूसरे के विरुद्ध बोल उठता था। सिर्फ नित्यत्व के विषय में ही नहीं किन्तु प्रत्येक अंश में यह झगड़ा जहां-तहां होता ही रहता था। यह स्थिति देखकर अनेकान्त दृष्टि वाले तत्कालीन आचार्यों ने उस झगडे का अनेकान्त दृष्टि के द्वारा करना चाहा और उस प्रयत्न के परिणाम स्वरूप 'सप्तभङ्गीवाद' फलित हुआ। अनेकान्त दृष्टि के प्रथम फलस्वरूप नयवाद में तो दर्शनों को स्थान मिला है और उसी के दूसरे फलस्वरूप सप्तभङ्गीवाद में किसी एक ही वस्तु के विषय में प्रचलित विरोधी कथनों को या विचारों को स्थान मिला है। पहले वाद में समूचे सब दर्शन संगृहीत हैं और दूसरे में दर्शन के विशकलित मन्तव्यों का समन्वय है। प्रत्येक फलितवाद की सूक्ष्म चर्चा और उसके इतिहास के लिए यहां स्थान नहीं है और न उतना अवकाश ही है तथापि इतना कह देना जरूरी है कि अनेकान्त दृष्टि ही महावीर की मूल दृष्टि और स्वतन्त्र दृष्टि है। नयवाद तथा सप्तभङ्गीवाद आदि तो उस दृष्टि के ऐतिहासिक परिस्थिति—अनुसारी प्रासंगिक फल मात्र हैं। अतएव नय तथा सप्तभङ्गी आदि वादों का स्वरूप तथा उनके उदाहरण बदले भी जा [illegible] हैं, पर अनेकान्त दृष्टि का स्वरूप तो एक ही प्रकार का रह सकता है—भले ही उसके उदाहरण बदल जायँ।

अनेकान्त दृष्टि का असर

जब दूसरे विद्वानो ने अनेकान्त-दृष्टि को तत्त्वरूप में ग्रहण करने की जगह सांप्रदायिकवाद रूप में ग्रहण किया तब उ-के ऊपर चारों ओर से आक्षेपों के प्रहार होने लगे। बादरायण जैसे सूत्रकारों ने उसके रू के लिए सूत्र रच डाले और उन सूत्रों के भाष्यकारों ने उसी विषय में अपने भाष्यों की रचनाएँ कीं। वसुबन्धु, दिग्नाग, धर्मकीर्ति और शांतरक्षित जैसे बडे बड़े प्रभावशाली बौद्ध विद्वानों ने भी अनेकान्तवाद की पूरी खबर ली। इधर से जैन विचारक विद्वानों ने भी उनका सामना किया। इस प्रचण्ड संघर्ष का अनिवार्य परिणाम यह आया कि एक ओर से अनेकान्त-दृष्टि का तर्कबद्ध विकास हुआ और दूसरी ओर से उसका प्रभाव दूसरे विरोधी

सांप्रदायिक विद्वानों पर भी पड़ा। दक्षिण हिन्दुस्तान में प्रचण्ड दिगम्बराचार्यों और प्रकाण्ड मीमांसक तथा वेदान्त विद्वानों के बीच शास्त्रार्थ की कुश्ती हुई उससे अन्त में अनेकान्त-दृष्टि का ही असर अधिक फैला। यहाँ तक कि रामानुज जैसे बिल्कुल जैनत्व विरोधी प्रखर आचार्य शंकराचार्य के मायावाद के विरुद्ध अपना मत स्थापित करते समय आश्रय सामान्य उपनिषदों का लिया पर उनमें से विशिष्टाद्वैत का निरूपण करते समय अनेकान्त-दृष्टि का उपयोग किया, अथवा यों कहिये कि रामानुज ने अपने ढंग से अनेकान्त दृष्टि को विशिष्टाद्वैत की घटना में परिणत किया और औपनिषद तत्त्व का जामा पहना कर अनेकान्त दृष्टि में से विशिष्टाद्वैतवाद खड़ा करके अनेकान्त दृष्टि की ओर आकर्षित जनता को वेदान्त मार्ग पर स्थिर रखा। पुष्टि मार्ग के पुरस्कर्ता वल्लभ जो दक्षिण हिन्दुस्तान में हुए, उनके शुद्धाद्वैत विषयक सब तत्त्व हैं तो औपनिषदिक पर उनकी सारी विचारसरणी अनेकान्त-दृष्टि का नया वेदान्तीय स्वांग है। इधर उत्तर और पश्चिम हिन्दुस्तान में जो दूसरे विद्वानों के साथ श्वेताम्बरीय महान् विद्वानों का खण्डनमण्डन विषयक द्वन्द्व हुआ उसके फल स्वरूप अनेकान्तवाद का असर जनता में फैला और सांप्रदायिक ढंग से अनेकान्तवाद का विरोध करने वाले भी जानते अनजानते अनेकान्त-दृष्टि को अपनाने लगे। इस तरह वाद रूप में अनेकान्तदृष्टि आज तक जैनों की ही बनी हुई है। विकृत रूप में हिन्दुस्तान के हरएक भाग में फैला हुआ है। इसका सबूत सब भागों के साहित्य में से मिल सकता है।

व्यवहार में अनेकान्त का उपयोग न होने का नतीजा

जिस समय राजकीय उलट पेर का अनिष्ट परिणाम स्थायीरूप से ध्यान आया न था, सामाजिक बुराइयां आज की तरह असह्यरूप में खटकती न थीं, औद्योगिक और खेती की स्थिति आज के जैसी अस्तव्यस्त हुई न थी, समझ पूर्वक या बिना समझे लोग एक तरह से अपनी स्थिति में संतुष्टप्राय थे और असंतोष का दावानल आज की तरह व्याप्त न था, उस समय आध्यात्मिकसाधना में से आविर्भूत अनेकान्तदृष्टि केवल दार्शनिक प्रदेश में रही और सिर्फ चर्चा तथा वादविवाद का विषय बन कर जीवन से अलग रह कर भी उसने अपना अस्तित्व कायम रखा, कुछ प्रतिष्ठा भी पाई, वह सब उस समय के योग्य था। परन्तु आज स्थिति बिलकुल बदल गई है, दुनिया के किसी भी धर्म का तत्त्व कैसा ही गंभीर क्यों न हो, पर अब वह यदि उस धर्म की संस्थाओं तक या उसके पण्डितों तथा धर्मगुरुओं के प्रवचनों तक ही परिमित रहेगा तो इस वैज्ञानिक प्रभाव वाले जगत में उसकी कदर पुरानी कब्र से अधिक नहीं होगी। अनेकान्त-दृष्टि और उसकी आधारभूत अहिंसा—ये दोनों तत्त्व महान् से महान् हैं, उनका प्रभाव तथा प्रतिष्ठा जमाने में जैन सम्प्रदाय का बड़ा भारी हिस्सा भी है पर कोई बीसवीं सदी के विषम राष्ट्रीय तथा सामाजिक जीवन में उन तत्त्वों से यदि कोई खास फायदा न पहुँचे तो मंदिर, मठ और उपाश्रयों में हजारों पण्डितों के द्वारा चिल्लाहट मचाये जाने पर भी उन्हें कोई पूछेगा नहीं, यह निःसंशय बात है। जैन लिंगधारी सैकड़ों धर्मगुरु और सैकड़ों पंडित अनेकान्त के बाल की खाल दिन रात निकालते रहते हैं और अहिंसा की सूक्ष्म चर्चा में खून सुखाते तथा सिर तक फोड़ा करते हैं, तथापि लोग अपनी स्थिति के समाधान के लिए उनके पास नहीं फटकते। कोई जवान उनके पास पहुँच भी जाता है तो वह तुरन्त उनसे पूछ बैठता है कि "आप के पास जब समाधानकारी अनेकान्त दृष्टि और अहिंसा तत्त्व मौजूद हैं तब आप लोग आपस में ही गैरों की तरह बात-बात में क्यों टकराते हैं? मंदिर के लिए, तीर्थ के लिए, धार्मिक प्रथाओं के लिए, सामाजिक रीति रिवाजों के लिए-यहां तक कि वेश रखना, कैसा रखना, हाथ में क्या पकड़ना इत्यादि बालसुलभ बातों के लिए-आप लोग क्यों आपस में लड़ते हैं? क्या आप का अनेकान्तवाद ऐसे विषयों में कोई मार्ग निकाल नहीं सकता? क्या आप के अनेकान्तवाद में और अहिंसा तत्त्व में प्रीविकाउन्सिल, हाईकोर्ट अथवा

मामूली अदालत जितनी भी समाधानकारक शक्ति नहीं है ? क्या हमारी राजकीय तथा सामाजिक उलझनों को सुलझाने का सामर्थ्य आप के इन दोनों तत्त्वों मे नहीं है ? यदि इन सब प्रश्नों का अच्छा सामाधानकारक उत्तर आप असली तौर से 'हां' में नहीं दे सकते तो आप के पास आकर हम क्या करेंगे ? हमारे जीवन में तो पद पद पर अनेक कठिनइयां आती रहती हैं उन्हें हल किये बिना यदि हम हाथ मे पोथियां लेकर कथंचित् एकानेक, कथंचित् भेदाभेद और कथंचित् नित्यानित्य के खाली नारे लगाया करें तो इससे हमें क्या लाभ पहुँचेगा ? अथवा हमारे व्यावहारिक तथा आध्यात्मिक जीवन मे क्या फर्क पडेगा ?" और यह सब पूछना है भी ठीक, जिसका उत्तर देना उनके लिए असंभव हो जाता है।

इस में सन्देह नहीं कि अहिंसा और अनेकान्त की चर्चावाली पोथियों की उन पोथीवाले भण्डारों की उनके रचने वालों के नामों की तथा उनके रचने के स्थानों की इतनी अधिक पूजा होती है कि उसमें सिर्फ फूलों का ही नहीं किन्तु सोने-चांदी तथा जवाहरात तक का ढेर लग जाता है तो भी उस पूजा के करने तथा करानेवालों का जीवन दूसरों जैसा प्रायः पामर ही नजर आता है और दूसरी तरफ हम देखते हैं तो स्पष्ट नजर आता है कि गांधीजी के अहिंसा तत्त्व की ओर सारी दुनिया देख रही है और उनके समन्वयशील व्यवहार के कायल उनके प्रतिपक्षी तक हो रहे हैं। महावीर की अहिंसा और अनेकान्तदृष्टि की डौंडी पीटने वालों की ओर कोई श्रीमान् आंख उठा कर देखता तक नहीं और गांधीजी की तरफ सारा विचारक-वर्ग ध्यान दे रहा है इस अंतर का कारण क्या है ? इस सवाल के उत्तर में सब कुछ आजाता है।

अब कैसा उपयोग होना चाहिए ?

अनेकान्त दृष्टि यदि आध्यात्मिक मार्ग मे सफल हो सकती है और अहिंसा का सिद्धान्त यदि आध्यात्मिक कल्याणसाधक हो सकता है तो यह भी मानना चाहिए कि ये दोनों तत्त्व व्यावहारिक जीवन का श्रेय अवश्य कर सकते हैं क्योंकि जीवन व्यावहारिक हो या आध्यात्मिक पर उसकी शुद्धि के स्वरूप मे भिन्नता हो ही नहीं सकती और हम यह मानते हैं कि जीवन की शुद्धि अनेकान्तदृष्टि और अहिंसा के सिवाय अन्य प्रकार से हो ही नहीं सकती। इस लिए हमें जीवन व्यावहारिक या आध्यात्मिक कैसा ही पसंद क्यों न हो पर यदि उसे उन्नत बनाना इष्ट है तो उस जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनेकान्तदृष्टि को तथा अहिंसा तत्त्व को प्रज्ञापूर्वक लागू करना ही चाहिए। जो लोग व्यावहारिक जीवन में इन दो तत्त्वों का प्रयोग करना शक्य नहीं समझते उन्हें सिर्फ आध्यात्मिक कहलानेवाले जीवन का धारण करना चाहिए। इस दलील के फलस्वरूप अन्तिम प्रश्न यही होता है कि तब इस समय इन दोनों तत्त्वों का उपयोग व्यावहारिक जीवन मे कैसे किया जाय ? इस प्रश्न का देना ही अनेकान्तवाद की मर्यादा है।

जैन समाज के व्यावहारिक जीवन की कुछ समस्याएं ये हैं:—

१—समग्र विश्व के साथ जैन धर्म का असली मेल कितना और किस प्रकार का हो सकता है ?

२—राष्ट्रीय आपत्ति और संपत्ति के समय जैन धर्म कैसा व्यवहार रखने की इजाजत देता है ?

३—सामाजिक और साम्प्रदायिक भेदों तथा फूटों को मिटाने की कितनी शक्ति जैन धर्म में है ?

यदि इन समस्याओं को हल करने के लिए अनेकान्तदृष्टि तथा अहिंसा का उपयोग हो सकता है तो वही उपयोग इन दोनों तत्त्वों की प्राण पूजा है और यदि ऐसा उपयोग न किया जासके तो इन दोनों की पूजा सिर्फ पाषाणपूजा या शब्दपूजा मात्र होगी परन्तु मैंने जहां तक गहरा विचार किया है उससे यह स्पष्ट जान पड़ता है कि उक्त तीनों का ही नहीं किन्तु दूसरी भी वैसी सब समस्याओं

का व्यावहारिक समाधान, यदि शक्य है तो अनेकान्तदृष्टि के द्वारा तथा अहिंसा के सिद्धान्त के द्वारा पूरे तौर से किया जा सकता है उदाहरण के तौर पर जैनधर्म प्रवृत्ति मार्ग है या निवृत्ति मार्ग ? इस प्रश्न का उत्तर, अनेकान्तदृष्टि की योजना करके, यों दिया जा सकता है—"जैन धर्म प्रवृत्ति और निवृत्ति उभय मार्गावलम्बी है। प्रत्येक क्षेत्र में जहां सेवा का प्रसंग हो वहां अर्पण की प्रवृत्ति का आदेश करने के कारण जैन धर्म प्रवृत्तिगामी है और जहां भोगवृत्ति का प्रसंग हो वहां निवृत्ति का आदेश करने के कारण निवृत्तिगामी भी है।" परन्तु जैसा आज कल देखा जाता है, भोग में—अर्थात् दूसरों से सुविधा प्राप्त करने में-प्रवृत्ति करना और योग में-अर्थात् दूसरों को अपनी सुविधा देने में-निवृत्ति धारण करना, यह अनेकान्त तथा अहिंसा का विकृतरूप अथवा इनका स्पष्ट भंग है। दिगम्बरीय झगड़ों में से कुछ को लेकर उन पर भी अनेकान्तदृष्टि लागू करनी चाहिये नग्नत्व और वस्त्रधारित्व के विषय में द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक—इन दो नयों का समन्वय बराबर हो सकता है। जैनत्व अर्थात् वीतरागत्व यह तो द्रव्य (सामान्य) है और नग्नत्व, तथा वस्त्रधारित्व, एवं नग्नत्व तथा वस्त्रधारण के विविधरूप—ये सब पर्याय (विशेष) है। उक्त द्रव्य शाश्वत है पर उसके उक्त पर्याय सभी अशाश्वत तथा अव्यापक हैं। प्रत्येक पर्याय यदि द्रव्यसम्बद्ध है—द्रव्य का बाधक नहीं है—तो वह सत्य है अन्यथा सभी असत्य है। इसी तरह जीवनशुद्धि यह द्रव्य है और स्त्रीत्व या पुरुषत्व दोनों पर्याय हैं। यही बात तीर्थ के और मन्दिर के विषय में घटानी चाहिए। स्थान, और तिथियों के बारे में भेदाभेद भङ्गों का उपयोग करके ही झगड़ा निपटाना चाहिए। उत्कर्ष के सभी प्रसङ्गों में अभिन्न अर्थात् एक हो जाना और अपकर्ष के प्रसंगों में भिन्न रहना अर्थात् दलबन्दी न करना। इसी प्रकार वृद्धलग्न अनेकपत्नीग्रहण, पुनर्विवाह जैसी विवादास्पद विषयों के लिए भी कथंचित् विधेय अविधेय की भंगी प्रयुक्त किये बिना समाज समञ्जस रूप से जीवित रह नहीं सकता।

चाहे जिस प्रकार से विचार किया पर आज कल की परिस्थिति में तो यह सुनिश्चित है कि जैसे सिद्धसेन समन्तभद्र आदि पूर्वाचार्यों ने अपने समय के विवादास्पद पक्ष-प्रतिपक्षों पर अनेकान्त का और तज्जनित नय आदि वादों का प्रयोग किया है वैसा ही हमें भी उपस्थित प्रश्नों पर उनका प्रयोग करना ही चाहिए। यदि हम ऐसा करने को तैयार नहीं हैं तो उत्कर्ष की अभिलाषा रखने का भी हमें कोई अधिकार नहीं है।

अनेकान्त की मर्यादा इतनी विस्तृत और व्यापक है कि उसमें से सब विषयों पर प्रकाश डाला जा सकता है। इसलिए कोई ऐसा भय न रखें कि प्रस्तुत व्यावहारिक विषयों पर पूर्वाचार्यों ने तो चर्चा नहीं की फिर यहां क्यों की गई ? क्या यह कोई उचित समझेगा कि एक तरफ से समाज में अविभक्तता की शक्ति की जरूरत होने पर भी वह छोटी-छोटी जातियों अथवा उपजातियों में विभक्त होकर बरबाद होता है, दूसरी तरफ से विद्या और उद्योग की जीवनप्रद संस्थाओं में बल लगाने के बजाय धन, बुद्धि और समय की सारी शक्ति को समाज तीर्थ के झगड़ों में खर्च करता रहे और तीसरी तरफ जिस विधवा में संयम पालन का सामर्थ्य नहीं है उस पर संयम का बोझ समाज बलपूर्वक लादता रहे तथा जिसमें विद्याग्रहण एवं संयमपालन की शक्ति है उस विधवा को उसके लिये पूर्ण मौका देने का कोई प्रबन्ध न करके उससे समाज कल्याण की अभिलाषा रखें और हम पण्डितगण सन्मतितर्क तथा आप्तमीमांसा के अनेकान्त और नयवाद विषयक शास्त्रार्थों पर दिन रात विवेचन किया करें ? जिसमें व्यवहार बुद्धि होगी और प्रज्ञा की जागृति होगी वह तो यही कहेगा कि अनेकान्त भाव की मर्यादा में से जैसे कभी आप्त मीमांसा का जन्म और सन्मतितर्क का आवि- हुआ था वैसे ही उस मर्यादा में से आजकल 'समाज मीमांसा' और 'समाज तर्क' का जन्म होना चाहिए तथा उसके द्वारा अनेकान्त के इतिहास का उपयोगी पृष्ठ लिखा जाना चाहिए।

अपेक्षा या नय

मकान किसी एक कोने मे पूरा नहीं होता। उसके अनेक कोने भी किसी एक ही दिशा में नहीं होते। पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण आदि परस्पर विरुद्ध दिशा वाले एक-एक कोने पर खड़े रहकर किया जाने वाला उस मकान का अवलोकन पूर्ण तो नहीं होता, पर वह अयथार्थ भी नहीं। जुदे जुदे सम्भवित सभी कोनों पर खड़े रहकर किये जाने वाले सभी सम्भवित अवलोकनों का सार समुच्चय ही उस मकान का पूरा अवलोकन है। प्रत्येक कोणसम्भवी प्रत्येक अवलोकन उस पूर्ण अवलोकन का अनिवार्य अङ्ग है। वैसे ही किसी एक वस्तु या समग्र विश्व का तात्त्विक चिन्तन दर्शन भी अनेक अपेक्षाओं से निष्पन्न होता है। मन की सहज रचना, उस पर पड़ने वाले आगन्तुक संस्कार और चिन्त्य वस्तु का स्वरूप इत्यादि के सम्मेलन से ही अपेक्षा बनती है। ऐसी अपेक्षाएँ अनेक होती हैं, जिनका आश्रय लेकर वस्तु का विचार किया जाता है। विचार को सहारा देने के कारण या विचार स्रोत के उद्गम का आधार बनने के कारण वे ही अपेक्षाएँ दृष्टि-कोण या दृष्टि बिन्दु भी कही जाती हैं। सम्भवित सभी अपेक्षाओं से—चाहे वे विरुद्ध ही क्यों न दिखाई देती हों—किये जाने वाले चिन्तन व दर्शनों का सारसमुच्चय ही उस विषय का पूर्ण—अनेकान्त दर्शन है। प्रत्येक अपेक्षासम्भवी दर्शन उस पूर्ण दर्शन का एक-एक अङ्ग है जो परस्पर विरुद्ध होकर भी पूर्ण दर्शन मे समन्वय पाने के कारण वस्तुत: अविरुद्ध ही है।

जब किसी मनोवृत्ति विश्व के अन्तर्गत सभी भेदों को—चाहे वे गुण, धर्म या स्वरूप कृत हों या व्यक्तित्वकृत हों—भुलाकर अर्थात् उनकी ओर झुके बिना ही एक मात्र अखण्डताका ही विचार करती है, तब उसे अखण्ड या एक ही विश्व का दर्शन होता है। अभेद की उस भूमिका पर से निष्पन्न होने वाला 'सत्' शब्द के मात्र अखण्ड अर्थ का दर्शन ही संग्रह नय है। गुण धर्म कृत या व्यक्तित्व कृत भेदों की ओर झुकने-वाली मनोवृत्ति से किया जाने वाला उसी विश्व का दर्शन व्यवहार नय कहलाता है, क्योंकि उसमे लोकसिद्ध व्यवहारों की भूमिका रूप से भेदों का खास स्थान है। इस दर्शन में 'सत्' शब्द की अर्थ मर्यादा अखण्डित न रहकर अनेक खण्डों मे विभाजित हो जाती है। वही भेदगामिनी मनोवृत्ति या अपेक्षा—सिर्फ कालकृत भेदों की ओर झुककर सिर्फ वर्तमान को ही कार्यक्षम होने के कारण जब सत् रूप से देखती है और अतीत अनागत को 'सत्' शब्द की अर्थ मर्यादा मे से हटा देती है तब उसके द्वारा फलित होने वाला विश्व का दर्शन ऋजुसूत्र क्योंकि वह अतीत-अनागत के चक्रव्यूह को छोड़कर सिर्फ वर्तमान की सीधी रेखा पर चलता है।

उपर्युक्त तीनों मनोवृत्तियाँ ऐसी हैं जो शब्द या शब्द के गुण-धर्मों का आश्रय बिना लिये ही किसी भी वस्तु का चिन्तन करती हैं। अतएव व तीनों प्रकार के चिन्तन अर्थ नय हैं। पर ऐसी भी मनोवृत्ति होती है जो शब्द के गुण धर्मों का आश्रय लेकर ही अर्थ का विचार करती है। अतएव ऐसी मनोवृत्ति से फलित अर्थचिन्तन शब्द नय कहे जाते हैं। शाब्दिक लोग ही मुख्यतया शब्द नय के अधिकारी हैं, क्योंकि उन्ही के विविध दृष्टि बिन्दुओं से शब्दनय में विविधता आई है।

जो शाब्दिक सभी शब्दों का अखण्ड अर्थात् अव्युत्पन्न मानते हैं वे व्युत्पत्ति भेद से अर्थ भेद न मानने पर भी लिङ्ग, पुरुष, काल आदि अन्य प्रकार के शब्दधर्मों के भेद के आधार पर अर्थ का वैविध्य बतलाते हैं। उनका वह अर्थभेद का दर्शन शब्द नय या साम्प्रत नय है। प्रत्येक शब्द को व्युत्पत्ति सिद्ध ही मानने वाले शाब्दिक पर्याय अर्थात् एकार्थक समझे जाने वाले शब्दों के अर्थ मे भी व्युत्पत्ति भेद से भेद बतलाते हैं। उनका वह शक्र, इन्द्र आदि जैसे पर्याय शब्दों के अर्थ भेद का दर्शन समभिरूढ नय कहलाता है। व्युत्पत्ति के भेद

से ही नहीं, बल्कि एक ही व्युत्पत्ति से फलित होने वाले अर्थ की मौजूदगी के भेद के कारण से भी जो दर्शन अर्थ भेद मानता है वह एवंभूत नय कहलाता है। उन तार्किक छः नयों के अलावा एक नैगम नाम का नय भी है। जिसमें निगम अर्थात् देश रूढ़ि के अनुसार अभेदगामी और भेदगामी दोनों प्रकार के विचारों का समावेश माना गया है। प्रधानतया ये ही सात नय हैं। पर किसी एक अंश को अर्थात् दृष्टिकोण को अवलम्बित करके प्रवृत्त होने वाले सब प्रकार के विचार उस-उस अपेक्षा के सूचक नय ही हैं।

शास्त्र मे द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक ऐसे दो नय भी प्रसिद्ध हैं पर वे नय उपर्युक्त सात नयों से अलग नहीं हैं किन्तु उन्हीं का संक्षिप्त वर्गीकरण या भूमिका मात्र है। द्रव्य अर्थात् सामान्य, अन्वय, अभेद या एकत्व को विषय करने वाला विचार मार्ग द्रव्यार्थिक नय है। नैगम संग्रह और व्यवहार—ये तीनों द्रव्यार्थिक ही हैं। इनमें से संग्रह तो शुद्ध अभेद का विचार होने से शुद्ध या मूल ही द्रव्यार्थिक है जब कि व्यवहार और नैगम की प्रवृत्ति भेदगामी होकर भी किसी न किसी प्रकार के अभेद को भी अवलम्बित करके ही चलती है। इसलिए वे भी द्रव्यार्थिक ही माने गये हैं। अलबत्ता वे संग्रह की तरह शुद्ध न होकर अशुद्ध— मिश्रित ही द्रव्यार्थिक हैं।

पर्याय अर्थात् विशेष, व्यावृत्ति या भेद को ही लक्ष्य करके प्रवृत्त होने वाला विचार पथ पर्यायार्थिक नय है। ऋजुसूत्र आदि बाकी के चारों नय पर्यायार्थिक ही माने गए हैं। अभेद को छोड़कर एक मात्र भेद का विचार-ऋजुसूत्र से शुरू होता है इसलिए उसी को शास्त्र मे पर्यायार्थिक नय की प्रकृति या मूलाधार कहा है। पिछले तीन नय उसी मूलभूत पर्यायार्थिक के एक प्रकार से विस्तारमात्र हैं।

केवल ज्ञान को उपयोगी मान कर उसके आश्रय से प्रवृत्त होनेवाली विचार धारा ज्ञान नय है तो केवल क्रिया के आश्रय से प्रवृत्त होनेवाली विचार धारा क्रिया नय है। नयरूप आधार-स्तम्भों के अपरिमित होने के कारण विश्व का पूर्ण दर्शन-अनेकान्त भी निस्सीम है।

सप्तभंगी

भिन्न भिन्न अपेक्षाओं दृष्टिकोणों या मनोवृत्तियों से जो एक ही तत्त्व के नाना दर्शन फलित होते हैं उन्हीं के आधार पर भंगवाद की सृष्टि खड़ी होती है। जिन दो दर्शनों के विषय ठीक एक दूसरे के बिल्कुल विरोधी पड़ते हों ऐसे दर्शनों का समन्वय बतलाने की दृष्टि से उनके विषयभूत भाव अभावात्मक दोनों अंशों को लेकर उन पर जो सम्भवित वाक्य—भङ्ग बनाये जाते हैं। वही सप्तभंगी है। सप्तभंगी का आधार नयवाद है, और उसका ध्येय तो समन्वय है अर्थात् अनेकान्त कोटि का व्यापक दर्शन करना है, जैसे किसी भी प्रमाण से जाने हुए पदार्थ का दूसरे को बोध कराने के लिए परार्थ अनुमान वाक्य की रचना की जाती है, वैसे ही विरुद्ध अंशों का समन्वय श्रोता को समझाने की दृष्टि से भंग वाक्य की रचना भी की जाती है। इसतरह नयवाद और भंगवाद अनेकान्त दृष्टि के क्षेत्र में आप ही आप फलित हो जाते हैं।

दर्शनान्तर में अनेकान्तवाद

यह ठीक है कि वैदिक परम्परा के न्याय, वेदान्त आदि दर्शनो में तथा बौद्ध दर्शन में किसी एक वस्तु के विविध दृष्टियों से निरूपण की पद्धति तथा अनेक पक्षों के समन्वय की दृष्टि भी देखी जाती है। फिर भी प्रत्येक वस्तु और उसके प्रत्येक पहलू पर सम्भवित समग्र दृष्टि बिन्दुओं से विचार करने का आत्यन्तिक आग्रह तथा उन समग्र दृष्टि बिन्दुओं के एक मात्र समन्वय मे ही विचार की परिपूर्णता मानने का दृढ़ आग्रह जैन परंपरा के सिवाय अन्यत्र कहीं नहीं देखा जाता। इसी आग्रह मे से जैन तार्किकों ने अनेकान्त, नय और सप्तभंगी वाद

को बिल्कुल स्वतंत्र और व्यवस्थित शास्त्र निर्माण किया जो प्रमाण शास्त्र का एक भाग ही बन गया और जिसकी जोड़ का ऐसा छुटा भी ग्रन्थ इतर परंपराओं मे नहीं बना। विभज्यवाद और मध्यम मार्ग होते हुए भी बौद्ध परंपरा किसी भी वस्तु में वास्तविक स्थायी अंश देख न सकी उसे मात्र क्षणभंग ही नजर आया। अनेकान्त शब्द से ही अनेकान्त दृष्टि का आश्रय करने पर भी नैयायिक परमाणु, आत्मा आदि को सर्वथा अपरिणामी ही मानने-मनवाने की धुन से बच न सके। व्यवहारिक व पारमार्थिक आदि अनेक दृष्टियों का अवलम्बन करते हुए भी वेदान्ती अन्य सब दृष्टियों को ब्रह्मदृष्टि से कम दर्जे की या बिल्कुल ही असत्य मानने मनवाने से बच न सके। इसका एक मात्र कारण यही जान पड़ता है कि उन दर्शनों मे व्यापक रूप से अनेकान्त भावना का स्थान न रहा जैसा दर्शन में रहा। इसी कारण से जैन दर्शन सब दृष्टियों का समन्वय भी करता है और सभी दृष्टियों को अपने अपने में तुल्य बल व यथार्थ मानता है। भेद-अभेद, सामान्य-विशेष, नित्यत्व-अनित्यत्व आदि तत्त्वज्ञान के प्राचीन मुद्दों पर ही सीमित रहने के कारण वह अनेकान्त दृष्टि और तन्मूलक अनेकान्त व्यवस्थापक शास्त्र पुनरुक्त, चर्चित चर्वण या नवीनता शून्य जान पड़ने का आपाततः सम्भव है फिर भी उस दृष्टि और उस शास्त्र निर्माण के पीछे जो अखंड और सजीव सर्वांश सत्य को अपनाने की भावना जैन परम्परा मे रही और जो प्रमाण शास्त्र में अवतीर्ण हुई उनका जीवन के समग्र क्षेत्रों में सफल उपयोग होने की पूर्ण योग्यता होने के कारण ही उसे प्रमाण-शास्त्र को जैनाचार्यों की देन कहना अनुपयुक्त नहीं।

जैन शासन में गण-तन्त्र

गणतन्त्र-प्रजातन्त्र भारतवासियों की पुरानी वसियत है। अगर हम में अन्याय मात्र का सामना करने का नैतिक बल मौजूद हो तथा निस्सार मतभेदों एवं स्वार्थों को तिलांजलि देकर राष्ट्र, समाज और गणधर्म की रक्षा करने के लिये बलिदान करने की क्षमता आजाय तो किसका सामर्थ्य है जो हमे अपने पूर्वजों की संपत्ति के अधिकार या उपभोग से वंचित कर सके? गणधर्म मे जो असीम शक्ति विद्यमान है, उसका अगर हम लोग सदुपयोग करना सीख लें तो जैनधर्म विश्व में सूर्य की भांति चमक उठे।

गण अर्थात् समूह। गण का प्रत्येक सभ्य राष्ट्र की प्रतिष्ठा तथा व्यवस्था बनाये रखने के लिए उत्तर-दायी रहे, उसे कहते हैं गणतन्त्र। सबल के द्वारा निर्बल का सताया जाना या इसी प्रकार का कोई दूसरा अत्याचार गणतन्त्र कभी सहन नहीं कर सकता। निर्बल की सहायता करना, निर्बल को न्याय दिलाने के लिये सर्वस्व का भोग देना पड़े तो भी पैर पीछे न देना, यह गणधर्म पालने वालों का महान् व्रत होता है।

गणतन्त्र की यह व्यवस्था आधुनिक प्रजासत्तात्मक राज्यप्रणाली से तनिक भी उतरती श्रेणी की नहीं थी। जैनयुग मे नवलिच्छी और नवमल्ली जाति के अठारह गण राज्यों का गणतन्त्र इतिहास मे प्रसिद्ध है। अठारह गणराज्यों का वह गणतन्त्र सबलो द्वारा सताई जाने वाली निर्बल प्रजा को पीडा से मुक्त कराने के लिये और उनकी सुख-शान्ति की व्यवस्था करने के लिए तन, मन, धन का व्यय करने मे नहीं झिझकता था। असहायों की सहायता करने में ही गौरव मानता था।

गणतन्त्र की इस पद्धति में गणधर्म का पालन करने वाली प्रजा को कितना सहन करना पड़ता था उसका इतिहास-प्रसिद्ध उल्लेख जैन-शास्त्रों में मिलता है।

(नोट,—प्रज्ञाचक्षु प० सुखलालजी प० दलसुखभाई मालवणिया तथा श्री शान्तिलालभाई व० सेठ के लेखो से साभार संकलित)।

ओ३म् अर्हम्

श्री अखिल भारतवर्षीय स्था० जैन कोन्फरन्स-स्वर्ण-जयन्ती-ग्रन्थ

द्वितीय-परिच्छेद

जैन धर्म का संक्षिप्त इतिहास

लेखक पं० रत्न मुनि श्री सुशील कुमार जी "भास्कर' सा० रत्न, शास्त्री

आदि—युग

आदि युग का प्रारम्भ प्राचीनतम है। वह जितना प्राचीन है उतना ही अज्ञात भी है। मानव-सभ्यता का अरुणोदय हुआ—उस दिन को ही आदि काल का प्रथम दिन मान ले तो अनुचित न होगा।

इस युग का नाम भगवान आदिनाथ के नाम से ही आदि-युग रखा गया है।

भगवान आदिनाथ आर्य-सस्कृति के सृष्टा, वर्तमान अव-सर्पिणी-काल मे जैन धर्म के प्रथम संस्थापक, परम दार्शनिक और मानव-सभ्यता के जन्म-दाता के रूप मे प्रसिद्ध हैं।

वर्तमान इतिहास भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ) के विषय मे मौन है क्योंकि इतिहासकारों की दृष्टि २४०० वर्ष मे पूर्व काल को जानने तथा पहुँचने मे असमर्थ है।

इसलिए भगवान ऋषभदेव के विषय मे जानने के लिये हमे जैन शास्त्र, वेद, पुराण और स्मृति ग्रन्थो का आधार लेना पडता है।

भगवान ऋषभदेव के सबध मे वैदिक साहित्य मे बहुत कुछ वर्णन मिलता है। श्रीमद् भागवत् के पचम और बारहवें स्कध मे उनके विषय मे विस्तृत उल्लेख है। इस स्थान पर भगवान ऋषभदेव को मोक्ष धर्म के आद्य-प्रवर्तक माने गये हैं।

भगवान ऋषभदेव के काल को जैन धर्म मे युगलिया काल कहा जाता है। पुराणों मे भी ऐसा ही कहा गया है। वेद में यम-यमी के सवाद से भी जैनधर्म के अनुकूल वर्णन की सत्यता प्रमाणित होती है।

तत्कालीन मानव, प्राकृतिक-जीवन यापन करते थे और उनका मन प्राकृतिक दृश्यों और उनकी समृद्धि ही मे तल्लीन रहता था। उस समय के मानव सरल स्वभाव के थे और उनकी व्यवस्था भी अत्यन्त सरल थी। उनका निर्वाह प्रकृति-जन्य-कल्पवृक्षों द्वारा होता था। एक ही मा-बाप से युगल रूप मे पैदा हुए वे कन्या और पुत्र आगे जाकर दम्पति के रूप मे जीवन व्यतीत करने लगते थे।

उत्तरोत्तर कल्पवृक्ष अल्प फलदायी होने लगे जिसके कारण युगलियो मे कलह और असतोष व्याप्त होने लगा। ऐसे समय मे भगवान ऋषभदेव का जन्म हुआ। उन्होंने लोगों को केवल प्रकृति पर आश्रित ही न रखा किन्तु स्वावलम्बी बनने के लिये उपदेश दिया। लोगों को असि, मसि और कृषि आदि जीवन निर्वाह के साधन और जीवनोपयोगी वस्तुएं बनाना ि ाया अर्थात् युगलिया-युग का निवारण किया।

एक ही माता-पिता की सतान के बीच मे जो दाम्पत्य-जीवन यापन किया जाता था—उसका भी निराकरण कर भगवान ऋषभदेव ने वैवाहिक प्रथा प्रारभ की। अपने साथ मे पैदा हुई सहोदरा सुमगला के साथ अपना दाम्पत्य-जीवन तो व्यतीत किया ही किन्तु विवाह-प्रणाली को व्यवस्थित रूप देने के लिए और इस प्रणाली को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना मे विकसित करने के लिये सुनन्दा नाम की एक कन्या के साथ विधिवत् विवाह किया। यह कन्या अपने सहोदर भाई के अवसान के कारण हतोत्साहित और अनाथ बन गई थी। इस काल में और इस क्षेत्र मे यह सर्व प्रथम विधि पूर्वक विवाह था।

इन दोनों स्त्रियों से भरत-बाहूबली आदि सौ पुत्र और ब्राह्मी तथा सुन्दरी नाम की दो कन्याओं की प्राप्ति हुई।

वर्तमान सस्कृति के -पुरुष को मिले हुए सौभाग्य को लेकर ही आज भी "शत पुत्रवान् भव" का आशीर्वाद दिया जाता है।

भगवान ऋषभदेव का जन्म स्थान अयोध्या था, जिसको विनीता भी कहा जाता है। आपका जन्म तीसरे आरे के अंतिम भाग में चैत्र वद अष्टमी को मध्य रात्रि मे और उत्तराषाढा नक्षत्र मे नाभि कुलकर की रानी मरुदेवी की कुक्षि से हुआ था।

भगवान ऋषभदेव के राज्य-शासन के समय को हम निर्माण काल कह सकते है क्योंकि उनके ज्येष्ठ पुत्र भरत युवावस्था के पश्चात् राज्याधिकारी बनने के मार्ग पर आगे बढ़ रहे थे। वे राजनीति मे भी अत्यन्त निपुण थे। बाहूबली मे शारीरिक बल तत्कालीन वीरो के लिये स्पर्धा का विषय बन गया था।

भगवान ऋषभदेव की पुत्री ब्राह्मी ने ब्राह्मी-लिपि का आविष्कार किया था और सुन्दरी ने गणित-शास्त्र का प्रचलन जारी किया था।

भगवान ऋषभदेव आत्मदर्शी और वस्तु तत्त्व के विज्ञाता थे। इस देश मे कल्याण चाहने वाले लोगों के लिए एक सुयोजित मार्ग स्थापित करना चाहते थे। इस कारण ससार के प्रति उन्हें वैराग्य होना-यह स्वाभाविक था। उन्होंने अपना राज्य अपने पुत्रो को बांट दिया और स्वय ससार का त्याग करके चार हजार पुरुषों के साथ भगवती दीक्षा अगीकार कर ली।

एक हजार वर्ष तक आत्म-साधना और तपश्चर्या करते हुए एक स्थान मे दूसरे स्थान तथा जन-पद विहार करते हुए अन्त मे पुरिमताल नगर मे उनको केवलज्ञान हुआ। केवलज्ञान के पश्चात् आपने चतुर्विध सघ रूप तीर्थ की स्थापना की। अत इस अवसर्पिणी काल मे ही आप आदि तीर्थंकर कहलाये। वैदिक-शास्त्रों के अनुसार वे प्रथम 'जिन' बने और उपनिषदों के अनुसार 'ब्रह्म' तथा 'भगवान' और परम-पद प्राप्त करने वाले सिद्ध, बुद्ध तथा अजर-अमर परमात्मा हुए।

प्रहार करने के लिए उठा हुआ बाहूबली का हाथ निष्प्रयोजन वापिस कैसे लौटता? सामने वाले का अथवा अपना घात करने के स्थान पर उन्होंने उस मुष्टि का उपयोग अभिमान का घात करने में लगाया। उन्होंने ऊपर को उठे हुए हाथों से ही केश-लोचन किया और साधु-व्रती बने।

इस प्रकार इस क्षेत्र मे सर्व प्रथम सम्राट बनने का सौभाग्य भरत को प्राप्त हुआ। भरत के सबध मे विस्तृत वर्णन जैन अथवा जैनेतर ग्रन्थों में सहज ही मिल सकता है।

भरत और बाहूबली

भगवान ऋषभदेव के इन दोनों पुत्रों के नाम जैन ग्रन्थों में सुविख्यात है।

भरत के नाम से ही इस क्षेत्र का नाम 'भरत' या 'भारत' हुआ। इस अवसर्पिणी काल मे भरत सर्व प्रथम चक्रवर्ती राजा थे। उनकी सत्ता स्वीकार करने के लिये उनका भाई बाहूबली किसी प्रकार भी तैयार नहीं था। बाहूबली को अपने बल पर अभिमान था। परिणामत दोनों के बीच मे युद्ध हुआ। जैन शास्त्रों मे यह युद्ध घटना सर्वाधिक प्राचीन है।

यद्यपि इस समय सेनाओं का निर्माण हो चला था, फिर भी मानव जाति का निष्प्रयोजन विनाश करना उस समय अनुचित समझा जाता था। इसलिए पाच प्रकार के युद्ध निश्चित किये गये जैसे कि :—दृष्टि-युद्ध, नाद-युद्ध, मल्ल युद्ध, चक्र-युद्ध और मुष्टि-युद्ध।

१—दृष्टि-युद्ध मे जो पहले आँख बन्द करदे वह हारा हुआ माना जाय।

२—नाद-युद्ध में जिसकी आवाज अपेक्षा कृत क्षीण हो, वह हारा हुआ माना जाय।

अथवा जिसकी आवाज अपेक्षाकृत अधिक दूर तक या अधिक समय तक टिक सके, वह जीता हुआ माना जाय।

विश्व के लोग वैज्ञानिक आविष्कारों के आधार पर अगणित मानव-सहार-युद्ध भी करते हैं—उनके स्थान पर इस प्रकार के निर्दोष युद्ध यदि हो तो मानव जाति का कितना कल्याण हो! मल्ल-युद्ध, चक्रयुद्ध और मुष्टि-युद्ध जैसे संहारक और घातक युद्ध उस समय भी थे किन्तु इनका उपयोग अन्तिम समय में किया जाता था। जबकि उनका उपयोग अनिवार्य एवं अपरिहार्य हो जाता था।

चौथे युद्ध में भरत ने चक्र छोड़ा किन्तु बन्धुओं पर उसका असर नहीं होता है। अतः वह वापिस लौट गया।

अन्तिम युद्ध मे बाहुबली ने भरत को मारने के लिए घूसा उठाया किन्तु शीघ्र ही उन्हें विवेक जागृत हुआ और इन्द्र ने समझाया अतः उन्होंने अपनी मुट्ठी ऊपर ही रोक ली। यदि इस मुट्ठी का प्रहार हो जाता तो भरत न जाने कहाँ लुप्त हो जाते! उनका पता तक न लगता। इस प्रकार की असीम शक्ति बाहुबली की कही जाती है।

छद्मावस्था और केवलज्ञानावस्था मिलकर कुल एक लाख पूर्व दीर्घ काल तक सयम का आराधन कर, अष्टापद गिरि पर पद्मासन से स्थित होकर अभिजित नक्षत्र मे वे परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।

ऋषभदेव के पश्चात् के बाईस तीर्थंकर

भगवान ऋषभदेव के बाद के बाईस तीर्थंकरों का इतिहास सभवित है और महत्त्व पूर्ण है किन्तु उसके सबन्ध मे विस्तृत वर्णन नही मिल सकता। इसलिए उनके नाम और उनके सम्बन्ध की सामान्य जानकारी ही यहां दी जाती है।

क्रम	नाम	पिता	माता	स्थान
२	अजितनाथ	जितशत्रु	विजयादेवी	अयोध्या
३	सभवनाथ	जितार्थराजा	सैन्यादेवी	श्रावस्ती
४	अभिनन्दन	सवर राजा	सिद्धारथरानी	विनिता
५	सुमतिनाथ	मेघरथराजा	सुमगला	कुशलपुरी
६	पद्मप्रभु	धर राजा	सुसिया	कौशाम्बी
७	सुपार्श्वनाथ	प्रतिष्ठ सैन	पृथ्वी	काशी
८	चन्द्र प्रभु	महासेन	लक्ष्मा	चन्द्रपुरी
९	सुविधिनाथ	सुग्रीव	रामादेवी	काकदी
१०.	शीतलनाथ	दृढरथ	नदारानी	भद्दिलपुर
११	श्रेयांसनाथ	विष्णुसेन	विष्णुदेवी	सिंगपुरी
१२	वासुपूज्य	वसुपूज	जयादेवी	चपापुरी
१३	विमलनाथ	कर्त्तवरम	श्यामा	कपिलपुर
१४	अनतनाथ	सिहसेन	सुयशा	अयोध्या
१५.	धर्मनाथ	भानुराजा	सुव्रता	रतनपुर
१६	शांतिनाथ	विश्वसैन	अचिरा	हस्तिनापुर

१७	कुंथुनाथ	सूरराजा	श्रीदेवी	हस्तिनापुर
१८	अरहनाथ	सुदर्शनराजा	श्रीदेवी	हस्तिनापुर
१६.	मल्लिनाथ	कुंभ राजा	प्रभावती	मिथिला (मथुरा)
२०	मुनिसुव्रत	मित्रराजा	पद्मावती	राजग्रही
२१.	नमिनाथ	विजयसेन	वप्रादेवी	मिथिला (मथुरा)
२२.	नेमनाथ (अरिष्टनेमी)	समुद्रसेन	शिवादेवी	द्वारिका
२३.	पार्श्वनाथ	अश्वसेन	वामादेवी	बनारस

इन बाईस तीर्थ-करों मे से १६ वें श्री शांतिनाथ, १७ वें श्री कुंथुनाथ और १८ वें श्री अहरनाथ ये तीन तीर्थंकर अपने राज्य काल मे चक्रवर्ती थे।

उन्नीसवें श्री मल्लीनाथजी स्त्री रूप मे थे। जैन धर्म मे स्त्री भी तीर्थंकर हो सकती है। यह सत्य का सर्व श्रेष्ठ प्रमाण है। विश्व के किसी भी धर्म मे स्त्री को धर्म संस्थापक के रूप मे महत्व नहीं दिया गया है। जैनधर्म की यह उल्लेखनीय विशेषता है।

बीसवें तीर्थकर श्री मुनिसुव्रतजी के समय मे श्रीराम और सीता हुए तथा बाईसवें अरिष्टनेमी (नेमनाथ) के समय में नवमें वासुदेव श्री कृष्ण हुए थे।

अरिष्टनेमी जब विवाह करने के लिए जा रहे थे तब मासाहार के लिए बाड़े मे बन्द किये गये पशुओं का करुण-क्रन्दन सुनकर उन्हें बचाने के लिए विवाह मडप से वापिस लौट गए और परम कल्याणकारी संयम-धर्म को स्वीकार किया। श्री कृष्ण और उनका परस्पर का संवाद जैनागमों मे काफी मिलता है।

तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने पशु-संरक्षण और जीव-दया का महात्म्य बताया। उनका कमठ ऋषि के साथ का वार्तालाप जैन-आगमों मे प्रसिद्ध है।

भगवान-महावीर

भगवान पार्श्वनाथ के २५० वर्ष पश्चात् और आज से २५५३ वर्ष पूर्व चौवीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन क्षत्रिय कुंड नगर के सिद्धार्थ राजा और रानी त्रिशला देवी की कूख से हुआ। उनका जन्म से नाम वर्द्धमान था।

बाल सुलभ खेल-कूद करते हुए वे युवावस्था को प्राप्त हुए और उनका विवाह यशोदा नाम की राजकन्या के साथ हुआ और जिसके परिणाम स्वरूप आपको प्रियदर्शना नाम की एक कन्या हुई।

अपने माता पिता के स्वर्गवासी हो जाने के पश्चात् आपने दीक्षा लेने की तैयारी बताई किन्तु बड़े भाई नदी-वर्धन ने आपको बहुत समय तक ससार मे रुकने के लिये कहा। पिता श्री की अनुपस्थिति मे छोटे भाई को बडे भाई की आज्ञा का पालन करना चाहिये। इस आदर्श को मूर्तरूप देने के लिये श्री वर्द्धमान दो वर्ष तक ससार मे रहे। इस बीच में सचित्त जल त्याग आदि तपश्चर्या स्वीकार कर सयम के लिये प्राथमिक भूमिका तैयार करते रहे। अत मे एक वर्ष तक "वार्षिक दान" देकर दीक्षित हो गये।

दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् साढे बारह वर्ष और एक पक्ष तक भगवान महावीर ने घोर तपश्चर्या की जिससे चार घनघाती कर्म क्षय हुए। जृंभिका नगरी के बाहर ऋजुबालिका नदी के उत्तरवर्ती नदी के किनारे सामाजिक गाथापति कृष्णी के क्षेत्र मे चउविहार छट्ठ करके शाल वृक्ष के समीप दिवस के पिछले प्रहर मे गोदोहन

के आसन में बैठे हुए जब धर्मध्यान में विचरण कर रहे थे—वैशाख शुक्ला दशमी को अत्यन्त प्रकाशमय केवलज्ञान और केवलदर्शन प्रकट हुए।

केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद धर्मदेशना देते हुए ३० वर्ष तक भगवान ने ग्रामानुग्राम विचरण किया।

हुण्डावसर्पिणी-काल के प्रभाव से भगवान महावीर का प्रथम उपदेश खाली गया क्योंकि उस देशना में केवल देवता थे, मनुष्य नहीं। दूसरे समय की देशना में वेद-वेदांगों के पारगत ब्राह्मण पडित शिष्य बने जिनमे इन्द्रभूति (गौतम) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

भगवान महावीर के समय में समाज का अधःपतन हो चला था। उस समय मानव जाति की एकता के स्थान पर ऊंच-नीच की भावना का भूत जातिवाद के नाम पर खड़ा कर दिया गया था। स्त्रियों और शूद्रों को धर्म और पुण्य-कार्य के लाभ से वचित कर दिया गया था।

धर्म से प्राप्त होने वाला सुख मरने के बाद की बात कहलाती थी। स्वर्ग की कुंजी यज्ञ और यज्ञ की कुंजी उसके अधिकारी ब्राह्मणों के यज्ञोपवीतों में बंधी रहती थी। यज्ञों में पशुओं की हिंसा और सोमरस का पान होता था। नरमेध यज्ञ भी होते थे और मजे की बात उस समय की यह थी कि वैदिक हिंसा—हिंसा नहीं किंतु स्वर्ग प्राप्ति का आधार मानी जाती थी।

धर्म के नाम पर चलने वाले किन्तु वास्तविक धर्म से विरुद्ध क्रियाकाडो के विरोध में भगवान महावीर ने क्रांति की। धार्मिक मान्यताओं का मूल्याकन बदलने के लिए एक अद्भुत क्रांति की। आपका उपदेश था "धर्म का मूल अहिंसा, सयम और तप है। मानव मानवता के नाते एक समान है। भले वह स्त्री हो या पुरुष—चाहे कोई क्यों न हो—धर्माराधन का सब को समान अधिकार है।"

दूसरी देशना के समय इन्द्रभूति आदि मुख्य ग्यारह विद्वानो और उनके साथ मे ४४०० ब्राह्मण जो भगवान महावीर से वाद-विवाद कर उन्हे पराजित करने की भावना से आये थे—उन्होने उपदेश सुना और यथार्थता समझ कर सबके सब भगवान महावीर के शिष्य हो गये। ये ग्यारह विद्वान जैन शास्त्रो मे ग्यारह गणधर के रूप मे प्रसिद्ध हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं:—

(१) इन्द्रभूति (२) अग्निभूति (३) वायुभूति (४) व्यक्त (५) सुधर्मा (६) मडित (७) मौर्यपुत्र (८) अकपित (९) अचलभ्रात (१०) मैतार्य (११) प्रभास।

प्रभु की वाणी के उपदिष्ट तत्त्वो को सूत्र रूप मे गूंथ कर द्वादशांग को व्यवस्थित रूप से बनाये रखने का कार्य इन गणधरों ने किया।

जैनागमों मे भ० महावीर और गौतम तथा पचम गणधर सुधर्मा और जबू स्वामी के बीच में होने वाले वार्तालाप के प्रसग स्थान स्थान पर मिलते हैं।

भगवान महावीर के ३० वर्ष के धर्मोपदेश के समय मे उनके चतुर्विध सघ मे १४,००० साधु और ३६,००० साध्वियां हुई। लाखो की सख्या मे जैनधर्म के अनुसार आचरण करने वाले श्रावक एव श्राविकाए बनीं।

साधुओं मे जिस प्रकार इन्द्रभूति (गौतम) मुख्य थे उसी प्रकार साध्वियों में महासती चन्दनबाला मुखिया थीं।

छद्मावस्था और केवल पर्याय मिलकर ४२ वर्ष की दीक्षा पर्याय के समय मे उन्होंने एक अस्थिग्राम में, एक वाणिज्यग्राम मे, पांच चम्पा नगरी मे, पाच पृष्ठ चम्पा मे, चौदह राजग्रही मे, १ नालदापाडा में ६ मिथिला

मे, २ भद्रिका नगरी मे, १ आलभिका नगरी मे १ सावस्थिया नगरी मे इस प्रकार ४१ चातुर्मास किये और ४२ वें चातुर्मास के लिये वे पावापुरी मे पधारे—जिसका अपर नाम अपापापुरी था। भगवान महावीर का यहा यह अतिम चातुर्मास था। यह चातुर्मास पावापुरी के राजा हस्तिपाल की विनती से उनकी शाला मे व्यतीत किया। भगवान का मोक्ष-समय निकट था अतः अपनी पुण्यमयी और जगत के समस्त हित से जीवो की हितकारी वाग्धारा अविरत रूप से प्रवाहित कर रहे थे, जिससे भव्य जीवो को यथार्थ मार्ग प्राप्त हो सके।

आयुष्य कर्म का क्षय निकट जान कर प्रभु ने आसोज वद १४ को सथारा किया। अपने शिष्य गौतम स्वामी को समीपवर्ती ग्राम मे देवशर्मा नाम के एक ब्राह्मण को वोध देने के लिये भेजा। चतुर्दशी और अमावस्या के दो दिन के १६ प्रहर तक प्रभु ने सतत उपदेश दिया। जीवन के उत्तरभाग मे दिये गये ये उपदेश "उत्तराध्ययन सूत्र" मे सग्रहीत है। इस प्रकार उपदेश देते-देते आजसे २४९१ वर्ष के ऊपर जब चौथे आरे के तीन वर्ष और साढे आठ महिने शेष थे—कार्तिक वदी अमावस्या अर्थात् दीपावली की रात्रि मे भगवान महावीर निर्वाण पद को प्राप्त हुए।

देवशर्मा को प्रतिबोध देने के लिए गये हुए गौतम-स्वामी जब वापिस लौटे और जब उन्होंने भगवान महावीर के निर्वाण होने का समाचार जाना तब अत्यन्त आर्द्र बन गये। भगवान महावीर के प्रति उनके हृदय मे अत्यधिक स्नेह था किन्तु महापुरुषों मे रही हुई निर्वलता क्षणिक होती है। गौतम स्वामी को भी थोडी देर वाद सत्य का प्रकाश मिला। उन्होंने जान लिया कि प्रभु के प्रति दर्शाया जाने वाला स्नेह भी केवल ज्ञान की प्राप्ति मे विघ्न रूप है। विचारश्रेणी का रूप बदला "सत्य ही—मैं मोह मे पडा हुआ हूँ। प्रभु तो वीतरागी थे। प्रत्येक आत्मा अकेली होती है, मैं अकेला हूँ। मेरा कोई नहीं—उसी प्रकार मैं भी किसीका नहीं" इस प्रकार की एकत्व भावना विचारने लगे। क्षपकश्रेणी पर आरूढ हुए गौतम स्वामी ने तत्क्षण घनघाती कर्मो का क्षय कर दिया और भगवान महावीर की निर्वाण गमन की रात्रि मे लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त कर लिया।

—०—

बुद्ध और महावीर

भगवान महावीर और बुद्ध समकालीन थे। बुद्ध शाक्य वशीय कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन के पुत्र थे। इन्होने भी ससार को निस्सार समझ कर उसका त्याग किया और तपश्चर्या धारण कर वोधिसत्व बने। बुद्ध अपने को 'आर्हत' मानते थे। भगवान महावीर को यदि अधिक मे अधिक सामना करना पडा था तो बुद्ध से।

महावीर और बुद्ध की तुलना हम इस प्रकार कर सकते है.—

	महावीर	बुद्ध
पिता	सिद्धार्थ	शुद्धोधन
माता	त्रिशला	महामाया
जन्म स्थान	क्षत्रिय-कुडग्राम	कपिल वस्तु
काल	ई पू ५९८	ई पू ५६५ या ५७५
पत्नि	यशोदा	यशोधरा
सन्तान	प्रियदर्शना (पुत्री)	राहुल (पुत्र)

आतप	१२॥ वर्ष	६ वर्ष
निर्वाण	वि० स० पूर्व ४७० वर्ष	वि० स० पूर्व ४८५ वर्ष
आयुष्य	७२ वर्ष	८० वर्ष
व्रत	पञ्च महाव्रत	पञ्चशील
सिद्धान्त	अनेकान्तवाद	क्षणिकवाद
मुख्य शिष्य	गौतम	आनन्द

भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध मे जिस प्रकार विभिन्नता है उसी प्रकार कुछ समानता भी है।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तथा तृष्णा-निवृत्ति आदि मे महावीर के समान बुद्ध की दृष्टि भी अत्यन्त गहन थी। ब्राह्मण-सस्कृति के सामने ये दोनो श्रमण-सस्कृति के जाज्वल्यमान नक्षत्र थे।

जीवन शोधन, अहिंसा पालन और श्रमणो के लिये आवश्यक नियमो मे भी दोनो महापुरुषो के विधानो मे बहुत कुछ समानता है।

निष्क्रमण के पश्चात बुद्ध ने भी कठोर तप किया था, किन्तु पीछे से तप के प्रति उनमे घृणा के भाव पैदा हो गये और 'मध्यम प्रतिपदा' का मार्ग स्थापित किया।

भगवान महावीर की शिष्य परम्परा

भगवान महावीर के निर्वाण के बाद गौतम स्वामी को केवलज्ञान हुआ। बारह वर्ष तक केवलज्ञानी के रूप मे वे विचरण करते रहे और धर्म प्रचार तथा सघ-व्यवस्था आदि करते रहे।

१ सुधर्मा स्वामी—गौतम स्वामी के केवलज्ञानी हो जाने से भगवान महावीर के प्रथम पट्टधर-आचार्य पद-विभूषित होने का गौरव श्री सुधर्मा स्वामी को मिला। बारह वर्ष तक आपने सघ को आतरिक तथा बाह्य-दोनो प्रकार से रक्षण, पोषण और सवर्धन किया। श्री सुधर्मा स्वामी को ९२ वे वर्ष की अवस्था मे जब केवलज्ञान हुआ तब सघ-व्यवस्था का कार्य उनके शिष्य जम्बू स्वामी को दिया गया। श्री सुधर्मा स्वामी साठ वर्ष तक केवली के रूप मे विचरण करते रहे और १०० वर्ष की आयुष्य पूर्ण कर निर्वाण-पद को प्राप्त हुए।

२ जम्बू स्वामी—सुधर्मा स्वामी को केवलज्ञान होने के पश्चात् श्री जम्बू स्वामी पाट पर आये। श्री जम्बू स्वामी एक श्रीमन्त व्यापारी के पुत्र थे। अखूट सम्पत्ति होने पर भी वैराग्य होने के कारण आपने विवाह के दूसरे दिन ही आठ पत्नियो को त्याग कर दीक्षा ले ली। इनके साथ विवाहित आठो स्त्रिया, उन स्त्रियों के माता पिता, अपने खुद के माता-पिता और उनके घर मे चोरी करने के लिये आये हुए ५०० चोर-इस प्रकार कुल ५२७ विरक्त आत्माओं ने भगवती दीक्षा स्वीकार कर अपना जीवन सफल किया।

श्री सुधर्मा स्वामी के निर्वाण के पश्चात् श्री जम्बू स्वामी को केवलज्ञान हुआ। वे ४४ वर्ष तक केवलज्ञानी के रूप में विचरण कर मोक्ष पधारे।

इस अवसर्पिणी काल की जैन परम्परा मे केवलज्ञान का स्रोत भगवान ऋषभदेव से प्रारभ होता है। श्री जम्बू स्वामी अतिम केवलज्ञानी थे। उनके निर्वाण के साथ-साथ दस विशेषताओं का भी लोप होगया:—

१. परम-अवधिज्ञान २ मनः-पर्यवज्ञान ३ पुलाक लब्धि ४ आहारक शरीर ५ क्षायिक-सम्यक्त्व ६. केवलज्ञान ७ जिनकल्पी साधू ८. परिहार-विशुद्धि-चारित्र ९. सूक्ष्म सपराय-चारित्र १० यथाख्यात् चारित्र। इस प्रकार भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् ६४ वर्ष तक केवलज्ञान रहा।

३ प्रभव स्वामी:—जम्बू स्वामी को केवलज्ञान होने के बाद प्रभव स्वामी आचार्य-पद पर विराजमान हुए। वे जयपुर के राजा जयसेन के कुमार थे। प्रजा को कष्ट देने के कारण उन्हें देश निकाला दिया गया। इस कारण ये भीमसेन नामक चोर के साथी बन गये और इस भीमसेन के मरण के पश्चात् वे ५०० चोरों के सरदार होगये।

जम्बू स्वामी विवाह करके जब पीछे लौटे तब उनको ९९ करोड का दहेज मिला। यह घटना सुन कर अपने साथियों को लेकर प्रभव जम्बू के यहां चोरी करने गया। प्रभव चोर की यह विशेषता थी कि वह जिस घर मे चोरी करने जाता, उस घरवाला को मन्त्र-बल से निद्रामग्न कर देता था। इस प्रकार उसने सेवकों और प्रहरियों को निद्राधीन बना कर धन की गठडियां बांध लीं और रवाना होने लगा। किन्तु आश्चर्य की बात यह हुई कि उठाने पर भी उसके पांव उठने न थे। वह विचार मे पड गया कि ऐसा क्यों होता है? ऐसा किसका प्रभाव है कि जिससे मेरा मन्त्र बल निष्फल होता है।

दूसरी तरफ जम्बू स्वामी महा-सयमी और बालब्रह्मचारी थे। विवाह की प्रथम रात्रि मे आठो स्त्रियों की विनती और अनेक प्रकार से समझाने पर भी उन्होंने व्रतभग नही किया। प्रभव चोर उनके शयन-कक्ष के समीप गया और कमरे मे होने वाली बातचीत ध्यान पूर्वक उसने सुनी। जम्बू स्वामी की वाणी सुनकर और चारित्र के प्रति दृढता देखकर प्रभव प्रभावित हुआ और प्रात:काल होने पर अपने साथियो सहित जम्बू स्वामी के साथ सयम स्वीकार कर लिया। इस समय प्रभव की आयु ३० वर्ष की थी। बीस वर्ष तक उन्होने ज्ञानादिक साधना की और ५० वर्ष की आयु मे वे समस्त जैन सघ के आचार्य बने।

४ स्वयभव स्वामी—प्रभव स्वामी के बाद स्वयभव आचार्य हुए। ये राजगृही के ब्राह्मण कुल मे उत्पन्न हुए थे और वेद-वेदांगों में निष्णात थे। एक बार श्री प्रभव स्वामी से आपकी भेंट हुई। प्रभव स्वामी ने द्रव्य और भाव-यज्ञ का विलक्षण स्वरूप समझाया। इससे स्वयभव को प्रतिबोध हुआ और उन्होंने दीक्षा ले ली।

स्वयभव स्वामी के 'मनक' नाम का एक पुत्र था। उसने भी दीक्षा ली। आचार्य ने अपने ज्ञान से जब यह जाना कि उनका अतकाल समीप है, तब अल्प समय मे जिन-वाणी का रहस्य समझाने के लिए शास्त्रों का मन्थन कर नवनीत के रूप मे दशवैकालिक-सूत्र की रचना की।

५ यशोभद्र—वीर-निर्वाण स० ९८ मे यशोभद्र आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित हुए। वीर-निर्वाण स० १०८ मे सभूति विजय ने दीक्षा ली।

६ यशोभद्र और सभूति विजय—दोनों ही सघ के आचार्य थे। इन्होंने कुशलता पूर्वक सघ की व्यवस्था सभाली।

भद्रबाहु-युग

भद्रबाहु स्वामी की दीक्षा वीर नि० स० १३९ के बाद आचार्य यशोभद्र स्वामी के पास हुई। स्थूलिभद्र दीक्षा वीर नि० स० १४६ अथवा स० १५० में हुई। भद्रबाहु स्वामी गृहस्थाश्रम मे ४५ वर्ष तक रहे और ७० वर्ष तक गुरु महाराज की सेवा सुश्रूषा करके चौदह पूर्व का ज्ञान प्राप्त किया चौदह वर्ष तक सघ के एक मात्र आचार्य रहे। वीर नि० स० १७० में ९९ वर्ष की अवस्था मे कालधर्म को प्राप्त किया। (सशयास्पद)

भद्रबाहु स्वामी के समय में भयंकर दुष्काल पडा। एक समय की बात है कि कार्तिकशुक्ला पूर्णिमा के दिन महाराज चन्द्रगुप्त ने पौषध किया था। उस समय रात्रि के पिछले भाग में उन्होंने सोलह स्वप्न देखे। इन

स्वप्नों मे एक बारह फन वाला साप भी था। इस स्वप्न का फल भद्रबाहु स्वामी ने बताया कि बारह वर्ष का दुष्काल पडेगा। सकट की उन घडियों मे उन्होंने महाराज चन्द्रगुप्त को दीक्षा दी और उसके बाद दक्षिण मे कर्णाटक की तरफ विहार कर गए।

श्रुत केवली भद्रबाहु स्वामी के जाने के पश्चात सघ को बहुत ही क्षोभ हुआ। दुष्काल भी भयानक रूप से ताण्डव-नृत्य कर रहा था। ऐसे कठिन समय मे श्रावक-गण भद्रबाहु स्वामी को याद करने लगे।

भद्रबाहु स्वामी के जाने के पश्चात् सघ का नेतृत्व श्री स्थूलिभद्र के हाथो मे आया किन्तु वे शास्त्रो के पूर्ण रूप मे ज्ञाता न थे। अत. भद्रबाहु स्वामी को वापिस लाने के लिये श्रावक सघ दक्षिण मे गया किन्तु उस समय आप 'महाप्राण' नाम के मौन व्रत मे थे। फिर भी विचार-विनिमय करके उन्होंने सघ को बताया कि मैं अभी लौटने की स्थिति मे नहीं हूँ। तब श्रावक-सघ ने १४ पूर्व का ज्ञान स्थूलिभद्रश्री को देने के लिए भद्रबाहू स्वामी को समझाया।

श्री सघ मगध को वापिस लौटा और स्थूलिभद्रजी को समस्त वृत्तान्त कह सुनाया। श्री स्थूलिभद्रजी कुछ और साधुओ के साथ विहार कर भद्रबाहु स्वामी के पास आये और विद्याभ्यास प्रारभ किया। कठोर ज्ञान-साधना से घबरा कर अन्य साधू तो अभ्यास मे आगे न बढ सके किन्तु स्थूलिभद्रजी अपने अभ्यास मे बढते ही गये। एक दिन 'रूप परावर्तिनी' विद्या का निर्णय करने के लिये उन्होंने सिंह का रूप धारण किया। सिंह को देख कर निकटवर्ती साधू भयभीत हो गये। अपने साथी मुनिराजो को भयभीत हुआ जानकर वे अपनी पूर्वावस्था-मुनि-अवस्था मे आ गये। रूप परिवर्तन का यह समाचार सुनकर भद्रबाहु स्वामी अत्यन्त खिन्न हुए जिससे उन्होंने अब तक पढाये हुए दस पूर्व के आगे पढाने से इन्कार कर दिया। इस प्रकार १४ पूर्व मे से १० पूर्व का विच्छेद हो गया।

श्री स्थूलिभद्र-युग

श्री स्थूलिभद्र नवमे नदराजा (नागर ब्राह्मण) के महामत्री शकडाल के ज्येष्ठ-पुत्र थे। वीर-निर्वाण स० १४६ मे आपने दीक्षा ग्रहण की।

ससारावस्था मे समस्त कुटुम्ब को छोड कर बारह वर्ष तक वे कोशा नाम की वेश्या के घर मे रहे थे। उनके पिता की मृत्यु के बाद राजा ने उन्हें अपना मत्री बना लिया, किन्तु पिता की मृत्यु से उन्हे वैराग्य हो गया और राज दरबार छोडकर चल दिये। मार्ग मे सभूतिविजय नाम के आचार्य मिले। आचार्य के चरणो मे उन्हें शान्ति मिली और उनसे दीक्षा ग्रहण करली।

दीक्षा लेने के बाद गुरु की आज्ञा लेकर कोशा वेश्या के घर चातुर्मास किया। वहां वे तनिक भी विचलित नहीं हुए और वैराग्यभाव मे दृढ बने रहे।

भद्रबाहू स्वामी के अतेवासी शिष्य विशाखाचार्य अपने गुरू भद्रबाहू स्वामी के कालधर्म प्राप्त करने के बाद मगध मे आये और उन्होंने देखा कि स्थूलिभद्र के साधू वनों और उद्यानों के बदले नगर मे रहने लगे है। इससे उन्हें बहुत ही बुरा लगा। इस सम्बन्ध मे स्थूलिभद्रजी से उनकी चर्चा हुई किन्तु दोनों मे कोई खास समाधान नहीं हो सका। इस कारण दोनों के साधू अलग-अलग विचरने लगे। यहां से जैन सघ मे दो शाखाए फूटीं, किन्तु अलग-अलग सम्प्रदाये नहीं बनी। श्री स्थूलिभद्र जी के पास वीर नि० स० १७६ मे आर्य महागिरी ने दीक्षा ग्रहण की।

श्री स्थूलिभद्रजी ने संघ व्यवस्था, धर्म प्रचार तथा आत्म-साधना करते हुए वीर नि० स० २१५ मे कालधर्म प्राप्त किया।

श्री स्थूलिभद्रजी से लेकर लौंकाशाहजी के समय तक का विहंगावलोकन

श्री स्थूलिभद्रजी के पश्चात् आर्य महागिरी और आर्य सुहस्ति के नाम आचार्य के रूप मे हमारे सामने आते हैं।

भद्रबाहू स्वामी और स्थूलिभद्रजी के समय मे सचेलकत्त्व और अचेलकत्त्व के प्रश्न पर उठा हुआ मतभेद कालान्तर मे उग्र बनता गया और उसमे से जैन धर्म की दो सम्प्रदाये चल निकलीं। सचेलकत्त्व को मानने वाले श्वेताम्बर कहलाये और अचेलकत्त्व को मानने वाले दिगम्बर।

आर्य महागिरी, आर्य सुहस्ति, आर्य सुप्रतिबद्ध, उमास्वाति, आचार्य गुणसुन्दरजी और कालिकाचार्य का समय विक्रम् के पूर्व का है। वीर निर्वाण के ४७० वर्ष बाद विक्रम-संवत् प्रारभ हुआ।

इसके बाद श्री विमल-सूरी आर्यदिन्न अथवा स्कन्दिलाचार्य और पादलिप्तसूरी हुए। इस समय के बीच मे भगवान महावीर द्वारा प्रयुक्त लोकभाषा, अर्ध-मागधी की तरफ से हट कर शनैः शनैः जैनाचार्य, विद्वानों की भाषा अर्थात् सस्कृत की तरफ झुके। मूल आगमों के आधार पर सस्कृत मे महान ग्रन्थों की रचना होने लगी।

अब आचार्य वृद्धवादि तथा कल्याण-मंदिर स्तोत्र के रचयिता श्री सिद्धसेन दिवाकर और दूसरे भद्रबाहू स्वामी का समय आया।

वीर नि० स० ६८० और विक्रम सं० ५१० मे देवड्ढीगणि क्षमाश्रमण ने वल्लभीपुर में श्रुत-रक्षा के लिए साधू-मुनिराजों की एक परिषद् बुलाई जिसमे आज तक जो भी आगम-साहित्य कठस्थ रहने के कारण विलुप्त होता जाता था—उसे लिपिबद्ध कराया।

इसके बाद श्री भक्तामर स्तोत्र के रचयिता श्री मानतुगाचार्य, जिनभद्रगणि, हरिभद्र सूरि आदि आचार्य हुए। इनके बाद नव अगों के टीकाकार श्री अभयदेव सूरि, जिनदत्त सूरि और गुजरात मे जैनधर्म की विजय पताका फहराने वाले हेमचन्द्राचार्य आदि अनेक सत हुए। इनके सबध मे भी काफी साहित्य उपलब्ध हो सकता है।

सामान्यत जैसा सब जगह बनता है—वैसे ही जैन श्रमण सघ मे भी शनैः शनैः शिथिलता आने लगी। क्रिया-कांड और समाचारी के सबध में मतभेद खडे हो जाने के कारण पृथक-पृथक सघ और गच्छ अस्तित्त्व में आने लगे। इन मतभेदों के बावजूद भी अब तक सघ मे जो एकता-अविछिन्नता दिखने मे आती थी, किन्तु अब चौरासी गच्छ खडे हो गये।

अनेक बार दुष्काल पड़ने के कारण श्रमण साधुओं के लिए विशुद्ध रूप से चारित्र का पालन अति कठिन होगया था। सकट काल की इस विषमता मे चैत्यवाद प्रारभ हुआ और सहज सुलभ साधन-प्राप्ति की लालसा से इसका उत्तरोत्तर विकास होता गया।

चारित्र कठोरतम मार्ग मे रही हुई कठिनाइयों के कारण साधु-वर्ग अपनी साधना के मार्ग से पीछे हटने लगा और प्रायः अर्ध-ससारी जैसी स्थिति मे आगया।

पन्द्रहवीं और सौलहवीं शताब्दी मे जैन सघ मे एकता अथवा सगठन नाममात्र का भी न रहा। यति-वर्ग अपनी महत्ता बढाने का प्रयत्न कर रहा था। यह वर्ग वैद्यकी, औषधि, यत्र, मत्र एव तांत्रिक आदि विद्या द्वारा लोक-सग्रह की भावना का अनुसरण करने लगा।

इस शिथिल-काल में जैन संघ में एक ऐसे महायुरुष की आवश्यकता थी जो संघ में ऐक्यता स्थापित करता, साम्प्रदायिकता के स्थान पर संगठन का बिगुल बजाता, धार्मिक ज्ञान का प्रचार करता और क्रियोद्धार के लिए सक्रिय कार्य करता।

धर्म-क्रान्ति का उदय काल

यूरोप और एशिया इन दोनों महाद्वीपों में विक्रम की पन्द्रहवीं और सोलहवीं सदी का समय अत्यंत महत्व का है।

एक तरफ राजनैतिक परिवर्तन, अराजकता और संघर्ष-युग था तो दूसरी तरफ धार्मिक उथल पुथल, असहिष्णुता और ग्लानि।

इन दोनों शताब्दियों में धर्म-ग्लानि की यातना और क्रियाकांडों के प्रति उदासीनता, संतो की पवित्र परम्परा, सुधारकों का समुदाय, सर्वधर्म-समभाव की भावना, अहिंसा की प्रतिष्ठा और गुणों का पूजन अर्चन इस समय का उतार-चढ़ाव था।

चौदहवीं शताब्दि के अंत में लेकर पन्द्रहवीं शताब्दि के प्रारम्भ तक समस्त जगत में अराजकता और धार्मिक असहिष्णुता फैल गई थी।

यूरोप में धर्म के नाम पर अनेक अत्याचार हुए। रोमन, केथोलिक और प्रोटेस्टेन्टों ने ईश्वर के नाम पर एक दूसरे के प्रति भयंकर घृणा और विद्वेष का विष फैलाया। जर्मनी के मार्टिन ल्यूथर ने और फ्रांस में जॉन ऑफ आर्क ने अपना बलिदान देकर नव-चेतना का संचार किया।

धार्मिक अव्यवस्था परिवर्तन के इस काल में सुधारवादी और शांति प्रेमियों की शक्ति भी अपना काम कर रही थी और अंत में इसकी ही विजय हुई। धार्मिक अशांति का अंधकार दूर हुआ और भारत में अकबर बादशाह ने, इंग्लैण्ड में रानी एलिजाबेथ ने तथा अन्य-अनेक व्यक्तियों ने इस स्वर्णिम युग में सामाजिक नव चेतना और सुरक्षा के कार्य किये।

भारत में इसका सर्वाधिक प्रभाव जातिवाद की संकुचितता के विरुद्ध पड़ा। इतिहास में यह प्रथम समय था कि मुगल बादशाह—"देवानाम् प्रिय' कहलाये। उनकी राज्य-सभा सर्व धर्मों का समन्वयात्मक सम्मेलन के समान बन गई।

वीर पुरुषों ने राज्यसभा में राजपुरुषों को प्रभावित करके धर्म और समाज की सुरक्षा के प्रयत्न प्रारंभ किये। इस समय संतों, महन्तों, साधुओं, सन्यासियों, ओलियाओं, पीरों और फकीरों ने भी अपने अपने ढंग के कार्य दर्शाये।

"अल्लाह एक है"—"ईश्वर एक है" और इनका स्थान प्रेम में रहा हुआ है—इस प्रकार की ध्वनि गूंज रही थी।

धर्म और राजनीति के एकीकरण का जो श्रेय आज गांधीजी को दिया जारहा है उसका वास्तविक बीजारोपण तो कबीर, नानक और सूफी संतों के समय में ही हो चला था।

जितना महत्व क्रांति की व्यापकता का है उतना ही महत्व उसके प्रणेताओं का भी है। इस दृष्टि से क्रांति के अग्रगण्य नायकों में वीर लौंकाशाह केवल धार्मिक ही नहीं किन्तु सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

धर्मप्राण लौंकाशाह

स्थानकवासी समाज वीरवर लौंकाशाह के पुण्य प्रयत्नो का परिणाम है। जैन समाज की रूढ़िवाद और जडता का नाश करने के लिए उन्होंने अपना जीवन-प्रदीप प्रज्ज्वलित किया और जड़-पूजा के स्थान पर गुण-पूजा की प्रतिष्ठा की। जडता केवल स्वरूप को जानती थी जबकि गुण-पूजा ने उपयोगिता और कल्याणकारिता को बल देकर मानव मात्र को महत्व दिया।

शक्रेन्द्र ने एक बार भगवान महावीर से पूछा कि, "भगवन्! आपके नाम-नक्षत्र पर महाभस्म नाम का नक्षत्र बैठा है, उसका फल क्या है?"

तब भगवान ने उत्तर में कहा कि "हे इन्द्र! इस-भस्म ग्रह के कारण दो हजार वर्ष तक सच्चे साधू-साध्वियों की पूजा मन्द होगी। ठीक दो हजार वर्ष बाद यह ग्रह उतरेगा, तब फिर से जैनधर्म मे नव-चेतना जागृत होगी और योग्य पुरुष तथा साधू सतों का यथोचित सत्कार होगा।"

भगवान महावीर की यह भविष्य वाणी अक्षरशः सत्य निकली। वीर-निर्वाण के ४७० वर्ष बाद विक्रम सवत् प्रारभ हुआ और विक्रम के १५३१ वें वर्ष मे अर्थात् (४७०+१५३१=२००१) वीर-सवत् २००१ के वर्ष मे वीर लौंकाशाह ने धर्म के मूल-तत्त्वों को प्रकाशित किया और इस प्रकार गुण-पूजक धर्म विस्तार पाने लगा।

धर्मप्राण लौंकाशाह के जन्म स्थान, समय और माता पिता के नाम आदि के सबध मे भिन्न-भिन्न अभिप्राय मिलते हैं, किन्तु विद्वान संशोधनों के आधारभूत निर्णय के अनुसार श्री लौंकाशाह का जन्म अरहटवाडे में चौधरी गौत्र के, ओसवाल गृहस्थ सेठ हेमाभाई की पवित्र पति-परायणा भार्या गगाबाई की कूख से विक्रम-संवत् १४७२ कार्तिक शुक्ला पूर्णीमा को शुक्रवार ता० १८—५—१४१५ के दिन हुआ था।

लौंकाशाह का मन तो प्रारभ से ही वैराग्यमय था, किन्तु माता-पिता के आग्रह के कारण उन्होंने स० १४८७ मे सिरोही के सुप्रसिद्ध शाह ओघवजी की विचक्षण तथा विदुषी पुत्री सुदर्शना के साथ विवाह किया। विवाह के तीन वर्ष बाद उन्हें पूर्णचन्द्र नाम का एक पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ। इनके तेईसवे वर्ष की अवस्था में माता का और चौवीसवें वर्ष मे पिता का देहावसान होगया।

सिरोही और चन्द्रावती इन दोनों राज्यों के बीच मे युद्धजन्य-स्थिति के कारण अराजकता और व्यापारिक अव्यवस्था प्रसरित हो जाने से वे अहमदाबाद मे आ गए और वहां जवाहिरात का व्यापार करने लगे अल्प समय मे ही आपने जवाहिरात के व्यापार में अच्छी ख्याति प्राप्त करली।

तत्कालीन अहमदाबाद के बादशाह मुहम्मद उनकी बुद्धि-चातुर्य से अत्यत प्रभावित हुये और लौंकाशाह को अपना खजांची बना लिया।

एक समय मुहम्मदशाह के पुत्र कुतुबशाह ने अपने पिता को मतभेद होने के कारण विष देकर मरवा डाला। ससार की इस प्रकार की विचित्र स्थिति देख कर लौंकाशाह का हृदय कांप उठा। ससार से विरक्त होने के लिये उन्होंने राज्य की नौकरी छोड दी।

श्री लौंकाशाह प्रारभ से ही तत्त्व-शोधक थे। उन्होंने एक लेखक-मडल की स्थापना की और बहुत से लहिये (लिखने वाले) रख कर प्राचीन शास्त्रों और ग्रन्थों की नकलें करवाने लगे तथा अन्य धार्मिक कार्य में अपना जीवन व्यतीत करने लगे।

एक समय ज्ञानसुन्दरजी नाम के एक यती इनके यहा गौचरी के लिये आये। उन्होंने लौंकाशाह

के सुन्दर अक्षर देख कर अपने पास के शास्त्रों की नकल कर देने के लिये कहा। लोंकाशाह ने श्रुत-सेवा का यह कार्य स्वीकार कर लिया।

ज्यों ज्यों वे शास्त्रों की नकल करते गये त्यों त्यों शास्त्रों की गहन बातों और भगवान की प्ररूपणाओं का रहस्य भी समझते गये। उनके नेत्र खुल गये। गच्छ और समाज में बढ़ती हुई शिथिलता और आगमों के अनुसार आचरण का अभाव उन्हें दृष्टि-गोचर होने लगा।

जब वे चैत्यवासियों के शिथिलाचार और अपरिग्रही निर्ग्रन्थों के असि-धारा के समान प्रखर संयम का तुलनात्मक विचार करते तब उनके मन में अत्यंत क्षोभ होता था।

मन्दिरों, मठों और प्रतिमाओं को आगम की कसौटी पर कसने पर उन्हें मोक्ष-मार्ग में कहीं पर भी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा का विधान नहीं मिला। शास्त्रों का विशुद्ध ज्ञान होने से अपने समाज की अन्ध-परम्परा के प्रति उन्हें ग्लानि हुई। शुद्ध जैनागमों के प्रति उनमें अडिग श्रद्धा का आविर्भाव हुआ। उन्होंने दृढ़ता पूर्वक घोषित किया कि "शास्त्रों में बताया हुआ निर्ग्रन्थ धर्म आज के सुखाभिलाषी और सम्प्रदायवाद को पोषण करने वाले कलुषित हाथों में जाकर कनक की कालिमा में विकृत हो गया है। मोक्ष की सिद्धि के लिये मूर्तियों अथवा मंदिरों की जड़-उपासना की आवश्यकता नहीं है किन्तु तप, त्याग, संयम और साधना के द्वारा आत्म शुद्धि की आवश्यक्ता है।"

अपने इस दृढ़ निश्चय के आधार पर उन्होंने शुद्ध शास्त्रीय उपदेश देना प्रारंभ किया। भगवान महावीर के उपदेशों के रहस्य को समझ कर उनके सच्चे प्रतिनिधि बन कर ज्ञान दिवाकर धर्मप्राण लौंकाशाह ने अपनी समस्त शक्ति को संचित कर मिथ्यात्व और आडम्बर के अंधकार के विरुद्ध सिंह-गर्जना की। अल्प समय में ही उन्हें अद्भुत सफलता मिली। लाखों लोग उनके अनुयायी बन गये। सत्ता के लोलुपी व्यक्ति लौंकाशाह की यह धर्म-क्रांति देख कर घबरा गये और यह कहने लग गये कि "लोंकाशाह नाम के एक लहिये ने अहमदाबाद में शासन के विरोध में विद्रोह खड़ा कर दिया है।" इस प्रकार उनके विरोध में उत्सूत्र प्ररूपणा और धर्म भ्रष्टता के आक्षेप किये जाने लगे।

इस प्रकार की इन बातों को अनहिलपुर पाटन वाले श्रावक लखमशी भाई ने सुनीं। लखमशी भाई उस समय के प्रतिष्ठित, सत्ता सम्पन्न तथा साधन-सम्पन्न श्रावक थे। लौंकाशाह को सुधारने के विचार से वे अहमदावाद में आये। उन्होंने लोंकाशाह के साथ गंभीरता पूर्वक बातचीत की। अंत में उनकी भी समझ में आगया कि लोंकाशाह की बात यथार्थ है और उनका उपदेश आगम के अनुसार ही है।

मूर्तिपूजा और लौंकाशाह

मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में श्री लखमशीभाई के प्रश्नों के उत्तर में लौंकाशाह ने कहा कि—"जैनागमों में मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में कहीं भी विधान नहीं है। ग्रन्थों और टीकाओं की अपेक्षा हम आगमों को विश्वसनीय मानते हैं। जो टीका अथवा टिप्पणी शास्त्रों के मूलभूत हेतु के अनुकूल हो वही मान्य की जा सकती है। किसी भी मूल आगम में मोक्ष की प्राप्ति के लिये प्रतिमा की पूजा का उल्लेख नहीं है। दान, शील, तप और भावना अथवा ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप आदि धार्मिक अनुष्ठानों में मूर्ति पूजा अंतर्निहित नहीं हो सकती।"

"शास्त्रों मे पञ्च महाव्रत, श्रावक के बारह व्रत, बारह प्रकार की भावना तथा साधू की दैनिक-चर्या आदि सबका विस्तार युक्त वर्णण है। किन्तु प्रतिमा-पूजा का मूल-आगमों में कहीं पर भी वर्णन नहीं है"।

"ज्ञातासूत्र तथा रायप्पसेणी-सूत्र मे अन्य चैत्यो के वंदन का वर्णन है, किन्तु मुक्ति की सहायता के लिए किसी भी जैन साधू अथवा श्रावक ने नित्य-कर्म के अनुसार तीर्थंकर की प्रतिमा का कहीं पूजन किया हो—ऐसा वर्णन नहीं आता"।

जो लखमशी लौंकाशाह को समझाने के लिए आये थे, वे खुद समझ गये। लौंकाशाह की निर्भीकता और सत्य प्रियता ने उनके हृदय को प्रभावित कर दिया और वे लौंकाशाह के शिष्य बन गये।

एक समय अरहट्टवाडा, सिरोही, पाटण और सूरत इस प्रकार चार शहरों के संघ यात्रा के लिए निकले। वे अहमदाबाद मे आये। उस समय वर्षा की अधिकता के कारण उनको अहमदाबाद में रुक जाना पडा। इसलिये चारों सघों के सघपति-नागजी, दलीचंदजी, मोतीचदजी और शभूजी को श्री लौंकाशाह से विचार विनिमय करने का अवसर मिला।

लौंकाशाह के उपदेश, उनके जीवन, वीतराग-परमात्मा के प्रति सच्ची भक्ति और आगमिक-परम्परा पर गहरी श्रद्धा का उन चारों सघों पर गहरा असर पडा। इस गहरे प्रभाव का यह परिणाम हुआ कि उनमें से पैंतालीस श्रावक लौंकाशाह की प्ररूपणा के अनुसार मुनि बनने के लिए तैयार होगये।

इसी समय ज्ञानजीमुनि हैदराबाद की तरफ विहार कर रहे थे। उनको लौंकाशाह ने बुलाया और वैशाख शुक्ला ३ स० १५२७ मे उन पैंतालीस व्यक्तियों को ज्ञानजी मुनि द्वारा दीक्षा दिलवाई।

इन पैंतालीस मुनियों ने अपने मार्ग-दर्शक और उपदेशक के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने के लिए अपने सघ का नाम "लौंकागच्छ" रखा और अपने आचार-विचार और नियम लौंकाशाह के उपदेश के अनुसार बनाये।

लौंकाशाह का धर्मप्रचार और स्वर्गवास

जैसा कि हमने पहले पढा है कि लौंकाशाह की आगम मान्यता को अब बहुत अधिक समर्थन मिलने लगा था। अब तक तो वे अपने पास आने वालों को ही समझाते और उपदेश देते थे, परन्तु जब उन्हें विचार हुआ कि क्रियोद्धार के लिये सार्वजानिक रूप से उपदेश करना और अपने विचार जनता के समक्ष उपस्थित करना आवश्यक है, तब उन्होंने वैसाख शुक्ला ३ सवत् १५२९ ता० ११—४—१४७ से सरे आम सार्वजनिक उपदेश देना प्रारंभ कर दिया। इनके अनुयायी दिन प्रतिदिन बढने लगे। स्वभावत ये विरक्त तो थे ही किन्तु अब तक कुछ कारणों से दीक्षा नहीं ले सके। जबकि क्रियोद्धार के लिये यह आवश्यक था कि उपदेशक पहले स्वय आचरण करके बताये अतः मिगसर शुक्ला ५ सवत् १५३६ को ज्ञानजी मुनि के शिष्य सोहनजी से आपने दीक्षा अगीकार कर ली। अल्प समय में ही आपके ४०० शिष्य और लाखो श्रावक आपके श्रद्धालु बन गये। अहमदाबाद से लेकर दिल्ली तक आप ने धर्म का जयघोष गुंजा दिया। आपने आगम-मान्य सयम-धर्म का यथार्थ पालन किया और इसी का उपदेश दिया।

अपने जीवन काल मे किसी भी क्रांतिकार की प्रतिष्ठा नही होती। सामान्य जनता उसे एक पागल के रूप में मानती है। यदि वह शक्तिशाली होता है तो उसके प्रति ईर्ष्या से भरी हुई विष की दृष्टि से देखा जाता है और उसे शत्रु के रूप मे मानती है। लौंकाशाह के सम्बन्ध में भी ऐसा ही बना। जब वे दिल्ली से लौट रहे थे तब बीच मे अलवर मे मुकाम किया। उन्होंने अट्ठम (तीन दिन का उपवास) का पारणा किया था।

समाज के दुर्भाग्य से श्री लोंकाशाह का प्रताप और प्रतिष्ठा नहीं सही जाने के कारण उनके शिथिलाचारी और ईर्ष्यालु विरोधी लोगों ने उनके विरुद्ध में कुचक्र रचा। तीन दिन के उस उपवासी तपस्वी को पारने में किसी दुष्ट बुद्धि के प्रभाव से विषयुक्त आहार बहरा दिया। मुनि श्री ने उस आहार का सेवन कर लिया।

औदारिक शरीर और वह भी जीवन की लम्बी यात्रा से थका हुआ होने के कारण उस पर विष का तात्कालिक असर होने लगा। विचक्षण पुरुष शीघ्र ही समझ गए कि उनका अन्तिम काल समीप है, किन्तु महा मानव मृत्यु से घबराता नहीं है। वे शांति में लग गये और चौरासी लाख जीव योनियों को क्षमा कर शुक्लध्यान में लीन हो गये। इस प्रकार इस युग सृष्टा ने अपने जीवन से नये युग को अनुप्राणित करके चैत्र शुक्ला एकादशी संवत् १५४६ ता० १३ मार्च को देवलोकगामी हुए।

लौंकाशाह की परम्परा और स्थानकवासी सम्प्रदाय

लोंकाशाह की परम्परा की देखभाल करने वाला एक विशाल समुदाय तो उनके जीवन-काल में ही खड़ा होगया था, परन्तु उसे कोई विशेष नाम नहीं दिया गया।

लौंकाशाह के उपदेश से जो ४५ श्रीमंतो ने दीक्षा ग्रहण की थी, उन्होंने अपने धर्म गुरु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये अपने गच्छ का नाम "लोंका-गच्छ' रखा। किन्तु उन्होंने यति-धर्म को ही स्वीकार कर उसमे कुछ नवीनता ला दी थी। वे दया धर्म को सर्वोत्कृष्ट धर्म मानते थे और आरभ-समारभ का—यहा तक कि उपाश्रय बनाना तक का निषेध करते थे।

शिथिलाचारी चैत्यवासियो को धर्मप्राण लोंकाशाह के—विशुद्ध शास्त्र-सम्मत निर्ग्रन्थ-धर्म के स्पष्टीकरण से विद्वेष खड़ा होगया और उनके द्वारा उपदिष्ट शुद्ध धर्म का पालन करने वाले सघ को विद्वेषी 'ढूढिया' कहने लगे। किन्तु शुद्ध सनातन-धर्म का आचरण करने वाले सहिष्णु श्रावको ने समभाव से ऐसा विचार किया कि :—

"वास्तव मे यह 'ढूंढिया शब्द लघुता का द्योतक नही है। धार्मिक क्रियाओ के आडम्बर-युक्त आवरणों को भेद कर उसमें से अहिंसामय सत्य-धर्म शोधन (ढूढने) करने वालों को दिया गया 'ढूढिया' शब्द का यह विरुद सत्य ही गौरवान्वित करने वाला है।

इस सबध मे स्व० श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह ने अपनी तटस्थता बताते हुए अपने 'ऐतिहासिक नोंध' मे लिखा है कि "मूलतः इस शब्द का रहस्य इस प्रकार है :—

"ढूंढत ढूँढत ढूंढ लियो सब, वेद, पुराण, किताब मे जोई।
जैसे मही मे माखन ढूंढत, ऐसो दया मे लियो है जोई॥
ढूढत है तब ही वस्तु पावत, बिन ढूढे नहीं पावत कोई।
ऐसो दया में धर्म है ढूँढ्यो, "जीवदया" बिन धर्म न होई।"

लौंकाशाह के १०० वर्ष बाद ही लौंकागच्छ तीन विभागों मे विभाजित होगया और वे गादीधारी यतियों के रूप मे फिरसे रहने लगे—(१) गुजराती लोंकागच्छ (२) नागौरी लौंकागच्छ (३) उत्तरार्ध लौकागच्छ।

लौंकागच्छ के दसवें पाट पर वज्रांगजी यति हुए। उनकी गादी सूरत मे थी। उनका चारित्र बल क्षीण होगया था। उनमें शिथिलता और परिग्रह घर कर गया था अत' उनके समय में भिन्न भिन्न स्थानों पर क्रियोद्धारक संत दिखाई दिये।

सोलहवीं सदी के उत्तरार्ध मे और सतरहवीं सदी मे पांच महापुरुष आगे आये। उन्होंने लौंकाशाह की अमरक्रांति का पुनर्जीवित किया। इन पांच महापुरुषों के नाम इस प्रकार हैं:—

(१) पूज्य श्री जीवराजजी महाराज (२) पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज (३) पूज्य श्री लवजीऋषिजी महाराज (४) पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज (५) पूज्य श्री हरजीऋषीजी महाराज (इनका इतिहास अभी उपलब्ध नहीं है)

पूज्य श्री जीवराजजी महाराज

पूज्य श्री जीवराजजी महाराज का जन्म सूरत शहर मे श्रावण शुक्ला १४ सं० १५८१ को मध्य रात्रि मे श्री वीरजीभाई की धर्म परायणा और पति परायणा भार्या श्रीमती केसर बाई की कुक्षि से हुआ।

जिस घर मे आपका जन्म हुआ वह केवल कुल-दीपक पुत्र के अतिरिक्त और सब दृष्टियों से सम्पन्न था। यह कमी भी बालक जीवराज के जन्म से दूर हो गई। अतः इस बालक का जन्मोत्सव धूम धाम से किया गया। इनका बचपन और लालन-पालन स्नेह मधुर वातावरण में व्यतीत हुआ था। ये अत्यन्त रूपवान थे और वाणी से अत्यंत मधुर थे।

बाल्यावस्था में से ज्यों ही आपने किशोरावस्था मे प्रवेश किया कि आपको पाठशाला में बिठा दिया गया। अपनी विचक्षण-बुद्धि और अद्भुत स्मरण शक्ति के कारण अत्यल्प समय में ही आपने पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर ली।

विद्याभ्यास के बाद एक सुन्दर कन्या के साथ आपका विवाह कर दिया गया। यतियों के सम्पर्क के कारण बचपन से ही श्री जीवराजजी को धार्मिक ज्ञान मिलता रहा था। आप प्रारंभ से ही वैराग्य-भावना वाले थे। विवाह, विलास, ललना और लावण्य, रूप, रस, रंग और गंध ये सब मिल करके भी इन्हें अपनी ओर नहीं खींच सके। उनकी वैराग्य वृत्ति और उनके जल कमलवत निर्लिप्त व्यवहार ने बहुत काल तक उन्हें संसार में नहीं रहने दिया। हृदय मे रही हुई वैराग्य-भावना तरंगित होने लगी। बुद्धि की प्रौढ़ता के साक्षात्कार के लिये उन्हें आह्वान कर रही थी। अंत में संसार-त्याग की प्रबल-भावना और प्रबल लालसा जगी और इसके लिए माता पिता के पास से दीक्षा की आज्ञा मांगी। माता-पिता ने आपको बहुत समझाया किन्तु ज्ञान के आग्रह के सामने संसार का आग्रह नहीं टिक सका। इस प्रकार स० १६०१ में उन्होंने पूज्य श्री जगाजी यति के पास से दीक्षा ग्रहण करली।

दीक्षा ले लेने के पश्चात् आपने आगमों का अभ्यास प्रारंभ किया। ज्यों ज्यों अभ्यास बढ़ता गया त्यों-त्यों आगम प्रणीत साधु-चर्या और यति जीवन दोनों के बीच का अंतर उन्हें दृष्टिगोचर होने लगा और आपको दृढ़ विश्वास होगया कि:—"आगम-प्रणीत—आगम-प्रतिपादित मार्ग से ही आत्मा का कल्याण सम्भवित है।'

जब यति-मार्ग में आगमिक अनुकरण और अपरिग्रही जीवन की तेजस्विता—इन दोनों का अभाव आपको विदित हुआ तब यति मार्ग के प्रति आपको असन्तोष होने लगा। आपके मन में केवल यही गूंज रहा था कि:— "सुत्तस्स मग्गेण चरिज्ज भिक्खू।"

अपने अन्तर्द्वन्द्व की बात आपने गुरुदेव को कही किन्तु क्रान्तिकारियों के अनुरूप तेज और शक्ति

आर्हती दीक्षा लेने के पश्चात् शास्त्रानुसार आपने वेष धारण किया। आज स्थानकवासी साधुओं का जो वेष है उसका प्रामाणिक रूप में पुन प्रचलन श्री जीवराजजी महाराज द्वारा प्रारंभ हुआ।

भद्रबाहु स्वामी के युग में स्थविर कल्प में आने वाले मुनियों ने वस्त्र और पात्र ग्रहण किये थे और दुष्काल की भीषणता के कारण वे अपने पास में दण्ड आदि भी रखने लग गये थे।

श्वेताम्बर-परम्परा में साधुओं के चौदह उपकरण ग्रहण किये गये है। समयानुसार और भी आगे बढ़ा गया और अब कान तक का लम्बा दण्डा (दण्डी) स्थापनाचार्य (ठवणी) और सिद्धचक्र आदि कैसे और कब आये। इसके लिये तो हम इतना ही कह सकते है कि मुखवस्त्रिका, रजोहरण, चादर और चोलपट्टा आदि के अतिरिक्त जो भी वस्तुए है, उन सब का समावेश परिस्थितिवश हुआ है।

इन सब उपकरणों में से श्री जीवराजजी महाराज ने वस्त्र, पात्र, मु हपत्ती, रजोहरण, रजस्त्राण एव प्रमार्जिका के अतिरिक्त अन्य उपकरणों का त्याग किया अथवा आवश्यक्ता पड़ने पर उन्हें गृहस्थिक वस्तुओं का रूप दिया गया। किन्तु स्थापनाचार्य और सिद्धचक्र आदि को तो अनावश्यक बता कर मुनियों के निर्लोभता का मार्ग बताया। उपकरणों के सबध में यह सर्व प्रथम व्यवस्था निर्धारित की गई।

साधुमार्गियों की तीन मान्यताएं

(१) बत्तीस आगम (२) मु हपत्ती (३) चैत्यपूजा की सर्वांशतः विमुक्ति।

(१) श्री जीवराजजी महाराज ने आगमों के विषय में लौंकाशाह की बात स्वीकार की परन्तु आवश्यक-सूत्र को प्रामाणिक मान कर इक्तालीस आगम के बदले बत्तीस आगम माने। लोंकाशाह की तरह ही उन्होंने अन्य टीका और टिप्पणियों की अपेक्षा मूल आगमो को ही श्रद्धापात्र माने। इस परम्परा को स्थानकवासी समाज ने आज तक मान्य रखी है। स्थानकवासी समाज निम्नांकित आगमों को प्रमाणभूत मानता है :—

११ अग-सूत्र.—१ आचारांग २ सूत्रकृतांग ३ स्थानाग ४ समवायांग ५ व्याख्या प्रज्ञप्ति (भगवती) ६ ज्ञाताधर्मकथा ७ उपासकदशाग ८ अतकृत ९ अनुत्तरोपपतिक १० प्रश्न-व्याकरण ११ विपाक-सूत्र

१२ उपांग सूत्र —१ उववाई २ रायप्पसेणी ३ जीवाभिगम ४ पन्नवणा ५ सूर्य-प्रज्ञप्ति ६ जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्ति ७ चन्द्र-प्रज्ञप्ति ८ निरयावलिका ९ कल्पवतसिका १० पुष्पिका ११ पुष्पचूलिका १२ वह्निदशा

४ मूलसूत्रः— १ दशवैकालिक २ उत्तराध्ययन ३ नदी ४ अनुयोगद्वार

४ छेदसूत्र— १ बृहत्कल्प २ व्यवहार ३ निशीथ ४ दशाश्रुतस्कध। १ आवश्यक सूत्रः—इन श शास्त्रों में जैन परम्परा की दृष्टि से आचार, विज्ञान, उपदेश, दर्शन, भूगोल, एव खगोल आदि का वर्णन है।

आचार के लिये—आचारांग, दशवैकालिक आदि, उपदेशात्मक उत्तराध्ययन, वि० दर्शनात्मक सूत्रकृ प्रज्ञापना, रायप्पसेणी नदी, ठाणांग, समवायांग, अनुयोगद्वार। वि० भूगोल-खगोल के लिये जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, च प्रज्ञप्ति, सूर्य प्रज्ञप्ति, वि० प्रायश्चित विशुद्धि के लिये-छेदसूत्र और आवश्यक। जीवन चरित्रों का समावेश उपा दशांग, अनुत्तर ववाइ आदि मे हैं। ज्ञाताधर्म कथांग आख्यानात्मक है। विपाक सूत्र कर्म विषयक और भगव सवादात्मक है।

इन सूत्रों मे जैन-दर्शन के मौलिक तत्त्वों की प्ररूपणा विस्तृत रूप से देखी गई है। अनेकान्त-दर्श आदि के विचार, आ और दृष्टि-समस्त विषय जैनागमों मे सग्रहीत और सग्रथित हैं।

२—जैन धर्म की समस्त शाखाओं में स्थानकवासी शाखा की विशेष रूप से दो विशेषताए है १- स्थानकवासी मुहपत्ती को आवश्यक और २- मूर्तिपूजा को आगम विरुद्ध होने से अनावश्य मानते हैं।

जैन साधुओं का सर्वाधिक प्रचलित और परिचित चिन्ह है "मुहपत्ती" किन्तु दुर्भाग्य से जैन मुनि के जितने प्रतीक हैं उनमे से एक के सबध मे भी समस्त समाज एक मत नहीं हैं।

मुहपत्ती और रजोहरण ये दोनों जैन मुनियों की खास निशानियां हैं। साधु के मुख पर मुहपत्ती औ बगल में रजहरण इन दोनों के पीछे जैनधर्म की अहिंसा की महान भावना रही हुई है। रजोहरण की उपयोगिता के लिए श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों सम्प्रदाय एक मत हैं। दिगम्बर साधु रजोहरण के स्थान पर मोर पिच्छी का उपयोग करते हैं। इसमे वस्तु भिन्नता है किन्तु उद्देश्यभिन्नता नहीं।

मुहपत्ती की उपयोगिता और महत्ता के लिये विवाद है। श्वेताम्बर मुहपत्ती को आवश्यक साधन मानते हैं कि जिसके बिना वाणी और भाषा निरवद्य नहीं हो सकती और वायुकाय के जीवों की रक्षा असभव हो जाती है। किन्तु दिगम्बर मुहपत्ती को अनावश्यक और सम्मूर्च्छिम जीवों की उत्पत्ति का कारण मानते हैं।

शास्त्रों के आधारभूत प्रमाणों को स्वीकार करें तो दिगम्बरों और श्वेताम्बरों के दृष्टिकोण शास्त्रों से भिन्न चले जाते हैं। सैद्धातिक दृष्टि से जैन साधु के आदर्श के सबध मे भगवान महावीर के अहिंसा सिद्धान्त के आधार पर हम विचार कर सकते हैं। श्वेताम्बर शास्त्रों मे मुंहपत्ती के लिये आवश्यक विधान है। साधु के चौदह उपकरणों में मुहपत्ती को मुख्य उपकरण माना गया है। भगवती सूत्र के १६ वें शतक के दूसरे उद्देशे में भगवन् का फरमान है कि —

"गोयमा! जाहेणं सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं अणिजूहित्ताणं भास भासइ, ताहेणं सक्के देविंदे देवराया सावज्ज भास भासइ।"

अर्थात्—हे गौतम! शक्र-देवेन्द्र जब वस्त्रादिक से मुख ढांके विना (खुले मुह) बोलता है, तब उसकी भाषा सावद्य होती है।

अभयदेव सूरि ने अपनी व्याख्या में मुंह ढकने का विधान किया है। उन्होंने लिखा है कि—"वस्त्रादिक से मुख ढांक कर बोलना यह ही सूक्ष्मकाय जीवों का रक्षण है"।

हस्ते पात्रं दधानश्च, तुण्डे वस्त्रस्य धारका।
मलिमान्येव वस्त्राणि, धारयन्तोऽल्प भाषिण.॥

अर्थात्—जैन साधु हाथ में पात्र रखते हैं, मुंह पर वस्त्र धारण करते हैं, वस्त्र मलिन होते हैं और अल्प भाषण करते हैं।

पुराण चाहे जितने अर्वाचीन हों किन्तु मुंहपत्ती मुंह पर बांधना या हाथ में रखना इस विवाद की अपेक्षा तो पुराण प्राचीन ही हैं। इसलिये स्थानकवासियों का मुंह पर मुंहपत्ती बांधना भी प्राचीन है।

हित शिक्षा रास के उपदेशक अधिकार में भी कहा गया है कि—

मुख बांधी ते मुंहपत्ती, हेठी पाटे धार।
अति हेठी दाढी थई, जे तर गले निराधार॥
एक काने ध्वज सम कही, खभे पछेडी ठाम।
केडे खोसी कोथली, नावी पुण्य ने काम॥

जैनागमों में तथा जैन साहित्य में मुंहपत्ती को वाचना, पृच्छना, परावर्तना तथा धर्म-कथा के समय में आवश्यक उपकरण कहा गया है।

वसति प्रमार्जन, स्थंडिल-गमन, व्याख्यान-प्रसंग तथा मृतक-प्रसंग में मुंहपत्ति का आवश्यक विधान करने में आया है।

पन्यास जी महाराज श्री रत्नविजयजी गणि ने "मुंहपत्ती चर्चा सार" नाम की एक पुस्तक का संग्रह किया है, जिसमें इस विषय पर काफी प्रकाश डाला गया है।

स्थानकवासियों से अपने को अलग बताने के लिये ही मूर्तिपूजक मुंह पर मुंहपत्ती नहीं बांधते ऐसा हम श्री विजयानन्द सूरि (आत्मारामजी) महाराज ने कार्तिक वद अमावस्या सं० १९६७ बुधवार को सूरत से मुनि श्री आलमचन्दजी महाराज को जो पत्र लिखा था, उस पर से जान सकते हैं। श्री विजयवल्लभ सूरिजी जो कि उस समय वल्लभविजयजी कहलाते थे। उनके द्वारा लिखित पत्र की प्रतिलिपि इस प्रकार है.—

४ मूलसूत्र:— १ दशवैकालिक २ उत्तराध्ययन ३ नंदी ४ अनुयोगद्वार

४ छेदसूत्र:— १ वृहत्कल्प २ व्यवहार ३ निशीथ ४ दशाश्रुतस्कध । १ आवश्यक सूत्र:—इन प्राचीन शास्त्रों में जैन परम्परा की दृष्टि से आचार, विज्ञान, उपदेश, दर्शन, भूगोल, एव खगोल आदि का वर्णन है।

आचार के लिये—आचारांग, दशवैकालिक आदि, उपदेशात्मक उत्तराध्ययन, वि० दर्शनात्मक सूत्रकृतांग, प्रज्ञापना, रायप्पसेणी नदी, ठाणांग, समवायांग, अनुयोगद्वार। वि० भूगोल-खगोल के लिये जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्य प्रज्ञप्ति, वि० प्रायश्चित विशुद्धि के लिये-छेदसूत्र और आवश्यक। जीवन चरित्रों का समावेश उपासक दशांग, अनुत्तर ववाइ आदि मे हैं। ज्ञाताधर्म कथांग आख्यानात्मक है। विपाक सूत्र कर्म विपयक और भगवती-सवादात्मक है।

इन सूत्रों मे जैन-दर्शन के मौलिक तत्त्वों की प्ररूपणा विस्तृत रूप से देखी गई है। अनैकान्त-दर्शन आदि के विचार, आ और दृष्टि-समस्त विषय जैनागमों मे सग्रहीत और सग्रथित हैं।

२—जैन धर्म की समस्त शाखाओं में स्थानकवासी शाखा की विशेष रूप से दो विशेषताएं है। १- स्थानकवासी मुहपत्ती को आवश्यक और २- मूर्तिपूजा को आगम विरुद्ध होने से अनावश्यक मानते हैं।

जैन साधुओं का सर्वाधिक प्रचलित और परिचित चिन्ह है "मुहपत्ती" किन्तु दुर्भाग्य से जैन मुनियों के जितने प्रतीक हैं उनमें से एक के सबध मे भी समस्त समाज एक मत नहीं है।

मुहपत्ती और रजोहरण ये दोनों जैन मुनियों की खास निशानियां हैं। साधु के मुख पर मुहपत्ती और वगल में रजोहरण इन दोनों के पीछे जैनधर्म की आत्माहिंसा की महान भावना रही हुई है। रजोहरण की उपयोगिता के लिए श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों सम्प्रदाय एक मत हैं। दिगम्बर साधु रजोहरण के स्थान पर मोर पिच्छी का उपयोग करते हैं। इसमे वस्तु भिन्नता है किन्तु उद्देश्यभिन्नता नहीं।

मुहपत्ती की उपयोगिता और महत्ता के लिये विवाद है। श्वेताम्बर मुहपत्ती को आवश्यक साधन मानते हैं कि जिसके बिना वाणी और भाषा निरवद्य नहीं हो सकती और वायुकाय के जीवों की रक्षा असभव हो जाती है। किन्तु दिगम्बर मुहपत्ती को अनावश्यक और सम्मूर्च्छिम जीवों की उत्पत्ति का कारण मानते हैं।

शास्त्रो के आधारभूत प्रमाणों को स्वीकार करें तो दिगम्बरों और श्वेताम्बरों के दृष्टिकोण शास्त्रों से भिन्न चले जाते हैं। सैद्धातिक दृष्टि से जैन साधु के आदर्श के सबध मे भगवान महावीर के अहिंसा सिद्धान्त के आधार पर हम विचार कर सकते हैं। श्वेताम्बर शास्त्रों मे मुंहपत्ती के लिये आवश्यक विधान है। साधु के चौदह उपकरणों मे मुहपत्ती को मुख्य उपकरण माना गया है। भगवती सूत्र के १६ वें शतक के दूसरे उद्देशे में भगवन् का फरमान है कि—

"गोयमा! जाहेण सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं अणिजूहित्ताण भास भासइ, ताहेण सक्के देविंदे देवराया सावज्ज भास भासइ।"

अर्थात्—हे गौतम! शक्र-देवेन्द्र जब वस्त्रादिक से मुख ढांके बिना (खुले मुंह) बोलता है, तब उसकी भाषा सावद्य होती है।

अभयदेव सूरि ने अपनी व्याख्या मे मुंह ढकने का विधान किया है। उन्होंने लिखा है कि-"वस्त्रादिक से मुख ढांक कर बोलना यह ही सूक्ष्मकाय जीवों का रक्षण है"।

श्री धर्मसिंहजी ने गुरु की आज्ञा मानली और श्रुत धर्म की रक्षा करने के लिए आपने सूत्रों के ऊपर टब्बे लिखना आरंभ किया। आपने सत्ताईस सूत्रों के टब्बे लिखे। ये टब्बे इतने सुन्दर ढंग से लिखे गये कि इन टब्बों को आज तक स्थानकवासी साधु प्रामाणिक मानते आये हैं। सुन्दरता और स्पष्टता इसी से जानी जा सकती है कि गुजराती भाषा होने पर भी स्थानकवासी साधुओं को समझने में कोई अड़चन पैदा नहीं होती।

उसके बाद आपने फिर से गुरु को निवेदन किया कि—"अब विशुद्ध संयम पालन करने के लिये बाहर निकल जाने की मेरी तीव्र लालसा है। यदि आप तैयार होते हो तो हम दोनों शुद्ध चारित्र के मार्ग की ओर मुड़ें।"

गुरु ने कहा कि—"हे देवानुप्रिय! तुम देख सकते हो कि मैं इस गादी और वैभव को छोड़ सकने की स्थिति में नहीं हूं। फिर भी तुम्हारे कल्याण के मार्ग में विघ्न रूप बनना मैं नहीं चाहता। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो तुम आगमानुसार चारित्र का पालन करो। किन्तु यहां से निकलने पर तुम्हारे सामने अनेक प्रकार के विरोध खड़े होंगे। उनके सामने टिक सकने की क्या तुममें क्षमता है? यह जानने के लिए मुझे तुम्हारी परीक्षा लेनी होगी। अतः आज रात को दिल्ली दरवाजे के बाहर (अहमदाबाद में) जो दरगाह है—वहां आज रात भर रह कर कल सवेरे मेरे पास आना।"

धर्मसिंह मुनि ने गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करके दरगाह में प्रवेश किया और उसके अधिकारी से रात्रिवास करने की आज्ञा मांगी।

यह वह समय था जब अहमदाबाद का इतना विकास नहीं हुआ था। रात को शहर से बाहर कोई भी नहीं निकल सकता था। और उस दरगाह में तो रात्रि में कोई भी नहीं रह सकता था। अतः वहाँ के मुसलमान अधिकारी ने कहा कि:—"महाराज यहाँ रात को कोई नहीं रह सकता। रात के समय जो भीतर जाता है उसका केवल शव ही प्रातः काल हाथ लगता है। आप व्यर्थ ही क्यों मरना चाहते हैं?" किन्तु धर्मसिंहजी ने कहा कि:—"मुझे अपने गुरु की आज्ञा है कि मैं रात को यहां रहूँ। अतः आप मुझे आज्ञा दीजिये।"

वहां के लोगों ने विचारा कि यह कोई अद्भुत आदमी है। यदि यह मरना ही चाहता है तो हम क्या

"मुंहपत्ती विषे हमारा कहना इतना ही है कि मुंहपत्ती बांधनी अच्छी है और घणे दिनों से परम्परा चली आई है, इनको लोपना अच्छा नहीं है। हम बधनी अच्छी जाणते हैं, परन्तु हम ढूंढिये लोक में से मुंहपत्ती तोड़के निकले हैं, इस वास्ते हम बध नहीं सकते है और जो बधनी इच्छीए तो यहां बडी निंदा होती है।"

श्री जीवराजजी महाराज ने भी शास्त्रों के प्रमाणानुसार और उभय पक्षो के तर्कों पर विचार करके मुंह पर मुंहपत्ती बांधने का निश्चय किया।

साम्प्रदायिकता मनुष्य के मानस को गुलाम बना देती है। मुंहपत्ती की उपयोगिता स्वीकार करने वाले भी मुंहपत्ती मे उपयोग मे लिये जाने वाले धागे का विरोध करते हैं। किन्तु एक कान से दूसरे कान तक मुंहपत्ती बांधने मे कपडा अधिक काम मे लाना पडेगा। इस दृष्टि से यदि इसका काम केवल थोडे से धागे से ही चल सकता हो तो उतना ही परिग्रह कम हुआ। परिग्रह बढाने मे धर्म है या घटाने मे ? इन सब दृष्टियो मे विचार कर जीवराजजी महाराज ने धागे के साथ मुंहपत्ति बाधना स्वीकार किया।

मूर्तिपूजा के सबंध में लोकाशाह के विचार हम जान गये हैं उन्ही विचारो को श्री जीवराजजी महाराज ने मान्य और मूर्तिपूजा को धार्मिक विधियो मे अनावश्यक माना।

श्री जीवराजजी महाराज यति-धर्म मे से जब अलग हुए तब उनके साथ अन्य पांच यति भी निकले और उन्होंने आपको पूरा सहयोग दिया।

इनका शुद्ध सयम-मार्ग देखकर लोगों की उनके प्रति भाव-भक्ति बढ़ने लगी, इस कारण यति-वर्ग ने उनके विरुद्ध में विरोध खडा करना प्रारभ किया। किन्तु उन सब विरोधों से न घबराते हुए वे अहिंसा के सजग प्रहरी बन कर अनेक प्रान्तों में घूमते रहे। मालव-प्रदेश मे धर्म जागृति लाने का श्रेय भी आपको ही है।

अनेक प्रान्तों मे विचरते हुए वे आगरा आये। यहां आपका शरीर निर्बल बनने लगा। अंतिम समय निकट जान कर, आहार का सम्पूर्ण रूप से परित्याग कर आपने समाधि-पूर्वक काल-धर्म प्राप्त किया।

आपके समय मे ही आपके अनुयायियों की सख्या बहुत अधिक बढ गई थी। आपके स्वर्गवास के पश्चात् आचार्य धनजी, विष्णुजी, मनजी तथा नाथूरामजी हुए।

कोटा-सम्प्रदाय, अमरचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय, स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय, नाथूरामजी महाराज की सम्प्रदाय, स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय एव नाथूरामजी महाराज की सम्प्रदाय आदि दस-ग्यारह सम्प्रदायें आपको अपना मूल-पुरुष मानती हैं।

मुनि श्री धर्मसिंहजी

जिस प्रकार श्री लौंकाशाह ने जडवाद और आडम्बर के विरोध में मोर्चा खडा किया था, उसी प्रकार श्री धर्मसिंहजी महाराज ने भी लौंकागच्छ मे आई हुई कुरीतियों को उन्मूलन करने के लिए उद्घोषणा की।

लौंकाशाह की सेना की आतरिक स्थिति को सुदृढ करने वाले स्थानकवासी समाज के मूल प्रणेताओं मे आप द्वितीय हैं।

श्री धर्मसिंहजी महाराज का जन्म सौराष्ट्र के हालार प्रान्त के जामनगर में हुआ था। दशा श्रीमाली जिनदास आपके पिता और शिवादेवी आप की माता का नाम था।

एक समय लौंकागच्छीय मुनि श्री देवजी का व्याख्यान श्रवण कर आपको ससार के प्रति वैराग्य उत्पन्न हुआ और दीक्षा लेने का निर्णय किया। पन्द्रह वर्षीय कुमार धर्मसिंहजी ने माता-पिता से जब आज्ञा मांगी

तो माता-पिता ने आपको बहुत समझाया किन्तु प्रबल वैराग्य-भावना के कारण वे झुके नहीं। इतना ही नही आपकी वैराग्य-वृत्ति से प्रभावित होकर इनके माता पिता ने भी आपके साथ दीक्षा ग्रहण कर ली।

अप्रतिम बुद्धि तथा विलक्षण प्रतिभा का आपको प्रकृति से वरदान था। अल्प समय में ही बत्तीस आगम, तर्क, व्याकरण, साहित्य तथा दर्शन का ज्ञान आपने प्राप्त कर लिया। श्री धर्मसिंहजी मुनि एक साथ दोनों हाथों से लिख सकते थे और अवधान कर सकते थे। किन्तु विद्वत्ता के साथ चारित्र का सामान्यतया मेल बहुत कम दिखने मे आता है। तब श्री धर्मसिंहजी में विद्वत्ता के साथ २ चारित्र की उत्कृष्टता भी विद्यमान थी।

आपके हृदय में यतियों के शिथिलाचारी जीवन के प्रति असतोष जागृत हुआ। आपने अत्यन्त नम्रता-पूर्वक यति श्री शिवजी के सन्मुख निवेदन किया कि—"गुरुदेव! पांचवे आरे का बहाना लेकर आज जो शिथिलाचार का पोषण हो रहा है, उसको देखकर आपके समान सिंह पुरुष भी यदि विशुद्ध मुनि-धर्म का पालन नही करेंगे तो फिर कौन करेगा? आप मुनि-धर्म के पालन की प्रतिज्ञा लीजिये—मैं भी आपके साथ आज्ञानुसार सयम का पालन करूंगा।" गुरु ने अत्यन्त प्रेम-पूर्वक शिष्य की बात सुनी और कुछ समय तक प्रतीक्षा करने के लिये कहा।

श्री धर्मसिंहजी ने गुरु की आज्ञा मानली और श्रुत-धर्म की सेवा करने के लिए आपने सूत्रों के ऊपर टब्बा लिखना आरभ किया। आपने सत्ताईस सूत्रों के टब्बे लिखे। ये टब्बे इतने सुन्दर ढग से लिखे गये कि इन टब्बों को आज तक स्थानकवासी साधु प्रामाणिक मानते आये हैं। सुन्दरता और स्पष्टता इसी से जानी जा सकती है कि गुजराती भाषा होने पर भी स्थानकवासी साधुओं के समझने मे कोई अड़चन पैदा नहीं होती।

इसके बाद आपने फिर से गुरु को निवेदन किया कि—"अब विशुद्ध सयम पालन करने के लिये बाहर निकल जाने की मेरी तीव्र लालसा है। यदि आप तैयार होते हों तो हम दोनों शुद्ध चारित्र के मार्ग की ओर मुड़ें।"

गुरु ने कहा कि:—"हे देवानुप्रिय! तुम देख सकते हो कि मैं इस गादी और वैभव को छोड सकने की स्थिति में नहीं हूँ। फिर भी तुम्हारे कल्याण के मार्ग मे विघ्न रूप बनना मैं नहीं चाहता। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो तुम आगमानुसार चारित्र का पालन करो। किन्तु यहां से निकलने पर तुम्हारे सामने अनेक प्रकार के विरोध खडे होंगे। उनके सामने टिक सकने की क्या तुममे क्षमता है? यह जानने के लिए मुझे तुम्हारी परीक्षा लेनी होगी। अत: आज रात को दिल्ली दरवाजे के बाहर (अहमदाबाद मे) जो दरगाह है—वहा आज रात भर रह कर कल सवेरे मेरे पास आना।"

धर्मसिंह मुनि ने गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करके दरगाह मे प्रवेश किया और उसके अधिकारी से रात्रिवास करने की आज्ञा मांगी।

श्री धर्मदासजी महाराज

पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज का जन्म अहमदाबाद के पास 'सरखेज' नामक ग्राम मे सघपति जीवनलाल रालीदासजी की धर्मपत्नि हीराबाई की कुक्षि से चैत्र शुक्ला ११ स० १७०१ मे हुआ था। आप जाति के भावसार थे। उस समय सरखेज मे ७०० घर थे। ये सब लौंकागच्छी थे।

सरखेज मे उस समय लौंकागच्छ के केशवजी यति के पक्ष के श्री पूज्य तेजसिंहजी विराजते थे। आपके पास ही श्री धर्मदासजी ने धार्मिक-ज्ञान प्राप्त किया।

एक समय 'एकल-पात्रिया' पथ के एक अगुआ श्री कल्याणजी भाई अपने पथ के प्रचारार्थ सरखेज आये। धर्मदासजी प्रारभ से ही वैराग्यमय थे अतः कल्याणजी के उपदेश का आप पर उत्तम प्रभाव पड़ा शास्त्रों मे वर्णित शुद्ध सयमी-जीवन के आचारों के साथ तुलना करते हुए यतियों के शिथिलाचारी जीवन से उन्हें दुःख हुआ। इस कारण यतियो से दीक्षा लेने की आपकी इच्छा नहीं थी। कल्याणजी भाई के उपदेश से प्रभावित होकर माता पिता से आज्ञा लेकर धर्मदासजी उनके शिष्य बन गये।

एक वर्ष तक कल्याणजी के सम्पर्क मे रहकर आपने शास्त्राभ्यास किया। शास्त्रों का अभ्यास करते हुए उनकी एकल-पात्रिया-पथ से श्रद्धा हट गई। आपने इस अज्ञान-मूलक मान्यता का परित्याग किया और वि० स० १७१६ मे अहमदाबाद के दिल्ली दरवाजे के बाहर स्थित बादशाह की वाटिका मे स्वतन्त्र-रूप से शुद्ध-दीक्षा अगीकार करली।

ऐसा कहा जाता है कि एक समय अहमदाबाद मे आपका पूज्य श्री धर्मसिंहजी म० से विचार-विनिमय हुआ था किन्तु आठ कोटि और आयुष्य टूटने की मान्यता पर एकमत नहीं हो सके।

इसी प्रकार लवजी ऋषिजी के साथ भी आपका मिलन हुआ था, किन्तु यहां भी सात विषयों पर समाधान नहीं हो सकने के कारण आपने स्वतन्त्र-रूप से दीक्षा ग्रहण की। फिर भी मुनि धर्मसिंहजी और धर्मदासजी महाराज के बीच में अत्यधिक प्रेम था।

दीक्षा के बाद पहले दिन गौचरी लेने के लिये आप शहर मे गये। अकस्मात् वे ऐसे घर मे पहुचे जहां साधुमार्गियों के द्वेषी रहते थे। उन्होंने मुनि को आहार के बदले राख बहराई। पवन के कारण राख हवा मे उड गई और थोडी सी पात्र मे रह गई। धर्मदासजी महाराज यह राख लेकर शहर में विराजित धर्मसिंहजी महाराज के पास आये और गौचरी मे राख मिलने की घटना कह सुनाई।

धर्मसिंहजी मुनि ने कहा कि:—"धर्मदासजी! इस राख का उडना यह सूचित करता है कि उसके समान आपकी कीर्ति भी फैलेगी और आपकी परम्परा खूब विकसित होगी। जिस प्रकार बिना राख के घर नहीं होता, उसी प्रकार ऐसा कोई ग्राम अथवा प्रान्त नहीं रहेगा जहा आपके भक्त न होंगे।"

यह घटना वि० स० १७२१ की है। आपके गुरुदेव का स्वर्गवास आपकी दीक्षा के २१ दिन के बाद मिगसर वद ५ को हुआ था। इस कारण लोगों मे ऐसा भ्रम फैल गया कि धर्मदासजी म० स्वयबोधी थे।

अब धर्मदासजी पर पूर्ण सम्प्रदाय की जिम्मेवरी थी और आपने इस जिम्मेवरी को अत्यन्त कुशलतापूर्वक निभाई। भारत के अनेक प्रान्तों मे विचरण कर आपने धर्म का प्रचार किया।

आपके गुणों से आकर्षित होकर आपके अनुयायी-सघ ने स० १७२१ मे मालव-प्रान्त के मुख्य नगर उज्जैन मे भव्य-समारोह के साथ आपको आचार्य-पद से विभूषित किया।

पूज्य धर्मदासजी महाराज ने कच्छ, काठियावाड़, वागड, खानदेश, पजाव, मेवाड, मालवा, हाडौती और ढुंढार आदि प्रांतों मे धर्म का प्रचार करते हुए परिभ्रमण किया।

श्री धर्मदासजी महाराज की शिष्य-परम्परा तत्कालीन मुनियों से सर्वाधिक है। आपके ६६ शिष्य थे, जिनमें से ३५ तो सस्कृत और प्राकृत के विद्वान थे। इन ३५ विद्वान मुनियों के साथ शिष्यो का एक-एक समुदाय बन गया था।

इतने शिष्यों और प्रशिष्यों के बडे परिवार की व्यवस्था तथा शिक्षण का प्रबन्ध करना एक व्यक्ति के लिये अत्यन्त कठिन था। इस कारण पूज्य धर्मदासजी महाराज ने धारा नगरी मे समस्त शिष्य-परिवार को एकत्रित कर चैत्र शुक्ला १३ स० १७७२ को २२ सम्प्रदायों मे विभाजित कर दिया। स्थानकवासी समाज मे २२ सम्प्रदायों का नाम अत्यधिक प्रचलित है। इसे 'बाईस टोला' भी कहा जाता है। ये एक ही गुरु के परिवार की अलग-अलग बाईस टोलिया है। इन बाईस सम्प्रदायों के नाम इस प्रकार हैं—

(१) पूज्य श्री धर्मदासजी म० की सम्प्रदाय (२) पू० श्री धन्नाजी म० की स० (३) पू० श्री लालचन्दजी म० की स० (४) पू० श्री मन्नाजी म० की स० (५) पू० श्री बडे पृथ्वीराजजी म० की स० (६) पू० श्री छोटे पृथ्वीराजजी म० की स० (७) पू० श्री बालचन्दजी म० की स० (८) पू० श्री ताराचन्दजी म० की स० (९) पू० श्री प्रेमचन्द जी म० की स० (१०) पू० श्री खेतसीजी म० की स० (११) पू० श्री पदार्थजी म० की स० (१२) पू० श्री लोकमलजी म० की स (१३) पू० श्री भवानीदासजी म० की स० (१४) पू० श्री मलूकचन्दजी म० की स० (१५) पू० श्री पुरुषोत्तमजी म० की स० (१६) पू० श्री मुकुटरायजी म० की स० (१७) पू० श्री मनोहरदासजी म० की स० (१८) पू० श्री रामचन्द्रजी म० की स० (१९) पू० श्री गुरुसहायजी म० की स० (२०) पू० श्री बाघजी म० की स० (२१) पू० श्री रामरतनजी म० की स० (२२) पू० श्री मूलचन्दजी म० की स०। इस प्रकार २२ मुनियों के नाम से २२ सम्प्रदायों का गठन हुआ।

पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के स्वर्गवास की घटना उनके जीवन काल से भी अधिक उज्जवल और रोमांचक है। जब आपने यह सुना कि धारा नगरी मे आपके एक शिष्य ने सथारा धारण किया है किन्तु मन के भाव शिथिल पड जाने के कारण और अनशन की प्रतिज्ञा नहीं निभा सकने के कारण तोडना चाहता है। तो यह बात सुनते ही आपने यह सन्देश पहुँचाया कि मैं वहां आता हूँ और मेरे आने तक तुम प्रतिज्ञा भग न करना। उस मुनि ने आपकी आज्ञा मान ली।

पूज्य श्री ने शीघ्रता से विहार किया और सध्या होते होते धारा नगरी मे पहुँच गये। भूख और प्यास से व्याकुल व्याकुल सथारा लिये हुए मुनि अन्न और जल के लिए बिल-बिला रहे थे। पूज्य श्री ने इस मुनि को प्रतिज्ञा पालन के लिए खूब समझाया किन्तु मुनि के साहस और सहनशीलता की शक्ति का बांध टूट चुका था। अत उन पर उपदेश का कुछ भी असर न पडा।

पूज्य श्री ने शीघ्र ही अपने कधे पर का बोझ उतारा। सम्प्रदाय की जिम्मेवरी मूलचन्दजी महाराज को दी। समस्त सघ के सन्मुख अपना मतव्य प्रगट किया और शीघ्र ही धर्म की दीप-शिखा को जाज्वल्यमान बनाये रखने के लिये अपने उस शिष्य के स्थान पर खुद सथारा करके बैठ गये।

शरीर का धर्म तो विलय होने का ही है। क्रमश. शरीर कृश होता गया। एक दिन शांत-वातावरण मे जब वर्षा की झिरमिर २ बूदें पड़ रही थीं तब ऐसे सुखद और स्निग्ध समय मे नश्वर देह को त्याग कर आप पडित-मरण को प्राप्त हुए।

स० १७६६ अथवा १७२७ मे धर्म की कीर्ति की रक्षा के लिए आपने अपने शरीर का इस प्रकार बलिदान दिया।

धन्य हो उस महान् आत्मा को!!

स्थानकवासी समाज का पुनरुत्थान

पू० श्री धर्मसिंहजी महाराजकी सम्प्रदाय सुसंगठित और अविछिन्न रही। उनके सिवाय पूज्य श्री जीवराजजी महाराज, लवजी ऋषिजी महाराज और धर्मदासजो तथा हरजी ऋषिजी महाराज की शिष्य-परम्परा में विभाजन होकर अनेक सम्प्रदायें खडी होगईं। थोडे-थोडे विचार-मतभेद को लेकर एक दूसरे के बीच मे से एकता की भावना लुप्त होती गई। "नमो लोए सव्व साहूण" की आराधना करने वाले श्रावको के हृदयों में भी "यह मेरे गुरू "वे तुम्हारे गुरू" की मनोवृत्ति जागृत होगई थी। इस प्रकार अत्यन्त विशाल होता हुआ भी स्थानकवासी समाज छिन्न-भिन्न होने की हालत मे होगया।

सन् १८६४ मे दिगम्बर भाइयो ने आंतरिक और साम्प्रदायिक दल बन्दियों से ऊपर उठ कर एक दिगम्बर कॉन्फरन्स की स्थापना की। सन् १६०२ मे मूर्तिपूजक कॉन्फरन्स का निर्माण हुआ।

स्था० समाज की खभात सम्प्रदाय के उत्साही मुनि श्री छगनलालजी महाराज ने स्थानकवासी समाज का सगठन के प्रति ध्यान आकर्षित कराया। जैन-समाज के सुविख्यात लेखक, निडरवक्ता, प्रसिद्ध-दार्शनिक, स्वतन्त्र-विचारक स्व० श्री वाड़ीलाल मोतीलाल शाह ने श्रावक-समाज को एकीकरण के लिए प्रेरणा दी।

सामाजिक कार्यो मे तो श्रावक एक रूप थे ही, किन्तु धार्मिक कार्यों मे साम्प्रदायिकता के कारण विभाजित हो गये थे। समय को समझ कर, कलह के परिणामें को देखकर सभी लोगों ने एकीकरण की योजना की सराहना की, जिसके फलस्वरूप सन् १६०६ मे अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स की स्थापना की गई।

स्था० जैन कॉन्फरन्स के अधिवेशन किस समय और कहां २ हुए उनका विवरण इस प्रकार है:—

प्रथम्	सन् १६०६	मौरवी		द्वितीय	सन् १६०८	रतलाम
तृतीय	,, १६०६	अजमेर		चतुर्थ	,, १६१०	जालन्धर (पजाब)
पचम	,, १६१३	सिकन्द्राबाद		षष्ठम	,, १६२५	मलकापुर
सप्तम	,, १६२७	बम्बई		अष्टम	,, १६२७	बीकानेर
नवम	,, १६३३	अजमेर				

अजमेर के नवमे अधिवेशन के समय स्थानकवासी समाज के साधुओं का सम्मेलन भी हुआ था।

सम्राट खारवेल, राजा सप्रति, मथुरा तथा अत में वल्लभीपुर के साधु-सम्मेलन के १४७६ वर्ष पश्चात् विविध सम्प्रदायों के साधुओं को एक साथ और एक ही जगह देखने का प्रसग अहोभाग्य से स्थानकवासी समाज को अजमेर में ही मिला।

उस समय स्थानकवासी-समाज मे ३० सम्प्रदायें थीं। उनमे से २६ सम्प्रदायों के प्रतिनिधि इस सम्मेलन में उपस्थित हुए। साधु-सम्मेलन मे मुनियों की सख्या ४६३ और साध्वियों की सख्या ११३२ थी। इस प्रकार कुल श्रमण-सघ मे १५६५ साधु-साध्वी विराजमान थे।

इस सम्मेलन मे दूर-दूर के साधुओं का पारस्परिक-परिचय और उनमे एकता का बीजारोपण हुआ।

इसके बाद दसवां अधिवेशन घाटकोपर मे और ग्यारहवां अधिवेशन मद्रास मे हुआ। उसी समय बृहत् साधु-सम्मेलन यथाशीघ्र भरने का निर्णय किया गया।

अजमेर साधु-सम्मेलन के समय के बीजारोपण का फलरूप परिणाम सादड़ी बृहत्-साधु-सम्मेलनके समय देखा गया। सम्मेलन मे सम्मिलित मुनिवरों ने विचार-विमर्ष के पश्चात् अपनी-अपनी सम्प्रदायों को एक बृहत्-सघ मे विलीन करना स्वीकार किया।

वैसाख शुक्ला ३ (अक्षय-तृतीया) के पवित्र दिन सम्मेलन प्रारंभ हुआ और वैसाख शुक्ला ७ को श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-सघ के नेतृत्व मे सघ-प्रवेश-पत्र पर हस्ताक्षर कर के पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज को आचार्य के रूप मे स्वीकार कर बाईस सम्प्रदायों के एक महान श्रावक-सघ का निर्माण हुआ।

व्यवस्था के लिये समितियां निर्माण की गईं। कितने ही महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुए और कॉन्फरन्स ने मुनि-सम्मेलन के सभी प्रस्तावों का उत्साह पूर्वक अनुमोदन किया और सम्पूर्ण सहयोग देने की प्रतीज्ञा की। मुनि-सम्मेलन के निर्देशानुसार श्रावक-सघ को सुव्यवस्थित बनाने की तरफ भी ध्यान दिया गया। इसके साथ साधु-सम्मेलन के प्रस्तावों को अमल में लाने के लिए इक्कावन सभासदों की एक संघ-ऐक्य स० समिति की नियुक्ति हुई।

१७ फरवरी सन् १९५३ को मत्री मुनिवरों तथा निर्णायक-समिति के मुनिवरों का सम्मेलन सोजत में हुआ। सादड़ी-सम्मेलन के चातुर्मास निकट होने के कारण पूरी तरह से विचार-विमर्ष नहीं हो सका था। अतः जो ` अधूरे रह गये थे, उनके संबध में यहां विचार किया गया।

इस समय मे मुनियों की एकता, पारस्परिक सद्भाव, आत्म-साधना और समाज-कल्याण की भावना सर्व मुनिराजों के हृदय में छलकती थी।

इस सम्मेलन में सचित्ताचित्त, ध्वनिवर्धक-यन्त्र, तिथि-निर्णय के प्रश्न आदि पर गभीरता से विचार-विनिमय हुआ, किंतु अतिम रूप से निर्णय नहीं हो सका। पूज्य श्री ज्ञानचन्दजी म० सा० के स्थ० मुनि श्री रत्नचंद्रजी म० आदि ठा० ५ तथा श्री नन्द कुँवरजी म० की सतियां जो वर्द्धमान स्था० श्रमण-संघ में सम्मिलित नहीं हुईं। उनके प्रतिनिधि रूप मे प० समर्थमलजी म० सा० के साथ विचार-विनिमय हुआ। फलतः उनसे वात्सल्य सबध आगामी-सम्मेलन तक कायम हुआ। विवादास्पद बातों पर सब साथ मिल कर विचार कर सकें इसके लिए उपाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज, प्रधानमत्री श्री आनन्द ऋषिजी महाराज, सहमत्री श्री हस्तीमलजी महाराज, कविरत्न श्री अमरचन्दजी महाराज, शाति-रक्षक व्याख्यान-वाचस्पति श्री मदनलालजी महाराज—इन पाच बड़े सतों का एकत्रित-चातुर्मास कराने का निर्णय किया गया। प० मुनि श्री समर्थमलजी महाराज का चातुर्मास भी कराया गया। इसके लिये जोधपुर श्री-सघ की विनती स्वीकृत की गई। विवादास्पद वस्तुओं का उपयोग आगामी सम्मेलन तक न करने का आदेश दिया गया इस प्रकार अत्यन्त प्रेम पूर्वक इस सम्मेलन की समाप्ति हुई।

———

श्री लौंकागच्छ और पांच धर्मसुधारकों की परम्परा

श्री लौंकाशाहजी के बाद लौंकागच्छ के नाम से पुनः यति-परम्परा निम्न प्रकार चालू हो गई:—

श्री भाणजी, भिदाजी, भीमाजी, जगमालजी, सखोजी, रूपचदजी तथा श्री जीवाजी।

श्री जीवाजी महाराज के तीन शिष्य थे.—जगाजी महाराज, बड़े वरसिंहजी, तथा कुंवरजी ऋषि।

१. जगाजी महाराज के शिष्य श्री जीवराजजी हुए। आपने वि० स० १६०८ में क्रियोद्धार किया।

२ बड़े वरसिंहजी महाराज और बाद की परम्परा इस प्रकार है:—छोटे वरसिंहजी, यशवन्त ऋषिजी, रूपसिंहजी, दामोदरजी, कर्मसिंहजी, केशवजी, और तेजसिंहजी।

अ:-केशवजी पक्ष के यतियों मे से वज्रांगजी के पाट पर श्री लवजी ऋषिजी वि० स० १६६२-१७०४ मे महावीर स्वामी के ७७ वें पाट पर हुए।

ब:-केशवजी के शिष्य तेजसिंहजी के समय मे एकल-पात्रिया-श्रावक कल्याणजी के शिष्य धर्मदासजी हुए। लौंकागच्छ की यति-परपरा मे से ५ सुधारकों की परम्परा इस प्रकार चली :—

क:-केशवजी यति की परम्परा मे श्री हरजी ऋषि हुए। आपने स० १७८५ मे क्रियोद्धार किया।

३. कुंवरजी ऋषि के बाद, श्रीमलजी, श्री रत्नसिंहजी, केशवजी, और शिवजी ऋषि हुए।

अ:-श्री शिवजी ऋषिजी के दो शिष्य हुए :—श्री सघराजजी और इनके पाट पर-श्री सुखमलजी, भागचंदजी, बालचदजी, मानकचदजी, मूलचदजी, जगतचदजी, रत्नचदजी, नृपचदजी (यह यति परपरा चली)-इनकी गादी बालापुर मे है।

श्री शिवजी ऋषिजी के दूसरे शिष्य धर्मसिंहजी मुनि हुए। आपने स० ११८५ मे शुद्ध मुनि-धर्म अगीकार कर दरियापुरी-सम्प्रदाय चलाया।

(१) श्री जीवराजजी महाराज की परम्परा

श्री शिवराजजी महाराज के दो शिष्य हुए --श्रीधनजी महाराज और श्री लालचदजी महाराज।

१ आचार्य श्री धनजी के बाद मे श्री विष्णुजी, मनजी ऋषिजी और नाथूरामजी हुए। श्री नाथूरामजी महाराज के लक्ष्मीचदजी, और रायचदजी म० हुए।

श्री लक्ष्मीचदजी के शिष्य छत्रपालजी के दो शिष्य हुए -राजा रामाचार्य और उत्तमचन्द्राचार्य।

श्री राजा रामाचार्य के पाट पर श्री रामलालजी और फकीरचदजी महाराज हुए। श्री फकीरचदजी महाराज के शिष्य फूलचदजी महाराज इस समय विद्यमान हैं।

श्री उत्तमचन्द्राचार्य के पाट पर श्री रत्नचन्द्रजी और श्री भञ्जुलालजी हुए। और इनके शिष्य मोतीलालजी हुए।

श्री रायचदजी के शिष्य रतिरामजी और इनके शिष्य नदलालजी हुए जिनके तीन शिष्य हुए — श्री जोंकीरामजी, किशनचदजी और रूपचदजी।

श्री जोंकीरामजी के बाद चैनरामजी और घासीलालजी हुए। श्री घासीलालजी के तीन शिष्य हुए - श्री गोविंदरामजी, जीवनरामजी और कुन्दनलालजी। इनमे से गोविंदरामजी के शिष्य श्री छोटेलालजी इस समय विद्यमान हैं।

श्री किसनचन्दजी के बाद मे अनुक्रम से-बिहारीलालजी, महेशदासजी, वृषभाणजी और सादिरामजी हुए।

२ पूज्य श्री लालचन्दजी महाराज के चार शिष्य हुए :-श्री अमरसिंहजी, शीतलदासजी, गगारामजी, और दीपचदजी।

१ श्री अमरसिंहजी महाराज का पाटानुक्रम इस प्रकार है.—श्री तुलसीदासजी, सुजानमलजी, जीतमलजी, ज्ञानमलजी, पूनमचदजी, जेठमलजी, नैनमलजी, दयालुचदजी, और ताराचदजी।

२ श्री शीतलदासजी महाराज का पाटानुक्रम :-श्री देवीचंदजी, हीराचदजी, लक्ष्मीचदजी, भैरूंदासजी, उदयचदजी, पन्नालालजी, नेमचदजी, वेणीचदजी, प्रतापचदजी, और कजोडीमलजी।

३ श्री गगारामजी महाराज का पाटानुक्रम .—श्री जीवनरामजी, श्रीचन्दजी, जवाहरलालजी, माणकचदजी, पन्नालालजी, और चन्दन मुनिजी।

४ दीपचदजी महाराज के दो शिष्य हुए .—श्री स्वामीदासजी, और मलूकचन्दजी।

(अ) स्वामीदासजी म० की परम्परा इस प्रकार है '—श्री उग्रसेनजी, घासीरामजी, कनीरामजी, ऋषिरायजी, रगलालजी और फतहचन्दजी।

(ब) श्री मलूकचन्दजी महाराज के शिष्य नानगरामजी हुए। इनके शिष्य वीरभानजी हुए।

श्री वीरभानजी के बाद क्रमशः-श्री लक्ष्मणदासजी, मगनमलजी, गजमलजी, धूलमलजी और पन्नालालजी हुए। बाद मे श्री सुखलालजी, हरकचदजी, दयालचदजी और हगामीलालजी हुए।

(२) पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज की परम्परा

पूज्य श्री धर्मसिंहजी म० के पाट पर, श्री सोमजी ऋषिजी, मेघजी ऋषिजी, द्वारकादासजी, मोरारजी, नाथाजी, जयचदजी, मोरारजी, नाथाजी, जीवनजी, प्रागजी ऋषि, शकर ऋषिजी, खुशालजी, हर्षसिंहजी, मोरारजी, भवेर ऋषिजी, पुजाजी, छोटे भगवानजी, मलूकचदजी, हीराचन्दजी, श्री रघुनाथजी, हाथीजी, उत्तमचन्दजी और ईश्वरलालजी, (श्री ईश्वरलालजी महाराज इस समय विद्यमान हैं)।

यह सम्प्रदाय दरियापुरी आठ कोटि सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध है। इसमे एक ही पाटानुक्रम चलता आया है।

(३) पूज्य श्री लवजी ऋषिजी महाराज की परम्परा

पूज्य श्री लवजी ऋषिजी के बाद मे उनके शिष्य सोमजी ऋषिजी पाट पर आये। आपके दो शिष्य हुए '— श्री कानजी ऋषि और हरदासजी ऋषि।

श्री कानजी ऋषि के शिष्य तिलोक ऋषिजी और इनके दो शिष्य हुए :—श्री काला ऋषिजी और मगला ऋषिजी।

१ काला ऋषिजी दक्षिण की तरफ विचरे और इनकी सम्प्रदाय 'ऋषि सम्प्रदाय' कहलाई। इनके पाटानुक्रम मे-बक्षुजी ऋषिजी, धन्ना ऋषिजी, खुबाजी ऋषि, चेना ऋषिजी, अमेलख-ऋषिजी, देवजी ऋषिजी, और श्री आनन्द ऋषिजी ०। (श्री आनन्द ऋषिजी म० वर्तमान मे श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण-सघ के प्रधान मन्त्री-पद पर विराजमान हैं)।

२ श्री मगला ऋषिजी गुजरातमे खभात की तरफ विचरे अत' आपकी सम्प्रदाय 'खभात सम्प्रदाय' के नाम से प्रसिद्ध हुई। आपका पाटानुक्रम इस प्रकार चला —श्री रणछोड़जी, नाथाजी, वेचरदासजी, बड़े माणकचन्दजी, हरखचदजी, भाणजी, गिरधरलालजी, छगनलालजी और गुलाबचदजी। (इस सम्प्रदाय मे वर्तमान काल में कोई साधु नहीं है—केवल साध्वियां हैं)।

३ श्री सोमजी ऋषिजी के दूसरे शिष्य हरदास ऋषिजी के पाट पर श्री वृन्दावनजी, भवानीदासजी, मलूकचन्दजी, महासिंहजी, कुशालसिंहजी, छजमलजी, और रामलालजी हुए।

श्री रामलालजी महाराज के शिष्य श्री अमरसिंहजी महाराज की 'पंजाब सम्प्रदाय' बनी। इस सम्प्रदाय मे अनुक्रम से:-श्री मोतीरामजी, सोहनलालजी, काशीरामजी और पू० श्री आत्मारामजी महाराज हुए। (श्री आत्मारामजी म० वर्तमान मे श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-सघ के आचार्य-पद पर विराजमान है)।

श्री रामलालजी महाराज के दूसरे शिष्य श्री रामरतनजी म० मालवा-प्रान्त मे विचरे। आपकी (मालवा-सम्प्रदाय) रामरतनजी महाराज की सम्प्रदाय कहलाती है।

(४) पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज की परम्परा

पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के ९९ शिष्य थे। उनमे से सर्व प्रथम शिष्य श्री मूलचन्दजी महाराज काठियावाड मे विचरे। बाद मे श्री धन्नाजी, छोटे पृथ्वीराजजी, मनोहरदासजी और रामचन्द्रजी हुए।

ये पाचों सम्प्रदायें इस प्रकार विकसित हुई:—

१. श्री मूलचन्दजी महाराज के ७ शिष्य हुए:—श्री पचाणजी, गुलाबचन्दजी, बणारसीजी, श्री इच्छाजी, विठ्ठलजी, वनाजी, और इन्द्रजी।

(क) श्री पचाणजी महाराज के दो शिष्य हुए:—श्री इच्छाजी और रतनशी स्वामी।

श्री इच्छाजी स्वामी के पाट पर'—श्री हीराजी स्वामी, छोटे कानजी म०, अजरामरजी स्वामी, देवराजजी, भाणजी, करमशी और अविचलजी स्वामी। यह सम्प्रदाय 'लींबडी-सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध है।

श्री अविचलजी स्वामी के शिष्य हरचदजी स्वामी हुए। आपकी सम्प्रदाय 'लींबडी मोटी-सम्प्रदाय' बनी। इसका पाटानुक्रम इस प्रकार है.—श्री हरचदजी, देवजी, गोविन्दजी, कानजी, नथुजी, दीपचदजी, लाधाजी, मेघराजजी, देवचदजी, लवजी, गुलाबचदजी और धनजी स्वामी।

श्री अविचलजी स्वामी के दूसरे शिष्य श्री हीमचदजी से 'लींबडी छोटी-सम्प्रदाय' चली। इस सम्प्रदाय में पाटानुक्रम से:—श्री हीमचदजी, गोपालजी, मोहनलालजी, मणीलालजी और केशवलालजी महाराज हुए।

(ख) श्री पचाणजी महाराज के दूसरे शिष्य श्री रतनशी स्वामी का पाटानुक्रम इस प्रकार है:-श्री रतनशी स्वामी डु गरशी स्वामी, रवजी, मेघराजजी, डाह्याजी, नेनशीजी, आबाजी, छोटे नेनशीजी और देवजी स्वामी। श्री देवजी के शिष्य जयचन्दजी और उनके शिष्य प्राणलालजी महाराज हुए। देवजी स्वामी के शिष्य जादवजी और इनके शिष्य पुरुषोत्तमजी महाराज हुए। ये दोनों विद्यमान हैं। यह सम्प्रदाय "गौडल सम्प्रदाय" के नाम से प्रसिद्ध हुई।

२. श्री गुलाबचदजी महाराज की परम्परा इस प्रकार है:—श्री गुलाबचदजी, बालजी, बड़े नागजी, मूलजी म०, देवचदजी म० तथा मेघराजजी म०, पूज्य सघजी महाराज। यह सम्प्रदाय 'सायला-सम्प्रदाय' कहलाती है।

३ श्री वणारसीजी म० के शिष्य जयसिंगजी म० हुए। यह सम्प्रदाय 'चूडा-सम्प्रदाय' कहलाती है। इस समय इसमे कोई साधु नहीं है।

४ श्री इच्छाजी महाराज के शिष्य रामजी महाराज हुए। इनकी सम्प्रदाय 'उदयपुर-सम्प्रदाय' कहलाती है। आजकल इसमे कोई साधु नहीं है।

५ श्री विट्ठलजी महाराज से 'धागध्रा-सम्प्रदाय' चली इसमे अनुक्रमसे -श्री विट्ठलजी, भूखणजी और वशरामजी हुए। श्री वशरामजी के शिष्य जसाजी महाराज बोटाद की तरफ आये। इसलिये आपकी सम्प्रदाय

'बोटाद-सम्प्रदाय' कहलाई। इसका पाटानुक्रम इस प्रकार है:—श्री जसाजी महाराज, अमरचन्दजी महाराज, और माणकचन्दजी महाराज।

६ श्री वनाजी महाराज की सम्प्रदाय 'बरवाला-सम्प्रदाय' कहलाई। इसका पाटानुक्रम इस प्रकार है.—श्री वनाजी, पुरुषोत्तमजी, बणारसीजी, कानजी महाराज, रामरूपजी, चुन्नीलालजी, उम्मेदचन्दजी, और मोहनलालजी महाराज।

७ श्री इन्द्रजी महाराज कच्छ मे विचरे। आपकी परम्परा इस प्रकार चली'—श्री इन्द्रजी, भगवानजी, सोमचन्दजी, करसनजी, देवकरणजी, और डाह्याजी।

श्री डाह्याजी महाराज के दो शिष्य हुए:—श्री देवजी महाराज और श्री जसराजजी महाराज। इनकी पृथक सम्प्रदाय चली।

श्री देवजी महाराज की परम्परा 'कच्छ आठ कोटि बडी-पक्ष' के नाम से कहलाती है। इस परम्परा मे अनुक्रम से:—श्री देवजी, रगजी, केशवजी, करमचदजी, देवराजजी, मोणशीजी, करमशीजी, वृजपालजी, कानजी, नागजी, और श्री कृष्णजी महाराज हुए। जो इस समय विद्यमान है।

(ग) श्री जसराजजी महाराज की परम्परा'—'कच्छ आठ कोटि छोटी-पक्ष' के नाम से कहलाती है। इस सम्प्रदाय की परम्परा इस प्रकार है:—श्री जसराजजी, नथुजी, हसराजजी, वृजपालजी, डु गरशी, शामजी और श्री श्री लालजी स्वामी (जो इस समय विद्यमान हैं)

(२) पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के दूसरे शिष्य धन्नाजी महाराज के शिष्य भूदरजी महाराज के तीन शिष्य हुए:—श्री जयमलजी, रघुनाथजी और श्री कुशलाजी म०।

(क) श्री जयमलजी महाराज की पाट परम्परा मे —श्री रामचन्द्रजी, आसकरणजी, सवलदासजी और श्री हीराचन्दजी। यह सम्प्रदाय 'जयमलजी म० की सम्प्रदाय' कहलाती है।

(ख) पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज के समय मे उनके एक शिष्य भीखणजी हुए। इनके द्वारा उत्सूत्र की प्ररूपणा होने के कारण पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज ने सवत् १८१५ के चैत्र वदी ६ शुक्रवार को अपनी सम्प्रदाय से बाहर कर दिया। सवत् १८१७ के आषाढ शुक्ला १५ को १३ साधुओं और १३ श्रावकों का सहयोग लेकर दया-दान विरोधी तेरह-पथ की स्थापना की, जो इस समय भी विद्यमान है।

श्री रघुनाथजी महाराज के पाट पर.—श्री टोडरमलजी, दीपचन्दजी और श्री भैरूदासजी हुए। श्री भैरूदासजी के दो शिष्य हुए'—श्री खेतशीजी और चौथमलजी। दोनों की अलग-अलग सम्प्रदायें चलीं।

(क) श्री खेतशीजी म० के पाट पर अनुक्रम से.—श्री भीखणजी, फौजमलजी और श्री सतोकचन्दजी हुए।

(ख) श्री चौथमलजी म० के पाट पर'—श्री सतोकचन्दजी, रामकिशनजी, उदयचन्दजी और शार्दूलसिंहजी महाराज हुए।

(ग) श्री कुशलाजी महाराज के शिष्य —श्री गुमानचन्दजी और रामचन्द्रजी हुए। इनकी भी अलग-अलग सम्प्रदायें चलीं।

श्री गुमानचन्द्रजी म० के पाटानुक्रम मे'—श्री दुर्गादासजी, रत्नचन्दजी, कजौड़ीमलजी, विनयचन्दजी, सौभाग्यचन्द्रजी और पू० मुनि श्री हस्तीमलजी महाराज हैं। जो वर्तमानमे श्री वर्ध० श्रमण-संघ मे सहमन्त्री-पद पर हैं।

श्री रामचन्द्रजी महाराज के पाटानुक्रम में.—श्री चिमनीरामजी, नरोत्तमजी, गंगारामजी, जीवनजी, ज्ञानचन्दजी और श्री समर्थमलजी हुए। यह सम्प्रदाय श्री समर्थमलजी महाराज की सम्प्रदाय कहलाती है।

३ पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के तीसरे शिष्य श्री छोटे पृथ्वीराजजी म० का पाट इस प्रकार है:—श्री दुर्गादासजी, हरिदासजी, गगारामजी, रामचन्द्रजी, नारायणदासजी, पूरणमलजी, रोड़ीदासजी, नरसीदासजी, एकलिंगदासजी और श्री मोतीलालजी।

४ पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के चौथे शिष्य श्री मनोहरदासजी म० का पाट इस प्रकार चला:—श्री भागचन्दजी, शीलारामजी, रामदयालजी, लूनकरणजी, रामसुखदासजी, ख्यालीरामजी, मगलसेनजी, मोतीरामजी और पृथ्वीचन्द्रजी।

५ पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के पांचवें शिष्य श्री रामचन्द्रजी की सम्प्रदाय की पट्टावली इस प्रकार है:—श्री माणकचन्द्रजी, जीवराजजी, पृथ्वीचन्द्रजी, बडे अमरचन्द्रजी, केशवजी, मोकमसिहजी, नन्दलालजी, छोटे अमरचन्दजी, चपालालजी, माधव मुनिजी और श्री ताराचन्दजी महाराज। (जो आज विद्यमान है।)

महाराष्ट्र-मत्री श्री किशनलालजी महाराज, श्री नन्दलालजी महाराज के शिष्य हैं। प्र० वक्ता श्री सौभाग्यमलजी महाराज श्री किशनलालजी महाराज के शिष्य हैं।

पूज्य धर्मदासजी महाराज ने अपने बडे शिष्य समुदाय को व्यवस्थित रखने के लिए सभी शिष्यों और प्रशिष्यों को बुलाकर चैत्र शुक्ला १३ स० १७७२ में उन्हें बाईस सम्प्रदायों में विभाजित कर दिया। इन बाईस-सम्प्रदायो के नाम इस प्रकार है'–(१) पू० श्री धर्मदासजी महाराज की सम्प्रदाय (२) श्री धन्नाजी म० की स० (३) श्री लालचदजी म० की स० (४) श्री मन्नाजी म० की स० (५) श्री बडे पृथ्वीराज जी म० की स० (६) श्री छोटे पृथ्वीराज जी महाराज की स० (७) श्री बालचदजी म० की स० (८) श्री ताराचदजी म० की स० (९) श्री प्रेमचदजी म० की स० (१०) श्री खेतशीजी म० की स० (११) श्री पदारथजी म० की स० (१२) श्री लोकमलजी म० की स० (१३) श्री भवानीदासजी म० की स० (१४) श्री मलूकचदजी म० की स० (१५) श्री पुरुशोत्तमजी म० की स० (१६) श्री मुकुटरायजी म० की स० (१७) श्री मनोहरदासजी म० की स० (१८) श्री रामचद्रजी म० की स० (१९) श्री गुरुसहायजी म० की स० (२०) श्री बाघजी म० की स० (२१) श्री रामरतनजी म० की स० तथा (२२) श्री मूलचदजी म० की स०।

(५) पूज्य श्री हरजी ऋषिजी म० की परम्परा

श्री केशवजी पक्ष के यतियो की परम्परा मे स० १७८५ मे पांचवे धर्म-सुधारक हरजी ऋषिजी हुए। उनके पाट पर श्री गोदाजी ऋषि और परशुरामजी महाराज हुए।

श्री परशुरामजी महाराज के शिष्य श्री लोकमलजी और खेतशीजी की अलग-अलग सम्प्रदायें चलीं।

श्री लोकमलजी महाराज के पाट पर.—श्री मयारामजी और दौलतरामजी हुए।

(अ) श्री दौलतरामजी के गोविंदरामजी और लालचदजी ये दो शिष्य हुए।

श्री गोविंदरामजी की पाट-परम्परा इस प्रकार है—श्री फतहचदजी, ज्ञानचन्दजी, छगनलालजी, रोडमलजी, और प्रेमराज जी हुए।

श्री लालचदजी के पाट पर श्री शिवलालजी, उदयसागरजी और चौथमलजी महाराज हुए।

श्री चौथमलजी महाराज के बाद यह सम्प्रदाय दो भागो मे विभाजित हो गई। पहले विभाग मे पू० श्री श्रीलालजी म०, पू० श्री जवाहरलालजी महाराज और पूज्य श्री गणेशीलालजी म० हैं। (पू० श्री गणेशीलालजी म० वर्तमान मे श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण सघ के उपाचार्य-पद पर हैं)

दूसरे विभाग मे पू० श्री मन्नालालजी, नंदलालजी, खूबचदजी और सहस्रमलजी महाराज हैं—जिन्होंने श्रमण-सघ की एकता के लिए आचार्य-पद का त्याग किया और अभी मत्री-पद पर हैं।

श्री खेतशीजी का पाटानुक्रम इस प्रकार हैं:- श्री खेमशीजी, फतहचदजी, अनोपचदजी, देवजी महाराज, चम्पालालजी, चुन्नीलालजी, किशनलालजी, बलदेवजी, हरिश्चद्रजी और मांगीलालजी।

भगवान महावीर से लेकर श्री लौंकाशाह तक की परम्परा

स्थानकवासी-धर्म के स्तम्भ-रूप और धार्मिक क्राति के पाच प्रणेताओं का इतिहास और इन पांच के शिष्य-समुदाय का परिचय तथा वर्णन हम पिछले पृष्ठों से जान चुके हैं। अब हम भगवान् महावीर-से लौंकाशाह तक की परम्परा बतलाना आवश्यक समझते हैं।

भगवान् महावीर स्वामी के पश्चात् पाटानुक्रम'-(१) श्री सुधर्मास्वामी वीर स० ६ (२) श्री जम्बूस्वामी वीर स० १२ (३) श्री प्रभव स्वामी वी० स० २० (४) श्री स्वयभव स्वामी वीर स० ७५ (५) श्री यशोभद्रस्वामी वीर स० ६६ (६) श्री सभूति विजय वी० स० १४८ (७) श्री भद्रबाहू स्वामी वी० स० १५६ (८) श्री स्थूलिभद्रजी वी० स० १७० (६) श्री आर्य महागिरि वी० स० २१५ (१०) श्री आर्य सुहस्ति अथवा बाहुल स्वामी वी० स० २४५ (११) श्री सायन स्वामी अथवा सुवन स्वामी अथवा सुप्रति बद्ध स्वामी वी० स० २६१ (१२) श्री इन्द्रदिन्न अथवा वीर स्वामी वी० स० ३३६ (१३) श्री सु दिलाचार्य अथवा आर्यदिन्न स्वामी वी० स० ४२१ (१४) श्री वैर स्वामी अथवा जीतधर स्वामी अथवा आर्य समुद्र स्वामी वी० स० ४७६ (१५) श्री वज्रसेन स्वामी अथवा मगु स्वामी वी० स० ५८४ (१६) श्री भद्रगुप्त अथवा आर्य रोह स्वामी अथवा नदला स्वामी वी० स० ६६६ (१७) श्री वयर स्वामी अथवा फाल्गुणी मित्र अथवा नाग हस्त स्वामी (१८) श्री आर्य रक्षित अथवा धरणीधर अथवा रेवत स्वामी (१६) श्री नदिल स्वामी अथवा शिवभूति अथवा सिंहगण स्वामी (२०) श्री आर्य नाग हस्ती अथवा आर्यभद्र अथवा थडलाचार्य (२१) श्री रेवती आचार्य अथवा हेमवत स्वामी अथवा आर्य नक्षत्र स्वामी (२२) श्री नागजिन स्वामी अथवा सिंहाचार्य वी० स० ८२० (२३) श्री गोविन्द स्वामी अथवा सु दिलाचार्य अथवा नागाचार्य अथवा भूत-दिन्न स्वामी (२५) श्री गोविंदाचार्य अथवा श्री छोहगण स्वामी (२५) श्री भूत दिन्नाचार्य अथवा दूषगणी (२७) श्री देवद्धिगणि क्षमा-श्रमण।

उपरोक्त सत्ताईस पाटों के नाम अलग-अलग पट्टावलियों मे लगभग एक समान ही नाम पढ़ने में आते हैं। भले ही उनका क्रम आगे-पीछे हो सकता है किन्तु सत्ताईसवें पाट पर श्री देवद्धिगणि क्षमा-श्रमण का नाम सब तरह की पट्टावलियों मे पाया जाता है।

पजाब की पट्टावली के अनुसार अठ्ठाईसवें पाट से आगे पाटों की परम्परा इस प्रकार है:—

(२८) श्री वीरभद्र स्वामी (२६) श्री शकर भद्र स्वामी (३०) श्री यशोभद्र स्वामी (३१) श्री वीरसेन स्वामी (३२) श्री वीर ग्रामसेन स्वामी (३३) श्री जिनसेन स्वामी (३४) श्री हरिसेन स्वामी (३५ श्री जयसेन स्वामी (३६) श्री जगमाल स्वामी (३७) श्री देवर्षिजी स्वामी (३८) श्री भीमऋषिजी (३६) श्री कर्मजी (४०) राजर्षिजी (४१) श्री देवसेनजी (४२) श्री शक्रसेनजी (४३) श्री लक्ष्मीलालजी (४४) श्री रामर्षिजी (४५) श्री पद्मसूरिजी (४६) श्री हरिसेनजी (४७) श्री कुशलदत्तजी (४८) श्री जीवन ऋषिजी (४६) श्री जयसेनजी (५०) श्री विजय ऋषिजी (५१) श्री देवर्षिजी (५२) श्री सूर-सेनजी (५३) श्री महासूरसेनजी (५४) श्री महासेनजी (५५) श्री जयराजजी (५६ श्री गजसेनजी (५७) श्री मिश्रसेनजी

(५८) श्री विजयसिंहजी (५९) श्री शिवराज ऋषिजी (६०) श्री लालजी (६१) श्री ज्ञान ऋषिजी। श्री ज्ञान ऋषिजी के पास लौंकाशाह के उपदेश से (६२) श्री भानुलुनाजी, भीमजी, जगमालजी तथा हरसेनजी ने दीक्षा ग्रहण की। (६३) श्री परूजी महाराज और (६४) श्री जीवराजजी।

दरियापुरी सम्प्रदाय की पट्टावली के अनुसार २८ वें पाट से परम्परा इस प्रकार है :—

(२८) श्री आर्य ऋषिजी (२९) श्री धर्माचार्य स्वामी (३०) शिवभूति आचार्य (३१) सोमाचार्य (३२) आर्यभद्र स्वामी (३३) विष्णुचन्द्र स्वामी (३४) धर्मवर्धमानाचार्य स्वामी (३५) भूराचार्य (३६) सुदत्ताचार्य (३७) सुहस्ति आचार्य (३८) वरदत्ताचार्य (३९) सुबुद्धि आचार्य (४०) शिवदत्ताचार्य (४१) वीरदत्ताचार्य (४२) जयदत्ताचार्य (४३) जयदेवाचार्य (४४) जयघोषाचार्य (४५) वीर चक्रधराचार्य (४६) स्वातिसेनाचार्य (४७) श्रीवताचार्य (४८) श्री सुमति आचार्य (४९) श्री लौंकाशाह जिन्होंने अपने उपदेश से ४५ भव्यात्माओं को दीक्षा दिला कर और स्वय ने सुमति-विजयजी के पास सं० १५०९ में पाटण मे दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा-पर्याय मे आपका नाम श्री लक्ष्मी विजय मुनि था।

इस प्रकार कोई भी पट्टावली किसी भी पट्टावली से नहीं मिलती, किन्तु प्रयत्न और सशोधन किया जाय, तो निश्चित परम्परा और क्रम मिल सकता है। यदि इसके सबध में विस्तृत और निश्चित रूप से गवेषणात्मक अनुसधान किया जाय तो इतिहास के लिये वह सामग्री अतीव उपयोगी सिद्ध होगी।

महत्वपूर्ण-इतिहास

वीर स० २० मे	श्री जबू स्वामी मोक्ष गये तब दस बोलों का विच्छेद हो गया।
वीर स० १६४ मे	राजा चन्द्रगुप्त हुए।
वीर स० १७० के	(आसपास) आर्य सुहस्ति के १२ शिष्यों के ३३ गच्छ हुए।
वीर स० ४७० मे	विक्रम सवत् शुरु हुआ।
वीर स० ६०५ मे	शालिवाहन का सवत् प्रारम्भ हुआ।
वीर स० ६०९ में	दिगम्बर और श्वेताम्बर इस प्रकार जैन धर्मावलंबियों के दो विभाग हुए।
वीर सं० ६२० में	चन्द्र गच्छ की चार शाखायें प्रारम्भ हुई।
वीर स० ६७० मे	साचर मे वीर-स्वामी की प्रतिमा स्थापित हुई।
वीर स० ८८२ में	चैत्यवास प्रारम्भ हुआ।
वीर स० ९८० मे	श्री देवद्धिगणि (देवर्द्धिगणि) क्षमा श्रमण द्वारा वल्लभीपुर मे सूत्र लिपि बद्ध कराये गये।
वीर स० ९९३ मे	कालिकाचार्य ने पचमी के बदले चतुर्थी को सांवत्सरिक-प्रतिक्रमण किया।
वीर स० १००० मे	समस्त पूर्वो का विच्छेद हो गया।
विक्रम स० ९९४ मे	वड़-गच्छ की स्थापना हुई।
विक्रम स० १०२६ मे	तक्षशिलाका-गच्छ की स्थापना हुई।
विक्रम स० ११३६ में	नवागी टीकाकार अभयदेव सूरि हुए।
विक्रम स० ११८४ में	अचल-गच्छ की स्थापना हुई।
विक्रम स० १२२९ में	हेमचन्द्राचार्य हुए।
विक्रम स० १२०४ में	मूर्तिपूजक खरतर-गच्छ की स्थापना हुई।
विक्रम स० १२१३ मे	जगतचन्द्रजी के द्वारा मूर्तिपूजक तपा-गच्छ की स्थापना हुई।

विक्रम स० ११३६ में	पुनमिया-मत स्थापित हुआ।
विक्रम स० १२५० मे	आगमिया-मत स्थापित हुआ।
विक्रम स० १५३१ में	भस्मग्रह उतरा और श्री लौंकाशाह ने शुद्ध-धर्म का पुनरुद्धार किया। साधुओं मे आई हुई शिथिलता दूर की गई।
विक्रम स० १८१७ मे	आषाढ़-शुक्ला १५ को दया-दान विरोधी तेरह-पंथ प्रारम्भ हुआ।
विक्रम स० १९६१ मे	श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स की स्थापना की गई। (ई० सन् १९०६)
विक्रम स० १९८९ में	श्री स्थानकवासी साधु-समाज का प्रथम साधु-सम्मेलन अजमेर मे हुआ और, इस सम्मेलन की प्रथम बैठक चैत्र शुक्ला १० बुधवार के दिन हुई।
विक्रम स० २००९ में	स्थानक-वासी समाज के बाईस-सम्प्रदायों के मुनिवरों का सम्मेलन वैशाख शु० ३ को सादड़ी (मारवाड) मे प्रारम्भ हुआ और वैशाख शु० ९ को बाईस-सम्प्रदायों का एक "श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-सघ" बना और जैन-धर्म दिवाकर पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज को आचार्य के रूप मे स्वीकृत किया गया।

नोटः—कृपया पाठक निम्न पृष्ठों पर सुधार कर पढ़ें।

१ पृष्ठ ३३ पंक्ति ८ पर—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तथा तृष्णा-निवृत्ति आदि मे महावीर के समान बुद्ध की दृष्टि भी अत्यन्त गहन थी—इसके स्थान पर—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, तृष्णा-निवृत्ति आदि के लिये बुद्ध उपदेश देते थे। किन्तु उनकी दृष्टि भ० महावीर के समान गहन नहीं थी—ऐसा पढ़ें।

२ पृष्ठ ३३ पक्ति ८ पर—ता० १३ मार्च—के साथ सन् १४६० और जोड़ कर पढ़े।

३. पृष्ठ ४० पक्ति २३ में—ता० ११—४—१४७ के बदले सन् १४७३ पढ़ें।

४. पृष्ठ ३५ पक्ति १७ पर—१० पूर्व का विच्छेद के बदले ४ पूर्व का विच्छेद हो गया ऐसा पढ़ें।

५. पृष्ठ ३५ पक्ति २० पर—वीर स० १५६ के बदले १४६ या १५० पढ़ें।

तृतीय-परिच्छेद

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स का संक्षिप्त-इतिहास

श्री० श्वे० स्था० जैन कान्फरन्स की स्थापना

हिन्दुस्तान मे जब राजकीय और सामाजिक सस्थाओ की स्थापना कर विविध सगठन स्थापित किये जा रहे थे, तब जैन-समाज के मुख्य-मुख्य फिर्को मे भी इस तरह की प्रवृत्तियां शुरु हुई और उन्होंने भी अपने अपने सगठन कायम किये। श्वेताम्बर जैनो ने मिलकर श्वेताम्बर जैन कॉन्फरन्स की स्थापना की और दिगम्बरों ने अपनी दिगम्बर जैन-महासभा की। ईस्वी सन् १९०० के आसपास इन सगठनों की शुरुआत हुई। स्थानकवासी जैन समाज के अग्रगण्य सज्जनों ने भी अपना सगठन करने का निवेदन किया और सन् १९०६ मे मोरवी (काठियावाड़) में कुछ भाइयों ने मिल कर अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स की स्थापना की। कॉन्फरन्स की स्थापना मे मोरवी के प्रतिष्ठित शेठ श्री अम्बावीदासजी डोसाणी और धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई जौहरी का मुख्य भाग रहा और उन्हीं की प्रेरणा से कॉन्फरन्स का प्रथम अधिवेशन मोरवी मे हुआ।

प्रथम-अधिवेशन, स्थान-मोरवी

कॉन्फरन्स का प्रथम अधिवेशन सन् १९०६ मे ता० २६, २७, २८, फरवरी को मोरवी मे सम्पन्न हुआ। अधिवेशन की अध्यक्षता राय सेठ चांदमलजी अजमेर वालों ने की थी। मोरवी मे यह कॉन्फरन्स का सर्व प्रथम अधिवेशन होने पर भी समाज मे उत्साह की लहर फैल गई और स्थान-स्थान से समाज-प्रिय सज्जनों ने उपस्थित होकर इसमे सक्रिय-भाग लिया। इस अधिवेशन मे कुल १४ प्रस्ताव पास किये गये थे-जिनमे से उल्लेखनीय प्रस्ताव निम्न हैं :-

प्रस्ताव १-मोरवी के महाराजा सा० सर वाघजी बहादुर जी० सी० आई० ई० ने कॉन्फरन्स का पेट्रन-पद स्वीकार किया एतदर्थ उनका आभार माना गया।

इससे स्पष्ट है कि कॉन्फरन्स के प्रति मोरवी-नरेश की पूर्ण सहानुभूति थी और मोरवी-स्टेट में स्थानकवासी जैनों का कितना प्रमुत्व था।

प्रस्ताव २-दूसरी विशेषता इस अधिवेशन की यह थी कि-इस अधिवेशन का सारा खर्च मोरवी निवासी सेठ श्री अम्बावीदास भाई डोसाणी ने दिया था अतः दूसरे प्रस्ताव में उनका आभार माना गया।

प्रस्ताव ३–जिन-जिन स्थानों पर जैन शाला हों, उन्हें भली-भाँति चलाने की, जहां न हों वहां स्थापित करने की तथा उनके लिये एक व्यवस्थित पाठ्य-क्रम (जैन-पाठावली) तैयार करने की एव साधु-साध्वियों के लिये सिद्धान्त-शाला-की सुविधा कर देने की आवश्यक्ता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है।

प्रस्ताव ४–मे हुनर, उद्योग तथा शिक्षा पर भार दिया गया।

प्रस्ताव ५–यह कॉन्फरन्स अपने विविध-फ़िर्कों के भाइयों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करने की भार पूर्वक विनती करती है।

प्रस्ताव ६–स्थानकवासी जैन जाति की डिरेक्टरी तैयार करने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है।

प्रस्ताव १०–बाल, वृद्ध विवाह तथा कन्या-विक्रय करने का निषेध किया गया। मृत्यु-भोज मे पैसे का खर्च न कर—वह रुपया शिक्षा प्रसार मे खर्च करने की भलामण की गई।

प्रस्ताव १२–मुनिराजों के सबध मे था। उसमे सरकार से प्रार्थना की गई थी कि जैन मुनिराजों को बिना टैक्स लिये ही पुल के ऊपर से जाने दिया जाय।"

(नोटः—प्रथम मोरवी-अधिवेशन की मेनेजिंग कमेटी तथा प्रान्तिक-सेक्रेट्रियों की नामावली कॉन्फरन्स के इतिहास के अन्त मे दी जा रही है।)

द्वितीय-अधिवेशन, स्थान रतलाम

मोरवी-अधिवेशन के दो वर्ष बाद सन् १६०८ में ता० २७, २८, २६ मार्च को रतलाम मे कॉन्फरन्स का दूसरा अधिवेशन हुआ, जिसकी अध्यक्षता अहमदाबाद निवासी सेठ केवलदास त्रिभुवनदास ने की थी।

इस अधिवेशन मे रतलाम और मोरवी के महाराजा सा० तथा शिवगढ़ के ठाकुर सा० भी पधारे थे। प्रारभ मे कॉन्फरन्स के प्रति राजा-महाराजा की भी पूर्ण सहानुभूति थी तथा स्था० जैन-सघो की भी राज्यों मे अच्छी प्रतिष्ठा थी। जिससे राजा, महाराजा भी समय २ पर उपस्थित होकर कार्यवाही में सक्रिय-भाग लिया करते थे—यह उपरोक्त दोनों अधिवेशनों की कार्यवाही से स्पष्ट है। इस अधिवेशन में रतलाम के महाराजाधिराज सज्जनसिंहजी बहादुर ने कॉन्फरन्स का पेट्रन पद स्वीकार किया अत उन्हें धन्यवाद दिया गया। प्रस्ताव न ३ और न० ४ मे मोरवी नरेश तथा शिवगढ ठाकुर साहब का आभार माना गया, जिन्होंने इस अधिवेशन मे पधारने का कष्ट किया। अन्य प्रस्तावों में से मुख्य २ प्रस्ताव ये हैं —

गत अधिवेशन की तरह जैनियों के सभी फिर्कों मे मेल जोल बढ़ाना, परस्पर निंदात्मक-लेख नहीं लिखना, जीवदया के प्रचार में सहयोगी होना, धार्मिक-शिक्षण तथा धार्मिक पाठ्य क्रम आदि के लिये प्रस्ताव पास किये गये।

प्रस्ताव ६–मे गत वर्ष कॉन्फरन्स मे जो फड हुआ और दाताओं ने अपनी इच्छानुसार जिन २ खातों मे रकम प्रदान की, वह रकम उन २ खातों मे ही व्यय करने का तय किया गया।

प्रस्ताव १२–हर एक प्रान्त के स्था० जैन भाई अपने २ प्रान्तों की आवश्यक्ताओं की पूर्ति के लिये तथा कॉन्फरन्स के ध्येयों का प्रचार करने के लिये अपने २ प्रान्तों मे प्रान्तीय-कॉन्फरन्स भराने का प्रयत्न करें।

प्रस्ताव १३–आगामी एक वर्ष के लिये कॉन्फरन्स का हैड-ऑफिस अजमेर मे रखने का निर्णय किया गया।

प्रस्ताव १४–कॉन्फरन्स के जनरल सेक्रेट्री के स्थान पर निम्नोक्त सज्जनों की नियुक्ति की गई:—

(१) राय सेठ चांदमलजी, अजमेर (२) शेठ केवलदास त्रिभुवनदास, अहमदाबाद (३) सेठ अमरचदजी पित्तलिया, रतलाम (४) श्री गोकलदासजी राजपाल, मोरवी (५) लाला गोकलचदजी जौहरी, देहली।

प्रस्ताव १५–प्रत्येक जगह के सघ अपने यहा हर एक घर से प्रति वर्ष चार आना वसूल करें और उस रकम की व्यवस्था कॉन्फरन्स इस प्रकार करे.—

३/४	आना	हिस्सा	धार्मिक-शिक्षा मे	१	आना हिस्सा	स्वधर्मी सहायता मे
३/४	,,	,,	व्यवहारिक ज्ञान मे	३/४	,, ,,	जीव-दया मे
३/४	,,	,,	कॉन्फरन्स निभाव मे			

उक्त प्रस्ताव का अमल हर एक प्रतिनिधि तथा विजीटर अपने २ सघ मे करायेंगे ऐसी कॉन्फरन्स आशा रखती है।

अन्य प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे–जिनमे श्री दुर्लभजी त्रिभुवनदास जौहरी को दो वर्ष तक कॉन्फरन्स की नि.स्वार्थ सेवा करने के लिये, श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह का अखबारी प्रचार करने के लिये तथा स्वयसेवको का आभार माना गया था। इस अधिवेशन मे कुल २० प्रस्ताव पास हुए।

तृतीय–अधिवेशन, स्थान–अजमेर

कॉन्फरन्स का तीसरा अधिवेशन सन् १९०६ मे ता० १०, ११, १२ को अजमेर मे हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्रीमान् सेठ बालमुकन्दजी मूथा अहमदनगर वालों ने की थी।

इस अधिवेशन मे मोरवी-नरेश सर वाघजी ब. हादुर और लीम्बडी के ठाकुर सा० श्री दौलतसिहजी पधारे थे अत' उनके प्रति धन्यवाद प्रदर्शित किया गया। बडौदा-नरेश सर सियाजीराव गायकवाड पधार न सके थे, परन्तु उन्होंने अधिवेशन की सफलता के लिये अपनी शुभ कामना का मार्ग दर्शक पत्र भेजा था अत. उनके प्रति भी आभार प्रदर्शिदत किया गया। उक्त मार्ग-दर्शक पत्र नीचे दिया जा रहा है :—

. H. THE A KWA ' LETTER.

Laxmı Vılas Palace,
Baroda 7th March 1909.

Dear Seth Chandmal,

The desırabılıty of such conferences

It was with very great pleasure that I receıved the deputatıon from your Sangh led by your son, ınvıtıng me to attend the Thırd Swetamber Sthanakwası Conference that meets ın your Cıty, ın the mıddle of March Had ıt not been for the pressure of ımportant work I should have very gladly avaıled myself of thıs opportunıty to joın you ın your delıberatıon and once more testıfy to my personal ınterest ın the reform movement that your conference ıs carryıng on I recall wıth pleasure the Thırd Swetamber Conference that assembled ın Baroda ın the year 1904, and I followed wıth ınterest the proceedıngs of ıts next sessıons ın my state at Pattan, the succcedıng year

The ideal to be striven for

2 Conferences such as yours are capable of doing much good provided they do not become completely sectarian and re-aetionary The aim of all such conferences should be the removal of social evils that are special to the sect or community holding them, and the preparation of such community for the greater unification of the nation. Having this ideal in mind, I could even wish that there should be more conferences of a similar nature in India—Conferences that devote time and energy for the up-lifting of the illiterate, caste—ridden, and unenterprising masses from their depressed condition.

Necessity of Social Reform

3 I have gone through the proceedings of your first two conferences, and I am glade to observe that in the short yet comprehensive programme you have very rightly given prominence to social reform and education Some of the present customs, such as early marriage, kanya vikraya, polygamy, are a great descredit to any society They could easily be abolished or modified by the abolishment of sub-castes, the existence of which, I learn, is against the principles and spirit of Jainism The mere passing of resolutions will not achieve much It is for every intelligent man among you to set his face sternly against the continuance practices in his own private and family relationship

The root—evil of Caste

4 But the root evil is the system of caste Caste in its present form has done more evil than good It has limited the horizon in life of all who were bound by it It has prohibited that free intercourse among other communities which is the soundest mode of education It has a most disintegrating effect upon national spirit and unity It has obscured national ideals and interests It may have some good points, but in its present development it has proved a great enemy to reform and the conservor of ignorant superstition Your community has not the sanction (so called) of the Shastras to justify the existence of caste The history of caste among Jains show that for centuries you struggled against Its introduction and it was very recently that intercourse with other sects or communities was prohibited For centuries you admitted among your brotherhood—for yours was a brotherhood with a common belief—people of different castes and professions, and had full intercourse with them after admission in spite of differences in social status and mode of life Not many generations ago, Jains of all castes used to interdine and intermarry with the people of the corresponding castes among Hindus, and it is a pity that the tendency is to discourage such intercourse During the last century castes have multiplied by scores, but there is scarcely a single instance where the contrary process has been observed Therefore further disintegration must be stopped and the unification of the existing divisions ought to be commenced Caste is essentially an *artificial* distinction between man and man There are so many natural differences between men, in the way of physical, moral and intellectual endowment, that there is really no necessity for us to set up unnatural differences, to further draw them apart. The experience and example of other peoples ought to convince us that men may be trusted to find their natural level in society,

without any effort on the part of those in authority to establish artificial barriers, which only serve to choke and dam the great stream of progress *Just as you revolted against the orthodox belief in idolatry*, you can also set aside the unmeaning distinctions of caste, at least so far as your sect is concerned. If that be done I do not conceive of any stronger evidence to justify the existance of your conference Besides doing a great service to your community you can set a practical example for other sects to follow

But it must be borne in mind that mere breaking of castes is not necessarily an end in itself The narrow caste ideal must be replaced by a broader ontlook and wider sympathy for national welfare Just as you are zealous of your caste observances, you should with a like tenacity strive to encourage national unity The ultimate goal is the welfare of the conntry.

Education

5 Most of the injurious social customs you will find upon close scrutiny, are the outcome of ignorance of moral, social and physical laws

Diffuse knowledge of those laws among the people, and I am sure these pernicious growths upon the social organism will automatically disappear You shall not then have to pass empty resolutions to unheeding and careless audiences You must therefore strain every effort for the enlightenment of the masses Education is the surest panacea of social evils in India

Village Schools

6 It is gratifying to note in the resolutions of the last conference that you have recognised the responsibility of every local Sangha to provide proper facilities for the Education of the children of your community in their town or village By means of a strong and sympathetic supervising staff you can see how far this duty is properly discharged In this respect you should always try to be self—reliant and independent of external help You must be prepared to have your own schools if necessary and impart therein instructions best suited to your requirements

Illiteracy

7 I dare say you have studied the last census statistics Do they not reveal a very sad and depressing situation for a practical and business community such as yours ? Among the Jains of all India only 48% of the males are literate and in the Bombay Presidency 52% Of your ladies only 1 8 P C are "literate" in all India, and 2% in the Bombay Presidency No country can claim a high place in civilization when 50% of males and 98 P C of females remain uneducated and illiterate Here is a vast field for your energies to work and achieve some substantial results

Scholarship Funds

8 In this connection you can organize funds for scholarships for higher education, especially for the advanced study of commerce and some of the applied Sciences You are a

business community and it is quite proper that your sons should have training in these subjects. This will do a material good to your people

Historical research

9 But I am sorry to miss in your programme any provision for research work in your history and Sacred books The history and tenents of your creed are hardly known to non Jains beyond the narrow circle of a few oriental scholars It was believed for centuries by all outsiders that Jainism was an offshoot of Buddhism and its study was neglected no account of this belief And who dispelled this misunderstanding ? Not the members of your community A German scholar was required to announce to the world that Jainism was independent of Buddhism and was able to prove that your 23rd Tirthankara was not a mythological personage and that he lived as early as 700 B C. I do not hereby means to say that there are not learned men among you I know full well that there are a good many who are well-versed in all the details of your abstruse philosophy and subtle intricacies of logic The age of blind belief is gone and the world is not going to believe in anything on mere authority, however old it may be You shall have to establish by the concrete evidence of Science and sound reasoning that your religion antedates the Vedas, if it is to be accepted by the world of scholar-ship

The Sacred books

10 In the first place you must find out where and what your Scriptures are Most of them are buried in the archives of Pattan and Jasalmere For centuries they have remained uncared for—the food for moth and worm I fear some of them have already perished. It will be advantageous in the interest of your religion and its preservation to have a central collection, if the custodians are inclined to be liberal and part with them for a noble purpose They may be edited, translated and printed Perhaps your Sadhus with the aid of some Shastries may do this You might start a few research scholarships for young men of your religion, who could be sent to Germany to be trained under Oriental Scholars in research work and higher studies, and on their return entrusted with some particular line of work

History yet to be written

11. The history of your religion has yet to be written—when and how it originated, how it developed, the schism between Swetambaras and Digambaras, its spread in Southern India, its influence at Court, causes of its decline At present, there is no one book where all the principles of your religion could be had in a readable form You can have such a comprehensive work prepared in English as well as in Vernaculars, for the information of outsiders You can have special subjects investigated, such as origin and development of caste among Jains, effects of Hinduism upon your religion and the habits and customs of your people, effects of Jain religion upon Brahmanism and other sects, the differences among the various sects of Jainism, their origin and effect upon the community in general I am sure the result of these investigations would be to your advantage You will be in a position to place before orthodox and conservative members or your sect an authoritative statement to guide them in

future This will make your reform movements easier and will remove the misunderstanding and ignorance that pervade our people.

Emphasis on the national ideal

12 As I said in the beginning, in all your attempts at reform and progress do not for a moment miss the national ideal. Always remember that you form a part of that larger society which must be moulded into the Indian nation India has suffered much from disunion and apathy Unity must be your watch-word within and outside your religion

All India Jain Conference

13 I know an attempt was made to hold a combined conference of all sects of your religion, instead of holding separate ones If you have once failed in the attempt you can renew it and I am sure, some day, with better counsel prevailing, you will succeed. It seems the younger generation is willing to join and they have made a start by holding an All India Jain Conference at Surat The ball has been set rolling and you can accelerate its motion by your help There is no inherent difficulty in the matter. All the sects have identical programmes, as I find upon comparison of the resolutions of all the three Conferences

Regard for humanity

14 Before I conclude there are one or two other matters on which, with your indulgence I may be permitted to say a few words. You know that all religions are apt to go to extremes in some particular In your care for animal and lower life you are not to forget the welfare of your fellow mortals I know that you are alive to the necessity of rendering all possible help to your backward and poor co-religionists, but you will realise that the larger circle of humanity has better claim for sympathy and help than the lower life. Every act of mercy to the animal world is a good deed, but such good deeds are intensified in equality when done to the poor and the out-caste among human beings.

15. There are so many urgent problems to be solved in the realm of social reform that our first attention and most earnest care should be given to them There is evil of infant marriage which is the cause of puny and defective off-spring and the source of much unnecessary physical suffering The rate of mortality among infants in this country is shamefully high, and a determined effort must be made to stamp out this evil by training up nurses and midwives, and by inculcating the need of more sanitary habits, of better food, better houses and better clothing And then there are the problems of enforced widowhood, which is the source, I fear in many cases of much misery. The so-called "*Social-evil*" may not be as acute in this country as in the Western Society, yet it is a problem which all thinking men cannot afford to ignore I shall not attempt to set forth a panacea for this evil, but merely suggest the problem to you as one that should not escape the attention of any Society that wishes to raise itself and maintain a proud and distinguished position among the nations of the world, which it cannot do unless it is prepared to cope courageously with the evils of life

Free expression of opinion

16 On several occasions I have observed that free discussion is not permitted in some of the Conferences Only approved speakers are allowed to deliver set speeches. On this account it is very seldom that divergent views are placed before the audience Perhaps you think that free discussion is not convenient in large assemblies but at least in the Committee on resolutions there should be the freest opportunity for the discussion of all points of view, radical, moderate or conservative If this is inconvenient you may have fewer subjects taken up But no radical view should be crushed And in particular no attempt should be made to coerce the opinions of the younger and more progressive element in your Conference

Free discussion of ideas

17 I attach great importance to free discussion and ventilation of thought Thought is a measure of progress of a community In India where even people's minds move in one groove and are hide bound by usage and custom, it is highly desirable that more than usual facility should be given for the expression of new ideas And if, under your present organization you can not permit more time for discussion, I would suggest that different speeches should be written, taken as read, and published for the good of all Another alternative would be that people should be encouraged to write essays on different social topics, to be published under the authority of the Conferenee, and with its criticisms Let reason be your guide rather than your mere authority

Conclusion

18 In conclusion I want to thank you for the kind invitation to attend your Conference, which I should be glad to do were it not for the pressure of other engagements You will pardon me for the few remarks I have made in this letter if they appear too candid When I am called to attend your Conference, which has my hearty sympathy, I feel that I must speak out the truth as I see it, even though it may be somewhat unpalatable, my regard is for the welfare of India, and when that is concerned there should be no compromise of views

Wishing the Conference every suecess

I am,

Yours sincerely,

(Sd) SAYAJI RAO GAEKWAR.

इस अधिवेशन मे शिक्षा-प्रसार तथा बेकारी निवारण आदि २ प्रस्ताव पास किये गये जिनमे से मुख्य २ इस प्रकार है —

प्रस्ताव ६—(धार्मिक शिक्षा बढाने के विषय मे) हिन्दुस्तान मे कई स्थानो पर अपने सघो की तरफ से जैन पाठशालाएँ चल रही हैं जिन्हे देख कर कॉन्फरन्स को बडे सन्तोष का अनुभव होता है। जहा ऐसी धार्मिक सस्थाएँ नही है वहाँ के अग्रगण्य सज्जनो से कॉन्फरन्स विनती करती है कि वे भी अपने यहां ऐसी सस्थाएँ शुरू करे।

जैन तत्त्वज्ञान तथा साहित्य के प्रचार के लिये और प्राचीन इतिहास-सशोधन के लिये जैन ट्रेनिंग कॉलेज, रतलाम मे खोलने का जो पिछली मेनेजिग कमेटी मे प्रस्ताव पास किया गया था और उसके लिये १००) रु० मासिक की स्वीकृति दी गई थी, उसके बजाय अब २५०) रु० मासिक की स्वीकृति दी जाती है। यह रुपया धार्मिक फड मे से दिया जाएगा।

इस कार्य के लिए सेठ श्री अमरचन्दजी सा० पित्तलिया रतलाम, लाला गोकुलचंदजी नाहर दिल्ली तथा श्री सुजानमलजी बाठिया पिपलोदा निवासी की जनरल-सेक्रेट्री के रूप मे नियुक्ति की जाती है। ये जैसा उचित समझें योग्य मेम्बरो का सलाहकार बोर्ड और कार्यकारिणी-समिति का चुनाव कर सकेगे।

प्रस्ताव ७—(व्यवहारिक-शिक्षा बढाने के विषय मे)

उच्च शिक्षा के लिये बम्बई मे एक बोर्डिंग-हाउस खोलने का प्रस्ताव रख कर उसके लिये मासिक १००) रु० की सहायता देने का जो प्रस्ताव पिछली मेनेजिग कमेटी ने पास किया था, परन्तु इतनी सी रकम मे निर्वाह होना कठिन होने से २५०) रु० मासिक सहायता व्यवहारिक-फड मे से देने की स्वीकृति दी जाती है।

(क) बोर्डिंग-हाउस मे पढ़ने वाले विद्यार्थियो को धार्मिक-शिक्षा आवश्य लेनी पडेगी। अध्यापकों का वेतन चार आना फड के अन्तर्गत ३/४ आना हिस्सा व्यवहारिक शिक्षण-फड मे से देने का पिछली मेनेजिंग कमेटी मे पास किया गया था, परन्तु अब वेतन उपरोक्त सहायता मे से ही देने का तय किया जाता है।

(ख) इस बोर्डिंग के सेक्रेट्री के रूप मे श्री गोकुलदास राजपाल मोरवी, वकील पुरुषोत्तम मावजी राजकोट, सेठ जेसग भाई उजमसी अहमदाबाद तथा सेठ मेघजी भाई थोभण, बम्बई की नियुक्ति की जाती हैं। ये जैसा भी उपयुक्त समझें उतने मैम्बरों की सलाहकार-समिति और कार्यवाहक-कमेटी बनालें।

प्रस्ताव ६—गत वर्ष जो मेनेजिंग-कमेटी बनाई गई थी, उसे निम्नोक्त अधिक सत्ताएँ दी गई :—

(अ) प्रति वर्ष कॉनफरन्स कहा और कैसे करना ? उसकी व्यवस्था तथा प्रमुख चुनने का अधिकार। जो सघ अपने खर्च से कॉन्फरन्स भराएगा, उसे प्रमुख की नियुक्ति का अधिकार वहा की स्वागत-समिति को रहेगा, परन्तु कॉनफरन्स की जनरल कमेटी की स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक होगा।

(ब) चार आना फड की व्यवस्था, चौथी कॉन्फरन्स हो वहां तक करने की सत्ता दी जाती है।

(क) कॉनफरन्स का हैड-ऑफिस कहां रखना और उसकी व्यवस्था कैसे करनी ?

प्रस्ताव १०-(विरोध मिटाने के लिये) कॉन्फरन्स-फड की वसूली मे यदि कोई विरोधी प्रयत्न करेगा तो कॉन्फरन्स उसके लिये योग्य विचार करेगी।

प्रस्ताव ११-(श्रमण-सघ को सुसगठित करने के विषय मे)

जिन २ मुनि-महाराजों की सम्प्रदाय मे आचार्य नहीं है उन २ सम्प्रदायों मे आचार्यों की नियुक्ति कर दो वर्ष में गच्छ की मर्यादा बांध देनी चाहिए—ऐसी सभी मुनिराजों से नम्र प्रार्थना की गई।

प्रस्ताव १२-(स्वधर्मी भाइयों का नैतिक-जीवन-स्तर उच्च बनाने के लिये)

प्रत्येक शहर या गांव के अग्रेसरो को कॉन्फरन्स ने यह सलाह दी कि अपने यहां किसी स्वधर्मी भाई में यदि नैतिक-व्यवहार से विरुद्ध कोई बडे दोष प्रतीत हों तो उसे योग्य शिक्षा दें जिससे दूसरों को भी शिक्षा मिले।

प्रस्ताव १६-गत वर्ष जो जनरल-सेक्रेट्री नियुक्त किये गये है इन्हें ही चतुर्थ-अधिवेशन तक चालू रखे जायें। श्रीमान् सेठ बालमुकन्दजी मूथा, सतारा को भी जनरल-सेक्रेट्री के रूप मे चुना जाता है।

प्रस्ताव १७-बी० बी० एंड सी० आई० रेलवे, आर० एस० रेलवे, नार्थ वेस्टर्न रेलवे, साउथ रोहिल-खंड रेलवे, बी० जी० रेलवे, सहादरा सहारनपुर रेलवे आदि ने कॉन्फरन्स मे आने वाले सज्जनों को कन्सेशन देने की जो सुविधा दी अतः उनका तथा बम्बई-समाचार, साज-वर्तमान एव जैन-समाचार आदि पत्रो ने अपने रिपोर्टर भेजे अतः उनका भी आभार माना गया।

प्रस्ताव १८-इस अधिवेशन के कार्य मे अजमेर के स्वयसेवको ने जिस उत्साह से भाग लेकर सेवा की है उसके लिये उनका आभार माना गया और अध्यक्ष श्री बालमुकन्दजी मूथा की तरफ से उनको रजत-पदक भेंट देने का निश्चय घोषित किया गया।

प्रस्ताव १९-अजमेर कॉन्फरन्स के कार्य को सफलता पूर्वक सपन्न कराने मे अजमेर-सघ का और मुख्यतः दी० बहादुर सेठ श्री उम्मेदमलजी तथा राय सेठ श्री चांदमलजी का अतःकरण से आभार माना गया। राय सेठ श्री चांदमलजी ने कॉन्फरन्स का सम्पूर्ण खर्च तथा हैड-ऑफिस का कार्यभार अपने सिर पर लेकर जो महान सेवा की है उसके लिये उन्हें मान-पत्र देने का तय किया गया। इस अधिवेशन मे मुख्य २२ प्रस्ताव पास हुए।

चतुर्थ-अधिवेशन, स्थान-जालंधर (पंजाब)

कॉन्फरन्स का चतुर्थ-अधिवेशन मार्च सन् १९१० मे ता० २७, २८, २९ को दी० बहादुर सेठ श्री उम्मेदमलजी लोढ़ा की अध्यक्षता मे जालधर (पजाब) मे सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन मे कुल २७ प्रस्ताव पास हुए। जिनमे से मुख्य २ प्रस्ताव ये है —

प्रस्ताव ३-(सरकारों मे जैन-त्यौहारों की छुट्टियों के विषय में)

बम्बई सरकार ने कुछ जैन त्यौहारों की छुट्टियाँ स्वीकार करली है अतः कॉन्फरन्स उसका हार्दिक आभार मानती है तथा अन्य प्रान्तों की सरकारों से व भारत सरकार से भी अनुरोध करती है कि वह भी जैन त्यौहारों की छुट्टियाँ स्वीकार कर आभारी करे।

प्रस्ताव ६-(अधिवेशनों मे फीस मुकर्रर करने के विषय में)

कॉन्फरन्स-अधिवेशन मे भविष्य के लिये प्रतिनिधियों का शुल्क ४) रु० दर्शकों का ३) रु० बालकों का १॥) रु० (१२ वर्ष से छोटे) तथा स्त्रियो का २) रु० तय किया गया।

प्रस्ताव ७-(हिन्दी भाषा की प्रमुखता के लिये) भविष्य मे कॉन्फरन्स की कार्यवाही हिन्दी-भाषा और हिन्दी-लिपि में ही रखी जावे।

प्रस्ताव १०-(जीवदया के विषय में)

कई प्रसगों पर जीवित जानवरों का भोग दिया जाता है। इसी तरह पशुओं का मांस तथा उनके अवयवों से बनी हुई वस्तुओ का प्रचार बढ जाने से बहुत हिंसा होती है। उसको अटकाने के लिये उपदेशकों द्वारा, लेखकों द्वारा प्रचार, तथा साहित्य द्वारा योग्य-प्रचार कराने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है।

(ब) छोटे बड़े जानवरों के लिये पांजरापोल खोलने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। और जहां ऐसी संस्थायें हैं उनके कार्य को बढ़ाने की सूचना करती है।

(स) जीव-हिंसा बंद करने वाले और जीवदया के काम में प्रोत्साहन देने वाले राजा-महाराजा तथा अहिंसा के प्रचारकों को यह कॉन्फरन्स धन्यवाद देती है।

प्रस्ताव १२–(स्वधर्मियों की सहायता के विषय में)

हमारी समाज के अशक्त, निरुद्यमी और गरीब जैन बन्धुओं, विधवा बहिनों और निराश्रित-बालकों की दुखी अवस्था दूर करने के लिये उन्हें औद्योगिक-कार्यों में लगाने तथा अन्य तरह से सहायता पहुँचाने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। और श्रीमन्त-भाइयों का ध्यान इस ओर केन्द्रित करने का आग्रह करती है।

प्रस्ताव १३–(रात्रि-भोजन बंद करने के विषय में)

हमारी समाज में कई स्थानों पर तो जातीय रात्रि भोजन बंद ही है पर जहां बंद न हों वहां के श्री-संघ से कॉन्फरन्स अनुरोध करती है कि वे भी अपने यहां रात्रि-भोजन बंद करदें।

प्रस्ताव १४–(साधु-साध्वियों को टॉल-टैक्स से मुक्त कराने के विषय में)

पंजाब-प्रान्त में जहां २ रेलवे पुलों पर चलने का 'टॉल-टैक्स' लगता है वहां जैन साधु-साध्वियों से ऐसे टैक्स की मांग न की जाय। इस सम्बन्ध में जैसे अन्य रेलवे-कम्पनियों ने टैक्स माफ किये हैं वैसे ही पंजाब की एन० डब्ल्यू० आर० से भी अनुरोध करने के लिये एक डेप्युटेशन भेजा जावे। रेलों के पुल पर से गुजरने की स्वीकृति के लिये पंजाब-सरकार को दरख्वास्त भेजी जावे।

प्रस्ताव १६–कॉन्फरन्स का अधिवेशन आयंदा से दिसम्बर माह में भरा जावे।

प्रस्ताव १७–(कॉन्फरन्स के प्रचार के विषय में)

कॉन्फरन्स को सुदृढ़ बनाने के लिये तथा उसके प्रस्तावों का अमल कराने के लिये कॉन्फरन्स के अग्रगण्य-सज्जनों की एक कमेटी बनाई जाय और वह इसके लिये प्रवास करे। सुयोग्य-उपदेशकों द्वारा भी प्रचार कराया जाय।

प्रस्ताव १९–इस कॉन्फरन्स का पांचवा-अधिवेशन हो वहां तक निम्नोक्त सज्जनों को जनरल-सेक्रेट्री के पद पर नियुक्त किये जाते हैं:—

राय सेठ चांदमलजी रियांवाले अजमेर, दी० बहादुर सेठ उम्मेदमलजी लोढा अजमेर, सेठ बालमुकन्दजी मूथा सतारा, सेठ अमरचन्दजी पित्तलिया रतलाम, लाला गोकलचन्दजी नाहर जौहरी दिल्ली, श्री गोकलदास राजपाल महेता मोरवी तथा दीवान ब० बिशनदासजी जैन जम्मु (काश्मीर)

इस कॉन्फरन्स में भी मोरवी-नरेश सर वाघजी बहादुर अपने युवराज श्री लखधीरजी के साथ पधारे थे। चूड़ा के ठाकुर सा० श्री जोरावरसिंहजी भी पधारे थे अतः इन दोनों का आभार माना गया।

कपूरथला के महाराजा सा० की तरफ से भी कॉन्फरन्स को सहायता प्राप्त हुई थी। रेलवे-कम्पनियों ने अधिवेशन में आने वाले सज्जनों को कन्सेशन दिया एतदर्थ इनका तथा पंजाब-संघ-स्वयं-सेवकों का भी आभार माना गया। स्वयं-सेवकों को प्रमुख सा० तथा दी० ब० सेठ उम्मेदमलजी सा० की तरफ से रजत-पदक देने की घोषणा की गई।

पंचम-अधिवेशन, स्थान-सिकन्द्राबाद

कॉन्फरन्स का पाचवा अधिवेशन सन् १६१३ मे ता० १२, १३, १४ अप्रैल को सिकन्द्रावाद में जलगांव निवासी सेठ लछमनदासजी मुलतानमलजी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव तथा निर्णय किये गये। सभी मिला कर २१ प्रस्ताव पास हुए जिनमे से मुख्य ७ निम्न हैं:—

प्रस्ताव ४ (अ)—(शास्त्रोद्धार के विपय मे) जैन-शास्त्रों के सशोधन और प्रकाशन के लिये यह कॉन्फरन्स प्रयास करेगी।

शास्त्रोद्धार के लिये निम्नोक्त सज्जनो की एक कमेटी नियुक्त की जाती है —

श्रीमन् रा० ब० ला० सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरी हैदरावाद, श्रीमान् शास्त्रज्ञ वालमुकन्दजी मूथा सतारा, श्रीमान् अमरचन्दजी पित्तलिया रतलाम, श्रीमान् केसरीचन्दजी भडारी इन्दौर, श्रीमान् दामोदर भाई जगजीवन भाई दामनगर, श्रीमान् पोपटलाल केवलचन्द शाह राजकोट, डा० जीवराज घेलाभाई अहमदाबाद, डॉ० नागरदास मूलजी ध्रुव वढवाण-कैम्प, श्रीमान् हजारीमलजी वाठिया भीनासर तथा श्रीमान् मुलतानमलजी मेघराजजी व्यावर। नाम बढ़ाने की सत्ता कॉन्फरन्स ऑफिस को दी जाती है।

प्रस्ताव ४ (ब)—(धार्मिक तथा व्यवहारिक-शिक्षण के विपय मे)

रतलाम जैन ट्रेनिंग-कॉलेज तथा वम्बई बोर्डिंग-स्कूल की नींव मजबूत बनाने के लिये, उसके विधान मे आवश्यक परिवर्तन करने के लिये तथा ग्रान्ट बढाने की जरूरत हो तो उसका निर्णय करने के लिये निम्नोक्त सज्जनों की एक सिलेक्ट कमेटी बनाई जाती है:—

श्रीमान् लछमनदासजी मुल्तानमलजी मूथा, जलगांव, श्रीमान् वालमुकन्दजी चन्दनमलजी मूथा, सतारा, श्रीमान् कुवर छगनमलजी रियांवाले अजमेर, श्रीमान् गोकलचन्दजी राजपाल भाई मेहता, मोरवी व इन्दौर, श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया, अहमदनगर, श्रीमान् फतहचन्दजी कपूरचन्दजी लालन, श्रीमान् कुवर वर्धमानजी पित्तलिया, रतलाम, श्रीमान् केसरीचन्दजी भडारी, इन्दौर, श्रीमान् वाडीलाल मोतीलाल शाह अहमदाबाद, श्रीमान् दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी जयपुर व मौरवी, श्रीमान् लखमीचन्दजी खोरवानी मोरवी, श्रीमान् किशनसिंहजी, श्रीमान् मिश्रीमलजी वोहरा, श्रीमान् फूलचन्दजी कोठारी भोपाल, श्रीमान् बछराजजी रूपचन्दजी, श्रीमान् कुवर मानकचन्दजी मूथा अहमदनगर तथा डॉ० धारसी भाई गुलाबचन्द, गौंडल।

प्रस्ताव ५—जिन प्रान्तों में से चार आना-फड ७५% नियमित प्राप्त होगा, उन प्रान्तों मे यदि बोर्डिंग खोले जायेंगे तो कॉन्फरन्स-फड मे से बोर्डिंग खर्च का एक तृतीयांश खर्च दिया जायगा। ऐसी स्थिति मे वहां धार्मिक-शिक्षण अनिवार्य होना चाहिये।

प्रस्ताव ६—विद्वान् मुनि श्री जवाहरलालजी म० के सम्बन्ध में दक्षिण मे जो असन्तोष फैल रहा है, उसका निराकरण करने के लिये कॉन्फरन्स की सब्जेक्ट-कमेटी ने निम्नोक्त सज्जनों की एक स्पेशियल-कमेटी नियुक्त की:—

श्रीमान् वालमुकन्दजी मूथा सतारा, श्रीमान् लछमनदासजी मूथा जलगांव, श्रीमान गोकलदास भाई जौहरी मोरवी, श्रीमान् कु० छगनमलजी रियांवाले अजमेर, श्रीमान् वर्धमानजी पित्तलिया, श्रीमान् बछराजजी रूपचन्दजी श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्रीमान् फूलचदजी कोठारी भोपाल, श्रीमान् नथमलजी चौरडिया

नीमच, श्रीमान् वीरचन्दजी सूरजमलजी, श्रीमान् शिवराजजी सुराना सिकन्द्राबाद, श्रीमान् लल्लूभाई-नारायणदास पटेल इटोला।

इस कमेटी ने ता० १३ को जो निम्नोक्त प्रस्ताव तैयार किया है उसे यह कॉन्फरन्स मान्य रखती है।

'इन्दौर के बारे में शुरुआत में जो लेख कॉलेज-सेक्रेटरी श्री केसरीचन्दजी भडारी तथा कॉलेज के प्रिंसिपल श्री प्रीतमलाल भाई कच्छी के प्रकट हुए हैं उन्हें पढने से, अन्य पत्रों की जाच करने से तथा हकीकत सुनने से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों को भगाने का जो आरोप मुनि श्री मोतीलालजी म० तथा श्री जवाहरलालजी म० पर लगाया है, वह सिद्ध नहीं होता है अत कमेटी मुनि श्री को निर्दोष ठहराती है।

प्रस्ताव ७—(बालाश्रम खोलने के विषय में)

दक्षिण-प्रान्त में एक जैन बालाश्रम खोला जाय जिसको कॉन्फरन्स की तरफ से मासिक १००) रु० की सहायता देने का तय किया जाता है। उस आश्रम की व्यवस्था करना और कहा खोलना इसका निर्णय निम्नोक्त सज्जनों की कमेटी करेगी —

श्री लक्ष्मनदासजी मुल्तानमलजी जलगाव, श्री बालमुकन्दजी मूथा सतारा, श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरी हैदराबाद तथा श्री वछराजजी रूपचदजी पाचोरा।

प्रस्ताव ८—(समाज सुधार के विषय में)

बाल-लग्न, वृद्ध-विवाह, तथा कन्या-विक्रय, आदि हानिकारक रिवाजों को दूर करने से अपनी समाज का हित किया जा सकेगा। अत' कॉन्फरन्स आग्रह-पूर्वक अनुरोध करती है कि .—

(अ) पुत्र की उम्र कम से कम १६ वर्ष और कन्या की उम्र कम से कम ११ वर्ष की होने से पूर्व उनका विवाह नहीं किया जाय।

(ब) अधिक से अधिक ४५ वर्ष की उम्र के बाद विवाह नहीं किया जाय।

(ए) अनिवार्य कारणों के सिवाय जाति की आज्ञा लिये बिना एक स्त्री की मौजूदगी में दूसरा विवाह नहीं किया जाय।

(ड) कन्या-विक्रय का रिवाज बन्द करने के लिये हर एक सघ के सद्गृहस्थों को ठोस प्रयत्न अवश्य करना चाहिए।

(ई) आतिशबाजी, वेश्या-नृत्य, विवाह और मृत्यु-प्रसगों में फिजूल खर्च बद करना या कम करना चाहिए

प्रस्ताव ९—स्थायी ग्रांट के सिवाय अन्य सभी तरह की ग्रांट की व्यवस्था के बारे में सभी जनरल-सेक्रेट्रियों की सलाह ली जाय और बहुमति के अनुसार ऑफिस द्वारा कार्य किया जाय।

(ब) जालधर-कॉन्फरन्स में प्रतिनिधि, दर्शक आदि के शुल्क के बारे में जो प्रस्ताव पास किया गया उसमें कम-ज्यादा करने का अधिकार भविष्य में आमन्त्रण देने वाले सघ को नहीं रहेगा।

(क) कॉन्फरन्स का अधिवेशन प्रति वर्ष किया जाय। यदि किसी गांव के सघ की तरफ से आमन्त्रण प्राप्त न हो तो कॉन्फरन्स के खर्च से किसी अनुकूल स्थान पर अधिवेशन भरने का निर्णय किया जाय।

(ड) कॉन्फरन्स में आने वाले डेलिगेट (प्रतिनिधि) तथा विजीटर आदि की व्यवस्था उनके स्वय के खर्च से की जायगी।

(ई) यह कॉन्फरन्स प्रत्येक गांव और शहर के स्वधर्मी-भाइयों से आग्रह पूर्वक भलामण करती है कि वे चार आना फड में अपनी सहायता भेजें। सहायक-मडल के मेम्बर बन कर और धर्मार्थ-पेटी मगाकर शक्ति अनुसार कॉन्फरन्स को सहायता पहुँचावें।

प्रस्ताव १२—(सवत्सरी पर्व एक साथ मनाने के विषय मे)

अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन भाई एक ही दिन सम्वत्सरी-पर्व का आराधन करें यह आवश्यक है। इस बारे मे भिन्न २ सम्प्रदायों के मुनि-महात्माओं और श्रावकों के साथ पत्र-व्यवहार द्वारा योग्य निर्णय कर लेने की सूचना कॉन्फरन्स हैड-ऑफिस को करती है।

प्रस्ताव १३—(दीक्षा मे दखल न करने के बारे मे जोधपुर-स्टेट से निवेदन)

हाल ही मे जोधपुर स्टेट मे ऐसा कानून लागू हुआ है कि २१ वर्ष से कम उम्र के व्यक्ति को साधु नहीं बनाना यानि दीक्षा नहीं देना और मारवाड़ मे जितने भी साधु हैं उनका नाम सरकारी रजिस्टर मे लिखा जाना चाहिये—ये दोनों ही बातें जैन शास्त्रों के फरमान से विरुद्ध हैं। अतः यह कॉन्फरन्स नम्रता-पूर्वक जोधपुर स्टेट से निवेदन करती है कि यह धर्म से सम्बन्धित बात है और धर्म के बारे मे ब्रिटिश-सरकार भी जब एतराज नहीं करती है तो जोधपुर-स्टेट को भी महरबानी कर जैन साधुओं को उक्त क़ानून से मुक्त कर देना चाहिये। ऐसा उक्त प्रस्ताव कॉन्फरन्स-ऑफिस द्वारा जोधपुर-स्टेट की सेवा मे योग्य आज्ञा मगवाने के लिए भेजा जाय।

प्रस्ताव १४—(योग्य-दीक्षा के विषय मे)

यह कॉन्फरन्स हिन्दुस्तान के समस्त स्था० जैन श्री सघो को सूचना करती है कि जिस वैरागी को दीक्षा देनी हो, उसकी योग्यता आदि की पूरी २ जांच स्थानीय-सघ को कर लेनी चाहिये। यदि ५० घरों की सख्या गांव में न हो तो पास के दूसरे गांव के ५० घरो की लिखित सम्मति प्राप्त किये बाद ही दीक्षा दिलानी चाहिये।

निम्न प्रान्तों के निम्नोक्त सज्जन मत्री नियुक्त किये जाते हैं:-

श्री कुदनमलजी फिरोदिया अहमदनगर (दक्षिण), श्री मोतीलालजी पित्तलिया अहमदनगर (दक्षिण)। श्री वीरचंदजी चौधरी, इच्छावर (सी० पी०), श्री गुमानमलजी सुराना बुरहानपुर (सी० पी०)। श्री केसरीमलजी गुगलिया धामनगांव (बरार), श्री मोहनलालजी हरकचदजी आकोला (बरार)। श्री राजमलजी ललवानी जामनेर (खानदेश), श्री रतनचदजी दोलतरामजी बाघली (खानदेश)। श्री मगनलालजी नागरदास वकील लींबड़ी (झालावाड)। श्री दुर्लभजी केशवजी खेतानी बम्बई (बम्बई), श्री जगजीवन दयालजी घाटकोपर (बम्बई)। श्री उमरशी कानजी भाई देशलपुर (कच्छ)। श्री आनदराजजी सुराना जोधपुर (मारवाड़), श्री विजयमलजी कुंभट (जोधपुर)। श्री सिरेमलजी लालचदजी गुलेजगढ़ (कर्नाटक)।

प्रांतीय-मत्रियों को यह अधिकार दिया जाता है कि वे अपने २ क्षेत्र की एक कमेटी बना लें और 'चार आना-फड धर्मार्थ-पेटी' की रकम अपने २ प्रांतों से वसूल कर के ऑफिस को भेज दें। इस फड की व्यवस्था पूर्व निर्णयानुसार अलग २ फडों मे की जायगी।

(प्रमुख सा० की ओर से)

प्रस्ताव ३—(बम्बई मे कॉन्फरन्स-ऑफिस रखने के विषय मे)

कॉन्फरन्स-ऑफिस आगामी दो साल के लिए स० १९८२ की कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा से बम्बई मे रहे और 'जैन प्रकाश' पत्र भी बम्बई से ही प्रकट किया जाय। ऑफिस की वर्किंग-कमेटी मे सेठ श्री मेघजी भाई थोभण जे० पी० प्रेसिडेन्ट, सेठ श्री वेलजीभाई लखमशी तथा जौहरी सूरजमल लल्लूभाई को जॉइन्ट सेक्रेट्री नियत किये जाते हैं। उपरोक्त तीनों सज्जन ने बम्बई जैसे केन्द्र-स्थान में ऑफिस को ले जाने का जो सेवा-भाव दिखलाया है उसके लिये कॉन्फरन्स हार्दिक धन्यवाद देती है। प्र० श्री मोतीलालजी मूथा। अनु० श्री वरधमानजी पित्तलिया, श्री सरदारमलजी भडारी।

+++

प्रस्ताव ४—(जैन ट्रेनिग कॉलेज खोलने के बारे मे)

सभ्य कही जाने वाली सारी दुनिया का ध्यान आजकल अहिसा की ओर आकर्षित हुआ है। ऐसे समय मे यह आवश्यक है कि अहिंसा का सर्वदेशीय स्वरूप बतलाने वाला जैन तत्त्वज्ञान का शिक्षण ठीक पद्धति से प्राप्त हो सके, अत. एक जैन ट्रेनिग कॉलेज खोलने का निश्चय किया जाता है और उसके लिये स्थान आदि के बारे मे योग्य निर्णय करने का अधिकार निम्नोक्त सदस्यों की इस समिति को दिया जाता है :—

श्री प्रमुख सा० मेघजी भाई J P बम्बई, श्री लजीभाई वेलखमसी बम्बई, श्री सूरजमल लल्लुभाई जौहरी बम्बई, श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह बम्बई, श्री दुर्लभजी भाई त्रिभुवन जोहरी जयपुर, श्री नथमलजी चौरडिया नीमच, श्री वर्धमानजी पित्तलिया रतलाम, श्री मोतीलालजी कोटेचा मलकापुर, श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह घाटकोपर, श्री कुदनमलजी फिरोडिया अहमदनगर तथा श्री लक्ष्मणदासजी मुल्तानमलजी जलगांव। प्रस्तावक—श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह्। अनु० वर्धमानजी पित्तलिया, दुर्लभजी भाई जौहरी तथा पद्मसिंहजी जैन।

प्रस्ताव १५—(जैन फिर्कों के साथ भ्रातृ-भाव बढ़ाने के विषय में)

यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है कि जैन-धर्म की उन्नति के लिए भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के साथ परस्पर भ्रातृ-भाव और प्रेम-पूर्ण व्यवहार की नितान्त आवश्यकता है। अत: प्रत्येक गांव और शहर के सघों को सूचना करनी है कि वे अपने क्षेत्र के क्लेश दूर कर शाति और प्रेम बढाने का प्रयत्न करें। जैनों के तीनों फिर्कों मे ऐक्य की स्थापना के लिए प्रत्येक सम्प्रदाय के २५-२५ गृहस्थों का एक सम्मेलन हो। ऐसा यदि प्रसग आवे तो अपनी तरफ से द्रव्य और श्रम का सहयोग भी दिया जाय ऐसी कॉन्फरन्स अपनी इच्छा प्रकट करती है।

प्रस्ताव १६—(जीव दया के विषय में)

(अ) निराधार-जानवरो की रक्षा करने के लिए जिन २ स्थानों पर पांजरापोल हों उनकी अधिक उन्नति करने के लिए तथा जिन २ स्थानों पर पाजरापोल न हों वहां स्थापित करने के लिए यह कॉन्फरन्स प्रत्येक सघ को भलामण करती है।

(ब) यह कॉन्फरन्स जिन-जिन वस्तुओं की बनावट में जीव-हिंसा होती है उन उन वस्तुओं का उपयोग नहीं करने की भलामण करती है।

(क) अन्य धर्मावलवियों मे भोजन के निमित्त या देवी-देवताओं के नाम पर जो जीव-हिंसा होती है उसे पैम्फ्लेटों और उपदेशकों द्वारा बंद कराने का प्रयत्न किया जाय।

प्रस्ताव १७—इस कॉन्फरन्स का छठा अधिवेशन न हो वहा तक निम्नोक्त सज्जनों की जनरल-सेक्रेट्री के रूप मे नियुक्ति की जाती है :—

श्री सेठ चांदमलजी रियांवाले अजमेर, दी० ब० उम्मेदमलजी लोढा अजमेर, श्री बालमुकन्दजी मूथा सतारा, श्री अमरचदजी पित्तलिया रतलाम, श्री गोकलचदजी नाहर दिल्ली, श्री गोकलदास राजपाल मेहता मोरवी, दी० ब० श्री० विशनदासजी जैन जम्मु, श्री लछमनदासजी मुलतानमलजी जलगांव तथा ला० सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी हैदराबाद।

इस कॉन्फरन्स में सेवा देने वाले स्वयं सेवकों को श्री नथमलजी चौरडिया और सभापति श्री लछमनदासजी मुल्तानमलजी की तरफ से पदक भेंट दिये गये।

++

षष्ठम-अधिवेशन, स्थान-मलकापुर

कॉन्फरन्स का छठा अधिवेशन बारह वर्ष बाद मलकापुर मे सन् १९२५ मे ता० ७-८-९ जून को हुआ जिसकी अध्यक्षता श्रीमान् सेठ मेघजी थोभण जे० पी० बम्बई ने की। स्वागताध्यक्ष श्री मोतीलालजी कोटेचा, मलकापुर निवासी थे। इस अधिवेशन में कुल २७ प्रस्ताव पास किये गये जिनमे से निम्न मुख्य २ हैं:—

प्रस्ताव २—(प्रान्तों के विषय मे) समस्त भारतवर्ष के निम्नोक्त विभाग किये जाते हैं—

१ पजाब २ मारवाड ३ मेवाड ४ मालवा ५ सयुक्तप्रांत ७ मध्यभारत ७ मध्यप्रदेश ८ उत्तर गुजरात ९ दक्षिण गुजरात १० हालार ११ झालावाड १२ गोहिलवाड १३ सोरठ १४ कच्छ १५ दक्षिण १६ खानदेश १७ बरार १८ बगाल १९ निजाम हैदराबाद २० मद्रास २१ बम्बई २२ सिंध और २३ कर्णाटक।

निन्नोक्त प्रातो के निम्नोक्त सज्जन मत्री नियुक्त किये जाते हैं :—

(दक्षिण) (१) श्री कुदनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, (२) श्री मातीलालजी पित्तलिया अहमदनगर, (सी०पी०)—(१) श्री पीरचदजी चौधरी इच्छावर, (२) श्री गुमानमलजी सुराना बुरहानपुर, (वरार)—(१) श्री केसरीमलजी गुगलिया धामनगांव, (२) श्री मोहनलालजी हरकचदजी आकोला, (खानदेश)—(१) श्री राजमलजी ललवानी जामनेर, (२) श्री रतनचदजी दोलतरामजी बाघली, (झालावाड)—(१) श्री मगनलालजी नागरदासजी वकील लींबडी, (बम्बई)—(१) श्री दुर्लभजी केशवजी खेताणी बम्बई, (२) श्री जगजीवन दयालजी घाटकोपर, (कच्छ)—(१) श्री उमरशी कानजी भाई देशलपुर, (मारवाड़)—(१) श्री आनदराजजी सुराना जोधपुर, (२) श्री विजयमलजी कुभट जोधपुर, (कर्नाटक)—(१) श्री सिरेमलजी लालचदजी गुलेजगढ़।

प्रांतीय मत्रियों को यह अधिकार दिया जाता है कि वे अपने २ क्षेत्र की एक कमेटी बनालें और 'चार आना फड' धर्मार्थ-पेटी की रकम अपने २ प्रांत से वसूल कर ऑफिस को भेज दें। इस फड की व्यवस्था पूर्व निर्णयानुसार अलग २ फडों मे की जायगी। (प्रमुख सा० की ओर से)

प्रस्ताव ३—(बम्बई मे कॉन्फरन्स-ऑफिस रखने के विषय मे)

कॉन्फरन्स-ऑफिस आगामी दो साल के लिये स० १९८२ की कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा से बम्बई मे रहे और प्रकाश-पत्र भी बम्बई से ही प्रकट किया जाय। ऑफिस की वर्किंग-कमेटी मे सेठ श्री मेघजीभाई थोभण जे० पी० प्रेसिडेन्ट, और सेठ श्री वेलजीभाई लखमशी तथा जौहरी सूरजमल लल्लुभाई को जॉइन्ट-सेक्रेट्री नियत किये जाते हैं। उपरोक्त तीनों सज्जनों ने बम्बई जैसे केन्द्र स्थान मे ऑफिस को ले जाने का जो सेवा-भाव दिखलाया है उसके लिये कॉन्फरन्स हार्दिक धन्यवाद देता है। प्रस्तावक मोतीलालजी मूथा। अनु० श्री वर्धमानजी पित्तलिया, श्री सरदारमलजी भडारी।

प्रस्ताव ४—(जैन ट्रेनिंग कॉलेज खोलने के बारे मे)

सभ्य कही जाने वाली सारी दुनिया का ध्यान आजकल अहिंसा की ओर आकर्षित हुआ है। ऐसे समय में यह आवश्यक है कि अहिंसा का सर्वदेशीय-स्वरूप वतलाने वाला जैन तत्वज्ञान का शिक्षण ठीक पद्धति से प्राप्त हो सके, अत एक जैन ट्रेनिंग कॉलेज खोलने का निश्चय किया जाता है और उसके लिए स्थान आदि के बारे मे योग्य निर्णय करने का अधिकार निम्नोक्त सदस्यो की समिति को दिया जाता है।

प्रमुख सा० श्री मेघजी भाई थोभण बम्बई, श्री वेलजी भाई लखमसी बम्बई, श्री सूरजमल लल्लुभाई जौहरी बम्बई, श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह बम्बई, श्री दुर्लभजी भाई त्रिभुवन जौहरी जयपुर, श्री नथमलजी चौरडिया

++

नीमच, श्री वर्धमानजी पित्तलिया रतलाम, श्री मोतीलालजी कोटेचा मलकापुर, श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह घाटकोपर, श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री लक्ष्मणदासजी मुल्तानमलजी जलगांव,

प्रस्तावक—श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह, श्री वर्धमानजी पित्तलिया, श्री दुर्लभजीभाई जौहरी, श्री पद्मसिंहजी जैन

प्रस्ताव ५—(हानिकारक रिवाजों को त्यागने के विषय में)

जैन समाज में से बाल विवाह, वृद्ध-विवाह, कन्या विक्रय, एक स्त्री होते हुए दूसरी स्त्री (शादी) करना, मद्य-सेवन, वैश्या नृत्य कराना आदि हानिकारक रिवाजों को दूर करने की व लग्न तथा मृत्यु प्रसंग पर फिजूल खर्ची कम कर सन्मार्ग में व्यय करने की प्रत्येक श्री संघ कोशिश करे।

प्रस्तावक—श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया। अनु० श्री राजमलजी ललवानी, श्री अमरचंदजी पूगलिया।

प्रस्ताव ६– (जनरल सेक्रेट्री का चुनाव)

निम्नोक्त सद्‌गृहस्थों को जनरल सेक्रेटरी के पद पर नियुक्त किये जाते हैं:—

सेठ श्री मेघजी भाई थोभण जे० पी० बम्बई, सेठ श्री लक्ष्मणदासजी मुल्तानमलजी जलगांव, सेठ श्री मगनमलजी रियांवाले अजमेर, सेठ श्री वर्धमानजी पित्तलिया रतलाम, सेठ श्री मोतीलालजी मूथा सतारा, सेठ श्री ज्वालाप्रसादजी जौहरी हैदराबाद, सेठ श्री गोकलचंदजी नाहर दिल्ली, सेठ श्री सूरजमल लल्लुभाई जौहरी बम्बई, सेठ श्री वेलजीभाई लखमशी नप्पु बम्बई, सेठ श्री केशरीमलजी पूगलिया धामणक, सेठ श्री मोतीलालजी कोटेचा मलकापुर।

प्रस्ताव ६—(जीव-हिंसा बंद कराने वालों को धन्यवाद)

माहियर-राज्य में शारदा देवी पर होता हुआ पशु वध हमेशा के लिये बंद कर दिया, इसके लिये यह कॉन्फरन्स माहियर-महाराजा सा० व दीवान हीरालाल भाई अंजारिया और सेठ श्री मेघजी भाई थोभण को धन्यवाद देती है। (प्रमुख सा० की तरफ से)

प्रस्ताव १०—(अनाथ बालकों के लिये) अनाथ बालकों के उद्धार के लिये आगरा में जैन-अनाथालय खोला गया है उसके प्रति इस कॉन्फरन्स की सहानुभूति है। (प्रमुख सा० की तरफ से)

प्रस्ताव ११–श्रीमान् दानवीर सेठ नाथूलालजी गोदावत छोटी सादड़ी वालों ने सवा लाख रु० की बडी रकम निकाल कर, 'श्री स्थानकवासी सेठ नाथूलालजी गोदावत जैन गुरुकुल' और जैन-पाठशाला खोली हैं और बीकानेर वाले सेठ अगरचंदजी भैरोंदानजी सेठिया ने जैन-शास्त्रोद्धार, कन्याशाला, पाठशाला, लायब्रेरी, आदि संस्थाएं करीब दो लाख रुपयों की उदारता से खोली हैं अत: यह कॉन्फरन्स इन दोनों महाशयों को धन्यवाद देती है। (प्रमुख सभा की तरफ से)

प्रस्ताव १२—(श्री सुखदेवसहाय प्रिन्टिंग-प्रेस का स्थानान्तर इन्दौर में)

कॉन्फरन्स ऑफिस का सुखदेवसहाय जैन प्रिंटिंग-प्रेस को सब सामान के साथ श्रीयुत् सरदारमलजी भंडारी की देख रेख में स० १६८८ की कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा के पहले-पहले इन्दौर भेज दिया जाय। इसमें जब तक अर्धमागधी-कोष के तीनों भाग छप न जाय वहां तक वहीं छापते रहें। इसके खर्च के लिये मासिक रु० ४५०) तक श्रीयुत् सरदारमलजी भंडारी को दिये जाय। पुस्तक छप जाने पर प्रेस इन्दौर में रखना या दूसरी जगह,

यह ऑफिस की इच्छा पर रहेगा। कोष छप जाने का काम अधिक से अधिक दो वर्ष मे पूरा हो जाना चाहिए। पुस्तकों की मालिकी कॉन्फरन्स की रहेगी। अजमेर से इन्दौर प्रेस पहुँचाने का तथा फिट करने का जो खर्च होगा, वह ऑफिस की तरफ से दिया जायगा। मत्री तरीके श्री सरदारमलजी भडारी को नियत किये जाते हैं और वर्किंग कमेटी इन्दौर मे बनाली जायगी।

प्रस्ताव २४--(खादी प्रचार के विषय मे)

जैन धर्म के मूल आधारभूत अहिंसा-धर्म को ख्याल मे रखकर यह कॉन्फरन्स सभी स्थानकवासी भाई-बहिनों से अनुरोध करती है कि वे शुद्ध-खादी का व्यवहार करें। अन्य प्रस्ताव, शोक प्रस्ताव व धन्यवादात्मक थे।

पगार फड-इस अधिवेशन मे जैन ट्रेनिंग कॉलेज-फड के लिए अपील की गई थी फलस्वरूप १२ हजार रुपयों का फड हुआ था।

मलकापुर-अधिवेशन टिकिट-शुल्क की आय से ही पूर्ण सफल हो गया, यह इस अधिवेशन की विशेषता थी। आम जनता खर्च के भय से भी अधिवेशन कराने मे घबराती थी। लेकिन इस अधिवेशन मे यह बतला दिया कि डेलीगेट, विजीटर और स्वागत समिति के सदस्यों की फीस से ही अधिवेशन जैसा महान् कार्य किया जा सकता है और आमत्रण देने वालों को यश और सफलता प्राप्त हो सकती है।

सप्तम-अधिवेशन, स्थान-बम्बई

कॉन्फरन्स का सातवा अधिवेशन बम्बई मे दानवीर सेठ श्री भैरोंदानजी सेठिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। स्वागत-प्रमुख सेठ श्री मेघजी भाई थोभण बम्बई थे। इस अधिवेशन मे कुल ३२ प्रस्ताव पास किये गये जो पिछले सभी अधिवेशनों से सख्या की दृष्टि से अधिक थे। मुख्य-मुख्य प्रस्ताव इस प्रकार हैं :-

प्रस्ताव १—(स्वामी श्रद्धानन्दजी के खून के प्रति दुःख प्रकाशन)

अपने देश के प्रसिद्ध नेता और कर्म-वीर स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज का एक धर्मान्ध मुसलमान द्वारा खून हुआ है उसे यह सभा महान राष्ट्रीय हानि समझ कर अत्यत खेद तथा खूनी के प्रति तिरस्कार प्रकट करती है।

प्रस्ताव न० १-(प्रान्तीय-शाखाओं के विषय मे)

कॉन्फरन्स का प्रचार-कार्य योग्य पद्धति से तथा व्यवस्थित रुप से चले इसके लिये प्रत्येक प्रांत में एक-एक ऑनेररी प्रान्तीय-मत्री की नियुक्ति की जाती है।

(ब) प्रत्येक प्रान्तीय-मत्री को उनकी सूचनानुसार एक वैतनिक-सहायक रखने की छूट दी जाती है। उसके खर्चे के लिये ऑफिस की तरफ से आधी सहायता दी जायगी और यह सहायता २०) रू० मासिक से अधिक नहीं होगी। शेष खर्चे के लिये प्रान्तीय मत्री स्वय प्रबन्ध करें। उस प्रान्त में से एकत्रित हुए रुपया फड मे से कॉन्फरन्स के नियमानुसार जो रकम उस प्रान्त को दी जायगी, उसका उपरोक्त खर्चे में उपयोग करने का अधिकार रहेगा।

(क) जिन सज्जनों ने प्रांतीय-मत्री बनना स्वीकार किया है और भविष्य में भी जो बनने को तैयार हैं उनमें से ऑफिस प्रांतीय-सेक्रेट्री का चुनाव करें।

(४) प्रौढ़ अध्यापक तथा अध्यापिकाए तैयार करना। (५) स्त्री शिक्षण के लिये स्त्री समाजों की स्थापना करना। (६) जैन ज्ञान प्रचारक मडल द्वारा निश्चित की गई योजना को कार्य में परिणत करना और जैन-साहित्य का प्रचार करना।

(७) हिन्दी तथा गुजराती दोनों विभागों के लिये अलग अलग सैन्ट्रल-लायब्रेरी स्थापित करना तथा पब्लिक लायब्रेरियों मे जैन-साहित्य की अलमारियां (कपाट) रखना

इसके बाद सेठ मेघजीभाई थोभणभाई ने खडे होकर कहा कि:- "पूना की आबोहवा अच्छी है, शिक्षा के साधन भी प्रचुर हैं तथा खर्च भी कम आवेगा अतः पूना मे उच्च शिक्षण लेने वाले विद्यार्थियों के लिये एक बोर्डिंग खोली जाय। इसके लिये निम्न सज्जनों की एक कमेटी बनाई गई जिसके हाथ में बोर्डिंग सबंधी पूरी सत्ता रहेगी।

सेठ सुरजमल लल्लुभाई जौहरी बम्बई, सेठ वेलजी लखमसी नप्पु बम्बई, सेठ वृजलाल खीमचन्द शाह सोलीसीटर बम्बइ, सेठ मतीलालजी मूथा सतारा, सेठ कुदनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, सेठ मेघजी भाई थोभण भाई जे० पी० बम्बई।

इन प्रस्ताव का सेठ सूरजमल लल्लु भाई जौहरी तथा अन्य सज्जनों के अनुमोदन करने से जयजिनेन्द्र की ध्वनि के बीच इसके लिये फड की शुरुआत की गई और उसी समय अच्छा फड भी हो गया।

प्रस्ताव ९—(सादडी के स्था० भाइयों के विपय मे)

जैन धर्म के तीनों सम्प्रदायों मे ऐक्य और प्रेम-भाव उत्पन्न करने का समय आ गया है और इसके लिये तीनों सम्प्रदायों मे प्रयत्न भी शुरु हो रहे हैं। ऐसी स्थिति मे घाणेराव-सादड़ी के स्थानकवासी भाइयों के प्रति वहा के मदिरमार्गी भाइयों की तरफ से जो अन्याय हो रहा है, वह सर्वथा अयोग्य है। ऐसा समझ कर यह कॉन्फरन्स श्वे० जैन कॉन्फरन्स और उसके कार्य-कर्ताओं को सूचित करती है कि वे इस सबध मे शीघ्र ही योग्य व्यवस्था कर सादडी स्थानकवासी भाइयों पर जो अन्याय हो रहा है उसे दूर करें और परस्पर में प्रेम बढावें।

यह कॉन्फरन्स मारवाड, मेवाड, मालवा और राजपूताना के स्वधर्मी-बधुओं को सूचित करती है कि वे अपने सादड़ी निवासी स्वधर्मी बधुओं के साथ जाति नियमानुसार बेटी-व्यवहार कर सहायता करें। इस प्रस्ताव को सफल करने के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस व्यवस्था करे।

प्रस्ताव १०—(शत्रु जय-तीर्थ के टैक्स के विरोध मे सहानुभूति)

समस्त भारतवर्ष के स्था० जैनों की यह परिषद श्री शत्रु जय-तीर्थ सबधी उपस्थित हुई परिस्थिति पर अपना आन्तरिक दुख प्रकट करती है और पालीताणा के महाराजा तथा एजेंट टु दी गवर्नर जनरल के निर्णय के विरुद्ध अपना विरोध प्रकट करती है। आशा है ब्रिटिश सरकार इस विषय में श्वेताम्बर-बधुओं का अवश्य न्याय करेगी। मुख्यतः पालीताणा-नरेश से यह परिषद ऐसी आशा करती है कि श्वेताम्बर बधुओं की धार्मिक-भावना और हक को मान लेने की उदारता प्रकट करेगी।

प्रस्ताव १२—(महिला-परिषद के विषय में)

कॉन्फरन्स-अधिवेशन के साथ २ 'महिला-परिषद' का अधिवेशन भी अवश्य होना चाहिये। यह महिला-परिषद कॉन्फरन्स की एक सस्था है अतः उसका ऑफिस-व्यय कॉन्फरन्स दे।

यह कॉन्फरन्स प्रस्ताव करती है कि वर्तमान में भारतवर्ष में अधिक परिमाण में वेजीटेवल घी के प्रचार से देश के दुधारू और खेती के उपयोगी पशुओं को हानि पहुंचने की संभावना है। उस वेजीटेवल घी में चरबी का मिश्रण होता है और स्वास्थ्य सुधारक तत्व उसमें बिल्कुल नहीं होने से उससे धार्मिक क्षति के साथ ही स्वास्थ्य की भी हानि होती है। अतः यह परिषद प्रस्ताव करती है कि अहिंसा और आरोग्य को लक्ष्य में रख कर वेजीटेवल घी का सर्वथा बहिष्कार किया जाय और उसके प्रचार में किसी भी तरह का उत्तेजन न दिया जाय।

प्रस्ताव २१—(बर्मा के बौद्धों का मांसाहार रोकने के विषय में)

बर्मा प्रांत में रहने वाली बर्मन-जनता अपने बौद्ध सिद्धान्त के विरुद्ध मांसाहार कर रही है। अतः यह कॉन्फरन्स प्रस्ताव करती है कि अच्छे उपदेशकों को भेज कर बर्मा में मांसाहार रोकने का प्रबंध किया जाय।

प्रस्ताव २२—(तीनों जैन फिर्कों की कॉन्फरन्स बुलाने के विषय में)

समाज के साथ संबंध रखने वाले अनेक सामान्य प्रश्न समाज के सामने आते हैं। उन प्रश्नों का निराकरण करने के लिये तथा जैनियों के तीनों फिर्कों में परस्पर सद्भाव उत्पन्न करने के

लिये यह परिषद तीनों सम्प्रदायों की एक संयुक्त-कॉन्फरन्स की आवश्यकता स्वीकार करती है और यह प्रवृत्ति शुरु करने के लिये सभी फिर्कों के आगेवान-नेताओं की एक कमेटी बुलाने के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस को सत्ता देती है।

प्रस्ताव २३—(साधु-सम्मेलन की आवश्यकता के विषय में)

भारत के समस्त स्था० जैन साधु मुनिराजों का सम्मेलन यथा शीघ्र भरने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। इसके लिये कॉन्फरन्स ऑफिस को योग्य प्रवध करने की सूचना दी जाती है।

प्रस्ताव २४—(चार आने के स्थान पर १) रुपया फड के लिये)

कॉन्फरन्स ने जो चार आना फड स्थापित किया है, उसके वजाय अव से प्रत्येक घर से १) रु० प्रति वर्ष लेने का तय किया जाता है। प्रतिनिधि वही हो सकेगा जिसने वार्षिक १) रु० दिया होगा।

प्रस्ताव २८—(गुरुकुल प्रारभ करने के विषय मे)

ब्रह्मचर्याश्रम अथवा गुरुकुल को अपनी समाज की वडी जरूरत है। उससे हम सच्चे सेवक पैदा कर सकेंगे । कॉन्फरन्स यदि ऐसी स्वतन्त्र-सस्था के लिये आवश्यक सहायता नहीं दे सकती हो तो जैन ट्रेनिंग कॉलेज के साथ ही यह काम चलाया जाय। कॉलेज को मिलने वाले ग्रांट (सहायता) से २ वर्ष तक हम कार्य चला सकेंगे—ऐसी योजना की जा सकती है। इस सबध मे निर्णय करने की सत्ता निम्नोक्त सदस्यों की कमेटी को दी जाती है। वे यथाशीघ्र अपना अभिप्राय प्रकट करें।

श्रीयुत सेठ भेरोंदानजी सेठिया बीकानेर, श्रीयुत सेठ वर्धमानजी पित्तलिया रतलाम, श्रीयुत सेठ दुर्लभजी भाई जौहरी जयपुर, श्रीयुत सेठ आनदराजजी सुराणा जोधपुर, श्रीयुत बाबू हुक्मीचदजी उदयपुर, श्रीयुत सेठ पूनमचदजी खींवसरा, ब्यावर श्रीयुत सेठ मगनमलजी कोचेटा भॅवाल। शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे।

इस अधिवेशन के साथ स्था० जैन महिला-परिषद का भी आयोजन किया गया था ,जिसमे श्री आनदकुवर बाई (धर्मपत्नी सेठ वर्धमानजी पित्तलिया, रतलाम) आदि के भाषण हुए थे।

महिला-समाज के लिये कई उपयोगी तथा प्रगतिशील प्रस्ताव भी पास किये गये थे। शिक्षा-प्रसार गृहोद्योग, पर्दा-प्रथा का परित्याग तथा मृत्यु के बाद शोक रखने की प्रथा आदि को समाप्त करने के प्रस्ताव पास हुए थे।

अष्टम-अधिवेशन, स्थान-बीकानेर (राज०)

कॉन्फरन्स का आठवां-अधिवेशन सन् १९२७ मे ता० ६, ७, ८ अक्टूवर को श्रीमान् भिलापचदंजी वेद (झांसी वाले) के खर्च से बीकानेर में सम्पन्न हुआ। जिसकी अध्यक्षता जैन धर्म के प्रखर विचारक श्रीयुत वाडीलाल मोतीलाल शाह ने की। इस अधिवेशन के स्वागत-प्रमुख श्रीमान् भिलापचदजी वेद बीकानेर थे। इस अधिवेशन में लगभग ४ हजार प्रतिनिधि और प्रेक्षकों की उपस्थिति थी। महिलाएे भी काफी सख्या मे उपस्थित हुई थीं। इस अधिवेशन की सफलता के लिये देश के गण्यमान नेताओ तथा सस्थाओं, महात्मा गांधीजी, लाला लाजपतराय, श्वे० मूर्ति पू० कॉन्फरन्स, प० अर्जुनलालजी सेठी अजमेर, वाबू चम्पतरायजी जैन वैरिस्टर, श्री ए० वी० लट्ठे दीवान कोल्हापुर, सेठ बिडलाजी,

जैनशाला, तथा धार्मिक ज्ञान के साथ २ प्राथमिक शिक्षण देने वाली अपनी जैन स्कूलों के लिये जैन शिक्षकों की कमी न रहे इसके लिये जहां जहां सरकार तथा देशी राज्यों की तरफ से ट्रेनिंग कॉलेज चलते हों वहां २ के जैन स्कॉलरों को जैनधर्म संबंधी शिक्षा देने की तथा उनकी वापिस परीक्षा लेने की व्यवस्था के साथ-साथ उनको छात्रवृत्ति भी दी जाय।

प्रस्ताव १०-('जैन-प्रकाश' की व्यवस्था के संबंध में)

यह कॉन्फरन्स आग्रह करती है कि धर्म, संघ और कॉन्फरन्स के हितार्थ जैन प्रकाश की व्यवस्था अब से सभापतिजी अपने हाथ में रखें और उसकी हिंदी तथा गुजराती दोनों भिन्न २ आवृत्ति निकाले।

प्रस्ताव १२-(जैन धर्मानुयायियों में रोटी-बेटी का व्यवहार चालू करने के संबंध में)

उच्च-कोटि की जातियों में से जो व्यक्ति खुले रूप में जैनधर्म स्वीकार करे उसके साथ रोटी-बेटी का व्यवहार करना जैनियों का कर्तव्य है, ऐसा यह कॉन्फरन्स तय करती है।

प्रस्ताव १३-(बोर्डिंग को सहायता देने के बारे में)

जेतपुर (कठियावाड) में स्था० जैन विद्यार्थियों के लिये एक बोर्डिंग-हाउस खोल दिया जाय तो उसके लिये

पांच वर्ष तक ७५)रु मासिक किराये वाला अपना मकान बिना किराये के देना और मासिक २५) रु० की आय करा लेना तथा ५० गद्दे अपनी तरफ से बोर्डिंग को भेंट देना-ऐसे वचन जेतपुर निवासी भाई-जीवराज देवचद दलाल की तरफ से प्राप्त हुए थे। अतः इस पर से कॉन्फरन्स यह ठहराती है कि उपरोक्त व्यवस्थानुसार सस्था शुरु हो तब से पॉच वर्ष तक सस्था को व्यवहारिक शिक्षण-फड में से मासिक ५०) रु० की सहायता दी जाय। सस्था में धर्मिक शिक्षण का प्रबध रखना आवश्यक होगा।

इसी तरह के प्रस्ताव जयपुर और ओसिया (मारवाड) के आस पास भी बोर्डिंग खुलने पर कॉन्फरन्स की तरफ से ५०) रु० की सहायता देने के किये गये।

प्रस्ताव २०—मेसर्स अमृतलाल रायचद जौहरी, श्री जेठालाल सघवी, श्री मोतीलालजी मूथा तथा श्री जीवराज देवचद की एक कमेटी बनाई जाती है। यह कमेटी हिंद के किसी भी भाग में से अपग जैनों, विधवाओं और अनाथ बालकों को ढू ढ़ कर उनकी रक्षा के लिये स्थापित की हुई सस्थाओं मे उन्हें पहुँचायेगी और शक्य हुआ तो उन्हें वहां से स्वधर्म सबधी ज्ञान भी मिलता रहे, ऐसा प्रबध भी करावेगी। इस कार्य के लिये निराश्रित फड मे से ५०) की रकम श्रीयुत अमृतलाल रायचद जौहरी को सौंप दी जाय।

प्रस्ताव २५ (सादड़ी प्रकरण के सबध मे)

(अ) मारवाड, मेवाड़ तथा मालवा के स्थानकवासी-भाइयों से यह कॉन्फरन्स आग्रह पूर्वक भलामण करती है कि घाणेराव सादडी के स्वधर्मी भाइयों को धर्म के लिये जिस कठिनाई का सामना करना पड़ा है उसका ख्याल करके उनके साथ प्रेम से कन्या-व्यवहार करें।

(ब) गोडवाड़-प्रात के श्वेताम्बर मूर्ति पूजक तथा स्थानकवासी जैनों के बीच सैकड़ों वर्षो से लग्न व्यवहार होने पर भी कुछ धार्मिक झगड़ो को निमित्तभूत बना कर सामाजिक ऐक्य मे जो विघ्न डाला गया है उसे दूर करने के लिये तथा सामाजिक व्यवहार के बीच मे नहीं पड़ने की मुनि-महाराजों से प्रार्थना करने के लिये श्वेताम्बर मूर्तिपूजक कॉन्फरन्स-ऑफिस को यह कॉन्फरन्स समस्त जैन-समाज के हित के लिये आग्रह पूर्वक भलामण करती है।

(क) इस प्रस्ताव को क्रियान्वित करने के लिये आवश्यक-कार्यवाही करने की सत्ता सभापतिजी को दी जाती है।

प्रस्ताव २६—(सादगी धारण करने वाली विधवा बहिनों को धन्यवाद)

श्रीमती केशरबेनजी (सुपुत्री श्री नथमल चौरड़िया), श्रीमती आशीबाई, (सुपुत्री श्री गणपतदासजी पूंगलिया), श्रीमती जीवाबाई (सुपुत्री श्री चतुर्भुजजी बोरा) आदि विधवा बहिनों ने गहने तथा रगीन-वस्त्र पहनने का त्याग कर हाथ से कती और बुनी हुई खादी के वस्त्र पहनने की जो प्रतिज्ञा धारण की है उसके लिये यह कॉन्फरन्स उनको धन्यवाद देती है और अन्य विधवा-बहिनों को उनका अनुसरण करने की भलामण करती है। शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे।

नवम-अधिवेशन, स्थान-अजमेर

कॉन्फरन्स का नवमां अधिवेशन साढ़े पांच वर्ष बाद अजमेर में ता० २२, २३, २४, २५ अप्रैल सन् १९३३ को सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्रीयुत हेमचदभाई रामजीभाई महेता, भावनगर ने की। इस अधिवेशन के स्वागत-प्रमुख राजा बहादुर ज्वालाप्रसादजी थे। यह अधिवेशन विगत अधिवेशनों से अधिक महत्त्वपूर्ण था। विगत

अधिवेशनों में सभी प्रस्ताव भलामण के रूप मे ही मुख्यतः हुए थे, परन्तु इस अधिवेशन के प्रस्तावों में स्पष्ट निर्देश दिया गया था। इतना तो मानना ही पड़ेगा कि अजमेर-अधिवेशन स्था० जैन समाज मे क्रांति की चिनगारी प्रकट करने वाला था। श्री बृहत्साधु-सम्मेलन के साथ २ यह अधिवेशन होने से ४०-४५ हजार की उपस्थिति इस समय थी। अधिवेशन के लिये खास लौंकाशाह नगर बसाया गया था। यह अधिवेशन अभूत पूर्व था। इस अधिवेशन मे आभार प्रस्तावों को छोड़ कर २५ प्रस्ताव पास किये गये थे, जिन में से मुख्य-मुख्य ये हैं:-

प्रस्ताव २-(जेल-निवासी श्री पूनमचदजी रांका के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिये)

इस कॉन्फरन्स को श्री पूनमचदजी रांका नागपुर वाले जैसे धार्मिक-नेता की आज की अनुपस्थिति से खेद है। उनके ता० ४ मार्च से लिए गए अनशन व्रत के लिये चिन्ता है। उन्हें खडवा की गरम-जेल में भेजे गये हैं अतः यह कॉन्फरन्स सरकार से प्रार्थना करती है कि उनकी मांगों को स्वीकार करले अथवा उनको जेल से शीघ्र मुक्त कर दे।

प्रस्ताव ३- (धार्मिक सस्थाओं की सगठित व्यवस्था के विषय में)

यह कॉन्फरन्स प्रस्ताव करती है कि हिन्दुस्तान में स्था० जैनों की जहां २ धार्मिक और व्यवहारिक सस्थाएं चलती हैं या जो नई शुरू हों उन सस्थाओं की तरफ से शिक्षण-क्रम, पाठ्य-पुस्तकें, फड, बालक बालिकाओं की सख्या आदि आवश्यक विवरण मगा कर एकत्रित किया जाय और शिक्षण-परिषद के प्रस्ताव पर ध्यान देते हुए अब क्या कार्य करने योग्य है इस पर सलाहकार और परीक्षक-समिति जैसा पूरा काम करने के लिये एक बोर्ड नियत किया जाय। इस बोर्ड में हर एक प्रांत की तरफ से एक-एक मेम्बर की नियुक्ति की जाय और सभी शिक्षण-सस्थाएं मिल कर अपने पांच सभ्यों को इस बोर्ड में भेजें।

प्रस्ताव ४ – (वीर सघ के विषय मे)

बढ़ाने यथा मतभेद भूल कर ऐक्य-साधन से जो-जो कार्य सयुक्त-बल से हो सकें वे सभी कार्य करने की विनती करें। यह प्रवृत्ति कॉन्फरन्स ऑफिस करेगा।

प्रस्ताव ६—(सादडी के स्थानकवासी-जैनों के विषय मे)

एकता के इस युग में सादडी के स्थानकवासी भाइयों का जो अठारह वर्ष से श्वे० मूर्तिपूजक-भाइयों ने बहिष्कार किया है इस विषय में बम्बई कॉन्फरन्स के प्रस्तावानुसार श्वे० मूर्तिपूजक कॉन्फरन्स को इस कॉन्फरन्स की तरफ से पत्र दिया गया था, लेकिन उसने मौन ही रक्खा इसलिये यह कॉन्फरन्स उसके इस व्यवहार पर अत्यन्त असतोष प्रकट करती है और उससे पुनः विनती करती है कि वह इस बहिष्कार को दूर करने का भगीरथ प्रयत्न करे और एकता सबधी अपनी कॉन्फरन्स मे किये हुए प्रस्तावों का सच्चा परिचय दे।

नोट-यह कॉन्फरन्स खुशी से यह नोंध करती है कि श्रीयुत गुलाबचदजी ढढ्ढा की सूचनानुसार सादडी के दोनों पक्षों का समाधान करने के लिये दोनों पक्षों के चार-चार और एक मध्यस्थ—इस प्रकार नौ सभ्यों की एक पच-कमेटी नियत कर जो निर्णय आवे वह दोनों पक्षों को मान्य रखने का ठहराया जाता है। अपनी तरफ से चार नाम निम्न लिखित हैं:—

श्री दुर्लभजीभाई जौहरी जयपुर, श्री नथमलजी चौरडिया नीमच, दी० ब० श्री मोतीलालजी मूथा सतारा, तथा श्री कुदनमलजी फिरोदिया अहमदनगर। मध्यस्थ – पं० प्यारेकिशनजी झाबुआ दीवान।

मूर्तिपूजक जैनों की तरफ के चार नाम श्री गुलाबचदजी ढढ्ढा से लेकर कॉन्फरन्स-ऑफिस भिजवा दिए जाए जिससे कार्यारभ हो सके।

प्रस्ताव ७—(खादी और स्वदेशी-प्रेम बढ़ाने के विषय में)

अहिंसा-धर्म के कट्टर उपासकों को चर्बी वाले और रेशमी कपड़े त्याज्य होने चाहियें। बिना चर्बी का स्वदेशी तथा हाथ का कता बुना शुद्ध कपड़ा काम मे लाने से स्वदेश-सेवा का भाव भी प्रकट होता है। इस लिये यह कॉन्फरन्स सभी को शुद्ध कपड़े और स्वदेशी चीज काम मे लाने का आग्रह करती है।

प्रस्ताव ८—(साधु-सम्मेलन कार्यवाही-योजना की स्वीकृति)

साधु-सम्मेलन के लिये दूर २ प्रांतों से बहुत कष्ट उठा कर जो २ मुनिराज यहां पधारे हैं उनका यह सभा उपकार मानती है। साधु-सम्मेलन का कार्य अत्यन्त दुःसाध्य और कष्टमय होते हुए भी मुनिराजों ने १५ दिनों में परिश्रमपूर्वक पूरा किया है। इस सम्मेलन में मुनि-महाराजों ने जो योजना बनाई है, वह इस सभा को मजूर है। पूज्य श्री जवाहरलालजी म० ने जो जाहिर निवेदन का नोट दिया वह ऑफिस मे रख लिया गया है। पूज्य श्री जवाहरलालजी म० इस सम्मेलन मे १६३ साधु-साध्वियों की ओर से आते हैं, ऐसा फॉर्म भरकर आया है। योजनायें बनाने में समय २ पर शामिल रहकर सम्मति देते रहे हैं अत वे योजनायें उन पर भी बधनकारक हैं।

ये योजनायें समस्त स्था० जैन साधुओं के लिये बनाई गई हैं, जो उपस्थित और अनुपस्थित सभी साधुओं के लिये बधनकारक हैं। ऐसा यह कॉन्फरन्स ठहराती है।

प्रस्ताव—१० (साधु-सम्मेलन के नियम पलवाने के लिये श्रावक-समिति)

साधु-सम्मेलन द्वारा प्रदत्त आज्ञा और चतुर्विध श्री-संघ को की हुई प्रार्थना को शिरोधार्य कर साधु-सम्मेलन के नियमों का योग्य पालन कराने के लिये श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स को एक स्टेन्डिग कमेटी बनाने की आवश्यकता प्रतीत होती है। उक्त कमेटी मे ३८ प्रान्तों के ३८ मैम्बर चुने जावें। इनके अतिरिक्त प्रमुख सा० और दोनो मन्त्रीजी मिलकर कुल ४१ मैम्बर चुने जाय। ये सभी मैम्बर मिलकर १० को-ओप्ट मैम्बरों का चुनाव करें। उपरोक्त क्रम से निम्नोक्त नाम प्रातवार चुने गये हैं:—

श्री ला० टेकचदजी जडियाला, श्री चुनीलालजी डेराइस्माइलखान, श्री ला० गोकलचदजी नाहर दिल्ली, श्री आनदराजजी सुराणा जोधपुर, श्री भैरोंदानजी सेठिया बीकानेर, श्री अनोपचदजी पुनमिया सादडी, श्री केशुलालजी ताकड़िया उदयपुर, श्री कन्हैयालालजी भडारी इन्दौर, श्री हीरालालजी नादेचा खाचरोद, श्री चोथमलजी मूथा उज्जैन, श्री कल्याणमलजी वेद अजमेर, श्री सरदारमलजी छाजेड़ शाहपुरा, श्री सुलतानसिंहजी जैन वड़ौत, श्री फूलचदजी जैन कानपुर, श्री अचलसिंहजी जैन आगरा, श्री दीपचदजी गोठी वेतुल, श्री सुगनचदजी लुणावत धाणक, श्री रतीलाल हकिमचद कलोल, श्री वाडीलाल डाह्याभाई अहमदाबाद, श्री जेसिंहभाई हरकचद अहमदाबाद, डॉ० श्री पोपटलाल श्री कमलाल सघवी, श्री मोहनलाल मोतीचद गठ्डा, श्री पुरुशोतमचद मवेरचद जुनागढ़, श्री उमरसीभाई कानजी देशलपुर, श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, दी० व० श्री मोतीलालजी मूथा सतारा, श्री पूनमचदजी नाहटा भुसावल।

यह जनरल स्टेंडिग-कमेटी के मैम्बर आगामी कॉन्फरन्स जब तक नई कमेटी न चुने वहां तक कायम रहे। कोई भी साधु-साध्वी शिथिल बनें और श्रावकों की तरफ से उनके लिये योग्य कार्यवाही करने की मांग साधुओं की कमेटी से की गई हो तो तीन मास के अदर वह योग्य कार्यवाही करे। यदि वह तदनुसार न करें और आवश्यक कदम न उठावे तो यह स्टेंडिग-कमेटी इस प्रबध मे विचार कर अन्तिम निर्णय दे। इस प्रकार यह कॉन्फरन्स निश्चय करती है।

प्रस्ताव—११ (आगम-विद्या-प्रचारक-फड के विषय में)

यह सभा श्रीयुत हसराजभाई लक्ष्मीचदजी की ओर से आई हुई 'हसराज जिनागम विद्या प्रचारक-फड' नामक स्कीम पढ़ कर इसके अनुसार उनके १५०००) रु० की भेट सधन्यवाद स्वीकार करने का प्रस्ताव करती है। और उसके विषय मे उनके साथ समस्त प्रबध करने का अधिकार जनरल कमेटी को देती है। तथा श्री हसराज भाई से यह विनती करने का तय करती है कि जहां तक सभव हो ग्रन्थों का प्रकाशन हिन्दी भाषा मे हो तो अधिक उपयोगी होगा।

प्रस्ताव १२—(कुप्रथाओ को त्यागने के विषय मे)

अपनी समाज मे चलने वाली निम्न बातें धर्म विरुद्ध और अनुचित हैं। जैसे कि कन्या-विक्रय, वर-विक्रय, वृद्ध-विवाह, बाल-विवाह, बहु-विवाह, अनमेल-विवाह, मृत्युभोज, वैश्या-नृत्य, आतिशबाजी, हाथीदांत, रेशम आदि को मागलिक समझ कर उपयोग करना, विधवाओं को अनादर की दृष्टि से देखना, अश्लील गीतों का गाना, होली-खेलना, लौकिक-पर्वो का मनाना, मिथ्यात्वी देवी-देवताओं को मनाना आदि बातें शीघ्र बन्द हों, तो ऐसी साधु-सम्मेलन की भी सूचना है। अत यह कॉन्फरन्स सभी जैन भाइयों से आग्रह करती है कि इन कुरिवाजों को यथा-शीघ्र छोड़ दें।

प्रस्ताव १३—(धार्मिक-उत्सवों में भी कम खर्च करने के विषय में)

धर्म के निमित्त होने वाले तप-महोत्सव, दीक्षा-महो , सथारा-महोत्सव, चातुर्मास में दर्शनार्थ आना-जाना, लोच-महोत्सव तथा मृत्यु-महोत्सव आदि के लिये आमत्रण देना उत्सव करना और अधिक खर्च करना यह सब धार्मिक और आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद नहीं है। ऐसा साधु-सम्मेलन का भी मन्तव्य है। अतः उक्त उत्सवों में खर्च कम किया जाय।

प्रस्ताव १४—(सिद्धान्त-शाला के विषय में)

वैरागियों को शिक्षा देने के लिए अनुकूल स्थान पर शिद्धान्त-शाला खोलना आवश्यक प्रतीत होता है। फिलहाल तो सेठ हसराज भाई के दान का कार्य जहां आरम्भ हो वहीं पर शाला का कार्य शुरू किया जाय। दीक्षित मुनिराज भी अपने कल्पानुसार सिद्धान्त-शाला का लाभ ले सकेंगे। पाँच वैरागी मिलने से मासिक १००) रु० श्री जैन ट्रेनिंग-कालेज फड मे से दिये जावें। सिद्धान्त-शाला की व्यवस्था, नियमोपनियम निश्चय करना, और आचार सबधी क्रियाओं मे विद्वान मुनियों की सलाह अनिवार्य होगी।

प्रस्ताव १६—(श्रावक-जीवन के विषय मे)

मुनिवर्ग के सुधार की जितनी आवश्यकता है उतनी ही श्रावक-श्राविकाओं के जीवन सुधार और धार्मिक-भावना से वृद्धि करने की भी आवश्यक्ता है अतः साधु-सम्मेलन की तरफ से जो निम्न सूचनायें आई हैं उनका पालन करने के लिये यह कॉन्फरन्स सभी भाई-बहिनों से अनुरोध करती है।

(१) पाच वर्ष के बालक तथा बालिकाओं को धार्मिक शिक्षा दी जावे।
(२) १८ वर्ष तक लडके को व १४ वर्ष तक लडकी को ब्रह्मचारी रखना चाहिये।
(३) छः तिथियों में पलिलोती (हरी) का त्याग करें।
(४) रात्रि-भोजन का त्याग करें।
(५) कद-मूल का त्याग करें। जीमणवार में कद-मूल का उपयोग न करें।
(६) पर्व के दिन उपवास आदि व्रत करें और ब्रह्मचर्य रखें। सामायिक-प्रतिक्रमण अवश्य करें।
(७) अभक्ष्य-पदार्थो का सेवन बन्द करें।
(८) विधवा-बहिनों के साथ आदर का आचरण करना चाहिये।
(९) हर रोज श्रावक को कम से कम सामायिक और स्वाध्याय तो अवश्य करना चाहिये।
(१०) प्रात वार ४१ ग्रहस्थों की कमेटी जो साधु-सम्मेलन के प्रस्तावों का पालन कराने का ध्यान रखेगी वही श्रावकों के नियम पालन की भी देख-रेख रखे।

प्रस्ताव १७—(दान प्रणालि द्वारा कॉन्फरन्स की सहायता के विषय में)

अपनी समाज में दान की नियमित प्रणालि शुरु हो और सामाजिक-सुधार का कार्य कॉन्फरन्स भली प्रकार कर सके, इसके लिये यह कॉन्फरन्स सभी स्थानकवासी जैनों से आग्रह करती है कि:—

(अ) प्रत्येक स्थानकवासी जैन के घर से प्रतिदिन एक पाई नियमित निकाली जाय और इस तरह मासिक या छः मासिक रकम एकत्रित करके हरएक गांव का श्री-सघ कॉन्फरन्स को भेजता रहे।

(ब) हिंद में हर एक स्था० जैन अपने यहां जब भी विवाह-शादी हो तो उस १) रु० कॉन्फरन्स फड में दे।

(स) लग्न, जीमनवार, धार्मिक-उत्सव (दीक्षा, तप, मृत्यु, लोच) आदि के खर्च घटाकर बचत की रकम पारमार्थिक कार्य में लगाने के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस को भेज दें। कॉन्फरन्स, दाता की इच्छानुसार सदुपयोग करेगी।

नोट – (अ, ब) के अनुसार आई हुई सहायता का उपयोग चार आना-फंड की तरह भिन्न-भिन्न पारमार्थिक कार्यों में होगा।

प्रस्ताव १८—(कॉन्फरन्स-ऑफिस-कार्यवाही हिन्दी मे हो)

हिन्दी भाषा में अधिक लोग समझते हैं और राष्ट्रीय-भावना से भी हिन्दी का प्रयोग करना योग्य है। अतः यह कॉन्फरन्स तय करती है कि कॉन्फरन्स की कार्यवाही जहां तक हो सके हिन्दी मे की जाय।

प्रस्ताव १६—(जीव-दया के विषय मे)

दूध देने वाले पशुओं का कत्ल होने से देश का पशु धन नष्ट होता है तथा धर्म, राष्ट्र और समाज को धार्मिक तथा आर्थिक दृष्टि से भयकर हानि होती है। उसको रोकने मे ही सच्ची जीव-दया है। अतः इस सबध में होने वाले भिन्न २ सस्थाओं के प्रयास अधिक उपयोगी और कार्यसाधक हों, ऐसा प्रबध करने के लिये यह परिषद् निम्नोक्त सज्जनों की एक कमेटी बनाती है और सभी जैनों से अपने घर गाय-भैंस रखने का आग्रह करती है।

श्री वर्धमानजी पित्तलिया, रतलाम, श्री अमृतलाल रायचद भाई जौहरी बम्बई, श्री मोतीलालजी मूथा सतारा, श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह बम्बई, श्री जगजीवन दयाल भाई।

प्रस्ताव २०—(एकल-विहारी साधु-साध्वियों के विषय मे)

वर्तमान समय में एकल विहार असह्य होने से यह कॉन्फरन्स अकेले विचरने वाले साधु-साध्वियों को चेतावनी देती है कि वे आषाढ़ शुक्ला १५ तक वे किसी न किसी सम्प्रदाय में मिल जाय। यदि वे नहीं मिले तो कोई भी श्री-सघ एकल-विहारी साधु का चतुर्मास न करावे। वृद्धावस्था, अस्वस्थता, आदि अनिवार्य कारणों से अकेले रह गये हों तो उनकी बात अलग है। चारित्र-हीनों का यह भेष रखना जैन समाज को धोखा देना है। इस तरह साधु-भेष रखने का उन्हे कोई हक नही है, जो कि धार्मिक चिह्न हैं। अतः किसी भी ऐसे भेषधारी मे दोष देख कर उनका भेष उतारने का प्रयत्न भी श्री-सघ कर सकेगा और कॉन्फरन्स भी योग्य कार्यवाही करेगी। बीमारी, वृद्धावस्था आदि से विहार न कर सकने वालों की सेवा में सम्प्रदाय के साधुओं को भेजना चाहिये।

प्रस्ताव २१—(साहित्य-निरीक्षण के लिये उप-समिति)

अपनी समाज मे साहित्य प्रकाशन का कार्य बढ़ाना जरूरी है, परन्तु जो भी साहित्य हो वह समाज और धर्म को उपयोगी होना चाहिये। अतः यह कॉन्फरन्स प्रकाशन के योग्य साहित्य को सर्टिफाइड (प्रमाणित) करने के लिये निम्न साधुओं तथा श्रावकों की एक समिति नियत करती है। हर तरह का साहित्य ऑफिस द्वारा इस समिति को भेजकर सर्टिफाई कराकर प्रकट किया जाय।

प्रस्ताव २२—(समाज सेवकों का सम्मान)

यह कॉन्फरन्स श्री दुर्लभजीभाई जौहरी की अनन्य धर्म-सेवा की कदर करते हुए 'जैन धर्मवीर' की और श्री नथमलजी चौरडिया को 'जैन समाज-भूषण' की उपाधि से सुशोभित करती है।

प्रस्ताव २३—(बीकानेर-सरकार से अनुरोध)

श्री मज्जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० द्वारा रचित 'सद्धर्म-मंडन' और चित्रमय अनुकम्पा-विचार नामक जो पुस्तकें प्रकट हुई हैं, उनके विषय मे बीकानेर सरकार की ओर से बीकानेर निवासी स्थानकवासी जैनियों को ऐसा नोटिस मिला है कि ये पुस्तकें जब्त क्यों न की जावें ? इस नोटिस का उत्तर बीकानेर निवासी स्था० जैनियों की ओर से बीकानेर गवर्नमेंट को दिया जा चुका है। आशा है बीकानेर गवर्नमेंट उस पर न्याय दृष्टि से विचार करेगी। फिर भी यह कॉन्फरन्स बीकानेर-सरकार से प्रार्थना करती है कि उक्त दोनों पुस्तकें धार्मिक विचारों का प्रचार करने के लिये और स्था० जैन समाज को अपने धर्म-मार्ग पर स्थिर रखने के निमित्त से ही प्रकाशित की गई है, किसी के धार्मिक-भावों पर आघात पहुँचाने के लिये नहीं। अतः बीकानेर-सरकार इन पुस्तकों पर हस्तक्षेप करने की कृपा करे।

नोटः—इस प्रस्ताव की नकल बीकानेर-नरेश को भेजने की सत्ता प्रमुख सा० को दी जाती है।

शेष प्रस्ताव आभारात्मक थे। इस अधिवेशन मे लींबडी-नरेश सर दौलतसिंहजी पधारे थे अतः उनका आभार माना गया।

इस अधिवेशन के साथ २ श्री स्था० जैन नवयुवक परिषद, महिला परिषद और शिक्षण परिषद भी हुई थी-जिनकी संक्षिप्त-कार्यवाही नीचे दी जाती है।

श्री श्वे० स्था० जैन युवक-परिषद, अजमेर

स्था० जैन युवक-परिषद का अधिवेशन सन् १९३३ में ता० २४ अप्रैल को सेठ अचलसिंहजी जैन आगरा की अध्यक्षता में अजमेर में सम्पन्न हुआ। इसके स्वागताध्यक्ष श्री सुगनचंदजी लूणावत, धामणगांव वाले थे। सभा में जो प्रस्ताव पास किये गये थे उनमे से मुख्य-मुख्य ये हैं :—

प्रस्ताव ४—(अस्पृश्यता निवारण के विषय में)

यह परिषद् जैन सिद्धान्तानुसार अस्पृश्यता का निषेध करती है और अनुरोध करती है कि अन्य जैनेतर भाइयों की तरह ही अस्पृश्य (हरिजन) भाइयों से भी व्यवहार किया जाय।

प्रस्ताव २६—(अहिंसक स्वदेशी-वस्तुओं का व्यवहार करने के विषय में)

यह परिषद धार्मिक तथा देश-हित की दृष्टि से, रेशम, हिंसक-वस्त्र और हाथी-दांत के चूडे के उपयोग का निषेध करती है और नवयुवकों तथा नवयुवतियों से अनुरोध करती है कि केवल स्वदेशी-वस्तुओं का ही व्यवहार करें।

प्रस्ताव ६—(कुप्रथाओं को त्यागने के विषय में)

यह परिषद, अयोग्य-विवाह, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, कन्या-विक्रय, वर-विक्रय, फिजूल खर्ची, मृत्युभोज आदि कुप्रथाओं का सर्वथा विरोध करती है। और जो पर्दा-प्रथा अत्यन्त हानिकारक है, उसे यथाशक्य हटाने का प्रयत्न करने का प्रस्ताव करती है।

अन्त में एक प्रस्ताव पास कर निम्नोक्त सज्जनों की एक कार्यकारिणी-समिति बनाई गई।

सेठ श्री अचलसिंहजी जैन आगरा, अध्यक्ष, लाला मस्तरामजी M A अमृतसर, (मंत्री), लाला

रतनचंदजी जैन अमृतसर, (मत्री) ठाकुर किशनसिंहजी चौधरी (सदस्य), ठा० सुगनसिंहजी चौधरी (सदस्य), डॉ० श्री वृजलाल मेघाणी (सदस्य), श्री डाह्यालाल मणिलाल मेहता (सदस्य), श्री सुगनचदजी लूणावत, (सदस्य) श्री शांतिलाल दुर्लभजीभाई जौहरी (सदस्य), श्री सेठ राजमलजी ललवानी जामनगर (सदस्य), श्री हरलालजी बरलोटा पूना (सदस्य), श्री दीपचदजी गोठी बेतूल (सदस्य), श्री चादमलजी मास्टर मन्दसौर (सदस्य), श्री छोटेलालजी जैन दिल्ली (सदस्य), श्री मगनमलजी कोटेचा अचरपाकम् (सदस्य), श्री आनन्दराजजी सुराणा जोधपुर (सदस्य), श्री अमोलखचदजी लोढ़ा बगड़ी, (सदस्य)।

श्री श्वे० स्था० जैन महिला-परिषद् अजमेर

श्री श्वे० स्था० जैन महिला परिषद का अधिवेशन ता० २५ अप्रैल सन् १९३३ को अजमेर मे हुआ था। इसकी अध्यक्षता श्रीमती भगवती देवीजी (धर्मपत्नी सेठ अचलसिंहजी जैन आगरा) ने की। स्वागत-भाषण श्रीमती केसर बेन चौरडिया (सुपुत्री श्री नथमलजी चौरडिया, नीमच) ने पढा। महिला-परिषद् मे जो प्रस्ताव पास किए गए थे उनमे से मुख्य ये हैं:—

प्रस्ताव १—(शिक्षण प्रचार के विषय मे)

यह महिला-परिषद समस्त जैन-समाज की महिलाओं मे शिक्षा की कमी पर खेद प्रकट करती है और भविष्य मे पुरुषों की तरह ही अधिक मे अधिक शिक्षा प्राप्त करने के लिये सब बहिनों से अनुरोध करती हैं।

प्रस्ताव २—(पर्दा-प्रथा हटाने के विषय मे)

यह परिषद पर्दे की प्रथा को स्त्री-जाति की उन्नति मे बाधक और त्याज्य समझ कर उसे घृणा की दृष्टि से देखती है और सब बहिनों से उसे छोडने का अनुरोध करती है।

प्रस्ताव ३—(स्वदेशी-वस्त्रों के विषय मे)

यह परिषद समस्त बहिनों से अपील करती है कि वे अपने देश तथा धर्म की रक्षा के लिये खद्दर या स्वदेशी-वस्त्रों का ही उपयोग करें।

प्रस्ताव ४—(बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह के विरोध में)

यह परिषद बाल-विवाह तथा वृद्ध-विवाह को स्त्री-जाति के अधिकारों का हरण करने वाला तथा उन पर अत्याचार समझती है। अतः इन्हें सर्वथा बद कर देने का जोरदार अनुरोध करती है।

प्रस्ताव ५—(रोने-पीटने की कुप्रथा का त्याग करने के विषय मे)

यह परिषद स्त्रियों में प्रचलित रोने-पीटने की प्रथा को निन्दनीय मानती है और बहिनों से अनुरोध करती हैं कि वे इस अमानवीय कार्य को बिल्कुल बद कर दे।

प्रस्ताव ६—(कुरूढ़ियों के त्याग के विषय मे)

यह परिषद उन सभी निरर्थक-रूढ़ियों की निंदा करती है, जो हमारे स्त्री-समाज मे प्रचलित हैं। जैसे कि गालियाँ, कामोत्तेजक गीतों का गाना, मिट्टी ढेले (शीतलादि) कबरें, भैरू भवानी की पूजा करना आदि। साथ ही सभी बहिनों से इन्हें छोडने का अनुरोध करती है।

प्रस्ताव ७—(कन्या-गुरुकुल के विषय मे)

यह परिषद श्री सेठ नथमलजी चौरडिया को उनके सत्तर हजार रुपयों के दान पर धन्यवाद देती है और आग्रह करती है कि जितना शीघ्र हो सके इस धन से कन्या-गुरुकुल की स्थापना की जाय।

श्री श्वे० स्था० जैन शिक्षा परिषद

अजमेर-अधिवेशन के समय विशेष रूप से निर्मित 'लौंका नगर' में श्वे० स्था० जैन-परिषद् का भी आयोजन किया गया था। इस परिषद् के अध्यक्ष शांति-निकेतन के प्रो० श्री जिनविजयजी थे। बनारस से पं० सुख जी भी आये थे। अध्यक्ष का विद्वतापूर्ण भाषण हुआ था। परिषद् मे पास हुए मुख्य प्रस्ताव इस प्रकार हैं :-

प्रस्ताव १—(स्था० जैन सस्था का सगठन)

यह परिषद् ऐसा मन्तव्य प्रकट करती है कि स्थानकवासी जैन-समाज की भिन्न-भिन्न प्रांतों में चलने वाली अथवा भविष्य मे शुरु होने वाली सभी शिक्षण सस्थायें बोर्डिंग, बालाश्रम, गुरुकुल आदि कम से कम खर्च में अधिक कार्यसाधक सिद्ध हों इस हेतु वे सभी सस्थायें एक ऐसे तंत्र (व्यवस्था) के नीचे आवें कि जो तंत्र उन संस्थाओं का निरीक्षण, शक्य सहयोग और उनकी कठिनाइयॉ तथा त्रुटियों को दूर करने का जवाबदारी अपने उपर ले और इस तरह उस तत्र को स्वीकार कर सभी सस्थाएं उनके प्रति जवाबदार रहें।

प्रस्ताव २—(धार्मिक पाठय-क्रम के विषय मे)

यह शिक्षण परिषद् निम्न तीन बातों के लिये विशेष प्रबध करने की आवश्यकता महसूस करती है :-

(अ) केवल धार्मिक-पाठशालाओं मे तथा अन्य सस्थाओं के लिये धार्मिक अभ्यास-क्रम ऐसा होना चाहिए कि वह जगत को उपयोगी सिद्ध हो तथा समयानुकूल भी हों।

(ब) गुरुकुल तथा ब्रह्मचर्याश्रम के लिये, धार्मिक तथा व्यवहारिक शिक्षण के लिये और भिन्न सस्थाओं के लिये उक्त दृष्टि से अभ्यास-क्रम बनाना चाहिये।

(क) उपरोक्त प्रस्तावों को अमल मे लाने के लिये पाठ्य पुस्तकें तथा आवश्यक पाठ्य पुस्तकें तय करनी चाहियें।

प्रस्ताव ३—(साधु-सध्वियों के विषय मे)

यह शिक्षण-परिषद् वर्तमान परिस्थिति मे साधु सध्वियों के लिये व्यवस्थित तथा कार्य-साधक अभ्यास की खास आवश्यकता मानती है। जिससे शास्त्रोक्त तथा इतर ज्ञान भलि-भांति प्राप्त किया जाय। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिये इस परिषद के तत्वावधान मे एक केन्द्र-सस्था तथा अन्य सस्थाएं प्रान्तवार स्थापित करें। इस सस्था का मुख्य तत्त्व ऐसा होना चाहिये कि समस्त साधु-सघ को अनुकूल हो और शिक्षण के लिये बाधक न हो।

इस सस्था में पढ़ने वाले साधु-सध्वियों को उनकी योग्यतानुसार प्रमाण-पत्र देना और विविध शिक्षण द्वारा उनके जीवन को अधिक कार्यसाधक एव विशाल बनाना।

प्रस्ताव ४—(दीक्षार्थियों की परीक्षा के विषय में)

इस परिषद की दृढ़ मान्यता है कि साधु-पद सुशोभित करने और सुशिक्षित बनाने के लिये प्रत्येक-साधु-साध्वी दीक्षार्थी की परीक्षा करें। योग्य शिक्षण देने से पहले दीक्षा देने से वह गुरू-पद की अवहेलना करेगा अत' साधुत्व के लिये निरीक्षण और परीक्षा कर लेने के बाद ही दीक्षा दी जाय।

दसवां-अधिवेशन, स्थान-घाटकोपर

कॉन्फरन्स का दसवां अधिवेशन अजमेर-अधिवेशन के ८ वर्ष बाद सन् १९४१ में घाटकोपर (बम्बई) में किया गया इस अधिवेशन के प्रमुख श्रीमान् सेठ वीरचन्द भाई मेघजी थोभण बम्बई थे। स्वागताध्यक्ष-

श्री धनजीभाई देवशी भाई घाटकोपर थे। इस अधिवेशन में कुल २८ प्रस्ताव पास किये गये थे, जिनमे से मुख्य ये थे :—

प्रस्ताव ३—(राष्ट्रीय महासभा की प्रवृत्तियों में सहयोग देने के विषय मे)

राष्ट्रीय महासभा के रचनात्मक कार्य-क्रम मे और मुख्यतः निम्नोक्त कार्यो मे शक्य सहयोग देने के लिये यह कॉन्फरन्स प्रत्येक भाई वहिन से साग्रह अनुरोध करती है।

खादी से आर्थिक असमानता दूर होती है। सामाजिक समानता की भावना प्रकट होती है। गरीबी और भुखमरी कम होती है। खादी मे कम से कम हिंसा होती है अतः प्रत्येक जैनधर्मी का कर्तव्य है कि वह खादी का ही उपयोग करे।

ग्रामोद्योग के उत्तेजन मे तथा स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग मे राष्ट्र की आर्थिक आबादी है, हिन्द के गांवों का उद्धार है और राजकीय परतन्त्रता दूर करने का उत्तम साधन है। अत. प्रत्येक जैनी को स्वदेशी वस्तुएं ही उपयोग मे लानी चाहिये।

जैन धर्म मे अस्पृश्यता को कोई स्थान नही है। जैन-धर्म प्रत्येक मनुष्य की सामाजिक-समानता को मानता है अतः प्रत्येक जैन का यह कर्तव्य है कि अस्पृश्यता को दूर करें और राष्ट्रीय महासभा हरिजन उद्धार के के कार्य मे योग्य सहयोग दे।

प्रस्ताव ४—(धार्मिक-शिक्षण-समिति की स्थापना)

यह कॉन्फरन्स मानती है कि जैन-धर्म के सस्कारों का सिन्चन करने वाला धार्मिक-शिक्षण हमारी प्रगति के लिये आवश्यक है। अतः चालू शिक्षण में जो कि निर्जीव और सत्वहीन है, परिवर्तन कर उसे हृदय-स्पर्शी और जीवित-शिक्षण वनाने की नितान्त आवश्यकता है। इसके लिये शिक्षण-क्रम शौर पाठ्य-क्रम तैयार करने के लिये तथा समग्र हिंद मे एक ही क्रम से धार्मिक-शिक्षण दिया जाय, परीक्षा ली जाय तथा इसके लिये एक योजना वनाने के निमित्त निम्नोक्त भाइयों की को-ओप्ट करने की सत्ता के साथ एक धार्मिक-शिक्षण-समिति वनाई जाती है। इस शिक्षण-समिति की योजना में जैन-नीति का गहरा अभ्यास करने वालों के लिये भी अभ्यास-क्रम का प्रवध किया जायगा।

श्रीमान् मोतीलालजी मूथा, सतारा प्रमुख, श्रीमान खुशालभाई खेंगारभाई वम्बई, श्रीमान जेठमलजी सेठिया बीकानेर, श्रीमान् चिमनलाल पोपटलाल शाह वम्बई, श्रीमान मोतीलालजी श्रीश्रीमाल रतलाम, श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्रीमान् लाला हरजसरायजी जैन अमृतसर, श्रीमान् केशवलाल अम्बालाल खम्भात, श्रीमान् चुन्नीलाल नागजी वोरा राजकोट, श्रीमान् माणकचन्दजी किशनदासजी मूथा नगर, श्रीमान् धीरजलाल के० तुरखिया व्यावर मन्त्री।

प्रस्ताव ५—(महावीर-जयन्ती की छुट्टी के विषय में)

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स भगवान महावीर के जन्म दिवस की आम छुट्टी के लिये सभी प्रान्तीय एव केन्द्रीय-सरकार से अपनी माग करती है। भारत के समस्त जैनियों को चाहिये कि वे इसके लिये सहयोग पूर्वक योग्य प्रवृत्ति करें।

(ब) जिन २ देशी राज्यों ने अपने २ प्रान्तो मे भगवान महावीर के जन्म-दिवस की आम छुट्टी स्वीकार कर ली उनका कॉन्फरन्स पूर्ण आभार मानती है और शेष राज्यों से अनुरोध करती है कि वे भी तदनुसार आम छुट्टी की जाहिरात करें।

(स) सभी जैन भाइयों को उस दिन अपना व्यापार आदि बंद रखने का अनुरोध करती है।

प्रस्ताव ६—(कन्या-शिक्षण के विषय में)

कन्या-शिक्षा की आवश्यकता के प्रति आज दो मत न होने पर भी इस दिशा में हमारी प्रगति बहुत मंद और असंतोषजनक है। अतः अपनी कन्याओं को योग्य शिक्षण देकर संस्कारी बनाना प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य है।

प्रस्ताव ७—(सामाजिक-सुधार के विषय मे)

बाल-लग्न, असमान वय के विवाह, कन्या-विक्रय तथा बहु-पत्नीत्व की अनिष्टता के बारे में मतभेद न होने पर भी यत्र-तत्र ऐसे बनाव बनते रहे हैं जो कि शोचनीय हैं। ऐसे प्रसग सभव न हों ऐसा लोकमत जागृत करना चाहिये और ऐसे अनिष्ट प्रसगों में किसी भी स्थानकवासी स्त्री-पुरुषों को भाग नहीं लेना चाहिये। यह कॉन्फरन्स भलामण करती है कि:—

१ विवाह की वय कन्या की कम से कम १६ वर्ष की और वर की २० वर्ष की होनी चाहिये।

२ विवाह-सम्बन्ध स्थापित करने मे आज की प्रचलित भौगोलिक और जाति-विषयक मर्यादा आधुनिक सामाजिक परिस्थिति के साथ बिलकुल असगत और प्रगति में बाधक है अतः इन मर्यादाओं को दूर करना चाहिये।

३ लग्न वर-वधु की सम्मति से होने चाहियें। जिन २ क्षेत्रों मे इसके लिये प्रतिबंध हो वहां ये शीघ्र उठ जाने चाहिये।

प्रस्ताव ८—(पूना बोर्डिंग का मकान फड करने के विषय में)

पूना बोर्डिंग के लिये मकान बनाने के लिये बोर्डिंग समिति ने पूना मे प्लॉट (ज़मीन) खरीद ली है, जहां ८० विद्यार्थी रह सकें ऐसा मकान बांधने का निर्णय किया जाता है। उस मकान के लिये तथा बोर्डिंग मे अभ्यास करने वाले गरीब विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देने के लिये फड करने का प्रस्ताव किया जाता है और प्रत्येक भाई-बहिन इसमे अपना शक्य सहयोग अवश्य दे ऐसा यह कॉन्फरन्स अनुरोध करती है। यह फड बोर्डिंग-समिति एकत्रित करे और उससे यथा-शीघ्र मकान बधावे ऐसा निश्चय किया जाता है।

प्रस्ताव १०—(मुनि-समिति की बैठक करने के विषय मे)

साधु-साध्वी सघ की एकता ही स्थानक वासी समाज के अभ्युत्थान का एकमात्र उपाय है। इसके लिये मुनि-समिति के चार सभ्यों ने एक योजना का मसविदा तैयार किया है, उसका मूल सिद्धान्त उपयोगी है। यह योजना साधु-समिति द्वारा विशेष विचारणीय है अतः अजमेर साधु-सम्मेलन में नियोजित मुनि-समिति की एक बैठक योग्य समय और स्थान पर बुलाने का यह अधिवेशन प्रस्ताव करता है। उस कार्य को करने के लिये निम्नोक्त भाइयों की एक समिति बनाई जाती है।

श्री चुनीलाल भाईचद महेता बम्बई, श्री मानकलाल अमुलखराय मेहता बम्बई, श्री जगजीवन दयालजी बम्बई, श्री गिरधरलाल दामोदर दफ्तरी बम्बई, श्री जीवनलाल छगनलाल सघवी अहमदाबाद, श्री दीपचद गोपालजी थाना व बम्बई, श्री जमनादास उदाणी घाटकोपर, श्री कालुरामजी कोठारी ब्यावर, श्री पूनमचदजी गांधी हैद्राबाद, दी० ब० श्री मोतीलालजी मूथा सतारा, श्री रतनलालजी नाहर बरेली, रा० सा० श्री टेकचदजी जैन जडियाला, श्री ला० रतनचदजी हरजसरामजी जैन अमृतसर, दी० ब० श्री बिशनदासजी जम्मु, श्री घोंडीरामजी मूथा पूना, श्री नवलमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री कल्याणमलजी वेद अजमेर, श्री प्रेमराजजी बोहरा पीपलिया, श्री जीवाभाई भणसाली पालनपुर, श्री मानमलजी गुलेच्छा खींचन, श्री चुन्नीलाल नागजी वोरा राजकोट, रा० सा० श्री ठाकरसीभाई

मकनजी धीया राजकोट, डा० सा० मणिलाल वनमालीदास शाह राजकोट, श्री सरदारमलजी छाजेड शाहपुर (मत्री), श्री धीरजलाल भाई के० तुरखिया ब्यावर।

उपरोक्त समिति को इस कार्य के लिये सम्पूर्ण प्रबध करने तथा फड करने की सत्ता दी जाती है।

प्रस्ताव ११—(स्त्री-शिक्षण-सहायता फड के विषय मे)

कन्या तथा स्त्री-शिक्षण और विधवा-बहिनों की शिक्षा के लिये एक फड एकत्रित करने का तय किया जाता है। यह फड कॉन्फरन्स के पास रहेगा परन्तु उसकी व्यवस्था बहिनों की एक समिति करेगी। इसके लिये निम्न बहिनों की एक समिति को-ऑप्ट करने की सत्ता के साथ बनाई जाती है:—

श्रीमती नवलबेन हेमचदभाई रामजीभाई बम्बई, श्रीमती लक्ष्मीबेन वीरचदभाई मेघजीभाई बम्बई, श्रीमती चचलबेन टी० जी० शाह बम्बई, श्रीमती केशरबेन अमृतलाल रामचद जोहरी बम्बई, श्रीमती शिवकुंवरबेन-पुंजाभाई, बम्बई, श्रीमती चपाबेन-उमेदचद गुलाबचद बम्बई,

प्रस्ताव १२—(सघ-बल बनाने के विषय में)

यह अधिवेशन दृढ़ता पूर्वक मानता है कि अपने मे जहां तक सघ बल उत्पन्न न हो वहां तक सघ की उन्नति होना बहुत कठिन है। अतः प्रत्येक सघ को अपना २ विधान तैयार कर सगठन करने के लिये यह अधिवेशन आग्रह करता है।

प्रस्ताव १३—(वीर-सघ की नियमावली व सचालन के विषय मे)

वीर-सघ का प्रस्ताव और फड बम्बई, अधिवेशन से हुआ है, नियमावली भी बनाई गई है, परन्तु अब तक कार्यरूप में वीर-सघ बना नहीं है। अतः यह कॉन्फरन्स निर्णय करती है कि स्था० जैन-समाज को आजीवन अथवा उचित समय के लिये सेवा देनेवाले स्था० जैन-समाज के सच्चे श्रावक, फिर चाहे वे गृहस्थी हों या ब्रह्मचारी उनका 'वीर सेवा-सघ' शीघ्र बना लिया जाय। वीर-सघ के सदस्य की योग्यता और आवश्यकतानुसार जीवन प्रबध के लिये 'वीर-सघ फड' का उपयोग किया जाय।

वीर-सघ की नियमावली मे सशोधन करने और वीर-सघ की योजना को शीघ्र अमल मे लाने के लिये निम्नोक्त सज्जनों की एक समिति बनाई जाती है।

श्री वर्धमानजी पित्तलिया रतलाम, श्री सरदारमलजी छाजेड शाहपुरा, श्री कुंदनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री जगजीवन दयालजी घाटकोपर।

प्रस्ताव १४—बनारस गवर्नमेन्ट सस्कृत कॉलेज मे जैन दर्शन शास्त्री और जैन दर्शन-आचार्य परीक्षाओं की योजना को यह कॉन्फरन्स सन्तोष की दृष्टि से देखती। परन्तु उपरोक्त नियमो का अभ्यास करने-कराने के लिये अभी तक किसी भी अध्यापक की नियुक्ति नहीं हुई है, इस पर खेद प्रकट किया जाता है। जैन-दर्शन का भारतवर्ष और ससार की विभिन्न सस्कृतियों में एक आदरणीय स्थान है। इस सबध मे केवल परीक्षाओ की योजना ही पर्याप्त नहीं है अतः यह कॉन्फरन्स यू० पी० सरकार से भार पूर्वक अनुरोध करती है कि उपर्युक्त कॉलेज मे जैन-दर्शन के अध्ययन और अध्यापन के लिये अध्यापक की नियुक्ति के लिये बजट मे उचित फड का प्रबध करे।

इस प्रस्ताव की एक नकल यू० पी० प्रात के गवर्नर, शिक्षण-मत्री तथा कॉलेज के प्रिंसिपल और रजिष्ट्रार को भेजा जावे।

प्रस्ताव १५—(सिद्धांत शालाओं के विषय में)

वर्तमान में साधु-साध्वियों के शास्त्राभ्यास के लिये विभिन्न-स्थानों पर वैतनिक पडित रखे जाते हैं जिनमे

अलग २ संघों को काफी व्यय उठाना पडता है। इससे छोटे २ गांवों मे ये चतुर्मास भी नहीं हो सकते हैं। अतः यह सभा भिन्न २ प्रान्तों मे सिद्धान्त-शालाएं खोलने के लिये अलग २ प्रान्तों के संघों से विनती करती है। जब ये संस्थाएं आरम्भ हो जाय तब उस प्रान्त मे विचरने वाले सभी सम्प्रदायों के साधु-मुनिराज अपने शिष्यों को पढाने के लिये वहां भेजें ऐसी प्रार्थना की जाती है।

प्रस्ताव १६—(साम्प्रदायिक-मडल विरोध के विषय में)

यह कॉन्फरन्स समाज से अनुरोध करती है कि समाज का सगठन बढ़ाने के लिये और साम्प्रदायिक क्लेश न बढ़े इसके लिये साम्प्रदायिक-सगठनों की स्थापना न करे।

प्रस्ताव १७—(जैन-गणना के विषय मे)

अखिल भारतवर्ष के स्था० जैनों की संख्या तथा वास्तविक परिस्थिति का अभ्यास करने के लिये जन-गणना करना नितान्त आवश्यक है। अतः यह निर्णय किया जाता है कि इस कार्य को आरंभ कर दिया जाय इसके लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस द्वारा तैयार किये गये फॉर्म सभी संघों को भेज दिये जाय और अमुक समय की मर्यादा में उनसे वापिस भरवाकर भिजवा देने का अनुरोध किया जाय।

प्रस्ताव १८—(स्था० जैन गृह बनाने के विषय मे)

व्यापार, उद्योग या नौकरी के लिए दूर-देशावरों मे अपने स्वधर्मी-भाई निर्भयता और आसानी से जा सकें और परदेश में स्वधर्मी-भाइयों के सहवास मे रह कर उनके सहयोग से व्यापार-धंधों द्वारा अपने जीवन को सुख-शांतिमय बना सकें इसके लिए हिंद से बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, करांची, अहमदाबाद, दिल्ली, इन्दौर, कानपुर आदि बडे २ व्यापार-केन्द्रों मे तथा हिन्द से बाहर रंगून, एडन, मोम्बासा, कोबे (जापान) आदि केन्द्रों मे अपने स्वधर्मी भाइयों को उचित रूप से रहने और खाने की सुविधा मिले, ऐसी व्यवस्था के साथ-साथ श्री स्थानकवासी जैन गृह, (S S. Jain Homes) सर्वत्र स्थापित करने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। आर्थिक प्रश्न का निवारण करने और इस योजना को अमल में लाने के लिये उन २ केन्द्रों के श्री-संघों और श्रीमन्त सज्जनों से भलामण करती है।

प्रस्ताव २०—हिन्द की स्था० जैनों की व्यापारिक पेढ़ियों, दुकानों और कारखानों के नाम तथा यूनिवर्सिटी मे पास हुए ग्रेजुएट—बी० ए० भाई-बहिन अपने नाम के साथ १) रु०, कॉन्फरन्स-ऑफिस को भेज दें। उनके नाम कॉन्फरन्स की तरफ से पुस्तक-रूप मे प्रकट किये जायेंगे।

प्रस्ताव २२—(पार्श्वनाथ-विद्याश्रम, बनारस के विषय में)

'श्री सोहनलाल जैन धर्म प्रचारक-समिति, अमृतसर'—जो जैन दर्शन और इतिहास के उच्चाभ्यास के लिए स्था० जैन विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देती है, जिसका कार्य श्री पार्श्वनाथ-विद्याश्रम, बनारस द्वारा हो रहा है उसे यह कॉन्फरन्स पसद करती है और स्था० विद्यार्थियों तथा श्रीमन्तो का ध्यान उस तरफ आकर्षित करती है।

प्रस्ताव २३—(जैनों की एकता के विषय में)

यह कान्फरन्स जैन-समाज की एकता का आग्रह पूर्वक समर्थन करती है और जब कभी परस्पर की एकता में बाधक प्रसग खडा हो तो उसका योग्य उपाय कर एकता को पुष्ट करने का प्रयत्न करने के लिए हर एक स्था० जैन भाई-बहिन से प्रार्थना करती है। जैन समाज के तीनों फिर्कों के कतिपय मान्यता-भेद बाजू रख कर परस्पर मे समान रूप से स्पर्श करने वाले ऐसे अनेक प्रश्नों की चर्चा करने के लिए तथा आन्तरिक एकता बढ़ाने

के लिये समस्त जैन समाज की सयुक्त-परिषद् बुलाने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। और ऐसी को योजना होगी तो उसमे पूर्ण सहयोग देना जाहिर करती है।

प्रस्ताव २५-(बेकारी निवारण के विषय मे)

अपने समाज मे व्याप्त बेकारी निवारण के लिये आज की यह सभा (Jain unemployment Information Bureau) स्थापित करने का निश्चय करती है। अपनी समाज के श्रीमन्त और उद्योगपतियों से विनती करती है कि वे शक्य हों उतने जैन भाइयों को अपने यहां काम पर लगा कर इस वेकारी को कम करें।

प्रस्ताव २७-श्री अखिल भारतवर्षीय स्था० जैन सघों का प्रतिनिधित्व करने वाली यह कॉन्फरन्स श्री राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति वर्धा के सचालकों से विनती करती है कि समिति की परीक्षाओं की पाठ्य पुस्तकों मे जिस तरह अन्य धर्मों के विशिष्ट पुरुषों का चरित्र-वर्णन दिया गया है उसी तरह जैन-महापुरुषों का जीवन-चरित्र भी देने की आवश्यकता समझे। शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे।

घाटकोपर का यह दसवां अधिवेशन, फड की दृष्टि से भी सर्वोत्तम रहा। पूना-बोर्डिंग के लिये ४५ हजार का फड जमा हुआ। स्त्री-शिक्षण और विधवा सहायक-फड मे भी १० हजार रु० का फड हुआ। दूसरी विशेषता इस अधिवेशन की यह थी कि कॉन्फरन्स के पुराने विधान मे परिवर्तन कर नया लोकशाही-विधान बनाया गया जिसमे सदस्य फीस १) रु० रख कर हर एक भाई को सभासद का अधिकार दिया गया था।

अ० भा० श्वे० स्था० जैन युवक-परिषद्

स्था० जैन युवक-परिषद् का द्वितीय-अधिवेशन ता० १०—४—४१ को घाटकोपर मे हुआ। प्रमुख के स्थान पर पजाब के सुप्रसिद्ध लाला हरजसराय जी जैन B A. शोभायमान थे। स्वागताध्यक्ष थे डा० बृजलाल धरमचद् मेघाणी। सभा मे कुल १८ प्रस्ताव पास किये गये, जिनमे से मुख्य ये थे.—

(४) वीर-सघ की योजना (६) सर्वदेशीय शिक्षा-प्रचारक-फड की योजना (७) आर्थिक-असमानता निवारण (८) ऐच्छिक-वैधव्य पालन अर्थात् बलात् नहीं। (९) जैनों के तीनों फिर्कों का एकीकरण (१२) स्त्री-शिक्षा प्रचार (१४) जैन बेंक की स्थापना (१७) जैन युवक-सघ की स्थायी सस्था बनाना (१८) युवक-सघ का विधान बनाना आदि २। लाला हरजसरायजी जैन का भाषण बडा मननीय था। आपने सामयिक समस्याओं पर अच्छा प्राकश डाला था।

स्था० जैन महिला-परिषद

घाटकोपर-अधिवेशन के समय महिला-परिषद का भी आयोजन किया गया था, जिसकी अध्यक्षा थीं श्रीमती नवलबेन हेमचदभाई रामजीभाई मेहता। आपका भी भाषण बडा सुन्दर था जिसमे स्त्री-समाज की उन्नति के उपाय बताये गये थे।

सम्मेलन मे स्त्री शिक्षा-प्रचार, समाज-सुधार, प्रौढ़-शिक्षण आदि कई प्रस्ताव पास किये गये थे।

ग्यारहवां-अधिवेशन, स्थान-मद्रास

घाटकोपर-अधिवेशन से लगभग ८ साल बाद कॉन्फरन्स का ग्यारहवां अधिवेशन सन् १९४९ ता० २४-२५-२६ को मद्रास मे किया गया। जिसकी अध्यक्षता बम्बई लेजिस्लेटिव-असेम्बली के स्पीकर माननीय श्री

कुन्दनमलजी फिरोदिया ने की। स्वागताध्यक्ष सेठ मोहनमलजी चोरडिया, मद्रास थे। अधिवेशन का उद्घाटन मद्रास-राज्य के मुख्य मत्री श्री कुमारस्वामी राजा ने किया था।

दूर प्रान्त मे यह अधिवेशन होने पर भी समाज मे जागृति की लहर व्याप्त हो गई थी। उपस्थिति ५-६ हजार के लगभग हो गई थी। अधिवेशन व्यवस्था बहुत अच्छी थी। आने वाले महमानों को हर तरह की सुविधा प्रदान की गई थी। विगत अधिवेशनों से यह अधिवेशन अपने ढग का अलौकिक ही था, जो आज भी लोगों की जबान पर छाया हुआ है।

इस अधिवेशन मे सभी मिलाकर १६ प्रस्ताव पास किए गये। कार्यवाही का सचालन बडी सुन्दरता से प्रमुख महोदय ने किया। कई पैचीदे प्रश्न भी उपस्थित हुए थे, परन्तु उन सबका निराकरण बड़ी शांति के हुआ। इसका श्रेय इस अधिवेशन के सुदृढ और योद्धा प्रमुख श्री फिरोदियाजी सा० को ही है।

अधिवेशन की सफलता के लिए कई तार व सदेश प्राप्त हुए थे जिनमे से मुख्यत:—भारत के प्रथम गवर्नर-जनरल माननीय श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, दिल्ली-केन्द्रीय-सरकार के रेल्वे-मत्री माननीय श्री के० सथानम्, दिल्ली-केन्द्र धारा-सभा (Parliament) के स्पीकर माननीय श्री गणेशवासुदेव मावलकर, दिल्ली-बम्बई प्रात के मुख्य मत्री श्री बी० जी० खेर, बम्बई, श्री नगीनदास मास्टर श्री भू० पू० प्रमुख बम्बई प्रातीय-कान्ग्रेस कमेटी, बम्बई, श्री एल० एल० सीलम, बम्बई, श्री सिद्धराज ढढ्ढा, जयपुर, श्री मेघजी सोजपाल, प्रमुख-जैन श्वेताम्बर-कॉन्फरन्स, बम्बई, श्री चीनु भाई लालभाई सोलीसीटर, बम्बई, श्री दामजी भाई जेठाभाई, मत्री-श्री जैन श्वे० कॉन्फरन्स, बम्बई, श्री श्रेयासप्रसादजी जैन, बम्बई, श्री अमृतलाल कालीदास जे० पी० बम्बई, श्री कांतिलाल ईश्वरलाल जे० पी० बम्बई, श्री शातिलाल एम० शाह बम्बई, राय बहादुर राज्य-भूषण सेठ श्री कन्हैयालालजी भडारी, इन्दौर, कॉन्फरन्स के भूतपूर्व प्रमुख श्री हेमचदभाई रामजीभाई मेहता, गोंडल, दीवान बहादुर श्री मोतीलालजी मूथा, सतारा, श्रीमान् सेठ भैरोंदासजी सेठिया, बीकानेर, सेठ श्री शांतिलाल मगलदास, अहमदाबाद, सेठ श्री चम्पालालजी बाठिया, भीनासर और ला० हरजसरायजी जैन, अमृतसर थे।

इस अधिवेशन में कुल १६ प्रस्ताव पास हुए थे जिनमे से मुख्य २ ये हैं.—

प्रस्ताव १—सैंकडों वर्षों की गरीबी और अज्ञानतापूर्ण गुलामी के बाद विश्वव्यापी प्रचड ब्रिटिश से अहिंसक मार्ग द्वारा भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई, यह समस्त हिन्दुस्तानियों के लिए महान गौरव, स्वाभिमान और आनद का विषय है। आजादी के बाद प्रथम बार होने वाला कॉन्फरन्स का यह अधिवेशन भारत को प्राप्त आजादी के लिए अपना हार्दिक आनद व्यक्त करता है। हिंद जैसे महान भव्य और प्राचीन राष्ट्र की आजादी विश्व के लिए अति महत्व का प्रसग है। इससे वर्तमान विश्व के अन्तर्राष्ट्रीय-प्रवाह मे अनेक परिवर्तन होना सभव है तथा समस्त एशियाई प्रजा में नूतन जागृति पैदा होगी। इस प्रकार हिन्द आजाद होने से विश्व को विशिष्ट अहिंसक-प्रकाश और मार्ग-दर्शन मिलेगा और विश्व की समस्त गुलाम-प्रजा का मुक्ति-मार्ग सरल होगा।

प्रस्ताव ५—(जन-गणना के सम्बन्ध मे) श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स का यह अधिवेशन केन्द्रीय-सरकार से प्रार्थना करता है कि आगामी जन-गणना के समय हिन्दू, मुस्लिम, पारसी, सिक्ख, क्रिश्चियन जैसे धर्मवाचक शब्द हैं वैसे जैन भी धर्म-वाचक शब्द होने से जन सख्या की जानकारी के लिए 'माहिती-पत्रक' में जैन का भी कॉलम रखा जावे और उसे भरने वालों को यह विशेष रूप से सूचना दी जावे कि जनता को पूछकर जैन हों तो

उनके नाम जैन कालम मे भर दिये जायं। साथ ही जैन भाइयों को सूचित किया जाता है कि आगामी जन-गणना मे वे अपना नाम जैन कॉलम में ही लिखावें।

इस प्रस्ताव की नकल केन्द्रीय-सरकार के गृह्-विभाग को भेजने की सत्ता प्रमुख श्री को दी जाती है।

प्रस्ताव ६– (सघ-ऐक्य योजना के लिये)

धर्म और समाज के उत्थान के लिए सगठन और उच्च चरित्र की आवश्यकता है। स्था० जैन धर्म में भी वर्षों से सगठन का विचार चल रहा है। अजमेर का साधु सम्मेलन भी इसी विचार का फल था। अजमेर व घाटकोपर के अधिवेशनों मे भी यही आन्दोलन था। सगठन की अखड विचारधारा से ता० २२–१२–४८ को व्यावर मे कॉन्फरन्स की जनरल कमेटी हुई उसमे सघ-ऐक्य का प्रस्ताव हुआ। व्यावर श्री-संघ ने सघ-ऐक्य की त्रिवर्षीय प्रतीक्षा की और जनरल-कमेटी के बाद तुरन्त ही मान्यवर फिरोदिया जी सा० के नेतृत्व मे डेप्युटेशन संघ-ऐक्य के लिये निकल पड़ा। सघ-ऐक्य की योजना बनाई गई, जिसमें प्रारभ मे एकता की भूमिका रूप सात कलमें तात्कालिक अमल मे लाने की तथा स्थायी रूप मे एक आचार्य और एक समाचारी मे सभी स्था० जैन सम्प्रदायों का एक श्रमण-सघ बनाने की योजना तैयार की गई। इस योजना के यह अधिवेशन हृदय से स्वीकार करता है और उसकी सिद्धि मे स्था० जैन धर्म का उत्थान देखता है। आज तक कॉन्फरन्स ने इसके बारे मे जो कार्य किया हैं उसके प्रति यह अधिवेशन संतोष व्यक्त करता है।

जिन सम्प्रदायों के मुनिवरों और श्री-सघों ने इसे स्वीकार किया है, उन्हें यह अधिवेशन साभार धन्यवाद देता है, वैसे ही जिन्होंने अजमेर साधु-सम्मेलन के प्रस्तावों का पालन किया है उनका भी आभार मानता है। और जिनकी स्वीकृति नहीं मिली है उनसे साग्रह अनुरोध करता है कि वे यथाशीघ्र सघ-ऐक्य की योजना को स्वीकार करें।

प्रस्ताव ७—(साधु-सम्मेलन बुलाने के विषय में)

यह अधिवेशन सघ-ऐक्य योजना को सफल बनाने के लिए भारत की सभी सम्प्रदायों का सम्मेलन योग्य स्थान व समय पर बुलाने की आवश्यक्ता महसूस करता है और साधु-सम्मेलन बुलाने के लिए तथा उस कार्य में सर्व प्रकार से सहयोग देने के लिए निम्न सदस्यों की एक 'साधु सम्मेलन नियेजक समिति' नियुक्त करता है। बृहत्साधु-सम्मेलन दो वर्ष तक में बुला लेना चाहिये और इसकी पृष्ठ भूमिका तैयार करने के लिये यथावश्यक प्रांतीय साधु-सम्मेलन करना चाहिये। इसका सयोजन श्री धीरजलाल केशवलाल तुरखिया करेंगे। समिति के निम्न सदस्य हैं:—

श्री धीरजलाल के० तुरखिया, व्यावर, श्री जवाहरलालजी मुणोत, अमरावती, श्री गिरधरलाल दामोदर दफ्तरी, बम्बई, श्री शांतिलाल दुर्लभजी जौहरी, जयपुर, श्री देवराजजी सुराना, व्यावर, श्री सरदारमलजी छाजेड, शाहपुरा, श्री हरजसरायजी जैन, अमृतसर, श्री गणेशमलजी बोहरा, अजमेर, श्री आनदराजजी सुराना, दिल्ली, श्री जगजीवन दयाल बम्बई, श्री वल्लभजी लेराभाई सुरेन्द्रनगर, श्री बालचदजी श्री श्रीमाल रतलाम, श्री खेतशीभाई खुशालचद कोठारी, श्री जादवजी मगनलाल भाई वकील, सुरेन्द्रनगर, श्री जसवन्तमलजी इन्जीनियर, मद्रास। इस समिति को आवश्यकतानुसार विशेष सदस्यों को सम्मिलित करने की सत्ता दी जाती है।

प्रस्ताव ६—(धार्मिक-सस्थाओं का सयोजन)

(अ) समस्त स्थानकवासी समाज मे धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्य करने वाली सस्थाओं का निम्न प्रकार से Affiliation (सयोजन) करने का यह अधिवेशन ठहराव करता है।

(१) सस्थाओं का एफिलिएशन करने की सत्ता मैनेजिंग-कमेटी को रहेगी।

(२) एफीलिएशन फीस २) रु० रहेगी। (३) एफीलिएशन करने की अर्जी के साथ सस्था को अपने विधान की नकल और अन्तिम वर्ष का आय-व्यय का हिसाब भेजना पडेगा।

(४) एफीलिएटेड सस्था को प्रति वर्ष आय व्यय का पक्का हिसाब एव वार्षिक विवरण भेजना पडेगा।

(५) 'जैन प्रकाश' एफीलिएटेड सस्था को २५ प्रतिशत कम चदे मे भेजा जायगा।

(६) 'जैन प्रकाश' मे सिर्फ एफीलिएटेड-सस्थाओं के ही समाचार विवरण एव आर्थिक सहायता की अपीलें प्रकट होंगी। (७)एफीलिएटेड सस्थाओं की सूची प्रतिवर्ष जनरल कमेटी मे रखी जायगी। (८) शक्य होगा वहां एफीलिएटेड सस्था को कॉन्फरन्स आर्थिक सहायता देगी।

(ब) पाठशालाऐ, जैन कन्याशालाऐ तथा अन्य जैन शिक्षण-सस्थाओं को सुव्यवस्थित और सम्बन्धित करने के लिये तथा धार्मिक-शिक्षण के प्रचार के लिये यथाशक्य व्यवस्था करना यह अधिवेशन आवश्यक समझता हैं और इसको सक्रिय बनाने के लिये एक सुयोग्य-विद्वान निरीक्षक रख कर कार्य करने के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस को सत्ता देता है।

प्रस्ताव ६—(तीनों फिर्कों की एकता के लिये)

वर्तमान प्रजातत्रीय-भारत मे जैन समाज को सुदृढ, एक और अखडित रखना बहुत आवश्यक है। कई साम्प्रदायिक-मान्यता-भेदों को दूर रख कर जैनो के तीनों फिर्कों की सामान्य बातें और मूल-सिद्धान्तों पर एक होकर कार्य करने को प्रवृत होना चाहिये। अतः यह अधिवेशन अपने श्वेताम्बर और दिगम्बर भाइयों की महासभाओं से सम्पर्क रख कर समस्त जैनों के सगठन की प्रवृत्ति मे ही शासन-उन्नति मानता है। और इसके लिए सक्रिय प्रयत्न करते रहने का कॉन्फरन्स-ऑफिस को आदेश देता है।

प्रस्ताव १०—(धार्मिक पाठ्य-पुस्तकों के विषय मे)

धार्मिक-शिक्षण समिति द्वारा जैन विद्यार्थियों के लिये पाठ्य-पुस्तके जनरल-कमेटी की सूचनानुसार तैयार कराई हैं, जिनमे से दो पुस्तकें हिन्दी मे छप गई हैं और पांच पुस्तकें छपने वाली है। इस कार्य पर यह अधिवेशन सतोष प्रकट करता है और रतलाम व पाथर्डी परीक्षा-बोर्ड को तथा सब स्था० जैन शिक्षण-सस्थाओं को इन पाठ्य-पुस्तकों को पाठ्य-क्रम मे स्थान देने का साग्रह अनुरोध करता है।

प्रस्ताव १२—(सरकारी-कानून के बारे में)

अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स का यह अधिवेशन भारत की वर्तमान प्रजातत्रीय-केन्द्रीय और प्रांतीय-सरकारों से मान पूर्वक किन्तु दृढ़ता पूर्ण सानुरोध करता है कि नये २ ऐसे कानून न बनायें जाय जिससे कि जैनधर्म की मान्यताओं, सिद्धातों और सस्कृति को बाधा पहुँचती हो अथवा जैनों के दिल दुखते हों। सरकार की शुभ भावना और दिल दुखाने की वृत्ति न होने पर भी धार्मिक मान्यता और सिद्धांतों के रहस्य की अनभिज्ञता के कारण गत वर्षों मे कुछ ऐसी घटनाऐ लोगों के सामने आई हैं। जैसे कि:—

(अ) हिन्दू शब्द की व्याख्या स्पष्ट करते हुए हिन्दू व्याख्या मे जैनियों का समावेश करना।

नोट—हिन्द की प्रजा के किसी वर्ग का या अमुक एक धर्म का अनुयायी तरीके उल्लेख किया जावे तब जैनों का स्पष्ट और स्वतत्र उल्लेख करना चाहिये।

(ब) बेकार भिखारियों मे ही अपरिग्रही और आत्मार्थी साधु-मुनियों को गिन लेना । (क) दीक्षार्थियों के अभ्यास की योग्यता के विषयों मे कानूनी पराधीनता लाना आदि । धर्म और सस्कृति के सरक्षण के लिए जैन धर्म को स्वतत्र रखना चाहिये ।

यह प्रस्ताव केन्द्रीय और प्रांतीय-सरकारों के मुख्य मत्रियों को भेजने की सत्ता प्रमुख श्री को दी जाती है।

प्रस्ताव १३—(पशु-वध बदी के लिये)

यह अधिवेशन वर्तमान भारत-सरकार को श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखता है, क्योंकि भारत सरकार महात्मा गांधीजी के सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त को मानती है। अत. सरकार से सानुरोध प्रार्थना करता है कि भारतवर्ष मे गो वध और दूध देने वाले मवेशियों का कत्ल कानून द्वारा रोका जावे तथा खेती की रक्षा के लिये बदर, सुअर, रोज, हिरण आदि पशुओं को मारने के लिए प्रान्तीय सरकारें जो कानून बनाती हैं वे न बनाये जाय, जिससे राष्ट्र का हित होगा तथा अहिंसक गौ प्रेमी भारतवासियों के दिल को सन्तोष होकर भारत सरकार के प्रति श्रद्धा बढेगी ।

इस प्रस्ताव की नकल केन्द्रीय धारा सभा के प्रधान को भेजने की सत्ता प्रमुख श्री को दी जाती है ।

प्रस्ताव १४—(साहित्य-सर्टिफाइ तथा तिथि-निर्णय समिति)

यह अधिवेशन कॉन्फरन्स की विविध प्रवृत्तियों को सुव्यवस्थित और वेग पूर्वक चलाने के लिए निम्नोक्त विभिन्न समितियां नियुक्त करता है। इससे पूर्व बनी हुई समितियों के सदस्य मौजूद नही हैं और कुछ नये उत्साही कार्य-कर्ताओं की आवश्यकता होने से पुरानी समितियों की पुनर्रचना इस प्रकार की जाती हैं—

(क) साहित्य सार्टिफाइ-समिति—अपने समाज मे साहित्य प्रकाशन का कार्य बढ़ाना जरूरी है, किन्तु साहित्य जितना भी हो, समाज एव धर्म को उपयोगी होना चाहिये। अतः प्रकाशन-योग्य साहित्य को प्रमाणित करने के लिये निम्न मुनिवरों और श्रावकों की एक समिति बनाई जाती है। इस प्रकार का साहित्य कॉन्फरन्स-ऑफिस द्वारा उक्त समिति को भेजकर प्रमाणित करा कर प्रकट किया जावे ।

पूज्य श्री आत्मारामजी म०, श्री आनदऋषिजी म०, श्री उपा० श्री अमरचदजी म०, प्रवर्तक श्री पन्नालालजी म०, श्री धीरजलाल के० तुरखिया, श्री हरजसरायजी जैन, श्री बालचदजी श्रीश्रीमाल, श्री दलसुखभाई मालवणिया,

कॉन्फरन्स-ऑफिस कम से कम २ मुनिवर और गृहस्थों की अनुमति लेकर इस पर प्रमाण पत्र देगी। जिसके पास साहित्य अवलोकनार्थ भेजा जाय वे अधिक से अधिक १ मास मे देखकर अपने अभिप्रायों के साथ साहित्य लौटा देवें। कॉन्फरन्स-आफिस ४ मास के अन्दर २ प्रमाण पत्र या अभिप्राय लेखक को लौटा दें। जो मुनिराज और श्रावक साहित्य-प्रकाशन करने की इच्छा रखते हैं उनको यह अधिवेशन अनुरोध करता है कि वे अपना साहित्य प्रमाणित करके प्रसिद्ध करें ।

(ब) तिथि निर्णायक-समिति'—वार्षिक तिथियां और पर्व तिथियों का निर्णय करके प्रकाशित करने के लिये निम्न सदस्यों की समिति बनाई जाती है ।

पूज्य श्री हस्तीमलजी म०, प्रवर्तक श्री पन्नालालजी म०, प० मुनि श्री छोटेलालजी म० प० मुनि श्री अमरचदजी म०, पूज्य श्री ईश्वरलालजी म०, श्री उमरसी कानजीभाई भाराणी देशलपुर, श्री हर्षचद कपूरचद दोशी

बम्बई, श्री खीमचद मगनलाल वोरा बम्बई, श्री धीरजलाल के० तुरखिया ब्यावर, श्री चुनिलाल कल्याणजी कामदार बम्बई ।

उक्त सदस्यों के अभिप्राय एकत्रित करके कॉन्फरन्स-ऑफिस अतिम निर्णय करेगी ।

प्रस्ताव १५—(जिनागम-प्रकाशन के लिये)

कॉन्फरन्स की जयपुर जनरल-कमिटी के प्रस्ताव न० १२ के अनुसार जिनागम-प्रकाशन-समिति ब्यावर ने जो कार्यारम्भ किया है और अभी जो मूल-पाठों का सशोधन करा कर अनुवाद का कार्य किया जा रहा है, इस कार्य से यह अधिवेशन सतोष प्रकट करता है और अब प्रकाशन प्रारम्भ करना जरूरी समझता है। प्रकाशन प्रारंभ होने से पहले पूज्य श्री आत्मारामजी म०, पूज्य श्री आनन्दऋषिजी महाराज, पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज, और पं० हर्षचन्द्रजी महाराज को बता कर बहुमत से मिलने वाले सशोधन पूर्वक इसे प्रकाशित किया जाये ।

आर्थिक-व्यवस्था के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस को निम्न प्रकार से व्यवस्था करने की सूचना दी जाती है:—

(क) आगम प्रकाशन के लिए एक लाख रुपये तक का फड करे ।
(ख) आगम प्रेमी श्रीमानों से एक आगम-प्रकाशन खर्च का वचन ले ।
(ग) आगम-बत्तीसी की ग्राहक सख्या अधिकाधिक प्राप्त करने का प्रयास करे ।

प्रस्ताव १६—(श्राविकाश्रम के लिये)

ब्यावर की गत सामान्य सभा मे श्राविकाश्रम-फड को और अधिक बढ़ाने के लिये जो प्रस्ताव हुआ था उसे मूर्त स्वरूप देने मे श्री टी० जी० शाह, श्री लीलाबेन कामदार तथा श्री चचलबेन शाह ने जो परिश्रम उठाया था उस के लिये आज का यह अधिवेशन उनको हार्दिक धन्यवाद देता है।

घाटकोपर मे आगरा रोड पर खरीदे गये ८५०००) रु० के मकान को यह सभा मान्य करती है।

उक्त मकान को आवश्यकतानुसार ठीक करा कर उसमें श्राविकाश्रम शुरु करने तथा उसकी व्यवस्था करने के लिये और आवश्यक नियमादि बनाकर श्राविकाश्रम सचालन के लिये एक समिति नियुक्त करने की सत्ता जनरल-कमेटी को दी जाती है।

प्रस्ताव १७—(विधान सबधी)

यह अधिवेशन कॉन्फरन्स की विधान-समिति के द्वारा तैयार किये गये और जनरल-कमेटी के सशोधित हुए विधान को मजूर करता है।

प्रस्ताव १८— (बाल दीक्षा विरोधी प्रस्ताव)

दीक्षा देने के लिये यह आवश्यक है कि जिसको दीक्षा दी जावे वह इस योग्य हो कि दीक्षा के अर्थ और मर्म को समझ सके। साधु-जीवन का ग्रहण करना इतने महत्व का है कि वह बाल्यावस्था के बाद ही किया जाना चाहिये। बाल-दीक्षा के अनेक प्रकार के अनिष्ट परिणाम वर्तमान में देखे गये हैं। यह कॉन्फरन्स हमारे पूज्य मुनिवरों एव महा सतियों से सविनय प्रार्थना करता है कि वे देशकाल एव समय की गतिविधि का ध्यान रखते हुए राजकीय कानून बने उसके पूर्व ही १८ वर्ष से कम उम्र के किसी भी बालक को दीक्षा न देने का निश्चय करके देश के सामने आदर्श उपस्थित करें ।

अगर कोई दीक्षार्थी कम उम्र का हो व उसकी सर्वदेशीय योग्यता मालूम होती हो तो कॉन्फरन्स के सभापति को अपवाद रूप में उसे दीक्षित कराने के बारे में सम्मति का अधिकार दिया जाता है।

शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे। इस अधिवेशन मे आने वाले भाइयों की भोजन व्यवस्था के लिए स्व० जैसिंगभाई की तरफ से २५ हजार रुपये प्रदान किये गये थे। इस अधिवेशन के स्वागत-मत्री श्री ताराचन्दजी गेलडा और श्री जसवन्तमलजी इ जीनियर थे। खजाची श्रीमान इन्द्रचन्दजी गेलडा और शकरलालजी श्रीश्रीमाल थे। अधिवेशन की व्यवस्था मे श्रीमान् मांगीचन्दजी भडारी, श्री शभूमलजी वेद, श्री सूरजमलभाई जौहरी, श्री कन्हैयालाल ईश्वरलाल, डॉ० यू० एम० शाह, श्री खींवरावजी चौरडिया, श्री मगनमलजी कुभट, श्री भागचन्दजी गेलडा, श्री कपूरचन्दभाई सुतरिया-केप्टेन-स्वय-सेवक दल एव श्रीमती सविताबेन गिजुभाई-नायिका महिला स्वय सेविका दल का प्रमुख हाथ था। इस अधिवेशन की फिल्म भी उतारी गई थी।

इस अधिवेशन के मौके पर ही भारत जैन-महामडल का भी वार्षिक-अधिवेशन किया गया था। स्था० जैन युवक-सम्मेलन व महिला-परिषद् भी हुई थी, जिसका विवरण आगे दिया गया है।

अ० भा० श्वे० स्था० जैन युवक-परिषद् का तृतीय-अधिवेशन स्थान—मद्रास

युवक परिषद् का तीसरा अधिवेशन मद्रास मे ता० २५—१२—४६ को श्रीयुत दुर्लभजी भाई केशवजी खेताणी, बम्बई की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष महोदय का भाषण काफी विचारणीय था जिसमे आधुनिक प्रश्नों की चर्चा की गई थी।

इस परिषद् मे कुल ११ प्रस्ताव पास किये गये थे जिनमे से मुख्य ये हैं:—

प्रस्ताव ३—(सघ-ऐक्य योजना मे सहयोग देना)

यह सघ निश्चय करता है कि अ० भा० श्वे० स्थानकवासी कॉन्फरन्स की तरफ से सम्प्रदायों को समाप्त कर जो बृहत्साधु-सघ बनाने का निश्चय किया गया है, जिसके लिये कार्य भी शुरु कर दिया गया है, उस कार्य को पूर्णतया सफल बनाने मे हार्दिक सहयोग देंगे और उसके लिए जितने भी त्याग की आवश्यकता होगी वह करने के लिए कटिबद्ध रहेंगे।

प्रस्ताव ४—(खेती का कार्य अपनाने के विषय मे)

यह परिषद् युवकों से आग्रह करती है कि दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई बेकारी और भविष्य मे आने वाली आर्थिक मदी को लक्ष्य मे रखकर युवको को हुनर, उद्योग और खेती की तरफ अपना लक्ष्य केन्द्रित करना चाहिए। विशेषत' सामुदायिक खेती का कार्य करते हुए अपनी आजीविका के साथ देश की अन्न की कमी को पूरी करने मे अपना पूर्ण सहयोग दें।

प्रस्ताव ५—(जन-गणना के लिए प्रचार)

सन् ५०-५१ मे भारत-सरकार की ओर से सारे देश की जन-गणना होने वाली है। जैनों की सही सख्या जानी जा सके, इसके लिये यह परिषद् युवक-मडलो तथा जैन भाइयों से प्रार्थना करती है कि वे जाति या धर्म के खाने मे अपने को जैन ही लिखावें। इस कार्य के लिये यह परिषद अध्यक्ष महोदय को यह अधिकार देती है कि योग्य कार्य-कर्ताओं की एक प्रचार-समिति का निर्माण करें।

प्रस्ताव ६—(जैन-एकता के विषय मे)

जैनों के सब सम्प्रदायों मे आपसी प्रेम, भाई-चारा और सहयोग-भावना की वृद्धि के लिए अपनी २ साम्प्रदायिक मान्यता का पालन करते हुए भी दूसरे कई क्षेत्रों में, खास कर सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक

क्षेत्रों मे सब सम्प्रदायों के युवक जैनधर्म और समाज को स्पर्श करने वाले विषयों मे एकमत होकर मिले-जुले और एक मच पर एकत्र हो सकें ऐसे प्रयत्न करने के लिये यह परिषद युवकों से प्रार्थना करती है

भारत जैन-महामडल और भारतीय जैन स्वय सेवक-परिषद् जैसी सस्थायें इस दिशा मे जो प्रयत्न कर रही हैं, उन्हें यह परिषद आदर की दृष्टि से देखती है और उनके कार्यों की प्रगति के लिये जैन युवक परिषद के कार्य कर्ताओं से प्रार्थना करती है।

प्रस्ताव ७—(जाति-भेद निवारण)

समय के प्रभाव को देखते हुए यह परिषद जैन धर्मावलम्बियों मे प्रचलित जाति-भेद के निवारण को बहुत आवश्यक मानती है। दस्सा-बीसा, ढाया-पांचा ओसवाल, पोरवाल आदि जाति-भेद के कारण पारस्परिक सामाजिक सबधों मे कई कठिनाइयां आती हैं, और क्षेत्र सकुचित होने से कई प्रकार की हानियां होती हैं। इस दिशा मे आवश्यक कदम बढ़ाने के लिये भिन्न २ प्रान्तों के युवक कार्य-कर्ताओं की एक समिति स्थापित की जाती है, जो इन जातियों मे पारस्परिक विवाह सबधों द्वारा जाति भेद निवारण का प्रयत्न करेगी। परिषद् अपने इस कार्य मे कॉन्फरन्स के सहयोग की आशा रखती है।

प्रस्ताव ६—(जैन साहित्य-प्रचार)

अखिल भारतीय श्वे० स्थानकवासी जैन युवक-परिषद का यह अधिवेशन निश्चय करता है कि हमारी कॉन्फरन्स प्राचीन तथा अर्वाचीन जैन-साहित्य का पर्यालोचन करके कुछ ऐसी पुस्तकें चुनें और प्रमाणित करें जिनसे सर्व साधारण विशेषतया जैन समाज, जैन-सस्कृति का परिचय प्राप्त कर सके। साथ मे यह भी निश्चय करती है कि कॉन्फरन्स ऐसे साहित्य को विभिन्न भाषाओं मे छपाकर भारत तथा विदेश के विश्व-विद्यालयों को मुफ्त भेजें जिससे समस्त विश्व को एक प्राचीन और महान धर्म की जानकारी मिले।

जैन महिला-परिषद, स्थान-मद्रास

अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन महिला-परिषद् का अधिवेशन ता० २४—१२—४६ को श्रीमती जमना बहिन नवलमलजी फिरोदिया, अहमदनगर की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। परिषद् मे पास किये गये कतिपय मुख्य प्रस्ताव इस प्रकार है—

प्रस्ताव ४—(स्त्री-शिक्षण के विषय मे)

जमाना बदल गया है। स्त्रियों के लिये पुरुषों के समकक्ष होने के सभी सयोग प्राप्त हैं, ऐसे मे लग्न के बाजार में मूल्यांकन बढ़े इस दृष्टि से नहीं, किन्तु आर्थिक स्वावलम्बन का गौरव प्राप्त हो और मुसीबत मे सहायक हो उतना शिक्षण वर्तमान में स्त्रियों को मिलना चाहिए और माता-पिता को पढाना चाहिये ऐसा आज की यह परिषद मानती हैं।

प्रस्ताव ५—(पर्दा-प्रथा के विरोध मे)

मध्यकालीन युग के मुस्लिम राज्य काल मे चारित्र के रक्षण के लिए सौन्दर्य को छुपाने के लिए पर्दा प्रथा प्रचलित हुई थी, किन्तु आज उसकी कोई आवश्यकता नहीं है। इतना ही नहीं वर्तमान मे यह प्रथा स्त्रियों के विकास को रोकने वाली और घरेलू व्यवस्था मे अति कठिनाइयाँ पैदा करने वाली होने से उनका बिल्कुल त्याग करने और कराने का ज़ोर से प्रयत्न करना चाहिए।

प्रस्ताव ६—(मृत्यु के बाद की कुप्रथा निवारण के विषय में)

किसी की मृत्यु होने पर उसके पीछे रोना-धोना, छाती-पीटना और युवक, युवतियों के हृदयद्रावक

अवसान के बाद खूब घी से चुपड़ी हुई रोटी, दाल, भात, शाक आदि जीमना, तथा वृद्धों की मृत्यु के बाद जीमनवार करना यह बहुत ही घृणास्पद रूढि है। यह प्रथा बिल्कुल बद करनी चाहिए और प्रत्येक मृतात्मा की शाति के लिए उसके आप्त-जनों को मिल कर दिन के कुछ भाग मे नवकार-मत्र का मौन-जाप करना चाहिए।

प्रस्ताव ७—(लग्न क्षेत्र विशाल करने के विषय मे)

लग्न करना यह प्रत्येक मनुष्य का व्यक्तिगत प्रश्न होने पर भी समाजिक जीवन के साथ वह इतना ओत-प्रोत हो गया है कि हमे इसमे समयानुसार परिवर्तन करना चाहिये। हम जैन हैं, भगवान महावीर के अर्थात् श्रमण सस्कृति के उपासक है अतः एक ही प्रकार के सरकारी-क्षेत्र तक अर्थात् समस्त भारत के जैनों तक लग्न की मर्यादा बनाई जाय तो हमारे पुत्र-पुत्रियों को योग्य वर कन्या प्राप्त होने मे सरलता होगी। इस कार्य मे आज समाज या राज्य का कोई बन्धन नहीं है, केवल मत के बन्धन को तोड़ने का आन्दोलन जगाना चाहिये।

प्रस्ताव ८—(दुःखी बहिनों के लिये आश्रम-व्यवस्था)

(अ) श्वसुर-गृह मे दुःखी होने पर भी इज्जत को हानि पहुँचे इस कारण से अथवा लोक-निंदा के भय से पीहर मे रखे नहीं, तब ऐसी बहिने मृत्यु का आश्रय लेती है। ऐसी बहिनों के लिये समाज की ओर से निर्भय-आश्रय स्थान की आवश्यकता है।

(ब) ऐसे मरण-प्रसग पर समाज को केवल हाहाकार करके, चुप न रहते हुए उस मृत्यु मे जो निमित्त-भूत हो उनको कठोर शिक्षा देनी चाहिये तथा पति के दुख से मरने पर उस पुरुष को कोई अपनी लड़की न दे।

प्रस्ताव ९—(सघ-ऐक्य योजना को सहयोग)

सम्प्रदाय-वाद के किले को तोड़ कर सघ-ऐक्य योजना के लिये हमारी कॉन्फरन्स की ओर से जो प्रयत्न हो रहे हैं, उसमे पुरुषों के साथ बहिनों को भी अपना सहयोग देना चाहिये। इस योजना के भग करने वाले को कोई सहयोग न दे।

बारहवां-अधिवेशन, स्थान-सादड़ी (मारवाड)

कॉन्फरन्स का बारहवां अधिवेशन सन् १९५२ को ता० ४-५-६ श्रीमान् सेठ चम्पालालजी सा० बाठिया, भीनासर की अध्यक्षता मे सादड़ी (मारवाड़) मे सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन का उद्घाटन राजस्थान के मुख्य मत्री श्री टीकारामजी पालीवाल ने किया। आप के साथ राजस्थान-सरकार के वित्त और शिक्षा-मत्री श्री नाथुरामजी मिरधा भी थे। स्वागत-प्रमुख श्री दानमलजी बरलोटा, सादड़ी निवासी थे।

यह अधिवेशन ऐतिहासिक-अधिवेशन बन गया था, क्योंकि यह बृहत्-साधु-सम्मेलन के अवसर पर ही किया गया था। इस सम्मेलन और अधिवेशन के समय लग-भग २५ हजार स्त्री-पुरुष बाहर से आये थे। ग्रीष्म-ऋतु होने पर भी व्यवस्थापकों ने जो व्यवस्था की थी वह बहुत सुन्दर थी।

अधिवेशन के सफलता-सूचक तार व पत्र काफी सख्या मे आये थे। जिनमे से मुख्य ये थेः—मान० श्री कन्हैयालालजी एम० मु शी, खाद्य-म त्री-भारत-सरकार न्यू० दिल्ली, मान० श्री अजीतप्रसादजी जैन पुनर्वासमत्री-भारत-सरकार, मान० श्री शांतिलालजी शाह, श्रम-मत्री—बम्बई सरकार। श्री भोलानाथजी मास्टर, पुनर्वास-मत्री-राजस्थान सरकार, श्री यू० एन० ढेवर मुख्यमत्री—सौराष्ट्र सरकार, श्री रसिकभाई पारिख, गृह-मत्री—सौराष्ट्र सरकार। जोधपुर महाराणीजी दादीजी साहिबा, जोधपुर। श्री सिद्धीराजजी ढढ्ढा, खेमली। इनके सिवाय स्था० जैन-सघों के व अग्रेसरों के भी शुभ-सदेश प्राप्त हुए थे।

अधिवेशन में कुल १५ प्रस्ताव पास किये गये थे, जिनमे से मुख्य २ निम्न हैं:—

प्रस्ताव २—(जैन-दर्शन को सरकारी पाठ्य-क्रम मे स्थान देने के विषय मे)

भारतीय-सस्कृति मे जैन-दर्शन, साहित्य, स्थापत्य, प्राकृत और अर्ध मागधी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है, परन्तु यह खेदकी वात है कि भारतीय विश्व-विद्यालयों के पाठ्य-क्रम मे उसे योग्य स्थान नहीं दिया गया है। इससे आज का यह अधिवेशन भारत-सरकार एव सभी विश्व-विद्यालयों से अनुरोध करता है कि भारतीय-सस्कृति के सर्वागीण-अध्ययन के लिये उपरोक्त विषयों के अध्ययन की भी व्यवस्था करें।

इस सम्बन्ध मे पत्र-व्यवहार तथा अन्य कार्यवाही करने के लिये निम्न सज्जनों की एक समिति नियुक्त की जाती है।

श्री चम्पालालजी बाठिया–प्रमुख-भीनासर, श्री कुदनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री चिमनलाल चकुभाई शाह बम्बई, श्री अचलसिंहजो जैन आगरा, श्री हरजसहायजो जैन अमृतसर।

प्रस्ताव ३—(महावीर जयन्ती की छुट्टी के विषय में)

सन्० १९४० की सरकारी जन-गणना के अनुसार भारत मे जैनों की सख्या लगभग ११ लाख है। परन्तु भारत मे जैनों की सख्या २० लाख से भी अधिक है ऐसी जैनों की तीनों मुख्य सस्थाओं की मान्यता है। जैन समाज हमेशा से राष्ट्रवादी रहा है। इतना ही नहीं किन्तु आजादी की लडाई मे भी वह आगे रहा है। आजादी प्राप्त होने के बाद भी जैनों ने अपने विशिष्टाधिकार की माग नहीं की है, बल्कि जब भी ऐसा प्रसग आया है तो अलग मताधिकार के लिये अपना विरोध ही प्रदर्शित किया है। जैन समाज भारत-सरकार के समक्ष केवल इतनी ही मांग करता है कि जिस अहिंसक-शास्त्र के बल पर आजादी प्राप्त हुई है उस अहिंसा के ˋक भगवान महावीर के जन्म दिन चैत्र शुक्ला १३ को हिंद भर मे आम छुट्टी के रूप में मान्य किया जाय।

(२) यह अधिवेशन जैन समाज को भी अनुरोध करता है कि वह महावीर-जयती के दिन अपना व्यवसाय व्यपार-धधा आदि बद रखें।

(३) वम्बई-सरकार, राजस्थान-सरकार और अन्य जिन २ सरकारों ने 'महावीर जयन्ती' की आम छुट्टी स्वीकृत करली है, उनका यह अधिवेशन आभार मानता है।

प्रस्ताव ४—(धार्मिक पाठ्य-पुस्तकों की मान्यता बढ़ाने के विषय में)

स्थानकवासी जैन समाज की धार्मिक एव व्यवहारिक शिक्षण-सस्थाओं में विद्यार्थियों को धार्मिक-शिक्षण देने के लिये कॉन्फरन्स ने विद्वद्-समिति के सहयोग से मैट्रिक तक की कक्षाओं के लिये जो पाठ्य-पुस्तकें तैयार की हैं, उनमें से चार भाग गुजराती और पांच भाग हिन्दी में प्रकट हो चुके हैं। इस कार्य के प्रति यह अधिवेशन सतोष प्रकट करता है और समस्त हिन्द की जैन पाठशालाओं से एव श्री सघ के सचालकों से अनुरोध करता है कि वे इन पाठ्य-पुस्तकों को सभी शिक्षण-सस्थाओं में पाठ्य-क्रम के रूप में मजूर करें।

प्रस्ताव ५—(स्वधर्मी सहायक फड के विषय में)

पजाव-सिंध राहत-फड मे से स० २००८ के वर्ष के लिये रू० ५०००) का बजट मजूर किया गया है। उस रकम को पजाव-सिंध राहत-फड में रख कर शेष रकम रु० ७१६०६-२-६ रहते हैं, जिसमें से दी गई लोन की रकम रू० ५६३९५) लोन खाते में रखकर शेष रु० १४२११–२–६ स्वधर्मी सहायक फड में ले जाने का निश्चित किया जाता है।

(२) लोन खाते मे जो रकम जमा आवे, उसके बारे मे आगे विचार किया जायगा।

(३) स्वधर्मी सहायक फंड मे ले ली गई रकम की व्यवस्था के लिये निम्नोक्त कमेटी बनाई जाती है:—

श्रीमान् चम्पालालजी बांठिया, श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया, श्री चिमनलाल चकुभाई शाह, श्री आनंदराजजी सुराना, श्री वनेचंद भाई दुर्लभजी जौहरी, श्री हरजसरायजी जैन, कॉन्फरन्स के एक मानद् मंत्री Ex-officio

प्रस्ताव ६—(जीव-हिंसा रोकने के विषय मे)

पशु-पक्षियों का निकास अन्य देशो मे वेक्सीनेशन एवं अन्य प्रयोगों के लिये हो रहा है, उसे एवं प्रान्तीय-सरकारों द्वारा समय २ पर बंदर-जैसे मूक प्राणियों को मारने के जो हुक्म निकाले गये हैं, ये राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की मान्यता अहिंसा के सिद्धान्त तथा राष्ट्रीय-सरकार की शान के विरुद्ध है। अतः कॉन्फरन्स का यह बारहवां अधिवेशन भारत सरकार से अनुरोध करता है कि यह निकास शीघ्रातिशीघ्र बंद कर दिया जाय एवं बंदर आदि के मारने के जिन प्रान्तों मे हुक्म चालू हैं वे हुक्म वहां की प्रान्तीय-सरकारें वापस खींच लें। देवी-देवताओं के निमित्त से जिन लाखों पशुओं का वध होता है, उसे बंद करने का भी यह अधिवेशन राष्ट्रीय-सरकार एवं प्रान्तीय-सरकारों से अनुरोध करता है।

प्रस्ताव ७–(गौ-वध और जीव-हिंसा रोकने के विषय मे)

यह कॉन्फरन्स भारत की वर्तमान राष्ट्रीय-सरकार के प्रति आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखती है, क्योंकि हमारी सरकार अहिंसा के परम उद्धारक भगवान महावीर प्ररूपित सिद्धान्त का एवं महात्मा गांधीजी की अहिंसा की नीति का अनुकरण करती है। उनकी इस नीति के अनुसार यह अधिवेशन मध्यस्थ-सरकार को अनुरोध करता है कि

(अ) भारतवर्ष मे गौ-वध एवं दूध देने वाले पशुओं भी एवं मादा-पशुओं के कत्ल को रोकने के लिये खास कानून बनाया जाय।

(ब) कृषि-उद्योग की कही जाने वाली रक्षा के नाम पर प्रान्तीय-सरकारें रोज, बंदर, हिरन, हाथी आदि प्राणियों की हिंसा करने के लिये कायदे बना रही है, उसे एवं प्रान्तीय सरकारों ने जहा २ मछली मारने का आदेश दिया है उसे त्वरित रोका जाय।

यह अधिवेशन स्पष्ट रूप से मानता है कि इस तरह की हिंसा रोकने से, जिन अहिंसा के सिद्धांतों से आजादी मिली है उन सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों का प्रचार होगा और राष्ट्र का भी एकान्ततः हित ही होगा। इतना ही नहीं सत्य, अहिंसा एवं गौरक्षा के प्रेमी भारतवासियों को इससे सन्तोष होगा और परिणाम स्वरूप जनता की राष्ट्रीय-सरकार के प्रति श्रद्धा मे विशेष वृद्धि होगी।

प्रस्ताव ८–(आगम-प्रकाशन के लिये)

जयपुर की कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी के प्रस्ताव नं० १२ और मद्रास अधिवेशन के प्रस्ताव नं० १५ के अनुसार ब्यावर में आगम-बत्तीसी के मूल-पाठों का संशोधन कार्य हमारे समाज के विद्वान् एवं शास्त्र-विशारद मुनिराजों के मार्ग-दर्शन द्वारा हो रहा है। इन मूल-पाठों का कार्य और पांच अंग-सूत्रों का शब्दानुलक्षी अनुवाद पूर्ण हुआ है। इनमें से 'आचारांग-सूत्र' प्रकाशन हेतु गुरुकुल प्रिंटिंग प्रेस, ब्यावर को सौंपा गया है। इस कार्य को समाज की ओर से अत्याधिक सहयोग मिला है और कई सूत्रों के प्रकाशन के लिये दाताओं की तरफ से नियत रकम भेंट दी गई है, उसकी इस अधिवेशन मे नोंध ली जाती है और आगम-प्रकाशन के इस कार्य के प्रति

सतोष प्रकट किया जाता है। इसे शीघ्र ही पूर्ण करने के लिये आवश्यक कार्यवाही करने का यह अधिवेशन कॉन्फरन्स-ऑफिस को अनुरोध करता है।

प्रस्ताव १०–(साधु-सम्मेलन के विषय मे)

कॉन्फरन्स की तरफ से शुरु की गई सघ-ऐक्य योजना जो पिछले तीन वर्ष से चल रही है और जिसे सफल बनाने के लिये कॉन्फरन्स एव साधु-सम्मेलन-नियोजक समिति ने सतत् अविश्रांत प्रयत्न किया है। फलस्वरूप अधिकांश पू० मुनिराजों ने हार्दिक सहयोग दिया है। इतना ही नहीं, परन्तु भीषण गर्मी में भी अपने स्वास्थ्य की परवाह किये बिना दूर-दूर से उग्र विहार कर बृहत् साधु सम्मेलन सादड़ी मे पधार कर और साम्प्रदायिक मतभेदों को दूर कर प्रेम-पूर्वक सगठित होकर स्थानकवासी जैन-समाज और धर्म के उत्कर्ष के लिये एक आचार्य और एक समाचारी की सुदृढ़ योजना बनाकर 'श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-सघ' की, स्थापना की है, उसके लिये सब मुनिराजों के प्रति यह अधिवेशन सम्पूर्ण श्रद्धा और आदर प्रदर्शित करता है और बहुमान की दृष्टि से देखता है। भगवान महावीर के शासन मे बृहत्-साधु-सम्मेलन एक अद्वितीय और अभूतपूर्व घटना है—जो जैन शासन के इतिहास मे स्वर्णाक्षरों मे चिरस्मरणीय स्थान प्राप्त करती है।

(ब) बृहत् साधु-सम्मेलन-सादड़ी मे हुई कार्यवाही का यह अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स का १२-वां अधिवेशन हार्दिक अनुमोदन करता है और सम्मेलन के प्रस्तावों के पालन मे श्रावकोचित सर्वांगी और हार्दिक सहकार दृढ़ता पूर्वक देने की अपनी सभी तरह की जवाबदारी स्वीकार करता है और इसके लिये हिंद के सभी स्था० जैन-सघों को यह अधिवेशन अनुरोध करता है कि साधु-सम्मेलन के प्रत्येक प्रस्तावों का पूर्ण पालन कराने के लिये सभी अपनी २ जवाबदारी के साथ सक्रिय कार्य करें।

(क) जो-जो सम्प्रदाय और मुनिराजों के प्रतिनिधि सादडी साधु-सम्मेलन मे किसी कारणवश नहीं पधारे हैं, उन्हें यह अधिवेशन साग्रह अनुरोध करता है कि वे श्री 'वर्धमान स्था० जैन श्रमण-सघ' मे एक वर्ष मे शामिल हो जाय, इसमे ही उनका व स्था० जैन समाज का गौरव है।

(ड) यह अधिवेशन भारपूर्वक घोषणा करता है कि हिंद के 'श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-सघ' के सगठन मे जो साधु-साध्वीजी शामिल नहीं हो जावेंगे, उनके लिये कॉन्फरन्स को गंभीर विचार करना होगा।

सन् १९३३ मे अजमेर साधु सम्मेलन मे आरभित कार्य आज सफल हो रहा है, इससे यह अधिवेशन हार्दिक सन्तोष प्रकट करता है।

प्रस्ताव ११–सादडी बृहत्-साधु-सम्मेलन मे हुए 'श्री वर्धमान स्था० जैन श्रमण-सघ' की स्थापना और उसमे बनाये गये विधान और नियमों के पालन कराने के लिये एव वर्तमान श्रमण सघ के आचार्य और मत्री-मडल के साथ सतत सम्पर्क मे रह कर साधु-सम्मेलन के प्रस्तावों का अमल कराने के लिये निम्न सभ्यों की को–ऑप्ट करने की सत्ता के साथ एक 'स्थायी समिति' बनाई जाती है।

श्री चम्पालालजी बाठिया-प्रमुख-भीनासर, श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री धीरजलाल के० तुरखिया-मत्री-ब्यावर, श्री मोतीलालजी मुथा सतारा, श्री मानकचदजी मुथा अहमदनगर, श्री देवराजजी सुराना, ब्यावर, श्री मोहनमलजी चोरडिया मद्रास, श्री जवाहरलालजी मुणोत अमरावती, श्री रतनलालजी मित्तल आगरा, श्री वनेचदभाई दुर्लभजी जौहरी जयपुर, श्री रतनलालजी चोरडिया फलोदी, श्री शांतिलाल मगलदास शेठ अहमदाबाद,

श्री जेठमलजी सेठिया बीकानेर, श्री जादवजी मगनलाल वकील सुरेन्द्रनगर, श्री जेठालाल प्रागजी रूपाणी जुनागढ़, श्री गांडालाल नागरदास वकील बोटाद, श्री रा० ब० मोहनलाल पोपटभाई राजकोट, श्री सरदारमलजी छाजेड शाहपुरा, श्री अनोपचद हरिलाल शाह खभात, श्री वेलजी लखमशी नप्पु वम्बई, श्री चिमनलाल चकुभाई शाह वम्बई, श्री दुर्लभजी केशवजी खेताणी, वम्बई, श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह वम्बई, श्री प्राणलाल इ दरजी सेठ वम्बई, श्री गिरधरलाल दामोदर दफ्तरी वम्बई, श्री सुगनराजजी वकील रायचूर, श्री सौभाग्यमलजी कोचेटा जावरा, श्री डॉ० नारायणजी मोनजी वेरा वम्बई, श्री मिश्रीलालजी बाफना मन्दसौर, श्री राजमलजी चौरडिया चालीसगांव, श्री हीराचद-जी खींवसरा पूना, श्री ताराचदजी सुराना यवतमाल, श्री चिम्मनसिंहजी लोढ़ा ब्यावर, श्री सेठ छगनमलजी मूथा बगलौर, श्री हीरालालजी नांदेचा खाचरोद, श्री चादमलजी मारू मदसौर, श्री सुजानमलजी मेहता जावरा, श्री बापूलालजी बोथरा रतलाम, श्री रतनचदजी सेमलानी सादडी (मारवाड़), श्री अनोपचदजी पुनमिया सादडी (मारवाड) श्री लल्लुभाई नागरदास लींबडी, श्री प्रेमचदभाई भूराभाई लींबडी, श्री सुगनचदजी नाहर धामणगाव, श्री कल्याणमलजी बेद अजमेर, श्री अर्जुनलालजी डागी भीलवाडा, श्री उमरावमलजी ढढ्ढा अजमेर, श्री जेवतभाई दामजीभाई मांडवी, श्री जेसिंगभाई पोचाभाई अहमदाबाद, श्री माणकचदजी छल्लाणी मैसूर, श्री कॉन्फरन्स के मत्री। शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे।

इस अधिवेशन के साथ महिला-परिषद भी हुई थी जिसकी अध्यक्षता श्रीमती ताराबेन बांठिया (धर्मपत्नी सेठ चम्पालालजी बांठिया) ने की। आपका स्त्री-समाज की उन्नति के लिये बड़ा सुन्दर भाषण हुआ। अन्य कई बहिनों के भाषण हुए थे, जिनमे प्रमुख वक्ता श्री लीलाबेन कामदार थीं।

इसके साथ २ युवक-परिषद का भी आयोजन किया गया था। जिसकी अध्यक्षता प्रो० इन्द्रचन्द्रजी जैन एम० ए० ने की थी। कई वक्ताओं के सामाजिक विषयों पर भाषण हुए थे।

कॉन्फरन्स का विधान

कॉन्फरन्स की स्थापना तो सन् १६०६ मे हो गई थी, परन्तु कॉन्फरन्स का विधान सर्व प्रथम सन् १६१७ की मैनेजिंग-कमेटी में अहमदाबाद मे बनाया गया था। जो सन् २५ मे मलकापुर-अधिवेशन द्वारा सशोधित किया गया था। शुरू-शुरू में कॉन्फरन्स की मैनेजिंग कमेटी ही सर्वोपरि सत्ता थी। इस विधान के बाद जनरल कमेटी को सर्वोच्च सत्ता दी गई। सन् ४१ मे कॉन्फरन्स का दसवा अधिवेशन घाटकोपर मे हुआ। उसमे श्री चिमनलाल चकुभाई शाह ने कॉन्फरन्स का नया विधान बनाकर पेश किया जिसमे हर एक व्यक्ति को कॉन्फरन्स का मैम्बर बनने का अधिकार दिया गया था। इससे पूर्व कम से कम १०) रू० देने वाला ही कॉन्फरन्स का मैम्बर बन सकता था परन्तु इस नये विधान मे सामान्य मैम्बर फीस १) रू० कर दी गई। यद्यपि उस समय जब कि यह विधान घाटकोपर अधिवेशन मे पेश किया गया था सभा मे काफी ऊहापोह हुआ था। परन्तु अन्त मे यह लोकशाही विधान स्वीकृत कर लिया गया।

कॉन्फरन्स का यह नया विधान स्वीकृत हो जाने पर भी समाज मे वह सफलता के साथ चल न सका। आखिरकार एक लोकशाही विधान बनाने के लिये, जो कि समाज मे सफलता के साथ चल सके, एक समिति बनाई गई और उस समिति ने सन् ५० में मद्रास के ग्यारहवे अधिवेशन मे अपना नया लोकशाही विधान प्रस्तुत किया जो प्रस्ताव १७-द्वारा सर्वानुमति से स्वीकार किया गया। इस अधिवेशन मे लोकशाही विधान के लिये वातावरण निर्माण हो चुका था और चारों तरफ सघ-ऐक्य की भावना प्रसरित हो चुकी थी अत इस नये विधान का सभी ने स्वागत किया। तब से कॉन्फरन्स का यह विधान अमल मे आ रहा है।

सन् १९५३ मे कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी जोधपुर मे हुई, उस समय इस विधान मे कुछ सशोधन किया गया था। वर्तमान मे कॉन्फरन्स का जो विधान अमल मे आरहा है वह इस प्रकार है:—

श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स का संशोधित नया

विधान

ग्यारहवाँ मद्रास-अधिवेशन में प्रस्ताव न० १७ द्वारा सर्वानुमति से स्वीकृत और जोधपुर जनरल-कमेटी द्वारा सशोधित

१. नाम—इस सस्था का नाम श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स रहेगा।

२ उद्देश्य निम्न होंगे :—(अ) मानव समाज के नैतिक और धार्मिक-जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयत्न करना। (ब) गरीब, असहाय और अपग को हर प्रकार से सहायता देना। (क) स्त्री-समाज के उत्थान के लिये शिक्षण-सस्थाएं और हुनर-उद्योगशाला आदि चलाना। (ख) श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैनों की धार्मिक सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक शिक्षा विषयक और सर्वदेशीय उन्नति और प्रगति करना। (ग) जैनधर्म के सिद्धान्तों का प्रचार करना और एतदर्थ उपदेशक एव प्रचारक तैयार करना, और नियुक्ति करना। (घ) धार्मिक-शिक्षा देने का प्रवन्ध करना, एतदर्थ सस्थाएँ चलाना, पाठ्य-पुस्तके तैयार करना, शिक्षक तैयार करना आदि। (ङ) जैन इतिहास, जैन-साहित्य आदि का सशोधन कराना और प्रकाशन करना। (च) जैन-शास्त्रों का प्रकाशन करना-कराना। (श) साधु-साध्वियों के अभ्यास का प्रवन्ध करना। (ज) साधु-साध्वियों के आचार विचार की शुद्धि के साथ पारस्परिक व्यवहार विस्तृत हो ऐसे प्रयत्न करना। (झ) विभिन्न सम्प्रदायो को मिटाकर एक श्रमण-सघ और एक श्रावक सघ की स्थापना के लिए कार्यवाही करना। (ञ) स्थानकवासी जैनों का सगठन करना और एकता की स्थापना करना। (ट) सामाजिक-रिवाजों मे समयानुकूल सुधार करना। (ठ) जैनधर्म के सभी फिर्कों मे प्रेम स्थापित करना।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये आवश्य ानुसार

(१) सस्थायें स्थापित करना, स्थापितों को चलाना अथवा चलती हुई असाम्प्रदायिक सस्थाओं की मदद करना। (२) अनुकूल समय पर सम्मेलन, प्रदर्शन, और अधिवेशन करना। (३) उपरोक्त उद्देश्यों से काम करने वाली सस्थाओं और व्यक्तियों के साथ मिल कर कार्य करना, कराना और ऐसी सस्थाओं के साथ सम्मिलित होना या अपने मे समावेश करना अथवा उनको मदद करना। (४) व्याख्यानों का आयोजन करना, पुस्तकें तैयार कराना, प्रकाशित करना तथा पत्र-पत्रिकाएँ प्रसिद्ध करना। (५) जनरल-कमेटी समय २ पर निश्चित करे ऐसी प्रवृत्तियाँ आरभ करना। (६) कॉन्फरन्स के उद्देश्यों को पूर्ण करने मे मदद रूप हो सके इसके लिये फड करना कराना और स्वीकार करना तथा उसका उपयोग जनरल-कमिटी की मजूरी से करना। (७) शक्य हो वहां जैनो के अन्य फिर्कों तथा अजैनों के साथ मिल कर कार्य करना।

(३) रचना—कॉन्फरन्स सभासदों के प्रचार नीचे मूजब रहेंगे.—

(१) अठारह वर्ष या इससे अधिक उम्र के कोई भी स्थानकवासी स्त्री या हो पुरुप'—(अ) वार्षिक रूपया १) एक शुल्क दे तो सामान्य सभासद माना जावेगा। (ब) वार्षिक रु० १०) दस शुल्क

सहायक सभासद माना जावेगा। (क) एक साथ रु० ५०१) या इससे अधिक शुल्क देने वाले प्रथम-श्रेणी के और २५१) रु० देने वाले द्वितीय-श्रेणी के आजीवन-सभासद माने जावेंगे। (ख) एक साथ रु० १५०१) देने वाले वाइस-पेट्रन और रु० ५००१) देने वाले पेट्रन कहलायेंगे।

(२) जनरल कमेटी मान्य करे ऐसे संघ और संस्थाओं के प्रतिनिधि, जिनमे से प्रत्येक प्रतिनिधि को वार्षिक रु० १०) भरने पड़ेंगे वे सभासद, प्रतिनिधि-सभासद कहलायेंगे। प्रत्येक संघ या संस्था प्रति दो वर्ष मे अपने प्रतिनिधि नियुक्त करेगी।

(३) जो व्यक्ति कॉन्फरन्स की ऑनेररी सेवा करते हैं, वे कॉन्फरन्स के मानद् सभासद गिने जावेंगे। मानद् सभ्य पद देने का अधिकार कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी को रहेगा। यह अधिकार दूसरी -कमेटी मिले वहां तक ही रहेगा और प्रति वर्ष मानद् सदस्यों की नामावली जनरल-कमेटी में तय की जायगी। ऐसे सभ्य जनरल कमेटी के भी सभ्य माने जावेंगे।

नोटः—(१) यह विधान अमल मे आये तब तक जिन्होंने कॉन्फरन्स के किसी भी फंड में एक मुश्त रु० २५१) या इससे अधिक रकम दी हो, वे कॉन्फरन्स के आजीवन-सदस्य माने जावेंगे।

(२) सभासदों को मताधिकार प्राप्त करने का समय आये तब कम से कम ३ मास पूर्व उन्हें सभासद बन जाना चाहिए और अपना शुल्क जमा कर देना चाहिए।

(३) ब-क-ख के सभासदों को 'जैन प्रकाश' बिना मूल्य दिया जावेगा।

(४) वंश-परम्परा के मौजूदा सभ्य चालू रहेंगे लेकिन उन्हें आजीवन-सभासद बनने के लिये प्रार्थना की जाय।

४ प्रांत—कॉन्फरन्स के इस विधान के लिये भारतवर्ष के निम्न प्रांत निश्चित किये जाते हैं:—

(१) बम्बई (शहर और उपनगर), (२) मद्रास और तामिलनाड, (३) आंध्र और हैद्राबाद (४) बंगाल, उड़ीसा और बिहार (५) संयुक्त-प्रान्त (दिल्ली सहित) (६) पंजाब और ओरिसा (७) पूर्वी राजस्थान (८) पश्चिमी राजस्थान (अजमेर प्रान्त सहित) (९) मध्यभारत, (१०) मध्यप्रदेश (सी० पी०) (११) महाराष्ट्र, (१२) गुजरात, (१३) सौराष्ट्र, (१४) कच्छ (१५) केरल (कोचीन, मलबार, त्रावणकोर), (१६) कर्नाटक।

जनरल-कमेटी मंजूर करेगी उस स्थान पर प्रान्त का कार्यालय रहेगा। जनरल कमेटी प्रांतों की भौगोलिक मर्यादा निश्चित कर सकेगी और ऐसी भौगोलिक मर्यादा में एवं प्रांतों की संख्या मे आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर सकेगी।

५ प्रांतिक-समिति—कार्यवाहक-समिति समय-समय पर प्रांतिक-समितियाँ रचेगी और उसकी रचना-कार्य एवं सत्ता निश्चित करेगी।

६. जनरल-कमेटी—जनरल-कमेटी निम्नोक्त सभासदों की होगी—(१) सर्व आजीवन सभासद, सर्व वाइस-पेट्रन और पेट्रन (२) सर्व प्रतिनिधि सभासद। (३) सामान्य और सहायक-सभासदों के प्रतिनिधि—जो प्रति दस सभ्यों में से चुने जावेंगे। (४) गतवर्षों के प्रमुख।

७ कार्यवाहक समिति—प्रति वर्ष जनरल-कमेटी कार्यवाहक समिति के लिए ३० सभ्यो का चुनाव करेगी। कार्यवाहक समिति अपने अधिकारी नियुक्त करेगी। कार्यवाहक समिति के अधिकारी जनरल-कमेटी एवं कॉन्फरन्स के अधिकारी माने जावेंगे। अधिवेशन के प्रमुख बाद मे दो वर्ष तक कार्यवाहक-समिति के प्रमुख रहेंगे।

८ कार्य विभाजन और सत्ता—(१) कॉन्फरन्स अधिवेशन के प्रस्तावों के आधीन रहकर जनरल-कमेटी कॉन्फरन्स का सम्पूर्ण कार्य एव व्यवस्था करेगी। कॉन्फरन्स की सम्पूर्ण सत्ता जनरल-कमेटी के हस्तक रहेगी।

(२) कार्यवाहक-समिति कॉन्फरन्स के अधिवेशन एव जनरल-कमेटी के प्रस्तावों के आधीन रह कर, कॉन्फरन्स की सम्पूर्ण प्रवृत्तियों को अमल मे लाने के लिये योग्य कार्यवाही करेगी और उसके लिये उत्तरदायी रहेगी।

(३) इस विधान को अमल मे लाने और इस विधान मे उल्लेख न हुआ हो ऐसी सभी बातों के सम्बन्ध में इस विधान से विरोधी न हो ऐसे नियमोपनियम बनाने और समय पर प्रांतीय एव अन्य समितियों को आदेश देने की एवं उसमे समय २ पर परिवर्तन करने की कार्यवाहक-समिति को सत्ता रहेगी। कार्यवाहक-समिति प्रांतीय और अन्य समितियों की कार्यवाही पर नजर एव नियन्त्रण रखेगी और उसका हिसाब-देखेगी।

९ समिति की बैठकें--(१) प्रमुख और मत्रियों की आवश्यकनानुसार अथवा कार्यवाहक-समिति के ७ सभ्यों की लिखित विनती से कार्यवाहक-समिति की बैठक, कार्यवाहक-समिति की आवश्यकतानुसार, अथवा जनरल-कमेटी के २५ सभ्यों की लिखित विनती से जनरल-कमेटी की बैठक बुलाई जायगी।

लिखित विनती से बुलाई गई कार्यवाहक और जनरल-कमेटी की बैठक के लिए उस विनती में बैठक बुलाने का हेतु स्पष्ट होना चाहिये।

कार्यवाहक-समिति की बैठक के लिये ७ दिन और जनरल-कमेटी की बैठक के लिये १४ दिन पूर्व सूचना देनी होगी। प्रमुख एव मत्रियों को तात्कालिक आवश्यकता महसूस हो तो इससे भी कम मुद्दत में बैठक बुला सकेंगे।

(२) कार्यवाहक-समिति की बैठक के लिये ७ सभ्य और जनरल-कमेटी की बैठक के लिए ३० सभ्य या उसके कुल सभ्यों की १।५ सख्या की उपस्थिति (दोनों मे से जो सख्या कम हो) कार्य साधक उपस्थिति मानी जायगी। जिसमे १० सभ्य आमत्रण देने वाले प्रांत के सिवाय अन्य प्रातों के होना जरूरी हैं। किसी बैठक मे कार्य साधक उपस्थिति न हो तो वह स्थगित रहेगी और दूसरी बैठक मे कार्य साधक उपस्थिति की आवश्यकता नहीं रहेगी। किन्तु ऐसी दूसरी बैठक में प्रथम की बैठक मे जाहिर हुए कार्य-क्रम के अलावा अन्य कार्य नहीं हो सकेंगे। स्थगित हुई बैठक २४ घटे बाद मिल सकेगी।

(३) जनरल-कमेटी की बैठक वर्ष में कम से कम एक बार, वर्ष पूर्ण होने पर तीन मास मे बुलानी पड़ेगी और उस बैठक में अन्य कार्यों के उपरान्त निम्न कार्यवाही की जायगीः—(अ) कार्यवाहक-समिति का चुनाव। (ब) कार्यवाहक समिति एक वर्ष के अपने कार्य का विवरण पेश करेगी। (क) ऑडिट हुआ हिसाब और आगामी वर्ष का आनुमानिक बजट भी स्वीकृति के लिये पेश किया जायेगा।

(४) अधिवेशन के पूर्व कम से कम एक दिन और अधिवेशन के बाद यथाशीघ्र जनरल-कमेटी की बैठक बुलाई जावेगी।

१०. अधिवेशन—(१) कार्यवाहक समिति निश्चित करे उस समय और स्थल पर कॉन्फरन्स का अधिवेशन होगा।

(२) जिस सघ की ओर से अधिवेशन का आमत्रण मिलेगा, वह सघ अधिवेशन के खर्च के लिये जिम्मेवर रहेगा और अधिवेशन के लिये सम्पूर्ण प्रबन्ध करेगा।

कार्यवाहक-समिति की निगहरानी मे और सूचनानुसार आमत्रण देने वाला सघ स्वागत-समिति की रचना करेगा और अधिवेशन की सपूर्ण व्यवस्था करेगा। अधिवेशन का खर्च बाद करते हुए जो बचत रहे, उसका २५ प्रतिशत उस सघ का रहेगा और शेष रकम कॉन्फरन्स की रहेगी।

अधिवेशन के बाद तीन मास मे स्वागत-समित को अधिवेशन का सम्पूर्ण हिसाब कार्यवाहक-समिति के आगे पेश करना पड़ेगा।

(३) तीन वर्ष तक किसी भी सघ की ओर से अपने खर्च से अधिवेशन करने का आमत्रण न मिले तो कॉन्फरन्स के खर्च से अधिवेशन किया जा सकेगा।

(४) अधिवेशन के प्रमुख का चुनाव स्वागत समिति का अभिप्राय जानकर कार्यवाहक-समिति करेगी।

(५) अधिवेशन मे मताधिकार निम्न सभ्यों को रहेगा:—(अ) प्रतिनिधि की टिकिट खरीदने वाले। (ब) स्वागत-समिति की टिकिट खरीदने वाले। (क) कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी के सभी सभ्यों को।

(नोट —प्रतिनिधि एव स्वागत समिति की टिकटों का शुल्क अधिवेशन के पहले कार्यवाहक-समिति तय करेगी।)

(६) अधिवेशन की विषय-विचारिणी-समिति की रचना इस प्रकार होगी :—(अ) जनरल-कमेटी के उपस्थित सभ्यो मे से २५ प्रतिशत सभ्य। (ब) प्रत्येक प्रात के पॉच सभ्य। (क) स्वागत-समिति के सभ्यों मे से २५ सभ्य (ख) अधिवेशन के प्रमुख की ओर से ४ सभ्य। (ग) कॉन्फरन्स के वर्तमान सर्व अधिकारी (घ) भूतकाल के प्रमुख।

११ अधिवेशन के प्रमुख की समय-मर्यादा—अधिवेशन के प्रमुख उसके बाद दो वर्ष तक कॉन्फरन्स एव जनरल-कमेटी के प्रमुख रहेंगे। दो वर्ष मे अधिवेशन न हो तो बाद मे होने वाली जनरल-कमेटी की प्रथम बैठक मे दो वर्ष के लिए प्रमुख का चुनाव होगा।

१२ विशिष्ट फड—विशिष्ट उद्देश्य से कॉन्फरन्स को प्राप्त फडों मे से कॉन्फरन्स के खर्च के लिये कार्यवाहक-समिति निश्चित करे तदनुसार १० प्रतिशत तक लेने का कॉन्फरन्स को अधिकार रहेगा।

विशिष्ट उद्देश्य को लेकर किये गये फण्ड का उपयोग उस उद्देश्य के लिये निरुपयोगी या अशक्य मालूम हो तो कॉन्फरन्स के दूसरे उद्देश्यों के लिये उस फण्ड अथवा उसकी आय का उपयोग करने की सत्ता जनरल-कमेटी की खास बैठक को होगी।

१३ ट्रस्टी—अपनी प्रथम बैठक के ससय जनरल-कमेटी आजीवन सभासदों, पेट्रनो, वाइस प्रेट्रनो मे से पॉच ट्रस्टियो का चुनाव करेगी। तत्पश्चात् प्रति पॉच वर्षो मे ट्रस्टियों का चुनाव जनरल-कमेटी करेगी।

१४ कॉन्फरन्स की मिल्कियत—(१) जनरल-कमेटी के मजूर किये गये बजट के अनुसार आवश्यक रकम कॉन्फरन्स के मन्त्रियों के पास रहेगी। कॉन्फरन्स की तदुपरांत की रोकड, जामिनगीरियॉ, जरूरी खत, दस्तावेज आदि कॉन्फरन्स के ट्रस्टियों के पास रहेंगे।

(२) जनरल-कमेटी अथवा कार्यवाहक-समिति के प्रस्तावानुसार ट्रस्टी-गण कॉन्फरन्स के मन्त्रियो को आवश्यक रकम देंगे।

१५. स्थावर मिल्कियत—कॉन्फरन्स की सभी स्थावर मिल्कियत ट्रस्टियों के नाम रहेगी।

१६. करार आदि--कॉन्फरन्स की ओर से स्थावर मिल्कियत से संबंधित न हो ऐसे खत-पत्र, लेखन और करारनामे कॉन्फरन्स के मंत्रियों के नाम रहेंगे। कॉन्फरन्स को दावा करना पड़ेगा तो कॉन्फरन्स के मंत्रियों के नाम से होगा।

१७. कार्यालय--कॉन्फरन्स का कार्यालय जनरल-कमेटी निश्चित करेगी उस स्थान पर रहेगा।

१८. वर्ष--कॉन्फरन्स का वर्ष १ जुलाई से ३० जून तक का होगा।

१६. चुनाव और मताधिकार--चुनाव या मताधिकार संबंधी कोई मतभेद या तकरार हो, अथवा निर्णय की आवश्यकता हो तब कार्यवाहक-समिति का निर्णय अंतिम माना जावेगा।

२०. विधान में परिवर्तन--इस विधान में परिवर्तन करने की सत्ता जनरल-कमेटी को रहेगी। बैठक में उपस्थिति सभ्यों की ३।४ बहुमति से विधान में परिवर्तन हो सकेगा। विधान में संशोधन एवं परिवर्तन की स्पष्ट सूचना कार्य-विवरण में प्रकट कर देनी चाहिये।

२२ मध्यकालीन व्यवस्था--(१) इस विधान को अमल में लाने और तदनुसार प्रथम जनरल-कमेटी तथा कार्यवाहक-समिति की रचना करने के लिये जो भी कार्यवाही करनी पड़े तो तदनुकूल करने की सत्ता इस अधिवेशन के प्रमुख को दी जाती है।

(२) इस विधान को में लाने में जो भी कठिनाई या असुविधा मालूम हो तो उसे दूर करने के लिये योग्य कार्यवाही करने की सत्ता इस अधिवेशन के प्रमुख को रहेगी।

(३) यह विधान चैत्र शुक्ला त्रयोदशी सं० २००६ (चैत्री सं० २००७) से अमल में आता है।

नोटः--किसी कारण इस समय के बीच में इस विधान के अनुसार सभ्य बनाना और जनरल-कमेटी तथा कार्यवाहक-समिति की रचना न हो सके तो तब तक पुराने विधान के अनुसार सभ्यपद, जनरल-कमेटी तथा कार्यवाहक-समिति चालू रहेगी।

अन्य बातों में यह विधान अमल में आवेगा और इन सभी कालमों में बताई गई सभी बातों का निर्णय इस अधिवेशन के प्रमुख करेंगे।

मोरवी-अधिवेशन के पश्चात् कॉ० ऑफिस के संचा र्थ बनाई गई निम्न सर्व प्रथम मैनेजिंग-कमेटी

प्रमुख-राय सेठ श्री चांदमलजी सा० रियांवाले, अजमेर। सभ्य (१) नगर सेठ श्री अमृतलालभाई वर्धमानभाई, मोरवी (२) देशाई श्री वनेचन्दभाई राजपालभाई मोरवी (३) सेठ श्री अंबावीदासभाई डोसाणी मोरवी (४) पारिख श्री वनेचन्दभाई पोपटभाई मोरवी (५) दफ्तरी श्री गोकलदास भाई राजपाल भाई, ऑ० मेनेजर (६) श्री वनेचन्द भाई पोपटभाई, मोरवी, एकाउन्टेन्ट (७) मेहता श्री सुखलालभाई मोनजीभाई मोरवी, ट्रेजरार (८) श्री लखमीचन्दभाई माणकचन्दभाई खोखाणी मोरवी, ऑ० सेक्रेट्री (९) सेठ श्री गिरधरलालभाई सौभाग्यचन्द्रभाई मोरवी, ऑ० जॉइन्ट सेक्रेट्री (१०) मेहता श्री मनसुखलालभाई जीवराजभाई मोरवी, ऑ० ज० सेक्रेट्री (११) जौहरी श्री दुर्लभजीभाई त्रिभुवनदासभाई मोरवी ऑ० ज० सेक्रेट्री।

प्रारंभ में बहुत वर्षों तक कॉ० ऑफिस का कार्य-संचालन निम्न जनरल-सेक्रेट्रियों तथा प्रांतिक सेक्रेट्रियों के नेतृत्व में होता रहा

जनरल-सेक्रेट्रीः—

(१) सेठ श्री केवलदासभाई त्रिभुवनदासभाई, अहमदाबाद (२) सेठ श्री अमरचन्दजी पित्तलिया, रतलाम, (३) लाला श्री सादीरामजी गोकलचन्दजी, दिल्ली, (४) श्री गोकलदासभाई राजपालभाई, मोरवी, (५) राय सेठ श्री चांदमलजी रियांवाले, अजमेर, (६) सेठ श्री बालमुकन्दजी चन्दनमलजी मूथा, सतारा। (७) दी० ब० श्रीविशनदासजी, जम्मु। (८) दी० ब० श्री उम्मेदमलजी लोढ़ा, अजमेर।

प्रांतिक-सेक्रेट्रीः—

(पंजाब)—(१) लाला श्री नथमलजी, अमृतसर, (२) लाला श्री रलारामजी, जालंधर। (मालवा)—(१) सेठ श्री चांदमलजी, पित्तलिया, जॉवरा (२) श्री सुजानमलजी बाठिया, पिपलोदा, (३) श्री फूलचन्दजी कोठारी, भोपाल। (मेवाड़)—(१) श्री बलवतसिंहजी कोठारी, उदयपुर, (२) श्री नथमलजी चौरड़िया, नीमच। (मारवाड़)—(१) सेठ श्री समीरमलजी बालिया, पाली, (२) श्री नोरत्नमलजी भांडावत, जोधपुर, (३) सेठ श्री गणेशमलजी मालू, बीकानेर। (राजपूताना)—(१) सेठ श्री शार्दूलसिंहजी मुणोत, अजमेर, (२) श्री आनन्दमलजी चौधरी, अजमेर (३) श्री राजमलजी कोठारी, जयपुर, (४) श्री गुलाबचन्दजी कांकरिया, नयाशहर (५) श्री छोटेलालजी चुन्नीलालजी जौहरी, जयपुर, (६) श्री धीसूलालजी चौरडिया, जयपुर। (ग्वालियर)—(१) श्री चांदमलजी नाहर, भोपाल, (२) श्री सौभाग्यमलजी मूथा, इच्छावर (भोपाल)। (हाड़ौती, ढुंढार, शेखावाटी)—(१) लाला श्री कपूरचन्दजी, आगरा। (काठियावाड़)—(१) श्री पुरुषोत्तमजी मावजी वकील, राजकोट, (२) श्री वनेचन्दभाई देशाई, मोरवी, (३) सेठ श्री देवशीभाई धरमशी (मोटी-पक्ष) मांडवी, (४) सेठ श्री देवशीभाई भाणजी (नानी-पक्ष) खधार। (कच्छ)—(१) सेठ श्री मेघजी देवचन्दभाई, भुज, (२) सेठ श्री अनोपचन्दभाई वीरचन्दभाई, भुज, (३) सेठ श्री माणकचन्दभाई पानाचन्दभाई सघवी, माडवी। (उत्तर-गुजरात)—(१) सेठ श्री जमनादासभाई नारायणदासभाई, अहमदाबाद, (२) सेठ श्री माणकलालभाई अमृतलालभाई अहमदाबाद। (दक्षिण-गुजरात) (१) रा० ब० श्री कालीदासभाई नारायणदासभाई, इटोला, (२) वकील श्री मगनलालभाई प्रेमचन्दभाई, सूरत। (सिंध)—(१) सेठ श्री प्रागजीभाई पानाचन्दभाई, करांची। (बम्बई)—(१) सेठ श्री मेघजीभाई थोभण जे० पी०, बम्बई, (२) श्री सूरजमलभाई भोजूभाई सेलीसीटर, बम्बई, (३) ज० से० श्री वृजलालभाई खीमचन्दभाई शाह, बम्बई। (खानदेश-वरार)—(१) सेठ श्री लछमनदासजी श्रीमाल, जलगाव। (निजाम-राज्य)—(१) लाला नेतरामजी रामनारायणजी, हैद्राबाद, (२) ज० से० श्री रामलालजी कीमती, हैद्राबाद। (दक्षिण)—(१) सेठ बालमुकन्दजी चंदनमलजी मूथा, सतारा, (२) श्री उत्तमचन्दजी चांदमलजी कटारिया श्रीगोंदा, (३) श्री भगवानदासजी चदनमलजी, पित्तलिया, अहमदनगर। (मद्रास)—(१) श्री सोहनराजजी कुचेरावाले, मद्रास। (मलबार)—(१) श्री भगवानजी डूंगरशी, कोचीन। (बंगाल)—(१) सेठ श्री अगरचन्दजी भैरोंदानजी सेठिया, कलकत्ता, (२) ज० से० श्री धारसीभाई गुलाबचन्दभाई सघाणी, कलकत्ता। (ब्रह्मदेश)—(१) सेठ श्री पोपटलालभाई डाह्याभाई, रंगून। (अरबिस्तान)—(१) सेठ श्री हीराचन्दभाई सुन्दरजी, एडन। (अफ्रीका)—(१) श्री मोहनलालभाई माणकचन्दभाई, खडारिया, पिटर्सबर्ग।

गत ५० वर्षों में स्था० जैन कॉन्फरन्स के तेरह बृहत्-अधिवेशन हुए

क्रम	स्थान—सन्-तारीख	अध्यक्ष—स्वागताध्यक्ष
प्रथम	मोरवी फरवरी सन् १९०६ ता० २६, २७, २८	अ०— सेठ श्री चांदमलजी रियांवाले, अजमेर। स्वा०—सेठ श्री अमृतलाल वर्धमाण, मोरवी।
द्वितीय	रतलाम मार्च सन् १९०८ ता० २७, २८, २९	अ०— सेठ श्री केवलदास त्रिभुवनदास अहमदाबाद। स्वा०—सेठ श्री अमरचन्दजी पित्तलिया, रतलाम।
तृतीय	अजमेर मार्च सन् १९०९ ता० १०, ११, १२	अ०— शास्त्रज्ञ सेठ बालमुकन्दजी मूथा, सतारा। स्वा०—राय सेठ श्री चांदमलजी सा० अजमेर।
चतुर्थ	जालधर मार्च सन् १९१० ता० २७, २८, २९	अ०— दी० ब० श्री उम्मेदमलजी लोढा, अजमेर
पचम	सिकन्द्राबाद अप्रैल सन् १९२३ ता० १२, १३, १४	अ०— सेठ श्री लछमनदासजी श्रीश्रीमाल जलगांव। स्वा०—रा० ब० श्रीसुखदेवसहायजी हैदराबाद।
षष्ठम	मल्कापुर (म० प्र०) जून सन् १९२५ ता० ७, ८, ९	अ०— सेठ श्री मेघजीभाई थोभण जे० पी० बम्बई। स्वा०—सेठ श्री मोतीलालजी कोटेचा, मल्कापुर।
सप्तम	बम्बई दिस०-जन० सन् १९२६-२७ ता० ३१, ता० १, २	अ०— सेठ श्री भैरोंदानजी सेठिया, बीकानेर। स्वा०—सेठ श्री मेघजीभाई थोभण, बम्बई।
अष्टम	बीकानेर अक्टूबर सन् १९२७ ता० ६, ७, ८	अ०— तत्वज्ञ श्री वाडालाल मोतीलाल शाह, घाटकोपर। स्वा०—सेठ श्री मिलापचन्दजी बेद, झांसी-बीकानेर।
नवम	अजमेर अप्रैल सन् १९३३ ता० २२, २३, २४, २५	अ०— सेठ श्री हेमचन्द रामजीभाई, भावनगर। स्वा०—लाला ज्वालाप्रसादजी जैन, महेन्द्रगढ।
दशम	घाटकोपर अप्रैल सन् १९४१ ता० ११, १२, १३	अ०— सेठ श्री वीरचन्द मेघजीभाई, बम्बई। स्वा०—सेठ श्री धनजीभाई देवशीभाई, घाटकोपर।
एकादशम	मद्रास दिसम्बर सन् १९४९ ता० २४, २५, २६	अ०— श्रीमान कुन्दनमलजी फिरोदिया, अहमदनगर। स्वा०—सेठ श्री मोहनमलजी चौरडिया, मद्रास।
द्वादशम	सादड़ी मई सन् १९५२ ता० ४, ५, ६	अ०— सेठ श्री चपालालजी बांठिया, भीनासर। स्वा०—सेठ श्री मोहनमलजी वरलोटा, सादडी।
त्रयोदशम	भीनासर (बीकानेर रा०) अप्रैल सन् १९५६ ता० ४, ५, ६	अ०— सेठ श्री बनेचन्द दुर्लभजी जौहरी, जयपुर। स्वा०—सेठ श्री जयचन्दलालजी रामपुरिया, बीकानेर।

अजमेर-ऑफ़िस से दिल्ली-ऑफ़िस पर्यन्त कॉन्फरन्स-ऑफ़िस के निम्न संचालक मंत्रीगण रहे

अजमेर-कॉ०-ऑफिस :—(१) ज० से० राय सेठ श्री चांदमलजी, रियांवाले, (२) ऑ० सेक्रेट्री-कुँ० श्री छगनमलजी (३) असि० से० श्री वेचरदासभाई वीरचन्दभाई तलसाणिया। तदनन्तर-(१) डॉ० श्री धारसी भाई गुलाबचन्दभाई सघाणी तथा (२) श्री भवेरचन्दभाई जादवजी कामदार ने कार्य किया।

दिल्ली—कॉ०-ऑफिस (१) ज० से० लाला गोकलचन्दजी जौहरी।

रतलाम—कॉ०-ऑफिस (१) ज० से० सेठ श्री वर्धमानजी पित्तलिया।

सतारा—कॉ०-ऑफिस (१) ज० से० दी० ब० श्री मोतीलालजी मूथा।

बम्बई-कॉ०-ऑफिस—

(१) ज० से० सेठ श्री वेलजीभाई लखमशी नप्पुभाई,
(२) ज० से० सैठ श्री सूरजमलभाई लल्लूभाई जौहरी,
(३) ज० से० श्री चिम्मनलाल चक्कुभाई शाह, सोली०
(४) ज० से० श्री खीमचन्दभाई मगनलालभाई वोरा,
(५) मंत्री श्री चिमनलालभाई पोपटलालभाई शाह,
(६) मंत्री—श्री टी० जी० शाह,
(७) मंत्री—श्री निहामचन्दभाई मूलचन्दभाई सेठ,
(८) मंत्री श्री नवलचन्दभाई अभयचन्दभाई मेहता,
(९) मंत्री—श्री चुन्नीलालभाई कल्याणजीभाई कामदार,
(१०) मंत्री—श्री गिरधरलालभाई दामोदरभाई दफ्तरी,
(११) उप—प्रमुख—श्री दुर्लभजीभाई के० खेताणी।

दिल्ली-कॉ०-ऑफिस आने के पश्चात् मंत्री पद पर जिन्होंने सेवा दी

उप प्रमुख—डॉ० श्री दौलतसिंहजी कोठारी M A Ph D,

प्रधान-मंत्री—सेठ श्री आनन्दराजजी सुराना, M L A,

मंत्रीगण—

लाला हेमचन्दजी नाहर,
लाला गुलाबचन्दजी जैन,
लाला हरजसरायजी जैन,
श्री भीखालालभाई गि० सेठ,
श्री धीरजलालभाई के० तुरखिया,
लाला गिरधरलालजी जैन M A,
लाला उत्तमचन्दजी जैन B A L L B,
लाला अजितप्रसादजी जैन B A L L B

नोट :—पृष्ठ न० ७६, ७७ पर सिकन्द्राबाद अधिवेशन के प्रस्ताव न० १४ के बाद भूल से मल्कापुर अधिवेशन के प्रस्ताव न० २, ३, ४ छप गए हैं अतः कृपया पाठक इन्हें न पढ़ें।

प्रारंभिक अल्प समय में प्रान्तिक-कॉन्फरन्सें बुलवाईं

(१) बोडेश्वर (लींबडी) मे झालावाड़ बीसा श्रीमाली स्थानकवासी जैनों की प्रथम-प्रान्तिक-कॉन्फरन्स स० १६६२ में भाद्र शुक्ला ६ मगलवार को लींबडी-नरेश श्री यशवन्त सिंहजी K C I. की अध्यक्षता मे हुई। जिसमें ग्यारह ताल्लुके के अग्रगण्य सज्जन पधारे थे। कार्यवाही आठ दिन तक चली। कॉन्फरन्स का सपूर्ण खर्च सघवी श्री धारसी भाई रवा लींबड़ी निवासी ने उठाया।

(२) श्री गौंदा (दक्षिण) मे श्रीमान् सेठ बालमुकन्दजी, हजारीमलजी सतारा निवासी की ध्यक्षता में श्री ओसवाल जैन प्रान्तिक-कॉन्फरन्स हुई। इसमें समाज सुधार विषयक प्रस्तावों के अतिरिक्त श्वेताम्बर मूर्ति-पूजक तथा स्थानकवासी जैनों की संयुक्त कॉन्फरन्स करके ऐक्यता सस्थापन करने का प्रस्ताव भी हुआ।

(३) बढवाण (सौराष्ट्र) मे झालावाड़ बीसा श्रीमाली स्था० जैनों की तृतीय बैठक हुई।

(४) गोहिलवाड़ दशा श्रीमाली जैनों की कॉन्फरन्स घोघा (सौराष्ट्र) में बुलाई।

(५) कलोल में गुजरात के विभिन्न ग्रामों की कॉन्फरन्स बुलाई।

(६) पजाब-प्रान्तिक-कॉन्फरन्स का प्रथम अधिवेशन जडियाला में हुआ।

(७) पजाब-प्रान्तिक-कॉन्फरन्स का द्वितीय अधिवेशन स्यालकोट में हुआ।

(८) झालावाड़ दशा श्रीमाली स्थानकवासी जैनों की प्रान्तिक-कॉन्फरन्स लींबड़ी मे बुलाई।

चतुर्थ-परिच्छेद

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स की विशिष्ट प्रवृत्तियां

कॉन्फरन्स प्रारम्भ होने के पश्चात् आरम्भ होने वाली शुभ प्रवृत्तियां

(१) जैन समाज की विभिन्न सम्प्रदायों मे एक ही दिवस सवत्सरी कराने के लिये सतत-प्रयत्न किया गया।

(२) जगह २ उपदेशकों द्वारा धर्म प्रचार, कुरूढ़िएं तथा फिजूल खर्ची बद कराने के लिए शुभ प्रयत्न किए गये।

(३) कॉन्फरन्स के विविध खातों के लिये फड किया गया।

(४) स्था० समाज की डिरेक्टरी अर्थात् जन-गणना के लिए प्रयत्न किया गया।

(५) वम्बई, तथा अहमदाबाद मे परीक्षा निमित्त जाने वाले परीक्षार्थियों को ठहराने एव भोजनादि का प्रवन्ध किया गया।

(६) करीब एक सौ देशी राज्यों को जीव-दया अर्थात् प्राणियों का वध वद कराने के लिए अपीले भेजकर जगह २ हिंसा वद कराने का प्रयत्न किया गया।

(७) जैन मुनियों को रेल्वे पुल पार करने पर लगने वाले टॉल टेक्स से मुक्त कराने का प्रयत्न किया गया।

(८) जैन मुनियों तक की तलाशी लेकर नये वस्त्रों पर जो कस्टम लिया जाता था उसे वद कराने का प्रयत्न किया गया।

(९) कच्छ मांडवी-खाते मे सेठ मेघजी भाई थोमणभाई से रु० २५ हजार दिलवाकर 'सस्कृत-पाठशाला' खुलवाई।

(१०) लींवडी-सम्प्रदाय के साधुओं का लींवडी मे, दरियापुरी स० के साधुओं का कहोल मे और खभात स० के साधुओं का खभात मे सम्मेलन करवा कर सुधार करवाए। इसी समय लींवडी-सम्प्रदाय के शिथिलाचारियों को सवाड़े से पृथक किये तथा कइयों को उसी वक्त अलग कराए।

(११) व्यवहारिक-शिक्षण के लिये वम्बई मे वोर्डिंग-हाउस तथा धार्मिक-शिक्षण के लिये रतलाम मे जैन ट्रेनिंग-कॉलेज की स्थपना की।

(१२) 'अर्ध-मागधी-भाषा शिक्षण-माला' की रचना करने के लिये प्रयत्न किया।

(१३) सम्प्रदाय वार साधु-साध्वियों की गणना की गई।

(१४) जैन साधु-साध्वियों को पब्लिक-भाषण देने के योग्य वनवाए।

(१५) अहमदावाद मे शा नाथालाल मोतीलालजी की उदारता से 'दशा श्रीमाली-श्राविकाशाला' तथा जामनगर मे 'वीसा श्रीमाली-श्राविकाशाला' की स्थापना कराई।

(१६) श्री पीताम्बर हाथीभाई गलाणपुर वालों से रु० १८ हजार की उदारता से स्थानकवासी जैन विद्यार्थियों को स्कॉलरशिप दिलवाले की व्यवस्था की।

(१७) धार्मिक ज्ञान के प्रचारार्थ स्थान स्थान पर जैन पाठशालाएं, कन्या शालाएं, श्राविका-शालाएं, पुस्तकालय मडल, सभाए तथा वाचनालय खुलवाए। और व्यवहारिक शिक्षण प्रचार के लिये बोर्डिंग, तथा उद्योगशालाएं खुलवाईं।

(१८) जैनियों मे ऐक्य वृद्धि के लिये प्रयत्न किए।

(१६) सम्प्रदायों को अपनी मर्यादा बाधने के लिये, एकल विहार तथा आज्ञा से पृथक रहने का निषेध किया और आचार्य नियुक्ति के लिये प्रेरणा देकर व्यवस्थित करने के लिये प्रयत्न किये।

(२०) निराश्रित बहिनों, भाइयों, और बालकों को आश्रय दिलवाने के प्रयत्न किए।

(२१) हजारों भीलों से मसाहार तथा मदिरा-पानादि छुडवाए। दशहरा एव नवरात्रियों मे राजा महाराजाओं द्वारा होनेवाली जीव-हिंसा को कम करवाई तथा देवस्थानों मे होती हुई पशु-पक्षी-हिंसा को रुकवाने के लिये प्रयत्न किये।

(२२) साधु-मुनिराजों को अन्यान्य प्रान्तों मे विचरण करने की तथा पब्लिक-भाषण देने के लिए सफल प्रेरणा दी। जिसके फल स्वरूप राजा-महाराजा, सरकारी अधिकारी तथा अजैन लोग आकर्षित हुए और उन्होंने हिंसा, शिकार, मद्य-मांस, कुव्यसन आदि सेवन करने के त्याग किए। इस प्रकार जैनधर्म, नीति और सदाचार का प्रचार बढने लगा।

(२३) जैन तिथि-पत्र (अष्टमी-पक्खी की टीप) तैयार कराया।

(२४) जैनों के तीनों फिर्कों की सयुक्त-कॉन्फरन्स बुलाने का प्रयत्न किया और परस्पर विरोधी लेखों, पैम्फ्लेटों का तथा दीक्षित साधुओं को भगाने या बदलाने की विरोधी प्रकृति को रुकवाने के लिए प्रयत्न किए।

(२५) महावीर-जयती, समस्त फिर्कों के जैन एक साथ मिलकर मनाए इसके लिए प्रेरणा दी और प्रयत्न किया।

(१) श्री स्था० जैन-बोर्डिंग, बम्बई

व्यवहारिक-शिक्षण मे विद्यार्थियों को सुविधा देने के लिये बम्बई मे ता०-१-६-१६०१ मे एक 'श्री स्था० जैन-बोर्डिंग' आरभ किया गया, जिसका प्रबध निम्न लिखित सज्जनों को सुपुर्द किया गया:—

जनरल-सेक्रेट्री '—श्रीमान् सेठ मेघजीभाई थोभणभाई, बम्बई, श्रीमान् वकील पुरुषोत्तमभाई मावजीभाई, राजकोट, श्रीमान् गोकलदासभाई राजपाल, मोरवी, श्रीमान् जैसिंहभाई उजमशीभाई, अहमदाबाद,

कुछ वर्षों के बाद श्री बृजलालभाई खीमचदभाई शाह सोलीसीटर के मत्रीत्व मे बोर्डिंग चला और बादमें फड के अभाव में बद करना पडा।

(२) श्री जैन ट्रेनिंग-कॉलेज, रतलाम

स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स की तरफ से सन् १६०६ में श्री जैन ट्रेनिंग-कॉलेज की रतलाम मे ता० २६-८-१६०६ को स्थापना की गई। कार्यवाहक-समिति निम्न प्रकार बनाई गई:—

श्री सेठ अमरचदजी पित्तलिया, रतलाम (प्रमुख), श्री लाला गोकलचदजी जौहरी दिल्ली, (उप प्रमुख), ला० श्री सुजानमलजी बाठिया, पिपलोदा (मत्री), श्री वरदभाणजी पित्तलिया, रतलाम (मत्री), श्री केशरीचदजी भडारी देवास (मत्री), श्री मिश्रीमलजी बोराना रतलाम (सह-मत्री)।

रतलाम मे यह सस्था ८ वर्ष तक अच्छी तरह चलती रही। सेठ अमरचदजी बरधभाणजी पित्तलिया आदि ने इसकी अच्छी देख-रेख रखी। इस बीच इस सस्था से बहुत से सुयोग्य विद्वान भी तैयार होकर निकले. जैन समाजके प्रसिद्ध सन्त आत्मार्थी प० मुनि श्री मोहन ऋषिजी म०, श्री चुन्नीलालजी म० आदि इसी ट्रेनिंग कॉलेज की देन हैं, जिन्होंने तत्कालीन समाज में काफी जागृति पैदा की थी। मारवाड़ जैसे क्षेत्र मे अनेकों स्थानों पर आप मुनिवरों ने अपने उपदेशों द्वारा पाठशालाए, गुरुकुल वाचनालय, श्राविकाशालाएं आदि की स्थापना कराई और शिक्षा का प्रसार किया। बगडी, वलून्दा की पाठशाला, ब्यावर जैन-गुरुकुल व भोपालगढ़-विद्यालय की स्थापना मे आपका ही उपदेश रहा हुआ था। जैन ट्रेनिंग-कॉलेज के तीन टर्म्स मे अच्छे सुयोग्य कार्यकर्ता तैयार हुए और उन्होंने स्था० जैन धर्म और समाज की तथा कॉन्फरन्स की सुन्दर सेवा की। श्री धीरजलालभाई के० तुरखिया, तथा श्री मोतीरामजी श्रीश्रीमाल आदि इसी जैन ट्रेनिंग कॉलेज के स्नातक हैं।

यदि यह ट्रेनिंग कॉलेज इसी तरह आगे भी बराबर चलती रहती तो समाज को अच्छे कार्यकर्ताओं की आज कमी नहीं रहती। परन्तु दुर्भाग्य से ८ साल बाद सन् १९१८ मे यह सस्था बद हो गई।

(३) 'जैन-प्रकाश' का प्रकाशन

श्री अ० भा० श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स की स्थापना सन् १९०६ मे मोरवी मे हुई। उसके ७ साल बाद 'जैन-प्रकाश' का प्रकाशन चालू किया गया। कॉन्फरन्स के प्रति धीरे-धीरे समाज मे उत्साह फैलता गया और लोग उससे आकर्षित होते गये, तब यह आवश्यक समझा गया कि कॉन्फरन्स का एक निजी मुख-पत्र प्रकाशित होना चाहिये जिससे कि सारे समाज को कॉन्फरन्स की गति-विधियों से परिचित कराया जा सके। अत सन् १९१३ मे 'जैन-प्रकाश' का जन्म हुआ, जो आज भी विगत ४२ वर्षों से समाज की सेवा करता चला जा रहा है।

प्रारभ मे 'जैन-प्रकाश' साप्ताहिक रूप से ही नियमित निकलता रहा। सन् सन्१९१३ से १९३६ तक साप्ताहिक रूप से नियमित निकलता रहा। १ जून सन् १९३६ से अहमदाबाद जनरल-कमेटी के प्रस्ताव न० १२ के अनुसार इसे पाक्षिक कर दिया गया।

ता० २९-१०-१९३६ को कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी भावनगर मे हुई। उसमे यह निर्णय किया गया कि ता० १ जनवरी सन् १९३७ से पुन 'जैन प्रकाश' को साप्ताहिक कर दिया जाय। तदनुसार प्रकाश पुन साप्ताहिक रूप से प्रकाशित होने लगा। सन् १९४१ तक 'प्रकाश' साप्ताहिक ही निकलता रहा। ता० २५-१२-१९४१ को अहमदनगर मे कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी हुई, उसमे पुन प्रस्ताव न० ११ द्वारा यह तय किया गया कि 'प्रकाश की हिन्दी और गुजराती आवृत्ति दोनों एक साथ न निकाल कर अलग-अलग प्रकाशित की जाय। प्रति सप्ताह क्रमश एक-एक आवृत्ति निकाली जाय। इस तरह सन् १९४१ के बाद 'प्रकाश' पुन पाक्षिक कर दिया गया। महीने में दो बार हिन्दी और दो बार गुजराती 'जैन प्रकाश' प्रकट होने लगा। और गुजराती तथा हिन्दी ग्राहको को अलग-अलग आवृत्ति भेजी जाने लगी। सन् १९५४ के अन्त तक इसी तरह जैन-प्रकाश दोनों भाषाओं मे अलग-अलग पाक्षिक रूप मे निकलता रहा। इस बीच कई बार 'जैन प्रकाश को साप्ताहिक कर देने के लिये विचारा गया और जनरल-कमेटी मे प्रस्ताव भी पास किये गये, परन्तु साप्ताहिक रूप से प्रकट न हो सका। आखिर जब कॉन्फरन्स का कार्यालय बम्बई से दिल्ली स्थानान्तरित हुआ तब पुन 'जैन-प्रकाश' को साप्ताहिक करने का विचार किया गया और २ दिसम्बर सन् १९५४ से 'जैन प्रकाश' की दोनो आवृत्तिया (हिन्दी

और गुजराती) एक कर दी गई और पुनः यह हिन्दी-गुजराती द्विभाषा-साप्ताहिक के रूप मे कर दिया गया। इससे भी कइयों को सतोष न हुआ और हिन्दी व गुजराती भिन्न-भिन्न आवृत्तियां निकालने की सूचनाएं आने बीकानेर ज० क० के आदेशानुसार स० २०१२ तद० ता० १-१२-५४ से गुजराती और हिन्दी पृथक साप्ताहिक रूप में निकल रहा है। 'जैन प्रकाश' के अब तक निम्न सम्पादक रह चुके हैं :—

(१) डॉ० धारसीभाई गुलाबचद सघाणी, (२) श्री झवेरचद जादवजी कामदार, (३) पं० वालमुकुन्दजीशर्मा, (४) श्री रतनलालजी बघेलवाल, (५) प० दुखमोचनजी झा, (सन् २२-२३ दो वर्ष) (६) श्री दुर्गाप्रसादजी (सन् २४-२५ दो वर्ष) (७) जौहरी सूरजमल लल्लुभाई (ऑ) (८) श्री झवेरचद जादवजीभाई कामदार (९) श्री सुरेन्द्रनाथजी जैन (दो वर्ष) (१०) श्री त्रि० बी० हेमाणी (कुछ समय) (११) श्री डाह्यालाल मणिलाल मेहता (४ वर्ष) (१२) श्री हर्षचन्द्र मफरचद दोशी, (९ वर्ष) (१३) श्री नटवरलाल कपूरचद शाह, (३ वर्ष) (१४) श्री गुलाबचद नानचद शेठ, (२ वर्ष) (१५) श्री रमणिकलाल तुरखिया, (१६) श्री एम० जे० देसाई, (६ वर्ष) (१७) श्री रत्नकुमार जैन 'रत्नेश' (८ वर्ष)

जैन प्रकाश पहले कुछ वर्षों तक अजमेर से निकला करता था, परन्तु बम्बई ऑफिस जाने के बाद वह बम्बई से ही प्रकाशित होता रहा। बम्बई से दिल्ली ऑफिस आजाने पर अब यह दिल्ली से ही प्रकाशित हो रहा है। वर्तमान मे 'जैन प्रकाश' का सम्पादक-मडल इस प्रकार हैं—

श्री खीमचद मगनलाल वोरा	मानद् सम्पादक		सम्पादक
श्री धीरजलाल के० तुरखिया	,, ,,		शातिलाल वनमाली शेठ

'जैन प्रकाश' स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स का मुख पत्र है जो विगत ४२ वर्षों से समाज की सेवा कर रहा है। समाज की जागृति मे और कॉन्फरन्स की प्रवृत्तियों के प्रचार मे 'जैन प्रकाश' का महत्त्वपूर्ण भाग रहा है। स्था० जैन समाज का अभी यही एक मात्र प्रामाणिक साप्ताहिक-पत्र है। स्था० जैन साधु-साध्वियों के विहार-समाचार और मुनिराजों तथा विद्वानों के धार्मिक तथा सामाजिक-लेख तथा कॉन्फरन्स की प्रवृत्तियां आदि इसमें प्रकट होते रहते हैं।

(४) श्री सुखदेवसहाय जैन-प्रिंटिंग-प्रेस

स्व० राजा बहादुर श्री ला० सुखदेव सहायजी ने सन् १९१३ में पांच हजार रुपये कॉन्फरन्स को प्रेस के लिये प्रदान किये थे, जिनसे सन् १९१४ मे प्रेस खरीदा गया। यह प्रेस सन् १९२५ तक अजमेर मे चलता रहा और कॉन्फरन्स का 'जैन प्रकाश' भी यहीं से प्रकाशित होता रहा। कॉन्फरन्स ने अपनी जनरल-कमेटी मे यह प्रेस बेंच देने का प्रस्ताव किया। सन् १९२५ के बाद यह प्रेस इन्दौर चला गया था, जहां श्रीयुत् सरदारमलजी भडारी इसकी देख-रेख रखते थे। अर्ध-मागधी भाषा का प्रसिद्ध कोष—पहला और दूसरा भाग इसी प्रेस मे छपकर तैयार हुआ था। जब कॉन्फरन्स का दफ्तर बम्बई चला गया तो बम्बई-प्रेस का स्थानान्तर इन्दौर से बम्बई मे करना व्ययशील होने से जनरल-कमेटी ने सन् १९२९ मे उसे इन्दौर मे ही बेंच देने का प्रस्ताव पास किया। सन् १९३० में भी पुनः इसी प्रस्ताव को दोहराया गया। अन्त में वह बेंच दिया गया। प्रेस की बिक्री से खर्च निकालने पर रु० १३९१।−)॥ मिले, जो कॉन्फरन्स की वहियों मे 'श्रीसुखदेव सहाय जैन प्रिंटिंग-प्रेस' खाते में जमा कर लिये गये।

ता० १०-५-१९३९ को कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी अहमदाबाद में हुई। उसमें पुन. प्रेस खरीदने का निर्णय किया गया। रु० १३६१) तो पहले के जमा थे ही और रु० २५००) कॉन्फरन्स ने अपनी ओर से प्रदान किए। इस प्रेस का नाम 'सुखदेव सहाय जैन-प्रिंटिंग प्रेस' ही रखने का तय किया। तदनुसार बम्बई में प्रेस खरीद लिया गया था और 'जैन-प्रकाश' तथा कॉन्फरन्स के अन्य प्रकाशन उसी में छपकर प्रकट होने लगे।

परन्तु आगे चल कर प्रेस में घाटा रहने लगा तो ता० २४-१-१९४१ की जनरल-कमेटी में प्रस्ताव न० १० के द्वारा प्रेस को बेच देने का निर्णय किया गया। इसके बाद कॉन्फरन्स का अपना प्रेस न रहा।

(५) श्री अर्ध-मागधी-कोष का निर्माण

जैन धर्म के साहित्य का अधिकांश भाग अर्ध-मागधी भाषा में है। जिस भाषा का प्रामाणिक कोष होता है उस भाषा के अर्थों को समझने में कोई बाधा उपस्थित नहीं होती। बिना कोष के उस भाषा का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना कठिन है। कोष और व्याकरण भाषा के जीवन होते हैं। व्याकरण की गति तो विद्वानों तक ही सीमित होती है, परन्तु कोष वह वस्तु है जिसका उपयोग विद्वान और साधारण वर्ग भी समान रूप में कर सकते हैं। अतः कोष की महत्ता स्पष्ट है। इन्हीं विचारों से प्रेरित हो सर्व प्रथम सन् १९१२ में श्री केशरीचन्दजी भंडारी, इन्दौर को 'अर्ध-मागधी-कोष' बनाने का विचार आया और वे इस ओर सक्रिय रूप से जुट भी गये। उन्होंने जैन सूत्रों में से लगभग १४ हजार शब्दों का संकलन किया। उसी समय इटली के प्रसिद्ध विद्वान डॉ० स्वाली ने भी श्री जैन श्वेताम्बर कॉन्फरन्स को इसी प्रकार का एक कोष बनाने की अपनी इच्छा व्यक्त की थी। जब यह बात श्री केशरीचन्दजी भंडारी को ज्ञात हुई तो उन्होंने अपना दिया हुआ शब्द संग्रह डॉक्टर स्वाली को भेजने के लिये श्वे० कॉन्फरन्स को भेज दिया। परन्तु बीच में ही युद्ध प्रारंभ हो जाने से तथा अन्य कई कारण उपस्थित हो जाने से डॉक्टर स्वाली यह काम नहीं कर सके। तब उन्होंने अपनी स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स से ही इस प्रकार का कोष प्रकट करने का अपना विचार प्रदर्शित किया और कॉन्फरन्स ने भी इस उपयोगी कार्य को अपने हाथ में लेना स्वीकार कर लिया।

कोष का कार्य कॉन्फरन्स ने अपने व्यय में करना स्वीकार कर लिया था, पर उसके निर्माण आदि की सारी व्यवस्था का कार्यभार कॉन्फरन्स ने श्री भंडारीजी को ही सौंप दिया था। शुरू में विद्वानों की सहायता तथा अन्य साधनों के अभाव में इस कार्य की सन्तोषप्रद प्रगति न हो सकी। सन् १९१६-१७ में जब भंडारीजी बम्बई गये तो वहां उनकी भेंट शतावधानी पं० मुनि श्री रतनचन्द्रजी म० से हो गई। मुनि श्री संस्कृत और प्राकृत भाषा के प्रकांड विद्वान थे। उनसे श्री भंडारीजी ने कोष-निर्माण की बात की और यह कार्य अपने हाथ में ले लेने का अनुरोध किया। मुनि श्री ने उनकी बात को स्वीकार करते हुए कोष बनाने का आश्वासन दिया। इस अवधि में भी दो वर्ष तो यों ही व्यतीत हो गये। मुनि श्री कारणवश कुछ न कर सके। लेकिन शेष तीन वर्षों में आपने अनवरत श्रम करके कोष का काम पूरा कर दिया। इतनी थोड़ी अवधि में इतना बड़ा कार्य कर देना, यह आप जैसे सामर्थ्यवान विद्वानों का ही काम था। इस कार्य में लींबडी-सम्प्रदाय के पंडित मुनि श्री उत्तमचंदजी म०, पंजाब के उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० तथा पं० श्री माधव मुनिजी म० और कच्छ आठ कोटि-सम्प्रदाय के पं० मुनि श्री देवचन्दजी स्वामी ने भी पूर्ण सहयोग दिया है। इस कोष में अर्ध मागधी के साथ २ आगमों, भाष्य, चूर्णिका आदि में आने वाले समस्त शब्दों का अर्थ दिया गया है। फिर भी यह कोष आगमों का होने से इसका नाम अर्ध-मागधी-कोष ही रखा गया है।

इस कोष के ५ भाग हैं। चार भागों मे तो आगम-साहित्य के शब्दों का संग्रह किया गया है। पांचवें भाग मे जो शब्द छूट गये, उनका और महाराष्ट्रीय तथा देशी प्राकृत-भाषा के शब्दों का भी संग्रह किया गया है जिससे यह कोष प्राकृत-भाषा का पूरा कोष हो गया है।

इस कोष मे अर्ध-मागधी, सस्कृत, गुजराती, हिंदी और अंग्रेजी, इस प्रकार पांच भाषाएं दी गई हैं। अर्ध-मागधी-कोष, ५ वें भाग के प्रकाशन मे सेठ केदारनाथजी जैन, रोहतक वाले, सोरा कोठी, दिल्ली ने लगभग २५००) रु० की सहायता प्रदान की थी।

अर्ध-मागधी कोष का पहला भाग सन् १९२३ मे, दूसरा सन् १९२७, तीसरा सन् १९३०, चौथा सन् १९३२ और पांचवां भाग सन् १९३८ मे प्रकाशित हुआ।

यह उल्लेखनीय है कि कोष के आद्य प्रेरक श्री केशरीमलजी भडारी, कोष का पहला भाग ही छपा हुआ देख सके, लेकिन उसमे भी वे मानसिक व्याधि से 'दो-शब्द' न लिख सके। सन् १९२५ मे उनका स्वर्गवास हो गया। उनके बाद उनके सुपुत्र श्री सरदारमलजी भडारी ने कोष की व्यवस्था सभाली और अपने पिता श्री का मनोरथ पूर्ण किया।

प्रस्तुत कोष के निर्माण मे शतावधानी प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० ने जो श्रम उठाया वह उल्लेखनीय है। यह कोष आज अर्ध-मागधी भाषा का प्रामाणिक कोष माना जाता है। इंगलेंड, फ्रांस, जर्मनी आदि कई पाश्चात्य देशों मे भी यह कोष भेजा गया है और अब भी वहां से इसकी मांग आ रही है।

जब तक यह कोष रहेगा तब तक शता० पं० रत्न श्री रत्नचन्द्रजी म० का नाम और उनका यह काम अमर बना रहेगा। पाचों भागों का मूल्य अभी २५०) रु० है।

(६) श्री जैन ट्रेनिंग-कॉलेज, बीकानेर

सन् १९२५ मे मल्कापुर अधिवेशन के समय, जो कि कॉन्फरन्स का छठा अधिवेशन था, पुनः जैन ट्रेनिंग-कॉलेज स्थापित करने का प्रस्ताव पास किया गया और कुछ फंड भी एकत्रित किया गया। कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी ने जो कि ता० ३, ४, ५ अप्रैल सन् १९२६ को बम्बई में हुई थी, ट्रेनिंग-कॉलेज इस बार तीन वर्ष के लिये बीकानेर मे चलाने का निर्णय कर उसकी सारी व्यवस्था का भार दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया को सौंप देने का तय किया। तदनुसार ता० १९-८-१९२६ को बीकानेर मे जैन-ट्रेनिंग-कॉलेज का उद्घाटन हुआ। यह उद्घाटन-समारोह बीकानेर महाराजा श्री भैरोंसिंहजी K C S I द्वारा सानद सम्पन्न हुआ। कॉलेज मे २० छात्र प्रविष्ट हुए, जिनमे से १२ गुजरात–काठियावाड़ के थे और ८ मेवाड़–मालवा के।

सुपरिन्टेन्डेन्ट के रूप मे श्री धीरजभाई के० तुरखिया की नियुक्ति की गई। कॉलेज की कमेटी इस प्रकार बनाई गई थी —

जौहरी सूरजमल लल्लुभाई बम्बई, सेठ वीरचद मेघजीभाई थोभण बम्बई, सेठ वेलजीभाई लखमशी नप्पु बम्बई, सेठ भैरोदानजी सेठिया बीकानेर, सेठ वरधभानजी पित्तलिया रतलाम, सेठ कनीरामजी बाठिया भीनासर, मेहता बुधसिंहजी वेद आबू, सेठ मोतीलालजी मूथा सतारा, सेठ सरदारमलजी भडारी इंदौर, सेठ आनदराजजी सुराना जोधपुर, सेठ दुर्लभजीभाई त्रिभुवन जौहरी जयपुर।

यह सस्था सन् १९२८ के मई मास तक बीकानेर मे रही। बाद में कॉलेज-कमेटी के सभ्यों के निर्णय से यह जयपुर आई और उसका सचालन धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई जौहरी को सौंपा। जुलाई सन् १९२८ से विद्यार्थी

जयपुर आए और कॉलेज का कार्य आरभ हुआ। ता० १५ फरवरी सन् १९३१ तक कॉलेज जयपुर रहा। बाद में अर्थाभाव की वजह से ब्यावर-गुरुकुल के साथ ही मिला दिया गया। इसकी दो टर्म्स मे अच्छे २ युवक कार्यकर्ता तैयार हुए।

ट्रेनिंग-कॉलेज मे विद्यार्थियों को न्यायतीर्थ तक अध्ययन करने की तथा सस्कृत, प्राकृत, अग्रेजी आदि भाषाओं की पूरी २ जानकारी करने की सुव्यवस्था की गई थी। ट्रेनिंग-कॉलेज को ब्यावर-गुरुकुल के साथ मिलाने से पूर्व ही ट्रेनिंग-कॉलेज के छात्र अपना २ पाठ्य-क्रम समाप्त कर चुके थे। इसके बाद जो छात्र आगे अध्ययन करना चाहते थे उन्हें मासिक छात्रवृत्ति दी जाती थी। लेकिन ट्रेनिंग-कॉलेज के रूप मे जो स्वतत्र सस्था जैन समाज में बड़े आदर के साथ चल रही थी वह १५ फरवरी सन् १९३१ मे बद कर दी गई। समाज के उत्थान मे इस कॉलेज का प्रमुख भाग रहा है क्योंकि इसी से तैयार होकर कार्यकर्ता निकले हैं जो समाज मे आज भी अपनी सेवा दे रहे हैं। प० हर्षचद्रजी दोशी, प० खुशालचन्द्रजी, प० प्रेमचन्द्रजी लोढा, प० दलसुखभाई मालवणिया, प० शातिलाल व० शेठ आदि इसी ट्रेनिंग-कॉलेज का फल है। कॉलेज की उस समय समाज मे बहुत प्रतिष्ठा थी। प० बेचरदासजी, प० मुनि श्री विद्याविजयजी आदि विद्वानों ने कॉलेज का निरीक्षण कर प्रसन्नता प्रकट की थी। छात्रों को केवल शास्त्रीय और व्यवहारिक ज्ञान ही नहीं, किन्तु भ्रमण द्वारा भी उन्हें विशेष ज्ञान कराया जाता था।

दुर्भाग्य से यदि यह सस्था बद न हुई होती तो आज समाज मे कार्यकर्ताओं की कमी न होती। सस्थाएं तो उसके बाद कई खुलीं और बद हुई, परन्तु इस जैसी सस्था का प्रादुर्भाव आज तक न हुआ। आज ऐसी सस्था की नितात आवश्यकता है।

(७) श्री श्वे० स्था० जैन-विद्यालय, पूना

सन् १९२७ में कॉन्फरन्स का ७ वां अधिवेशन बम्बई मे हुआ था, उस समय इस विद्यालय की शुरुआत हुई। शुद्ध जल-वायु और उच्च शिक्षा की सुव्यवस्था होने से पूना स्थल पसन्द किया गया। तब से सन् १९४० तक यह विद्यालय पूना में किराये के मकान में ही चलता रहा। सन् १९४१ मे जब कॉन्फरन्स का घाटकोपर में अधिवेशन हुआ तो उसमें पूना-विद्यालय के लिये स्वतन्त्र मकान बनवाने का निर्णय किया गया। लेकिन उस समय लड़ाई के कारण कार्यारम्भ न हो सका। घाटकोपर-अधिवेशन मे इसके लिये ५० हजार रुपयों का फण्ड भी हुआ था। सन् १९४६ मे मकान का कार्य प्रारम्भ किया गया। श्री टी० जी० शाह इस कार्य के लिये बम्बई से पूना जा कर रहे। परन्तु महगाई की वजह से खर्च अधिक होने से ५० हजार रु० व्यय हो जाने पर भी ६० हजार रुपयों की और आवश्यकता प्रतीत हुई। अतः ता० १५ जून सन् १९४७ की कॉन्फरन्स की जनरल कमेटी में यह प्रश्न उपस्थित किया गया। पूना विश्व-विद्यालय की कमेटी ने टूटती रकम के लिये यह प्रस्ताव किया कि "कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी और बम्बई हाई-कोर्ट की स्वीकृति लेकर पूना-विद्यालय की पूरी मिल्कियत जैन एज्युकेशन-सोसायटी बम्बई को इस शर्त पर सौंप दिया जाय कि पूना विद्यालय का भवन पूरा करने मे जो कुछ भी टोटा रहे और इसके सम्बन्ध मे पूना विद्यालय की कमेटी ने जो कुछ देना किया हो, जो सब मिला कर ६०,०००) रु० के लगभग होगा, उसे जैन एज्युकेशन-सोसायटी भरपाई करे और पूना-विद्यालय अभी जिस तरह से चल रहा है कम से कम उसी तरह से सोसायटी चलाती रहे।"

उपरोक्त प्रस्ताव कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी में पेश किया गया था। इसके साथ एक दूसरा प्रस्ताव भी पेश किया गया था कि यदि ऊपर का प्रस्ताव जनरल-कमेटी को मान्य न हो तो धन की तात्कालिक आव-

इस कोष के ५ भाग हैं। चार भागों मे तो आगम-साहित्य के शब्दों का संग्रह किया गया है। पांचवें भाग में जो शब्द छूट गये, उनका और महाराष्ट्रीय तथा देशी प्राकृत-भाषा के शब्दों का भी संग्रह किया गया है जिससे यह कोष प्राकृत-भाषा का पूरा कोष हो गया है।

इस कोष मे अर्ध-मागधी, सस्कृत, गुजराती, हिंदी और अंग्रेजी, इस प्रकार पांच भाषाएं दी गई हैं। अर्ध-मागधी-कोष, ५ वें भाग के प्रकाशन मे सेठ केदारनाथजी जैन, रोहतक वाले, सोरा कोठी, दिल्ली ने लगभग २५००) रु० की सहायता प्रदान की थी।

अर्ध-मागधी कोष का पहला भाग सन् १९२३ में, दूसरा सन् १९२७, तीसरा सन् १९३०, चौथा सन् १९३२ और पाचवां भाग सन् १९३८ मे प्रकाशित हुआ।

यह उल्लेखनीय है कि कोष के आद्य प्रेरक श्री केशरीमलजी भडारी, कोष का पहला भाग ही छपा हुआ देख सके, लेकिन उसमे भी वे मानसिक व्याधि से 'दो-शब्द' न लिख सके। सन् १९२५ मे उनका स्वर्गवास हो गया। उनके बाद उनके सुपुत्र श्री सरदारमलजी भडारी ने कोष की व्यवस्था सभाली और अपने पिता श्री का मनोरथ पूर्ण किया।

प्रस्तुत कोष के निर्माण मे शतावधानी प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० ने जो श्रम उठाया वह उल्लेखनीय है। यह कोष आज अर्ध-मागधी भाषा का प्रामाणिक कोष माना जाता है। इगलैड, फ्रांस, जर्मनी आदि कई पाश्चात्य देशों में भी यह कोष भेजा गया है और अब भी वहां से इसकी मांग आ रही है।

जब तक यह कोष रहेगा तब तक शता० पं० रत्न श्री रत्नचन्द्रजी म० का नाम और उनका यह काम अमर बना रहेगा। पाचों भागों का मूल्य अभी २५०) रु० है।

(६) श्री जैन ट्रेनिंग-कॉलेज, बीकानेर

सन् १९२५ मे मल्कापुर अधिवेशन के समय, जो कि कॉन्फरन्स का छठा अधिवेशन था, पुनः जैन ट्रेनिंग-कॉलेज स्थापित करने का प्रस्ताव पास किया गया और कुछ फड भी एकत्रित किया गया। कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी ने जो कि ता० ३, ४, ५ अप्रैल सन् १९२६ को बम्बई मे हुई थी, ट्रेनिंग-कॉलेज इस बार तीन वर्ष के लिये बीकानेर मे चलाने का निर्णय कर उसकी सारी व्यवस्था का भार दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया को सौंप देने का तय किया। तदनुसार ता० १९-८-१९२६ को बीकानेर मे जैन-ट्रेनिंग-कॉलेज का उद्घाटन हुआ। यह उद्घाटन-समारोह बीकानेर महाराजा श्री भैरोंसिंहजी k c s 1 द्वारा सानद सम्पन्न हुआ। कॉलेज में २० छात्र प्रविष्ट हुए, जिनमे से १२ गुजरात–काठियावाड़ के थे और ८ मेवाड़–मालवा के।

सुपरिन्टेन्डेन्ट के रूप मे श्री धीरजभाई के० तुरखिया की नियुक्ति की गई। कॉलेज की कमेटी इस प्रकार बनाई गई थी :—

जौहरी सूरजमल लल्लुभाई बम्बई, सेठ वीरचद मेघजीभाई थोभण बम्बई, सेठ वेलजीभाई शी नप्पु बम्बई, सेठ भैरोंदानजी सेठिया बीकानेर, सेठ वरधभानजी पित्तलिया रतलाम, सेठ कनीरामजी बाठिया भीनासर, मेहता बुधसिंहजी वेद आबू, सेठ मोतीलालजी मूथा सतारा, सेठ सरदारमलजी भडारी इदौर, सेठ आनदराजजी सुराना जोधपुर, सेठ दुर्लभजीभाई त्रिभुवन जौहरी जयपुर।

यह सस्था सन् १९२८ के मई मास तक बीकानेर में रही। बाद मे कॉलेज-कमेटी के सभ्यों के निर्णय से यह जयपुर आई और उसका सचालन धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई जौहरी को सौंपा। जुलाई सन् १९२८ से विद्यार्थी

जयपुर आए और कॉलेज का कार्य आरंभ हुआ। ता० १५ फरवरी सन् १६३१ तक कॉलेज जयपुर रहा। बाद मे अर्थाभाव की वजह से ब्यावर-गुरुकुल के साथ ही मिला दिया गया। इसकी दो टर्म्स मे अच्छे २ युवक कार्यकर्ता तैयार हुए।

ट्रेनिंग-कॉलेज मे विद्यार्थियों को न्यायतीर्थ तक अध्ययन करने की तथा सस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं की पूरी २ जानकारी करने की सुव्यवस्था की गई थी। ट्रेनिंग-कॉलेज को ब्यावर-गुरुकुल के साथ मिलाने से पूर्व ही ट्रेनिंग-कॉलेज के छात्र अपना २ पाठ्य-क्रम समाप्त कर चुके थे। इसके बाद जो छात्र आगे अध्ययन करना चाहते थे उन्हें मासिक छात्रवृत्ति दी जाती थी। लेकिन ट्रेनिंग-कॉलेज के रूप मे जो स्वतत्र सस्था जैन समाज में बड़े आदर के साथ चल रही थी वह १५ फरवरी सन् १६३१ मे बद कर दी गई। समाज के उत्थान मे इस कॉलेज का प्रमुख भाग रहा है क्योंकि इसी से तैयार होकर कार्यकर्ता निकले हैं जो समाज मे आज भी अपनी सेवा दे रहे हैं। प० हर्षचद्रजी दोशी, प० खुशालचन्द्रजी, प० प्रेमचन्द्रजी लोढा, पं० दलसुखभाई मालवणिया, प० शातिलाल व० शेठ आदि इसी ट्रेनिंग-कॉलेज का फल है। कॉलेज की उस समय समाज मे बहुत प्रतिष्ठा थी। पं० बेचरदासजी, प० मुनि श्री विद्याविजयजी आदि विद्वानों ने कॉलेज का निरीक्षण कर प्रसन्नता प्रकट की थी। छात्रों को केवल शास्त्रीय और व्यवहारिक ज्ञान ही नहीं, किन्तु भ्रमण द्वारा भी उन्हें विशेष ज्ञान कराया जाता था।

दुर्भाग्य से यदि यह सस्था बद न हुई होती तो आज समाज मे कार्यकर्ताओं की कमी न होती। सस्थाएं तो उसके बाद कई खुलीं और बद हुई, परन्तु इस जैसी संस्था का प्रादुर्भाव आज तक न हुआ। आज ऐसी सस्था की नितात आवश्यकता है।

(७) श्री श्वे० स्था० जैन-विद्यालय, पूना

सन् १६२७ में कॉन्फरन्स का ७ वा अधिवेशन बम्बई मे हुआ था, उस समय इस विद्यालय की शुरुआत हुई। शुद्ध जल-वायु और उच्च शिक्षा की सुव्यवस्था होने से पूना स्थल पसन्द किया गया। तब से सन् १६४० तक यह विद्यालय पूना मे किराये के मकान मे ही चलता रहा। सन् १६४१ मे जब कॉन्फरन्स का घाटकोपर में अधिवेशन हुआ तो उसमे पूना-विद्यालय के लिये स्वतन्त्र मकान बनवाने का निर्णय किया गया। लेकिन उस समय लड़ाई के कारण कार्यारम्भ न हो सका। घाटकोपर-अधिवेशन मे इसके लिये ५० हजार रुपयों का फण्ड भी हुआ था। सन् १६४६ में मकान का कार्य प्रारम्भ किया गया। श्री टी० जी० शाह इस कार्य के लिये बम्बई से पूना जा कर रहे। परन्तु महगाई की वजह से खर्च अधिक होने से ५० हजार रु० व्यय हो जाने पर भी ६० हजार रूपयों की और आवश्यकता प्रतीत हुई। अतः ता० १५ जून सन् १६४७ की कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी मे यह प्रश्न उपस्थित किया गया। पूना विश्व-विद्यालय की कमेटी ने टूटती रकम के लिये यह प्रस्ताव किया कि "कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी और बम्बई हाई-कोर्ट की स्वीकृति लेकर पूना-विद्यालय की पूरी मिल्कियत जैन एज्युकेशन-सोसायटी बम्बई को इस शर्त पर सौंप दिया जाय कि पूना विद्यालय का भवन पूरा करने मे जो कुछ भी टोटा रहे और इसके सम्बन्ध मे पूना विद्यालय की कमेटी ने जो कुछ देना किया हो, जो सब मिला कर ६०,०००) रु० के लगभग होगा, उसे जैन एज्युकेशन-सोसायटी भरपाई करे और पूना-विद्यालय अभी जिस तरह से चल रहा है कम से कम उसी तरह से सोसायटी चलाती रहे।"

उपरोक्त प्रस्ताव कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी में पेश किया गया था। इसके साथ एक दूसरा प्रस्ताव भी पेश किया गया था कि यदि ऊपर का प्रस्ताव जनरल-कमेटी को मान्य न हो तो धन की तात्कालिक आव-

श्यकता के कारण कॉन्फरन्स फंड मे पूना-विद्यालय को तीन टके के ब्याज से १२ मास में भर देने की शर्त पर ३० हजार रुपयों की लोन दी जाय।

अन्त मे काफी विचार-विमर्श के बाद पूना विद्यालय को ३० हजार रु० का लोन देने का प्रस्ताव पास किया गया।

इस तरह की सहायता विद्यालय का नया मकान अक्टूबर सन् १९४७ मे जाकर एक मजिला बन पाया, पर उस पर ८५०००) रु० का कर्ज हो गया, जिसे एकत्रित कर चुकाना कठिन प्रतीत होने लगा। अतः पुनः ४ अप्रैल सन् १९४८ की कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी मे जो कि बम्बई मे हुई थी, विद्यालय को ऐज्युकेशन-सोसायटी बम्बई को सौंप देने का बोर्डिंग-कमेटी ने प्रस्ताव किया। तत्कालीन परिस्थिति मे इतना रुपया एकत्रित करना कठिन था और किसी ने भी इसकी जिम्मेवरी लेना स्वीकार नहीं किया फलत. जनरल-कमेटी पूना-बोर्डिंग-कमेटी का वह प्रस्ताव बहुमत से स्वीकृत हो गया। प्रस्ताव इस प्रकार है:—

(२) पूना बोर्डिंग कमेटी ने जैन एज्युकेशन-सोसायटी को पूना-बोर्डिंग सौंप देने का जो नीचे मूजब प्रस्ताव किया है उसे मजूर किया जाता है और तदनुसार पूना-बोडिंग सोसायटी को सौंप देने का निर्णय किया जाता है।

पूना बोर्डिंग कमेटी का प्रस्ताव —कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी और बम्बई हाई-कोर्ट की मजूरी लेकर पूना विद्यालय की तमाम मिल्कियत स्था० जैन एज्युकेशन सोसायटी, बम्बई को निम्न शर्तों पर सौंप देना—

(१) मकान का काम सोसायटी पूरा करे। (२) विद्यालय का जो देना है वह सोसायटी दे। (३) पूना विद्यालय अभी जिस प्रकार चलता है कम से कम उसी प्रकार सोसायटी चलावे। (४) कॉन्फरन्स के अधिवेशन की मजूरी बिना विद्यालय को सोसायटी स्थानान्तर नही करे और न बन्द करे।

(५) विद्यालय फड में जिसने एक साथ १०००) रु० अथवा इससे अधिक रकम दी हो और जो सोसायटी का सभ्य न हो उसको सोसायटी के नियमानुसार सभ्य मानें।

कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी और हाई-कोर्ट की मजूरी मिलने पर इस प्रस्ताव पर अमल करना और विद्यालय की मिल्कियत सोसायटी के नाम पर करने मे जो कोई दस्तावेज लिखना पडे या दूसरी कोई लिखावट लिखनी पडे तो विद्यालय-ट्रस्टियों को इसकी सत्ता दी जाती है।

इस विद्यालय का मकान बनाने मे श्री टी० जी० शाह, स्थानीय मत्री श्री परशुरामजी चोरडिया, इ जीनियर, श्री शकरलालजी पोकरना और श्री नवलमलजी फिरोदिया ने काफी दिलचस्पी ली।

जनरल-कमेटी के एक प्रस्तावानुसार पूना विद्यालय स्था० जैन एज्युकेशन सोसायटी, बम्बई को सौंप दिया गया, जिसका सचालन अभी सोसायटी ही कर रही है।

इस विद्यालय मे मैट्रिक से ऊपर के छात्र भरती किये जाते है। अब तक कई विद्यार्थी यहां से वकील, डॉक्टर और ग्रेजुएट होकर निकल चुके हैं।

(८) श्री श्राविकाश्रम की स्थापना

सन् १९२६ मे कॉन्फरन्स का सातवा अधिवेशन बम्बई मे हुआ था। उसमे सर्व प्रथम श्राविकाश्रम की स्थापना करने का एक प्रस्ताव पास किया गया और उसी समय अधिवेशन के प्रमुख दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया ने एक हजार रुपये प्रदान कर इस फड की भी शुरुआत कर दी। धीरे धीरे यह फड बढ़ता गया और सन

१६४७ तक लगभग ११ हजार रुपये हो गये। इस बीच मे श्राविकाश्रम की स्वतन्त्र व्यवस्था न हो सकी। लेकिन जो बहिनें पढना चाहती थी उन्हें बम्बई स्थित तारदेव मे चलने वाली दिगम्बर जैन श्राविकाश्रम मे छात्रवृत्ति देकर कॉन्फरन्स व्यवस्था कर देती थी। इस तरह इस फड का उपयोग केवल छात्रवृत्ति देने तक ही सीमित रहा।

ता० ३-४ अप्रैल सन् १६४८ को बम्बई मे कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी हुई, उसमे पुनः श्राविकाश्रम के लिये विचारणा की गई और उसकी आवश्यकता स्वीकार करते हुए इसके लिये योग्य प्रयत्न करने के लिए निम्न भाई-बहिनों की एक समिति बनाई गई। श्राविकाश्रम स्थापना-समिति निम्न प्रकार है:—

श्री केशरबेन अमृतलाल झवेरी, श्री चचलबेन टी० जी० शाह, श्री लीलावतीबेन कामदार, श्री फूलकुंवर-बेन चोरडिया, श्री रभाबेन गांधी, श्री विद्याबेन शाह, श्री कमलाबेन वसा, श्री चिमनलाल चकुभाई शाह, श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह, श्री चुनीलाल कामदार, श्री न्यालचद मूलचद शेठ, श्री बचुभाई प्रेमजी कोठारी श्री टी०-जी० शाह, श्री चुनीलाल रायचद अजमेरा।

पुराना फड बढाने के लिये कोशिश शुरु की गई पर हिन्दुस्तान का विभाजन हो जाने से निर्वासितों की व्यवस्था आदि कार्य पैदा हो गये जिससे श्राविकाश्रम-फड की वृद्धि न की जा सकी।

सन् १६४८ के दिसम्बर मास मे कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी हुई। उसमे पुनः श्राविकाश्रम की आवश्यकता का प्रस्ताव स्वीकार किया गया और उसके लिये आर्थिक सहयोग देने की समाज से प्रार्थना की गई।

ब्यावर की यह जनरल-कमेटी महत्त्वपूर्ण थी। सघ ऐक्य योजना भी इसी कमेटी मे तैयार हुई थी। समाज के कई अग्रगण्य सज्जन इस कमेटी मे उपस्थित हुए थे। वातावरण मे कुछ जोश आया हुआ था। अतः श्राविकाश्रम के इस प्रस्ताव की प्रस्ताविका श्रीमती चचल बेन शाह और लीलाबेन कामदार ने उसी समय यह प्रतिज्ञा ग्रहण की कि जब तक ५००००) रु० पूरे न होंगे तब तक हम बम्बई मे पैर नही रखेगी। इन बहिनों की प्रतिज्ञा सुन कर श्री टी० जी० शाह के हृदय मे भी जोश उमड़ आया और उन्होने भी 'जब तक इस फड मे एक लाख रुपय न होंगे तब तक दूध पीने का त्याग कर दिया।' श्राविकाश्रम के लिये की गई इस त्रिपुटी की प्रतिज्ञाओ का उस समय सभा पर अच्छा असर हुआ और जैन गुरुकुल-ब्यावर का वार्षिक महोत्सव होने से उसी मीटिंग मे ८०००) रु० का फड भी हो गया।

ब्यावर से इस त्रिपुटी का प्रवास प्रारम्भ हुआ। क्रमशः उन्होने पाली, अजमेर, उदयपुर, चित्तौड, निंबाहेडा, मदसौर, रतलाम, जावरा, खाचरौद, इन्दौर, उज्जैन, अहमदाबाद, खभात, पालनपुर दिल्ली, जयपुर पूना आदि का प्रवास किया और श्राविकाश्रम के लिये रुपया एकत्रित किया। श्री चचलबेन और लीलाबेन की प्रतिज्ञा सेठ आनन्दराजजी सुराना के प्रयत्न से दिल्ली मे आकर पूर्ण हुई। श्री टी० जी० शाह की प्रतिज्ञा सेठ रामजी भाई हसराज कामाणी, बम्बई ने, ११,१११) रु० देने की स्वीकृति देकर पूर्ण कराई। ता० २८-२-१६५० तक इस फड मे १,१४२५१) रु०-१० आ०-६ पा० एकत्रित हुए।

इसके सिवाय दो हजार गज जमीन घाटकोपर मे डॉ० रामजी भाई के सुपुत्र श्री चुनीलाल भाई ने श्राविकाश्रम को भेट प्रदान की है, उसकी कीमत २० हजार रु० के लगभग है। किन्तु यह जमीन टाउन प्लेनिग स्कीम मे होने से अभी तात्कालिक इसका उपयोग नहीं हो सकता है। ता० २०-८-४६ को घाटकोपर मे स्टेशन के बिलकुल पास ही २५ सौ वर्ग गज जमीन वाला दो मजिला बना बनाया शेठ वरजीवनदास त्रिभोवनदास नेमचद का बगला ८५ हजार रु० में खरीदा गया। इस मकान मे किरायेदार रहने से इसका उपयोग भी श्राविकाश्रम के

लिये नहीं हो सकता था अतः श्राविकाश्रम व्यवस्थापक-समिति ने इसके ऊपर एक और मञ्जिल बनाने का तय किया। २४-५-५३ को यह कार्य आरम्भ हुआ जो ता० ७४-६-५३ को पूरा हुआ। इस असे मे बम्बई में श्री टी० जी० शाह जो इस समिति के उत्साही मत्री हैं, ने पर्यू षण पर्व में लगभग १० हजार रुपए का फड एकत्रित किया। फुटकर सहायता भी समय-समय पर कॉन्फरन्स के प्रचारकों द्वारा आती रहती है। लेकिन अब इस फड में मकान आदि बना लेने पर कुछ शेष नही रहता।

श्राविकाश्रम शुरु करने के लिये आवश्यक सामान तथा हुनर-उद्योग के साधन बसाने के लिये २५ हज़ार रुपयों की आवश्यकता है। श्राविकाश्रम व्यवस्थापक-समिति इसके लिये प्रयत्नशील है।

गत विजयादशमी (स० २०१२ गु० २०११) आसौज शु० १० से श्राविकाश्रम प्रारम्भ कर दिया है। सख्या मे श्राविकायें इसका लाभ लेवें यह जरूरी है।

(६) श्री पंजाब-सिध महायता-कार्य

देश के स्वतत्र होते ही पजाब पर जो मुसीबत आई उससे हमारे जैनी भाइयों को भी अवर्णनीय कठिनाइयों का मुकाबला करना पडा। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के विभाजन से पजाब के कई शहरों पर जहां कि हमारे जैनी भाई काफी सख्या मे रहते थे, मुसीबत का पहाड टूट पडा। सितम्बर सन् १९४७ मे कॉन्फरन्स पर निराश्रित भाइयों के लगातार पत्र, तार और सदेश आने शुरु हो गये और इस विषम-स्थिति मे वे कॉन्फरन्स से यथाशक्य सहायता की मांग करने लगे। कॉन्फरन्स ने इस विकट प्रश्न को अपने हाथ में लेने का निर्णय किया। रावलपिंडी मे अपने १२०० भाई फसे हुए थे, अत सर्व प्रथम कॉन्फरन्स ने वहा का ही प्रश्न अपने हाथ में लिया। पजाब-सिंध निराश्रित सहायता फड की शुरुआत करते हुए सर्व प्रथम कॉन्फरन्स ने १००१) रु० प्रदान किये। बम्बई सकल श्री सघ ने भी १००१) रु० प्रदान कर इस फड को आगे बढ़ाया। 'जैन प्रकाश, मे इसकी जाहिरात प्रकट कर सहयोग देने की अपील की गई। फलत' समस्त समाज ने अपना लक्ष्य इस ओर केन्द्रित किया और शक्य सहयोग प्रदान करना आरभ किया। जोधपुर, सैलाना, मन्दसौर, ब्यावर, कुशलगढ, डग आदि २ शहरों के श्रीसघों ने निराश्रितों को यथोचित तादाद में अपने यहां बसाने की इच्छा भी प्रकट की। इस तरह यह कार्य शीघ्रता पूर्वक चलने लगा।

रावलपिंडी के जैनों को बचाने के लिये सर्व प्रथम हवाई जहाज भेजने की कठिनाई कॉन्फरन्स के सम्मुख खड़ी हुई। क्योंकि इसके बिना और कोई साधन नहीं था। इसके साथ २ फौजी सिपाहियों की समस्या भी थी। क्योंकि रावलपिंडी शहर से हवाई स्टेशन लगभग २-३ मील की दूरी पर है, जहां पर बिना सिपाहियों की सरक्षणता के जाना खतरनाक था। अत' इसके लिये ता० २-१०-४७ को कॉन्फरन्स के मत्री श्री टी० जी० शाह दिल्ली गये। वहां उन्होंने बहुत प्रयत्न किये पर फौजी सिपाहियों की व्यवस्था न हो सकी। उधर निराश्रित भाइयों को बचाने की नितान्त आवश्यकता थी अतः कॉन्फरन्स ने अपना हवाई जहाज भेजने का निर्णय किया। ता० १८—१०—१९४७ को पहला विमान श्री रोशनलालजी जैन और श्री मुनीन्द्रकुमारजी जैन की संरक्षणता में भेजा गया था इसके बाद दूसरा चार्टर विमान ता० २६—१०—१९४७ को श्री मुनीद्रकुमारजी जन और श्री नौतमलालजी देसाई की सरक्षणता मे भेजा गया था। इन दोनों विमानों में कुल ५२ व्यक्तियों को रावलपिंडी से सही सलामत जोधपुर पहुँचाया गया। इन दोनों विमानों को भेजने में २२ हजार रु० खर्च हुए थे।

इसके बाद तीसरे विमान की योजना की जा रही थी, कि परिस्थिति ने पल्टा खाया और काश्मीर का प्रश्न जटिल बन गया। हमारी सरकार ने काश्मीर को तात्कालिक मदद पहुँचाने के लिये अपने सब विमान रोक

लिये। फल स्वरूप कॉन्फरन्स का यह कार्य स्थगित हो गया। लेकिन इसके कुछ दिनों बाद ही हमारी राष्ट्रीय सरकार ने पाकिस्तानी इलाकों से सभी निराश्रित भाई-बहिनों को सकुशल हिंद मे पहुँचा दिया। रावलपिंडी के १२०० भाई-बहिनों मे से शुरु मे जब वहां दगा शुरु हुआ था तब ४-५ भाई मारे गये थे, शेष सभी वहां से हिंद मे आ गये। यह कार्य समाप्त हो जाने पर कॉन्फरन्स ने अपना ध्यान सहायता कार्य की ओर केन्द्रित किया और निम्न स्थानों पर सहायता केन्द्र स्थापित किये:—

दिल्ली, अमृतसर, अम्बाला, लुधियाना, जालंधर, और होशियारपुर।

इन सहायता केन्द्रों द्वारा शरणार्थी जैन भाइयों को खाने-पीने, रहने और वस्त्र आदि की तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने का तय किया गया। शरणार्थी भाई अपने पैरों पर खड़े रह सकें इसके लिये उन्हें ५००) रु० तक का लोन देने का भी तय किया।

पजाब की तरह जनवरी सन् १९४८ मे कराची मे भी दगे फसाद हुए। कॉन्फरन्स ने करांची-सघ को भी आश्वासन दिया और शक्य सहायता करने की तत्परता दिखाई। परन्तु करांची के हमारे भाई पहले ही सतर्क हो चुके थे अत विशेष हानि नहीं उठानी पड़ी। फिर भी जिन २ भाइयों की मांग आई उन्हे कॉन्फरन्स ने लोन आदि देकर सहायता प्रदान की।

यह सब फड लगभग पौने दो लाख रुपयों का हुआ था। उसमे से १,५००००) रु० तो एरोप्लेन, रेल, मोटर, आदि वाहनों द्वारा अपने भाइयों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने और लोन तथा पुनर्वास के कार्य मे खर्च किया गया।

शेष रुपया सादड़ी अधिवेशन के आदेशानुसार स्वधर्मी सहायक-फड मे ले जाया गया, जिसमे से आज भी गरीब भाई-बहिनों को सहायता दी जाती है।

इस कार्य मे दिल्ली केन्द्र के व्यवस्थापक सेठ आनदराजजी सुराणा ने अत्यधिक श्रम और उत्साह से कार्य किया। अमृतसर के श्री हरजसरायजी जैन ने भी काफी परिश्रम किया और इसमे अपना सहयोग दिया।

यह उल्लेखनीय है कि इस फड मे से मुख्यत स्थानकवासी जैन भाइयों के अतिरिक्त श्वेताम्बर, दिगम्बर जैन भाइयों को व जैनेतर भाइयों को भी विना किसी भेदभाव के सहायता दी गई। और अब भी दी जाती है।

विभाजन के समय तो प० नेहरू, डॉ० जानमथाई, श्रीमती जानमथाई और उस समय के पुनर्वास-मत्री श्री मोहनलाल सक्सेना की विशेष सूचनाओं से भी कई जैनेतर भाइयों को सहायता दी गई। उस समय हमारे ये नेता कॉन्फरन्स के इस कार्य से वडे प्रभावित हुए थे।

कॉन्फरन्स के विगत इतिहास मे यह पहला रचनात्मक कार्य था जिसने कॉन्फरन्स की प्रतिभा वढाई ही नही, पर लोगों के दिलों मे आदर्श भावना का भी निर्माण किया। इस कार्य का प्रभाव समाज मे अच्छा पडा। फलत कॉन्फरन्स के प्रति लोगों की श्रद्धा जागृत हुई और वह कुछ कर सकने मे समर्थ भी हुई।

(१०) पुष्पावेन वीरचंद मोहनलाल वोरा विद्योत्तेजक-फण्ड

चूडा निवासी श्री वीरचद मोहनलाल वोरा की ओर से जैन बालक-बालिकाओं के लिये कॉन्फरन्स को ५ हजार रुपयों की भेंट मिली है। अत. इसी नाम से प्रतिवर्ष मैट्रिक से नीचे अभ्यास करने वाले छात्रों को प्रतिवर्ष ५००) रुपये छात्र वृत्तियों मे दिये जाते हैं। श्री वीरचद भाई व्यापारार्थ बम्बई आये थे, जहां उन्होंने

अपने श्रम से अच्छी प्रगति की। उनकी इकलौती पुत्री श्री पुष्पाबेन जिसे कि उन्होंने मेट्रिक तक अभ्यास कराया था, शादी होने से कुछ ही मास बाद स्वर्गवासी हो गई, जिसका उन्हें बडा दु:ख पहुँचा था। अपनी उसी प्रिय पुत्री की अमर यादगार में वे कुछ रकम शिक्षण-कार्य मे खर्च करना चाहते थे अत' उन्होंने अपनी यह भावना कॉन्फरन्स के मत्री श्री खीमचदभाई वोरा से प्रकट की। श्री वोराजी ने उन्हें 'पढम नाण तओ दया' की उक्ति याद दिलाई और श्री वीरचद भाई ने उनके कथनानुसार जैन छात्रों को स्कूल फीस और पाठ्य-पुस्तको के लिये ५ हजार रु० की भेंट दी। सन् १९४६ से इस खाते मे से प्रतिवर्ष ५००) रु० की छात्रवृत्ति दी जाती है। अब इस फड मे लगभग ५००) रु० ही शेष रहे है। जबकि आज इस फड की उपयोगिता बहुत है। क्योंकि कई गरीब छात्रों को इससे सहायता मिलती है अत किसी भी तरह यह फड चालू रहे यही हमारा प्रयत्न होना चाहिये।

(११) श्री आगम–प्रकाशन

हसराज जिनागम विद्या-प्रचारक फड'–सन् १९३३ मे श्री हसराजभाई लखमीचन्द (धारीवाल) ने जिनागमों के सम्पादन और शिक्षण के लिये कॉन्फरन्स को १५ हजार रुपये प्रदान किये थे। कॉन्फरन्स के नवमे अजमेर-अधिवेशन में प्रस्ताव न० ११ द्वारा उनकी यह योजना स्वीकार करली गई थी। इस फड मे से उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, सूत्रकृताग और आचारांग इन चार सूत्रों का हिन्दी मे प्रकाशन कराया गया। इसके बाद सन् १९४९ में जयपुर की जनरल-कमेटी में आगम-प्रकाशन के लिये पुन' प्रस्ताव पास किया गया और उसकी योग्य कार्यवाही करने के लिये कॉन्फरन्स के मत्री-मडल को निर्देश दिया गया था। तदनुसार ता०–२९–१२–४९ को बम्बई मे एक मीटिंग (मत्री-मडल की) की गई, जिसमे इस पर गभीर विचार-विनिमय कर आगम सशोधन और प्रकाशन कार्य शीघ्र प्रारभ करने के लिये विज्ञ मुनिराजों का सम्पादक-मडल और पडित मुनिवृ द एव विद्वानों का सहकारी-मडल बनाने का एव भाई श्री धीरजलाल के० तुरखिया को मत्रीत्व पद पर नियुक्त कर ब्यावर मे कार्यालय रखने का तय किया गया। आगम-सम्पादक-समिति निम्न प्रकार है.—

पूज्य श्री आत्मारामजी म०, पूज्य श्री गणेशीलालजी म०, पूज्य श्री आनदऋषिजी म०, पूज्य श्री हस्तीमलजी म०, पूज्य श्री माणकचदजी म०, पूज्य श्री नागचदजी म०, गणि श्री उदयचदजी म०, प० मुनि श्री चौथमलजी म०, प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म०, पं० मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म०, उपाध्याय श्री अमरचदजी म०, प० मुनि श्री पुरुषोत्तमजी म०, प० मुनि श्री पन्नालालजी म०, प० मुनि श्री नानचदजी म०, प० मुनि श्री मिश्रीमलजी महराज।

सहकारी मडल –(विद्वद मुनिवर्ग) युवाचार्य श्री शेषमलजी म०, प० मुनि श्री गब्बूलालजी म०, प० मुनि श्री हेमचन्द्रजी म०, प० मुनि श्री सिरेमलजी म०, प० मुनि श्री रत्नचन्दजी म०, आत्मार्थी मुनि श्री मोहनऋषिजी म०, प० मुनि श्री पूनमचदजी म०, प० मुनि श्री कन्हैयालालजी म०, (विद्वद्वर्ग) प० बेचरदासजी, प्रो० बनारसीदासजी M A Ph D, प्रो० अमृतलाल स० गोपाणी M. A Ph D, श्री अमोलखचदजी एन० सुरपुरिया M A LL B प कृष्णचन्द्रजी शास्त्री, प० पूर्णचन्द्रजी दक, राव साहब मणिलाल शाह, श्री प्राणजीवन मोरारजी शाह, श्री झवेरचद जादवजी, कामदार।

स्व० हसराजभाई ने आगम प्रकाशन के लिये १५०००) रु० प्रदान किये थे उसी से इस कार्य की शुरुआत हो सकी। उनका फोटू हर एक प्रकाशन में देने का कॉन्फरन्स ने स्वीकार किया। तदनुसार अब तक के पूर्व प्रकाशनों में उनका चित्र दिया गया है।

ता० १०-८-१९४८ के दिन मत्री-मडल की बैठक मे किसी भी व्यक्ति का फोटू आगम-बत्तीसी मे प्रकट न किया जाय, ऐसा निर्णय किया गया था। परन्तु स्व० हसराजभाई के साथ मे की गई उपर्युक्त शर्त के बाबत क्या किया जाय ? यह प्रश्न मत्री-मडल के सामने खड़ा हुआ। इस बारे मे मत्री मडल श्रीमान् रामजीभाई कामाणी से मिला और वार्तालाप किया। श्री कामाणीजी ने सहर्ष अपनी शर्त वापिस खींच ली और अपने पिता द्वारा शुरु किये गये इस ज्ञान-यज्ञ मे १० हजार रु० की और अधिक सहायता देने की स्वीकृति प्रदान की।

ब्यावर मे यह कार्य चलता रहा। ता० २४-२५-२६ दिसम्बर सन् १९४९ को मद्रास मे कॉन्फरन्स का ग्यारहवां अधिवेशन हुआ, उसमे प्रस्ताव न १५ द्वारा इस कार्य के प्रति सन्तोष व्यक्त किया गया। प्रकाशन कार्य प्रारभ होने के पहिले पूज्य श्री आत्मारामजी म०, पूज्य श्री आनदऋषिजी म०, पूज्य श्री हस्तीमलजी म० और प० मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म० को बताकर बहुमत से मिलने वाले सशोधनों सहित इसे प्रकाशित करने का निर्णय किया गया।

आर्थिक व्यवस्था के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस को निम्नोक्त सूचनाऐ भी की गई —(क) आगम-प्रकाशन के लिये एक लाख रु० तक का फड करे। (ख) आगम प्रेमी श्रीमानों से एक आगम-प्रकाशन के खर्च का वचन ले। (ग) आगम-बत्तीसी की ग्राहक-सख्या अधिक से अधिक प्राप्त करने का प्रयास करे।

आगम-प्रकाशन-समिति का ब्यावर मे निम्न कार्य हुआ.—

(१) 'जिनागम प्र० की योजना' प्रो० बनारसीदासजी M A Ph D को रखकर हिन्दी तथा गुजराती मे प्रकाशित कराई गयी।

(२) स्था० जैन भडारों (लींबडी, जेतपुर, बीकानेर, पाटण आदि) से आवश्यक सामग्री एकत्रित करके विद्वद् मुनिवरों एव विद्वानों से आगमोदय-समिति के सूत्रों पर सशोधन करवाया। प० मुनि श्री हस्तीमलजी म० सा०, प० मुनि श्री आनद ऋषिजी म० सा०,प० मुनि श्री कन्हैयालालजी म० सा०, प० चपक मुनिजी म० सा०, प० कवि श्री नानचदजी म० सा०, प० मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म० सा० आदि ने सशोधन कार्य मे सहयोग दिया था। आगम-वारिधि प० मुनि श्री आत्मारामजी म० सा० अन्तिम निर्णायक रहे।

(३) आगमों के पद्य-विभाग की सस्कृत-छाया तैयार कराई गई ।

(४) पारिभाषिक शब्द-कोष हिन्दी व गुजराती मे तैयार किया गया।

(५) प्रथम ५ अग-सूत्रों का शब्द-अर्थ हिन्दी व गुजराती मे तैयार किया गया।

तत्पश्चात् प्रकाशन कार्य प्रारभ करना था। आचरांगादि मे आवश्यक टिप्पणियां भी तैयार करा ली गई थीं किंतु इसी बीच साधु-सम्मेलन सादडी के समय साहित्य-मत्री आदि की व्यवस्था बदली। उस समय विद्वान् प० मुनि श्री पुण्य विजयजी म० भी वहीं थे जो जेसलमेर के पुराने भडार के आधार पर आगमों के मूल पाठों का भी सशोधन कर रहे थे। श्वे० आगम-साहित्य के मूल-पाठ एकसा हों ऐसा विचार होने से तबतक के लिये प्रकाशन-कार्य स्थगित किया गया ।

आगम प्रेमी श्रीमानों ने अपनी तरफ से अमुक २ आगम प्रकाशित करने के और सूत्र-बत्तीसी के पहिले से ग्राहक बनने के वचन भी दे दिये थे। भीनासर साधु-सम्मेलन में इस विषय मे विचार होगा।

(१२) धार्मिक पाठ्य-पुस्तकें

कॉन्फरन्स के घाटकोपर अधिवेशन मे प्रस्ताव न० ४ से धार्मिक शिक्षण समिति बनाई गई प्रस्ताव न० ४ निम्न प्रकार है :—

प्रस्ताव ४—(धार्मिक शिक्षण-समिति की स्थापना)

यह कॉन्फरन्स मानता है कि जैन धर्म के सस्कारों का सिंचन करनेवाला धार्मिक-शिक्षण हमारी प्रगति के लिये आवश्यक है। अतः चालू शिक्षण मे जो कि निर्जीव और सत्वहीन है, परिवर्तन कर उसे हृदय-स्पर्शी और जीवित शिक्षण बनाने की नितांत आवश्यकता है। इसके लिये शिक्षण-क्रम और पाठय-क्रम तैयार करने के लिये तथा समस्त हिंद मे एक ही क्रम से धार्मिक-शिक्षण दिया जाय तथा परीक्षा ली जाय, इसकी एक योजना बनाने के लिये निम्नोक्त भाइयों की को-ऑप्ट करने की सत्ता के साथ एक धार्मिक-शिक्षण समिति बनाई जाती है। इस शिक्षण समिति की योजना मे जैन-दर्शन का गहरा अभ्यास करने वालों के लिये भी अभ्यास-क्रम का प्रबन्ध किया जायेगा :—

श्रीमान् मोती जी मूथा सतारा प्रमुख, श्रीमान् खुशालभाई खेंगार बम्बई, श्रीमान् जेठमलजी सेठिया बीकानेर, श्रीमान् चिमनलाल पोपटलाल शाह बम्बई, श्रीमान् मोतीलालजी श्रीश्रीमाल रतलाम, श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्रीमान् ला० हरजसरायजी जैन अमृतसर, श्रीमान् केशवलाल अबालाल खभात, श्रीमान् चुन्नीलाल नागजी वोरा राजकोट, श्रीमान् माणकचदजी किशनदासजी मुथा नगर, श्रीमान् धीरजलाल के० तुरखिया मन्त्री ब्यावर।

उक्त प्रस्ताव के आधार पर धार्मिक ज्ञान सस्थाओ मे और जैन छात्रालयों तथा विद्यालयों मे उपयोगी हो इसके लिए एक ही सरल पद्धति से सर्वांगीण धार्मिक-शिक्षण देने योग्य जैन पाठावली (सीरीज) तैयार करने का कार्य आरभ किया गया। विद्वानों की उपसमिति बनाई गई, पाठ्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित की गई और जैन पाठावली के सात भाग बनाने का निर्णय किया गया।

इस समिति का कार्यालय भी मानद् मत्री श्री धीरजलाल के० तुरखिया के पास ही जैन गुरुकुल, ब्यावर मे रखा था। कॉन्फरन्स ऑफिस के सक्रिय सहयोग से मत्रीजी ने उत्साह पूर्वक उक्त कार्य प्रारभ किया। समाज के विद्वानों के सहयोग से जैन पाठावली के सात भागों का मजमून तैयार किया गया। इसमे श्रीमान् सतबालजी का परिश्रम मुख्य है। प० नटवरलाल क० शाह, न्यायतीर्थ का सहयोग, प्रो० अमृतलाल स० गोपाणी M A Ph. D का सशोधित कॉपियॉ तैयार करने का प्रयत्न, प० शोभाचद्रजी भारिल्ल का हिन्दी अनुवादन, प० सौभाग्यचद्रजी गो० तुरखिया के लेखन कार्य आदि २ सहयोग से जैन-पाठावली का कार्य सम्पन्न हुआ। हिन्दी भाषा मे ५ भाग और गुजराती भाषा मे ५ भाग प्रकाशित कराये गये। गुजराती प्रूफ सशोधन और छपाई मे श्रीमान् चुन्नीलाल वर्धमान शाह, अहमदाबाद ने सेवा भाव से अच्छा सहयोग दिया।

प्रकाशन खर्च में श्रीमान् हस्तीमलजी सा० देवडा, (बगडी निवासी) सिकन्द्राबाद वालों ने रू० ५०००) की उदार सहायता दी जिससे प्रकाशन कार्य शीघ्रता से हुआ।

जैन पाठावली के प्रत्येक भाग मे ४-४ विभाग है। (१) मूलपाठ, (२) तत्त्व विभाग, (३) कथा-विभाग और (४) काव्य-विभाग। प्रथम चार भाग पाठावली मे नैतिक-शिक्षण के साथ २ सामायिक, प्रति-क्रमण मूल, विस्तृत अर्थ, भावार्थ, समझ आदि। तत्त्वज्ञान मे नव तत्त्व, षट्काल, षट्द्रव्य, २५ बोल, कर्म-स्वरूप आदि क्रमशः सक्षिप्त और विस्तृत बोधप्रद पद्धति से दिया है। रोचक शैली से धार्मिक कथाए और काव्य दिये हैं।

जैन पाठावली पांचवें भाग मे सक्षिप्त प्राकृत व्याकरण दिया है और बाद में आगमों के छोटे २ सूत्र-

मूल विभाग मे, क्रमशः उच्च तत्त्वज्ञान, सक्षिप्त जैन इतिहास कथा विभाग में तथा आगमों के काव्यमय सवाद काव्य-विभाग मे दिये हैं।

जन पाठावली के प्रचार के लिये प्रयत्न किया, और 'धार्मिक-परीक्षा बोर्ड पाथर्डी' के पाठ्यक्रम मे स्थान देने का भी आग्रह किया। परिणामत' अनेक धार्मिक पाठशालाओं ने इस पाठावली को अपनाई जिससे पहिले और दूसरे भाग की तीन २ आवृत्तियॉ तक छपानी पड़ी हैं। यही इसके आदर का प्रमाण है।

'श्री तिलोकरत्न स्था० जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड' ने पाठावलियों को पाठ्-क्रम मे स्थान देने के साथ २ पाठावली के पॉचों ही भाग का पूरा स्टॉक खरीद लेने की, छठे और सातवें भागों तथा पाच भागों की नई आवृत्तियां कॉन्फरन्स की आज्ञा से और कॉन्फरन्स के नाम से छपाने की इच्छा जाहिर की। प्रचार और प्रबन्ध की दृष्टि से उचित समझ कर पाठावली का स्टॉक तथा पूछकर छपाने की आज्ञा प्रदान की। बोर्ड ने जैन पाठावली का छठा भाग भी छपा दिया है। सातवॉ भाग और स्था० जन धर्म का इतिहास भी छपा देंगे।

(१३) संघ-ऐक्य योजना

कॉन्फरन्स को स्थापित हुए आज ४६ वर्ष व्यतीत हो गये हैं। इस लम्बी अवधि मे कॉन्फरन्स ने यदि कोई अपूर्व और अद्वितीय कार्य किया है तो वह सघ ऐक्य योजना का है। यह कार्य केवल रचनात्मक ही नहीं क्रांतिकारी और आध्यात्मिक उन्नति का पोषक भी कहा जा सकता है। वर्षों के प्रयत्नो से इस योजना द्वारा सादड़ी (मारवाड़) मे श्री वर्धमान स्था० जैन श्रमण-सघ की स्थापना हुई। लगभग बत्तीस मे से बाईस सम्प्रदायों का एकीकरण हुआ। उपस्थित सम्प्रदायों के साधु अपनी २ शास्त्रोक्त पदवियां छोडकर श्रमण-सघ मे सम्मिलित हुए। अपने देश मे राजकीय-क्षेत्र मे जैसे सात सौ राज्यों का विलीनीकरण होकर सयुक्त-राज्यों की स्थापना हुई वैसे ही लगभग डेढ हजार साधु-साध्वियों का यह एक ही आचार्य की नेश्राय मे सगठन हुआ है। स्था० जैन समाज की यह अजोड सिद्धि कही जा सकती है। गुजरात-सौराष्ट्र और कच्छ की सम्प्रदायों का एकीकरण होना अभी शेप है। इसके लिये प्रयत्न चल रहे है। इन सभी सम्प्रदायों के श्रमण सघ मे मिल जाने पर यह श्रमण-सघ स्था० समाज की एकता का एक अपूर्व प्रतीक बन जावेगा। पूरा वर्णन साधु सम्मेलन के प्रकरण मे देखें।

(१४) अन्य सहायता कार्य

कॉन्फरन्स के पास निम्नोक्त फड हैं, जिनमे से स्थानकवासी जैन भाई-बहनो को बिना किसी प्रान्त भेद के योग्य सहायता भेजी जाती है।

स्त्री-शिक्षण फंडः—

इस फड मे से विधवा बहिनों को और विद्याभ्यास करने वाली बहिनों को छात्रवृत्ति के रूप मे सहायता दी जाती है। कोई भी अनाथ, दीन, दुखी बहिन अर्जी दे कर सहायता ले सकती हैं। सारे हिन्दुस्तान मे से सैकडों अर्जियां आती हैं, जो लगभग सभी स्वीकार की जाती हैं और फ्ड के परिणाम मे सबको यथायोग्य सहायता भेजी जाती है।

श्री आर० वी० दुर्लभजी छात्रवृत्ति फंडः—

कॉलेजों मे पढ़ने वाले छात्रों को प्रतिवर्ष रु० ३०००) लगभग की छात्रवृत्तियां दी जाती हैं।

श्री खीमचन्द मगनलाल वोरा छात्रवृत्ति फण्डः—

कॉलेजों मे पढ़ने वाले छात्रों को प्रति वर्ष रु० १०००) लगभग की छात्रवृत्तियॉ दी जाती हैं।

स्वधर्मी सहायक-फण्ड:—

इस फंड मे से गरीब भाई-बहिनो को तात्कालिक सहायता दी जाती है।

उपरोक्त सभी फंडों मे अर्जियों की सख्या बहुत होती है। परन्तु फंडों में विशेष रकम न होने से और दी जाने वाली रकम बहुत थोड़ी होने से सबको अधिक प्रमाण मे योग्य सहायता नहीं भेजी जा सकती है। कई फंड तो लगभग पूरे होने आये हैं अतः दोनो श्रीमानों को उदारता प्रदर्शित कर इन फंडों की रकमों को बढ़ाना चाहिये, जिससे कि समाज के दीन दुखी भाइयों को थोड़ी बहुत भी मदद पहुंचती रहे।

(१५) प्रान्तीय-शाखायें

कॉन्फरन्स का प्रचार और सेवा-क्षेत्र बढ़ाने के लिये 'प्रान्तीय-शाखायें' खोलने का निर्णय किया है। तदनुसार बम्बई, मध्यभारत, महाराष्ट्र और राजस्थान मे प्रान्तीय शाखायें खुल गई हैं। कलकत्ता (बगाल, बिहार, आसाम), मद्रास (मद्रास प्रान्त, मैसूर, केरल), गुजरात (कच्छ, सौराष्ट्र, गुजरात) और पजाब आदि में भी प्रान्तीय शाखायें खोलने के प्रयत्न चल रहे हैं।

जिन २ प्रान्तों मे प्रान्तीय शाखायें नहीं खुली हैं, वहाँ के आगेवानों को अपने २ प्रान्त मे प्रान्तीय शाखायें खोलने का प्रयत्न करना चाहिये। वर्तमान प्रान्तीय शाखायें और मत्री इस प्रकार हैं:—

प्रान्त	केन्द्र-स्थान	मत्री
(१) मध्यभारत-मेवाड	जावरा	श्री सुजानमलजी मेहता
(२) राजस्थान (मारवाड)	जोधपुर	श्री ऋषभचदजी कर्णावट
(३) बृहत्-गुजरात व बम्बई	बम्बई	श्री खीमचदभाई म० वोरा श्री गिरधरलालभाई दफ्तरी
(४) बगाल बिहार-आसाम	कलकत्ता	श्री जसवन्तमलजी लोढा

(१६) कॉन्फरन्स की तरफ से प्रकाशित-साहित्य

(१) अर्ध-मागधी कोष—आगम तथा मागधी-भाषा के अभ्यास मे यह कोष प्रमाणभूत माना जाता है। शता० प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० कृत यह शब्द कोप ५ भागों मे प्रकाशित हुआ है। प्रत्येक भाग की छुट्टक कीमत ५०) रु० है। पाचो भागों की एक सेट की कीमत २५०) रु० है।

इंग्लैंड, फ्रान्स, जर्मनी आदि पश्चिम के कई देशों मे यह कोष भेजा गया है और अब भी वहां से इस कोप की मांग आती रहती है।

(२) उत्तराध्ययन सूत्र—श्री सतबालजी कृत हिन्दी मे अनुवाद। पृष्ठ सं० ४१४, कीमत २) रु०, (३) दशवैकालिक सूत्र—श्री सतबालजी कृत हिन्दी मे अनुवाद। पृष्ठ स० १६० कीमत ।।।) आना। (४) आचारांग सूत्र—श्री गो० जी० पटेल कृत छायानुवाद। हिन्दी मे पृष्ट १४४ कीमत ।।।) आना। (५) सूत्रकृताग सूत्र—श्री गो० जी० पटेल कृत छायानुवाद। पृष्ठ १४०, कीमत ।।।) आना। (६) सामायिक-प्रतिक्रमण-सूत्र-सामायिक और प्रतिक्रमण सरल और शुद्ध भाषा में अर्थ सहित प्रकट किया गया है। गुजराती आवृत्ति की कीमत १० आना और हिन्दी आवृत्ति की छः आना। पोस्टेज चार्ज अलग।

नोट.—मिलने का पता—श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स, १३९०, चान्दनी चौक, दिल्ली

श्री श्वे० स्था० जैन कॉ० की सुदृढ़ता, समृद्धि तथा प्रगतिशीलता के लिये योजना व अपील

योजना :—हमारी यह कॉन्फरन्स (महासभा) भारत के समस्त स्थानकवासी (आठ लाख) जैनों की प्रतिनिधि-सस्था है। इसकी स्थापना सन् १९०६ मे मोरवी (सौराष्ट्र) मे हुई थी। इसी कॉन्फरन्स-माता की कृपा से हम काश्मीर से कोलम्बो और कच्छ से बर्मा तक भारत के प्रत्येक प्रान्त मे फैले हुए स्वधर्मी भाइयों के परिचय मे आये, एक दूसरे के सुख-दु:ख के सम-भागी बने और पारस्परिक सहयोग से धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और व्यावसायिक सम्पर्क बढ़ा कर विकास कर सके। कॉन्फरन्स के लगभग ५० वर्ष के कार्यकाल मे भिन्न-भिन्न स्थानो पर १२ अधिवेशन हुए और जनरल-कमेटी की बैठकें प्रतिवर्ष होती रही हैं। कॉन्फरन्स ने स्था० जैन समाज एव धर्म सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव एव कार्य किये, जो जैन इतिहास मे स्वर्णाक्षरो से अंकित है। मुख्य कार्य निम्नानुसार हैं:—

'जैन-प्रकाश' हिन्दी और गुजराती-भाषा मे ४२ वर्षो से पाक्षिक एव साप्ताहिक रूप मे नियमित प्रकाशित होता रहा है। जैन ट्रेनिंग-कॉलेज रतलाम, बीकानेर, जयपुर मे सफलता पूर्वक चला। बम्बई और पूना मे जैन-बोर्डिंग की स्थापना की। पजाब व सिंध के निर्वासित भाइयों के लिये रु० १ लाख ६० हजार एकत्रित करके सहायता दी। अर्द्धमागधी-कोष के ५ भाग, कुछ आगमों के अनुवाद और धार्मिक पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन किया। स्थानकवासी श्रमण सम्प्रदायों का 'श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण-सघ' के रूप मे सगठन किया। जीव-दया, स्वधर्मी-सहायता, विधवा-सहायता, सामाजिक-सुधार आदि अनेक कार्य किये और किये जा रहे हैं। श्राविकाश्रम के लिए सवा लाख रुपये का भवन घाटकोपर मे बन गया है और शीघ्र ही सचालित होने वाला है।

कॉन्फरन्स की अनेकविध प्रवृत्तियों द्वारा स्था० जैन समाज की अधिकाधिक सेवा करने के लिये स्थानकवासी जैन श्रीमानो, विद्वानों, सम्पादकों, युवको आदि सब आबाल-वृद्ध के हार्दिक सक्रिय सहयोग की हमे अपेक्षा है। इतना ही नही हमारे त्यागी मुनिवरो और महासतियो के आशीर्वाद और पथ-प्रदर्शन भी प्रार्थनीय है।

सोजत मे मत्री मुनिवरों की बैठक के समय कॉन्फरन्स की जनरल सभा (ता० २५-१-५२) मे कॉन्फरन्स का प्रधान कार्यालय दिल्ली मे रखने का दीर्घदृष्टिपूर्ण निर्णय हुआ। तदनुसार कॉन्फरन्स ऑफिस फरवरी सन् १९५३ से (१३८०, चांदनी चौक) दिल्ली मे चल रहा है। कॉन्फरन्स का प्रधान-कार्यालय, मानो स्थानकवासी जैन समाज का 'शक्ति गृह' (Power House) है। यह जितना स्थायी, समृद्ध और शक्ति-सम्पन्न होगा उतना ही अधिक समाज को सक्रिय-सहयोग, प्रेरणा तथा पथ-प्रदर्शन कर सकेगा यह निर्विवाद बात है। इसके लिये स्था० जैन समाज का गौरव युक्त मस्तक ऊंचा उठाने वाला एक भव्य 'कॉन्फरन्स-भवन' भी ले लिया है, जिसमे अनेकविध प्रवृत्तियां चलें जो समस्त स्था० जैन समाज शक्ति सचयगृह (Power House) बन कर भारत मे और विदेशो मे भी जैनत्व, जैन सस्कृति, शिक्षण, साहित्य प्रचार, धर्म प्रचार, सगठन, सहायता, सहयोग रूप प्रकाश फैलायगा, प्रेरणा देगा, मार्ग-दर्शन करेगा और स्था० धर्म व समाज को प्रगतिशील बनायगा।

भवन निर्माण दिल्ली में क्यों ?

हैं। प्रत्येक समाज और धर्म की प्रतिनिधि संस्थाओं के प्रधान कार्यालय दिल्ली मे स्थापित हुए हैं और हो रहे हैं, जिससे बहिर्जगत् के साथ वे अपना सम्पर्क स्थापित करके अपना परिचय और प्रचार का क्षेत्र बढ़ा सकेंगे।

दिल्ली, जैसे भारतवर्ष का केन्द्र है वैसे जैन समाज के लिये भी मध्यवर्ती स्थान है। पंजाब, राजस्थान, मध्यभारत, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, पेप्सु आदि सन्निकट प्रान्तों मे स्था० जैनों की अधिक संख्या है। सौराष्ट्र, कच्छ, गुजरात, बम्बई, मद्रास, कलकत्ता, महाराष्ट्र आदि सुदूर प्रान्तों के जैन बन्धुओं का आवागमन राजनैतिक और व्यावसायिक कारणों से दिल्ली मे होता ही रहता है। इस प्रकार सब का सम्पर्क दिल्ली से है।

केन्द्रीय-राजसभा (Parliament) मे २२ सदस्य (M P) और दिल्ली स्टेट धारा-सभा मे 3 सदस्य (M L A) कुल २५ जैन होने से उनके सक्रिय सहयोग द्वारा जैन धर्म और समाज के हितो की रक्षा का सफल प्रयत्न किया जा सकता है। इतना ही नहीं राष्ट्रपति, मत्री-मडल, अन्य धारासभाओं और विदेशी राजदूतों का ध्यान जैनधर्म के विश्वोपयोगी उदात्त सिद्धान्तों की ओर आकृष्ट किया जाय तो जैनधर्म के प्रचार मे बहुत बडा योग मिल सकता है।

कॉन्फरन्स-भवन मे निम्नोक्त कार्य प्रवृत्तियॉ प्रारम्भ करने की भावना है और इसी के अनुरूप ही 'भवन निर्माण' करने की योजना कार्यान्वित हुई है :—

१ प्रधान कार्यालय—जिसमे स्था० जैन समाज की समस्त कार्य प्रवृत्तियों का केन्द्रीय-करण, चतुर्विध सघ से सम्पर्क और प्रान्तीय शाखाओं को तथा प्रचारकों को मार्गदर्शन एव नियत्रण की व्यवस्था होगी।

२ 'जैन प्रकाश'-कार्यालय—जिसमे कॉन्फरन्स के साप्ताहिक मुख-पत्र जैन प्रकाश के सपादन, प्रकाशन व वितरण की व्यवस्था होगी।

३ जिनागम एव साहित्य का सम्पादन और प्रकाशन-विभाग—का विद्वान मुनिवरों द्वारा कार्य सपन्न होगा। जिसमे ३२ जिनागमो का संशोधित मूल-पाठ, अर्थ, पाठांतर, टिप्पणियां, पारिभाषिक शब्द-कोष आदि नूतन शैली से समृद्ध सपादन व प्रकाशन होगा। इसके अतिरिक्त :—

(अ) जैनधर्म का परिचय ग्रन्थ (जैन-गीता)—के रूप से ३२ सूत्रों के सार रूप जैनधर्म के विश्वोपयोगी उदात्त सिद्धान्तों का सुन्दर सकलन किया जायगा। इसको भारतीय तथा विदेशीय भिन्न-भिन्न भाषाओं मे अनुवाद करा कर विश्व मे अन्य धर्मावलबियों के पास गीता, कुरान, बाइबिल, धम्मपद की तरह सर्व-मान्य जैनधर्म का संपूर्ण परिचय दे सके ऐसी महावीर-वाणी-जैन गीता निर्ग्रन्थ प्रवचन का प्रकाशन व घर-घर मे प्रचार किया जायगा।

वर्तमान के तृष्णापूर्ण हिंसक-युग मे एटम-बम्ब, हायड्रोजन-बम्ब की कल्पनामात्र से त्रस्त ससार के लिये अहिंसा के अवतार शान्तिदूत भगवान महावीर का यह शान्ति-शस्त्र (Peace-Bomb) का काम करेगा। विश्व-शांति स्थापित करने मे सहायक हो सकेगा।

(ब) जैन साहित्य-माला का प्रकाशन—सर्वोपयोगी इस साहित्य-माला मे अहिंसा, सत्य, आत्मिक-शान्ति, विश्वप्रेम, सेवाधर्म, कर्त्तव्य, सयम, सतोष आदि विविध विषयों का सुरुचिकर, सुपाच्य, आकर्षक प्रकाशन सस्ते मूल्य मे वितीर्ण किया जायेगा। जिसको सर्व-साधारण जनता प्रेम से पढ़े और जीवन मे उतार सके।

४ जैन स्थानक और व्याख्यान-भवन (Lecture-Hall)—नई दिल्ली मे स्था० जैनों की अत्यधिक

संख्या होने पर भी स्था० जैनों का कोई धर्म-स्थानक नहीं है। अत. इसकी पूर्ति भी इस भवन से होगी। मुनिगण को ठहरने का और व्याख्यान वाणी का तथा धर्मध्यान का इससे लाभ होगा। व्याख्यान-हॉल बन जाने से अनेक भारतीय और विदेशीय विद्वानों के व्याख्यान-द्वारा सपर्क स्थापित किया जा सकेगा और विश्व के नेताओं को आमन्त्रित कर जैनधर्म से प्रभावित किये जा सकेंगे।

५ शास्त्र-स्वाध्याय—इसी स्थान में नियमित शास्त्रो का और धर्मग्रन्थो का स्वाध्याय-वांचन होता रहे ऐसी व्यवस्था की जायगी।

६ शास्त्र-भण्डार—हमारे श्वेताम्बर और दिगम्बर जैन भाइयो के आरा, जयपुर, जैसलमेर, पाटण, खभात, कोडाई, बड़ौदा, कपडवज आदि अनेक स्थानो पर प्राचीन शास्त्र-भण्डार और पुस्तक-सग्रह है परन्तु वैसा स्था० जैनधर्म का एक भी विशाल शास्त्र भडार कहीं भी नहीं है। स्था० जैन शास्त्र एव साहित्य आज कहीं गृहस्थो के पास तो कोई स्थानको की आलमारियो मे, पिटारो मे या अन्य प्रकार से अस्त व्यस्त बिखरे पडे है, उन सबको एकत्रित करके सुरक्षित और सुव्यवस्थित'एक केन्द्रीय-शास्त्र-भडार (ग्रन्थ-सग्रह) की अनिवार्य आवश्यकता है।

७ सिद्धान्तशाला—स्था० जैन धर्म का आधार मुनिवर और महासतियांजी है। वे जितने ज्ञानी, स्वमत-परमत के ज्ञाता और चारित्रशील होंगे उतना ही जैनधर्म का प्रभाव बढेगा अत' साधु-साध्वियो के व्यवस्थित शिक्षण की आवश्यकता है। इसके लिए केन्द्रीय 'सिद्धान्तशाला' यहा स्थापित करना और उसकी शाखाए अन्य प्रान्तो मे भी चालू करना अत्यावश्यक है।

८ वीर-सेवा सघ—जैन साधु-साध्वी पैदल-विहारी और मर्यादाजीवी होने से सुदूर-प्रान्तो मे और विदेशो मे विचर नहीं सकते है। अल्प-सख्यक होने से सर्वत्र पहुँच भी नहीं सकते, जिससे सर्व क्षेत्रो मे पूर्ण धर्म प्रचार नहीं होता। इसके लिए स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० की कल्पना तथा बम्बई और बीकानेर कॉन्फरन्स के निर्णयानुसार साधु-वर्ग और गृहस्थ-वर्ग के बीच का एक त्यागी ब्रह्मचारी वर्ग तैयार करना जरूरी है। जो 'वीरसेवा सघ' के नाम से 'जैन मिशनरी' के रूप मे काम करेगा। ऐसे ससार से विरक्त और धर्म-प्रचार मे जीवन देने वालोको सुविधा-पूर्वक रहने की और कर्म करने की व्यवस्था इस भवन मे की जायगी। इनके द्वारा देश विदेश मे धर्म प्रचार और सांस्कृतिक सम्पर्क बढाया जा सकेगा।

९ जैन ट्रे०-कॉलेज—समाज मे कार्यकर्ता, उपदेशक, प्रचारक और धर्माध्यापक तैयार करने के लिए जैन ट्रेनिंग-कॉलेज की अनिवार्य आवश्यकता है। कॉन्फरन्स ने पहिले भी रतलाम, बीकानेर तथा जयपुर मे जैन ट्रेनिंग कॉलेज कुछ वर्षो तक चलाई थी। आज समाज मे जो इनेगिने कार्य-कर्ता दीख रहे है, इसी कॉलेज का फल है। वर्तमान मे समाज मे सच्चे प्रभावक कार्यकर्ता और धर्माध्यापको की बहुत आवश्यकता दीख रही है अत. इसी भवन मे जैन ट्रेनिंग कॉलेज चलाने का विचार है।

१० उद्योगशाला—कॉन्फरन्स की तरफ से गरीब स्वधर्मियो को, विधवा बहिनो को और विद्यार्थियो को प्रतिवर्ष हजारो की सहायता दी जाती है, परन्तु यह तो, गर्म तवे पर जलबिंदु की तरह है। समाज मे शिक्षा बढ़ने पर भी बेकारी बढ रही है। इसका एकमात्र उपाय उद्योग-उत्पादन बढ़ाना तथा जाति-परिश्रम की भावना जगाना ही है। इसके लिए कॉन्फरन्स भवन मे 'उद्योगशाला' स्थापित करना चाहते हैं। जिसमे गृह-उद्योग, मशीनरी, रिपेरिंग, बिजली आदि के हुन्नर-कला द्वारा परिश्रम प्रतिष्ठा जागृत करके रोजाना रु० ४-७ कमा सके ऐसी व्यवस्था होगी जिससे स्वधर्मी भाई सुखपूर्वक जीवन निर्वाह कर सके। आगरा के दयाल-बाग का प्रारभ भी इसी प्रकार हुआ था।

११ मुद्रणालय—(प्रिंटिंग-प्रेस) भी इस भवन में चलाया जायगा जो उद्योगशाला का एक अग बनेगा और इसी मे 'जैन-प्रकाश', आगम तथा साहित्य-प्रकाशन का कार्य भी होता रहेगा। जैन स स्थाओं का भी शुद्ध प्रकाशन कार्य किया जा सकेगा। कई स्वधर्मी भाइयों को इस उद्योग मे लगा सकेंगे।

१२ अतिथिगृह—दिल्ली भारत का सब प्रकार का केन्द्र होने से अपने भाई दिल्ली आते हैं। नई दिल्ली मे ठहरने के लिए कोई स्थान नहीं है और होटलों मे ठहरना खर्चीला और असुविधा-जनक होता है अत उनको कुछ दिन ठहरने के लिए कॉन्फरन्स भवन में समुचित प्रबन्ध वाला अतिथिगृह बनाना भी निहायत जरूरी है। अपनी कॉन्फरन्स इतनी समृद्ध होनी चाहिए कि—

भारत भर मे जहां २ स्था० जैनों के १५-२० घर हों, वहां सर्वत्र स्वाध्याय करने के लिए धर्मस्थान बनाने की व्यवस्था मे कम से कम आधा आर्थिक सहयोग दिया जा सके। जैसे श्वे० मूर्तिपूजक जैनों मे आणदजी कल्याणजी की पेढी है।

स्था० जैन समाज की सभी कार्य प्रवत्तियों को प्रगतिशील बनाने के लिए और केन्द्रीय दफ्तर को स्थायी, समृद्ध, प्रभावशाली और कार्यक्षम बनाने के लिये नई दिल्ली मे 'कॉन्फरन्स भवन' का निर्माण करना और उसमे प्रसिद्ध जैन तत्त्वज्ञ, स्व० वा० मो० शाह की 'महावीर मिशन की योजना' और स्व० धर्मवीर दुर्लभजी-भाई जौहरी की 'आदिनाथ आश्रम' की योजना को मूर्तरूप देना अब मेरे जीवन का ध्येय बन गया है। जिसे मैं अविलम्ब कार्यरूप मे देखना चाहता हू।

अपील

उपर्युक्त योजना को क्रियान्वित करने के लिये रु० २॥ लाख कॉन्फरन्स-भवन निर्माण मे, रु० १ लाख आगम और साहित्य के लिए तथा रु० १॥ लाख ऊपर वर्णित प्रवृत्तियों के लिए, इस प्रकार पांच लाख रुपए की मैं स्था० जैन समाज से अपील करता हू। इतने बड़े और समृद्ध समाज मे से—

५१-५१ हजार रुपए देने वाले दो सज्जन, १०-१० हजार रुपये देने वाले दस सज्जन, ५-५ हजार रुपये देने वाले वीस सज्जन, १-१ हजार रुपये देने वाले सौ सज्जन मिलने पर शेष, १ लाख रुपये इससे छोटी २ रकमे जन साधारण से एकत्रित हो सकेंगी।

मेरे उक्त विचारों को सुनते ही समाज के पुराने सेवक श्री टी० जी० शाह ने रु० ११११) देने का तुरन्त ही लिख दिया है, परन्तु उनसे मैं रु० ५ हजार खुशी से ले सकू गा।

मुझे अत्यन्त खुशी है कि, स्व० धर्मवीर दुर्लभजी भाई के सुपुत्र श्रीमान् वनेचन्दभाई और श्री खेल-शकरभाई जौहरी ने इस कार्य के लिये रु० ५१ हजार का वचन देकर मेरी आशा को वल दिया है। तथा दिल्ली मे ४-५ भाइयों ने ५-५ हजार के वचन देकर मेरे उत्साह को वढ़ाया है। मेरी आशा के प्रदीप राजकोट के दानवीर वीराणी वन्धु, श्री केशुभाई पारेख, बम्बई के दानवीर मेघजीभाई का परिवार, सर चुन्नीलालभाई मेहता, कामाणी ब्रदर्स, श्री सघराजका आदि, मद्रास के सेठ श्री मोहनमलजी चौरडिया, गेलड़ा वन्धु आदि, कलकत्ता के–काकरिया वन्धु, दुगडजी आदि मारवाडी भाई और गुजराती साहसिक व्यापारी वन्धु आदि, अहमदावाद के मिल मालिक सेठ शातिलालभाई मगलदास तथा अन्य श्रीमान व्यापारी वन्धु, वीकानेर, भीनासर के सेठिया, वांठिया

और वेद परिवार के बन्धुओं के अतिरिक्त खानदेश, दक्षिण, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, मध्यभारत और राजस्थान के धर्म प्रेमी श्रीमान सज्जन तथा कच्छ, सौराष्ट्र, गुजरात, मारवाड के, देश विदेशों के साहसिक व्यापारी बन्धुओं के समक्ष पांच लाख रुपये की मांग बहुत बडी नहीं है। वे आसानी से मेरी इस मांग को पूरी कर सकते हैं।

मैं तो उम्मीद करता हू कि--मेरी इस प्रार्थना को पढ कर ही समझदार सज्जन स्था० जैन समाज के उत्थानकार्य के लिये अपने-अपने उदार आश्वासन (वचन) भेज देंगे।

इस प्रकार स्था० जैन समाज अपनी प्रगति के लिये, धर्म सेवा के लिये इस धर्मयज्ञ मे यथाशक्ति अपना 'अर्घ्य' देवें और इस योजना को सफल बनावें यही कामना है।

इस अपील को सम्पन्न करने के लिये कुछ समय के बाद प्रतिनिधि मण्डल (Deputation) भी प्रयत्न करेगा। स्था० जैन समाज अपने उत्थान के लिये सर्वस्व देने को तैयार है ऐसा जौहर दिखाने मे अग्रसर होगी इसी भावना और श्रद्धा के साथ। निवेदक :—आनन्दराज सुराना M L A (प्र० म० अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉ० दिल्ली)

संघ का महत्त्व

व्यक्ति से बढ़कर आज सघ का महत्त्व है। सघ के महत्त्व के सामने व्यक्ति का महत्त्व अकिंचन सा प्रतीत होता है। सघ मे समस्त व्यक्तियों की शक्तियां गर्भित हैं। सघ की उन्नति के लिये यदि व्यक्ति का सर्वस्व भी होम हो जाय तब भी वह ननूनच नहीं करे। व्यक्ति का व्यक्तित्व सघ को उन्नत शिखर पर पहु चाने मे ही है। सघ की भलाई व्यक्ति की भलाई और सघ की अवनति व्यक्ति की अवनति है। सघ का सम्मान करना, वात्सल्य भाव रखना तथा कमजोरी को दूर कर शुद्ध हृदय से सेवा करना ही व्यक्ति के जीवन का परम लक्ष्य है।

व्यक्ति को भद्रबाहू स्वामी के जीवन-आदर्श को सामने रखकर सघ की उत्तरोत्तर वृद्धि मे सम-भागी बनना ही श्रेयस्कर है। उन्होंने सघ के बुलावे का तकाजा होने पर अपनी चिर साधना को भी बालाए ताक रख सघ की बिखरी हुई शक्तियों को एकत्रित करने मे ही जीवन का महत्त्वपूर्ण अग समझा।

एकाकी रहने मे व्यक्ति की शोभा नहीं है। अकेला वृक्ष जिस प्रकार रेगिस्तान मे सुशोभित नहीं होता उसी प्रकार सघ से पृथक व्यक्ति मे भी सौंदर्य नहीं टपकता। एक से अनेक और अनेक से एकता के साकार रूप मे ही सौंदर्य है, प्रेम है, शक्ति है, जोश है और होश का आभास है। सघ के निराश्रित बन्धुओं को आश्रय देना, बेकारों को रोजगार, देना, रोगियों को रोग से वचित करना, अशिक्षितों मे शिक्षा प्रचार करना, विधवा माता-बहिनों की सार सभाल करना, त्यागी वर्ग की सेवा करना तथा सघ की प्रत्येक शुभ प्रवृत्ति मे सक्रिय भाग लेकर सघबल मे अभिवृद्धि करना ही सच्चा सघ-वात्सल्य दर्शाना है।

आज प्रत्येक व्यक्ति मे यह भावना जागृत होनी ही चाहिये कि वह समाज का एक आवश्यक अग है। एक बडी मशीनरी का सचालन उसके आश्रित रहे हुए असख्य छोटे २ पुर्जो से ही होता है। यदि एक भी पुर्जे मे कोई खराबी आ जाती है तो वह मशीन गति-अवरुद्ध हो जाती है। ठीक इसी रूप मे सघ भी एक महान यत्र है जिसमे चतुर्विध सघ रूप अलग २ आवश्यक पुर्जे सबन्धित है। यदि एक भी साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका। वर्ग रूप पुर्जा विचलित अवस्था मे हो जाएगा तो सघ रूप मशीनरी की अबाध गति मे भी रुकावट आजायेगी। अत प्रत्येक वर्ग का कर्त्तव्य है कि सघ की शक्ति अविछिन्न रहे वही प्रयत्न करे।

आज भारतवर्ष के समस्त सघो का सगठन ही यह कॉन्फरन्स है। —धनपाल मेहता

नई दिल्ली में स्था० जैन-समाज का विशाल सांस्कृतिक केन्द्र
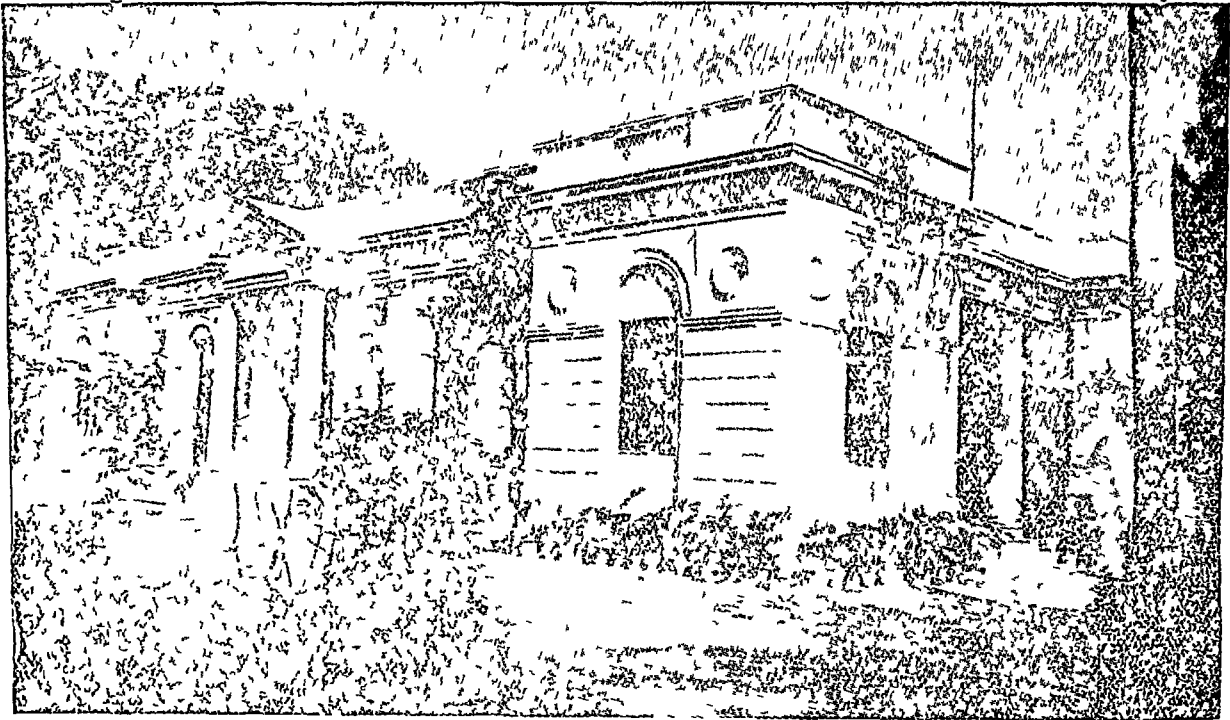
('जैन-भवन' के लिए खरीदी हुई कोठी का एक दृश्य)

लिखते हुए हर्ष होता है कि लम्बे समय से स्था० जैन-समाज जिसके लिये आतुरता से राह देख रहा था, उसकी पूर्ति हो गई है। अर्थात् नई दिल्ली मे लेडी हार्डिंग रोड पर न० १२ की शानदार कोठी ३४६४ वर्ग गज की जमीन खरीद कर रु० १० हजार देकर रसीद करा ली है और बहुत जल्दी रुपये देकर रजिस्ट्री कराना है। अभी यह कोठी एक मंजिला है। आगे आम सडक लेडी हार्डिंग रोड है, पीछे डॉक्टर लेन है। दि० जैन नसियांजी के पास है, बिडला मन्दिर १॥ फर्लांग पर है। अत यह कोठी बहुत अच्छे मौके पर अतीव उपयुक्त स्थान पर स्थित है। रजिस्ट्री सहित रु० १,८००००) खर्च होंगे और रु० ७५०००) उस पर लगाने से व्याख्यान हॉल, अतिथि गृह आदि की आवश्यकता पूरी हो सकेगी।

भारत की राजधानी मे स्था० जैनो का भवन होना नितान्त आवश्यक था। कोठी के पास ही स्था० जैनों की वस्ती होने से धर्म स्थानक की पूर्ति हो जाती है। कॉन्फरन्स द्वारा स्था० जैन धर्म के प्रचारार्थ और समाज के हितार्थ जैन ट्रेनिंग कॉलेज, ब्रह्मचारी सेवासघ, साहित्य-सशोधन, प्रकाशन और औद्योगिक-शिक्षण आदि २ अनेक-विध प्रवृत्तिया करने के लिए मैंने जो योजना और पाच लाख रुपयो की अपील स्था० जैनों के सामने रक्खी थी उसकी पूर्ति करने तथा धर्म और समाज का गौरव बढाने का समय आ गया है।

प्रार्थी संघसेवक—आनन्दराज सुराणा M L A. प्र० म० श्वे० स्था० जैन कॉ० दिल्ली।

पंचम-परिच्छेद

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन साधु-सम्मेलन का संक्षिप्त इतिहास

समाज-सगठन और समाज-शान्ति के लिए पर्यूषण और सवत्सरी आदि पर्वो का सारे स्था० जैन-समाज मे एक ही साथ होना आवश्यक है। इसका प्रयत्न कॉन्फरन्स ने किया। अनेक साधु-श्रावकों ने इसे पसन्द किया। कॉन्फरन्स ने ५ वर्ष का तिथि पत्र निकाला जिसको बहुतसी सम्प्रदायों ने स्वीकार किया। पजाब मे इन दिनो में तिथि-विषयक पत्री और परपरा का अत्यन्त झगडा चला था। पचवर्षीय तिथिपत्र मनवाने और पजाब का झगडा शान्त करने के लिए आचार्य श्री सोहनलालजी म० सा० की सेवा मे निम्न सज्जनों का प्रतिनिधि मडल ता० ७, ८, ९ अप्रैल सन् १९३१ को गया —

१ लाला गोकुलचन्दजी जौहरी दिल्ली, २ सेठ वर्द्धमानजी पित्तलिया रतलाम, ३ सेठ अचलसिंहजी आगरा, ४ सेठ केशरीमलजी चौरडिया जयपुर, ५ श्री धूलचन्दजी भडारी रतलाम, ६ रा० सा० टेकचन्दजी जडियाला और ७ सेठ हीरालालजी खाचरोद।

आचार्य श्री ने कॉन्फरन्स की बात स्वीकार की, परन्तु १ साल मे अखिल भारतवर्षीय स्था० जैन साधु-सम्मेलन बुला कर इसका निर्णय और सगठन करने का फरमाया।

आचार्य श्री से प्रेरणा पाकर कॉन्फरन्स अ० भा० साधु-सम्मेलन करने का आन्दोलन चलाया। ता० ११-१०-३१ को दिल्ली मे कॉन्फरन्स की ज० क० मे 'साधु सम्मेलन' करने का निर्णय किया गया। स्थान व समय निश्चित करने और व्यवस्था के लिए ३१ सदस्यो की समिति बनी। श्री दुर्लभजी त्रिभुवनदास जोहरी को मत्री नियुक्त किये। स० १९८९ के माघ-फाल्गुन का समय विचारा। यहा तक प्रत्येक सम्प्रदायों को अपना २ साम्प्रदायिक और प्रान्तीय सगठन करके अपने २ मुनि प्रतिनिधि चुनने का ऐलान किया।

स्था० जैन समाज मे उत्साह की लहर फैल गई। मत्रीजी श्री दुर्लभजी भाई जोहरी ने श्री धीरजभाई तुरखिया को अपना साथी बनाकर देशव्यापी दौरा प्रारम्भ कर दिया।

तीन बडे प्रान्तीय-सम्मेलन और अन्य साम्प्रदायिक-सम्मेलन हुए।

गुर्जर साधु-सम्मेलन

राजकोट में माघ कृष्णा ८ ता० १-३-३२ से प्रारम्भ हुआ। उस वक्त जो साधु-साध्वी थे और राजकोट सम्मेलन में मुनि पधारे थे वे निम्न थे :—

सम्प्रदाय	साधु	साध्वी	पधारे हुए मुनि
१ दरियापुरी	२१	६०	श्री पुरुषोत्तमजी म०, ईश्वरलालजी म० ठा० ५
१. लींबडी मोटा	२६	६६	श्री वीरजी म०, शता० रत्नचन्द्रजी म० ठा० ६
३ गोंडल	१५	६२	श्री कानजी म०, पुरुषोत्तमजी म० ठा० ३
४ लीबडी छोटा	७	१६	श्री मणिलालजी म० ठा० २
५ बोटाद	६	×	श्री माणकचन्दजी म० ठा० २
६ मायला	४	×	श्री सघजी स्वामी ठा० २
७ खभात	८	१०	नहीं पधार सके
८ बरवाला	३	२४	नहीं पधार सके

निम्न प्रकार सगठन, साधु-समिति और प्रस्ताव हुए —

भिन्न २ सम्प्रदायों का संगठन

इस सगठन मे सम्मिलित होने वाली सम्प्रदायों की एक सयुक्त-समिति बनाई जाती है। वह इस तरह, कि जिस सम्प्रदाय मे दो से दस तक साधु हों, उसका एक प्रतिनिधि, ११ से २० ठाणे तक के २ प्रतिनिधि, २१ से ३० तक तीन प्रतिनिधि। इस तरह प्रति १० ठाणे साधु के लिए एक प्रतिनिधि भेज सकते हैं। आर्याजी चाहे जितने ठाणे हों, उनकी तरफ से एक प्रतिनिधि और जिस सम्प्रदाय मे केवल आर्याजी ही हों उस सम्प्रदाय की तरफ से समिति में सम्मिलित चाहे जिस सम्प्रदाय के एक मुनि को प्रतिनिधि बना कर भेजा जा सकता है। शेष सम्प्रदायों की सख्या, अब फिर प्रकाशित होगी।

इस हिसाब से, वर्तमान मुनि सख्या के प्रमाण तथा आर्याजी की तरफ से एक मुनि प्रतिनिधि जोड कर, लीबडी बड़ी सम्प्रदाय ४ प्रतिनिधि, दरियापुरी सम्प्रदाय के ४ प्रतिनिधि, गोंडल सम्प्रदाय के ३ प्रतिनिधि लींबडी छोटी सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि, बोटाद सम्प्रदाय का १ प्रतिनिधि, सायला सम्प्रदाय का १ प्रतिनिधि, खभात सम्प्रदाय के दो प्रतिनिधि और बरवाला सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि। इस तरह ८ सम्प्रदायों के १६ प्रतिनिधियों की एक समिति नियुक्त की जाती है। इस समिति मे एक अध्यक्ष और जितनी सम्प्रदायें हैं, उतने ही मन्त्री (कार्यवाहक) रहेंगे। अध्यक्ष और मन्त्रियों की पसन्दगी, समिति सर्वानुमत या बहुमत से करे और प्रतिनिधियों की पसन्दगी अपनी २ सम्प्रदाय वाले करें।

इस वर्ष के लिये पसन्द की हुई साधु-समिति

अध्यक्षः—शतावधानी पण्डित श्री रत्नचन्द्रजी महाराज

सम्प्रदायवार-मन्त्रीगण

लींबडी-सम्प्रदाय—	कवि श्री नानचन्द्रजी महाराज।
दयापुरि-सम्प्रदाय—	मुनि श्री पुरुषोत्तमजी महाराज।
गौंडल-सम्प्रदाय—	मुनि श्री पुरुषोत्तमजी महाराज।
लींबड़ी छोटी-सम्प्रदाय—	मुनि श्री मणिलालजी महाराज।
खभात-सम्प्रदाय—	मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज।
बोटाद-सम्प्रदाय—	मुनि श्री माणेकचन्द्रजी महाराज।
बरवाला सम्प्रदाय—	पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज।
सायला-सम्प्रदाय—	पूज्य श्री सघजी महाराज।

कच्छी मन्त्रियों तथा सम्प्रदायवार प्रतिनिधि-मुनियों के शेष नाम, अब फिर प्रकट होंगे।

२—इस समिति का नाम 'गुर्जर-साधु-समिति' रखा जाता है। (गुजराती-भाषा बोलने वालों का समावेश 'गुर्जर' शब्द में होता है)।

३—इस समिति की बैठकें, तीन २ वर्षों के पश्चात् माघ महीने में की जावें। स्थान और तिथि का निर्णय चार महीने पहले अध्यक्ष तथा मन्त्रियों से सलाह करके कर लेना चाहिए। सभ्यों को आमन्त्रण भेजने आदि का कार्य, प्रान्तिक-सम्मेलन-समिति के द्वारा हो सकता हैं।

४—समिति के एकत्रित होने का यदि कोई खास-प्रसग उपस्थित हो तो चातुर्मास के अतिरिक्त, चाहे जिस अनुकूल-समय में बैठक की जा सकती है। किन्तु इसके लिए प्रतिनिधियो को दो मास पहले आमन्त्रण मिल जाना चाहिए।

५—कम से-कम नौ सभ्यों के उपस्थित होने पर, समिति की कार्य-साधक हाजिरी (कोरम) गिनी जावेगी यानि कामकाज चालू किया जा सकेगा। किन्तु अध्यक्ष और मन्त्रियों की उपस्थिति आवश्यक होगी।

६—प्रत्येक बात का निर्णय, सर्वानुमति से और कभी बहुमत से हो सकेगा। जब दोनो तरफ समान मत होंगे, तब अध्यक्ष के दो मत गिनकर, बहुमत से प्रस्ताव पास किया जा सकेगा।

७—कामकाज का पत्र-व्यवहार, प्रत्येक सम्प्रदाय के मन्त्री के द्वारा करवाना चाहिए। मन्त्री-अध्यक्ष की सम्मति प्राप्त करके उसका निर्णय कर सकेंगे। यदि कोई विशेष कार्य होगा तो अध्यक्ष तथा सब मन्त्रीगण सर्वानुमति से और कभी बहुमत से पत्र द्वारा खुलासा कर सकेंगे।

समिति का कार्य

८—प्रत्येक सम्प्रदाय वालों को, जहा तक हो सके अपनी-अपनी सम्प्रदाय की परिषद करके साधु-साध्वियों का सगठन करना चाहिए। उसमे भी, खास कर जिस सम्प्रदाय मे अलग-अलग भेद पडे हुए हों, साधु-साध्वी, निरकुश होकर, अपनी २ मर्जी के मुताबिक आचरण कर रहे हों, उस सम्प्रदाय को तो अवश्य ही परिषद् करके अपना सगठन करना चाहिए। यदि, वह कार्य उस सम्प्रदाय के मन्त्री का किया न हो सके, तो दूसरी

सम्प्रदाय के मन्त्री या मन्त्रियों से मदद लेनी चाहिए। यदि ऐसा करने से भी कार्य न चले तो अध्यक्ष तथा सब मन्त्रियों से सहायता मागनी चाहिए। यदि इससे भी कार्य पूरा न हो, तो समिति की बैठक बुलाई जावे और किसी भी तरह वह मतभेद मिटा कर सन्धि करनी चाहिए।

९—प्रत्येक सम्प्रदाय वालों को, अपने २ क्षेत्रों के मुख्य-मुख्य व्यक्तियों को बुलाकर, क्षेत्रों का सगठन करना चाहिए। इसमे भी, जिस सम्प्रदाय का क्षेत्र पर अकुश न हो, उस सम्प्रदाय को तो अवश्य ही क्षेत्रों के मुख्य व्यक्तियों की परिषद करनी चाहिए। जो क्षेत्र, सम्प्रदाय के साधुओं मे भेद डलवाने मे मददगार होते हों, उन्हें समझाकर एक सत्ता के लिए नीचे लाना चाहिए। चौमासे की विनती, प्रत्येक सम्प्रदाय की रीति के अनुसार उन जगहों पर भेजने का प्रबन्ध करवाना और समिति के नियमों का पालन करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। यह कार्य यदि उस सम्प्रदाय के मन्त्री न कर सकें, तो ऊपर कही हुई रीति से दूसरों से मदद मांगने पर दूसरों को उनकी मदद करनी चाहिए।

१०—एक सम्प्रदाय के क्षेत्र में, समिति की किसी दूसरी सम्प्रदाय के साधुओं को, अपनी जरूरत से या क्षेत्र खाली रहता हो इस दृष्टि से चातुर्मास करने की आवश्यकता पडे तो चातुर्मास करने वालों को उस सम्प्रदाय के अग्रेसरों की अनुमति प्राप्त करके वहां चातुर्मास करना चाहिए। इस तरह दूसरे क्षेत्र मे चातुर्मास करने वालों को उस सम्प्रदाय की परम्परा के विरुद्ध प्ररूपणा करनी चाहिए।

११—दूषितपन के कारण सम्प्रदाय मे बाहर निकाले हुए और स्वच्छन्द रीति से विचरने वाले साधु साध्वी को, चातुर्मास के किसी भी क्षेत्र वालों को अपने यहा चातुर्मास नही करवाना। यदि कोई ऐसे साधु साध्वियों का चातुर्मास करवाएगा, तो समिति उस क्षेत्र का समाधान होने तक बहिष्कार करेगी।

१२—एकलविहारी या सघाडे के बाहर निकाले हुए साधु साध्वी चाहे जिस तरह समाधान करके, एक वर्ष के भीतर अपनी सम्प्रदाय मे मिल जांय, यदि समिति चाहती है। यदि वे एक वर्ष मे न मिले तो इसका बन्दोवस्त करने का कार्य साधु समिति, श्रावक-समिति के सुपुर्द करे अर्थात् समिति को इसके लिए समुचित व्यवस्था करनी चाहिए।

१३—किसी साधु-साध्वी को, अकेले न विचरना चाहिए। यदि किसी कारणवश कही जाना पडे, तो सम्प्रदाय के अग्रेसर की मन्जूरी के बिना न जाना चाहिए। कदाचित् कभी सहायता देने वाले के अभाव में अकेले ही रहना पडे तो सम्प्रदाय के अग्रेसर कहें, उसी ग्राम मे रहना चाहिए। अग्रेसर की आज्ञा के बिना यदि दूसरे ग्राम मे जायेंगे, तो सघाडे के बाहर गिने जावेंगे और उनके लिए नियम न० ११ तथा १२ लागू समझे जावेंगे।

१४—आज्ञा मे रहने वाले किसी शिष्य अथवा शिष्या को असमर्थ होने या ज्ञान-शून्य होने के कारण गुरु पृथक् न कर सकेंगे। यदि अलग कर देंगे, तो उन्हें दूसरे नये शिष्य या शिष्या करने के लिए, उस सघाडे के अग्रेसर लोग स्वीकृति न दे सकेंगे।

१५—बड़ा अपराध करने वाले शिष्य को, उस ग्राम मे श्रीसघ के अग्रेसरों को साथ रख कर गुरु पृथक् कर सकते है, इस तरह से गुरु द्वारा पृथक् किए हुए या भागे हुए साधु को सम्प्रदाय के अग्रेसरों की मजूरी के बिना फिर सघाडे मे नहीं मिलाया जा सकता।

१६—कोई साधु-साध्वी अपना समुदाय छोड़ें, अथवा किसी के दोष के कारण सम्प्रदाय वाले उन्हे सघाडे से बाहर निकालें, तो उनका परम्परा सम्बन्ध भण्डार की पुस्तकों पर कोई अधिकार न रहेगा।

शिक्षा प्रबंध

२२--विद्याभिलाषी मुनियो तथा विद्याभिलाषिनी साध्वियों के लिये, भिन्न २ दो संस्थाए, स्थल, कल्प आदि का निर्णय करके कायम होनी चाहिए। संस्कृत, प्राकृत, थोकडे और सूत्र का ज्ञान देने के बाद, उपदेश किस तरह देना चाहिए, यह भी सखलाना चाहिये। तीन वर्ष, पाच वर्ष, या सात वर्ष तक पूरा अभ्यास करके परीक्षा मे पास हों, तब तक अपने चेले या चेलियों को, अच्छी देखरेख वाली संस्थाओं मे रखना चाहिए। ऐसी संस्थाए कायम हो जाने के बाद, अलग अलग जगहों पर शास्त्री रखने की प्रणाली बन्द कर देनी चाहिए। आर्याओं को, दूसरी आर्याओं अथवा स्त्री शिक्षिका के पास अभ्यास करना चाहिए, किन्तु पुरुष शिक्षक के पास नहीं।

व्याख्यान दाता की योग्यता

२३—व्याख्यानदाता को, शास्त्रकुशल होना चाहिए, स्वमत और परमत का ज्ञाता होना चाहिए और देशकाल का जानकार होना चाहिए। भीतर ही भीतर मनोमालिन्य पैदा करवाने वाला न होना चाहिए तथा अपनी महत्ता एव दूसरों की हलकाई बतलाने वाला भी न होना चाहिए। एकान्त व्यवहार अथवा एकान्त निश्चय दृष्टि से स्थापन उत्थापन करने वाला न होना चाहिए, बल्कि व्यवहार तथा निश्चय इन दोनों नय को मान देने वाला होना चाहिए। ज्ञान का उत्थापन करने वाला न होना चाहिए। सरल, समदर्शी, धर्म की रूच्ची लगन वाला और समाधि भाव मे रहने वाला होना चाहिए। ऐसी योग्यता वाले को ही व्याख्यान देने का अधिकार मिलना चाहिये।

साहित्य-प्रकाशन संबंधी

२४—मुनियों को, साहित्य-प्रकाशन नहीं, बल्कि यदि हो सके तो, साहित्य रचना करनी चाहिए। साहित्य के दो भाग हो सकते हैं। आगम-साहित्य और आगम के बाद दूसरा धार्मिक-साहित्य। पहले आगम साहित्य का उद्धार होना चाहिए। आगम के सम्बन्ध मे होने वाली शङ्काए निर्मूल हों, आगम की सत्यता पूरी तरह प्रमाणित हो जाय, इस तरह से आगम-साहित्य की योजना होनी चाहिए। अभी अथवा महा-सम्मेलन के अवसर पर, विद्वान् मुनियों की एक कमेटी बना कर द्रव्यानुयोग और चरणकरणानुयोग का पृथक्करण करना चाहिए। मुनियों द्वारा रची हुई पुस्तकों का प्रकाशन करने के लिए विद्वान् श्रावकों की एक संस्था स्थापित होनी चाहिए। अथवा कॉन्फरन्स की आन्तरिक सभा को यह कार्य अपने हाथ मे लेना चाहिए। मुनियों को प्रकाशन कार्य मे कुछ भी सम्बन्ध रखने की आवश्यकता न रहनी चाहिये। यदि रहे, तो केवल इतनी ही, कि छपने मे किसी प्रकार की अशुद्धि न रह जाय, इस बात का ध्यान रखना चाहिए। पुस्तकों के क्रय-विक्रय के साथ मुनियों का कुछ सम्बन्ध न रहे, ऐसी श्रावकों की एक समिति स्थापित होनी चाहिए। निकम्मी पुस्तके, जिनमे कि धार्मिक साहित्य न हो, विषयो की योजना न हो, भाषा की शुद्धि न हो और समाज के लिए उपयोगी भी न हों, ऐसे साहित्य के प्रकाशन मे, कॉन्फरन्स को रोक लगानी चाहिए, ताकि समाज का पैसा बरबाद न हो। विद्वान् साधुओं और श्रावकों की समिति पास करे, वही पुस्तक पास हो सके, ऐसा बन्दोबस्त कॉन्फरन्स को करना चाहिए, ऐसी साधु-समिति की इच्छा है। शिक्षित समाज को, धार्मिक साहित्य के अनुशीलन की बडी आतुरता जान पडती है, किन्तु वैसे साहित्य के अभाव के कारण, अन्य धर्मों का साहित्य पढ़ा जा रहा है। परिणामतः बहुत से लोगों की श्रद्धा का घुमाव, अन्य धर्मों की तरफ हो जाता है। इस स्थिति को रोकने के लिये यह सम्मेलन अच्छे धार्मिक साहित्य की रचना को अत्यन्त आवश्यक समझता है। जिस तरह से बुद्ध चरित्र प्रकाशित हुआ है, उसी तरह से महावीर

३२—साधु-साध्वी के फोटो खिंचवाना, उन्हें पुस्तकों मे छपाना या गृहस्थ के घर पर दर्शन पूजन के लिए रखना, समाधि स्थान बनाना, पाट पर रुपए रखना, पाट को प्रणाम करना आदि जडपूजा, हम लोगों की परम्परा के विरुद्ध है। इसलिए समिति को इसकी रोक करनी चाहिये और श्रावक-समिति को इसमें मदद पहुंचाना चाहिये।

३३—सवत्सरी सम्बन्धी कागज न छपवाये जावें, और न वैसे कागज लिखें या लिखवाये ही जावें। छोटे साधु-साध्वी को बडों की मन्जूरी के बिना कागज न लिखवाने चाहिए। महत्वपूर्ण पत्र संघ के मुख्य व्यक्ति के हस्ताक्षर के बिना न भेजने चाहिए।

३४—श्रावक समिति के सभ्यों का चुनाव, साधु-समिति की सलाह लेकर करना चाहिए, ऐसी साधु-समिति की इच्छा है।

३५—समिति के मन्त्री अथवा अध्यक्ष के नाम आये हुए महत्वपूर्ण पत्र, सम्मेलन समिति के मन्त्री श्री दुर्लभजीभाई जौहरी के पास इस शर्त पर रक्खे जावें कि जब साधु-समिति की बैठक हो अथवा उस विषय पर विचार करने का मौका मिले, तब वे कागज समिति के सामने पेश करें।

३६—उपरोक्त जो नियम सर्वानुमति से बनाये गये हैं, उन्हें समिति के प्रत्येक साधु-साध्वी को प्रभु की साक्षी से पालना चाहिये। इसमे यदि कोई हस्तक्षेप करेगा या नियम का उल्लंघन करेगा, तो समिति उसे उचित दण्ड देगी। अपराधी का कोई पक्षपात न करे। यदि कोई पक्षपात करेगा तो वह पक्षपाती भी अपराधी माना जावेगा।

उपरोक्त मसविदे मे, एक मास के भीतर जो २ सूचनाए प्राप्त होंगी, वे समिति की दृष्टि से गुजर कर यह मसविदा पक्के के रूप मे प्रकाशित कर दिया जावेगा।

मुनिराजों की समिति द्वारा दी हुई सूची

कि साधु-समिति को, श्रावक-समिति की कहा २ मदद चाहियेगी ?

जिन २ सम्प्रदायों मे, साधु-साध्वियों मे दलबन्दी है, वहां मतभेद करने मे, साधु-समिति के साथ श्रावक-समिति की आवश्यकता होगी। इसके लिये, सम्प्रदायों के क्षेत्रों मे, प्रभावशाली व्यक्तियों की एक कमेटी बनाई जावे और उसकी नियमावली भी बना ली जावे।

एकलविहारी या दूषित-साधुओं को समझाने का कार्य भी श्रावक समिति को करना होगा।

क्षेत्रों का सगठन करने मे श्रावक-समिति की सहायता की जरूरत होगी। इस व्यवस्था की रचना के समय नही पधारे हुये साधुओं और खास सघो की सम्मति प्राप्त करने में भी श्रावक-समिति की आवश्यकता होगी।

साधु-साध्वियों के फोटो पुस्तक में छपते हों या किसी उपाश्रय में रक्खे हों, तो उन्हें नष्ट करवाने तथा समाधि-स्थानो की रचना, पाट पर रुपया रखना या पाट को प्रणाम करना आदि जड़पूजा रोकने का कार्य भी श्रावक-समिति को करना होगा।

श्रावक-समिति का प्रस्ताव

मुनिराजों द्वारा रची हुई व्यवस्था और बताई हुई लिस्ट के अनुसार कार्य करने के लिए सम्प्रदायवार श्रावकों की एक समिति मुकर्रर करना तय किया जाता है।

इस समिति के प्रधान, सेठ दामोदरदास जगजीवनभाई चुने जाते हैं। इस समिति मे, सम्प्रदायवार गृहस्थों के नाम प्राप्त करके, उनमे से सभ्य चुनना निश्चित किया जाता है। इस तरह सम्प्रदायवार सभ्यों के नाम प्राप्त करने के लिए, पत्र-व्यवहार आदि प्रबन्ध करने और प्रमुख श्री की सूचना के अनुसार या उनकी सलाह लेकर कार्य करने को, एक वैतनिक मनुष्य रख लेना निश्चित किया जाता है, और इसके लिए रु० १०००) एक हजार का चन्दा करना तय किया जाता है। जब तक पूरी नई समिति का चुनाव न हो जाय, तब तक श्री दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी और श्री भाईचन्दजीभाई अनूपचन्द मेहता को, प्रमुख श्री की सहायता का कार्य करने के लिए नियुक्त किया जाता है और इन तीनों महानुभावों की कमेटी को सम्पूर्ण सत्ता दी जाती है।

श्री राजकोट
ता० ७-३-१६३२ ई० } { दामोदर जगजीवन
प्रमुख—श्रावक समिति

पाली मे फाल्गुन शु० ३, ४, ५ ता० १०, ११, १२ मार्च सन् १६३२ से प्रारम्भ हुआ जिसमे ६ सम्प्रदायों के ३२ मुनिवरो की उपस्थिति थी।

श्री मारवाड़-प्रान्तीय स्थानकवासी-जैन साधु-सम्मेलन की पहली बैठक, पाली मे स० १६८८ वीर स० २४५८ की शुभ मिति फाल्गुन शुक्ला ३ गुरुवार से प्रारम्भ हुई। जिसमे निम्न प्रकार से उपस्थित थी।

(१) पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री दयालचन्द्रजी महाराज ठाणे ४।
(२) पूज्य श्री नानकरामजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री पन्नालालजी म० ठा० ३।
(३) पूज्य श्री स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री फतेहचन्दजी महाराज ठाणे ४।
(४) पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री धीरजमलजी महाराज ठाणे ६।
(५) पूज्य श्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री हजारीमलजी महाराज ठाणे ११।
(६) पूज्य श्री चौथमलजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज ठाणे ४।

उपरोक्त मुनिराजों ने सम्मिलित होकर शास्त्र-परम्परा, देश, काल एव समयानुकूल निम्न प्रस्ताव सर्वानुमति से पास किये है।

(१) प्रस्तावों का पालन करवाने और सम्प्रदायों की सुव्यवस्था रखने के लिये एक सयोजक-समिति मुकर्रर की जाय, जिसका चुनाव इस प्रकार से किया जावे—

जिस सम्प्रदाय मे १ से १० मुनि हों, उस स० के २ प्रतिनिधि
" " ११ से २० " " ४ "
" " २१ से ३० " " ६ "

इस तरह, १० मुनिराजों मे से २ प्रतिनिधि लिए जाय। तदनुसार, पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि, पूज्य श्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदाय के ४ प्रतिनिधि, पूज्य श्री स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि, पूज्य श्री नानकरामजी महाराज की सम्प्रदाय का १ प्रतिनिधि, पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि और पूज्य श्री चौथमलजी महाराज की सम्प्रदाय का १ प्रतिनिधि। इस तरह, इन प्रतिनिधियों की समिति मुकर्रर की जाती है।

प्रत्येक सम्प्रदाय के प्रतिनिधियों मे से, एक-एक मन्त्री चुना जायगा।

प्रत्येक-सम्प्रदाय के प्रवर्तक भी उसी सम्प्रदाय के मुनियों के बहुमत से चुने जावेंगे।

इस तरह, इस वक्त के लिए निम्नानुसार चुनाव किया जाता है :—

सम्प्रदाय	प्रवर्तक	मन्त्री
(१) पूज्य श्री अमरसिंहजी म०	प० मुनि श्री दयालचन्द्रजी म०	प० मुनि श्री ताराचन्द्रजी म०
(२) पूज्य श्री नानकरामजी म०	प० मुनि श्री पन्नालालजी म०	प० मुनि श्री पन्नालालजी म०
(३) पूज्य श्री स्वामीदासजी म०	प० मुनि श्री फतेहचन्दजी म०	प० मुनि श्री छगनलालजी म०
(४) पूज्य श्री रघुनाथजी म०	प० मुनि श्री धीरजमलजी म०	प० मुनि श्री मिश्रीलालजी म०
(५) पूज्य श्री जयमलजी म०	प० मुनि श्री हजारीमलजी म०	प० मुनि श्री चौथमलजी म०
(६) पूज्य श्री चौथमलजी म०	प० मुनि श्री शार्दूलसिंहजी म०	प० मुनि श्री शार्दूलसिंहजी म०

(१) अध्यक्ष और मन्त्रियों का चुनाव समिति तथा सम्प्रदाय वाले करेंगे। प्रतिनिधि, अध्यक्ष और मन्त्री, ३-३ वर्ष के लिए चुने जावेंगे। इस अवधि के बाद उन्हीं को रखना या बदलना, यह बात समिति एवं सम्प्रदाय के मुनियों के अधीन है।

(२) इस सस्था का नाम 'मरुधर साधु-समिति' होगा।

(३) समिति की बैठकें, ३-३ वर्षों मे करना निश्चित किया जाता है।

बैठक का स्थान और तिथि आदि ४ मास पहले से, अध्यक्ष तथा मन्त्री मिलकर नियत करें और और आमन्त्रणादि का कार्य शुरू करे। इसके लिए, फाल्गुण मास श्रेष्ठ होगा।

(४) समिति एकत्रित करने योग्य, यदि कोई खास-कार्य होगा तो चातुर्मास के अतिरिक्त चाहे जिस समय कर सकते हैं। किन्तु प्रतिनिधियों को २ मास पूर्व आमन्त्रण देना होगा।

(५) समिति का कार्य, उपरोक्त-नियमानुकूल सुचारु-रूप से चलाने और इन नियमों का प्रचार करने के लिये, निम्नोक्त मुनिवरों के जिम्मे किया जाता है। पत्र-व्यवहार, इन्हीं मुनियों की सम्मति से होगा :—

(१) प० मुनि श्री ताराचन्दजी महाराज, (२) प० मुनि श्री पन्नालालजी महाराज, (३) प० मुनि श्री मिश्रीलालजी महाराज, (४) प० मुनि श्री छगनलालजी महाराज, (५) प० मुनि श्री चौथमलजी महाराज, (६) प० मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज।

(६) आर्याजी के साथ, कारण विशेष के अतिरिक्त, आहार-पानी का सभोग (लेन देन) बन्द किया जाता है।

(७) व्याख्यान के समय के अतिरिक्त यदि आर्याजी, मुनिराजों के स्थान पर ज्ञानार्थ आवें, तो कम से कम १ स्त्री और १ पुरुष (गृहस्थ) का वहा उपस्थित होना आवश्यक है। तथा खुले स्थान मे ही बैठ सकती हैं। यदि कार्यवश आना पडे, तो खड़ी खडी पूछकर वापस लौट जाय।

(८) मुनिराजों को, आर्याजी के स्थान (निवास) पर न तो जाना ही चाहिये, न वहा बैठना ही चाहिए। यदि, सथारा और पुस्तक प्रतिलेखन के कारण जाना पडे, तो विना श्रावक या श्राविका की उपस्थिति के, वहां नहीं बैठ सकेंगे।

(९) मुनिराजों के स्थान पर, बहिनों को व्याख्यान के समय के अतिरिक्त, पुरुषों की उपस्थिति के बिना न जाना और न बैठना ही चाहिए।

(१०) साधुजी २ ठाणे से और साध्वीजी ३ ठाणे से कम, आज्ञा के बिना नहीं विचर सकतीं।

(११) दीक्षा, योग्य-व्यक्ति देखकर तथा शास्त्रानुकूल एव श्रीसघ की सम्मति से दी जावेगी।

(१२) साधु-समाचारी, (शास्त्रानुसार दस प्रकार की) नियमित रूप से की जावे।

(१३) पाक्षिक-पत्रिका के अतिरिक्त, तपोत्सव, क्षमापना पत्रिकादि न छपवाई जावें, लेखादि की बात अलग है।

(१४) मन्त्र, यन्त्र, तन्त्रादि अष्टांग निमित्त प्ररूपणा करना, मुनिधर्म से विरुद्ध है। अत. इसका त्याग करें।

(१५) अष्टमी और चतुर्दशी को प्रत्येक-मुनि उपवास, आयबिल, एक ठाना, पांचविगय त्याग आदि तप करें। बाल, वृद्ध और विद्यार्थी की बात अलग है। यदि कारणवश उपरोक्त तप न किए जाय, तो मास में दो उपवास करें। अथवा सूत्र की ५०० गाथा की सज्झाय करे।

(१६) अप्रतीतिकारी-गृहस्थ के घर पर किसी भी कार्य से मुनिराज न पधारें।

(१७) साधुजी, अपना फोटो न खिचवावे।

(१८) दीक्षा मे अपव्यय तथा अप्रमाणित खर्च को रोकें।

(१९) प्रतिदिन, कम से कम ५०० गाथा का स्वाध्याय करें अथवा कम से कम नमोत्थुणं की ५ माला फेरें। व्याख्यान के अलावा, कम से कम २ घण्टे तक जिनवाणी का मनन करेंगे। विहार और अस्वस्थ होने की बात अलग है।

(२०) वस्त्र—बहुमूल्य, रगीन, रेशमी, चमकीले, फैन्सी और बारीक न लेंगे न पहनेंगे। कारणवश दो चातुर्मास हो जावेंगे, तो भी व्याख्यान एक ही होगा।

(२१) उपरोक्त सगठित सम्प्रदायों के साथ, ११ सभोगों (आहार के अतिरिक्त) की छूट दी जाती है।

(२२) आर्याजी के विषय मे, कमेटी प्रत्येक सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक तथा मन्त्री को ज्ञान क्रिया के सम्बन्ध मे नियम बनाने की आज्ञा देती है। जो आर्याजी, उपरोक्त प्रवर्त्तक तथा मन्त्रीजी द्वारा बनाये हुए नियमों का भग करेंगी उन्हें व्यवहार से बाहर किया जावेगा। इसकी सूचना छहों सम्प्रदायों को दे दी जावेगी और वे ऐसी आर्याजी से कोई व्यवहार न रक्खेंगे।

(२३) जो मुनि, अपनी सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक तथा कमेटी द्वारा बनाये हुए नियमों का भग करेंगे, उनको प्रवर्त्तक तथा मन्त्री सम्भोग (१२ व्यवहारों) से अलग करके, छहों सम्प्रदायों के प्रवर्त्तकों को सूचना दे देंगे, ताकि उनसे कोई सम्बन्ध न रक्खें।

(२४) प्रत्येक क्षेत्र मे, उक्त छ सम्प्रदायों में से एक चौमासा होगा। कदाचित् किसी कारणवश दो चातुर्मास हो जावेंगे, तो व्याख्यान एक ही होगा।

(२५) कोई भी मुनि, छः सम्प्रदायों के क्षेत्र मे विचरें, तो उस क्षेत्र के अधिष्ठाता-मुनि की सम्प्रदाय की समाचारी के विरुद्ध प्ररूपणा न करेंगे और गुरु आम्नाय भी अपनी नहीं करावेंगे।

(२६) पक्खी और सवत्सरी, छःहो सम्प्रदाय एक करेंगे। इस सम्बन्ध मे, जो विशेष बात बृहत्-सम्मेलन मे तय होगी, वह सर्व सम्मति से स्वीकार की जावेगी।

(२७) इन छः सम्प्रदायों के सम्भोगी मुनियों मे से यदि कोई मुनि, किसी कारणवश किसी दूसरी सम्प्रदाय मे रहना चाहेंगे, तो वे अपने प्रवर्त्तक तथा मन्त्री की आज्ञा लेकर एव रखने वालों के नाम का आज्ञा-पत्र प्राप्त करके वहां रह सकते हैं। इस अवस्था मे, रास्ते मे, आदमी के साथ अकेले जा सकते हैं।

(२८) कोई प्रवर्त्तक-मुनि, अपनी सम्प्रदाय के किसी मुनि से, छहों सम्प्रदाय के प्रवर्त्तकों की आज्ञा प्राप्त किए विना, सम्भोग नहीं तोड़ सकते।

(२९) इन छः सम्प्रदायों के मुनियों मे, जो मुनि यहां हाजिर नहीं है, उन्हे उस सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक तथा मन्त्री, अपनी सम्प्रदाय मे ले सकेंगे तथा छहों सम्प्रदाय के प्रवर्त्तकों को इसकी सूचना दे देंगे।

(३० जो मकान गृहस्थों ने, अपने धर्म-ध्यान के लिए बनाया है, उसका फिर चाहे जो नाम रक्खा गया हो—उसमे मुनि ठहर सकते है। किन्तु साधुओं के निमित्त बनाये हुए मकान मे ठहरने का निषेध है।

राजकोट साधु-सम्मेलन में, शतावधानी प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज आदि मुनिराजों तथा विद्वान श्रावकों ने, महासम्मेलन की नींव के रूप मे तथा हम लोगों के लिए मार्गदर्शक जो कार्यवाही की है, उस पर यह साधु-सम्मेलन, अपनी ओर से सन्तोषपूर्वक हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता है।

मरुधर मुनियों का द्वितीय सम्मेलन स० १९८४ माघ शु० ३, ४, ५ ता० १४, १५, १६ जनवरी १९३२ ब्यावर मे हुआ। ५ सम्प्रदाय के मुनि ठा० २८ तथा आत्मार्थी मुनि श्री मोहन ऋषिजी म० (आमन्त्रित) उपस्थित थे। बृहत्साधु-सम्मेलन अजमेर मे पधारने वाले दूरस्थ प्रान्तों के मुनिवरों के स्वागत और सेवा के लिए मुनि समितियां बनाई। प्रतिनिधि चुने और ३६ प्रस्ताव पास किये।

श्री पंजाब-प्रांतिक साधु-सम्मेलन, होशियारपर

विक्रमाब्द १९८८ चैत्र कृ० ६ रविवार से होशियारपुर मे प्रारम्भ हुआ। गणिजी श्री उदयचन्दजी म० सा० सम्मेलन के सभापति और उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० सा० मत्री चुने गये। युवाचार्य काशीरामजी म० सा० आदि १८ मुनिवर मुख्य २ पधारे थे। जो सकारण नहीं पधार सके थे, उनका सन्देश और प्रतिनिधित्व मिला था। उपाध्यायजी म० का वक्तव्य प्राकृत (मागधी) मे था जो बड़ा रोचक, मार्गदर्शक और सरल परन्तु ओजस्वी था। इस सम्मेलन मे, निम्न लिखित-प्रस्ताव, सर्वानुमति से स्वीकृत हुए:—

"श्री सुधर्मागच्छाचार्य पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज, श्रीसघ के परम हितैषी तथा दीर्घदर्शी हैं। आप ही की अत्यन्त कृपा और विचारशक्ति के द्वारा साधु-सम्मेलन का जन्म हुआ है। आप ही की कृपा से, ऑल इण्डिया श्वे० स्था० जन कॉन्फरन्स ने जागृत होकर बृहत् मुनि-सम्मेलन की नींव डाली है। जिसके कारण सभी प्रान्तों मे जागृति फैल गई है, जैसा कि जैन प्रकाश से प्रकट है। पजाब का श्री सघ कुछ अर्से से विखरा हुआ था, जो आप ही की कृपा से पुन प्रेम सूत्र मे बध गया है। जो पारस्परिक तर्क-वितर्क के लिए कटिबद्ध था, वही आज महानुभति पूर्वक जैन धर्म के प्रचार कार्य मे लगा दिखाई दे रहा है। आप ही की कृपा से, काठियावाड़, मारवाड, गुजरात, कच्छ और दक्षिण प्रान्त मे जो कई गच्छ विखरे हुए थे, वे भी प्रेम-सूत्र मे बध गए हैं। इस लिए उपरोक्त महाचार्य के गुणो का अनुभव करते हुए, उनका सच्चे हार्दिक भावों से धन्यवाद करना चाहिए।

यह प्रस्ताव, प० मुनि श्री रामस्वरूपजी महाराज ने साधु-सम्मेलन के सन्मुख प्रस्तुत किया, जो सर्वानुमति से, जयध्वनिपूर्वक स्वीकृत हुआ।

उपाध्यायजी महाराज और प्रवर्तिनी आर्याजी श्री पार्वतीजी महाराज की ओर से निम्न प्रस्ताव उपस्थित किये गये :—

(१) ऑल-इण्डिया कॉन्फरन्स की ओर से प्रकाशित पत्रीपत्र का प्रतिरूप पत्रीपत्र प्रकाशित करना चाहिये। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

(२) पूज्य मुनि श्री अमरसिंहजी महाराज के बनाये हुए बत्तीस नियमों के अनुसार गच्छ को चलना चाहिये।

सर्वसम्मति से निश्चित हुआ कि पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज के बनाये हुए, पजाबी साधु-सघ की मर्यादा के जो बत्तीस नियम हैं, वर्तमान मे यह मुनि-सम्मेलन उन्हीं को उचित समझता है। अजमेर मे होने वाले अखिल-भारतीय साधु-सम्मेलन के पश्चात् आवश्यकता होने पर पजाबी साधु-सघ एकत्रित होकर फिर विचार कर सकेगा।

(३) पक्षपात के वश होकर वर्द्धमान, वीरसन्देश आदि पत्रो और विज्ञापनो द्वारा, चतुर्विध सघ के सम्बन्ध मे जो गलत लेख प्रकाशित होते रहे हैं, उनके लिए तिरस्कार-सूचक प्रस्ताव पास होना चाहिये।

इस प्रस्ताव का गणी मुनि श्री उदयचन्द्रजी महाराज ने बडे ही मार्मिक शब्दो मे अनुमोदन किया। जिसका वहा उपस्थित कई मुनिराजो ने समर्थन किया।

अन्त मे यह प्रस्ताव निम्न स्वरूप मे पास हुआ, कि—'यह मुनि-मण्डल (साधु-सम्मेलन कुछ वर्ष पूर्व जो विज्ञापनबाजी और जैन आफताब, वर्द्धमान तथा वीर-सन्देश के लेखों के द्वारा, दोनों पक्ष के अर्थात् पत्रीपक्ष और परम्परापक्ष के मुनिराजों एव आर्याओं या चतुर्विध सघ पर राग द्वेष आदि के वशीभूत होकर, असत्य और व्यर्थ लेख लिखे तथा छापे गये हैं, उन्हें शुद्धान्तःकरण से अत्यन्त शोकप्रद, निन्दनीय, सघ की क्षति करने वाले और धर्म के लिये हानिकारक मानता हुआ तिरस्कार की दृष्टि से देखता और निकृष्ट कृत्य समझ कर अमान्य मानता है।'

(४) पहले के निन्दात्मक पत्र फाड़ दिए जावे। भविष्य में जिस साधु या आर्या की आचार विषयक कोई बात सुनी जावे, तो उससे कहे बिना किसी गृहस्थ से न कहनी चाहिये। यदि वे न मानें तो उनके साथ यथोचित वर्ताव करना चाहिये। यदि कोई, उस व्यक्ति से कहे बिना ही कोई बात लोगों से कह दे, तो उसे भी यथोचित शिक्षा देनी चाहिये। इस नियम की रचना हो जाने के पश्चात् यदि किसी मुनि या आर्या के पास, किसी के निन्दात्मक-पत्र हों, तो उन्हें फाड़ डालें। भविष्य मे न तो अपने पास कोई इस प्रकार के पत्र रक्खे और न ऐसा पत्र लिखें किंवा लिखने के लिये किसी को उत्तेजना ही दें। यदि कोई गृहस्थ आदि, किसी साधु या साध्वी के विषय मे कोई बात कहे, तो उस मुनि या आर्या से पूछे बिना, उस बात पर विश्वास न किया जाय और न जनता के सामने वह अप्रकट बात रक्खी ही जाय। यदि, कोई मुनि या आर्या, उपरोक्त नियम का पालन न करे, तो उन्हें यथोचित-शिक्षा दी जानी चाहिये। इस नियम की रचना के पश्चात् भी यदि मुनि या आर्याए इस प्रकार के पत्रों को रक्खेंगी तो अपमानित और श्रीसघ की चोर समझी जायगी। यह प्रस्ताव, सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

(५) साधु या आर्याएं, किसी भाई या बहिन को, अपने दर्शनों का नियम न करवावें।

सर्व-सम्मति से यह तय हुआ कि प्रेरणा करके अपना पक्षीय बनाने के लिये, ऐसा नियम न करवाया जावे।

(६) सब आचार्यों पर मुख्याचार्य होने चाहिए।

सर्व-सम्मति से पास हुआ, कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन मे रक्खा जाय।

(७) शङ्कित प्रश्नों का यथोचित समाधान होना चाहिये, अर्थात् शास्त्रोद्धार होना चाहिये।

सर्व-सम्मति से पास हुआ, कि प्रतियों मे जो लिखित अशुद्धियां हों, उन्हें प्राचीन प्रतियों के आधार पर शुद्ध करने का कार्य, अखिल भारतवर्षीय साधु-सम्मेलन पर छोड़ दिया जाय जो अजमेर में होने वाला है।

[श्री उपाध्यायजी महाराज के प्रस्ताव]

(१) श्री प्रवर्तिनीजी की आज्ञा के बिना जो आर्याएं हैं, वे श्री प्रवर्तिनीजी की आज्ञा में की जावें। यदि वे यों न मानें तो गणी, आचार्य और उपाध्याय उन्हें समझाकर आज्ञा मे करें और फिर प्रवर्तिनीजी से कहा जावे, कि वे उन्हें भलीभाति आज्ञा मे रक्खें। निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव वर्तमान आचार्य से सम्बन्ध रखता है।

(२) सब आचार्यो के एकत्रित हो जाने पर, फिर गणी, आचार्य और उपाध्याय, प्रवर्तिनीजी से मिल कर चार गणावच्छेदिकाए नियत करें, जिससे सब आचारों की भलीभाति रक्षा की जा सके। यह प्रस्ताव भी वर्तमान आचार्य मे सम्बन्ध रखता है।

(३) जो साधु या आर्याएं आचार्य श्री की आज्ञा मे हों उनके साथ साधु व आर्याए वन्दना आदि क्रियाओं का यथाविधि पालन करें। स्वेच्छापूर्वक यानी बिना आचार्य महाराज की आज्ञा वन्दनादि व्यवहार न छोड़ें, जिससे सघ मे एकता तथा प्रेम की वृद्धि और आज्ञा का पालन होता रहे।

[युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज के प्रस्ताव]

(१) दीक्षा से पूर्व, वैरागी को अर्थसहित प्रतिक्रमण सिखलाना चाहिये। यदि उसका कोई बुजुर्ग या मित्र भी साथ ही दीक्षित होना चाहता है, तब उसका प्रतिक्रमण मूलमात्र सम्पूर्ण होना चाहिये।

(२) निश्चित्-कोर्स समाप्त किए बिना, आम जनता मे उपदेश न देना चाहिए।

पास हुआ कि एक कमेटी बनाई जाय, जो कोर्स नियत करे। यह प्रस्ताव, बृहत्सम्मेलन में भी रखा जावे।

(३) प्रत्येक गच्छ मे आचार्य होने चाहियें, और सब आचार्यों पर एक मुख्याचार्य होना चाहिये, उनके मातहत, मुनियों की एक कौन्सिल होनी चाहिए।

सर्वसम्मति से पास हुआ, कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।

(४) सब गच्छों का मुख्य नाम, श्री सुधर्मागच्छ होना चाहिये। उपनाम जो-जो हों वही रहें। (सर्व-सम्मति से स्वीकार किया गया।)

(५) किसी का साधु, यदि क्लेश करके आ गया हो, तो उसे समझा कर फिर वहीं भेज देना चाहिए, अपने पास न रखना चाहिये। (यह भी सर्वसम्मति से मजूर किया गया।)

(६) मुनियो को, आर्याओं के मकान में जाना और बैठना नहीं। यदि, कारणवश जाना पड़े; तो बिना श्रावक और श्राविका की मौजूदगी के वहा न ठहरें। इसी प्रकार से आर्याओं के विषय में भी समझें। (सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव भी स्वीकार हुआ।)

(७) प्रत्येक प्रान्त में, एक स्थविर साधुशाला होनी चाहिये। सर्व सम्मति से निश्चित हुआ, कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन मे रक्खा जाय।

(८) एक सम्प्रदाय से निकले हुए साधु को दूसरा कोई साधु दीक्षित न करे। (यह प्रस्ताव भी सर्व सम्मति से पास हुआ।)

(९) साधु व आर्याएं, फोटो न खिचवावें।

सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव इस रूप से पास हुआ, कि उदीरणा करके अपनी मान प्रतिष्ठा के लिए फोटो न खिचवावें। यदि, धर्म प्रचारार्थ किसी का फोटो हो, तो बात दूसरी है। लेकिन, श्रावकों व भक्तजनों को चाहिए, कि उसकी पूजा न करें। क्योंकि, वह केवल लिबास की यादगार के बतौर है। (आखरी निर्णय के लिए बृहत्-सम्मेलन में रक्खा जाय।)

(१०) भण्डे पकरण गृहस्थ को देकर अन्य नगर न पहुँचाये जावें। (सर्व सम्मति से यह भी स्वीकृत हुआ)

(११) सब गच्छों की श्रद्धा-प्ररूपणा एक होनी चाहिये। (सर्व सम्मति से पास हुआ, कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।)

(१२) जहा तक हो सके, स्वदेशी वस्त्र ही लेने चाहियें। (सर्वसम्मति से पास, बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय)

[मुनि श्री खुशरूरामजी के शिष्य मुनि श्री दुर्गादासजी महाराज के प्रस्ताव]

(१) क्या श्री भगवान महावीर के सिद्धान्तो का सन्देश, प्रत्येक मनुष्य तक पहुँचाना आवश्यक है? (सर्व सम्मति से निश्चित हुआ, कि पहुँचाना जरूरी है।)

(२) अगर जरूरी है तो वह सन्देश कैसे पहुँचाया जा सकता है? (सर्व सम्मति से पास हुआ, कि तहरीर व तकरीर द्वारा।)

(३) प्रत्येक श्रावक-श्राविका के लिए रात्रि-भोजन का त्याग निहायत जरूरी है। (सर्व सम्मति से पास हुआ, कि सभी साधु तथा आर्याओं को चाहिये, कि इस विषय पर उपदेश करते रहें।)

(४) जिन साधु का अपने शहर में चातुर्मास करवाना हो, उस गच्छ की स्वीकृति के बिना न करवाया जावे। (सर्व सम्मति से निश्चित हुआ, कि बृहत्साधु-सम्मेलन में यह प्रस्ताव रक्खा जाय।)

(५) पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज का वार्षिक-दिवस, आषाढ़ कृष्णा २ को मनाना चाहिये। (सर्व सम्मति से स्वीकृत।)

(६) तीन वर्ष मे, प्रत्येक प्रांत का साधु-सम्मेलन होना चाहिये और इस वर्ष के पश्चात् बृहत्साधु-सम्मेलन होना चाहिये। (सर्व सम्मति से निश्चित हुआ, कि बृहत्साधु-सम्मेलन में यह प्रस्ताव रक्खा जाय।)

(७) जो वर्तमान आचार्य हों, उनका वार्षिक पाटमहोत्सव होना चाहिये। (सर्व-सम्मति से स्वीकृत।)

(८) मुनि पाठशाला, पजाब में शीघ्र स्थापित होनी चाहिये। (सर्वसम्मति से पास हुआ, कि शीघ्र स्थापित होनी चाहिये।)

[मुनि श्री नरपतरायजी महाराज के प्रस्ताव]

(१) अन्य प्रांतों के साधु यदि किसी प्रांत मे आवें, तो जिस शहर में मुनि-महाराज विराजमान हों, उनकी परीक्षा और स्थानीय-मुनियों की स्वीकृति के बिना उनका व्याख्यान न होना चाहिए। (निश्चित हुआ, कि यह प्रस्ताव महा-सम्मेलन में रक्खा जाय।

अपनी ओर से मुनि श्री नेकचन्दजी तथा पं० मुनि श्री रामस्वरूपजी को भेजा) गणावच्छेदक मुनि श्री जयरामदासजी तथा प्रवर्तक मुनि श्री शालिग्रामजी (जिन्होंने उपाध्यायजी को होशियारपुर मुनि-सम्मेलन मे पधारने की आज्ञा दी) आदि को धन्यवाद दिये बिना नही रह सकता, क्योंकि यह सब उन्हीं महानुभावों की कृपा का फल है, जो आज होशियारपुर मुनि-सम्मेलन, आनन्दपूर्वक अपने कार्य को सफल कर सका है। (ह० गणि उदयचन्दजी—अध्यक्ष)

साम्प्रदायिक-सम्मेलन

स० १९८८ बैशाख कृष्णा ६ बुधवार से लीम्बडी (मोटा) सम्प्रदाय का साधु-सम्मेलन हुआ। मुनिवर ठा० २२ पधारे थे।

गुर्जर श्रावक-समिति की बैठक भी यहा लीम्बडी मे ही ता० २५, २६, २७ मई सन् १९३२, बैसाख कृ० ६, ७, ८ बुध-गुरु-शुक्रवार को हुई।

स० १९८९ ज्येष्ठ शु० ५ गुरुवार से इन्दौर में ऋषि-सम्प्रदाय का सम्मेलन हुआ और बिखरी हुई सम्प्रदाय ने ८० वर्ष बाद आगम द्धारक, बा० ब्र० अमोलख ऋषिजी म० सा० को आचार्य पद दिया। मुनिराज ठा० १४ पधारे थे। शेष के सन्देश और प्रतिनिधित्व प्राप्त थे। कार्यवाही के साथ १०५ प्रस्ताव पास किये।

ता० २६-२-३३ से पूज्य श्री मुन्नालालजी म० सा० की सम्प्रदाय का सम्मेलन भीलवाड़ा में हुआ। मुनि ठा० ३६ सम्मिलित हुए थे। पूज्य श्री अमोलख ऋषिजी म० सा० ठा० ६ भी इस अवसर पर पधारे थे। तीन दिन की कार्यवाही मे प्रगतिशील ११ प्रस्ताव पास किये गये।

दरियापुरी-सम्प्रदाय के साधु-साध्वियो का सम्मेलन ता० ५, ६ दिसम्बर सन् १९३२, स० १९८९ मिगसर शु० ८, ९ सोम-मगलवार को कलोल मे हुआ। मु० ठा० १५ और महासतियाँ ठा० ११ की तथा श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति मे ३५ प्रस्ताव हुये।

ऋषि-सम्प्रदायी सन्त सम्मेलन प्रतापगढ़ (मालवा) मे स० १९८९ पोष कृ० से हुआ। महासतीजी ठा० तथा मार्गदर्शन के लिये पूज्य श्री आदि ठा० १६ भी उपस्थित थे। कुल १५ प्रस्ताव पास किये।

जमनापार के पूज्य श्री रतनचन्द्रजी म० की सम्प्रदाय के मुनिवरों ने महेन्द्रगढ मे सम्मिलित होकर पूज्य श्री मोतीरामजी म० सा० को आचार्यपद दिया।

कच्छ आठ कोटी मेटीपक्ष का सम्मेलन मांडवी मे स० १९८९ पौष शु० १५ मगलवार को किया। ३८ प्रस्ताव पास करके वैमनस्य मिटाकर सगठित हुए।

श्रावको की साधु-सम्मेलन मे उत्साहवर्धक कार्यवाही :—

(१) प्रान्तीय और साम्प्रदायिक साधु-सम्मेलनों को प्रेरणा और मार्गदर्शन दिया।

(२) जो २ साधु सम्मेलन हुये, उनकी सुदृढ़ता के लिये श्रावक-समितियों का भी निर्माण कराया।

(३) प्रान्त २ में उत्साह जगाने के लिये तथा साधु-सम्मेलन समिति के श्रावकों को सतत् जागृत और कर्तव्य परायण रखने के लिये भिन्न २ स्थान पर १४ बठकें कीं।

(४) भारत व्यापी दौरा करने के लिये चार डेप्युटेशन बनाये जिनमें बडे २ अग्रेसर श्रावकों ने लम्बे समय तक साथ दिया।

(५) सम्मेलन के समय अशांति के प्रसंग को रोककर अनुकूल वातावरण फैलाने के लिये ६ सज्जनों और २ मंत्रियों की 'श्री साधु-सम्मेलन सरक्षक समिति' बनी। जिसने अजमेर साधु-सम्मेलन के दिनों में समय २ पर पांच बैठकें कीं और जाहिर निवेदनों द्वारा शांति का प्रयत्न किया।

उपरोक्त प्रत्येक प्रवृत्तियों में मन्त्रीजी स्व० धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई जौहरी की तथा सहमंत्री श्री धीरजलाल के० तुरखिया उपस्थित रहते थे और प्ररणा देते थे। आवश्यकता पड़ने पर श्रीमान् सरदारमलजी सा० छाजेड़ ने भी सहमन्त्री पद का भार सभाला।

अजमेर सम्मेलन को सफल बनाने के लिये अजमेर के उत्साही युवक भाइयों ने तथा श्रीसघ ने काफी परिश्रम किया। देश २ के अग्रेसरों ने अजमेर में एक २ मास पूर्व अपना निवास बना लिया। और तन, मन, धन का भोग दिया।

अ० भा० श्वे० स्था० साधु-सम्मेलन, अजमेर

जैन समाज के ही नहीं, अपितु आर्यावर्त के इतिहास में अजर-अमर पुरी अजमेर का साधु-सम्मेलन एक चिरस्मरणीय और उज्ज्वल प्रसग बना रहेगा। श्रमण भगवान महावीर के निर्वाण के बाद सबसे पटना मे, बाद में लगभग ३०० वर्ष के मथुरा में और वीर-सवत् ६८० मे काठियावाड की राजधानी वल्लभीनगरी में श्री देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण के नेतृत्व मे जैन साधुओं का बृहत् साधु-सम्मेलन होने का और जैन सूत्र सिद्धान्त लिपि-बद्ध करने का ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध होता है।

वल्लभी के बाद आज लगभग १५०० वर्ष बाद समस्त आर्यावर्त के स्थानकवासी जैन-समाज के सभी गच्छ, सम्प्रदाय, उप-सम्प्रदाय आदि के पूज्य और पडित मुनिराज एकत्रित हुए जिन्होंने जैन समाज के न के लिए और ज्ञान, दर्शन, चारित्र की श्रीवृद्धि के लिए, विचार-विनिमय करके एक विधान बनाने का शुभनिश्चय प्रकट कर अजमेर के इस सम्मेलन का ऐतिहासिक रूप प्रदान कर दिया। इस सम्मेलन की शुरूआत ता० ५-४-३३ से अजमेर में हुई, जिसमें २२५ मुनिराजों ने भाग लिया। सम्मेलन ता० १६-४-३३ तक चला।

सम्मेलन में पधारने के लिए हमारे इन त्यागी मुनिराजों ने सैकड़ों मीलों का प्रवास किया था और नाना परिषहों को सहन करते हुए वे अजमेर पधारे थे। यहां हम विस्तार-भय से आने वाले सभी मुनिराजों का न देकर केवल उनकी सख्या और प्रतिनिधि मुनिराजों के नाम ही प्रकट कर रहे हैं।

१ पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय (दरियापुरी)

इस सम्प्रदाय में मुनि २० और आर्याजी ५६ = कुल सख्या ७६ साधु-सन्त थे, जिनमें से ७ अजमेर पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराज ४ थे जिनके नाम इस प्रकार हैं :—

१. पं० मुनि श्री पुरुषोत्तमजी म०, २. पं० मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म०, ३. पं० मुनि श्री सुन्दरजी म०, ४. पं० मुनि श्री आपचन्द्रजी म०।

ये सन्त वीरगाम से लगभग ३२५ मील का विहार कर अजमेर पधारे थे।

२ खंभात-सम्प्रदाय

इस सम्प्रदाय में मुनि ८ आर्याजी १० = कुल १८ साधु साध्वी थे। जिनमें से ५ मुनिराज सम्मेलन में आये थे। प्रतिनिधि मुनियों के नाम इस प्रकार हैं :—

१. पूज्य श्री छगनलालजी म०, २ पं० मुनि श्री रतनचन्द्रजी म० ।

ये सन्त अहमदाबाद से लगभग ३०० मील का विहार कर पधारे थे ।

३ लींबड़ी (छोटी) सम्प्रदाय

मुनि २६ आर्याजी ६६ = कुल सख्या ६५ । सम्मेलन में ११ मुनिराज पधारे थे । प्रतिनिधि मुनिराजों के नाम इस प्रकार हैं :—

१ तपस्वी मुनि श्री शामजी म०, २. शता० प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म०, ३. कविवर्य पं० मुनि श्री नानचन्द्रजी म०, ४ प० मुनि श्री पूनमचन्दजी म० ।

ये सन्त लींबडी से लगभग ४२५ मील का विहार कर पधारे थे ।

४ लींबड़ी (नानी) सम्प्रदाय

मुनि ७ आर्याजी १६ = कुल सख्या २६ । सम्मेलन में ३ मुनिराज पधारे थे । प्रतिनिधि मुनिराज ये थे— प० मुनि श्री मणिलालजी म० ।

ये सन्त लींबडी से लगभग ४२५ मील का विहार करके पधारे थे ।

५ गौंडल-सम्प्रदाय

मुनि २०, आर्याजी ६६ = कुल सख्या ८६ । सम्मेलन में २ मुनिराज पधारे थे जिनमें से प्रतिनिधि ये थे— १. प० मुनि श्री पुरुषोत्तमजी म० ।

आप आबू तक ही पधार सके । पांव की तकलीफ से आगे आपका विहार न हो सका ।

६ बोटाद-संप्रदाय

मुनि १०, आर्याजी नहीं = कुल सख्या १० । सम्मेलन में ३ मुनिराज पधारे थे । जिनमें से प्रतिनिधि ये थे :—पं० मुनि श्री माणकचन्दजी म० ।

ये सन्त पालियाद से लगभग ४६० मील का विहार कर पधारे थे ।

७ सायला-संप्रदाय

मुनि ४ आर्याजी नहीं = कुल सख्या ४ । इस सम्प्रदाय के साधु सम्मेलन में नहीं पधारे थे । परन्तु अपना प्रतिनिधित्व बोटाद-सम्प्रदाय के प० मुनि श्री शिवलालजी म० को दिया था ।

८ आठ-कोटि (मोटी पक्ष) संप्रदाय

मुनि २२, आर्याजी ३६ = कुल सख्या ५८ । सम्मेलन में ३ सन्त पधारे थे और तीनों ही प्रतिनिधि ये थे :—

१ युवाचार्य श्री नागचन्द्रजी म०, २ प मुनि श्री चतुरलालजी म०, ३ मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० ।

ये सब काडाकरा (कच्छ) से लगभग ५५० मील का विहार कर पधारे थे ।

९ पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ६५, आर्याजी ११० = कुल सख्या १७५ । सम्मेलन में ४१ सन्त पधारे थे प्रतिनिधि ये थे :—

१. पूज्य श्री जवाहरलालजी म० ।

आपके साथ चार सलाहकार मुनिराज भी पधारे थे। आप जोधपुर से १५० मील का विहार कर पधारे थे।

१० पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज की सम्प्रदाय

मुनि ४४, आर्याजी ३१ = कुल सख्या ७५। सम्मेलन मे ३७ मुनिराज पधारे थे। जिनमें से प्रतिनिधि मुनिराज इस प्रकार थे :—

१ पूज्य श्री मन्नालालजी म०, २. प्र० व० प० मुनि श्री चौथमलजी म०, ३ प० मुनि श्री शेषमलजी म०।

पूज्य श्री मन्नालालजी म० मन्दसौर से लगभग १६० मील का विहार कर डोली मे पधारे थे। प्र० व० चौथमलजी म० मनमाड से ६०० मील का विहार कर पधारे थे।

(११) पूज्य श्री नानक रामजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ५, आर्याजी १० = कुल सख्या १५। सम्मेलन मे ४ मुनिराज पधारे थे, जिनमें से २ प्रतिनिधि मुनिराज ये थे :—

१. प्रवर्त्तक मुनि श्री पन्नालालजी म०, २ प० मुनि श्री हगामीलालजी म०।

विहार किशनगढ़ से १६ मील।

१२ पूज्य श्री स्वामीदासजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ५, आर्याजी १२ = कुल सख्या १७। सम्मेलन में ५ मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराजों के नाम ये हैं :—

१. प्रवर्तक मुनि श्री फतहलालजी महाराज, २ प० मुनि श्री छगनलालजी म०। विहार पीह (मेरवाड़) से १५ मील।

१३ पूज्य श्री रतनचंद्रजी महाराज की सम्प्रदाय

मुनि ६, आर्याजी ३८ = कुल सख्या ४७। सम्मेलन में ८ मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराजों के नाम इस प्रकार हैं :—

१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म०, २. प० मुनि श्री भोजराजजी म०, ३. पं० मुनि श्री चौथमलजी म०। विहार रतलाम से २५० मील।

१४ पूज्य श्री ज्ञानचंदजी महाराज की संप्रदाय

मुनि १३, आर्याजी १०५ = कुल सख्या ११८। सम्मेलन मे १० मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनियों के नाम इस प्रकार हैं :—

१. प० मुनि श्री पूरणमलजी म०, २. प० मुनि श्री इन्द्रमलजी म०, ३. प० मुनि श्री मोतीलालजी म० ४. प० मुनि श्री सिरेमलजी म०, ५ प० मुनि श्री समरथमलजी म०।

१५ पूज्य श्री मारवाडी चौथमलजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ३, आर्याजी १५ = कुल सख्या १८। प्रतिनिधि मुनिराज इस प्रकार हैं :—

१. प० मुनि श्री चांदमलजी म० (पू० श्री जयमलजी म० की सम्प्रदाय के), २. पं० मुनि श्री रूपचन्दजी म०। विहार सोजत रोड से ७५ मील।

१६ पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ९, आर्याजी ८१ = कुल सख्या ९० । सम्मेलन में ७ मुनिराज पधारे थे, जिनमें से प्रतिनिधि मुनिराजों के नाम इस प्रकार हैं :—

(१) प्रवर्तक मुनि श्री दयालचन्द्रजी म०, (२) पं० मुनि श्री ताराचन्दजी म०, (३) पं० मुनि श्री हेमराजजी म०, (४) प० मुनि श्री नारायणदासजी महाराज । विहार समदड़ी से १४० मील ।

१७ पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ४, आर्याजी १५ = कुल सख्या १९ । सम्मेलन मे ४ मुनिराज पधारे थे । प्रतिनिधि मुनिराज निम्न थे :—

(१) प्रवर्तक मुनि श्री धीरजलालजी म०, (२) मत्री मुनि श्री मिश्रीमलजी म० ।

१८ पूज्य श्री जयमलजी महाराज की संप्रदाय

मुनि १३, आर्याजी ९० = कुल सख्या १०३ । सम्मेलन में ११ मुनिराज पधारे थे । प्रतिनिधि मुनिराजों के इस प्रकार हैं :—

(१) क मुनि श्री हजारीमलजी म०, (२) पं० मुनि श्री गणेशमलजी म०, (३) मंत्री मुनि श्री चौथमल जी म०, (४) पं० मुनि श्री वक्तावरमलजी म०, (५) प० मुनि श्री चांदमलजी म० । विहार ब्यावर से ३३

१९ पूज्य श्री एकलिंगदासजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ८, आर्याजी ३५ = कुल संख्या ४३ । सम्मेलन में ४ मुनिराज पधारे थे । जिनमें से प्रतिनिधि मुनिराज ये थे :—

(१) प० मुनि श्री जोधराजजी म०, (२) पं० मुनि श्री बिरदीचंदजी म० । विहार देवगढ़ से १००

२० पूज्य श्री शीतलदासजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ५, आर्याजी ११ = कुल सख्या १६ । सम्मेलन में ५ मुनिराज पधारे थे । प्रतिनिधि मुनियों के इस प्रकार हैं :—

(१) प० मुनि श्री भूरालालजी म०, (२) पं० मुनि श्री छोगालालजी म० । विहार पहुना (मेवाड़) से ९० मील ।

२१ पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज की संप्रदाय

मुनि २४, आर्याजी ८१ = कुल सख्या १०५ । लन में १६ सन्त पधारे थे । प्रतिनिधि मुनियों की नामावली इस प्रकार है :—

(१) पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म०, (२) तप० मुनि श्री देवजी ऋषिजी म०, (३) पं० मुनि श्री ऋषिजी म०, (४) आत्मार्थी मुनि श्री मोहन ऋषिजी म०, (५) पं० मुनि श्री विनय ऋषिजी म० । विहार भोपाल से ४१० ।

२२ पूज्य श्री धर्मदासजी म० की संप्रदाय

मुनि १५, आर्याजी ७४ = कुल सख्या ८९ । सम्मेलन मे ६ मुनिराज पधारे थे । जिनमें प्रतिनिधि मुनिराज ये थे :—

(१) प्रवर्तक मुनि श्री ताराचन्दजी म०, (२) मुनि श्री किशनलालजी म०, (३) पं० मुनि श्री सौभाग्यमल जी म०, (४) प० मुनि श्री सूरजमलजी म० । विहार उज्जैन से २६६ मील ।

२३ श्री रामरतनजी महाराज की सम्प्रदाय

मुनि ३ आर्याजी २ = कुल सख्या ५ । सम्मेलन मे २ मनिराज पधारे थे । प्रतिनिधि मुनि ये थे :—
प० मुनि श्री धनसुखजी म० । विहार शाहपुरा से लगभग ६० मोल ।

२४ पूज्य श्री दौलतरामजी म० (कोटा) की संप्रदाय

मुनि १३, आर्याजी २६ = कुल सख्या ३६ । सम्मेलन मे ७ मुनिराज पधारे थे । प्रतिनिधि मुनिराज निम्न थे :—

(१) प० मुनि श्री रामकुमारजी म०, (२) प० मुनि श्री विरदीचन्दजी म०, (३) तपस्वी मुनि श्री देवीलालजी म० ।

विहार सवाई माधोपुर से १२५ मील । तपस्वी मुनि श्री देवीलालजी म० घेटी से ५८८ मील का विहार विहार कर अजमेर पधारे थे ।

२५ पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ७३, आर्याजी ६० = कुल १३३ । सम्मेलन मे २५ सन्त पधारे थे । प्रतिनिधि मुनिराजों की नामावली इस प्रकार है :—

(१) युवाचार्य मुनि श्री काशीरामजी म०, (२) गणि० मुनि श्री उदयचन्दजी म०, (३) उपाध्याय मुनि श्री आत्मारामजी म०, (४) प० मुनि श्री मदनलालजी म०, (५) पं० मुनि श्री रामजीलालजी म० ।

विहार रामपुरा (पजाब) से ४८० मील ।

२६ पूज्य श्री नाथूरामजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ७, आर्याजी १० = कुल संख्या १७ । सम्मेलन में २ सन्त पधारे थे और दोनों ही निम्न प्रतिनिधि थे :—

(१) पं० मुनि श्री फूलचन्दजी म०, (२) पं० मुनि श्री कुन्दनमलजी म० । विहार मलेर कोटला से ४७५ मील ।

२७ पूज्य श्री मोतीलालजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ७, आर्याजी नहीं = कुल सख्या ७ । सम्मेलन में ४ मुनिराज पधारे थे । प्रतिनिधि मुनिराज ये थे :—(१) मुनि श्री पृथ्वीचन्दजी म० ।

अजमेर साधु-सम्मेलन में सकारण न पधार सकने वाले मुनिराज

१ गौंडल-सम्प्रदाय

मुनि २०, आर्याजी ६६ = कुल संख्या ८६ ।
प्रतिनिधि मुनि आबू तक आकर पैर की बीमारी से आगे न बढ़ सके ।

२ गौंडल-संघाणी-सम्प्रदाय

आर्याजी २५, मुनि नहीं । सम्प्रदाय मे मुनि न होने से पधार न सके ।

३ बरवाला-संप्रदाय

मुनि ४, आर्याजी २०=कुल सख्या २४। सभी वृद्ध मुनि होने के कारण पधार न सके।

४ कच्छ आठ-कोटि (छोटो-नानी) पक्ष

मुनि १४, आर्याजी २५=कुल सख्या ३ । शारीरिक कारण से न पधार सकेंगे। ऐसा पत्र आया।

इस सम्मेलन के समय समस्त भारतवर्ष मे विचरण करने वाले स्थानकवासी जैन-साधुओं की संख्या ४६३ और आर्याजी की सख्या ११३२, कुल १५६५ साधु-साध्वियो की सख्या थी। एकल-विहारी और संप्रदाय से बाहर सन्तों की सख्या अलग समझनी चाहिये।

इन मुनिराजों मे से अजमेर-सम्मेलन के समय २३८ मुनिराजों की ओर ४० साध्वियों की उपस्थिति थी। प्रतिनिधि मुनिराज ७६ थे।

सम्मेलन लाखनकोठरी मर्मेयों के नोहरे मे भीतरी चौक के वट-वृक्ष के नीचे हुआ था।

इस सम्मेलन के समय समस्त हिंद के कोने २ से दर्शनार्थियों का जन-समूह उमड़ पड़ा था। लगभग ५० हजार भाई-बहिन इस समय अजमेर मे आये थे। इतने बडे जन-समूह की व्यवस्था करना बड़ा कठिन काम था, फिर भी अजमेर सघ ने तथा सम्मेलन के सयोजकों ने जा व्यवस्था की थी वह अपूर्व ही थी।

अ० भा० स्था० जैन मुनि संमेलन का सं०-विवरण

प्रारंभ ता. ५-४-३३ समाप्ति ता. १६-४-३३

सम्मेलन मे प्रतिनिधियों की बैठक

प्रस्तावना—अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी समाज मे भिन्न २ बत्तीस ३२ सम्प्रदाय हैं। जिनमे कुल मुनियों की संख्या ४६३ और आर्याजी की सख्या ११३२ है। इनमे से २६ सम्प्रदायों के मुनिराज २४० की संख्या मे उपस्थित हो सके थे। उनमे से निम्नोक्त ७६ मुनिराज अपनी २ सम्प्रदाय का प्रतिनिधित्व लेकर पधारे थे :—

(१) पूज्य श्री मन्नालालजी म० (पूज्य श्री हुक्मीचदजी म० की स०), (२) प० मुनि श्री खूबचन्दजी म० (पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की स०), (३) प्र० व० प० मुनि श्री चौथमलजी म० (पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की स०) (४) प० मुनि श्री शेषमलजी म० (पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की स०), (५) पूज्य श्री अमोलख ऋषिजी म० (ऋषि स०), (६) तप० मुनि श्री देवजी ऋषिजी म० (ऋषि स०), (७) प० मुनि श्री आनन्दऋषिजी म० (ऋषि स०) (८) प० मुनि श्री मोहन ऋषिजी म० (ऋषि स०), (९) प० मुनि श्री विनय ऋषिजी म० (ऋषि स०), (१०) प० मुनि श्री पूर्णमलजी म० (पू० श्री ज्ञानचन्दजी म० की स०), (११) प० मुनि श्री इन्द्रमलजी म० (पू० श्री ज्ञानचन्दजी म० की स०), (१२) प० मुनि श्री श्रेयमलजी म० (पूज्य श्री ज्ञानचन्दजी म० की स०), प० मुनि श्री समर्थमलजी म० (पूज्य श्री ज्ञानचन्दजी म० की स०), (१४) प० मुनि श्री मोतीलालजी म० (पूज्य श्री ज्ञानचन्दजी म० की सं०), (१५) प० मुनि श्री ताराचन्दजी म० (पूज्य श्री माधव मुनिजी म० की स०), (१६) प० मुनि श्री किशनलालजी म० (पूज्य माधव मुनिजी म० की सं०), (१७) प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० (पूज्य माधव मुनिजी म० की सं०), (१८) प० मुनि श्री सूर्यमलजी म० (पूज्य माधव मुनिजी म० की स०), (१९) प० मुनि श्री धनसुखजी म० (पूज्य श्री रामरतनजी म० की स०) (२०) प० मुनि श्री छोगालालजी म० (पूज्य श्री शीतलदासजी म० की स०), (२१) प० मुनि श्री भूरालालजी म० (पू० श्री शीतलदासजी म० की सं०), (२२) पूज्य श्री हस्तीमलजी म० (पूज्य श्री रतनचन्दजी म० की सं०), (२३) प० मुनि श्री भोजराजजी म० (पूज्य श्री रतनचन्द्रजी म० की सं०), (२४) पं० मुनि श्री चौथमल०

म० (पूज्य श्री रतनचन्द्रजी म० की सं०) (२५) प० मुनि श्री पृथ्वीचन्द्रजी म० (पूज्य श्री मोतीलालजी, म० की सं०) (२६) गणी श्री उदयचन्दजी म० (पूज्य श्री सोहनलालजी म० की सं०), (२७) उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० (पूज्य श्री सोहनलालजी म० की स०), (२८) युवाचार्य श्री काशीरामजी म० (पूज्य श्री सोहनलालजी म० की सं०), (२९) प० मुनि श्री मदनलालजी म० (पूज्य श्री सोहनलालजी म० की सं०), (३०) प० मुनि श्री रामजीलालजी म० (पूज्य श्री सोहनलालजी म० की सं०) (३१) पूज्य श्री जवाहरलालजी म० (पूज्य श्री हुक्मीचन्द्जी म० की सं०), (३२-३५)—चार सलाहकार (पू० श्री हुक्मीचन्दजी म० की सं०), (३६) प० मुनि श्री माणकचन्द्जी म० (बोटाद-सम्प्रदाय), (३७) प० मुनि श्री शिवलालजी म० (सायला स०), (३८) शास्त्रज्ञ श्री मणिकलालजी म०, (लींबडी नानी स०), (३९) प० मुनि श्री पूनमचन्दजी म० (लींबडी नानी सं०), (४०) तपस्वी मुनि श्री शामजी स्वामी (लींबडी मोटी-सं०), (४१) शता० प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० (लींबडी मोटी स०), (४२) कविवर्य प० मुनि श्री नानचन्द जी म० (लींबडी मोटी-सं०), (४३) प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० (अवधानी) (लींबडी मोटा-सं०), (४४) पूज्य श्री छगनलालजी म० (खंभात-सं०), (४५) प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० (खंभात सं०), (४६) प० म० श्री पुरुषोत्तमजी म० (दरियापुरी सं०), (४७) प० मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म० (दरियापुरी सं०), (४८) पं० मुनि श्री सुन्दरलालजी म० (४९) प० मुनि श्री आपचन्दजी म० (दरियापुरी सं०), (५०) युवाचार्य श्री नागचन्द्रजी म० (आठकोटी मोटी पक्ष), (५१) प० मुनि श्री चतुरलालजी म० (आठ कोटी मोटी पक्ष), (५२) प० मुनि श्री रत्नचन्द्जी म० (आठ कोटी मोटी पक्ष), (५३) प्रवर्तक श्री दयालचन्द जी म० (पूज्य श्री अमरसिंहजी म० की स०), (५४) प० मुनि श्री ताराचन्दजी म० (पू० श्री अमरसिंहजी म० की स०), (५५) प० मुनि श्री हेमराजजी म० (पू० श्री अमरसिंहजी म० की स०), (५६) प० मुनि श्री नारायणदासजी महाराज (पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय) (५७) प० मुनि श्री हजारीमलजी म० (पू० श्री जयमल्लजी म० की सं०), (५८) प० मुनि श्री गणेशीमलजी म० (पू० श्री जयमल्लजी म० की सं०), (५९) प० मुनि श्री चौथमलजी म० (पूज्य श्री जयमल्लजी म० की सं०), (६०) प मुनि श्री बक्तावरमलजी म० (पूज्य श्री जयमल्लजी म० की स०), (६१) प० मुनि श्री चेनमलजी म० (पू० श्री जयमल्लजी म० की सं०), (६२) प० मुनि श्री धैर्यमलजी म० (पू० श्री रघुनाथजी म० की स०), (६३) प० मुनि श्री मिश्रीलालजी म० (पू० श्री रघुनाथजी म० की स०), (६४) प० मुनि श्री फतेहलालजी म० (पू० श्री स्वामीदासजी म० की सं०), (६५) पं० मुनि श्री छगनलालजी म० (पू० श्री स्वामीदासजी म० की सं०), (६६) पं० मुनि श्री पन्नालालजी म० (पू० श्री नानकरामजी महाराज की सं०) (६७) प० मुनि श्री हगामीलालजी म० (पू० श्री नानकरामजी म० की सं०) (६८) प० मुनि श्री चांदमलजी म० (पूज्य श्री चौथमलजी म० की सं०), (६९) प० मुनि श्री रूपचन्दजी म० (पूज्य श्री चौथमलजी म० की सं०) (७०) प० मुनि श्री फूलचन्दजी म० (पूज्य श्री नाथुरामजी म० की सं०), (७१) प० मुनि श्री कुन्दनमलजी म० (पूज्य श्री नाथुरामजी म० की सं०), (७२) प० मुनि श्री जोधराजजी म० (पूज्य श्री एकलिंगदास जी म० की सं०), (७३) प० मुनि श्री वृद्धिचन्द्रजी म० (पूज्य श्री एकलिंगदासजी म० की सं०), (७४) पं० मुनि श्री रामकुमारजी म० (पूज्य श्री दौलतरामजी म० कोटा सं०), (७५) प० मुनि श्री वृद्धिचन्द्जी म० (पूज्य श्री दौलतरामजी म० कोटा सं०) (७६) प० मुनि श्री देवीलालजी म० (पूज्य दौलतरामजी म० कोटा सं० ।

उपर्युक्त ७६ मुनिराजों की बैठक समान आसन पर गोलाकार रूप में हुई थी। मध्य में हिन्दी और गुजराती के लेखक मुनिराज विराजमान थे। वक्ता मुनिराज अपने अपने स्थान पर ही खडे होकर अपने विचार प्रकट करते थे। इन प्रतिनिधि मुनिराजों की सभा मे शान्तिरक्षा के लिए गणी श्री उदयचन्द्रजी म० तथा शता० प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० को शांतिरक्षक चुना गया था। हिंदी लेखक श्री उपाध्यायजी आत्मारामजी म० और

गुजराती लेखक लघु शतावधानी श्री सौभाग्यचन्द्रजी म० नियुक्त किये गये थे। दोनों के सहायक के रूप में मुनि श्री मदनलालजी म० तथा विनय ऋषिजी महाराज चुने गये थे। कार्यवाही प्रारम्भ होने से पूर्व शता० पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० का मंगलाचरण होता था। सम्मेलन का कार्य-क्रम सरल बनाने के लिये निम्नोक्त २१ मुनिराजों की एक विषय निर्धारि ी समिति का सर्वानुमति से चुनाव किया गया था जो सभा मे पेश किए जाने वाले विचारणीय विषयों का निर्णय करती थी।

(१) गणी श्री उदयचन्दजी म०, (२) पू० श्री अमोलक ऋषिजी म०, (३) प० मुनि श्री छगनलालजी म०, (४) उपाध्याय श्री आत्मारामजी म०, (५) पं० मुनि श्री मणिलालजी म०, (६) प० मुनि श्री पुरुषोत्तमजी म०, (७) पं० मुनि श्री श्यामजी म०, (८) पं० मुनिश्री हर्षचन्द्रजी म०, (९) शतावधानी पं० मुनि श्री रतनचन्द्रजी म०, (१०) प्र० व० पू० मुनि श्री चौथमलजी म०, (११) कविवर्य श्री नानचन्द्रजी म०, (१२) युवाचार्य श्री काशीरामजी म०, (१३) पं० मुनि श्री ताराचन्दजी म०, (१४) पं० मुनि श्री पन्नालालजी म०, (१५) पं० मुनि श्री चौथमलजी म०, (१६) प० मुनि श्री पृथ्वीचन्दजी म०, (१७) प० मुनि श्री कुन्दनलालजी म०, (१९) प० मुनि श्री समरथमलजी म०, (२०) प० मुनि श्री मोहन ऋषिजी म०, (२१) पूज्य श्री हस्तीमलजी म०।

इस समिति का कोरम ११ का रखा गया था। प्रतिदिन प्रतिक्रमण के बाद रात्रि मे इस समिति की होती थी।

मुनि-सम्मेलन की कार्यवाही

प्रस्ताव १—(प्रतिनिधियों का निर्णय)

विभिन्न सम्प्रदायों को समान समाचारी से एक सूत्र मे ग्रथित करने के लिये और सम्मेलन द्वारा की हुई कार्यवाही को अमल मे लाने के लिए—२१ मुनियों की सख्या वाली सम्प्रदाय मे से १, बाईस से इक्कावन मुनियों की सख्यावाली सम्प्रदायों में से २, बावन से ८१ मुनिसंख्या वाली सम्प्रदायों में से तीन और इससे अधिक मुनि संख्यावाली सम्प्रदायों में से चार प्रतिनिधि चुने जाय। इस क्रम से निम्नोक्त मुनि-समिति कायम की जाती है:—

सम्प्रदाय	प्रतिनिधि संख्या	
(१) पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की सम्प्रदाय	४	१. पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज २. „ „ मुन्नालालजी महाराज आदि २
(२) „ सोहनलालजी म० की „	४	१. युवा० श्री काशीरामजी महाराज २. गणी श्री उदयचन्दजी „ ३. उपा० श्री आत्मारामजी „ ४ प० मुनि श्री मदनलालजी „
(३) पूज्य श्री लवजी ऋषिजी म० की „	२	१ पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी महाराज २. पं० मुनि श्री आनद ऋषिजी म०
(४) खंभात सम्प्रदाय	१	१ पूज्य श्री छगनलालजी महाराज
(५) पूज्य श्री रतनचन्दजी म० की „	१	१ „ श्री हस्तीमलजी „
(६) दरियापुरी सं०	१	१ पं० मुनि श्री पुरुषोत्तमजी „
(७) लींबडी सं० (मोटा)	२	१ शता० श्री रतनचन्द्रजी महाराज
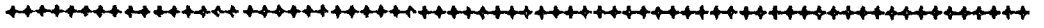
सम्प्रदाय	प्रतिनिधि संख्या	नाम
		२. कविवर्य श्री नानचन्द्रजी महाराज
(८) लींबडी (नानी) सं	१	१. प० मुनि श्री मणिलालजी "
(९) कच्छ आठकोटी (मोटी पक्ष) सं०	२	१. युवा० श्री नागचन्द्रजी "
		२. प० मुनि श्री देवचन्द्रजी "
(१०) पूज्य श्री मोतीरामजी म० (जमनानगर) की सं०	१	१. पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्रजी "
(११) " जयमल्लजी महाराज की सम्प्रदाय	१	१ प० मुनि श्री हजारीमलजी "
(१२) " रघुनाथजी "	१	१. " मिश्रीमलजी "
(१३) " चोथमलजी "	१	१. " शार्दूलसिंहजी "
(१४) " अमरसिंहजी "	१	१ " दयालचन्दजी "
(१५) " नानकरामजी "	१	१. " पन्नालालजी "
(१६) " स्वामीदासजी "	१	१. प० मुनि श्री फतेहचन्दजी "
(१७) " नाथूरामजी "	१	१. " फूलचन्दजी "
(१८) " धर्मदासजी "	३	१ पूज्य श्री ताराचन्दजी "
		२. प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी "
		३ " समर्थमलजी "
(१९) पूज्य श्री शीतलदासजी म० की सं०	१	१ " छोगालालजी "
(२०) " रामरतनजी म० "	१	१ " धनसुखजी "
(२१) " कोटा सं०	१	१ " रामकुमारजी "
(२२) " एकलिंगदासजी म० की स०	१	१. " जोधराजजी "
(२३) " बोटाद सं०	१	१ " माणकचन्दजी "
(२४) " गोंडल स०	१	१. " पुरुषोत्तमजी "
(२५) " सायला-सं०	१	१. " संघजी "
(२६) " बरवाला सं	१	१. " मोहनलालजी "

प्रस्ताव २—(अध्यक्ष व मन्त्री का चुनाव)

इन उपरोक्त ३८ मुनियों में से प्रांतानुसार निम्नोक्त पांच कार्यवाहक-मन्त्री और एक अध्यक्ष नियत किये जाते हैं :—

(१) गुजरात, काठियावाड़ और कच्छ के मन्त्री शता० पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० ।

(२) पंजाब-प्रांत के मन्त्री—उपाध्यायजी श्री आत्मारामजी म० ।

(३) दक्षिण प्रांत के मन्त्री—पं० मुनि श्री आनन्दऋषिजी म० ।

(४) मेवाड़, मालवा प्रांत के मन्त्री—पू० श्री हस्तीमलजी म० ।

(५) मारवाड़ प्रांत के मन्त्री—प० मुनि श्री छगनलालजी म० ।

अध्यक्ष पद पर पू० श्री सोहनलालजी म० नियुक्त किए गए ।

प्रस्ताव ३—(प्रतिनिधि की योग्यता व कार्य)

(१) प्रत्येक सम्प्रदाय के समझदार-निष्पक्षपाती व न्याय दृष्टि वाले मुनि श्री को ही प्रतिनिधि चुनें

(२) साधु-सम्मेलन मे प्रस्तावित प्रस्तावों का यथातथ्य पालन कराते हुए सम्प्रदाय में शांति का राज्य स्थापित करना और विशिष्ट कार्य हो तो मत्री को सूचित करना प्रत्येक प्रतिनिधि का कर्तव्य है।

प्रस्ताव ४—(मन्त्री की योग्यता व कार्य)

(१) मन्त्री-प्रभावशाली-बुद्धिमान और कार्यदक्ष होने चाहिये।

(२) अपने प्रान्त की प्रत्येक सम्प्रदाय पर लक्ष रखते हुए प्रतिनिधियों को पूर्णरूप से मदद करना और कोई विशिष्ट कार्य हो तो पांचों मन्त्री मन्त्रणा करके निर्णय होवे वैसा कार्य करना मत्री का कर्तव्य है।

प्रस्ताव ५—(अध्यक्ष की योग्यता व कार्य)

(१) अध्यक्ष-प्रभावशाली, प्रौढ, अनुभवी-शास्त्रज्ञ देश-काल के जानकार और चारों तीर्थ पर वात्सल्य भाव रखने वाले होने चाहिये।

(२) समिति के प्रत्येक अग का निरीक्षण करते रहना, परस्पर का सगठन कायम रखना और परस्पर प्रेम-वृद्धि का प्रयत्न करना।

(३) किसी भी सम्प्रदाय को समाचारी के नियम पालन के लिये अथवा प्रेमवृद्धि, शिक्षा इत्यादि कार्यों मे सहायता की आवश्यकता हो तो उसका प्रबन्ध करना।

(४) सकल श्रीसंघ की उन्नति हो ऐसा कार्य मन्त्री द्वारा कराना और समाज में जागृति हो ऐसे उपाय करना अध्यक्ष का कर्त्तव्य है।

प्रस्ताव ६—(समिति का कार्य-क्षेत्र)

(१) इस साधु-सम्मेलन में जो कार्यग्राही हो उसके पालन करने पर अधिक लक्ष्य देना।

(२) उत्तरोत्तर सम्प्रदायों मे परस्पर प्रेमवृद्धि, ऐक्य वृद्धि, व सगठन दृढ़ हो ऐसा प्रचार करना। भविष्य में इसका सम्मेलन ११ वर्ष मे भरने के लिये यथायोग्य प्रबन्ध करना।

(३) ज्ञान-प्रचारक मण्डल व दर्शन प्रचारक मडल के हर एक प्रकार से सहायता करना और उनको सुदृढ़ बनाना।

(४) जैन-समाज के सामाजिक सुधार पर ध्यान रखते हुए जैनेतर समाज मे जैनधर्म का प्रचार करना।

(५) इस समिति की बैठक प्रत्येक पांच वर्ष मे भिन्न २ प्रांतों मे करना जिसके लिए उपयुक्त स्थान तथा समय का निर्णय प्रतिनिधियों की सलाह लेकर अध्यक्ष कर सकते हैं।

नोट—कार्य विशेष प्रसग उपस्थित होने पर इस अवधि के पूर्व भी प्रांतिक-सम्मेलन भरा जा सकता है।

(६) प्रांतीय सम्मेलन तथा बृहत्सम्मेलन का कोरम प्रतिनिधि सख्या के दो तृतीयांश भाग के अनुसार समझना। यदि कोई कारणवश न आ सके तो अन्य द्वारा अपना मत प्रदर्शित करना चाहिये। कार्यवाहक मन्त्री व अध्यक्ष की उपस्थिति तो कोरम में अनिवार्य है।

(७) समिति के प्रस्ताव यथाशक्य सर्वानुमति से या बहुमति मे पास हो सकते हैं। यदि समान मत हों तो अध्यक्ष के दो मत लेकर बहुमत से प्रस्ताव पास किया जा सकता है।

(८) कोई भी सम्प्रदाय किसी भी अन्य सम्प्रदाय की निंदा या टीका टिप्पणी न करें।

(९) पांच वर्ष मे प्रातीय-सम्मेलन के पहले २ निकटवर्ती सम्प्रदायें मिल कर अपने गण की व्यवस्था करें और बारह ही संभोग खुले करें।

प्रस्ताव ७—(दीक्षा-विषयक)

(१) दीक्षार्थी दीक्षा लेने से पूर्व अपने गुरु महाराज को ऐसा प्रतिज्ञापत्र लिख कर देवे कि 'मैं आपकी आज्ञा में ही संयम पालता हुआ विचरूंगा, आज्ञा बिना कोई काम करूंगा नहीं। मेरे पास जो शास्त्र, उपाधि इत्यादि है वे सब आपकी नेश्राय के है इसलिए जब तक सम्प्रदाय की और आपकी आज्ञा में रहूँगा तब तक उन पर मेरा अधिकार है।

(२) दीक्षा लेने वाले की आयु उत्सर्ग मार्ग मे १६ वर्ष की निश्चित की जाती है। अपवाद मार्ग मे तत्सम्प्रदाय के आचार्य श्री और जिन सम्प्रदाय मे आचार्य न हो तो उसके कार्यवाहक पर छोड़ी जाती है।

(३) योग्य व्यक्ति को ही आचार्य अथवा कार्यवाहक श्रीसंघ की अनुमति से दीक्षा दे सकते हैं।

(४) अभ्यास-दीक्षार्थी को कम से कम साधु प्रतिक्रमण तो आना ही चाहिए।

(५) जाति—हम जिस जाति से आहार-पानी ले सकते है। ऐसे ही उच्च जातिवन्त को दीक्षा दे सकते हैं।

(६) भंडोपकरण—दीक्षा प्रसंग पर दीक्षार्थी के कल्पानुसार जितने वस्त्र-पात्र उपकरणादि लेने की आवश्यकता है उसमे अधिक उसके निमित्त से लेना नहीं।

(७) दीक्षोत्सव—दीक्षा प्रसंग पर श्रावक वर्ग अधिक आडम्बर करे तथा दीक्षोत्सव एक दिन से अधिक करें उस निमित्त से अथवा ता तपोत्सव, लोचोत्सव, संवत्सरी क्षमापना—या मुनि दर्शन की आमन्त्रण पत्रिका निकाले तो इन सब आडम्बरो को मुनिराज उपदेश द्वारा रोके।

(८) पुन दीक्षा—मुनि वेष मे जिसने चौथे महाव्रत का भंग किया हो ऐसा सप्रमाण सिद्ध हो जाय तो उसका वेष लेकर सम्प्रदाय के बाहर कर सकते है। उसको अन्य सम्प्रदाय वाले दीक्षा न दें। कदाचित् उसका मन चारित्र मार्ग मे पुन स्थिर हो जाने का विश्वास हो जाय तो साम्प्रदायिक संघ की आज्ञा से उसी सम्प्रदाय मे पुन वह दीक्षा ग्रहण कर सकता है।

(९) अन्य सम्प्रदाय से कोई साधु या साध्वी आ जाय तो उसको समझा कर मूल सम्प्रदाय मे भेज देवें—यदि सम्प्रदाय के अग्रेसर की आज्ञा प्राप्त हो जाय तो योग्यता देखकर अपना सम्प्रदाय की मर्यादानुसार उसको रख सकते है।

(१०) बिना किसी विशेष कारण के कोई साधु या साध्वी दीक्षा छोड़कर चला गया हो और फिर वह कहीं दीक्षा लेना चाहे तो उस सम्प्रदाय के आचार्य या कार्यवाहक की अनुमति लेकर पुन दीक्षा दे सकते हैं। परन्तु अस्थिर दशा से दुबारा चारित्र छोड़ दे तो फिर उसको दीक्षा देना नहीं।

(११) किसी भी दीक्षार्थी को उसके संरक्षक या सम्बन्धियों की आज्ञा मिलने के पहले मुनिवेष पहनने की प्रेरणा करना नहीं, और उसको किसी प्रकार की सहायता भी करना नहीं। कदाचित् वह अपनी इच्छा से ही मुनिवेष धारण कर ले तो उसको कहीं भी अपने साथ रखना नही। आहार-पानी देना या दिलाना नहीं। जो कोई साधु या साध्वी इसके विरुद्ध आचरण करेगा तो उसको शिष्यहरण का प्रायश्चित आवेगा।

(१२) किसी भी अन्य सम्प्रदाय के दीक्षार्थी, शिष्य और शिष्या को अपनी सम्प्रदाय मे लेने के लिये फरमाना नही।

(१३) अपने शिष्य का दोष जानकर उसके गुरु आहार-पानी अलग कर सकते है तथा बड़ा दोष हो तो आचार्य तथा स्थानीय सघ की सम्मति लेकर सम्प्रदाय से बाहर भी कर सकते हैं। परन्तु ज्ञान की कमी होने से, प्रकृति न मिलने से या अगोपांग अशक्त होने से अपने शिष्य को अलग नहीं कर सकते हैं। जो आचार्य, कार्य-वाहक या गुरु इन कारणों से अपने शिष्य को अलग कर देगा तो उसको नये शिष्य या शिष्या करने का अधिकार नहीं रहेगा।

प्रस्ताव ८– (एकलविहारी के लिये)

एकल विहारी तथा स्वच्छन्दाचारी मुनियों को यह सम्मेलन सूचना करता है कि वे एक वर्ष के अ दर अपनी सम्प्रदाय मे मिल जावें। अन्यथा ऐसे मुनिराजों के साथ केवल आहार-पानी और उतरने के लिये मकान के अतिरिक्त अन्य सत्कार श्री सघ न करे।

नोट—इस प्रश्न को जल्दी से निपटाने के लिये एकल विहारी तथा स्वच्छदाचारी से निवेदन है कि वे अपनी अनुकूलता तथा प्रतिकूलता का निर्णय करके साधु सम्मेलन समिति को ज्ञान करावें।

(२) एक से अधिक जो गुरु अथवा आचार्य की आज्ञा बिना स्वतत्र विचरते हैं ऐसे मुनिराजों को एक वर्ष के अन्दर २ अपनी सम्पदाय मे अथवा अन्य सम्प्रदाय मे मिल जाना चाहिये। ऐसा करने वाले साधु सम्मेलन की आज्ञा मे गिने जायेंगे अन्यथा ऐसे मुनिराजों के साथ एकल विहारी का बर्ताव श्री सघ कर सकेगा।

(४) आचार्य तथा सम्प्रदाय के मुख्य मुनिराजों से नम्र निवेदन है कि वे प्रकृति न मिलने से या ज्ञान की न्यूनता से सम्प्रदाय से अलग रहे हुए मुनिराजों को अपने मे मिलाने के लिये एक वर्ष तक यत्न करें और फिर भी नही मिल सकें तो अन्य सम्प्रदाय मे जाने क लिये आज्ञा दे देवें।

(४) सम्प्रदाय के आचार्य तथा कार्यवाहक की आज्ञा बिना विचरने वाले साधु साध्वियों का व्यख्यान चतुर्विध श्री सघ नहीं सुने तथा उनका पक्ष भी नही करे। चारित्रवान को करने योग्य विधि-वदन या सत्कार नहीं करें, मकान व आहार-पानी की मनाई नहीं है।

प्रस्ताव ९—(चातुर्मास के सबध मे)

(१) स्थानीय स्थानकवासी सकल श्री सघ की सम्मति से सघ जिस सम्प्रदाय को विनती करे वही सम्प्रदाय वहां चातुर्मास करें, अन्य नहीं तथा सकल श्री सघ एकत्रित होकर विनती न करें तो कोई भी सम्प्रदाय वहा चातुर्मास नहीं करें।

(२) स्थानीय एकल विहारी श्रीसघ की प्रार्थना से शेषकाल अथवा चातुर्मास मे एक ग्राम या नगर मे एक ही व्याख्यान करें। यदि सकारण अन्य सम्प्रदाय के मुनिराज वहां विराजते हों तो भी पृथक व्याख्यान तो देवे ही नहीं।

(३) स्थानीय सकल श्री सघ की विनती से जहां पर साध्वीजी का चातुर्मास निश्चित हो वहां पर साधुजी चातुर्मास नहीं करें। परन्तु कारण वशात् मुनिराजों का विराजना हो तो मुनि श्री की आज्ञा बिना आर्याजी का व्याख्यान नहीं हो सकेगा।

(४) फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा के पहले किसी भी सम्प्रदाय को चातुर्मास की विनती स्वीकार नहीं करना चाहिए। श्रीसघ को भी विनती आचार्यश्री या कार्यवाहक को भेजनी चाहिये।

(५) क्षेत्र विभाग—एक सम्प्रदाय के चतुर्मासिक क्षेत्र की मर्यादा मे अन्य सम्प्रदाय के मुनियों को रहना हो तो वे उस सम्प्रदाय के मुख्य मुनि की सम्मति से रहे और उस सम्प्रदाय की परम्परा के विरुद्ध प्ररूपणा नहीं करें।

प्रस्ताव १०—(चातुर्मासिक कल्प के संबंध मे)

(१) चातुर्मास पूर्ण होने के बाद पुन शेषकाल रहने की इच्छा हो तो दो माह के बाद रह सकते हैं और दो चातुर्मास अन्य क्षेत्र मे करने के बाद उसी जगह तीसरा चातुर्मास कर सकते है।

(२) चातुर्मास करने के बाद दो माह के पश्चात् का समय शेषकाल गिना जाय। कदाचित् उसमे कम दिन रह जाय तो फिर से आकर रह सकते हैं परन्तु शेषकल्प (एक मास मे बाकी रहे हुए दिनों से अधिक रहना चाहे तो जितने दिन अधिक रहना हो उनसे दुगुने दिन अन्य क्षेत्र मे रह आने के बाद ही शेष कल्प मे बाकी रहे हुए दिनो से अधिक रह सकते है।

(३) जितने साधु साध्वीजी शेषकाल या चातुर्मास मे साथ रहे हैं उन सभी के लिये कल्प संबंधी ऊपर का नियम समान है। परन्तु उनमे जो बडे तथा उनसे भी अधिक प्रव्रज्या वाले, दूसरे मुख्य साधुजी के साथ वे ऊपर के कल्प अनुसार रह सकेंगे।

(४) साधु या साध्वीजी को स्थिरवास रहने की आवश्यकता पडे, तब अपने आचार्य या कार्यवाहक मुनिराज की आज्ञानुसार जिस क्षेत्र मे रहने का फरमावे उसमे रह सकते हैं।

नोट—आचार्य व कार्यवाहक को चाहिये कि वे उनके लिये भिन्न २ क्षेत्र रोके नहीं।

(५) स्थिरवास मे रहे हुए साधु साध्वीजी की सेवा मे रहे हुए सन्तों या साध्वियों का भी प्रतिवर्ष परिवर्तन होता रहे तो अच्छा है।

(६) जहा श्री संघ मे क्लेश चलता हो अथवा जहां जाने से संघ मे अश्रेय होना संभव हो वहां चातुर्मास या शेष कल्प करना नहीं।

श्री ज्ञान-प्रचारक मण्डल की योजना

प्रस्ताव ११—(श्री ज्ञान प्रचारक मंडल की योजना)

पंजाब के लिये—(१) पू० श्री सोहनलालजी म० (शास्त्रीय) (२) गणीजी श्री उदयचन्दजी म० (आर्य समाज के सामने) (३) उपाध्यायजी आत्मारामजी म० (शास्त्रीय) (४) प० मुनिश्री हेमचन्द्रजी म० (५) कविवर्य श्री अमरचन्द्रजी म० (६) प० मुनि श्री फूलचन्दजी म० (संयोजनादि कार्यक्रम) (७) प० मुनि श्री अमरचन्दजी म० (काव्यादि)

मारवाड के लिये—(१) पू० श्री अमोलकऋषिजी म० (२) पू० श्री जवाहरलालजी म० (३) प० मुनि श्री पन्नालालजी म० (४) पू० श्री हस्तीमलजी म० (५) (युवा० श्री गणेशीलालजी म० (६) प० मुनि श्री आनन्दऋषिजी म० (७) प० मुनि श्री सूर्यमुनिजी म० (८) प० मुनि श्री चौथमलजी म०

गुजरात काठियावाड के लिये—(१) पं० मुनि श्री मोहनलालजी म० (प्रश्नोत्तर) (२) प० मुनि श्री माणिलालजी म० (भूगोल खगोल) (३) प० मुनि श्री मूलचन्दजी म० (शास्त्रीय) (४) शता० प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० (निबंध, अध्यापन) (५) प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० (निबंध, अध्यापन) (६) प० मुनि श्री छोटेलालजी म० (लेखन) (७) पं० मुनि श्री हर्षचन्दजी म० (लेखन, अध्यापन)

कच्छ के लिये:—(१) प० मुनि श्री नागचदजी म० (२) प० मुनि श्री देवचदजी म०

प्रस्ताव १२—नये तैयार न हो वहां तक निम्नोक्त वक्ताओं में से दर्शन प्रचारक मडल नियत किया जाता है।

प्र० व० प० मुनि श्री चौथमलजी म० (मालवा) कविवर्य श्री नानचन्दजी म० (काठियावाड) प० मुनि श्री पन्नालालजी म० (मारवाड) प० मुनि श्री अजीतमलजी म० (पजाब) युवाचार्य श्री काशीरामजी म० (पजाब) प० मुनि श्री मदनलालजी म० (पजाब) प० मुनि श्री प्रेमचन्द्रजी म० (पजाब) प० मुनि श्री नरपतरायजी म० (पंजाब) प० मुनि श्री शुक्लचन्द्रजी म० (पजाब) प० मुनि श्री रामसरूपजी म० (पजाब) प० मुनि श्री मोहनऋषिजी म० (पजाब) प० मुनि श्री आणंदऋषिजी म० (पजाब) प० मुनि श्री कृष्णाचन्द्रजी म० (मालवा) प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० (मालवा) प० मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० (मारवाड) प० मुनि श्री छगनलालजी म० (मारवाड) प० मुनि श्री मिश्रीलालजी म० (मारवाड)

प्रस्ताव १३—मुनिराजों तथा साध्वियों को प्रकाशन कार्य के साथ बिल्कुल सबध नही रखना चाहिये। क्योंकि यह कार्य कॉन्फरन्स की प्रकाशन समिति के आधीन है। साधु-साध्वियों को क्रय-विक्रय के साथ भी किसी प्रकार का सबध नहीं रखना चाहिये।

नोट—साहित्य परीक्षक साधु श्रावक समिति जिस पुस्तक को पास करे उसी का प्रकाशन हो सकेगा। निरुपयोगी साहित्य पर समिति का अकुश रहेगा।

प्रस्ताव १४—साधु व साध्वियों के लिये अभ्यास का प्रबध शाला रूप में होना चाहिये। इस योजना का अमल होने से पूर्व आर्याजी साध्वीजी या शिक्षित बहिन के पास से पढ़े। यदि धर्मज्ञ पुरुष के पास अभ्यास करना पड़े तो दो बहिनों की साक्षी बिना अभ्यास नही करना।

प्रस्ताव १५—ज्ञान प्रचारक मडल की योजनानुसार सिद्धान्त-शाला आदि सस्था आरभ होने पर पृथक २ स्थानों पर पडितों का रखना बद कर देना।

प्रस्ताव १६—शास्त्रोद्धारक मडल, व्याख्यातृवर्ग तथा विद्याध्ययन करने के लिये प्रविष्ट हुए मुनिराज परस्पर बारह सभोग खुला करें ऐसा तय किया जाता है।

प्रस्ताव १७—प्रत्येक सम्प्रदाय के आचार्य तथा कार्यवाहकों से यह सम्मेलन प्रार्थना करता है कि वे अपनी २ सम्प्रदाय मे आर्याजी का भी सुव्यवस्थित सगठन करें और उनकी ज्ञानवृद्धि हो ऐसे उपाय करें।

प्रस्ताव १८—(प्रतिक्रमण सबधी) (१) साधु-श्रावक-प्रतिक्रमण, विधि, पाठशुद्धि-अशुद्धि, दीक्षाविधि और प्रत्याख्यानविधि का निर्णय करने के लिये निम्नोक्त मुनियों की एक समिति नियुक्त की जाती है जो बहुमति से जो निर्णय करेगी वह सब को मान्य होगा—

(१) पूज्य श्री अमोलखऋषिजी म० (२) पूज्य श्री हस्तीमलजी म० (३) उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० (४) पूज्य श्री छगनलालजी म० (५) पूज्य श्री सौभाग्यमलजी म० (६) पूज्य श्री शामजी स्वामी

(२) साधु साध्वियों को मुनि प्रतिक्रमण देवसी, रायसी, पक्खी, चौमासी और सम्वत्सरी का एक ही प्रतिक्रमण करना, दो नहीं। और कायोत्सर्ग देवसी रायसी ४ लोगस्स, पक्खी को ८ चौमासिक १२ और सम्वत्सरी को २० लोगस्स का करना। इसी तरह श्रावक गण को भी करने बाबत यह सम्मेलन सूचित करता है।

प्रस्ताव १९—(प्रायश्चित विषयक)

प्रायश्चित विधि का निर्णय करने के लिये यह सम्मेलन निम्नोक्त ३ मुनिराजों को नियत करता है और वे छः मास के अन्दर जो निर्णय देंगे वह सब को मान्य होगा।—

(१) पूज्य श्री मन्नालालजी म० (२) पूज्य श्री अमेलकऋषिजी म० (३) प० मुनि श्री मणीलालजी म०

प्रस्ताव २०—(आगमोद्धार विषयक)

आगम साहित्य का संशोधन करने के लिये और पाठकों को सरलता से सूत्रज्ञान हो ऐसे आगमों के संस्करण तैयार कराने के लिये निम्न लिखित मनिराजो की एक आगमोद्धारक समिति कायम की जाती है।

(१) गणी श्री उदयचन्द्रजी म० (२) शता० प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० (३) प० मुनि श्री मणिलालजी म० (४) पूज्य श्री अमेलखऋषिजी म० (५) पूज्य श्री आतमारामजी म० (६) युवा० श्री काशीरामजी म० (७) प० मुनि श्री अमरचन्द्रजी म० (८) पूज्य श्री हस्तीमलजी म० (६) शता० प० श्री सौभाग्यचन्द्रजी म० (१०) प० मुनि श्री मोहनलालजी म० (११) प० मुनि श्री घासीलालजी म० (१२) प० मुनि श्री प्यारचन्दजी म० (१३) पूज्य श्री हेमचन्दजी म० (१४) प० मुनि श्री सूरजमलजी म०

इस समिति के सदस्य मुनिराज चातुर्मास मे यथा सम्भव प्रयत्न करेंगे और चातुर्मास के बाद एक स्थान पर सभी सदस्य एकत्रित होकर साथ रहने का स्थान निश्चित कर उपरोक्त आगमोद्धार का कार्य करेंगे।

प्रस्ताव २१—पक्खी-सम्वत्सरी विषयक

यह साधु सम्मेलन, पक्खी, चौमासी, सम्वत्सरी आदि तिथि पर्व का निर्णय करने के लिए कॉन्फरन्स ऑफिस को सत्ता देता है कि ऑफिस निष्पक्षपात एवं लौकिक तथा लोकोत्तर ज्योतिषशास्त्रज्ञ विद्वान मुनियों और श्रावकों का, लोंकागच्छीय विद्वान और अन्य विद्वानो की सलाह लेकर लौकिक व लोकोत्तर मार्ग का अविरोधी मध्यम श्रेणी का मार्ग अनुसरण करके पक्खी, चौमासी सम्वत्सरी आदि पर्वों का सर्वदा के लिए निर्णय करें। जिसके अनुसार हम सब चलें और उस निर्णय के विरुद्ध कोई पर्व नहीं करें।

नोट :—नं० (१) यह निर्णय कॉन्फरन्स की छपी हुई पंचवर्षीय टीप के पूरी होने से पहले ही हो जाना चाहिये।

नोट नं (२) पंजाब में पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज साहब की सम्प्रदाय तथा गुजरात, काठियावाड़ और कच्छ की सम्प्रदाय वाले मुनि एवं पर्व और सभी तिथियां कॉन्फरन्स की टीप के अनुसार करें। पक्खी-चौमासी सम्वत्सरी तो सब सम्प्रदाय वाले एक ही करेंगे।

प्रस्ताव २२—(सचित्ताचित्त विषयक)

सचित्ताचित्त निर्णय के लिये:-(१) शतावधानी प० मुनि श्री रतनचन्द्रजी म० (२) उपाध्याय श्री आतमारामजी म० और (३) सलाहकार पू० श्री जवाहरलालजी म०, इन तीन मुनियों की समिति नियत की गई थी। उनका निर्णय इस प्रकार रहा:—

(१) केले के विषय में बृहत्कल्प सूत्र में 'तालपलंब' शब्द है, उसमे ताल शब्द से ताड-फल लिया जाता है और पलंब शब्द से भाष्यकार ने तो उपयोगी फल मात्र लिया है। परन्तु टीकाकारने कदली फल स्पष्ट रूप से लिखा है। ताल शब्द से तो कदली फल नहीं लिया जा सकता, परन्तु पलंब शब्द से कदली फल लिया जा सकता है।

एक अनुभवी माली कदली फल के लिये लिखता है कि 'हजारों केले के वृक्षों मे एक आध ही बीजवाला केला मिलता है, जिसमें बैंगन के समान बीचमे का गुच्छा होता है और सूखने के बाद वे ऊग सकते हैं। ऐसे बीजवाले केले बहुत ही मोटे होते हैं।

इस अनुभवी के शब्दों से सामान्य केले की जाति तो उचित ही माननी चाहिये। कोई विलक्षण केला बीजवाला हो तो वह सचित्त है, किन्तु सामान्य केले तो अचित्त ही मानने में आते हैं। किसी केले में काली भांई दिखाई दे तो उसका निर्णय माली के पास से कर लेना चाहिये।

(२) धान्य सचित्त है या अचित्त ? इसका निर्णय करने के लिये प० मुनि श्री कुन्दनलालजी म० ने निम्नोक्त प्रस्ताव रखा —

(अ) तीन प्रकार की योनियां श्री पन्नवणाजी के नव मे पद मे जीव 'सचित्त, अचित्त और मिश्र, बताई हैं। इन तीनों मे जीव पैदा हो सकता है या नहीं ?

(ब) धान्यादि में जो २४ प्रकार का अनाज बताया गया है, जिसका आयुष्य तीन से सात वर्ष का सूत्र में बताया हैं, इस अवधि के बाद उसको सचित्त समझना या अचित्त ?

(क) पांच स्थावर मे एक जीव रहता है या नहीं, यदि एक ही जीव रहता हो तो उसकी आहार विधि क्या है ?

नोट—इन प्रश्नों का बहुमत से जो निर्णय होगा वह मुझे मान्य होगा। यह प्रस्ताव सभा मे पास होने के बाद इसका निर्णय करने के लिये निम्नोक्त १० मुनिराजों की समिति बनाई गई थी.—

(१) पू० श्री अमोलकऋषिजी म० (२) पू० श्री छगनलालजी म० (३) पू० श्री हस्तीमलजी म० (४) युवा० श्री काशीरामजी म० (५) युवा० श्री नागचन्दजी म० (६) प० मुनि श्री मणीलालजी म० (७) प० मुनि श्री शामजी स्वामी (८) प० मुनि श्री नानचन्दजी म० (९) प० मुनि श्री समर्थमलजी म० (१०) सलाहकार पूज्य श्री जवाहरलालजी म०। इन मुनियों की समिति ने बहुमति से जो निर्णय दिया वह इस प्रकार हैं:—

(अ) सचित्त, अचित्त और मिश्र तीनों योनियों से जीव पैदा हो सकते हैं।

(ब) चौबीस-प्रकार के धान्य शास्त्रीय प्रमाण से ७ वर्ष की अवधि पूर्ण हुए पश्चात् अबीज हो सकते है तथा योनियों का नाश हो जाता है। इसमे अबीज और अयोनी धान्य अचित्त होना सभव है।

शास्त्र मे 'बीजाणि हरियाणीव परिवज्जतो चिट्ठेज्जा' इत्यादि पर बीजों का ससर्ग सूत्रकार ने निषेध किया है। अबीज का निषेध नही है और ठाणांग आदि मे सात वर्ष की अवधि बाद बीज को अबीज होना कहा है। इससे अबीज को अचित्त मानना यह आगम प्रमाण से सिद्ध है। परन्तु लौकिक व्यवहार के लिये ससर्ग नहीं करना और उसे टालना यही उचित है।

चार स्थावर से भिन्न वनस्पति का निरूपण शास्त्र मे मिलता है—जैसे ठाणांग सूत्र मे सात वर्ष तक बीज का सचित्त होना। अतएव प्रत्येक बीज मे एक बीज का होना आगम प्रमाण से सिद्ध होता है। वनस्पति के आहारक विधान अनेक तरह है अत निश्चय ज्ञानी गम्य है।

(३) सचित्ताचित-निर्णायक-समिति यह सूचित करती है कि अनेक फलों तथा वस्तुओं का सचित्ताचित निर्णय करना आवश्यक है। जैसे—

(१) ऋतु पक्व फल (बीज रहित) (२) केला (३) सतरा (४) पिस्ता (५) किशमिश (६) अंगूर (७) नारगी (८) बादामगिरी (९) कालीमिर्च (१०) खरबूजा (११) सरदा (१२) इलायची (१३) सफेद मिर्च (१४) तरबूज (१५) द्राक्ष (१६) बडीहरड़ (१७) सेंधानमक (१८) सेव (१९) पीपल (२०) अनारदाना शक्कर के संयोग

से अचित्त होते हैं या नहीं ? (२१) बर्फ, जो मशीन से बनाया जाता है सचित्त है या अचित्त ? (२२) बैटरी की बिजली सचित्त है या अचित्त ?

उपरोक्त निर्णय किसी अनुभवी द्वारा कॉन्फरन्स ऑफिस करवा ले, क्योंकि यह कार्य प्रयोग रूप में मुनियों से नहीं हो सकता है।

प्रस्ताव २५—(आक्षेप निराकरण के विषय में)

यू० पी० प्रांत से आई हुई दरख्वास्त पर विचार विनिमय करके यह सम्मेलन प्रकट करता है कि कॉन्फरन्स स्वयं अपनी तरफ से 'आक्षेप निवारिणी समिति' मुकर्रर करे जिसके द्वारा समाज पर होने वाले आक्षेपों का निराकरण किया जा सके। इस समिति को साहित्यादि संबंधी आवश्यकता प्रतीत हो तो मुनिमंडल से भी सहायता मिल सकेगी।

प्रस्ताव २६—(समाचारी के विषय मे)

(१) शय्यातर की आज्ञा लेने के बाद वापिस संभलाने तक उसके घर का आहार-पानी त्याग करना।

(२) मकान मालिक को या पहले से ही मकान जिसके सुपुर्द हो, उसको, यदि पंचायती हो तो पंचों में से एक व्यक्ति को शय्यांतर गिनना।

(३) साधु साध्वी बाहर गांव से दर्शनार्थ आये हुए गृहस्थियों से निर्दोष आहार ले सकते हैं। इसमें दिनों की मर्यादा की आवश्यकता नहीं है।

(४) अपने साथ विहार में चलने वाले गृहस्थ से आहार पानी लेना नहीं, कोई गृहस्थ अकस्मात आजाय तो उसकी बात अलग है।

(५) साधु-साध्वियों को रेशम, वायल, अरडी और बारीक वस्त्र उपयोग मे देना नहीं, जहां तक मिल सके खादी अथवा स्वदेशी वस्त्रों का ही उपयोग करना।

(६) साधु साध्वी अपनी उपाधि गृहस्थ से उठवायें नहीं तथा उसकी नेश्राय में रखें नहीं।

(७) शास्त्रानुसार तेले के तप तक धोवण काम मे लेना इसके उपरात तपश्चर्या मे धोवण पीवें तो वह अवशन तप नहीं गिना जाय।

(८) साधु-साध्वी अपने दर्शन करने के लिये आने का व इसी प्रकार का अन्य उपदेश देकर गृहस्थों को नियम करावे नहीं।

(९) नई समकित देते समय हर एक (स्थानकवासी) पंच महाव्रतधारी को गुरु मानना, ऐसा बोध कराना।

(१०) मुनि महात्मा अपने उपदेश मे प्रत्येक श्रावक को यही फरमावें कि 'पंचमहाव्रतधारी' इस सम्मेलन के नियमानुसार चलने वाले प्रत्येक साधु-साध्वी का सत्कार करना, किसी प्रकार का रागद्वेष युक्त साम्प्रदायिक भेदभाव रखना नहीं।

(११) जो मकान श्रावकों के धर्म-ध्यान निमित्त से बना हो, उसका नाम लोक व्यवहार मे भले कुछ भी हो, ऐसे निर्दोष स्थान का निर्णय करके साधु-साध्वीजी वहां उतर सकते हैं। उतरने वाले और नहीं उतरने वाले परस्पर टीका टिप्पणी नहीं करे।

(१२) लोक व्यवहार मे जिस सम्प्रदाय का आचार-व्यवहार शुद्ध है, उसके साथ प्रत्येक सम्प्रदायवाले परस्पर प्रेम सत्कारादि वात्सल्य भाव रखें तथा एक साथ ही व्याख्यान बांचे।

(१३) स्व साम्प्रदायिक या अन्य साम्प्रदायिक मुनि की लघुता बताने के भाव से सम्प्रदाय के आचार्य या कार्य वाहक को सूचित किये बिना अन्य साधु या गृहस्थ के समक्ष उसके दोष प्रकट । नहीं।

(१४) स्थानकवासी साधु-सामाज में किसी सम्प्रदाय या किसी व्यक्ति के विरुद्ध किसी का हेंडबिल या रूबर छपाना नहीं।

(१५) गुम नाम वाले पत्रों व हेंडबिलों पर लक्ष्य देना नहीं।

(१६) कम से कम मुनि २ और साध्वीजी ३ की सख्या में विचरें। अधिक से अधिक आचार्य, ठाणापति, स्थविर रुग्ण और विद्यार्थी के अतिरिक्त पाच से अधिक विचरें नहीं और साथ में भी नहीं रहें। आचार्य देश काल को देख कर जहां तक हो सके कम से कम मुनि पास में रखे।

(१७) आचार्य अथवा कार्यवाहक-आचारांग व निशीथ सूत्र के तथा देश काल के जानकार प्रौढ़ साधु को ही सघाडे का मुखिया बनावे, वैयावच्चादि कारण तो सामान्यतया सब के लिये खुले है।

(१८) सभी मुनिराजों व आर्यिकाओं को सुखे-समाधे सब प्रान्तों में विचरना चाहिये। छोटे २ गांवों का भी वीरवाणी से सिंचन होता रहे ऐसा प्रबंध होना चाहिये।

(१९) सम्प्रदाय के सर्व साधु-साध्वी दो या तीन वर्ष में एक बार अपने आचार्य श्री व वाहक की उपस्थिति में सम्मिलित हों और अपनी सम्प्रदाय की भावी उन्नति की विचारणा करें। साधु चारी के नियमों को दृढ़ करें। जो से दूर-देशावर में विचरते हों और न मिल तो उनकी अलग है।

(२०) सभी सम्प्रदायों की श्रद्धा व प्ररूपणा एक ही रहनी चाहिये।

(२१) व्याख्यान के अतिरिक्त साधुजी के मकान में स्त्रियों को और साध्वीजी के में पुरुषों को जाना या बैठना नहीं। यदि जाना या बैठना पड़े तो साधुजी के स्थान पर में समझदार पुरुष और साध्वीजी के स्थान पर समझदार स्त्री की सम्मति विना बैठना नहीं।

(२२) साधुजी, साध्वीजी के मकान पर या साध्वीजी, साधुजी के मकान पर बिना जावें या बैठे नहीं। यदि आवश्यकता हो, तो गृहस्थ पुरुष और स्त्री की साक्षी बिना बैठे नहीं।

(२३) गौचरी, पानी, औषधादि कारण विना असमय में गृहस्थ के घर में एकाएक साधु या साध्वीजी जावें नहीं और अपने स्थान से बाहर जाना हो तो बड़ों की आज्ञा लेकर के ही जावें।

(२४) साधु साध्वियों को अपना फोटू खिंचवाना नहीं। किसी साधु साध्वी के पगले, छतरी, चबूतरा या पादपूजा होती हो तो स्पष्ट उपदेश देकर उस आरभ को रोकना, स्थानक में या अपने साधु साध्वी फोटू रखे नहीं।

(२५) धातु की कोई भी चीज अपने पास या अपने नेश्राय में साधु-साध्वी रखें नहीं।

(२६) गृहस्थों को अपने हाथ से पत्र लिखना नहीं, प्रश्नोत्तर व चर्चा की बात अलग है।

(२७) टिकिट वाले कार्ड लिफाफे साधु-साध्वी अपने पास या अपनी नेश्राय में रखें नहीं।

(२८) हिंदी पेन पाढिहारी लेकर के भी साधु साध्वी अपने उपयोग में लावें नहीं।

(२९) चूर्ण आदि किसी भी प्रकार की औषधि साधु-साध्वी अपने पास या अपने नेश्राय में रखे नहीं।

(३०) प्रत्येक साधु साध्वी को चारों (काल) समय स्वाध्याय करना चाहिये। चारों समय का स्वाध्याय कम से कम १०० गाथा का तो होना ही चाहिये। जिसको शास्त्र का ज्ञान न हो वह भले ही नवकार मंत्र का जाप करें।

(३१) प्रतिदिन साधु-साध्वी को प्रातः काल प्रार्थना करनी चाहिये। प्रार्थना में 'लोगस्स या नमोत्थुणं स्तुति मे कहना चाहिए।

(३२) यह साधु-सम्मेलन प्रकट करता है कि अधिक से अधिक ११ वर्षों में प्रत्येक प्रांत के मुनिराजों का सम्मेलन हो और भिन्न २ प्रदेश में विचरती हुई साध्वियों का भी प्रांतिक सम्मेलन भरना।

(३३) सम्प्रदाय मे यदि कोई नया परिवर्तन करना चाहें तो उसके आचार्य अथवा कार्यवाहक कर सकते हैं, परन्तु उनको मुख्य मुनियों की सलाह ले लेनी चाहिये और अन्य मुनिराज यदि कोई परिवर्तन करना चाहें तो आचार्य अथवा कार्यवाहक और मुख्य मुनिराजों की सम्मति बिना नहीं कर सकते हैं।

प्रस्ताव २७—(जयती दिवस के विषय में)

इस साधु सम्मेलन जैसे अपूर्व अवसर की सर्वदा स्मृति बनाये रखने के लिये समाज स्थानकवासी जैनों को चैत्र शुक्ला१० का दिवस 'स्था० साधु-सम्मेलन जयती के रूप मे मनाते रहना चाहिये। उस दिन सम्मेलन निर्धारित नियमों का पालन करते रहने की घोषणा करके समाज को जागृत रखें। ऐसी इस सम्मेलन को शुभ भावना है। शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे।

सचित्ताचित्त निर्णय

अजमेर साधु-सम्मेलन के प्रस्ताव २२ के अनुसार सचित्ताचित्त विषय मे जो निर्णय कॉन्फरन्स ने दिया वह इस प्रकार है। यह निर्णय कॉन्फरन्स निर्वाचित समिति द्वारा ता०१०-११-३३ को जयपुर में दिया था। समिति की मीटिंग में जो भाई उपस्थित हुए थे उनके नाम इस प्रकार हैं :—

(१) प्रमुख श्री हेमचदभाई रामजीभाई मेहता (२) श्री दुर्लभजीभाई त्रिभुवन जौहरी (३) श्री केशरीमलजी चौरडिया (४) श्री सौभाग्यमलजी मेहता, जावरा (५) ला० श्री टेकचदजी भंडियालागुरु (सलाहकार) (६) श्री हरजसरामजी जैन अमृतसर (७) श्री उमरशीभाई कानजी, देशलपुर।

प्रस्ताव २—सचित्त, अचित्त निर्णय के विषय मे कितने ही निर्णय प्रख्यात माली और खेतीवाडी के निष्णातों के अभिप्राय मगाने मे आये थे। वे अभिप्राय तथा इस सबध मे श्री साधु-सम्मेलन में हुए ऊहापह की हकीकत 'सब कमेटी' के समस्त पढ़कर सुनाई गई थी। इस विषय मे काफी विचार विमर्श होने के बाद यह सब कमेटी प्रस्ताव करती हैं कि'—

प्रस्ताव ३—(क) सचित्त, अचित्त का निर्णय करने का काम बहुत मुश्किल होने से विद्वानों Scientist के अभिप्राय प्राप्त करने का काम कॉन्फरन्स चालू रखेगी परन्तु अभी तक जो अभिप्राय मिला है उसे ध्यान में रखकर नीचे की पेटा कलम (ख) के अनुसार निर्णय किया जाता है। इसके बाद जो विद्वानों के परिवर्तन मिलेंगे उनके अनुसार वर्तमान निर्णयों में परिवर्तन या सुधार करने की आवश्यकता प्रतीत हुई तो 'सब कमेटी परिवर्तन या सुधार जाहिर करदेगी।

(ख) निम्नोक्त वस्तुएं सचित्त या अचित्त हैं, यह बात भारत के समस्त स्थानकवासी चतुर्विध श्री संघ की जानकारी के लिये प्रसिद्ध की जाती हैं:—

१ ऋतु पक्वफल-(बीज सहित) यह किन फलों को लक्ष्य मे लेकर ति । गया है, यह जाने विना अभिप्राय प्राप्त किया नहीं जा सकता।

२ केला—पकी हुई लाल छाल वाला हरी छाल वाला और सुनहरी केले का गर्भ अचित्त है। इसलिये छाल उतरा हुआ सूझता केला अचित्त मानना चाहिये। बीज वाले बड़े कले की विशेष जाति होती है उसमें सचित्त बीज होना सभव है।

३. संतरा-नारगी—बिना बीज का ताजा रस और बिल्कुल निर्बीज फांकों को अचित्त मानना

४ पिश्ता-बादाम—पिश्ता की पूरी गिरी और बादाम की पूरी गिरी सचित्त मालूम होती है। टूटी फूटी गिरी अचित्त है।

किशमिश-बिना की निर्बीज छोटी किशमिश अचित्त है।

अगूर निर्बीज बनाना अशक्य है इसलिये सचित्त मानना चाहिये।

कालीमिर्च, लौंग, सफेद मिर्च, पीपल—बाजार म आने से पहिले उबाल ली जाती है : अचित्त है।

खरबूजा, सरदा—बिल्कुल बीज रहित और छाल रहित सूझता मिले तो अचित्त गिना जा सकता है।

तरबूज-इमका बिल्कुल निर्बीज होना अशक्य है अतः सचित्त गिनना।

इलायची-उबालने के बाद ही यह बेची जाती है, फिर भी कभी २ इसमें जीव पड़ जाते हैं अतः पूरी इलायची अकल्पनीय है।

बडी हरड—पूरी सचित है। सेंधा नमक—खाने का हो तो सचित्त और पकाया हुआ हो तो सचित्त।

सेव, नासपाती—पूरा हो तो सचित्त, बीज और छाल-रहित टुकडे अचित्त कहे जा सकते हैं।

अनार—इसके दाने शक्कर के साथ मिले हो तब भी सचित्त हैं।

बर्फ—सचित्त है। मशीन से बाहर निकली हुई आईसक्रीम अचित्त है।

बिजली—यह हिंसा का शस्त्र है इसलिये मुनि को कल्पनीय नहीं है।

(१) सब कमेटी ने अपने इस निर्णय में जिन चीजों को अचित्त जाहिर किया है, वे चीजें जो मुनिराज उपयोग में लें उनकी निंदा किसी दूसरे मुनिराजों को न करना चाहिये।

(२) जिन चीजों को सचित्त माना है उनका उपयोग किसी भी मुनिराज को कल्पनीय नहीं है।

प्रस्तावक—रा० सा० टेकचद जी, अनु० दुर्लभजी भाई जौहरी, सौभागमलजी महेता

श्री अखिल भारतवर्षीय जैन वीर संघ

अजमेर साधु-सम्मेलन मे सगठन की और ठोस कार्यवाही करने के लिये एक साधु-समिति की स्थापना की गई थी। उसकी बैठक ता०—१७-५-४० वैशाख शुक्ला ५ को घाटकोपर (बम्बई) मे हुई थी। जिसमें वयोवृद्ध प्रवर्तक श्री ताराचन्दजी म० शतावधानी श्री रतनचन्द्रजी म० तथा पजाब केसरी पूज्य श्री काशीरामजी म० दीर्घ विहार कर उपस्थित हुए थे। घाटकोपर सघ ने सभी सम्प्रदायों के मुख्य २ मुनिवरों की सेवा मे आमन्त्रण भेजे थे। परन्तु दूरी की वजह से कोई मुनिराज पधार न सके थे, लेकिन अपनी सहानुभूति का सन्देश भिजवा दिया गया।

उपस्थित मुनिराजों ने दीर्घदृष्टि मे विचार करते हुए समस्त स्थानकवासी जैन साधुओं को एक सूत्र में ग्रथित होने की आवश्यकता स्वीकार की और इसके लिये एक योजना भी तैयार की जब तक कि इन विभिन्न सम्प्रदायों को मिटा कर एक नहीं कर दिया जायगा और समचारी एक न बना दी जायगी तब तक संगठन

की ओर और संघ ऐक्य की ओर ठोस प्रगति नहीं हो सकेगी। तदनुसार उपस्थित मुनिराजों ने जैन वीर-संघ की एक योजना तैयार की थी, जो संगठन की दिशा में दूसरा महान प्रयत्न थी इस योजना का सर्वत्र स्वागत ही किया गया था। परन्तु समय परिपक्व न होने से उसका अमल न हो सका। परन्तु विचारों में यह योजना घर कर गई फलतः कॉन्फरन्स की ज० क० ता०–२१–२२ दिसम्बर ४८ का ब्यावर गुरुकुल की तपोमय भूमि में संघ ऐक्य योजना का प्रस्ताव किया गया।

संघ-ऐक्य की तात्कालिक योजना

ता० २१-२२ दिसम्बर ४८ को ब्यावर में कॉन्फरन्स की जनरल मीटिंग गुरुकुल की तपोभूमि में हुई। इस जनरल कमेटी में सम्पूर्ण समाज के कई आगेवान व्यक्ति उपस्थित हुए थे। प्रमुख थे श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया। अजमेर और घाटकोपर की विचारधारा मन ही मन चल रही थी। संगठन की जो ज्योति इस दोनों स्थानों पर प्रज्ज्वलित हो चुकी थी वह अखण्डरूप में जल रही थी अतः इस जनरल कमेटी में उस विचारधारा ने काफी जोर पकड़ा और संघ-ऐक्य के बारे में जोश पूर्ण भाषण हुए। अन्त में वही संघ-ऐक्य को मूर्तरूप देने के लिये संघ-ऐक्य योजना भी तैयार की गई और उसकी स्वीकृति के लिये वहीं से मुनिराजों की सेवा में डेप्युटेशन भी रवाना हुआ।

संघ ऐक्य का स्वीकृति पत्र, जिस पर कि मुनिराजों की स्वीकृति ली गई, इस प्रकार था:—

साम्प्रदायिक मतभेद और महत्व के कारण स्था० जैन समाज छिन्न-भिन्न हो रहा है। साधु साधुओं में और श्रावक श्रावकों में मतभेद बढ़े हैं और बढ़ते जा रहे हैं। समाज-कल्याण के लिये ऐसी परिस्थिति का अन्त लाकर ऐक्य और संगठन करना आवश्यक है। साधु और श्रावक दोनों के सहकार और शुभ भावना द्वारा ही यह सफल होगा अतः साधु-साध्वी और कॉन्फरन्स को मिल कर इस कार्य में लगना चाहिये।

इस कार्य के लिये तात्कालिक कुछ नियम ऐसे होने चाहिए कि जिसमें ऐक्य का वातावरण उत्पन्न हो और साथ २ एक ऐसी योजना करनी चाहिए कि संगठन स्थायी और चिरजीवी बने।

उक्त उद्देश्य से निम्न बातें तुरन्त ही कार्य रूप में रखने का हमारा निर्णय है।

(१) एक गांव में एक चातुर्मास हो। (२) एक गांव में एक ही व्याख्यान हो। (३) सब साधु-श्रावक कॉन्फरन्स की टीप के अनुसार एक सम्वत्सरी करें। (४) सब साधु-साध्वी अजमेर साधु सम्मेलन के प्रस्ताव अनुसार एक प्रतिक्रमण करें। (५) किसी सम्प्रदाय के सबंध में निन्दात्मक सम्मेलन न होना चाहिये। (६) साम्प्रदायिक मंडल या समितियाँ मिटा दी जायं। (७) कोई साधु साध्वी अपनी सम्प्रदाय छोड़कर अन्य सम्प्रदाय में जाना चाहें तो इनके पूज्य-प्रवर्तक या गुरु की स्वीकृति बिना नहीं लिया जाय।

स्थायी योजना के रूप में एक समाचारी और एक ही आचार्य के नीचे एक श्रमण संघ और एक श्रावक-संघ बनाया जाय। एकता और संगठन का यही एक मात्र उपाय है।

उपरोक्त तात्कालिक बातें कार्य रूप में लाते कोई मतभेद हो तो श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया जो निर्णय देवें वह हमको मंजूर होगा।

एक समाचारी एवं श्रमण संघ और एक श्रावक संघ के संबंध में अजमेर अधिवेशन (साधु सम्मेलन) की समाचारी तथा मुनि-समिति की तरफ से घाटकोपर में जो वीर संघ की योजना हुई थी, उसको लक्ष्य में रख

कर कॉन्फरन्स ऑफिस एक समाचारी, एक श्रमण सघ और एक श्रावक-सघ की योजना तैयार करे हमको अभिप्राय के लिये भेजें। इस सबध मे मिली हुई सूचनाओं पर पूरा विचार विनिमय द्वारा श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया जो अन्तिम योजना और बधारण तैयार करेगें वह हमको मजूर होगा।

तात्कालिक कार्यक्रम में रखने योग्य बातों की प्रमुखता अधिक है। अतः इन्हें न्वित करने के लिये सब साधु और श्रावक प्रमाणिकता से पूर्ण सहकार देगें ऐसी हमारी आशा और विनती है।

जो-जो सम्प्रदायें यह कार्यक्रम स्वीकार करें वे श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया निश्चित करें, तब कार्यान्वित करने को तैयार हैं।

इस योजना पर लगभग सभी सम्प्रदायों के मुनिराजों की स्वीकृति प्राप्त हुई। इसका सन् ४६ की महावीर जयती (सं० २४७५ चैत्र शुक्ला १३) से शुरु हुआ। कॉन्फरन्स के मद्रास-अधिवेशन में संघ ऐक्य योजना सर्वानुमति से पास हुई। ो वर्ष में साधु-सम्मेलन और बीच २ में प्रान्तीय-साधु सम्मेलन और साम्प्रदायिक सगठन करने के लिए 'साधु-सम्मेलन नियोजक समिति' की भी स्थापना की गई, जिसके मंत्री श्री धीरजलाल के० तुरखिया नियुक्त किये गये। राजस्थान की १७ सम्प्रदायों का सम्मेलन ब्यावर मे हुआ, जिसमे ६ सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व था। कॉन्फरन्स द्वारा प्रकाशित वीर-सघ की योजना व समाचारी का इन्होंने सशोधन किया। ६ सम्प्रदायों मे पूज्य श्री आनन्दऋषिजी की सप्रदाय, पूज्य श्री सहस्रमलजी की सप्रदाय, पूज्य श्री धर्मदासजी म० का मालवा स०, पूज्य श्री शीतलदासजी म० की स० और कोटा स० (स्थ० मुनि श्री रामकुमारजी आदि) में से ५ सम्प्रदायों ने अपनी सम्प्रदायों के नाम और पदवियों का मोह त्याग कर 'वीर वर्धमान श्रमण-सघ' स्थापित किया। पूज्य श्री आनन्दऋषिजी म० को अपना आचार्य चुना और बृहत् साधु सम्मेलन तक 'सघ-ऐक्य' का आदर्श खडा किया।

इसके बाद गुलाबपुरा मे ४ बडे मुनिराजों का स्नेह-सम्मेलन हुआ। लींबडी, गौंडल, खीचन आदि में भी साम्प्रदायिक-सम्मेलन होते रहे। पजाब प्रान्तीय सम्मेलन लुधियाना मे गुजरात प्रान्तीय सम्मेलन सुरेन्द्रनगर (सौराष्ट्र) मे हुए। इसके बाद स० २००९ में वैशाख शुक्ला ३ को सादड़ी (मारवाड़) मे बृहत् साधु सम्मेलन हुआ और उसमे सघ-ऐक्य योजना को मूर्त स्वरूप देकर एक आचार्य की नियुक्ति की गई। सभी सन्तों ने अपनी २ सम्प्रदाय और पदवियों का मोह छोड कर एक ही समाचारी मे आबद्ध होना स्वीकार कर सघ प्रियता का एक ऐतिहासिक आदर्श उपस्थित किया। इस बृहत्-साधु सम्मेलन की कार्यवाही आगे दी जा रही हैं।

श्री बृहत्साधु-सम्मेलन सादडी का संक्षिप्त-विवरण

प्रारभ ता० २७—४—५२ , समाप्ति ता० ७—५—५२

मिति वैशाख शुक्ला ३ मिति वैसाख शुक्ला १३

बृहत्साधु सम्मेलन स० २००९ मे वैशाख शुक्ला ३ (अक्षय तृतीया) को सादडी (मारवाड़) मे आरम्भ हुआ। सगठन की भावना समाज में तीव्र रूप में व्याप्त हो चुकी थी अतः सर्वत्र सम्मेलन के प्रति जागृति पैदा हो रही थी। सम्मेलन के समय दर्शनार्थ जाने के लिए सभी भाई-बहिन अपने २ प्रोग्राम निश्चत कर रहे थे। और जो कार्यवश पहुँच न पा रहे थे वे मन ही मन खिन्न भी हो रहे थे। जब यह सम्मेलन भरने का तय हुआ, तब समय कम था, और मुनिराज सम्मेलन

से काफी दूर-दूर थे, लेकिन संघ ऐक्य की जो प्रबल भावना उनके हृदय में लहरें मार रही थी, उसके समक्ष यह दूरी भी नगण्य थी। हमारे कष्टसहिष्णु मुनिवर अपने स्वास्थ्य की परवाह किये बिना ही और भीषण गर्मी में भी उग्रतम विहार द्वारा अपने लक्ष्य स्थान की ओर बढ़ते चले जा रहे थे। वे सब यथा समय पैदल यात्रा द्वारा अपने स्थान पर पधार गये थे। सम्मेल में पधारने वाले सन्त जहां भिन्न २ सम्प्रदायों के साथ मिलते थे तो परस्पर मे बडी उदारता और सहृदयता प्रकट करते थे। सगठन की यह हवा हो ऐसी व्याप्त हो चली थी कि उसमे पूर्वका द्वेष भाव उड गया था और सर्वत्र प्रेम का आनन्ददायक वातावरण फैल गया था। सम्मेलन मे २२ सम्प्रदायों के प्रतिनिधि उपस्थित हुए थे और सभी ने प्रेम पूर्वक सम्मेलन की कार्यवाही मे भाग लेकर उसे यशस्वी बनाया। इस सम्मेलन की कार्यवाही व्यवस्थित रूप से और शाति मे चलती थी, जिसे देखकर बम्बई धारा सभा के स्पीकर मान्यवर श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया ने कहा था कि सम्मेलन मे, शांति विवेक और शिष्टता पूर्ण जो कार्य हो रहा है, वह धारा सभा से भी अच्छा हो रहा है। यह सम्मेलन ११ दिन तक चला था। लगभग २५००० भाई बहिन दूर दूर गावों से दर्शनार्थ आये थे। सम्मेलन के व्यवस्थापकों की सुव्यवस्था से सभी लोगों को बड़ा आराम रहा और गर्मी की ऋतु मे भी पानी आदि का बडा आराम रहा। क्षेत्र की दृष्टि से व्यवस्था के लिये जो जो साधन जुटाये गये थे निस्सन्देह वे उल्लेखनीय थे। सभी प्रतिनिधि मुनिराज लौंकाशाह जैन गुरुकुल के नवीन भव्य-भवन मे ठहरे हुए थे और वहीं उसके विशाल हॉल में उनकी मीटिंगें हुआ करती थीं। गुरुकुल-भवन के आस-पास लौंकाशाह नगर बसाया गया था, विशाल तम्बू लगाये गये थे जो दूर से बड़े आकर्षक लगते थे। सादडी का यह सम्मेलन निस्सन्देह बडा सफल सम्मेलन था, जिसकी चर्चा उसके आस-पास तक कई दिनों तक चलती रही। आने-जाने वाले दर्शनार्थी जहां भी पहुचते सामने वाला यही पूछ बैठता—क्या! सादड़ी से आ रहे हो? श्वेतांबर, दिगम्बर और तेरापंथी अखबारों ने भी सम्मेलन की सफल कार्यवाही की भूरी २ प्रशसा की।

इस सम्मेलन मे सभी सम्प्रदायों का विलीनीकरण होकर एव 'श्री व० स्था० जैन श्रमण-सघ, की स्थापना हुई और एक आचार्य के नेतृत्व मे एक ही समाचारी का निर्माण हुआ। जिसकी सक्षिप्त कार्यवाही इस प्रकार है:—

सम्मेलन मे पधारे हुए प्रतिनिधि मुनिराजः—

(१) पूज्य श्री आत्मारामजी म० की सम्प्रदाय। मुनि ८८ आर्या ८१ प्रतिनिधि ४-(१) उपाध्याय श्री प्रेमचंदजी म० (२) युवा० श्री शुक्लचदजी म० (३) व्या० वा० श्री मदनलालजी म० (४) प० मुनि श्री विमलचदजी म०।

(२) पूज्य श्री गणेशीलालजी म० की सम्प्रदाय। मुनि ३४ तथा आज्ञानुसारिणी रगूजी, मोताजी, खेताजी की आर्या ७१।

प्रतिनिधि ५—(१) पूज्य श्री गणेशीलालजी म० (२) प० मुनि श्रीमलजी म० (३) पं० मुनि श्री नानालालजी म० (४) प० मुनि श्री सुमेरचदजी म० (५) प० मुनि श्री आईदानजी म०।

(३) पूज्य श्री आनदऋषिजी म० की सम्प्रदाय। मुनि १६ तथा आर्या ८५।

प्रतिनिधि ५—(१) पूज्य श्री आनंदऋषिजी म० (२) प० मुनि श्री उत्तमऋषिजी म० (३) कवि श्री हरिऋषिजी म० (४) प० मुनि श्री मोतीऋषिजी म० (५) प० मुनि श्री भानुऋषिजी म०।

[४] पूज्य श्री खूबचन्दजी म० की सम्प्रदाय के मुनि ६५ तथा आर्या ३८।

प्रतिनिधि ५--[१] पं० मुनि श्री कस्तुरचंदजी म० [२] उपा० श्री प्यारचंदजी म० [३] श्री शेरमलजी म० [४] प० मुनि श्री मनोहरलालजी म०।

[५] पूज्य श्री धर्मदासजी म० की सम्प्रदाय। मुनि २१ तथा आर्या ८६।

प्रतिनिधि ५--[१] प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० (२) पं० मुनि श्री सूर्यमनिजी म० (३) शता० पं० मुनि श्री केवल मुनिजी म० [४] प० मुनि श्री मथुरा मुनि जी म० [५] पं० मुनि श्री सागर मुनि जी म०।

[६] पूज्य श्री ज्ञानचन्द्रजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि १३ तथा आर्या १०५।

प्रतिनिधि ४--[१] पण्डित मुनि श्री पन्नमलजी महाराज (अनुपस्थित) (२) आत्मार्थी श्री इन्द्रमलजी म०, (३) पण्डित मुनिश्री लालचन्द्रजी महाराज, (४) पण्डित मुनि श्री मोहनलालजी महाराज।

[७] पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि ६ तथा आर्या ३३।

प्रतिनिधि २--[१] पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज, [२] पण्डित मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी महाराज।

[८] पूज्य श्री शीतलदासजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि ५ तथा आर्या ७।

प्रतिनिधि १—पण्डित मुनि श्री छोगालालजी महाराज।

[९] पूज्य श्री मोतीलालजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि १४ तथा आर्या ३०।

प्रतिनिधि २--[१] पण्डित मुनि श्री अम्बालालजी महाराज, (२) पण्डित मुनि कवि श्री शांति जी म०

[१०] पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्रजी महाराज की सम्प्रदाय मुनि १३।

प्रतिनिधि १--उपा० कवि श्री अमरचन्दजी म०।

[११] पूज्य श्री जयमलजी म० की सम्प्रदाय के स्थ० प० मुनि श्री हजारीमलजी म० के। मुनि ६ तथा आर्या २६।

प्रतिनिधि २—[१] श्री पण्डित मुनि श्री बृजलालजी म०, [२] पण्डित मुनि श्री मिश्रीलालजी म०।

[१२] पूज्य श्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदाय के पण्डित मुनि श्री चौथमलजी महाराज के मुनि ६ तथा आर्या ५१।

प्रतिनिधि ३—[१] प० मुनि श्री चांदमलजी म०, [२] पण्डित मुनि श्री लालचन्दजी महाराज, [३] उपा० श्री जीतमलजी महाराज।

[१३] पूज्य श्री नानकरामजी महाराज की सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री पन्नालालजी महाराज के मुनि ६ तथा आर्या ८।

प्रतिनिधि १—पण्डित मुनि श्री सोहनलालजी महाराज।

[१४] पूज्य श्री अमरचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि ७ तथा आर्या ६५।

प्रतिनिधि ३—[१] मंत्री मुनि श्री ताराचन्दजी म०, [२] स्थ० मुनि श्री नारायणदासजी महाराज, [३] पण्डित मुनि श्री पुष्कर मुनिजी महाराज।

[१५] पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि २ तथा आर्या २६।

प्रतिनिधि २—(१) मंत्री मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज, (२) पण्डित मुनि श्री रूपचन्दजी म०।

(१६) पूज्य श्री चौथमलजी म० की सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री शार्दूलसिंहजी महाराज-मुनि ४ तथा आर्या ७।

प्रतिनिधि १—पण्डित मुनि श्री रूपचंदजी महाराज।

(१७) पूज्य श्री स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय—मुनि ७ तथा आर्या १६।

प्रतिनिधि २—(१) पण्डित मुनि श्री छगनलालजी महाराज (अनुपस्थित) (२) पण्डित मुनि श्री कन्हैयालालजी महाराज।

(१८) ज्ञातृपुत्र महावीर संघीय मुनि-३ तथा आर्या २।

प्रतिनिधि १—पण्डित मु० फूलचन्दजी म०।

(१९) पूज्य श्री रूपचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय-मुनि ३ तथा आर्या ४।

प्रतिनिधि १—पण्डित मुनि श्री सुशीलकुमारजी म०।

(२०) पण्डित मुनि श्री घासीलालजी महाराज के मुनि ११।

प्रतिनिधि १—प० मुनि श्री समीरमलजी म०। (पहले पं० मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज को प्रतिनिधित्व दिया गया।

(२१) पूज्य श्री जीवनरामजी महाराज की सम्प्रदाय-मुनि ३।

प्रतिनिधि १—कवि श्री अमरचन्दजी महाराज के शिष्य श्री विजय मुनिजी म०।

(२२) बरवाला-सम्प्रदाय (सौराष्ट्र) के-मुनि ३ तथा आर्या १८।

प्रतिनिधि १—पण्डित मुनि श्री चम्पकलालजी महाराज। कुल उपस्थित सम्प्रदाय २२, मुनि ३४१, आर्याजी ७६८। प्रतिनिधि सख्या ५४। अनुपस्थित २।

प्रतिनिधित्व

(१) कोटा-सम्प्रदाय के प० मुनि श्री रामकुमारजी म० ने अपने मुनि व आर्याजी का प्रतिनिधित्व प० मुनि श्री प्यारचन्दजी म० को दिया।

(२) कोटा-सम्प्रदाय के प० मुनि श्री जीवराजजी म० तथा पं० मुनि श्री हीरामुनि जी म० ने सम्मेलन मे होने वाले सभी प्रस्तावों की स्वीकृति भेजी है।

सम्मेलन की कार्यवाही ता० २७-४-५२ को मध्यान्ह के ३ बजे प्रारम्भ हुई। प्रस्ताव निम्न प्रकार थे—

प्रस्ताव १—(शान्तिरक्षक का चुनाव)

विचार विमर्श के पश्चात् सर्व सम्मति से यह निर्णय किया जाता है, कि सभा का सचालन करने के लिए शान्तिरक्षक का पद पूज्य श्री गणेशीलालजी महाराज एव व्याख्यानवाचस्पति मदनलालजी म० को दिया जाता है।

प्रस्ताव २—(दर्शक मुनियों को आज्ञा तथा रिपोर्टरों की नियुक्ति)

विचार-विमर्श के बाद सर्वानुमति से निर्णय हुआ कि अप्रतिनिधि मुनि दर्शक के रूप में रह सकते हैं उन्हें बोलने एव परामर्श देने का अधिकार नही रहेगा और अपवाद रूप में श्री फिरोदियाजी (कॉन्फरन्स के प्रेसीडेण्ट) भी बैठ सकते हैं।

सर्वानुमति से पास किया जाता है कि, गुजराती की रिपोर्ट लेने के लिये श्री चम्पक मुनिजी म० को एवं हिन्दी रिपोर्ट लेने के लिये मुनि आईदानजी म० को रिपोर्टर के तौर पर रक्खा जावे।

प्रस्ताव ३—(विषय निर्धारिणी का चुनाव)

पूर्ण विचार विमर्श के पश्चात् विषय निर्धारणी कमेटी का सर्वानुमति से पास हो गया और इसके लिए १५ सदस्यों का चुनाव कर लिया गया।

[१] पू० श्री आनन्द ऋषिजी म०, [२] पूज्य श्री हस्तीमलजी म० [३] पं० मुनि श्री प्यारचन्दजी म०, [४] उपा० श्री अमरचन्दजी म० [५] प० मुनि श्री इन्द्रमलजी म०, [६] प० मुनि श्री श्रीमलजी म०, [७] उपा० श्री प्रेमचन्दजी म०, [८] प० मुनि श्री लालचन्दजी म०, [९] प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म०, [१०] मधुकर पं० मुनि श्री मिश्रीलालजी म०, [११] प० मुनि सुशील कुमारजी म०, [१२] मरुधर मन्त्री प० मुनि मिश्रीमलजी म०, [१३] प० मुनि श्री अम्बालालजी म०, [१४] व्या० वा० श्री मदनलालजी म० और [१५] प० मुनि श्री पुष्कर मुनिजी (ता० २७-४-५२ की रात्रि का पास)।

प्रस्ताव ४—(कार्य-प्रणाली)

जो प्रस्ताव पास होंगे, वे यथाशक्य सर्वानुमति से अथवा बहुमत से अर्थात् जो प्रस्ताव ऐसे प्रसंग पर पहुँच जाय कि उन्हें बहुमत से पास करना आवश्यक हो जाता है तो प्रस्ताव बहुमत से पास किये जा सकेंगे। बहुमत से तात्पर्य ३।४ अर्थात् ७५% से लिया जायगा।

प्रस्ताव ५—(मत-गणना)

बहुत विचार विमर्श के बाद सर्वानुमति से यह निर्णय किया गया कि—वोटिंग (मतगणना) प्रत्यक्ष में भी लिये जा सकते हैं।

प्रस्ताव ६—(एक आचार्य के नेतृत्व में)

बृहत्साधु-सम्मेलन सादड़ी के लिए निर्वाचित प्रतिनिधि मुनिराज यह निर्णय करते हैं कि अपनी २ सम्प्रदाय और साम्प्रदायिक पदवियों का विलीनीकरण करके, "एक आचार्य के नेतृत्व में एक संघ" कायम करते हैं। (सर्वानुमति से ता० २८-४-५२ मध्याह्न को पास।)

प्रस्ताव ७—(संघ का नाम)

इस संघ का नाम 'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' रहेगा। (सर्व सम्मति से पास ता० २९ प्रातःकाल)।

प्रस्ताव ८—(व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल)

शासन को सुविधा पूर्वक प्रगति देने के लिये और सुव्यवस्था के लिए एक आचार्य के नीचे एक 'व्यवस्थापक मन्त्रि-मण्डल' बनाया जाय। (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव ९—(मन्त्री-मण्डल की संख्या)

व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल के १६ सदस्य होंगे। (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव १०—(मन्त्री-मण्डल का कार्यकाल)

व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल का कार्यकाल तीन साल तक रहेगा। (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव ११—(संवत्सरी पर्व-निर्णय)

सवत्सरी पर्वाराधन के विषय से कतिपत सम्प्रदायो मे मतभेद था, उन सभी सम्प्रदायों का एकीकरण करने के लिए दूसरे श्रावण तथा प्रथम भाद्रपद मे सवत्सरी करने वाला जो बहुल पक्ष है, वह पक्ष सघ ऐक्य के हेतु "दो श्रावण हो तो भाद्रपद मे और दो भाद्रपद हों तो दूसरे भाद्रपद मे सवत्सरी करना" प्रेमपूर्वक स्वीकार करता है। (सर्व सम्मति से पास ता० ३० प्रात काल)।

प्रस्ताव १२—(पाक्षिक तिथि-निर्णय)

पाक्षिक तिथियों का निर्णय करने के लिये ८ साधुओं की कमेटी बनाई गई—

(१) पूज्य श्री गणेशीलालजी म०, (२) पूज्य श्री आनन्द ऋषिजी म०, (३) पूज्य श्री हस्तीमलजी म०, (४) युवाचार्य श्री शुक्लचन्दजी म०, (५) प० मुनि श्री कस्तूरचन्दजी म०, (६) उपाध्याय श्री अमरचन्दजी म०, (७) मरुधर मन्त्री श्री मिश्रीमलजी म०, (८) प० मुनि श्री सुशीलकुमारजी म०।

प्रस्ताव १३—(तिथि निर्णय कबसे ?)

पाक्षिक तिथियों के सम्बन्ध मे कमेटी का जो निर्णय हो वह आगामी वर्ष माना जाय और आगमी वर्ष पाक्षिक पत्र कमेटी के विचार से प्रकट हो। (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव १४—(दीक्षा के सम्बन्ध मे)

(अ) "श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण सघ" के मनोनीत आचार्य और व्यवस्थापक मन्त्री, शास्त्र दृष्टि एव लोकदृष्टि पर गभीर विचार करके दीक्षार्थी की वय, वैराग्य, शिक्षण आदि की योग्यता का यथोचित निर्णय करें। (सर्व सम्मति से पास ता० २-५-५२ प्रात)

(ब) श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण सघ मे जो दीक्षार्थी दीक्षा लेना चाहे वह आचार्य श्री या दीक्षा-मन्त्रीजी की आज्ञा से अपने अभीष्ट गुरु आदि के योग्य, सुयोग्य मुनि को गुरु बना सकेगा। यह नियम आगामी सम्मेलन तक समझा जावे। आगामी सम्मेलन मे इस पर विचार किया जावेगा। (सर्व सम्मति से पास ता० ४ ५-५२ मध्यान्ह)

प्रस्ताव १५—(प्रतिक्रमण के सम्बन्ध मे)

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण सघ के साधु साध्वियों को देवसी, रायसी, पक्ख, चौमासी, सवत्सरी का एक ही प्रतिक्रमण करना चाहिये और कायोत्सर्ग मे देवसी, रायसी को ४, पक्खी को ८ चौमासी को १२ और सवत्सरी को २० लोगस्स का ध्यान करना चाहिए (सर्व सम्मति से पास ता २-५ ५२ मध्याह्न)

प्रस्ताव १६—(मुखवस्त्रिका का परिणाम)

मुखवस्त्रिका का परिणाम आत्मअंगुल से चौड़ाई मे १६ और लम्बाई मे २१ अंगुल का होना चाहिए। (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव १७—(सचित्ताचित्त निर्णायक समिति)

सचित्ताचित्त निर्णायक कमेटी का सर्वानुमति से चुनाव हुआ—

(१) पूज्य श्री आनन्द ऋषिजी म०, (२) पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज, (३) उपाध्याय श्री अमरचन्दजी महाराज, (४) उपाध्याय श्री प्रेमचन्दजी महाराज, (५) प० मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज (६) प० मुनि श्री श्रीलाल

जी महाराज, (७) मरुधर-मन्त्री श्री मिश्रीमलजी महाराज, और (८) पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० । (ता० २-५-५२ रात्रि को पास)

इलायची, पिश्ता, केले, अंगूर आदि फलों की सचित्त-अचित्तता और, ध्वनिवर्धक-यंत्र के में आने वाली बिजली और वेटरी की सचित्ताचित्तता का निर्णय यह समिति करेगी ।

प्रस्ताव १८–(आचार्य का चुनाव)

स० २००६ वैशाख शुक्ला ६ को श्री वर्द्धमान तथा स्था० जैन श्रमण-संघ के आचार्य श्री दिवाकर साहित्यरत्न पूज्य श्री आत्मारामजी म० सा० नियत किए जाते हैं और उपाचार्य पूज्य श्री गणेशीलालजी म० सा० नियत किये जाते हैं । यह प्रस्ताव सहर्ष प्रेमपूर्वक सर्वसम्मति से पास किया जाता है । (ता० ३-५-५२ प्रातःकाल)

प्रस्ताव १६–(व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल का चुनाव)

व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल के १६ मन्त्रियों का चुनाव निम्न प्रकार हुआः—

प्रधान मन्त्री (१)—प० मुनि श्री आनन्दऋषिजी म० । सहायक-मन्त्री–(२) प० श्री हस्तीमलजी म० एव (३) प० मुनि श्री प्यारचन्दजी म०, (४) मुनि श्री पन्न जी म०, (५) मरुधर केशरी श्री मिश्रीलालजी म०, (६) प० मुनि श्री शुक्लचन्द्रजी म०, (७) प० मुनि श्री किशनलालजी म०, (८) धर्मोपदेष्टा श्री फूलचन्दजी म० (६) प० मुनि श्री प्रेमचन्दजी म०, (१०) प० मुनि श्री पृथ्वीचन्द्रजी म०, (११) प० मुनि श्री घासीलालजी म०, (१२) प० मुनि श्री पुष्कर मुनिजी म०, (१३) प० श्री मोतीलालजी म०, (मेवाड़ी), (१४) प० मुनि श्री मलजी म०, (१५) मुनि श्री छगनमलजी म०, (मरुधर), (२६) प० मुनि श्री सहस्रमलजी महाराज । (सर्व सम्मति से ता० ३ प्रातः)

प्रस्ताव २०—(मन्त्री-मण्डल का कार्यविभाग)

मन्त्रीमण्डल का कार्य विभाग निम्नानुसार हैः—

प्रायश्चित	—	० मन्त्री श्री आनन्दऋषिजी महाराज पं० मुनि हस्तीमलजी ,,
२ दीक्षा	—	,, मलजी ,, ,, सहस्रमलजी ,,
३. सेवा	—	,, शुक्लचन्दजी ,, ,, किशनलालजी ,,
४ चातुर्मास	—	,, प्यारचन्दजी ,, ,, पन्नालालजी ,,
५. विहार	—	,, मोतीलालजी ,, ,, मिश्रीमलजी महाराज

---

६. आक्षेप निवारक	—	पं० मुनि श्री पृथ्वीचन्दजी महाराज „ मिश्रीमलजी „
७ साहित्य-शिक्षण	—	„ घासीलालजी „ „ हस्तीमलजी „ „ पुष्कर मुनिजी „
८. प्रचार	—	„ प्रेमचन्द्रजी „ „ छगनलालजी „ „ फूलचन्दजी „

नोट—इस मन्त्री मडल का कार्य तीन वर्ष तक रहेगा। यदि मन्त्री मडल में कोई मतभेद होगया हो तो आचार्य श्री फैसला करेंगे। मन्त्री मण्डल यथाशक्य प्रति वर्ष मिले, अगर न मिल सके तो तीसरे वर्ष अवश्य मिलना ही होगा। कोई मन्त्री कारणवश नहीं पधार सकें तो अपनी सर्व सत्ता, अधिकार देकर प्रतिनिधि बनाकर भेज देवे। यह मन्त्री मण्डल अखिल भारतीय श्री वर्द्धमान श्रमण सघ के शासन का उत्तरदायित्व वहन करेगा। आक्षेप निवारक मन्त्री, श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण सघ पर आये हुए आक्षेपों का निराकरण करेंगे। (सर्व सम्मति से पास ता० ५ प्रात:)

प्रस्ताव २१—(आचार्य-पद प्रदान विधि)

आचार्य-पद चद्दर की रस्म वैशाख शुक्ला १३ (स० २००९) बुधवार को दिन के ११॥ बजे अदा की जायगी।

उसके पूर्व सब मुनि 'प्रतिज्ञा पत्र' मय दस्खत के तैयार रखेंगे, जो आचार्य-पद पर विराजते ही आचार्य श्री के चरणों मे भेट कर देंगे। (सर्व सम्मति से पास, ता० ५ प्रातः काल)

प्रस्ताव २२—(सघप्रवेश का प्रतिज्ञा-पत्र)

मैं मेरी सम्प्रदायिक पदवियाँ विलीनीकरण करके 'श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण सघ' में प्रविष्ट होता हूँ। संघ के बधारणानुसार आचार्य और मन्त्री मडल की आज्ञानुसार प्रवृत्ति करूंगा।

मैंने अपने आचार्य, गुरुजन तथा बडे मुनिराज (प्रवर्तिनी, गुराणी तथा बडी साध्वी) के समक्ष शुद्ध हृदय से आज तक मे लगे हुए जानते अजानते सभी दोषों की आलोचना कर ली है और छेद पर्यायवाद करके आज मेरी दीक्षा पर्याय की है।

मेरे भविष्य काल के चारित्र के सबध में श्रमण स घ के आचार्य श्री और म त्रियों एव गुरुजनों को कोई शंका उत्पन्न होगी तो वह सिद्ध होने पर आचार्य श्री और प्रायश्चित मत्री की आज्ञानुसार मैं उसका प्रायश्चित करूंगा।

श्रमण सघ के बँधारण और समाचारी का मैं यथायोग्य पालन करूंगा।

मिति 	हस्ताक्षर·········(इस प्रतिज्ञा फॉर्म के अनुसार ही इस नये सघ में सबको प्रविष्ट होना चाहिए) (सर्व सम्मति से पास ता० ४ प्रातः काल)

प्रस्ताव २३—(चातुर्मास की विनती)

चातुर्मास सबधी विनती पत्र माघ शुक्ला १५ तक आचार्य श्री के पास भेज देने चाहिए। आचार्य,

श्री उन पर विचार विनिमय करके फाल्गुन शुक्ला १५ तक चातुर्मास मन्त्री के पास भेज देंगे और चैत्र शुक्ला १३ तक चातुर्मास मन्त्री चातुर्मास की घोषणा कर देंगे। (सर्व सम्मति से पास, ता० ५ प्रातःकाल)

प्रस्ताव २४—(श्रमण सघ की समाचारी)

वस्ती (मकान) सबध मे—स्थानक स बधी निर्णय—

(१) पहले के जितने भी अलग २ सम्प्रदायों के श्रावकों के धर्म ध्यान करने के जो पंचायती स्थान (मकान) हैं, उनका वर्तमान मे जो भी नाम है, उन सबका और भविष्य मे भी श्रावक स घ धर्मध्यान करने के लिए जो स्थान (मकान) बनावें, उन सबका नाम "श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन स्थानक" रखना चाहिए। (सर्व सम्मति से पास ता० १ मई प्रात काल)

(२) पहले के सभी धर्म ध्यान करने के स्थान (मकान) जिन २ के अधिकार मे हैं, वे अधिकारी एक वर्ष में वे स्थान (मकान) "श्री वर्द्धमान स्थानक वासी जन श्रावक स घ" को सौंप देवे। भविष्य मे भी जो स्थान (मकान) पचायती रूप से धर्मध्यान करने के लिये बने, वे भी इस श्रावक स घ की अधीनता मे रहें। पहिले के जो २ स्थान (मकान) एक वर्ष मे इस श्रावक सघ को नहीं सौंपे जायेंगे तथा भविष्य मे जो स्थान (मकान) पचायती रूप से धर्मध्यान के लिए बनेंगे, वे इस श्रावक स घ के अधीन नहीं होंगे तो उनमें भी उक्त श्रमण स घ के साधु साध्वी नहीं ठहरेंगे। (सर्व सम्मति से पास ता० १ मई प्रात काल)

(३) शय्यान्तर-रात्रि प्रतिक्रमण से लेकर फिर आज्ञा वापिस लौटाने तक शय्यान्तरत्व स्वीकार किया जाय। आज्ञा लौटाने के बाद अगर उसी गांव मे रहे तो आठ प्रहर तक शय्यान्तर के घर को टालना और यदि उस गांव से विहार करने जैसी स्थिति हो तो शय्यान्तरत्व नहीं रह जाता। (सर्व सम्मति से पास ता० ३०-४ ५२ मध्याह्न)

(४) कोई पचायती मकान क्लेशवाला हो तो तत्कालीन परिस्थिति का विचार कर उसमें उतरना नहीं। (सर्व सम्मति से पास)

(५) जिस मकान मे शृङ्गारादिक फोटू, चित्र या दर्पणादि पर आवरण डाल दिया हो या उतार लिया हो, उस मकान में साधु-साध्वी ठहर सकते हैं। निर्दोष स्थान न मिलने पर उपर्युक्त स्थान में ठहराना पड़े तो एक रात्रि से ज्यादा न ठहरें। (सर्व सम्मति से पास)

(६) जिस गांव मे स्थानापन्न (ठाणापति) साधु-साध्वी हो, उस गांव में यदि साधु-साध्वी विहार करते २ पधारें तो स्थापन्न साधु साध्वी के स्थान पर ही उतरें। स्थान स कोच के कारण यदि अन्य स्थान पर उतरना भी पडे तो उनकी सेवा मे बाधा न पडे इसको दृष्टि मे रखकर उनकी आज्ञा से उतर सकते हैं। (सर्व सम्मति से पास)

(७) गाव में विराजते समय अन्य वृद्ध, तपस्वी तथा रोगी साधु साध्वियों की खबर पूछ-ताछ और यथाशक्य सेवा करना (अन्योन्य के स्थानक पर जाते समय समझदार स्त्री या पुरुष को साथ मे रखना) (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव २५—(वस्त्र पात्र सम्बन्धी)

(१) एक साधु या साध्वी चार पात्र से अधिक न रखें। यदि कारणवश एकाध पात्र अधिक रखना पड़े तो आचार्य श्री तथा तत्सम्बन्धी अधिकारी मन्त्रीजी की आज्ञा से रख सकते हैं।

(२) पात्रों को सफेदा, वेलतेल व वारनिश के सिवाय रग चढाना नहीं। (सर्व सम्मति से पास ता० १ मई प्रात काल)

(३) साधु ७२ हाथ और आर्याजी ९६ हाथ से अधिक वस्त्र रखें नहीं। रोगादि कारणवश अधिक रखना पड़े तो आचार्य श्री तथा तत्संबंधी मुनि की आज्ञा लेकर रखें।

(४) रंगीन या रंगीन किनारी वाले वस्त्र वापरना नहीं।

(५) अति बारीक वस्त्र जिसमें अंग दिखाई दें, ऐसे वस्त्र की चादर ओढ कर ठहरे हुए स्थान से बाहर गोचरी आदि के लिए जाना नहीं।

(६) वस्त्र पडिहारा लेकर वापरना नहीं।

(७) धातु का पात्र कारणवश पड़िहारा लाये हो तो सूर्यास्त के पहले वापस दे देना। (सर्व सम्मति से पास ता० १ मध्याह्न)

प्रस्ताव २६—(गोचरी विषयक)

(१) एषणा के ४२ दोष टालकर प्रासुक और दैवसिक आहार-पाणी साधु-साध्वी अपनी आवश्यकतानुसार लेवे, परन्तु नित्य प्रति एक ही गृहस्थ के घर से बिना कारण आहार लेवे नहीं।

(२) चुलिया (चणिवारा) वाले किवाड, जमीन से घिसते हुए किंवाड तथा लम्बे अर्से से बन्द हों ऐसे किंवाड खुलवा कर कोई चीज लेना नहीं। गृहस्थ के बन्द किंवाड़ खोलकर प्रवेश करना नहीं (जाली आदि का आगार)

(३) पडिहारी लाई हुई औषधि सूर्यास्त के पहले वापस दे देना। कारणवश पहुँचाया न जा सके या रखना जरूरी हो तो पास के किसी गृहस्थ के मकान मे अथवा सेवा मे (साथ मे) रहने वाले भाई को दे देवें।

(४) गोचरी आदि ऐषणा के लिए गए हुए साधु साध्वी गृहस्थों के साथ वार्तालाप करने के लिए ठहरें नहीं और न बैठें ही। (सर्व सम्मति से पास ता० १० मध्याह्न)

(५) पारस्परिक क्लेश की क्षमायाचना करके आहार-पानी करना।

(६) दो गाउ (२ कोस) से ऊपर ले जाकर आहार-पानी करना नहीं तथा प्रथम प्रहर का चतुर्थ प्रहर मे करना नहीं।

(७) गोठ, दया, नवकारसी, स्वामी वात्सल्य, संघ, विवाह, प्रीतिभोज, मृत्युभोज आदि जीमणवारों में गोचरी जाना नहीं। अनजान से उस तरफ गया हो तो बिना लिये वापस लौट जाय।

(८) (एक दिन पहले का अचित्त जल (धोवणादि) अथवा वर्ण गंध रस चलित आहार ग्रहण करना नहीं।

(९) प्रत्येक साधु को एक दिन में ३ धार विगय से अधिक नहीं लगाना और प्रणीत आहार प्रति दिन नहीं लिया जाय। (वृद्ध, ग्लान, तपस्वी, विद्यार्थी का आगार) (सर्व सम्मति से पास ता० १ मई)

(१०) साधु-साध्वी बाहर गाँव से दर्शनार्थ आये हुए गृहस्थियों से आहार ले सकते हैं। इसमे दिनों की मर्यादा की आवश्यकता नहीं। (सर्व सम्मति से पास ता० ५)

प्रस्ताव २७—(प्रकीर्णक)

(१) सुबह का व्याख्यान और दोपहर का शास्त्रादि वांचन या चौपाई जो करीबन दो घण्टे तक होता है, उस समय के उपरान्त साधुओं के मकान मे साध्वियों को और स्त्रियो को नहीं बैठना चाहिए और साध्वियों के स्थान मे पुरुषों को नहीं बैठना चाहिए यदि किसी खास कारण से बैठना ही पड़े तो साधुजी के मकाम में

समझदार पुरुष की और साध्वीजी के मकान मे समझदार स्त्री की साक्षी के वगैर नहीं चाहिए। मंगलिक श्रवण, प्रत्याख्यान तथा सथारे के समय का आगार। (सर्व सम्मति से पास ता० ३ मध्याह्न)

(२) अकेला मुनि, अकेली साध्वी या अकेली स्त्री के साथ बात करें नहीं। इसी तरह अकेली साध्वीजी अकेले साधु का अकेले पुरुष से बात-चीत नहीं करें। (एकान्त स्थान में स्त्री के पास खड़ा रहना या बैठना भी नहीं। (सर्व सम्मति से पास ता० २)

(३) नासिका (तमाखू) सूंघने की नई आदत डालना नहीं। पहले की आदत छोडना। नहीं छूटे तो चौविहार के पच्चक्खाण के बाद सूंघना नहीं।

(४) "श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण सघ" से बाहर किये हुए साधु-साध्वी के साथ आहार पानी करना नहीं, वन्दना व्यवहार, व्याख्यान, स्वास्थ्य, पठन-पाठनादि सहयोगी व्यवहार भी करे नहीं। (सर्व सम्मति से पास ता० १ मध्याह्न)

(५) साधु-साध्वियों को रुपये के लेन-देन मे हस्तक्षेप करना नहीं। पुस्तक, शास्त्रादि खरीदने या छपाने के लिए किसी आदमी को रखकर लेन-देन कराना नहीं।

(६) साधु-साध्वियों ने कोई गद्य-पद्य साहित्य तैयार किया हो, वह तत्सम्बन्धी मन्त्री अथवा प्रकाशन समिति के पास पहुचाना, योग्य साहित्य वहां से प्रकाशित होगा, परन्तु छापने-छपाने की प्रवृत्ति में साधु-साध्वी को भाग लेना नहीं।

(७) धातु की कोई चीज साधु-साध्वी अपनी नेश्राय मे रक्खें नहीं।

(८) पोस्ट की टिकिट अथवा टिकिट वाले कार्ड कवर साधु-साध्वी रक्खे नहीं तथा गृहस्थ स्त्री पुरुषों को अपने हाथ से पत्र लिखना नहीं।

(९) बिना कारण साधु-साध्वी दर्शनादि के नाम से गृहस्थ के घर जावे नहीं।

(१०) साधु-साध्वी को छिद्रान्वेषी होना नहीं, पर निन्दा करना नहीं, कोई किसी से दोष हो गया हो तो आचार्य व तत्सम्बन्धी मन्त्री और सघाडे के अग्रेसर के अलावा अन्य किसी के पास कहना नहीं।

(११) दोषों का प्रायश्चित्त हो जाने के बाद फिर कोई उसे करें नहीं।

(१२) यत्र, मत्र, तत्र, तावीज, जड़ी-बूटी, तेजी-मन्दी, फीचर आदि का प्रयोग बताना नहीं तथा ज्योतिष, औषधादि क्रिया का उपयोग गृहस्थ के लिए ससारविषयक करना नहीं।

(१३) साधु-साध्वी आपस मे व गृहस्थ को भी क्लेशवर्द्धक, कठोर एव अपमानसूचक शब्द कहें नहीं। भूल से अपशब्द निकल जाय तो क्षमायाचना करें।

(१४) दिन मे बगैर कारण सोना नहीं। (वृद्ध, विहार, बीमार, तपस्वी का आगार) बगैर कारण सोना पडे तो २५० गाथाओं का स्वाध्याय करें।

(१५) विना कारण तैल मर्दन करना नहीं, कराना नहीं और अ जन आंजा नहीं।

(१६) जहा तक वन सके (यथाशक्य) सब वस्त्र पात्रों का दो वक्त प्रतिलेखन करना।

(१७) स्थविर, बीमार अथवा तपस्वी की सेवा मे मन्त्री जिसे रहने की आज्ञा दें, वे साधु या साध्वी सहर्ष साथ रहकर सेवा करें। वैयावच्ची साधु-साध्वीजी का बने वहा तक प्रतिवर्ष स्थान परिवर्तन कर देना। (अपवाद रूप में प्रवर्त्तकजी का निर्णय सब साधु-साध्वी मान्य रखेंगे)

(१८) सिर के बालों का वर्ष में दो बार लोच करना। (वृद्ध मुनि अथवा जिसके कम बाल बढ़ते हों, वे भले ही एक बार करें, परन्तु युवक साधु को तो दो बार करना ही चाहिए। सवत्सरी के दिन गाय के रोए जितने भी बड़े बाल किसी साधु-साध्वी के सिर पर नहीं रहने चाहिए।

(१९) तपस्या, दीक्षा-महोत्सव, सवत्सरी क्षमापना, दीपावली के अशीर्वाद आदि की पत्रिकाए साधु-साध्वी अपने हाथ से गृहस्थ को लिखे नहीं, छपावे नहीं तथा दर्शनार्थ बुलावे भी नहीं।

(२०) फोटू खिंचवा नहीं, पाट, गादी, पगले आदि की जड मान्यता करना नहीं, कराना नहीं। समाधि, पगला और गुरु के चित्रों को धूप, दीप अथवा नमस्कार करने वाले को उपदेश देकर रोकना।

(२१) वस्त्र के, कतान के, रबर के अथवा अन्य प्रकार के जूते अथवा मौजे पहनना नहीं।

(२२) गृहस्थ से हाथ, पांव या सिर दबवाना नहीं अथवा किसी प्रकार की सेवा कराना नहीं।

(२३) अविश्वासी घर अथवा दुकान पर किसी साधु-साध्वी को जाना नहीं। जिसके लिए रुपया आदि दिलाने का सकेत करना पडे, ऐसे गृहस्थ पुरुष या स्त्री को साधु-साध्वीजी के पास रखे नहीं। (सर्व सम्मति से पास ता० २ मई प्रातःकाल)

(२४) गृहस्थ लोग अपने उत्सव के निमित्त जो सभा-मण्डप या मच तैयार करें, उसका श्रमण-संघ व्याख्यान आदि के लिए उपयोग में ला सकते हैं। (सर्व सम्मति से पास ता० ४ मध्याह्न)

(२५) जिस क्षेत्र मे वयोवृद्ध सन्त व शरीरिक कारण से सन्त विराजित हों वहां पर विदुषी प्रभाविका सतिजी का आगमन हो गया हो और श्री सघ विदुषी सतिजी का व्याख्यान श्रवण करने के लिए उत्सुक हो तो वहां विराजित सन्तों की अनुमति से अवसर देखकर व्याख्यान दे सकते हैं। अवसर देखकर अन्य मुनि भी अनुमति देने की उदारता करें। (सर्व सम्मति से पास ता० ५ मध्याह्न)

प्रस्ताव २८—(सम्यक्त्व (समकित) देना)

सम्यक्त्व देते समय देव के रूप मे वीतराग देव को देव तरीके स्वीकार कराना, पच महाव्रत, पांच समिति, ३ गुप्त का पालन करने वाले को गुरु तरीके स्वीकार कराना, अहिंसा परमो धर्मः को धर्म रूप में स्वीकार कराना, श्रमण सघ के आचार्य को धर्माचार्य के रूप में स्वीकार कराना। तीसरे पद मे उनका नामोच्चार कराना। (सर्व सम्मति से पास ता० ४ मध्याह्न)

प्रस्ताव २९—(श्रमण सघ मे शामिल करना)

१ सादड़ी सम्मेलन में बृहत् गुजरात के सन्त (बरवाला के अतिरिक्त) नहीं पधारे हैं। स्थानकवासी जैन धर्म के एक प्रान्त के मुनियों का अलग रहना ठीक नहीं। यह सम्मेलन हृदय से चाहता है कि, गुजरात, कच्छ और सौराष्ट्र के मुनिवर इस श्रमण सघ मे प्रविष्ट हो जावें। इसके लिए यह सम्मेलन यह चाहता है कि, चातुर्मास के बाद स० २००९ के माघ मास तक गुर्जर प्रान्तीय सम्मेलन होकर वे सघ श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण सघ से सगठित हो जावें। कॉन्फरन्स और बृहत्-गुजरात के श्रावक इसके लिए पूर्ण प्रयत्न करें।

२ सघ से बाहर रहे हुए साधु साध्वियों को सघ में प्रवेश कराने का अधिकार दोनों आचार्य (आचार्य उपाचार्य) और प्रधान मन्त्री को दिया जाता है कि, वे द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव को देखकर उन्हें सघ मे प्रविष्ट कर दें। उसे यह श्रमण-सघ स्वीकार कर सकेगा।

३ जिन जिन सम्प्रदायों के मुनिवर इस संघ में प्रविष्ट हुए हैं, वे अपनी अपनी सम्प्रदाय के सन्त-सतियों को संघ के विधानानुसार संघ में प्रविष्ट कराने का यथाशीघ्र प्रयत्न करें। (सर्व सम्मति से पास ता० ५ मध्याह्न)

प्रस्ताव ३०—(पारस्परिक व्यवहार)

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ में प्रविष्ट होने वाले मुनियों के पारस्परिक ११ संभोग (व्यवहार) फरजियात होंगे (खुले रहेंगे) और बारहवां आहार पानी करने का मरजियात (ऐच्छिक) होगा। (सर्व सम्मति से पास ता० ४ रात्रि)

प्रस्ताव ३१—(श्रावक संघ को चेतावनी)

जो संघ सामूहिक रूप से इस श्रमण संघ के नियमों को बार बार तोड़ेंगे, तो वहां चातुर्मास नहीं करना चाहिए। शेषकाल का आगार। (सर्व सम्मति से पास ता० ५ मध्याह्न)

प्रस्ताव ३२—(मंगल-कामना)

१ हम सब उपस्थित प्रतिनिधि मुनि हृदय से यह कामना करते हैं कि यह बृहत्साधु सम्मेलन हो, साधु साध्वियों के लिए ज्ञान, दर्शन, चारित्र मे बृद्धिकारक हो, सर्वत्र प्रेमपूर्वक एकता का स्थापित करने बने ऐसी हम ना करते हैं। आत्म साक्षी से हम सब अपने वचन पालन में सुदृढ़ रहें। (सर्व सम्मति से पास ता० ६-५-५२)। मंगल पाठ के साथ की कार्यवाही शान्ति पूर्वक हुई।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण-संघ

विधान

उद्देश्य—वर्द्धमान स्था० जैन मे भिन्न २ सम्प्रदायों का अस्तित्व है। इन सम्प्रदायों में प्रचलित भिन्न २ परम्परा और समाचारी में एकता लाकर समस्त सम्प्रदायों का एकीकरण करना, परस्पर में प्रेम और ऐक्य की वृद्धि करना, संयम मार्ग मे आई हुई विकृतियों को दूर करना और एक आचार्य के नेतृत्व मे एक और अविभाज्य 'श्रमण-संघ बनाना।

नाम—इस संघ का नाम 'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-संघ' रहेगा।

कार्यक्षेत्र—'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' का कार्य क्षेत्र इस प्रकार रहेगा:—

१—आत्म शुद्धि के लिये श्रद्धा, प्ररूपणा में एकता और चारित्र में शुद्धता एवं वृद्धि करना तथा शिथिलाचार एवं स्वच्छन्दाचार रोकना।

२—समस्त साधु साध्वियों को सुशिक्षित तथा सुसंस्कृत बनाने के लिए व्यवस्था करना।

३—आगम-साहित्य का संशोधन व भाषान्तर करना तथा जैनधर्म के प्रचार के लिए रुचिवर्धक नया साहित्य निर्माण करना।

४—धार्मिक शिक्षण मे वृद्धि हो ऐसा पाठ्यक्रम तैयार करना।

५—जैन तत्त्वज्ञान का व्यापक प्रचार करना।

६—चतुर्विध श्री संघ में ऐक्य बढ़ाने के प्रयत्न करना।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण-संघ में प्रविष्ट होने की विधि

१—प्रत्येक सम्प्रदाय के साधु-साध्वीजी को अपनी अपनी साम्प्रदायिक पदवियों का विलीनीकरण करके (त्याग कर) उक्त संघ में प्रविष्ट होने का प्रतिज्ञा-पत्र भरना पड़ेगा।

२—अपने गुरुजनो अथवा बड़े मुनिराज (साध्वीजी) के समक्ष शुद्ध हृदय से आलोचना करके छेद पर्याय कम करके श्रमण संघ में प्रविष्ट होते समय पूर्व दीक्षा मानी जावेगी।

साधु-साध्वीजी को संघ में प्रवेश होते समय का प्रतिज्ञा-पत्र

मैं मेरी सम्प्रदाय, एवं साम्प्रदायिक पदवियों का 'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' में प्रविष्ट होता हूँ। मैं संघ के बंधारण अनुसार आचार्य और मन्त्री मण्डल की आज्ञानुसार प्रवृत्ति करूंगा।

मैंने अपने आचार्य, गुरुजन तथा बडे मुनिराज (प्रवर्तिनी, गुराणी, बड़ी साध्वी) के समक्ष शुद्ध हृदय से आज तक में लगे हुए जानते अजानते सभी दोषो को आलोचना कर ली है और छेद पर्याय बाद करते आज मेरी दीक्षा पर्याय .... की है।

मन्त्रियों, गुरुजनों तथा श्रमण संघ के आचार्य श्री को मेरे भविष्यकाल के चारित्र के सम्बन्ध में कोई शंका उत्पन्न होगी तो उसका प्रायश्चित्त करूंगा।

श्रमण संघ के बंधारण और समाचारी का मैं यथायोग्य पालन करूंगा।

ता० .... १६५६ हस्ताक्षर ....

बंधारण

श्री 'वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ' का बंधारण निम्न प्रकार का होगा:—

१-इस श्रमण संघ के 'एक आचार्य' रहेंगे। जिनकी नेश्राय मे संघ के सब साधु-साध्वी रहेंगे।

२-आचार्य श्री अतिवृद्ध हों अथवा कार्य करने में अक्षम हों तो मन्त्री-मंडल 'उपाचार्य' नियुक्त करेगा और उपाचार्य श्री आचार्य श्री के सब अधिकार सम्हालेंगे।

३—आचार्यश्री की अनुपस्थिति मे मन्त्री मंडल आचार्य की नियुक्ति करेगा।

४—शासन की सुव्यवस्था के लिये तथा आचार्य श्री को मददरूप होने के लिये आचार्य श्री की इच्छा मूजब की संख्या का एक मन्त्री मण्डल होगा जो आचार्यश्री की आज्ञा के अनुसार कार्य करेगा। मन्त्री समय आचार्य श्री मुख्य २ मुनिराजों की सलाह लेंगे।

५-मन्त्रियों के रिक्तस्थान की पूर्ति आचार्य श्री की सलाह अनुसार मंत्री-मंडल कर सकेगा।

६-मंत्री मंडल की संख्या घटाने बढ़ाने और कार्य विभाग में आवश्यक फेरफार करने की आचार्य श्री की होगी।

७-मंत्रीमंडल को आवश्यक विभाग सुपुर्द किए जायेंगे। मंत्री मंडल में १ प्रधान मंत्री और प्रधान मंत्री की इच्छानुसार २ सहायक मंत्री होंगे।

८-प्रधान मंत्री, सहमन्त्रियों के सहयोग से मंत्री मंडल के कार्य की देखभाल करेंगे तथा २ पर आवश्यक समाचार आचार्य श्री को देते रहेंगे। आचार्य श्री की आज्ञा और सूचनाओं को मंत्री कार्यान्वित करेगा।

९—मंत्रीगण एक से अधिक विभाग ल सकेंगे तथा संयुक्त विभाग की जवाबदारी ले सकेंगे।

१०—आचार्य श्री यावज्जीवन के लिये होंगे।

११—मंत्रीमंडल का कार्यकाल ३ वर्ष का रहेगा। तीन वर्ष के बाद आचार्य श्री मंत्रीमंडल चुनेंगे। उस मुख्य मुनिवरों की सलाह लेंगे।

पसंदगी

१-आचार्य श्री की पसन्दगी मंत्रीमंडल करेगा उनके रिक्तस्थान पर मंत्रीमंडल नई नियुक्ति कर सकेगा।

२-मंत्रीमंडल की सभा यथासमय प्रतिवर्ष अथवा तीन वर्ष में अवश्य होगी।

३-बृहत् साधु सम्मेलन प्रति ५ वर्ष में ७ वर्ष मे तो अवश्य आचार्यश्रीजी, मंत्रीमंडल के परामर्श से करावेंगे।

कार्यप्रणाली—यथा सभव सभाओं का कार्य सर्वानुमति से होगा। बहुमत का प्रसंग ` तो ३।४ बहुमत से अर्थात् ७५% से होगा।

आचार्य श्री का कर्तव्य और अधिकार

१—साधु साध्वियों के चातुर्मास के लिये श्री सघों से जो विनति पत्र आवेंगे उस पर अपनी सूचनाए देंगे और प्रधान मत्री के द्वारा चातुर्मास मत्री को योग्य करने के लिए भिजवायेंगे।

२—मंत्रीमंडल और प्रधान मत्री के कार्य की देखभाल करेंगे, और योग्य आज्ञा व सूचनाएं प्रधान मत्री को भेजेंगे।

३-शेष काल और चातुर्मास में साधु साध्वियों का लाभ अधिक क्षेत्रों को मिले, धर्म का अत्यधिक प्रचार हो, ऐसी व्यवस्था प्रधान मत्री द्वारा करायेंगे।

४-साधु साध्वियों के ज्ञान, दर्शन, चारित्र की वृद्धि के हेतु श्रद्धा, प्ररूपणा की एकता हेतु और चतुर्विध श्री संघ का उत्थान एवं कल्याण हेतु यथायोग्य कार्यवाही करते रहेंगे।

५—श्रमण संघ के सब साधु साध्वी पर आचार्य श्री का अधिकार होगा तथा दीक्षार्थियों की योग्यता देखकर दीक्षा की आज्ञा देंगे।

६—श्रमण संघ से बाहिर के साधु-साध्वियों को तथा संघ मे मिलने की इच्छा रखने वाले अन्य साधु-साध्वियों को यथाविधि मिलाने का अधिकार आचार्य श्री को होगा।

७—प्रधान मंत्री और मंत्री-मंडल के कार्य को सुचारु रूप से चलाने और शासन की सुव्यवस्था के लिए आज्ञा व सूचनाए दे सकेंगे।

उपाचार्य श्री के अधिकार एवं कर्त्तव्य

१—आचार्य श्री जितनी २ सत्ता और अधिकार देंगे तदनुसार अधिकारपूर्ण उत्तरदायित्वपूर्ण शासन सम्हालेंगे।

मन्त्री मण्डल के कर्तव्य एवं अधिकार

१-योग्यतानुसार सुपुर्द किये हुए विभागो का कार्य सम्भालना और उन्नति बनाने के लिए साधु-साध्वियों को आज्ञा और सूचना देते रहना आवश्यक है।

२-परस्पर मंत्रियों से सहकारपूर्ण कार्य करना।

३-आचार्य श्री और प्रधान मंत्री की आज्ञा एव सूचनाओं का पालन करना करवाना।

४-अपनी कार्यवाही और गति विधि से प्रधान-मत्री तथा आचार्य श्री को सुपरिचित रखना।

प्रधान मंत्री का कर्त्तव्य और अधिकार

१-आचार्य श्री या उपाचार्य श्री की आज्ञा और सूचनाओं का पालन करना और मंत्रियों से करवाना।

२-मन्त्रीमडल के कार्य पर देखभाल रखना, उचित आज्ञा सूचनाए एव परामर्श मंत्रियों को देते रहना।

३-सहमत्रियों से परामर्श लेते रहना।

४-मन्त्रीमडल के कार्य से सुपरिचित रहना और मंडल की गतिविधि से आचार्य श्री जी को तथा उपाचार्यश्रीजी को सुपरिचित रखाना।

सहमंत्री का अधिकार और कर्त्तव्य

१-प्रधान मंत्री को हर कार्य मे सहयोग देंगे।

२-अपने विभाग को उत्तरदायित्वपूर्ण संभालना।

मंत्री का कर्त्तव्य और अधिकार

१–मंत्रियों के सुपुर्द अपने २ विभाग को सुचारु रूप से चलाना।

२–साधु-साध्वियो के साथ प्रेमपूर्ण रीति से आज्ञा पलवाना।

३–अपने सहकारी मंत्रियों के साथ स्नेहपूर्वक कार्य-सचालन करने मे सहयोगी बनना।

४–अपने कार्य की गतिविधि से प्रधान मंत्रीजी को सुपरिचित रखाना।

५–आचार्यश्रीजी और प्रधान मंत्रीजी की आज्ञा और सूचनाओं का यथायोग्य पालन करना, कराना।
विधान मे योग्य संशोधन करने की सत्ता आचार्य श्री को रहेगी। उसमे आचार्य श्री मंत्रीमंडल की सलाह लें।

प्रायश्चित्त और पृथक्करण

उत्तरगुण सम्बन्धी छोटे अपराधों का प्रायश्चित साधु-साध्वियों के साथ मे विचरने वाले बड़े साधु-साध्वी दे सकेंगे। उसकी सूचना प्रायश्चित्त मंत्री को दी जायगी।

बडे (महाव्रत भग) के अपराधों का प्रायश्चित मंत्री द्वारा होगा। जिसकी सूचना प्रधानमंत्री और आचार्यश्री को देना होगा। चतुर्थव्रतभग के प्रत्यक्ष अपराध का प्रायश्चित प्रधानमत्री और आचार्य श्री की सलाह से होगा।

किसी मंत्री का अपराध हो तो प्रधान मत्री द्वारा आचार्य श्री की सम्मति से प्रायश्चित्त होगा।

प्रधान मंत्री का अपराध हो तो आचार्य श्री द्वारा प्रायश्चित्त होगा।

आचार्य श्री को प्रायश्चित्त स्थान उपस्थित पर प्रधानमत्री और सहमंत्रियो द्वारा प्रायश्चित्त होगा।

प्रायश्चित्त का निश्चय होने तक अपने साथ के साधु-साध्वी का आहार या वन्दना सम्बन्ध विच्छेद किया जा सकेगा। उसकी सूचना प्रायश्चित मंत्री को दी जानी चाहिये।

आचार्यश्री और प्रधान मंत्री की आज्ञा विना किसी साधु साध्वी को कोई पृथक नहीं कर सकेगा। (सर्वानुमति मे पास ता० ६-५-५२)

नोट—प्र० न० १६ मे प्रस्तावित १६ मत्रियों मे से प० मुनि श्री घासीलालजी म०, प० मुनि श्री समर्थमलजी म० और प० मुनि श्री छगनलालजी म० को स्वीकृति न मिलने से मत्री मडल १२ मुनिवरों का रहा।

सम्मेलन की पूर्णाहुति के बाद वै० शु० १५ स० २००६ को चतुर्विध सघ के अभूत पूर्व आनन्द और उत्साह पूर्वक जैन धर्म दिवाकर, आगमवारिधि पूज्य श्री आत्मारामजी म० सा० को आचार्य पद और परम प्रतापी उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म० सा० को उपाचार्य पद प्रदान करने का महोत्सव किया गया। आचार्य श्री की चादर पजाब के मत्री प० मुनि श्री शुक्लचद्रजी महाराज को सुपुर्द की गई।

सगठित श्रमण-सघ के अलौकिक आनद के साथ सम्मिलित साधु-साध्वी चातुर्मास के लिये अपने अपने निर्धारित स्थान के प्रति विहार कर गये।

कॉन्फरन्स ने भी स्थान स्थान पर श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघों का निर्माण करने तथा असम्मिलित साधु-साध्वियों को श्रमण-सघ मे सम्मिलित करने के भरसक प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये।

सादडी सम्मेलन मे ११ दिनों मे मुनिवरों ने यथाशक्य आदर्श कार्यवाही की। फिर भी कुछ बातें विचारणीय रह गई थीं। इस पर निर्णय करने और नव-निर्मित श्रमण-सघ को सुदृढ़ बनाने की भावना से चातुर्मास के बाद ही मत्री मुनिवरों का और तिथि निर्णय तथा सचित्ताचित्त निर्णय समिति के मुनिवरों का सम्मेलन करने का निर्णय किया गया।

सोजत के श्री संघ ने अपने आंगन मे यह सम्मेलन होने मे अपना सदभाग्य । अतः सोजत का आमत्रण स्वीकार किया गया।

सादड़ी सम्मेलन में नहीं पधारे हुए प० मुनि श्री समर्थमलजी महाराज ने कतिपय खुलासे चाहे थे अतः उन्हें रूबरू मे बुलाये। कुछ दिन सोजत रोड प्रेमपूर्वक वार्तालाप होता रहा और सोजत में मन्त्री मुनि सम्मेलन में शामिल होने का कहा गया।

स० २००६ माघ शु० २ की प्रारभ तिथि निश्चित हुई। मुनिराज यथा समय पधार गये और निम्न प्रकार कार्यवाही हुई:—

श्री वर्धमान स्था० जैन श्रमण-सघ के

मंत्री मुनिवरों की तथा निर्णायक-समितियों की बैठक

[स्थान—सोजत (मारवाड़) स० २००६ माघ शुक्ला २ ता० १७-१-५२ से ता० ३०-१-५२ तक]

निम्न मत्री मुनिवरों की उपस्थिति थी —

(१) प्रधान मत्री पण्डित रत्न श्री आनन्दऋषिजी महाराज (२) सहमंत्री–पण्डित मुनिश्री प्यारचंदजी म० (३) सहमंत्री–प० मुनिश्री हस्तीमलजी म० (४) मत्री मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज (५) मत्री मुनि श्री शुक्लचंद्रजी म० (६) मत्री मुनि श्री प्रेमचद्रजी महाराज (७) मत्री मुनि श्री पुष्करमुनिजी म० (८) मत्री मुनि श्री सहस्रमलजी म० (९) मंत्री मुनि श्री पन्नालालजी म० सा० के प्रतिनिधि मुनि श्री लालचदजी महाराज (११) मत्री मुनि श्री किशन जी म० सा० के प्रतिनिधि मुनि श्री सौभाग्यमलजी महाराज (११) मत्री मुनि श्री पृथ्वीचद्रजी म० सा० के प्रतिनिधि मुनि श्री सरेमलजी महाराज (१२) पण्डित मुनि श्री समरथमलजी महाराज (आमंत्रित) (१३) पंडित मुनि श्री मदनलालजी महाराज (आमन्त्रित) (१४) कवि मुनि श्री अमरचद्रजी महाराज (आमन्त्रित)।

मंत्री मुनि श्री मोतीलालजी महाराज सा०, प० फूलचदजी म० सा० और प० छगनलालजी म० सा० के पत्र आये थे'

सचित्ताचित्त निर्णायक समिति ६ तथा तिथि निर्णय समिति ८ सभी मुनिसदस्य उपस्थित थे। उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म० सा० की अध्यक्षता और व्या० वा० प० मुनि श्री मदनलालजी म० सा० की शान्ति रक्षकता में मत्री मंडल तथा दोनों निर्णायक समितियों का कार्य सयुक्त रूप से चला। समय- : ६ से १०॥ और दुपहर मे १ से ३ तक कार्य चलता था। कभी २ घण्टाभर अधिक बैठक चलती थी। ३३ प्रस्ताव हुए जिसमें से प्रकाशन योग्य २५ प्रस्ताव निम्न प्रकार प्रकाशित किये जाते हैं।

प्रस्ताव १–(पास हुए प्रकाशनीय प्रस्ताव)

(अ) जो प्रस्ताव पास होंगे वे शास्त्र को मुख्य रूप से लक्ष्य में रखकर सर्वानुमति से या बहुमति से अर्थात् जो प्रस्ताव ऐसे प्रसग पर पहुच जांय कि उसे बहुमत से पास करना आवश्यक हो जाता है तो वह बहुमत से पास किये जा सकते हैं। बहुमत से तात्पर्य ३/४ अर्थात् ७५ प्रतिशत से लिया जायगा। (सर्वानुमति से पास)। (पण्डित मुनि समर्थमलजी महाराज का समर्थन भी प्राप्त हुआ।)

(ब) भिन्न २ आचार्य भी शास्त्र में चले हैं परन्तु श्री वर्द्ध० स्था० जैन श्रमणसंघ में एक आचार्य रहे इस हद तक मेरा उससे विरोध नहीं है। शास्त्रानुसार एक आचार्य भी हो सकता है।
(इस प्रस्ताव पर भी पण्डित समर्थमलजी म० का समर्थन प्राप्त हुआ)।

प्रस्ताव २—सादड़ी सम्मेलन के प्रस्ताव न० ८, ६, १०, १८, १६, २० जो मन्त्री म के हैं, उन पर टिप्पणी के पण्डित समर्थमलजी म० का समर्थन प्राप्त हुआ। शास्त्रीय पदवियों की तरफ श्रमण-सघ की उपेक्षा बुद्धि नहीं है। भविष्य मे उन पर विचार किया जायेगा और वर्तमान में भी चालू है।

प्रस्ताव ३-साधु-साध्वी बाहर गांव से दर्शनार्थ आये हुए गृहस्थियों से तीन दिन पहले आहार (भोजन) पानी नहीं ले सकते है। ग्रामानुग्राम विहार करते समय साथ मे रहने वाले या सामने आने वाले गृहस्थों का आहार पानी नहीं लेवें। (सर्वानुमति से पास)।

प्रस्ताव ४-(मन्त्री मडल का कार्यक्रम इस प्रकार है)

प्रान्तवार प्रत्येक मन्त्रियों को दीक्षा, प्रायश्चित और साहित्य शिक्षण को छोड़कर अवशेष पांचों कार्य जैसे चातुर्मास, विहार, सेवा, आक्षेप निवारण और प्रचार कार्य सर्व सत्ता के रूप मे सौंपे जाते हैं और मंत्रियों का भी प्रधानमंत्रीजी म० से रहेगा और प्रधानमत्रीजी मं० आचार्य व उपाचार्य श्रीजीकी आज्ञा प्राप्त करेंगे। दीक्षा तथा प्रायश्चित का कार्य स्वतन्त्र रूप से प्रधानमंत्री के जिम्मे रहेगा। साहित्य शिक्षण सबधी कार्य मुनिजी श्री सुशील कुमारजी को सौंपा जाता है वे चाहें तो अन्य साथी मुनिवरों का सहयोग प्राप्त कर हैं। वे प्रधानमंत्रीजी को दिखावें और उनके द्वारा प्रामाणित हुए विना प्रकाशित न हों।

प्रान्तों का नाम	मत्री मुनिवरों के	
१. अलवर, भरतपुर, यू० पी०	पं० मत्री श्री पृथ्वीचंदजी	महाराज
२ पंजाब, जगलदेश	,, ,, ,, शुक्लचदजी	,,
३ दिल्ली, बांगड़, खादर, हरियाणा	,, ,, ,, प्रेमचदजी	,,
४ बीकानेर, स्थली प्रान्त	,, ,, ,, सहस्रमलजी	,,
५ मारवाड़, गौड़वाड़	,, ,, ,, मिश्रीमलजी	,,
	स०मंत्री पं० हस्तीमलजी	,,
६ अजमेर, मेरवाडा, किशनगढ, जयपुर, टोंक, माधोपुर आदि	प० मत्रीं श्री पन्नालालजी	,,
७ मध्यप्रदेश, (सी० पी) महाराष्ट्र	,, ,, ,, किशनलालजी	,,
८ मध्यभारत, बबई, ग्वालियर, कोटा आदि	स० मत्री श्री प्यारचदजी	,,
६ कर्नाटक, मद्रास, आन्ध्र, मैसूर	प० मत्री श्री फूलचदजी	,,
१० मेवाड, पंचमहल	,, ,, ,, मोतीलालजी	,,
	पुष्करमुनिजी	,,
११ गुजरात, काठियावाड, कच्छ	केन्द्रीय	

नोट—उपरोक्त मन्त्रियों को पांचों कार्य आगामी मन्त्री-मण्डल की बैठक तक सर्वसत्ता के रूप में सौंपा जाता है। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव ५-(पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए निम्न साधु एव श्रावकों की एक कमेटी बनाई गई)

कविवर्य श्री अमरचद्रजी महाराज, सह मन्त्री श्री हस्तीमलजी महाराज, पण्डित श्रीमलजी महाराज, पण्डित सुशीलकुमारजी महाराज। गृहस्थों में से—पण्डित शोभाचन्द्जी भारिल्ल, डॉ इन्द्र एम० ए०, पण्डित पूर्णचन्द्जी दक, श्री धीरजभाई और पण्डित बद्रीनारायणजी शुक्ल। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव ६-(जैन सिद्धान्त की जानकारी के बाद कोई सस्कृत आदि की उच्च परीक्षा देना चाहे तो मुनि धर्म की मर्यादा मे दी जा सकेगी। किन्तु आचार्य, उपाचार्य, प्रधान मन्त्रीजी की अनुमति अवश्य प्राप्त करनी होगी। आचार्य आदि योग्यतानुसार जिस परीक्षा के लिये अनुमत्ति दें-उसी परीक्षा में वह बैठ सकेगा। सिद्धान्त की जानकारी का परीक्षण प्रधान मन्त्रीजी करेंगे। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव ७-(श्रमणसघ में जो मंत्री मुनि सम्मिलित नहीं हुए उनके लिए निम्न प्रस्ताव पास हुआ)

अनुपस्थित मंत्रियों में श्रमणसघ मे जो अभी तक प्रविष्ट नहीं हुए हैं और उल्टा विरुद्ध प्रचार कर रहे हैं, यदि वे अपना विरोध पहले वापिस लेकर चातुर्मास के पहले श्रमण सघ के विधानानुसार श्रमण सघ मे प्रविष्ट होना चाहें तो वे प्रविष्ट हो सकते हैं अन्यथा वे और उनके सहयोगी साधु साध्वी श्रमण सघ से अलग समझे जावेंगे।

प्रस्ताव ८-(ब) जो मत्री पद की स्वीकृति के साथ श्रमण सघ में प्रविष्ट होने की स्वीकृति नहीं दे रहे हैं परन्तु विरुद्ध प्रचार भी कर रहे हैं, वे चातुर्मास के पहले श्रमण सघ के विधानानुसार श्रमण सघ मे प्रविष्ट होने की स्वीकृति दे दें अन्यथा वे और उसके सहयोगी साधु साध्वी श्रमण सघ से अलग समझे जावेंगे।

प्रस्ताव ९-तिथि पत्र निकालने के लिए ५ मुनियों की समिति तयार की गई—प० मत्री मुनि श्री पन्नालालजी महाराज, पं० मुनि श्री किस्तूरचदजी महाराज, पण्डित समर्थमलजी महाराजमरुधर केसरी मत्री मुनि श्री मिश्रीलजी महाराज और सह मन्त्री श्री हस्तीमलजी महाराज।

तिथि पत्रिका के निर्माण के सम्बन्ध मे सब अधिकार उक्त मुनिराजों की समिति को सौंपे जाते हैं। यह पत्र हो सके जहां तक आश्विन शु० पूर्णिमा के पहले-पहले तैयार हो जाना चाहिये। यह तिथि पत्र श्री वर्द्ध० स्था० जैन चतुर्विध श्री सघ को मान्य होगा। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव १०—तिथि पर्व निश्चय एव सचित्ताचित्त निश्चय का निर्णय अगले मत्रीमडल पर रखा जाता है। जब तक दोनों पक्ष वाले अपना-अपना मत निबन्ध के रूप मे श्री प्रधानमत्रीजी के पास भेज। जब तक उक्त निर्णय न हो तब तक ध्वनि विस्तारक यत्र मे न बोला जाय, उसी प्रकार केला भी न लिया जाय। तिथि पर्व के सम्बन्ध मे तब तक तिथि निर्णायक समिति अपना काम करे। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव ११—सादडी सम्मेलन मे जिन जिन सम्प्रदायों के प्रतिनिधि जितने साधु साध्वियों की तरफ से आये थे और विलीनीकरण करके श्री वर्द्धमान जैन श्रमण सघ मे सम्मिलित हुए हैं उन सब साधु साध्वियों को इस श्रमण सघ मे सम्मिलित समझे जावें। जिन्होंने प्रतिज्ञा पत्र नही भरे हैं उनसे प्रतिज्ञा पत्र भरवाने का प्रयत्न किया जावे।

प्रस्ताव १२-सादडी साधु सम्मेलन के पश्चात् हमारे धर्म के निम्न सितारे देवलोकवासी हो गये हैं उनके वियोग से यह मत्री मंडल हार्दिक दुःख प्रदर्शित करता है। उनकी आत्म शान्ति चाहता है और उनके संत परिवार तथा साध्वी परिवार के साथ सवेदना प्रकट करता है—"श्री बोथलालजी महाराज, ब्यावर, २ श्री शान्तिलालजी महाराज, बीकानेर ३ श्री प० चौथमलजी महाराज, जोधपुर ४ श्री धनराज जी महाराज, जोधपुर ५ श्री मगनमलजी महाराज सम्मेलन के पूर्व। महासतियाजी—१ पतासांजी बगड़ी, २ केशरकवरजी नयाशहर, ३ चांदाजी लुधियाना, ४ गुलाबकवरजी पाली सडक, ५ हेमकवरजी धासिया, ६ गुलाबकवरजी पीपाड, ७ फूलकवरजी पूना, ८ सुन्दरकवरजी मन्दसोर, ९ पानकवरजी जोधपुर, १० खामाजी भोपालगढ़ आदि स्वर्गस्थ मुनिराज एव महासतियाजी म०। (सर्वानुमति से पास)

प्र० १३ में नवदीक्षितों के लिए शुभकामना प्रकट की गई। प्र० १४ में परीक्षा फल के लिए कविवर्य श्री अमरचन्दजी म० की नियुक्ति। प्र० १५ मे दीक्षार्थियों को प्रधान मत्री की आज्ञा प्राप्ति के लिए। प्र० १५ व्या० वा० प० श्री मदनलालजी म० को सुचारुरूप से मत्री मडल की व्यवस्था करने पर धन्यवाद दिया गया प्र० १७ गुमनाम पत्र के द्वारा कोई आक्षेप करेगा तो उस पर ध्यान न देने के विषय में। प्र० १८ व्या० वा० मदनलालजी म० तथा कविवर्य श्री अमरचदजी म० का आभार माना गया। प्र० १९ में दोनों समितियों के सदस्य मुनियों को दिया गया। प्र० २० दर्शक मुनियों को धन्यवाद दिया गया। प्र० २१ में रिपोर्टर प० मुनि श्री नेमीचंदजी म० तथा प० मुनि श्री आईदानजी म० को धन्यवाद दिया गया। मगल कामना के साथ म० म० की कार्यवाही पूर्ण की गई।

परिच्छेद—६

श्री स्थानकवासी जैनधर्म के उन्नायक मुनिराज

१—पंजाब के पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज

पूज्य श्री लवजी ऋषि जी महाराज के १०वे पट्टधर आचार्यरूप में पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज प्रसिद्ध हुए। आपकी जन्मभूमि अमृतसर थी। आपकी दीक्षा वि० स० १८६८ मे हुई थी। अपने प्रचण्ड प्रभाव से पजाब मे आपने धर्म-प्रचार किया और वि० स० १६१३ मे अमृतसर मे ही आपका स्वर्गवास हुआ। पजाब सम्प्रदाय आपको ही अपना आद्य-आचार्य मानती है। पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज के मुनि रामबक्षजी आदि कितने ही मुख्य शिष्य थे जिनमे चार प्रधान थे —

पूज्य काशीराम जी महाराज, पूज्य मोतीलाल जी महाराज, पूज्य मयाराम जी महाराज और पूज्य लालचन्द जी महाराज।

पूज्य मयाराम जी महाराज और लालचन्द जी महाराज ये दोनो मुनिराज उस समय के बड़े ही प्रभावशाली सन्त थे। मारवाड से लेकर अम्बाला तक पू० मयाराम जी महाराज के अपूर्व तेज का प्रसरित था।

श्री लालचन्द जी महाराज का अधिक वर्चस्व पश्चिमी पजाब पर था। स्यालकोट मे अन्तिम स्थिरवास करने के कारण आपका प्रचार वहीं के आसपास के क्षेत्रों मे अधिक हुआ। आपके मुख्य चार शिष्य थे जिनमे तीसरे श्री गोकुलचन्द जी महाराज थे। गोकुलचन्द जी महाराज के शिष्य जगदीश मुनि और जगदीश मुनि के शिष्य विमल मुनि इस समय विचर रहे है। आप प्रभावशाली वक्ता और धर्म प्रचारक हैं। आपको जैन समाज की ओर से 'जैन भूषण' की उपाधि प्रदान की गई है। पजाब, दिल्ली और काश्मीर-जम्मू के प्रदेशों मे घूम-घूम करके जैन एव जैनेतरों मे अहिंसा धर्म का ध्वज फहरा रहे हैं। आप के व्याख्यानों मे दस-दस हजार की जनमेदिनी उमड पडती है। काश्मीर के प्रधान मत्री बक्शी गुलाम मुहम्मद भी आपका व्याख्यान श्रवण करने के लिए पधारते है।

लालचन्द जी महाराज के प्रथम शिष्य लक्ष्मीचन्द जी महाराज थे, जिनके शिष्य रामस्वरूप जी महाराज हुए। आपके जीवन मे एक विलक्षण घटना घटित हुई। दीक्षा के दो वर्ष बाद लक्ष्मीचन्द जी मूर्तिपूजक सम्प्रदाय मे सम्मिलित हो गये और रामस्वरूप जी को भी अपनी ओर खींचने का प्रयत्न किया। किन्तु रामस्वरूप जी तो शुद्ध और सत्य धर्म मे दृढतारूप से आस्थावान् थे, अत अपनी श्रद्धा से विचलित नहीं हुए। गुरु के चले जाने पर भी शिष्य ने अपनी शान नहीं छोडी। अन्त मे आपने नाभा मे स्थिरवास किया। आपके अनेक शिष्य हुए जिनमे कविवर अमर मुनि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आपका असामयिक अवसान हुआ जिससे देश तथा समाज ने एक अमूल्य रत्न गुमा दिया। आप समाज की एक दिव्य विभूति थे और सत-परम्परा की एक सुदृढ कडी के समान थे। आप अहिंसा के प्रचारक, शान्ति के प्रकाशक, आत्मा के उजालक और हृदय के धनी थे। आपने लगभग सात लाख लोगों को मास-मदिरा का

त्याग कराया था। खन्ना जैसे नगर को जैन-धर्म के रंग मे रग देने का श्रेय इसी शांतमना महात्मा का ही काम था। यदि कुछ और समय तक यह महात्मा जीवित रह पाता तो समाज और अधिक सुख की छाया मे विश्राति लेता।

मयाराम जी महाराज के बडे-बडे तपस्वी शिष्य हुए—उनमे श्री वृद्धिचन्द्र जी महाराज और उपाध्याय मुनि श्री प्रेमचन्द जी महाराज विशेप प्रसिद्ध हैं।

२—पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज

पूज्य श्री सोहनलालजी महाराजने वि० स० १६३३ मे पूज्य श्री अमरसिहजी महाराज सा० से दीक्षा ग्रहण की। शास्त्रों का गहरा अध्ययन कर अत्यन्त कुशलतापूर्वक आपने आचार्यपद पाया। आप जैन आगमों के विशेषज्ञ थे, ज्योतिप शास्त्रों के विद्वान् थे और वडे क्रियापात्र आचार्य हुए। आप की सगठन-शक्ति असाधारण थी। हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी मे आप के नाम से श्री पार्श्वनाथ विद्यालय की स्थापना की गई है, जिसमे जैन धर्म के उच्च स्तर का शिक्षण दिया जाता है। सस्था की तरफ से "श्रमण" नाम का मासिक पत्र निकाला जाता है।

३—गणिवर्य श्री उदयचन्दजी महाराज

गणिवर्य श्री उदयचन्दजी महाराज का जन्म ब्राह्मण कुल मे हुआ था। सस्कारो के अनुसार उच्च शिक्षण प्राप्त कर और जैन-श्रमण वनकर आगमोंका गम्भीर अध्ययन और मनन किया। मूर्तिपूजा के सम्बन्ध मे शास्त्रों के आधार पर अनेक प्रसिद्ध आचार्यो से चर्चा कर अपने सैद्धान्तिक पक्ष को सुदृढ वनाया। अजमेर सम्मेलन मे आप शान्ति-रक्षक के रूप मे नियुक्त किये गए थे। पजाव के समस्त समाज ने गणिवर्य के रूप मे आपको स्वीकृत किया था। जैन एव जैनेतरों पर आपका अद्भुत प्रभाव था। इस प्रकार ८५ वर्ष की पकी हुई अवस्था मे पण्डित-मरणपूर्वक दिल्ली मे कालधर्म को प्राप्त हुए।

४—पूज्य श्री काशीरामजी महाराज

पूज्य श्री काशीरामजी म० सा० का जन्म पसरूर (स्यालकोट) मे स० १६६० मे हुआ था। अठारह वर्ष की अवस्था मे पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज के चरणों मे आपने दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के केवल नौ वर्ष पश्चात् ही आपके लिए भावी आचार्य होने की घोपणा कर दी गई थी। इस पर से यह जाना जा सकता है कि आपकी आचारशीलता तथा स्वाध्याय-परायणता कितनी तीव्र थी। आपकी आवाज खूव वुलन्द थी। अनेक गुणसम्पन्न होते हुए भी आप अत्यन्त विनम्र थे। आपने पजाव, यू० पी०, राजस्थान, गुजरात और दक्षिण आदि सर्व प्रदेशों मे विचरण किया। अत्यन्त भव्य समारोह के साथ होशियारपुर मे आपको आचार्य-पद दिया गया। वीर-सघ की योजना मे शतावधानी प० मुनि श्री रत्नचन्द्र जी महाराज सा को आपने खूव सहयोग दिया।

५—पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज

पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज ने स० १६२७ मे मुनि श्री गणपतराय जी म० सा० से दीक्षा ग्रहण की। आपने सस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं का गहरा ज्ञान सम्पादन करके जैनागमों की हिन्दी टीका

लिखी है। "जैनागम तत्वार्थ समन्वय" आपकी मौलिक रचना है, जिसमे सुप्रसिद्ध तत्त्वार्थसूत्र की मूल आगमो के साथ सलग्न तुलना आपने की है। अति उच्च कोटि के विद्वान् होते हुए भी आप अत्यन्त सरल और सरस प्रकृति के स्वामी है। आप पजाब सम्प्रदाय के वर्षों तक उपाध्याय पद पर रहे। पूज्य काशीराम जी म० सा० के पाट पर आचार्य पद पर रहे।

आप 'जैनागम रत्न' और 'जैन दिवाकर' की उपाधि से विभूषित है। आपका प्रत्येक क्षण स्वाध्याय और ज्ञानचर्चा मे लगता है। इस समय लुधियाना मे स्थिरवास कर रहे है। आपके अनेक गुणो से आकर्षित तथा प्रभावित होकर सादडी सम्मेलन ने वर्धमान श्रमण सघ का आचार्य-पद प्रदान किया। आप के अनेक शिष्यों मे स्व० प० मुनि खजानचन्दजी महाराज प्रथम शिष्य थे। पजाब के स्थानकवासी समाज को शिक्षण और स्थानक की उपयोगिता की ओर आकर्षित करने वाले वे सर्वप्रथम महामना सन्त थे। आपके शिष्य तपस्वी लालचन्द जी महाराज कि जिनकी कठोर तपस्या और सघ-सेवा कभी भी भुलाई नहीं जा सकती।

आचार्यश्री के दूसरे शिष्य प० हेमचन्द जी महाराज, फूलचन्द जी महाराज, ज्ञानमुनि जी महाराज, मनोहर मुनिजी महाराज आदि शास्त्र-पारगत, विद्या-विदग्ध मुनिवर सतसमाज तथा जैन समाज के आशाकेन्द्र है।

६—पं० रत्न श्री प्रेमचन्द्रजी महाराज

स्थानकवासी जैन समाज मे मुनि श्री प्रेमचन्द जी महाराज "पजाब केशरी" के नाम से प्रसिद्ध है। आपका भरा हुआ और पूरे कद का शरीर और आप की सिंह-गर्जना असत्य और हिसा के बादलों को छिन्न-भिन्न कर देती है। जड पूजा के आप प्रखर विरोधी है। जहाँ-जहाँ आप विचरण करते है वहाँ-वहाँ एक शूरवीर सैनिक के समान महावीर के धर्म का प्रचार करते हैं।

७—व्या० वाचस्पति श्री मदनलालजी महाराज

दूसरी तरफ श्री नाथूराम जी महाराज के शिष्य प० मुनि श्री मदनलाल जी महाराज जो प्रसिद्ध वक्ता, शास्त्र के मर्मज्ञ और सादडी-सम्मेलन मे शाति-रक्षक के रूप मे रहे थे "व्याख्यान वाचस्पति" के नाम से समाज मे सुपरिचित है। आपकी आती हुई परम्परा के परिवार मे मुनि श्री रामकिशन जी महाराज और मुनिश्री सुदर्शन जी महाराज हैं। दोनों ही सस्कृत, प्राकृत और अग्रेजी के अच्छे विद्वान् है और सयम तथा आत्मकल्याण की तरफ आप दोनों का विशेष लक्ष्य है। श्री रामकिशन जी महाराज से तो समाज बहुत बडी आशा रखता है। यह सब देन तो व्याख्यान-वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज सा० की है। आपका तप, साधना, सयम, ज्ञानार्जन और सतत् जागृति का लक्ष्य सर्वथा प्रशसनीय है।

८—पं० रत्न शुक्लचन्दजी महाराज

प० रत्न शुक्लचन्द जी महाराज ब्राह्मणकुलोत्पन्न विद्वान मुनिराज है। पूज्य श्री काशीराम जी महाराज के श्रीचरणों मे दीक्षा ग्रहण करके आपने शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। आप सुकवि और शान्तिप्रिय प्रवचनकार है। पहले आप पजाब सम्प्रदाय के युवाचार्य थे और अब वर्धमान श्रमण सघ के मन्त्री है। आपकी शिष्य परम्परा मे महेन्द्र मुनि, राजेन्द्र मुनि और गणि श्री उदयचन्द जी महाराज की शिष्य-परम्परा मे रघुवरदयाल जी महाराज, उनके शिष्य अभयमुनि जी आदि सन्तों के हृदय मे जिन शासन की निष्काम सेवा की भावना भरी है।

गेदराम जी महाराज की शिष्य परम्परा मे कस्तूरचद जी महाराज तथा उनके शिष्य अमृत मुनि जी आज के जैन कवियों मे अग्रगण्य है। आप सिद्धहस्त वक्ता तथा लेखक है। समस्त समाज को आप से वडी-वडी आशाएँ हैं।

ऋषि सम्प्रदाय के मुनिवर्य

१—पूज्य श्री सोमजी ऋषिजी महाराज

आप अहमदावाद कालुपुर के निवासी थे। वचपन मे ही आपके धर्म के और वैराग्य के चिह्न दृष्टिगोचर होने लग गए थे। लोकांगच्छ के यतियों से कुछ शास्त्रों का ज्ञान आपने दीक्षा से पूर्व ही प्राप्त कर लिया था। पूज्य श्री लवजी ऋषिजी म० सा० का व्याख्यान श्रवणकर आपका वैराग्य और भी अधिक प्रवल हो गया और ससार से रुचि हटाकर २३ वर्ष की अवस्था मे अहमदावाद श्री संघ की सम्मति से सवत् १७१० मे दीक्षा ग्रहण की। पूज्य श्री लवजी ऋषिजी म० सा० की सेवा मे रहते हुए आपके अपनी कुशाग्र बुद्धि से शीघ्र ही शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त कर लिया। अपने गुरुदेव को आने वाले और विरोधियों द्वारा दिये जाने वाले अनेक उपसर्गो मे प्राणों को सकट मे डालकर भी गुरुदेव के साथ रहे थे। यतियों के द्वारा पूज्य श्री लवजी ऋषि जी महाराज के लिये वडी तेजी से षड्यन्त्र रचा जा रहा था। यहाँ तक कि उस षड्यन्त्र द्वारा पूज्य श्री की वे लोग जीवन-लीला समाप्त करने पर तुल गये। फलस्वरूप अपने घातक षड्यन्त्र मे यति लोग सफल हुए और बुरहानपुर में पूज्य श्री को विषमिश्रित लड्डू वहर दिये। लड्डुओं का आहार कर लेने पर विष अपना प्रभाव दिखाने लगा। शिष्य सोमजी ने अपने गुरुदेव को आकस्मिक एव अप्रत्याशित षड्यन्त्र का शिकार होते अपनी आँखों देखा किन्तु यह सब उपसर्ग उन्होंने हृदय को वज्र बनाकर सहन कर लिया। ऐसे असाधारण सकटों मे अपनी भावनाओं को समतामय रखकर शाँत रहना यह असाधारण मानवीय गुण है।

आपने गुजरात की तरफ विहार कर दिया और ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए, धर्म का प्रचार करने लगे। उन दिनों पूज्य श्री धर्मसिंह जी महाराज का अहमदावाद मे पधारने के समाचार आपने सुने। कुछ शास्त्रीय वोलों के सम्वन्ध मे आपका उनसे मतभेद था अत आप लम्बा और उग्र विहार कर पूज्य श्री धर्मसिंहजी म० सा० से मिलने के लिए अहमदावाद पधारे। दोनों मुनिवर एक ही साथ ठहरे। शास्त्रीय वोलों के सम्वन्ध मे भी आपकी पूज्य श्री धर्मसिंह जी म० सा० से चर्चा हुई किन्तु इस चर्चा से आपको तुष्टि नहीं हुई। आयुष्य के सम्वन्ध मे और प्रत्याख्यान आठ कोटि से या छ कोटि के सम्बन्ध मे चर्चा हुई थी। आपने तथा आपके समीपस्थ शिष्यों ने पूज्य श्री धर्मसिंहजी म० को वहुत समझाया किन्तु वे नहीं समझे और उन्होंने अपनी ग्रहण की हुई मान्यता का परित्याग नहीं किया।

आपके सयम, आपकी विद्वत्ता तथा आपके प्रतिभासम्पन्न गुणों से प्रभावित होकर कई लोंका-गच्छीय यतियों ने आपसे दीक्षा ग्रहण की। अपने नाम के पीछे लगने वाले 'ऋषि' शब्द को आपने सार्थक कर दिया और यही कारण है कि आपने अस्खलित रूप से जीवनपर्यन्त वेले-वेले की तपस्या की। कठिन से कठिनतर और घोर से घोरतर शीत-गर्मी के परीषह सहन करते हुए २७ वर्ष तक सयमाराधन का समाधियुक्त पडितमरण से कालधर्म प्राप्त किया। अपनी अंतिम अवस्था मे आप अपने पीछे २४ शिष्यों का समुदाय छोडकर स्वर्ग सिधारे। धन्य है इस ऋषि को।

२—पूज्य श्री कान जी ऋपिजी महाराज

आपकी जन्मभूमि सूरत-बन्दर थी। बचपन मे आपके हृदय मे वैराग्य के अकुर जम चुके थे। दीक्षा लेने की परम अभिलाषा होते हुए भी काल न पकने के कारण आप दीक्षा नहीं ले सके। किन्तु कनहान का चातुर्मास पूर्ण कर जब पूज्य श्री सोमजी ऋपिजी महाराज सूरत पधारे तब आपने भगवती दीक्षा ग्रहण कर ली। अपने गुरुदेव पूज्य सोमजी ऋपिजी म० सा० की सेवा मे रहकर आपने शास्त्रीय ज्ञान प्रारम्भ किया और अपनी कुशाग्रबुद्धि से आप शीघ्र ही शास्त्र के परम ज्ञाता बन गये। परम्परा से सुना जाता है कि आपको लगभग ४०,००० श्लोक कण्ठस्थ थे। ऐसे थे आप असाधारण मेधावी।

आपने मालव-क्षेत्र मे विचरण कर धर्म का सर्वत्र प्रचार किया और विजय-वैजयन्ती फहराई। आपकी सेवा मे श्री माणकचन्दजी ने 'एकल पात्री' मान्यता को छोडकर शुद्ध और प्ररूपित सयम स्वीकार किया। पूज्य श्री सोमजी ऋपि म० सा० के बाद आपको पूज्य पदवी से अलकृत किया गया। आप ही के नाम से ऋपि सम्प्रदाय की परम्परा प्रसिद्धि मे आई। ऋपि सम्प्रदाय का गौरव और उसकी प्रतिष्ठा खूब बढाई ।

ऐसे त्यागी-विरागी सन्तो से ही जन-मानस पवित्र और भक्ति की ओर अभिमुख होते है। आपका ज्ञान, तपश्चर्या की उत्कृष्टता, ज्ञान की गरिमा और सयम-सम्पन्नता चिरस्मरणीय ही नहीं किन्तु अविस्मरणीय है।

पूर्ण समाधियुक्त पडितमरण से आपका स्वर्गवास हुआ। भले ही आप न रहे किन्तु आपकी परम्परा ही आपका गौरव है और यह गौरव कभी मिटने का नहीं क्योंकि महापुरुषो का व्यक्तित्व नाना-नाना रूपों मे व्यक्ति-व्यक्ति मे झलकता है और उसका अमृत जीवन बनकर छलकता है।

३—पूज्य श्री ताराऋपिजी महाराज

आपने पूज्य श्री कहान जी ऋपि जी महाराज सा० की सेवा मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप प्रकृति के सरल, गम्भीर और शान्त प्रकृति के थे। अनेक प्रान्तों मे विचरण कर धर्म-जागृति करते हुए अनेक मुमुक्षु जीवों का उद्धार किया। आप समाजोत्थान और सगठन के अत्यन्त प्रेमी थे।

अपनी धीरता और सहनशीलता के उदात्त गुणो से आपका व्यक्तित्व निखर जाता था। आपके व्याख्यान और आपकी चर्चाये लोगों को प्रभावित और आह्लादित करती थी। अपने जीवन मे एक विजयी योद्धा के समान आप जहाँ भी पधारे-सर्वत्र धर्म की उद्घोषणा की।

महापुरुषों के जीवन-चक्र को कालचक्र भी नहीं बदल सकता। उनका जीवन-चक्र नित्य निरतर अपनी अबाध गति से चलता रहता है। महाकाल भी अपनी विकरालता को छोड़कर इन महापुरुषों के सामने सुकाल बन जाता है। भयकरता सुन्दरता मे परिवर्तित हो जाती है।

पूज्य श्री तारा ऋपि जी म० सा० का जीवन प्रेरणा का, कर्मण्यता का, आदर्श सयम का और आदर्श साधुता का रहा है। ऐसे त्यागी साधुओं को हम जितना भी साधुवाद दे, थोडा है किन्तु भक्ति के सिवाय हम क्या और कैसा अर्घ्य इनके चरणों मे अर्पण कर सकते है?

४—कविकुल-भूपण पूज्यपाद तिलोकऋपिजी महाराज

आपका जन्म सवत् १९०४ मे रतलाम नगर मे हुआ था। ऋपि सम्प्रदाय के पूज्य श्री एवता

ऋषि जी म० सा० से सवत् १६१४ में आपने अपने भाई, अपनी माता तथा अपनी वहन इन चारों के साथ दीक्षा ग्रहण की। धार्मिकता और विरक्ति अनुरक्ति और भक्ति केवल आपमें ही नहीं आपके समूचे परिवार मे थे। घर के चार लोगों का एक साथ सयम के मार्ग पर निकल जाना—क्या यह इस युग की चमत्कारिक घटना नहीं है ! गुरु की सेवा में रहकर आठ वर्ष मे आपने शास्त्रों का गहन ज्ञान प्राप्त कर लिया। अपने गुरुदेव के स्वर्गवास हो जाने के पश्चात् आपने दक्षिण की तरफ विहार किया और उस तरफ धर्म का प्रदीप प्रकटाया। मालवा, मेवाड, मारवाड आदि विस्तीर्ण क्षेत्रों को पावन करते हुए संवत् १६४० मे आप स्वर्ग सिधारे।

अपनी अद्भुत कवित्व-शक्ति और प्रखर पाडित्य के कारण आपकी यश सुरभि सर्वत्र प्रसरित हो गई। आप द्वारा रचित विविध साहित्य को लेकर समस्त समाज चिरकाल तक आपका ऋणी रहेगा। ऐसा कहा जाता है कि आपने अपने जीवन मे ७०,००० कवित्त और कविताएँ रचकर साहित्य का भण्डार सुसमृद्ध किया। आप द्वारा रचित साहित्य जो अप्रकाशित है, श्रमण सघ के प्रधान मन्त्री पं० मुनि श्री आनन्द ऋषि जी म० सा० के पास सुरक्षित है।

हाथ से लिखने मे आप इतने कुशल थे कि एक ही सूत्र के पन्ने मे सम्पूर्ण दशवैकालिक सूत्र और डेढ़ इँच जितने स्थान मे सम्पूर्ण अनुपूर्वी लिखकर दर्शकों को विस्मय-विमुग्ध करते थे। आपको १७ शास्त्र कण्ठस्थ थे। आप ऐसे उत्कृष्ट ध्यानी थे कि कायोत्सर्ग मे ही उत्तराध्ययन सूत्र का स्वाध्याय कर लेते थे। सरस्वती के इस महान् उपासक और भगवान् महावीर के सिद्धान्तों के इस महान् आराधक का केवल ३६ वर्ष की अवस्था मे स्वर्गवास हो गया।

नाशवान भौतिक शरीर नष्ट हो सकता है किन्तु यश शरीर नष्ट नहीं होता। युग-युगों तक महापुरुषों के जीवन-पुष्पों की सुयश-सुरभि इस विश्व-उद्यान मे विकीर्ण होती रहती है।

स्व० पूज्य श्री तिलोक ऋषि जी महाराज सा० का साहित्य, विस्मय-विमुग्ध कर देने वाला सयम और अपने जीवन-सिद्धान्तो का गम्भीर निदर्शन युग-युग तक न मिटने वाली कहानी है। सुनी हुई होकर भी नवीन और नवीन होकर भी प्रेरक।

५—पंडित मुनि श्री रत्नऋषिजी महाराज

आपका जन्म अहमदनगर के समीप मानकदौडी मे हुआ था। सवत् १६३६ मे कविवर्य पूज्य श्री तिलोक ऋषिजी म० सा० अपने पिता के साथ आपने १२ वर्ष की अवस्था मे दीक्षा ग्रहण की। अपने गुरुदेव की छत्र-छाया आप पर केवल चार वर्ष तक ही रही। तत्पश्चात् सम्प्रदाय के अन्य विद्वान मुनिवरों द्वारा आपने शास्त्रीय-ज्ञान सम्पादित किया।

शिक्षा-प्रचार की तरफ आपका लक्ष्य सदा वना रहता था। पाथर्डी मे आप ही के सदुपदेश से "श्री तिलोक जैन पाठशाला" की स्थापना हुई थी। आप ही से प्रतिवोध पाकर श्री नवलमल जी खिवरामजी पारख ने २०,००० की एक मुश्त रकम निकाली जिसके द्वारा वडे-वडे मुनिराजों का शिक्षण-कार्य सरल वन सका।

आप श्री के पॉच शिष्य हुए जिनमे श्री वर्द्धमान श्रमणसघ के प्रधान मत्री पडित रत्न मुनि श्री आनन्द ऋषिजी म० सा० भी है। स्थानकवासी समाज को सुयोग्य शिष्य देकर आपने समाज पर महान

उपकार किया है। प० मुनि श्री रत्न ऋषिजी महाराज समाज के अनुपम रत्न थे और उनके सुयोग्य शिष्य आनन्द ऋषिजी म० नेतृत्व, सफल सचालन और सयम के सौरभ से दिग-दिगन्त मे आनन्द की धारा वहा रहे है। अपने शिष्य के रूप मे गुरु का गौरव गरिमा और महिमाशाली बना रहेगा। यह निर्विवाद और असदिग्ध है।

६—ज्योतिर्विद् पं० मुनि श्री दौलतऋषिजी महाराज

आपका जन्म सवत १६२० मे जावरा मालवा मे हुआ था। शास्त्रवेत्ता पूज्य लालजी ऋषिजी महाराज के पास भोपाल मे सवत १६४६ मे उत्कृष्ट भाव से दीक्षा ग्रहण की। आपने गुरु की सेवा मे रह-कर शास्त्र का अगाध ज्ञान प्राप्त किया। 'श्री चन्द्र प्रज्ञप्ति' और 'सूर्य प्रज्ञप्ति' सूत्र तथा अन्य ज्योतिष शास्त्र एव ग्रन्थों का आपको अपरिमित ज्ञान था। ज्योतिष शास्त्र के आप प्रकाड पंडित थे। आपका प्रवचन सुन-कर जनता मत्र-मुग्ध हो जाती थी। उदयपुर के तत्कालीन महाराणा साहब ने आपके ज्योतिष-चमत्कार देखकर आपकी भूरि-भूरि प्रशसा की थी।

जोधपुर के आवास मे सिहपोल मे सर्वप्रथम ठहरने का श्रेय आपको ही था। पजावकेशरी पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज के साथ कई माह तक पत्र-व्यवहार द्वारा शास्त्रार्थ चलता रहा। आपकी विद्वत्ता और ज्ञान-गाम्भीर्य को देखकर पूज्य श्री वहुत ही प्रमुदित हुए और पजाव पधारने के लिये विनती की। वृद्धावस्था के कारण आप पजाव नही पधार सके।

वर्तमान मे आत्मार्थी मोहन ऋषिजी महाराज और विनय ऋषि जी महाराज आप ही के सुयोग्य शिष्य है, जिनके द्वारा अनेक शिक्षण-सस्थाएँ सस्थापित कराई जाकर जैन-समाज शिक्षा के क्षेत्र मे अग्रसर होने का गौरव प्राप्त करने मे समर्थ वन सका है।

७—कविवर्य पं० मुनि श्री अमीऋषिजी महाराज

मालव प्रान्त के दलोट नामक ग्राम मे सवत् १६३० मे आपका जन्म हुआ था। केवल १३ वर्ष की अवस्था मे प० रत्न श्री सुखा ऋषि जी महाराज के पास सवत् १६४३ मे भागवती दीक्षा ग्रहण की। अपनी प्रवल वुद्धि और धारणाशक्ति के आधार पर अल्पकाल मे ही शास्त्रों का गहन ज्ञान आपने प्राप्त कर लिया था। प्रचलित मत-मतान्तरों के आप विज्ञाता और इतिहास के विषय मे अनुसन्धानकर्त्ता थे। शास्त्रीय चर्चाओं मे आपको वहुत ही आनन्द मिलता था। वागड प्रान्त मे विरोधी लोगों से आप शास्त्रार्थ करने पधारे तव आहार-पानी का सयोग न मिलने के कारण आठ दिन तक छाछ के आधार पर रहना पडा। कवित्व-शक्ति का विकास आप मे अद्भुत था। आप द्वारा की जाने वाली समस्यापूर्तियाँ तलस्पर्शी होती थीं। कवित्व-शक्ति के साथ-साथ आपकी स्मरण-शक्ति भी आश्चर्यजनक थी। आपको १३ शास्त्र कठस्थ थे। अपने हाथों से शास्त्र लिखने का आपको वडा ही शौक था।

सयम के ४५ वर्ष व्यतीत कर सवत् १६८८ मे शुजालपुर (मालवा) मे आपका ५८ वर्ष की अवस्था मे स्वर्गवास हुआ। प्रौढ साहित्यकार, उद्भट और आशुकवि, सयम मे प्रकृष्ट भावनाशील, धर्म और शासन के अभ्युत्थान के लिए सदा ही तत्पर, कविश्रेष्ठ अमी ऋषि जी महाराज की काव्यसुधा का पान कर समाज का मानस मुखरित होकर चिरकाल तक अपने को कृतकृत्य मानकर अपना जीवन धन्य करेगा।

थे। सवन् १६४६ में वाल ब्रह्मचारी पं० मुनि श्री सुखा ऋषि जी और कविवर अमी ऋषि जी म० सा० के वम्बई चातुर्मास मे मुनिवरों के सदुपदेश से आपको वैराग्य प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरूप सूरत मे आपने भगवती दीक्षा अगीकार की। अपने गुरुदेव की अनन्य भक्ति-भाव से सेवा करते हुए आपने आगमों का ज्ञान सम्पादन किया।

आप अत्यन्त विनयवान, तपोनिष्ठ एव भद्रिक प्रकृति के थे। एक समय अपने गुरुदेवका स्वास्थ्य विगडने और विहार करनेमे असमर्थ होने के कारण अपने गुरुदेव को अपनी पीठ पर उठाकर २६ कोस दूर भोपाल पधारे। इसे कहते हैं उत्कृष्ट गुरुभक्ति जो आज भी मुनि समाज और मानव-समाज के लिए एक अनुपम उदाहरण वनकर हमारे जीवन को सफल वनाने मे समर्थ है।

मध्यप्रान्त के भुसावल शहर मे आपको पूज्य पदवी प्रदान की गई। अन्त मे शारीरिक अस्वस्थता के कारण नागपुर मे आप स्थिरवास विराजे। श्रीमान् सेठ सरदारमल जी सा० पुगलिया ने तन-मन-धन से आपकी सेवा का अच्छा लाभ उठाया था। सवत् १६६६ मे पूर्ण समाधि के साथ समतायुक्त भाव से आप ने कालधर्म प्राप्त किया।

कठोर तप करते हुए भी आपके दैनिक कार्यक्रम मे किसी प्रकार का अन्तर नहीं आता था। कठोर-से-कठोर तप मे भी व्याख्यान देना और प्रतिदिन एक घन्टा खडे रह कर ध्यान करना आदि सभी कार्य नियमित करते थे।

अपनी आदर्श सेवा-परायणता, गुरुभक्ति और तप-त्याग से आप कभी भी भूले नहीं जा सकते। फूल की सुगन्धि क्षणिक होती है किन्तु गुणों की सुगन्धि चिर-स्थायी और चिर-नवीन होती है। इस नाशवान पार्थिव शरीर से और क्या लाभ उठाया जा सकता है कि इसे हम सयम का और मुक्ति-मार्ग का साधन वना ले। पूज्य श्री देवजी ऋषि जी महाराज ने यही किया जो और लोग कम कर पाते है। कहने के लिये भले ही हम आपको स्वर्गवासी कह दे किन्तु वास्तविक वास तो आपका भक्तों के हृदय मे है। इसलिए कौन इन्हें स्वर्गवासी कह सकता हे!

१०—प्रधान मन्त्री पं० रत्न मुनि श्री आनन्द ऋषिजी महाराज

आपका जन्म चिचोडी सिराल (अहमदनगर) मे संवत् १६५५ मे हुआ था। उत्कृष्ट वैराग्य-रग मे रगकर प० मुनि श्री रत्नऋषि जी म० सा० की सेवा मे सवत् १६७० मे आपने दीक्षा ग्रहण की। अपने गुरुदेव की सेवा मे रहकर आपने जैनागमों का अभ्यास किया। थोड़े ही दिनो मे आप अच्छे विद्वान् हो गये। आपने सस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, मराठी और गुजराती भाषा पर अच्छा अधिकार प्राप्त किया है। आपकी आवाज पहाडी और गायन-कला युक्त होने से आपश्री के प्रवचन श्रोताओं को मन्त्र-मुग्ध वना देते हैं।

आपने ३५ वर्ष तक महाराष्ट्र और दक्षिण प्रान्त मे विचर कर धर्म-देशना और धर्म-जागृति की धूम मचा दी। प्रतापगढ़, पूना मे महासतियों का सम्मेलन कर आपने सगठन की नींव डाली। सवत् १६६६ मे युवाचार्य पदवी से और सवत् १६६७ मे आपके पूज्य पदवी से अलकृत किया गया। किन्तु आपके हृदय मे तो सगठन के क्षेत्र को और अधिक विस्तीर्ण वनाना था। व्यावर मे ६ सम्प्रदाय के सन्तों ने एकत्रित होकर सवत् २००६ मे आपको प्रधानाचार्य वनाया। सगठन का क्षेत्र और अधिक विशाल वना जिसके फल स्वरूप सवत् २००६ मे २२ सम्प्रदायों के सन्त एकत्रित हुए। सभी ने अपनी पूज्य पदवी का त्याग किया

और श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन-श्रमण सघ के एक और अखण्ड शासन में एकत्रित हुए। इस महान् श्रमणसघ का नेतृत्व और सचालन करने के लिए आपको प्रधान मन्त्री बनाया गया, जिसका आप बडी ही योग्यता-दक्षता के साथ निर्वाह कर रहे हैं।

शिक्षा-प्रचार की तरफ आपका लक्ष्य सविशेप रहा है। आपके सदुपदेश से अनेक सस्थाएँ स्थापित हुई जिनमे मारवाड मे राणावास, दक्षिण मे पाथर्डी की सस्थाएँ और महाराष्ट्र मे बोदवड की संस्था मुख्य है। आप ही के सत्प्रयत्नों और सदुपदेश से पाथर्डी का 'धार्मिक शिक्षण परीक्षा बोर्ड' समाज मे धार्मिक शिक्षा का प्रचार और प्रसार कर रहा है। यह धार्मिक परीक्षा-बोर्ड आपकी समाज को अपूर्व देन है।

सयमसुलभ सद्गुण, सरल, शान्त और उदात्त आपका हृदय, गुरु-गम्भीर आपका वक्तृत्व, नेतृत्व और सचालन की अद्भुत क्षमता, समय-सूचकता की दूरदर्शिता आदि असाधारण मानवीय गुण आपमे समुद्भूत हुए हैं।

अपने नाम के अनुरूप ही अपने कार्यों से आप समाज मे आनन्द की मन्दाकिनी प्रवाहित कर रहे हैं। यह मन्दाकिनी का प्रवाह जिस क्षेत्र को और जिस तट को स्पर्श कर लेता है, वह क्षेत्र और तट स्वनाम धन्य हो जाता है। महापुरुषों के पुण्य-प्रसाद की यही तो महिमा होती है। वे स्वय तो महिमावान् होते हैं और औरों को भी महिमावान बना डालते हैं।

११—आत्मार्थी पं० मुनिश्री मोहन ऋषिजी महाराज

आप कलोल—गुजरात के निवासी है। आपका जन्म सवत् १९५२ मे हुआ था। संवत् १९७५ में ज्योतिर्विद् प० मुनि श्री दौलत ऋषि जी म० की सेवा मे आप दीक्षित हुए। आपका सस्कृत, प्राकृत, हिन्दी अग्रेजी का यथेष्ट शिक्षण हुआ है। आपने शिक्षण और साहित्य-प्रचार के लिये खूब प्रयत्न किया और कर रहे है। आपका प्रवचन बडा ही प्रभावशाली, ओजस्वी, गभीर और सारपूर्ण होता है। आपके सत्प्रेरणा और सदुपदेश से प्रेरित होकर १३ व्यक्तियों ने विभिन्न सम्प्रदायों मे दीक्षा ग्रहण की। गुजरात-काठियावाड, मालवा-मेवाड-मारवाड, बम्बई और मध्यप्रान्त मे विचरण कर धर्मदेशना के द्वारा धर्म-जागृति फैलाई है। आपके सदुपदेश से श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर, जैन पाठशाला सेवाज, खीचन, बलून्दा, बगडी, पालनपुर मे आदि अनेक सस्थाएँ स्थापित होकर समाज को शिक्षा से नवचेतना देकर अनुप्राणित किया है। आपने कई ग्रन्थों की रचना की है जो आत्म-जागृति कार्यालय, ब्यावर द्वारा प्रकाशित हुए है।

अजमेर साधु सम्मेलन के समय आपने अग्रसर होकर भाग लिया। इस समय आप शारीरिक अस्वस्थता के कारण अहमदनगर मे विराज रहे है।

१२—पं० मुनिश्री कल्याणऋषिजी महाराज

आपका जन्म सवत् १९६६ मे बरखेडी ग्राम (अहमदनगर) मे हुआ। स्व० पूज्य श्री अमोलक ऋषि जी महाराज सा० की सेवा मे आपने सवत् १९८१ मे दीक्षा ग्रहण की। पूज्य श्री की सेवा मे रहकर आपने शास्त्रीय ज्ञान और सस्कृत-प्राकृत आदि विभिन्न भाषाओं का अच्छा अभ्यास कर लिया। आप व्याख्यानी सत है। आपके सदुपदेश से स्वर्गीय पूज्य श्री के स्मरणार्थ धूलिया मे "श्रीअमोल जैन ज्ञानालय" की स्थापना हुई है। इस सस्था के द्वारा पूज्य श्री द्वारा रचित साहित्य के पुनरुद्धार का कार्य व्यवस्थित

चल रहा है। सस्था के स्थायी कोप से प्रकाशन का कार्य व्यवस्थित होता हे। वर्तमान मे खानदेश-नासिक जिले मे विचर कर आप जैनधर्म व साहित्य का प्रचार कर रहे हैं। आप स्वय भी पडित, साहित्यकार और व्याख्याता है।

स्व० कविवर, पू० मुनि श्री अमीऋपिजी महाराज द्वारा रचित प्रकाशित और अप्रकाशित साहित्य जो विभिन्न सत-सतियो के पास अभी भी सुरक्षित है —

१—स्थानक-निर्णय
२—मुख-वस्त्रिका निर्णय
३—मुख-वस्त्रिका चर्चा
४—श्री महावीर प्रभु के २६ भव
५—श्री प्रद्युम्न चरित्र
६—श्री पार्श्वनाथ चरित्र
७—श्री सीता चरित्र
८—सम्यक्त्व महिमा
९—सम्यक्त्व निर्णय
१०—श्री भावनासार
११—श्री प्रश्नोत्तर माला
१२—समाज स्थिति दिग्दर्शन
१३—कपाय कुटुम्ब छह ढालिया
१४—श्री जिन सुन्दरी चरित्र
१५—श्रीमती सीता चरित्र
१६—श्री अभयकुमारजी की नवरगी लावणी
१७—श्री भारत-बाहुबली चौढालिया
१८—श्री अयन्तामुनि कुमार छह ढालिया
१९—श्री विविध बावनी
२०—शिक्षा-बावनी
२१—सुबोध-शतक
२२—मुनिराजो की ८४ उपमाऍ
२३—अवड सन्यासी चौढालिया
२४—सत्यघोप चरित्र
२५—श्री कीर्तिध्वजराज चौढालिया
२६—श्री अरण्यक चरित्र
२७—श्री मेघराजा का चरित्र
२८—श्री वारदेव चरित्र

कविकुल भूपण स्व० प० मुनि श्री तिलोक ऋपिजी महाराज सा० द्वारा रचित अप्रकाशित साहित्य जो प्रधानमंत्री प० मुनि श्री आनन्द ऋपिजी महाराज सा० के पास सुरक्षित है —

१—श्री श्रेणिक चरित्र ढाल
२—श्री चन्द्र केवली चरित्र
३—श्री समरादित्य केवली चरित्र
४—श्री सीता चरित्र
५—श्री हस केशव चरित्र
६—श्री धर्मबुद्धि पापबुद्धि चरित्र
७—अर्जुनमाली चरित्र
८—श्री धन्नाशालिभद्र चरित्र
९—श्री भृगु-पुरोहित चरित्र
१०—श्री हरिवश काव्य
११—पचवादी काव्य
१२—श्री तिलोक बावनी प्रथम
१३—श्री तिलोक बावनी द्वितीय
१४—श्री तिलोक बावनी तृतीय
१५—श्री गजसुकुमार चरित्र
१६—श्री अमरकुमार चरित्र
१७—श्री महावीर स्वामी चरित्र (वीररस मे)
१८—श्री नन्दन मणिहार चरित्र
१९—श्री सुदर्शन सेठ चरित्र
२०—श्री नन्दीसेन मुनि चरित्र
२१—श्री चन्दनबाला सति चरित्र
२२—श्री धर्मजय चरित्र
२३—श्री पाच सुमति तीन गुप्ति का अष्ट ढालिया
२४—श्री महावीर स्वामी चरित्र

पूज्य श्री हरजी षिजी महाराज सा० की सम्प्रदाय

[स० १७८५ में क्रियोद्धार]

साधुमार्गी परम्परा मे आचार-भेद की तारतम्यता पर अनेक आचार्यों की सम्प्रदाये वनीं। श्रद्धा और प्रतिपादन मे किसी प्रकार का अन्तर न होते हुए भी स्पर्शना मे न्यूनाधिकता के कारण विभाजन हुए। इसी कारण से भिन्न-भिन्न आचार्यो के भिन्न-भिन्न समूह शुद्ध आचार पालन करने वाले व्यक्ति की सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुए।

पवित्र व्यवहार की प्रतिस्पर्धा और मगल-भावना की दृढ़ता के आधार पर चली हुई भिन्नताओं ने श्रमणो के आचार-विचार मे प्रगति लाई किन्तु काल-दोष के कारण अनुयायियों मे अहभाव और विपमता के बीजारोपण होने से उसमे से साम्प्रदायिक कट्टरता का आविर्भाव हुआ। इसके परिणाम-स्वरूप एक-दूसरे को नीचा दिखाने की मनोवृत्ति के कारण पारस्परिक व्यवहार विकृत होते गये और यही कारण है कि सम्प्रदायवाद का पारस्परिक विरोध का तूफान सब तरफ उठा हुआ है। यदि ऐसा नहीं होता तो ये सम्प्रदाये धर्म को सुरक्षित रखने के लिये एक प्रधान आश्रय रूप थीं।

जिस प्रकार जलाशय के बिना जल की प्राप्ति नहीं हो सकती उसी प्रकार सम्प्रदाय के विना धर्म के व्यवहार जीवन मे उतरे हुए नहीं देखे जा सकते। पॉचवे सुधारक मुनिराज श्री हरजी ऋषिजी की परम्परा मे कोटा सम्प्रदाय सुप्रसिद्ध था। इस सम्प्रदाय मे २६ पंडित रत्न थे और और एक साध्वी। कुल मिलाकर यह २७ साधु-साध्वी का परिवार था।

१—पूज्य श्री हुकमीचन्दजी महाराज

पूज्य श्री हुकमीचन्द जी महाराज इन विद्वान् मुनियों मे से एक आचारनिष्ठ विद्वान मुनि थे। आपका जन्म शेखावटी के टोडा नामक ग्राम मे हुआ था। आपने सवत् १८०९ मे कोटा सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध विद्वान् मुनि श्री लालचन्द्रजी महाराज के पास दीक्षा ग्रहण की। आपमे इस प्रकार की भावना जाग्रत हुई कि शास्त्रानुकूल प्रवृत्ति मे हमे विशेष प्रगति करनी चाहिये। इस उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए गुरु की आज्ञा लेकर आप कुछ साधुओं के साथ अलग रूप से विचरने लगे।

आप निरतर तपश्चर्या करते थे। लगभग २१ वर्ष तक आपने छठ-छठ के पारणे किये थे। घोर-से-घोर शीतकाल मे भी आपने एक चादर का सेवन किया। सब प्रकार की मिठाई और तली हुई चीजों का आपने त्याग कर दिया था। केवल १३ द्रव्य की ही आपने छूट रखी थी, शेष सव प्रकार के स्वादिष्ट आहार का आपने त्याग कर दिया था। प्रतिदिन दो हजार नमोत्थुण द्वारा प्रभु को वन्दना करते थे। सूत्रों की प्रतिलिपियॉ वना-वनाकर श्रमण-मुनिराजों को दान करते रहते थे। ज्ञान-ध्यान के अतिरिक्त अन्य प्रवृत्तियों मे आप तनिक भी रस नहीं लेते थे। आपके हाथ की लिखी हुई लगभग १९ सूत्रों की प्रतियॉ आज भी मुनिराजों के पास विद्यमान है। सवत् १९१८ मे मध्यभारत के जावद ग्राम मे पडित मरणपूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ।

इतने महान क्रियापात्र, तपस्वी और विद्वान् साधु होते हुए भी आपके मन मे आचार्य-पद की

लेशमात्र भी लालसा न थी। इस कारण से ही साधुमार्गी परम्परा में शुद्ध आचार पालने वाली एक सम्प्रदाय आपके नाम से चल पडी।

२—पूज्य श्री शिवलालजी महाराज

पूज्य श्री हुकमीचन्द जी महाराज के स्वर्गवास के पश्चात् आपके स्थान पर पूज्य श्री शिवलाल जी महाराज आचार्यपद पर आसीन हुए। अपने तेईस वर्ष तक निरंतर एकांतर उपवास किया। शास्त्र-स्वाध्याय ही एकमात्र आपका व्यसन था। धर्म के मर्म का परमार्थ प्रतिपादन करने मे तत्कालीन सन्त-समाज मे आपका प्रमुख स्थान था। वयोवृद्ध होने के कारण आप केवल मालवा, मेवाड और मारवाड के क्षेत्रों मे ही विहार कर सके फिर भी आपकी सम्प्रदाय मे साधु-समुदाय का खूब विकास हुआ। सोलह वर्ष तक आचार्य-पद पर रहकर धर्म-प्रवर्तन कर स० १८९३ मे आपने स्वर्ग विहार किया। जावद के समीप धामणिया (मालवा) मे आपका जन्म हुआ था।

३—पूज्य श्री उदय सागरजी महाराज

मारवाड के मुख्य नगर जोधपुर मे पूज्य श्री उदयसागरजी महाराज का जन्म हुआ था। बाल्यावस्था मे विवाह होते हुए भी आपके हृदय मे पूर्वजन्म-सचित तीव्र वैराग्य जाग्रत हुआ। माता-पिता की आज्ञा नहीं मिलने के कारण आप स्वय ही सयमी जीवन व्यतीत करने लगे। वि० स० १८९७ मे आपने भागवती दीक्षा अगीकार की। अत्यल्प समय मे आपने सभी शास्त्रों का स्वाध्याय कर लिया। आपकी प्रवचन-प्रतिभा अतिशय प्रभावशाली थी। आपका वचनातिशय और वक्तृत्व कला का श्रवण श्रोताओं के हृदयों को पुलकित कर देता था। जो कोई साधु-साध्वी, श्रावक या श्राविका आपका एक बार ही प्रवचन श्रवण कर लेता था, वह उसी बात को दूसरों को सुनाने के लिए तैयार हो जाता था। आपने पजाब की तरफ भी विहार किया था और अनेक जैन-अजैनों को पवित्र उपदेशामृत पान कराकर सद्धर्म मे स्थित किया था। श्रोतागण आपकी वाणी को मत्र-मुग्ध होकर सुनते थे। आप जाति-सम्पन्न, कुल-सम्पन्न, रूप सम्पन्न, शरीर-सम्पन्न, वचन-सम्पन्न और वाचना-सम्पन्न प्रभावशाली आचार्य थे। पैर मे असातावेदनीय कर्म के उदय से व्याधि होने के कारण अतिम १७ वर्ष आपको रतलाम मे बिताने पड़े। आपके आचार्यत्व-काल मे साधु और श्रावक-सघ की अप्रतिम वृद्धि हुई। अन्त मे मुनि श्री चौथमलजी महाराज को आचार्य-पद पर स्थापित कर स० १९५४ मे रतलाम मे आपका स्वर्गवास हुआ।

४ –पूज्य श्री चौथमल जी महाराज

पूज्य श्री चौथमल जी महाराज का जन्म पाली (मारवाड) मे हुआ था। आप शिथिलाचार के कट्टर विरोधी थे। आपका प्रभाव खूब पडता था। पूज्य उदयसागर जी महाराज भी अपने शिष्यों को सावधान रखने के लिये कहते थे कि 'देखो, चौथमल जी की दृष्टि तुम नहीं जानते। तुम्हारे आचार मे जरा सी भी ढील हुई तो वे तुम्हारी खबर लेंगे।" एक समय पूज्य श्री चौथमल जी महाराज लकडी के सहारे खडे रहकर प्रतिक्रमण कर रहे थे। यह देखकर सुप्रसिद्ध श्रावक श्री अमरचन्दजी पीतलिया ने आपको विनम्र निवेदन किया कि "महाराज! आपका शरीर वेदनाग्रस्त है अत कारणवशात् बैठकर ही आप

प्रतिक्रमण कीजिये।" तव दृढ निश्चय और अडिगतापूर्वक आपने उत्तर दिया कि "श्रावक जी ! यदि आज मैं बैठकर प्रभु की इस पवित्र आज्ञा का पालन करूँगा तो भविष्य में मेरे साधु और श्रावक सोते-सोते प्रतिक्रमण करेंगे।"

आचार-विचार मे रज-कण मात्र भी प्रमाद मनुष्य की आत्मा को और उसके साथियों को डुबा देता है। उपरोक्त एक छोटे उदाहरण से पूज्य श्री की आचारनिष्ठा का परिचय मिलता है। तीन वर्ष तक नवकार मन्त्र के तीसरे पद-आचार्य-पद का निर्वाह कर नेत्रशक्ति की क्षीणता के कारण स० १९५७ मे आप देवलोकवासी हुए।

५—प्रतापी पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज

पूज्य श्रीलाल जी महाराज का जन्म राजस्थान के टोंक ग्राम मे हुआ था। बचपन मे ही आप मे परम वैराग्य के सस्कार प्रस्फुटित हो गये थे किन्तु पूर्वजन्म के सस्कारों के कारण आपको विवाह-बंधन मे वधना पडा। किन्तु विवाह के बाद थोडे ही समय मे नव परिणीता सुन्दर स्त्री का परित्याग करके आपने दीक्षा ग्रहण की। अनेक प्रकार के बाह्याभ्यतर लक्षणों से पूज्य श्री उदयसागर जी महाराज के श्रीमुख से सहसा वचन निकल पडे कि "इस मुनि के द्वारा सघ की असाधारण वृद्धि होगी।" वस्तुत ऐसा ही वना। आचार्य पद पर आते ही दूज के चाद की तरह सम्प्रदाय की कीर्ति दिन-प्रतिदिन वढ़ने लगी। आपकी गभीरता और आचार-विचार की दृढ़ता के कारण श्री सघ मे आपका प्रभावशाली अनुशासन था। श्रीसघ के आचार्य होते हुए भी सव कार्य आप अपने हाथों से ही करते थे। आपका हृदय स्फटिक के समान निर्मल था। इस कारण भविष्य मे बनने वाली घटनाओं की प्रतीति आपको पहले से ही हो जाती थी। इकावन वर्ष की अवस्था मे जयतारण नगर मे आप स्वर्गवास को प्राप्त हुए।

६—जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज

पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज का जन्म थादला शहर मे हुआ था। अल्पावस्था मे ही माता-पिता के स्वर्गवासी हो जाने के कारण मामा के यहाँ आपका पालन-पोपण हुआ। सोलह वर्ष की कुमार अवस्था मे आपने दीक्षा ग्रहण की। आप वाल ब्रह्मचारी थे। थोड़े ही समय मे शास्त्रों का अध्ययन करके जैन के शास्त्रों के हार्द को आपने समझ लिया। परमत का पर्याप्त ज्ञान भी आपने किया था। तुलनात्मक दृष्टि से समभावपूर्वक शास्त्रों की इस प्रकार तर्कपूर्ण व्याख्या करते थे कि अध्यात्मतत्त्व का सहज ही साक्षात्कार हो जाता था। आपकी साहित्य सेवा अनुपम है। पूज्य श्रीलाल जी के वाद आप इस सम्प्रदाय के आचार्य हुए। सूत्रकृताग की हिन्दी टीका लिखकर आपने अन्य मतों की आलोचना की है। लोकमान्य तिलक, महात्मा गाधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, पडित मदनमोहन मालवीय और कवि श्री नानालाल जी जैसे राष्ट्र के सम्माननीय व्यक्तियों ने आपके प्रवचनों का लाभ उठाया था। जिस प्रकार राजकीय क्षेत्र मे पडित जवाहरलाल नेहरू लोकप्रिय हैं उसी प्रकार पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज भी धार्मिक क्षेत्र मे लोकप्रिय थे। वे राजनीतिक जगत् के जवाहर हैं तो ये धार्मिक जगत् के जवाहर थे। आपके प्रवचनों से केवल नेता और विद्वान ही आकर्पित न होते थे वरन सामान्य और ग्राम्य जनता भी आपके प्रवचनों की ओर स्वत्र आकर्पित होती थी।

मारवाड के थली प्रदेशस्थित तेरापथ सम्प्रदाय और उसके अनुयायियो के बीच मे अनेक परिषह सहन कर वहाँ पधारे और अपनी पवित्र वाणी का स्रोत वहाया। भ्रम वढाने वाले तेरापथी का 'भ्रम विध्वसन' का उत्तर आगमानुसार—"सद्धर्म मडन" के द्वारा दिया। अनुकम्पा का उच्छेद करने वाली अनुकम्पा ढालों का उत्तर इसी प्रकार की मारवाडी भापा–लोकभापा मे ढाले रचकर दिया और इस प्रकार अज्ञानी ग्राम्य जनता को भगवान् महावीर के दयादान विपयक यथार्थ सिद्धातो का दिग्दर्शन कराया। आप ही के अनुशासन और शिक्षण का प्रभाव है कि सादडी सम्मेलन मे पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज को उपाचार्य का पद प्रदान किया गया। आपके शिष्यों मे मुनि श्री घासीलाल जी तथा सिरेमल जी महाराज आदि विद्वान् साधु विराजमान हैं। लगभग २३ वर्प तक आचार्यपद को वहन कर स० २००० मे आप स्वर्ग सिधारे।

७—सिद्धान्त-सागर पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज

मालवा-प्रदेश सन्निकट अतीत-काल मे जैन मुनियों की दृष्टि से अत्यन्त उर्वर प्रदेश कहा जा सकता हे। इस प्रदेश ने साधुमार्गीय सम्प्रदाय को अनेक ऐसे उत्कृष्ट, विद्वान्, प्रभावक और सयमपरायण मुनिरत्न दिये है, जिन्होंने अपने आदर्श चरित से मुनियों के इतिहास को जाज्वल्यमान वनाया है। पूज्य श्री मन्नालाल जी महाराज को जन्म देने का सौभाग्य भी इसी प्रदेश को प्राप्त हुआ। आपकी जन्म-भूमि रतलाम थी। आप श्री अमरचन्द जी नागौरी के पुत्र तथा माता नन्दी बाई के आत्मज थे। वि० स० १६२५ मे आपका जन्म हुआ और तेरह वर्प की अल्प आयु मे ही आप ससार से विरक्त हो गए। पूज्य श्रीउदयसागर जी महाराज की सेवा मे रहे हुए सरलस्वभावी मुनि श्रीरत्नचन्द्र जी महाराज के सुशिष्य थे। करीव २५ गुरुभ्राताओं और गणधरों के समान ग्यारह शिष्यरत्नों से आप ऐसे शोभायमान होते, जैसे ताराओं मे चन्द्रमा!

सं० १६७३ मे आप आश्चर्य-पद पर प्रतिष्ठित हुए। विशेपता तो यह थी कि आप जम्मू (काश्मीर) मे विराजमान थे और पूज्य पदवी का प्रदान व्यावर मे हुआ!

पूज्य श्री बत्तीस आगमों के तलस्पर्शी ज्ञाता थे। कोई भी विषय पूछिए, किस आगम मे, किस अध्ययन और किस उद्देशक मे है, पूज्य श्री चटपट बतला देते थे। वास्तव मे आपका आगमज्ञान असाधारण था। इसी कारण आप 'शास्त्रों के समुद्र' के महत्त्वपूर्ण उपनाम से विख्यात हो गए थे।

सन्तों मे जो विशिष्ट गुण होने चाहिएँ, सभी आप मे विद्यमान थे। शिशु के समान सरलता और स्वच्छता, युवकोचित उत्साह और संयम-विषयक पराक्रम, वृद्धों के अनुरूप क्षमा, सन्तोष और गम्भीरता आपमे आदि से अन्त तक रही। हृदय नवनीत के सदृश कोमल! चौथे और के सन्तों के चरित की झाँकी आप मे मिलती थी।

आपने मालवा, मेवाड, मारवाड, और पजाव आदि प्रान्तों मे विचरण करके जनता को पुनीत पथ का प्रदर्शन किया। आप प्राय अपने प्रवचनों मे शास्त्रीय-चर्चा ही करते थे। उपदेश की भापा इतनी सरल होती थी कि आबालवृद्ध सभी सरलता से समझ लेते थे। करीव ५२ वर्प सयम का पालन करके स० १६६० मे, व्यावर में आपका स्वर्ग-विहार हो गया।

८—वादी-मानमर्दक मुनि श्री नन्दलालजी महाराज

पारिवारिक वातावरण का व्यक्ति के जीवन पर कितना गहरा प्रभाव पडता है और माता-पिता का कार्यकलाप किस प्रकार अज्ञात रूप मे बालक के जीवन-निर्माण का कारण होता है, यह बात मुनि श्री नन्द-लाल जी महाराज की जीवनी पर दृष्टिपात करते ही स्पष्ट रूप मे समझ मे आ जाती है।

मुनि श्री नन्दलाल जी महाराज का मातृपक्ष और पितृपक्ष धर्म के पक्के रंग मे रँगा था। अतएव शास्त्रीय भाषा मे आपको 'जाइसपन्ने' और 'कुलसपन्ने' कहना सर्वथा उचित है।

आपकी जन्मभूमि कजाडी (मध्यभारत-भूतपूर्व होल्कर स्टेट) थी। भाद्रपद शुक्ला ६ वि० स० १९१२ मे, अर्थात् अब से ठीक एक शताब्दी पूर्व आप इस धरा-धाम पर अवतीर्ण हुए। आपकी उम्र दो वर्ष की थी, तभी आप के पिता श्रीरत्नचन्द्र जी ने और मामा श्रीदेवीलाल जी ने स० १९१४ मे दीक्षा ग्रहण कर ली। तदनन्तर वि० स० १९२० मे आपके दोनों ज्येष्ठ बन्धुओं-श्री जवाहरलाल जी, श्री हीरालाल जी-ने, आपकी परम धर्मिष्ठा माता राजकुँवरबाई ने तथा आपने भागवती दीक्षा अगीकार करके विश्व के समक्ष एक अनूठा आदर्श उपस्थित किया। कैसा स्पृहणीय और स्फूर्तिप्रद रहा होगा वह दृश्य!

आगे चलकर ,तीनों भाइयों की इस मुनित्रयी ने स्थानकवासी सम्प्रदाय की तथा भगवान् महावीर के शासन की महान् सेवा एव प्रभावना की।

यद्यपि इस त्रिपुटी मे नन्दलाल जी महाराज सबसे छोटे थे, मगर प्रभाव मे वह सबसे बढ़े-चढे थे। उन्होंने निरन्तर उद्योग करके आगमों सम्बन्धी प्रखर पाण्डित्य प्राप्त किया था। वे सहज प्रतिभा के प्रकृष्ट पुज थे। वाद-विवाद और चर्चा-वार्त्ता मे अपना सानी नहीं रखते थे। अनेकों बार उन्हें अन्य सम्प्रदायी जैन साधुओं एव जैनेतर विद्वानों से शास्त्रार्थ करने का प्रसग आया और हर वार वे गौरव के साथ विजयी हुए। वास्तव मे वे जन्मत विजेता थे। अपनी बालक्रीडाओं मे भी उन्हें कभी पराजय का मुख नहीं देखना पडा। आपका प्रधान विहार-क्षेत्र यद्यपि मालवा, मेवाड़ और मारवाड रहा, मगर आपके सयुक्त प्रान्त, देहली प्रान्त एव पंजाब मे भी विचरण किया था। वहाँ भी आपने अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा का सिक्का जमाया। आप अपने समय मे 'वादी-मानमर्दक' के विरुद के धारक थे। निरहंकार, दयालु और गुणज्ञ थे। दीर्घकाल तक ज्ञान और चारित्र की आराधना करके आप अन्त मे रतलाम मे स्थिरवास करते हुए स्वर्गगामी हुए।

९—विद्या-वाचस्पति मुनि श्री देवीलालजी महाराज

टोंक रियासत के केरी नामक छोटे से ग्राम मे जन्म लेकर भी जिसने अपने तेजोमय जीवन की स्वर्णिम रश्मियाँ भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक प्रसरित कीं, जिसने अपना बहुमूल्य जीवन स्व-पर के उद्धार मे लगाया, जिसने अकिंचनता, अनगारता और भिक्षुकता अगीकार करके भी अपनी महनीय आध्यात्मिक सम्पत्ति से राजाओं-महाराजाओं को भी प्रभावित करके अपने पावन पाद-पद्मों मे प्रणत किया, वह तपोधन, ज्ञानधन मुनि श्री देवीलाल जी म० आज भी हमारी श्रद्धा-भक्ति के पात्र हैं।

मुनि श्री देवीलालजी के पिता बोरदिया-वशी श्री माणकचन्दजी थे और माता श्रीमती शृगार बाई थीं। तीनों पति, पत्नी और पुत्र ने साथ-साथ दीक्षा ली। दीक्षा के समय आपकी उम्र केवल ग्यारह वर्ष की थी। दीक्षित होनेके पश्चात् श्री माणकचन्द जी म० तपस्या-प्रधानी बने और उन्होंने घोर तपस्वी

की पदवी प्राप्त की। देवीलाल जी म० ने अपने उठते हुए जीवन को ज्ञानाभ्यास मे लगा दिया। थोडे ही दिनों मे आप व्याकरण के तथा शास्त्रों के प्रकाण्ड पण्डित बन गये। आप सन्तों में 'विद्या-वाचस्पति' कहलाते थे।

आपकी वक्तृत्वशक्ति अत्यन्त चमत्कारपूर्ण थी। विद्वत्ता प्रत्येक वाक्य मे झलकती थी। हजारों के जनसमूह मे आपका व्याख्यान होता था तो आप सिंह के समान दहाडते थे। राजा-महाराजा, राज्याधिकारी आदि आपकी कल्याणी वाणी सुनने के लिये उत्कण्ठित रहते थे। स्वर मे मधुरता थी। जिस विषय को छेडते, उस पर बडी ही सुन्दर, सार-गर्भित, सागोपाग और प्रभावजनक विवेचन करते थे।

आपने अपने प्रभाव से अनेक स्थानों के पारस्परिक वैमनस्य-धडेबाजी को मिटाकर एकता स्थापित की। झगडे मिटाये। हजारों को मास-मदिरा का त्यागी बनाया। पशुबलि बन्द की। तत्त्वचर्चा करके आर्य-समाज के श्री प्रभुदयाल सरीखे नेता को कट्टर जैनी बनाया।

आप अपने सम्प्रदाय के एक प्रमुख स्तम्भ रहे। सम्प्रदाय को सुचारु रूप से सचालित करने और उसमे ज्ञान-क्रिया का विकास करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे। भू० पू० आचार्य प० र० मुनि श्री-शेषमल जी म०, जो तेरापथी सम्प्रदाय मे दीक्षित हुए थे, आपसे वाद-विवाद करके अन्त मे आपके शिष्य बन गये। करीब ५१ वर्ष सयम पालकर आप कोटा मे स्वर्गवासी हुए।

१०—विरलाविभूति पूज्य श्री खूबचन्दजी महाराज

पूज्य श्री खूबचन्द्र जी महाराज का जन्मस्थान निम्बाहेडा (टोंक) है। विक्रम सवत् १९३० में आपका जन्म हुआ। उठते हुए यौवन मे आपने विषयों को विष के समान समझकर स० १९५२ में आपने साधु-दीक्षा अगीकार कर ली। पिता का नाम टेकचन्द जी, माता श्रीमती गेंदीबाई और पतिव्रता पत्नी का नाम साकरबाई था।

आपका घराना धन-जन से सम्पन्न था। प्रभूत वैभव था। स्नेहशील परिवार था। पत्नी पति-परायणा, आज्ञाकारिणी, सुन्दरी और सुसस्कारवती थी। परन्तु इनमे से कोई भी वस्तु आपको गार्हस्थ्य की और आकर्षित न कर सकी। आप अत्यन्त साहसी और दृढनिश्चयी महापुरुष थे। गौतम बुद्ध की भाँति आप पत्नी, परिवार और सम्पत्ति को त्यागने का निश्चय कर चुके तो लाख समझाने और अनुनय-विनय करने पर भी न डिगे। मुनि त्रिपुटी के एक रत्न श्री नन्दलाल जी म० से नीमच मे आपने दीक्षा ली।

बचपन मे ही आपकी उच्च श्रेणी की शिक्षा हुई थी। दीक्षित होने पर आपने सस्कृत, प्राकृत और आगमों का गहन अध्ययन किया। आगमों के पारदर्शी वेत्ता बने। आप अध्ययनशील सन्त थे। दर्शनार्थियो से बात-चीत करते तो भी शास्त्रीय बात ही करते। सयम मे एकनिष्ठा, प्रीति एव एकाग्रता रखने वाले आप इस युग के आदर्श सन्त थे। अत्यन्त सौजन्य की मूर्त्ति, सरलता की प्रतिमा और भद्रता के भण्डार। सौम्य मुखमण्डल पर अपूर्व वीतरागता एव अनुपम प्रशम भाव सदैव लहराता रहता था।

आपकी विद्वत्ता, शान्ति, एव सयमपरायणता आदि विशिष्ट गुण देखकर पूज्य श्री मन्नालाल जी म० के पट्टपर चतुर्विध सघ ने आपको सवत् १९९० मे आचार्य पद पर आरूढ़ किया।

पूज्य श्री राजस्थानी भाषा के उच्च कोटि के कवि थे। आपकी कविताओं का एक सग्रह सन्मति-ज्ञानपीठ, आगरा से 'खूब कवितावली' नाम से प्रकाशित हुआ है। आपकी यह रचना अत्यन्त सरस,

मधुर, प्रसाद गुणयुक्त है। वैराग्य और अध्यात्म का अन्त करण मे झरना बहाने वाली है।

निस्सन्देह पूज्य श्री मेघ के समान अपने मधुर व्याख्यानो से अमृत बरसाने वाले, सूर्य के समान-भव्य-जन रूपी कमलों को विकसित करने वाले, श्रद्धालुजनों रूपी कुमुदों को चन्द्रमा के समान आह्लाद-जनक थे। इस काल मे ऐसी विभूतियाँ विरल ही दृष्टिगोचर होती है।

दीर्घकाल तक सयम की आराधना करके अन्त मे आप ब्यावर में दिवगत हुए।

११—जैनदिवाकर श्री चौथमलजी महाराज

जन्म-जन्मान्तर मे सचित प्रकृष्ट पुण्य लेकर अवतरित होने वाले महापुरुषों मे प्रसिद्ध व्याख्याता जैनदिवाकर मुनि श्री चौथमल जी महाराज का शुभ नाम प्रथम अकित होने योग्य है। अपने आपने जीवन-काल मे सघ और धर्म की सेवा एवं प्रभावना के लिए जो महान स्तुत्य कार्य किये, वे जैन इतिहास मे स्वर्ण-वर्णो मे लिखने योग्य है। हमारे यहाँ अनेक बड़े-बड़े विद्वान्, वैराग्यवान्, वक्ता और प्रभावक सन्त हुए हैं, परन्तु जैनदिवाकर जी महाराज ने जो प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा प्राप्त की, वह असाधारण है। राजा-महाराजा, अमीर-गरीब, जैन-जैनेतर सभी वर्ग आपके भक्त थे। उत्तर भारत और विशेषत मेवाड, मालवा तथा मारवाड के प्राय सभी राजा-रईस आपके प्रभावशाली उपदेशों से प्रभावित थे। मेवाड के महाराणा आपके परम भक्त रहे। पालनपुर के नवाब, देवास नरेश आदि पर आपकी गहरी छाप पडी। अपने इस प्रभाव से जैनदिवाकर जी महाराज ने इन रईसों से अनेक धार्मिक कार्य करवाये।

जैनदिवाकर जी महाराज अपने समय के महान् विशिष्ट वक्ता थे। आपकी वाणी मे सुधा-रस छलकता था। आप श्रोताओं को मत्र-मुग्ध कर देते थे। राज महलों से लेकर झोंपड़ियों तक आपकी जादू-भरी वाणी गूँजी। अद्भुत शैली और सरल से सरल भाषा मे आपके प्रवचन होते थे। आपके उपदेशों ने सहस्रो नर-नारियों को तार दिया।

जैनदिवाकर जी महाराज अद्वितीय प्रभावशाली वक्ता होने के साथ उच्चकोटि के साहित्य-निर्माता भी थे। गद्य-पद्यमे आपने अनेक ग्रथों का निर्माण किया, जिनमे निर्ग्रन्थप्रवचन, भगवान् महावीर की जीवनी, 'पद्यमय जैन रामायण', मुक्तिपथ, आदि प्रसिद्ध है। आप द्वारा निर्मित पदों का 'जैनसुबोध गुटका' नाम से एक सग्रह भी प्रकाशित हो चुका है।

सयोग की बात देखिए कि रविवार (कार्तिक शु० १३, सं० १९३४) को आपका जन्म हुआ, रविवार (फाल्गुन शु० ५ स० १९५२) को आपने दीक्षा अगीकार की और रविवार (मार्गशीर्ष शु० ९ स० २००७) को ही आपका स्वर्गवास हुआ। सचमुच रवि के समान तेजस्वी जीवन आपको मिला। रवि के सदृश ही आपने ज्ञानालोक की स्वर्णिम किरणें लोक मे विकीर्ण की और अज्ञानान्धकार का विनाश किया।

आपके पिता श्री गगाराम जी तथा माता श्री केसर बाई ऐसे सपूत को जन्म देकर धन्य हो गए। नीमच (मालवा) पावन हो गया।

चित्तौड मे आपके नाम से श्री चतुर्थ जैन वृद्धाश्रम नामक एक सस्था चल रही है। कोटा मे आपकी स्मृति मे अनेक सार्वजनिक सस्थाओं का सूत्रपात हो रहा है।

दिवाकर जी महाराज जैनसघ के सगठन के प्रबल समर्थक थे। अन्तिम जीवन मे आपने सगठन के लिए सराहनीय प्रयास किये। दिगम्बर मुनि श्री सूर्यसागर जी, श्वे० मूर्तिपूजक मुनिश्री आनन्दसागर जी और आपके अनेकों जगह सम्मिलित व्याख्यान हुए। यह त्रिपुटी सम्मिलित विहार करके जैन-समाज मे

एकता का शंखनाद करने की योजना बना रही थी, पर काल को यह सहन न हुआ। दिवाकर जी महाराज का स्वर्गारोहण हो गया ! फिर भी आप स्थानकवासी सम्प्रदाय के श्रमण-सघ की जड जमा ही गये।

निस्सन्देह जैनदिवाकर जी महाराज अपने युग के असाधारण प्रतिभाशाली-महान् सन्त है। जगत् आपके उपकारों को जल्दी भूल नहीं सकता।

१२—उपाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज

पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज सा० का जन्म स० १९४७ मे मेवाड के मुख्य नगर उदयपुर मे हुआ था। अत्यन्त उत्कृष्ट भाव से केवल १६ वर्प की अवस्था मे आपने प्रव्रज्या अगीकार की। अपने गुरु देव पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज सा० की सेवा मे रह कर आपने शास्त्रो का गहन अध्ययन किया। अपने गुरु के अत्यन्त योग्य और प्रियशिष्य के रूप में आप रहे। आपको मराठी, हिन्दी और गुजराती भापा का अच्छा ज्ञान है।

अजमेर साधु-सम्मेलन के समय आप पूज्य श्री हुकमीचन्द जी म० सा० की सम्प्रदाय के युवाचार्य के रूप मे घोपित किये गए। सवत् २००० मे भीनासर मे पूज्य श्री जवाहरलाल जी म० सा० के कालधर्म पाने के पश्चात् आप इस सम्प्रदाय के आचार्य वनाये गए। आचार्य के रूप मे आपने वडी ही योग्यता, दक्षता एव सफलता के साथ सम्प्रदाय का सगठन एव सचालन किया।

आपकी वैयावच्च (सेवापरायणता), आपकी गम्भीरता और आपकी सौम्यता स्पृहणीय एवं अनुकरणीय है। स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० की अतिम समय मे जिस तत्परता, भक्ति एव आत्म-विभोर होकर सेवा की वह समस्त मुनिवृन्द के लिये एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

आपकी व्याख्यान-शैली वडी ही मधुर, आकर्पक एव श्रोताओं के अन्तस्तल को स्पर्श करने वाली है। मत्र-मुग्ध होकर और आत्म-विस्मृत होकर श्रोता लोग आपका व्याख्यान श्रवण कर एक अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव करने लगते है। गुरु-गम्भीर मेघ-गर्जना के समान आपके वचन कर्णगोचर होते ही श्रोताओ के मन-मयूर थिरक-थिरक कर नाचने लगते है।

आपने भी अपने गुरु के समान थली प्रदेश मे प्रसरित तेरापथियों की तरफ से अनेक परिपहो को धैर्यपूर्वक सहन करके भी उनके दया-दान विरोधी मिथ्या-मान्यता का दृढता-पूर्वक प्रतिकार करके भगवान् महावीर के दया-दान विषयक सिद्धान्तों का सर्व-साधारण लोगों को दिग्दर्शन कराया।

आपके विनय और गाभीर्य आदि गुणों से प्रभावित एव आकर्पित होकर सादड़ी सम्मेलन के समय बाईस सम्प्रदायों ने मिलाकर 'उपाचार्य' पद प्रदान किया। जिसकी जवावदारी सफलतापूर्वक निर्वाह करते हुए चतुर्विध श्री सघ की सेवा कर रहे है।

भव्य और प्रभावशाली व्यक्तित्व, साधुता के गुणों से सम्पन्न, नेतृत्व और वक्तृत्व की अपूर्व क्षमता, सरलता एव गम्भीरता की सजीव मूर्ति उपाचार्य श्री समाज की एक विरल विभूति है और ऐसी ही विभूतियों से सघ और शासन उन्नत एव मंगलकारी हो सकता है।

१३—पं० मुनिश्री सहस्रमलजी महाराज

प० मुनि श्री सहस्रमल जी महाराज का जन्म वि० स० १९५२ मे मेवाड के वरार ग्राम मे हुआ था। आपके पिता का नाम श्री हीरालाल जी था। आपने पहले तेरापथ धर्म की दीक्षा अगीकार की

और उस मे लगभग सात वर्ष तक रहे। किंतु तेरापंथ के दया-दान विरोधी सिद्धान्त और आचार-विचार जैनधर्म के मूलभूत सिद्धान्तों से विरोधी मालूम पडने पर तेरापंथ का त्याग कर सवत १९७४ मे प्रभावशाली वक्ता प० मुनि श्री देवीलाल जी महाराज से शुद्ध जैन धर्म की दीक्षा अंगीकार की। आपने शास्त्रों का गहन अध्ययन किया है। पूज्य श्री खूबचन्द जी महाराज की पाट पर आप आचार्य पद पर विराजमान हुए थे।

आप अत्यन्त शान्त और समयसूचक श्रमण है। साधुमार्गी समाज मे आपके आचार-विचार अत्यधिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके है। एकता के अडिग उपासक होने के कारण एकता की वेदी पर अपनी आचार्य पदवी समर्पित करने में सर्व प्रथम श्रेय आप ही को प्राप्त हुआ है। श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण सघ के आप मंत्री हैं।

१४—साहित्यप्रेमी मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज

प० मुनि श्री प्यारचन्द जी महाराज ने अपने सद्गुरु जैन दिवाकर चौथमल जी महाराज के चरणों मे एकनिष्ठापूर्वक सेवा समर्पित की। जैनदिवाकर जी महाराज के प्रवचनों का सम्पादन आपकी विलक्षण प्रतिभा का प्रभाव है। आप साहित्यप्रेमी और सरल प्रवक्ता हैं। सादड़ी साधु-सम्मेलन मे आप सहमत्री के रूप मे नियुक्त किये गए हैं।

कोटा-सम्प्रदाय

१—पूज्य श्री दौलतरामजी महाराज

पूज्य श्री हरजी ऋषि के छठे पाट पर पूज्य श्री दौलतराम जी महाराज विराजमान हुए। आप स्वमत तथा परमत के परम विद्वान् थे। सस्कृत, प्राकृत भाषाओं के आप प्रकाड पडित थे। आपकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर लीवडी मोटी सम्प्रदाय के सस्थापक पूज्य श्री अजरामर जी स्वामी ने आपको मालवे से पधारने के लिये आमन्त्रित किया था और आपके सान्निध्य मे रहकर उन्होंने शास्त्रों का गंभीर अध्ययन किया था।

२—तपस्वी मुनि श्री गणेशीलालजी महाराज

आपकी सम्प्रदाय मे अनेक तपस्वी मुनिराज हुए है। पूज्य श्री हरजी ऋषि जी महाराज के बारहवे पाट पर पूज्य श्री प्रेमराज जी महाराज विराजमान हुए। आपके सुशिष्य तपस्वी मुनि श्री गणेशीलाल जी महाराज है। आपका जन्म मारवाड मे विलाडा मे हुआ है। आप निरंतर एकातर तप करते है। दक्षिण प्रान्त मे आपका व्यापक प्रभाव है। आपके सान्निध्य मे जाने वाले को मुँहपत्ति धारण करना अनिवार्य है। मुँहपत्ति नहीं बाँधने वाले को न तो आप व्याख्यान मे बैठने देते और न उससे किसी प्रकार की बातचीत ही करते। आप खादी प्रचार के खास हिमायती हैं। खादी नहीं पहनने वाले के साथ बात करना भी आप पसन्द नहीं करते।

आपकी नेश्राय मे तपश्चर्या अधिक प्रमाण मे होती है। आप जहाँ-जहाँ विचरते हैं वहाँ जन-मेदिनी मेले के समान उमड पडती है। वयोवृद्ध होते हुए भी आप उग्र विहारी हैं। आपके शिष्य भी विद्वान् और तपस्वी है। किन्तु आपकी कठोर क्रिया और एकलविता के कारण कोई भी मुनिराज आपकी सेवा मे इस समय नहीं है। आप एकल विहारी के रूप में ही विचरते है।

की खेतशीजी महाराज से चली हुई कोटा-सम्प्रदाय के अंतर्गत एक शिष्य-परम्परा मे पूज्य की अनोपचन्द जी महाराज, पूज्य श्री हरखचन्द जी महाराज आदि प्रसिद्ध मुनिराज हो गये है।

स्थविर मुनिकी रामकुमारजी म० सा०, पं० मुनिश्री जीवराजजी म०, प० मुनिश्री हीरालालजी म० तपस्वी मुनिकी मिश्रीलालजी म० आदि सन्त इसी भूतपूर्व सम्प्रदाय के है जो श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमणसघ मे सम्मिलित है और क्रमश हाडौती, डूंगरप्रान्त और मद्रास जैसे प्रान्तों मे विचर कर जैन धर्म का प्रचार कर रहे हैं।

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज मालवा के मुनिराज

१—पूज्य श्री रामचन्दजी महाराज

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के दूसरे पाट पर पूज्य श्री रामचन्द जी महाराज आचार्य के रूप मे विराजमान हुए। आपा धारा नगरी के गोस्वामी गुरु थे। सस्कृत, वेद और वेदान्त के आप पारंगत विद्वान् थे।

हाथी के हौदे पर चढ़े हुए और नगर का निरीक्षण करते हुए पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज का धर्मोपदेश आपके कानों मे पडा। इससे आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ। आप की अन्तरात्मा मे एक अद्भुत चैतन्य-शक्ति प्रकट हुई जिसके कारण गोस्वामी का विलासिता का जीवन अन्त करके पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के सत्सग से चारित्र-धर्म अगीकार किया।

एक समय विहार करते हुए आप उज्जैन पधारे। वहाँ पेशवा सरकार की विदुषी मातेश्वरी ने कुछ ऐसे श्लोक पूछे कि जिनका अर्थ समझने मे अनेक विद्वानों की कठिनाई हुई। पूज्य श्री रामचन्द जी महाराज ने उन श्लोकों का समाधानकारक उत्तर दिया। इससे महारानी का हृदय आपकी तरफ आकर्षित हुआ और पूज्य श्री को हृदयार्पण करना चाहा। किन्तु आचार्य श्री ने जैन साधुओं के यथार्थ स्वरूप का दिग्दर्शन कराते हुए कहा कि "हम जैन साधु तो कचन और कामिनी के त्यागी है। यदि आप सचमुच ही प्रसन्न हुई हैं और परोपकार की इच्छा रखती हों तो पेशवा सरकार के कैदखाने मे हजारों कैदी सड रहे है उन्हें मुक्त करा दो।" पेशवा सरकार ने आपकी आज्ञा शिरोधार्य की और समस्त बन्दियों को वन्दीखाने से मुक्त किया। इससे जैनधर्म की प्रचण्ड प्रभावना हुई। अपराधियों ने फिर से अपराध न करने की प्रतिज्ञा की।

आप के फैलते हुए यश-सौरभ से अनेक ईर्ष्यालुओं के दिल जलने लगे। ऐसे दिलजले लोगों ने ग्वालियर की सिंधिया सरकार को प्रार्थना की कि आचार्य रामचन्द जी अपनी गुरु गोस्वामी मठाधीश को धोखा देकर जैन साधु हो गए हैं और अब वे सनातनधर्म की निन्दा करते हैं— शकर और गगा का अपमान करते हैं। यह सुन कर सिंधिया सरकार अत्यन्त क्रुद्ध हुए। सरकार ने आप से प्रश्न किया कि

"क्या आप महादेव को नहीं मानते ?" पूज्य श्री रामचन्द जी ने उत्तर दिया कि "हे राजन्! जिसने राग-द्वेष क्रोध-मानमाया-लोभ का सहार किया है उसे हम 'महादेव' कहते है। हम अपना समस्त जीवन ऐसे महादेव की आराधना मे ही व्यतीत करते है। गंगा जी का सम्मान हम माता से भी अधिक करते हैं। अपमान तो वे करते है जो उसमे मल-मूत्र का विसर्जन करते है और हाथ-पॉव धोकर अपना मैल उसी मे मिलाते हैं और उसे अपवित्र बनाते है।

इस प्रकार का युक्ति-युक्त उत्तर सुन कर श्री सिन्धिया सरकार अत्यन्त प्रसन्न हुए। विद्वेषी लोग अन्दर-ही-अन्दर जल कर खाक हो गए। इस प्रकार आपने अपनी प्रतिभाशाली बुद्धि-वैभव से एक सम्माननीय आचार्यरूप मे प्रतिष्ठा प्राप्त की।

२—पूज्य श्री माधव मुनिजी महाराज

"सो साधु एक माधु" *की उक्ति से प्रसिद्ध कविराज श्री माधव मुनि एक अति प्रभावशाली* आचार्य हुए है। वाद-विवाद मे आप लोक-विश्रुत थे। कोई भी प्रतिपक्षी अपना वितण्डावाद छोड नत-मस्तक हुए बिना नहीं जाता था। प्रवचन-कला मे भी आप निष्णात थे। आप की कविताएँ अत्यन्त भावनामय और विद्वत्तापूर्ण होती थीं।

३—पूज्य श्री ताराचन्दजी महाराज

पूज्य श्री ताराचन्द जी महाराज ने वि० स० १६४६ मे दीक्षा अंगीकार की। आप बड़े ही स्वाध्याय-प्रेमी और सरल प्रकृति के साधु थे। आत्मिक शक्ति आपमे ऐसी महान् थी कि ७६ वर्ष की अवस्था मे भी आप उग्र विहार करते थे। मैसूर और हैदराबाद की तरफ विचरकर आपने खूब उपकार किया।

४—प० मुनि श्री किशनलालजी महाराज

प० मुनि श्री किशनलाल जी महाराज पूज्य श्री ताराचन्द्र जी के शिष्य है। आपका शास्त्रीय ज्ञान सुविशाल है। कविता के आप रसिक है। वस्तु तत्त्व को सरल और सुबोध बताकर समझाने मे आप प्रवीण है। आपकी प्रवचनशैली बडी ही मधुर है। जन्म से आप ब्राह्मण है किन्तु जैनधर्म के सस्कार आपमे सहज ही स्फुरायमान हुए है। आप श्रमण-सघ के मन्त्री है।

५—प्र. वक्ता श्री पं० मुनिश्री सौभाग्यमलजी महाराज

प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी महाराज ने प० मुनि श्री किशनलालजी महाराज सा० के पास दीक्षा ग्रहण की। शास्त्रों का अत्यन्त गहन अभ्यास आपने किया है। वक्तृत्व कला मे आप निपुण है और सगठन के हिमायती है। अनेक शिक्षण सस्थाओं का आप के द्वारा सूत्र सचालन होता है। आप के द्वारा साहित्य की खूब सेवा हुई है। विपक्षी विद्वानों के साथ सात्त्विक युद्ध करके आपने विजय सम्पादन किया है। 'आचाराग' का प्र० श्रु० स्कध का आपने सुन्दर ढग से सम्पादन किया है। आप के व्याख्यानों के संग्रह भी प्रकट होते है।

६—शतावधानी प० केवल मुनिजी महाराज

प० मुनि श्री केवलचन्द जी महाराज प्र० वक्ता सौभाग्यमल जी महाराज के शिष्य थे। सस्कृत-प्राकृत आदि भाषाओं का आपने खूब अभ्यास किया था। सम्वत् २०११ मे रेल के स्लीपर पार करते हुए चक्कर आ जाने पर वहीं गिर पड़े-उसी समय रेल आजाने के कारण रेल-दुर्घटना के शिकार हो गए। यह घटना उज्जैन की है। स्था० जैन समाज ने एक विद्वान्-रत्न गुमा दिया।

पूज्य श्री ज्ञानचन्द्रजी महाराज के मुनिराज

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज की सम्प्रदाय के अनेक विभाग हुए और उसमे से अलग-अलग सम्प्रदाये फूट निकलीं। उनके ६६वे शिष्यो मे से धन्नाजी अत्यन्त प्रभावशाली शिष्य थे। आपसे भूधर जी स्वामी दीक्षित हुए। भूधर जी के चार शिष्यों मे से कुशला जी प्रभावशाली हुए। आप से मुनि श्री रामचन्द्र जी ने दीक्षा ग्रहण की। रामचन्द्र जी महाराज के मुनि श्री चिमनीराम जी शिष्य हुए। आपसे मुनि श्री नरोत्तम जी महाराज ने पच महाव्रत धारण किये। मुनि श्री नरोत्तम जी महाराज के आठ शिष्य हुए। उनमे से मुनि श्री गंगाराम जी महाराज के शिष्य तपस्वी मुनि श्री जीवन जी महाराज हुए और जीवन जी महाराज के मुनि श्री ज्ञानचन्द्र जी महाराज हुए।

उपरोक्त परम्परा मे मुनि श्री गोविदराम जी महाराज, मुनि श्री मदनलाल जी महाराज, चुन्नीलाल जी महाराज, खीमचन्द महाराज जी आदि अनेक सन्त हुए।

वर्तमान मे पडित मुनि श्री पूर्णमल जी महाराज, आत्मार्थी मुनि श्री इन्द्रमल जी महाराज, तपस्वी मुनि श्री श्रेयमल जी महाराज सा तथा पं० मुनि श्री समर्थमल जी महाराज सा० इस सम्प्रदाय मे क्रियाशील संत हैं। प० मुनि श्री समर्थमल जी महाराज ने शास्त्रों का गहरा अध्ययन किया है। आप एक प्रख्यात परम्परावादी मुनिराज हैं।

पूज्य श्री रत्नचन्द जी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के ६६ वें शिष्यों मे से श्री धन्ना जी महाराज अग्रगण्य विद्वान थे। आपका परिवार दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। आचार्य कुशल जी, पूज्य धन्नाजी महाराज के शिष्य पूज्य भूदर जी महाराज के पास दीक्षित हुए। उनके शिष्य गुमानचन्द जी महाराज हुए जो अत्यधिक प्रभावशाली आचार्य थे। आपके बारह शिष्य खूब विद्वान थे। इन सब मे पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज अग्रगण्य थे, जिनके नाम से इस सम्प्रदाय का नाम हुआ।

१—पूज्य श्री रत्नचंद्रजी महाराज

राजस्थान के कुड़गॉव मे आपका जन्म हुआ था। आपके पिता का नाम श्री लालचन्द जी और माता का नाम हीरादेवी था। आप नागौर के श्री गगाराम जी के यहाँ दत्तक के रूप मे गये थे। वि० स०

१८४८ मे पूज्य श्री गुमानचन्द जी महाराज के पास उत्कृष्ट वैराग्यभाव से दीक्षा ग्रहण की। आपने आगमों का गम्भीर रूप से अध्ययन, मनन और चिन्तन किया था। तत्कालीन सत-मुनिराजों मे आपकी खूब प्रतिष्ठा थी। स्थविर मुनिराज श्री दुर्गादास जी महाराज की प्रबल इच्छा के कारण समस्त की सघ ने मिलकर आपको आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित किया। आपने हजारों जैनेतरों को जैनधर्म की दीक्षा प्रदान की। सवत् १८८२ मे आपका स्वर्गविहार हुआ।

२—पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी महाराज

पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज के चौथे पाट पर पूज्य की शोभाचन्द्र जी महाराज विराजमान हुए। आपका जन्म वि० स० १६१४ मे जोधपुर मे हुआ था। आपके पिता का नाम श्री भगवानदास जी और माता का नाम श्री पार्वती देवी था। आपने पूज्य श्री कजौडीमल जी महाराज सा० से १३ वर्ष की बाल्यावस्था मे सयम ग्रहण किया। आपकी नम्रता, गंभीरता, गुरुसेवा, सहिष्णुता और मिलनसार प्रकृति से प्रभावित होकर स० १६७२ मे श्री सघ ने मिलकर आपको आचार्य-पद दिया। अनेक भव्य प्राणियों का उद्धार करते हुए स० १६८३ मे आप समाधि-मरण पूर्वक काल-धर्म को प्राप्त हुए।

३—सहमंत्री पं० रत्न श्री हस्तीमलजी महाराज

प० रत्न हस्तीमल जी महाराज का जन्म स० १६६७ मे हुआ। केवल १० वर्ष की अवस्था मे ही पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज से आपने दीक्षा ग्रहण की। आप सस्कृत-प्राकृत आदि भाषाओं के गहन अभ्यासी हैं। अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि से आपने शास्त्रों का अध्ययन किया है। छोटी सी उम्र मे आपकी गभीरता और चरित्रशीलता आदि गुणों से आकर्षित होकर स० १६८७ मे केवल २० वर्ष की अवस्था मे ही आपको आचार्य-पद से अलकृत किया। सादडी सम्मेलन मे आपका महत्त्वपूर्ण भाग था। आपकी प्रवचन-शैली अत्यन्त हृदयस्पर्शी है। 'नदी सूत्र' के प्रति आपकी अगाध भक्ति है। आपने इस सूत्र का विस्तारपूर्वक हिन्दी अनुवाद भी किया है। आगम प्रकाशन कार्य के सशोधन मे आपने बडा योगदान दिया है। आप प्रभावशाली वक्ता, साहित्यकार और चारित्रशील आध्यात्मिक मुनि हैं। सादडी सम्मेलन मे आप साहित्य मत्री एव सहमत्री चुने गये है। आपके ज्ञान और चारित्र से स्थानकवासी जैन समाज को बहुत बडी आशाएँ हैं। सत्य ही आप एक ऐसे सत है जिस पर स्थानकवासी जैन समाज को गौरव हो सकता है। सतत स्वाध्याय और अध्ययनशीलता मे आप रत रहते हैं।

पूज्य श्री जयमल जी महाराज की सम्प्रदाय

१—पूज्य श्री जयमलजी महाराज

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के दूसरे शिष्य धन्ना जी महाराज हुए। इनके शिष्य भूदर जी महाराज के पास मे पूज्य श्री जयमल जी महाराज ने दीक्षा ग्रहण की। आप लाविया के निवासी थे। आपके पिता का नाम श्री मोहनदासजी समदडिया थे और आपकी माता का नाम महिमा देवी था। विवाह

के छ मास पश्चात् व्यापार के लिए आपका मेडता आना हुआ। वहाँ पर आपने आचार्य श्री भूदर जी महाराज का व्याख्यान श्रवण किया। इससे आपको वैराग्य हो गया और सयम ग्रहण करने का दृढ निश्चय कर लिया। यह समाचार मिलते ही आपके माता-पिता अपनी वहू को लेकर मेडता पधारे। इन लोगों ने आपको खूब समझाया किन्तु जिसकी आसक्ति नष्ट हो गई हो वह त्याग-मार्ग मे शिथिलता किस प्रकार वतला सकता है? सवत् १७८७ मे आपने पच महाव्रत धारण किये। इस समय आपकी अवस्था बाईस वर्ष की थी। आपकी कुलवती भार्या लक्ष्मीवाई ने भी पति के पथ का अनुसरण किया और साथ-ही-साथ दीक्षा ग्रहण की। आपने शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। राजस्थानी सरल भाषा मे वैराग्य भाव के उत्कृष्ट पद्य और गीत आपने लिखे है, जिन्हें आज भी लोग याद कर और वोल कर अपनी धार्मिक भावना को वलवती वनाते है। 'मोटी साधु वदना' जिसका पाठ स्वाध्याय के रूप मे हो रहा है—यह आपकी ही महामूल्यवान् रचना है। लगभग सोलह वर्ष तक आपने एकान्तर उपवास किया और पचास वर्ष तक सोये नहीं। यहाँ तक कि दिन मे भी कभी ऊँघे नहीं। आपने अतिम स्थविर जीवन नागौर मे विताया। स्वर्ग-वास के एक माह पहले चार आहार का परित्याग कर सलेखना व्रत ग्रहण किया। सवत् १८५३ की वैशाख सुद १४ की पुण्य-तिथि को आपने नश्वर देह का त्याग कर स्वर्ग-गमन किया। आपके त्याग और वैराग्यमय आचरण की अमिट छाप समस्त स्थानकवासी समाज मे अखण्ड रूप से सुरक्षित है।

आपकी सम्प्रदाय मे पूज्य श्री जोरावरमल जी महाराज दस वर्ष की अवस्था मे दीक्षित हुए और सवत् १६८६ मे आपका स्वर्गवास हुआ। आप महान् विद्वान् और कुरीतियों के विरोधी थे। पडित चौथमल जी वड़े विद्वान् एव क्रियापात्र हुए। जोधपुर मे सवत् २००८ मे लम्वे दिन के सथारापूर्वक 'पडितमरण' हुआ। वर्तमान मे इस सम्प्रदाय मे स्थविर मुनि श्री हजारीमल जी महाराज, वक्ता वख्तावर-मल जी महाराज, पडित मुनि श्री मिश्रीमल जी महाराज, पडित चादमल जी महाराज, पडित जीतमल जी महाराज, प० लालचन्द जी महाराज आदि मारवाड मे विचरते है।

पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय

१—पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज

पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज का जन्म वीरमगाँव मे भावसार जाति मे हुआ था। आपने पूज्य श्री मलूकचन्द जी महाराज से दीक्षा ग्रहण की थी। राजस्थान मे आप एक उत्कृष्ट चरित्रवान् आचार्य हुए हैं। आप मे धर्म-प्रचार की प्रवल प्रतिभा थी। तेरापथ सम्प्रदाय के आद्य-प्रवर्तक भीषण जी आपके ही शिष्य थे।

वर्तमान मे इस सम्प्रदाय मे प० मुनिश्री मिश्रीलालजी महाराज "कडक मिश्री" के नाम से प्रसिद्ध है।

२—मुनि श्री श्रीमिलालजी महाराज

मुनि श्री मिश्रीलालजी महाराज उत्साही और क्रियापात्र मुनिराज है। आप 'मरुधर केशरी' के नाम से सुप्रसिद्ध हैं। आपने श्रीमान् लोंकाशाह के जीवन पर "धर्मवीर लोंकाशाह" नाम की एक सुन्दर पुस्तक लिखी हे। सादडी के साधु-सम्मेलन मे आपने महत्त्वपूर्ण भाग लिया था। सोजत, सीरीयारी,

सादड़ी आदि कई स्थान के छात्रालय और विद्यालय आपके उपदेशों का फल है। आप विद्वान, व्याख्याता, चर्चावादी, लेखक और कवि भी है। प्रेरणा-शक्ति अच्छी है। श्रमण-सघ के आप मत्री भी हैं। उग्रविहारी और सयमप्रेमी हैं।

पूज्य श्री चौथमलजी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज की परम्परा मे पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज से आठवे पाट पर पूज्य श्री चौथमल जी महाराज आचार्य-पद से सुशोभित हुए। आप पूज्य श्री भैरूलाल जी महाराज के शिष्य और विद्वान वक्ता थे। इस सम्प्रदाय मे स्थविर मुनि श्री शार्दूलसिंह जी महाराज हैं। आपके शिष्य पं० रूपचन्द जी महाराज सस्कृत प्राकृत भाषाओं के अच्छे पडित हैं। वक्ता और लेखक भी हैं।

१—मरुधर आचार्य श्री अमरसिंहजी महाराज

जैन सस्कृति मे आचार्य का विशेष महत्व रहा है, तीर्थंकरों के अभाव में आचार्य ही चतुर्विध सघ का नेतृत्व करता है, "दीवसमा आयरिया" आचार्य को दीपक की उपमा दी है।

श्रद्धेय पूज्य श्री अमरसिंह जी म० ऐसे ही एक महान् आचार्य थे, जिन्होंने भारत की राजधानी दिल्ली मे जन्म लिया और वहीं शिक्षा-दीक्षा पाई।

पूज्य श्री लालचन्द्रजी म० की वाग्धारा को श्रवण कर सम्वत् १७४१ मे, भरी जवानी मे, स्त्री का परित्याग कर, भोग-विलास को, धन-वैभव और ऐश्वर्य को ठोकर मार दीक्षा अगीकार की। स० १७६१ मे आप आचार्य बने, सैकडों श्रमण और श्रमणियों के नेतृत्व की वागडोर सभाली। सम्वत् १७५७ मे दिल्ली मे वर्षावास व्यतीत किया, वहादुर शाह वादशाह उपदेश से प्रभावित हुआ।

जोधपुर के दीवान खिवसिहजी भण्डारी के प्रेमभरे आग्रह को टाल न सके तथा अलवर, जयपुर, अजमेर होते हुए मरुधर के प्राङ्गण मे प्रवेश किया।

सोजत मे जिन्द को प्रतिवोध देकर मस्जिद का जैनस्थानक बनाया, जो कि आज भी काया-कल्प कर उस अतीत का स्मरण करा रहा है।

जब पूज्य श्री पाली मे पधारे तो वहाँ जोधपुर, बीकानेर, मेडता और नागौर के प्रतिष्ठित और विद्वान चार श्रीपूज्यों ने मिलकर शास्त्रार्थ का चेलेज दिया तो पूज्य श्री ने सहर्ष स्वीकार कर उन्हें शास्त्रार्थ मे पराजित कर अपने गम्भीर-पाण्डित्य का परिचय दिया।

मरुधर-धरा की राजधानी-जोधपुर मे जब पूज्य श्री पधारे तो दीवान ने अत्यन्त सत्कार के साथ राज तलेटी महल मे विराजने के लिये प्रार्थना की, तो पूज्यश्री वहीं डट गये, राजकार्यवशात् दीवानजी वाहर चले गये, तत्पश्चात् यतियों ने मिलकर जोधपुर नरेश अजीतसिंहजी से प्रार्थना की कि दीवानजी के गुरु आपको नमस्कार नहीं करते। नरेश ने सहज मस्ती मे कहा—परिव्राटों के चरण-कमलों मे हमारे शिर झुकते है, उन्हें झुकने की आवश्यकता ही क्या है?

हम इस अनुचित कार्य को देख नहीं सकते, आज्ञा होने पर द्वितीय अनुकूल स्थान बतला दिया जाय, हकारात्मक उत्तर को प्राप्त कर पूज्य श्री को आसोप ठाकुर साहब की हवेली मे ठहरा दिया गया,

जहाँ कि मानव जाने में भय का अनुभव करता था, आचार्य श्री को अनेक उपसर्ग देने के बाद देव पराजित हुआ, भौतिकता पर आध्यात्मिकता की विजय हुई, स्थानकवासी जैन धर्म के प्रचार का बीज वपन हुआ, आज मरुधरा की शुष्क भूमि मे स्थानकवासी जैन समाज का बगीचा लहलहा रहा है। उसका सर्व प्रथम श्रेय पूज्य श्री को है। उस महान् आचार्य के चरणों मे शतश सहस्रश वन्दन। आपके बाद पूज्य श्री तुलसीदासजी म० और पूज्य श्री सुजानमलजी महाराज क्रमश हुए।

२—'विश्व-विभूति' श्री जीतमलजी महाराज

भारतीय सस्कृति के मननशील मनीषी आचार्य श्री जीतमल जी म० जिनका जन्म सवत् १८२६ मे रामपुरा मे हुआ, पिता देवसेन जी और माता का नाम सुभद्रा था। अध्यात्मवाद के उत्प्रेरक आचार्य श्री सुजानमल जी के उपदेश से प्रभावित होकर स० १८३४ मे माता के साथ सयम के कठिन मार्ग पर अपने मुस्तैदी कदम बढाये। आचार्य श्री के चरणों मे बैठकर न्याय, व्याकरण, उर्दू-फारसी, गुजराती, मागधी और अपभ्रंश साहित्य का गम्भीर अध्ययन किया।

आप दोनों हाथों और दोनों पैरों से एक साथ लिखते थे, चारों कलमे एक साथ एक-दूसरे से आगे बढने का प्रयत्न करती थीं। १३ लाख श्लोकों की प्रतिलिपियाँ करना इसका ज्वलत उदाहरण है। जैन-जैनेतर के भेद-भाव के बिना, किसी भी उपयोगी ग्रन्थ को देखते तो उसकी प्रतिलिपि कर देते थे, यही कारण है कि आपने ३२ वक्त,-बत्तीस आगमों की-ज्योतिष, वैद्यक, सामुद्रिक-गणित, नीति, ऐतिहासिक, सुभाषित, शिक्षाप्रद औपदेशिक आदि विषयों के ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ कीं।

चित्रकला के प्रति आपका स्वाभाविक आकर्षण था। जैन श्रमण होने के नाते धार्मिक, औपदेशिक, कथा-प्रसङ्गों को लेकर तथा जैन भौगोलिक नक्शे और कल्पना के आधार पर ऐसे चित्र चित्रित किये है जिन्हें देख मन-मयूर नाच उठता है। उनके जीवनका एक प्रसङ्ग है कि स० १८७१ मे जोधपुर के परम मेधावी सम्राट् मानसिहजी के यह प्रश्न पूछने पर कि "जल की बूँद मे असख्य जीव किस प्रकार रह सकते है ?" उत्तर मे आचार्य श्री ने एक चने की दाल जितने स्वल्प स्थान मे एक सौ आठ हस्ति अङ्कित किये जिन्हें सम्राट् ने सूक्ष्मदर्शक शीशा की सहायता से देखा। प्रसन्नता प्रकट करते हुए जैन-मुनियों के प्रशसा रूप निम्न कवित्त रचा—

काहू की न आश राखे, काहू से न दीन भाखे,
करत प्रणाम ताको, राजा राण जेवडा।
सीधी सी आरोगे रोटी, बैठा बात करे मोटी,
ओढ़ने को देखो जाके, धोला सा पछेवडा॥
खमा खमा करे लोक, कदियन राखे शोक,
बाजे न मृदग चग, जग माहि जे वड़ा।
कहे राजा मानसिंह, दिल मे विचार देखो,
दु खी तो सकल जन, सुखी जैन सेवडा॥

आप उस समय के प्रसिद्ध कवि थे, आपने राजस्थानी भाषा मे सर्वजनोपयोगी अनेक ग्रन्थो का निर्माण किया। उदाहरणार्थ दो-चार ग्रन्थों का उदाहरण ही पर्याप्त होगा। 'चन्द्रकला' नामक ग्रन्थ जो चार खण्डों मे विभक्त है, एक सौ ग्यारह ढाल मे है। और सूरप्रिय सप्त ढाल मे है।

आपने दया-दान के सम्बन्ध में भी श्री० श्वे० तेरापंथी आचार्य जीतमलजी से पाली और रोइट मे शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित किया था।

७८ वर्ष तक सयम-साधना करने के वाद, १ महीने का सथारा कर सम्वत् १६१२ मे ज्येष्ठ शुक्ला दशमी के दिन जोधपुर मे उस विश्व-विभूति का स्वर्गवास हुआ।

जीवन-व्यापिनी संयम-साधना की परीक्षा मे पूर्ण रूप से सफल हुए! अन्धेरी सड़ी गली गलियों मे ठोकरे खाते हुए व्यक्ति के लिए उनका दिव्य-जीवन प्रकाशपुञ्ज के समान है, वह मूक स्वर मे समय मात्र का भी प्रमाद मत करो का वज्र आघोष कर रहा है।

आपका स्वर्गवास स० १८६२ मे हुआ। आप के वाद प्रभावशाली पूज्य श्री ज्ञानमल जी म० और पूज्य श्री पूनमचन्द जी म० पाट पर आये।

३—पूज्य श्री आत्मार्थी श्री जेठमलजी महाराज

पूज्य श्री पूनमचन्द जी महाराज के वाद आप के शिष्य श्री जेठमल जी महाराज आचार्य हुए। आपका जन्म सादडी, मेवाड मे सवत् १६१४ मे हुआ था। आप के पिता का नाम हाथी जी और माता का नाम लिछमा जी था। सवत् १६३१ मे आपने दीक्षा ग्रहण की थी। आप महान् तपस्वी, आत्मार्थी तथा ऊँचे ध्यानी थे। 'सिद्ध मुनि' के रूप मे उस समय आपकी सर्वत्र प्रतिष्ठा थी। सम्वत् १६७४ मे इस तेजस्वी दीपक का विलोप हो गया।

४—तपोमूर्ति श्री जसराजजी महाराज

जीवन को ऊपर उठाने के लिए निवृत्ति और प्रवृत्ति रूप दो पखों की आवश्यकता है। जैसे एक पंख टूट जाने पर पक्षी अनन्त आकाश मे सचरण-विचरण नहीं कर सकता, वह ऊँची उड़ान नहीं भर सकता वैसे ही साधक भी। एकान्त निवृत्ति अकर्मण्यता की प्रतीक है, तो एकान्त प्रवृत्ति भी चित्त की चपलता की प्रतीक है। एतदर्थ ही आर्यावर्त के महामानव की हृदय-तन्त्री झकृत हुई थी—

"एगओ विरई कुज्जा, एगओ य पवत्तण।
असजमे नियत्ति च सजये य पवत्तण ॥" उत्तरा० ३१-२

एक से निवृत्त होकर दूसरे मे प्रवृत्ति कर, हिसा, असत्त सकल्प, दुराचरण से निवृत्त होकर अहिंसा सयम मे प्रवृत्ति कर। अशुभ से निवृत्त होकर शुभ मे प्रवृत्ति करना ही सम्यक् चारित्र है। सन्त-जीवन की यही एक महान विशेपता है कि वे अशुभ से निवृत्त होकर शुभ मे प्रवृत्ति करते है।

श्रद्धेय मुनि श्री जसराज जी म० ऐसे ही सन्त थे। उन्होंने इठलाती हुई तरुणाई मे परिणीता सुन्दरी का परित्याग कर त्याग और वैराग्य से, रामपहचानजी म० के चरण—कमलों मे जैन-दीक्षा धारण की, और उन्हीं के चरणों मे वैठ कर जैन आगमों का गहन अध्ययन किया।

अतीत के उन महान् श्रमणों के तपोमय जीवन को पढते ही आपका तपस्या के प्रति जो स्वाभाविक अनुराग था, वह प्रस्फुटित हो गया और आपने तपस्या के कटकाकीर्ण महामार्ग की ओर अपने मुस्तैदी कदम वढाये।

सवा सोलह वर्ष तक सयम-साधना और आत्म-आराधना करते हुए जो आपने तपस्या की उसका

वर्णन आपके एक शिष्य ने भक्ति-भाव से उत्प्रेरित होकर पद्य मे अङ्कित किया है। जिसे पढते ही रोमाच के साथ ही तपोमूर्त्ति धन्ना अनगार का स्मरण हो आता है।

वे नीरस और अल्पतम आहार करते थे, सरस आहार का उन्होने त्याग कर दिया था। विशेप आश्चर्य तो यह है कि उन्होंने सवा सोलह वर्प मे केवल ५ वर्प ही आहार ग्रहण किया था। उन्होंने अट्ठाई तक जो तप किया था उसका निम्न वर्णन है —

६२	६०	५२	५१	४५	४२	४१	३०	२४	२१	२०	१६	१५	१२	१०	६	८
१	२	१	१	५	२	१	१७	४	२	२	१	६	२	८	१५	१५

आपका स० १६५० मे ७१ दिन के दीर्घ सथारे के वाद जोधपुर मे स्वर्गवास हुआ। धन्य है उस तपोमूर्त्ति को। [आप पूज्य श्री अमरसिहजी म० के प्रशिष्य थे।]

५—पूज्य श्री ताराचन्दजी महाराज

पूज्य श्री जेठमल जी महाराज के वाद आपके पाट पर पूज्य श्री नैनमल जी महाराज तथा पूज्य श्री दयालुचन्द जी महाराज हुए और आपके पाट पर पूज्य श्री ताराचन्द जी महाराज विराजमान है।

पूज्य श्री ताराचन्द जी महाराज का जन्म मेवाड के ववोरा ग्राम मे हुआ था। आपका पूर्व नाम हजारीमल जी था किन्तु दीक्षा लेने के वाद आपका नाम ताराचन्द जी रखा गया। आप अत्यन्त वृद्ध हैं फिर भी धर्मपालन का उत्साह रचमात्र भी नहीं घटा है। अपितु धार्मिक दृढता उत्तरोत्तर वढ़ती जाती है।

६—पं० मुनि श्री पुष्कर जी महाराज

प० मुनि श्री पुष्कर मुनि जी ब्राह्मण जाति के शृगार है। सवत् १६८१ मे आपका दीक्षा-सस्कार सम्पन्न हुआ। सस्कृत, प्राकृत आदि भापाओं का आपने मननीय अध्ययन किया है। 'सूरि-काव्य' और 'आचार्य सम्राट्' आपकी उल्लेखनीय रचनाये है। आप अतिकुशल वक्ता भी है। आप श्रमण-सघ के साहित्य मत्री है।

इस सम्प्रदाय मे महासतियों का अभ्यास भी प्रशसनीय और अनुकरणीय है। प्रवर्त्तिनी महासति मोहनकु वर जी की सुशिष्या महासति श्री पुष्पवती जी और कुसुमवती जी ने उच्च शिक्षण प्राप्त किया है। महासति जी श्री शीलकुंवर जी भी सस्कृत-प्राकृत आदि भापाओं की परम विदुपी है।

पूज्य श्री नानकराम जी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री जीवराम जी महाराज के शिष्य पूज्य लालचन्द जी, उनके वाद पूज्य श्री दीपचन्दजी महाराज और उनके वाद पूज्य श्री नानकराम जी महाराज हुए।

आपकी विद्वत्ता और आचारपरायणता उल्लेखनीय थी। इस सम्प्रदाय मे आपका विशिष्ट स्थान था।

१—प्रवर्तक पं० मुनि श्री पन्नालाल जी महाराज

आपके बाद अनुक्रम से मुनि श्री वीरभान जी, लक्ष्मणदास जी, मगनमल जी, गजमल जी और धूलमल जी महाराज हुए। वर्तमान मे इस समय प० मुनि श्री पन्नालाल जी महाराज हैं। आप एक प्रतिभाशाली सत हैं। आप की व्याख्यान-शैली प्रभावोत्पादक है। ज्योतिष-शास्त्र के आप विज्ञाता है। आपने अनेक अशिक्षित क्षेत्रों मे विचरण कर स्वाध्याय का प्रचार किया है। आप विद्याप्रेमी और सुधारक विचारों के स्थविर सन्त है। सगठन के बडे प्रेमी है।

राजस्थान के प्रख्यात मुनिराजों मे से आप भी एक प्रख्यात मुनिराज हैं। आप अजमेर-जयपुर प्रान्त के प्रधान मन्त्री और तिथिनिर्णायक मुनि समाज के मुख्य मुनि हैं।

इस सम्प्रदाय की दूसरी शाखा मे अनुक्रम से मुनि श्री सुखलालजी, हरखचन्दजी, दयालचन्दजी, लक्ष्मीचन्द्रजी हुए और प० मुनि श्री हगामीलालजी महाराज है।

पूज्य श्री स्वामीदास जी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री जीवराज जी महाराज के शिष्य लालचन्द जी के पाट पर श्री दीपचन्द जी महाराज और आपके बाद पूज्य श्री स्वामीदास जी महाराज आचार्य पद पर विभूषित हुए।

आपके बाद अनुक्रम से पूज्य मुनि श्री उग्रसेन जी, घासीराम जी, कनीराम जी, ऋषिनाथ जी और रगलाल जी पाट पर आये। आपके बाद वर्तमान मे स्वामी श्री फत्तेहचन्द जी महाराज, स्वामी छगनलाल जी महाराज और स्वामी श्री कन्हैयालाल जी महाराज आदि विद्वान् साधु-मुनिराज है। प० मुनि श्री छगनलाल जी अच्छे क्रियापात्र और प्रभाविक मुनि हैं। अजमेर सम्मेलन मे आपको 'मरुधर मन्त्री' नियुक्त किया था। मुनि श्री कन्हैयालाल जी महाराज ने सस्कृत और प्राकृत-भाषाओं का गूढ ज्ञान सम्पादन किया है। मूल सूत्ताणि जैसे आगम आपने सम्पादित किया है। कॉन्फरेस के आगम सम्पादन-कार्य मे प्रतियों का सशोधन-कार्य आपने बडी दिलचस्पी से किया। अभी भी आप आगमों मे से विविध चुनाव करते ही रहते है।

पूज्य श्री शीतलदास जी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री शीतलदास जी महाराज ने स० १७६३ मे पूज्य श्री लालचन्द जी महाराज के पास आगरा मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप रेणी ग्राम निवासी अग्रवालवशीय महेशजी के सुपुत्र थे। आपका जन्म सं० १७४७ मे हुआ था। आपकी लेखन-शैली अत्यधिक प्रसिद्ध थी। तत्कालीन मुनियों मे साहित्य-शिक्षण-क्षेत्र मे आप अजोड थे। जोधपुर, बीकानेर, साभर, आगरा और दिल्ली आदि अनेक नगरों मे विचरण कर आपने धर्म प्रचार की धूम मचा दी। आपने कुल मिलाकर ७४ वर्ष संयम का पालन किया।

वि० स० १८३६ पोस सुदी १२ को चारो आहार का प्रत्याख्यान करके सलेखना व्रत धारण कर राजपुर नामक ग्राम मे आप समाधि-मरण को प्राप्त हुए।

पूज्य श्री शीतलदास जी महाराज के पाट पर अनुक्रम से पूज्य श्री देवीचन्द जी, हीराचन्द जी लक्ष्मीचन्द जी, भैरूदास जी, उदेचन्द जी, पन्नालाल जी, नेमीचन्द जी और वेणीचन्द जी महाराज हुए।

१—तपस्वी श्री वेणीचन्दजी महाराज

तपस्वी श्री वेणीचन्द जी महाराज का जन्म स० १६६८ मे हुआ था। 'पटणा' निवासी श्री चन्द्र-भान जी आपके पिता और कुँवराबाई आपकी माता थी। वैराग्य की भावना आपके हृदय मे तरगित हुई जिसके परिणामस्वरूप आषाढ़ सुदी ५ स० १६२० को पूज्य श्री पन्नालाल जी के पास दीक्षा ग्रहण कर ली। आपकी तपस्या निरतर चलती रहती थी। अनेक प्रकार के कठिन अभिग्रह आप धारण करते रहते थे। एक अभिग्रह तो इतना कठिन था कि जिसके फलित न होने के कारण आपको पच्चीस वर्ष चार मास और पन्द्रह दिन तक केवल छाछ पर ही रहना पडा। सवत् १६६५ को एक दिन का सन्थारा कर शाहपुरे मे आप कालधर्म को प्राप्त हुए। आपके सम्बन्ध मे ऐसी किम्वदन्ती है कि आपका चोलापट्टा अग्नि से नहीं सुलगा।

आप अत्यन्त निर्भय थे। कठिन साहसी आदमी भी विचलित हो जाय, ऐसे स्थानों मे आप विहार करते थे। भय किस चिड़िया का नाम है-तपस्वी महाराज जानते तक न थे। भय आपके शब्दकोप मे भी नहीं था।

२—तपस्वी श्री कजौड़ीमलजी महाराज

तपस्वी कजौडीमल जी महाराज का जन्म माघ सुदी १५ स० १६३६ को वेगु शहर मे हुआ था। आपके पिता का नाम घासीराम जी और माता का शृगारवाई था। आप वाल ब्रह्मचारी थे। अपने सयमी जीवन मे आपने अनेक प्रकार का कठिन तपाराधन किया।

मुनि श्री छोगालालजी महाराज

मुनि श्री छोगालाल जी महाराज नौ वर्ष के बाल्यवय मे स० १६५८ को दीक्षा ग्रहण की और शास्त्रों का गहरा अध्ययन किया। आप प्रभावशाली प्रवचनकार थे।

जीव-हिंसा के विरोध मे आपने प्रवल आन्दोलन उठाया और अनेक राजा-महाराजाओं को प्रतिवोध देकर उन्हें हिंसा के दुष्कर्म से छुडाया। इस समुदाय मे अनेक महासतियाँ विदुषी और प्रभाव-शाली हुई।

पूज्य श्री एकलिंगदासजी महाराज की परम्परा

१—पूज्य श्री एकलिंगदासजी महाराज

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के ग्यारहवे पाट पर पूज्य श्री एकलिगदास जी महाराज आचार्य-पद पर विराजमान हुए। आप मेवाड़ मे परम त्यागी और तपस्वी मुनिराज थे। आपके पिता का नाम

शिवलाल जी था जो नंगेसरा के निवासी थे। सवत् १६७७ मे आपका जन्म हुआ। तीस वर्ष की युवावस्था में पूज्य श्री नरसीदास महाराज से आकोला मे आपने दीक्षा ग्रहण की और संवत् १६६७ मे उटाला ग्राम में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके ६ अग्रगण्य विद्वान शिष्य थे जिनमे श्री मोतीलाल जी महाराज अग्रगण्य हैं।

२—पूज्य श्री मोतीलालजी महाराज

पूज्य श्री मोतीलाल जी महाराज स० १६६२ मे आचार्य-पद पर आरूढ़ हुए। आपका जन्म स० १६६० मे उटाला मे हुआ था। आपके पिता का नाम श्री धूलचन्दजी था। केवल सतरह वर्ष की अवस्था मे आपने दीक्षा ग्रहण की। आप सरल स्वभावी और सुन्दर वक्ता हैं। सादड़ी साधु सम्मेलन मे आपने भी आचार्य पद त्याग कर श्रमण सघ के सगठन मे योगदान दिया वहाँ पर आप मंत्री नियुक्त हुए हैं। आपके गुरुभाई श्रीमागीलाल जी महाराज का जन्म राजा जी का करेडा मे हुआ था। ग्यारह वर्ष की अवस्था मे ही आपने दीक्षा ग्रहण की थी। आप निष्ठाशाली चारित्रवान मुनिराज हैं।

पूज्य श्री मनोहरदास जी महाराज के मुनिराज

१—पूज्य श्री मनोहरदास जी महाराज

पूज्य श्री मनोहरदास जी महाराज का जन्म ओसवाल जाति मे नागौर नगर मे हुआ था। आप सर्वप्रथम लोकागच्छ के यति श्री सगदारजी के पास मे दीक्षित हुए थे। तत्पश्चात् क्रियोद्धारक पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के प्रधान शिष्य बने। आप प्रतिभाशाली विद्वान् और तपस्वी मुनिराज थे। आपकी प्रवचन-पद्धति अत्यन्त प्रभावोत्पादक होने के कारण सैंकड़ों भव्य प्राणियों का आपने उद्धार किया। आपका शिष्य-परिवार 'यमुना-पार के सन्त कहलाता है। आपके शिष्य भागचन्द जी महाराज ने भी सयुक्त प्रान्त के अनेक क्षेत्र पवित्र किये हैं। परिषहों को सहन करके जैनधर्म की आगमानुसारी चारित्र-शीलता को दृढ़ किया।

पूज्य श्री खेमचन्दजी महाराज

पूज्य श्री खेमचन्द जी महाराज एक अमर शहीद मुनिराज माने जाते हैं। विधर्मियों की कट्टरता का शिकार बनकर आपने अपने प्राणों की किंचित् भी परवाह न कर हँसते हुए अपने प्राणों को अर्पण कर दिया।

पूज्य श्री रत्नचन्द जी महाराज

पूज्य श्री रत्नचन्द जी महाराज वि० सं० १८६२ मे नवकार मन्त्र के पाँचवें पद पर प्रतिष्ठित हुए। शास्त्रों के आप प्रकाण्ड पडित थे। मुनिराजों ने आपको 'गुरुदेव' की उपाधि प्रदान की थी। जैन और जैनेतर सब कोई आपको इसी नाम से पुकारते थे। अनेक शास्त्रार्थों मे आप विजयी हुए थे।

आपके नाम से सयुक्त प्रान्त मे अनेक शिक्षण-सस्थाओं का सचालन होता है, जहॉ से समाजोपयोगी कार्य सम्पन्न होते है। आप एक अच्छे कवि और सिद्धहस्त लेखक थे। 'गुरु स्थान चर्चा' आपकी विलक्षण लेखन-शैली का उत्तम नमूना है। मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध आचार्य श्री विजयानन्द सूरि जी जब स्थानकवासी सम्प्रदाय मे आत्माराम जी महाराज के नाम से कहलाते थे तब उन्होंने आप ही के चरणों मे बैठ कर शास्त्राभ्यास किया था। आपने स० १६४१ मे पूज्य मगलसेन जी महाराज से दीक्षा ग्रहण की और स० १६८८ मे श्री सघ ने आपको आचार्यपद दिया। आपको आगमों का गहरा ज्ञान था। आपके करकमलों द्वारा अनेक आगमग्रन्थ सुवाच्य अक्षरों मे लिपिबद्ध हुए थे। स० १६६२ मे आपका स्वर्गवास हुआ।

पूज्य श्री मोतीलाल जी महाराज

अजमेर के बृहत्साधु सम्मेलन से पूर्व सब स्था० जैन सम्प्रदायो का सगठन करने के प्रयत्न के समय महेन्द्रगढ़ मे आपको आचार्यपद प्रदान किया गया। आप बडे विद्वान् थे। शान्त-सौम्य प्रकृति के स्थविर तपस्वीर सन्त थे। प० पृथ्वीचद्र जी महाराज आप ही के शिष्य है।

पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज

पूज्य श्री पृथ्वीचद्र जी महाराज ने स० १६५६ मे पूज्य श्री मोतीराम जी महाराज के पास मे पच महाव्रत धारण किये। आपका स्वभाव अत्यन्त शात और सरल है। वि० स० १६८३ मे नारनौल मे आपको आचार्य-पद दिया गया। आपकी क्रियाशीलता और विद्वत्ता की सयुक्त प्रान्त के सतों मे अच्छी प्रतिष्ठा है। आपने सादडी साधु सम्मेलन मे श्रमण सगठन के लिए आचार्य-पद का त्याग किया और सम्मेलन द्वारा आप मत्री निर्वाचित हुए है।

कविवर पं० मुनि श्री अमरचन्द जी महाराज

कविवर मुनि श्री अमरचन्द जी महाराज पूज्य श्री पृथ्वीचन्द जी महाराज के विद्वान् शिष्य है। आगमों और शास्त्रों का आपने गहन अध्ययन किया है। आपकी प्रवचन शैली युग के अनुरूप सरल और साहित्यिक है। आपने गद्य-पद्य ग्रन्थों की रचना करके साहित्य के क्षेत्र मे काफी प्रकाश फैलाया है। आगरा के "सन्मति ज्ञानपीठ" प्रकाशन सस्था ने आपके साहित्य को कलात्मक रीति से प्रकाशित किया है। आपके विचार उदार और असाम्प्रदायिक है। आपकी विचारधारा समाज और राष्ट्र के लिये अभिनन्दनीय हैं। सादडी सम्मेलन मे आप एक अग्रगण्य मुनिराज के रूप मे उपस्थित थे। इस समय स्थानकवासी जैन समाज के मुनिराजों मे आपका गौरवपूर्ण स्थान है।

पूज्य श्री जीवराज जी महाराज का सम्प्रदाय

१—आचार्य धनजी स्वामी

प्रात स्मरणीय पूज्य श्री जीवराज जी महाराज का जीवनवृत्तान्त हम पिछले अध्यायों मे पढ़ चुके हैं इनके स्थान पर श्री धनजी स्वामी को आचार्य पद दिया गया।

बीकानेर की महारानी ने महाराज सा० को अपने राज्य मे पधारने के लिये विनति की साधु-उचित भाषा मे आपने फरमाया " क्षेत्र फरसने का अवसर होगा तो उधर विचरने के भाव हैं।"

कई मास के पश्चात् आप अपने दस शिष्य के परिवार सहित बीकानेर पधारे। नगर-प्रवेश के समय आपके विरोधियो ने आपका मार्ग रोका। किन्तु मुनि श्री शान्ति और क्षमता की मूर्ति थे। आपने श्मशान भूमि मे रही हुई स्मारक छत्री (स्तूप) मे किसी से आज्ञा लेकर निवास किया और एकान्त में ध्यान मग्न हो गये। आपके अन्य शिष्य भी शास्त्राभ्यास मे तल्लीन हो गये। चन्द्र विहार उपवास करते-करते आठ दिन बीत गये किन्तु आपकी और आपके शिष्यों की दृढता में कोई अन्तर नहीं आया। आप सब दृढ परिणामी थे। एक-एक करके नौ दिन बीत गये। महारानी की एक दासी उस तरफ से निकली। उसने मुनिराज को देखा,वदना की और महल मे जाकर महारानी को यह सब हाल कह सुनाया। महारानी ने अत्यन्त सम्मान और समारोहपूर्वक अपने गुरुदेव को नगर मे प्रवेश कराया और अपने अपराधों की क्षमायाचना की। इस प्रकार महारानी ने मुनि श्री के उपदेशामृत का प्रजा को पान कराया। मुनि श्री के पधारने से अनेक लोगो को सम्यक् दर्शन की प्राप्ति हुई और असख्य प्राणियो को अभयदान दिया।

२—आचार्य विष्णु और आचार्य मनजी स्वामी

आचार्य धनजी स्वामी के पाट पर आचार्य विष्णु और आचार्य मनजी स्वामी क्रमश आये। आप दोनों के समय मे शासन की सुन्दर प्रभावना हुई। दोनो आचार्य अपने-अपने समय मे धर्म-प्रचार के केन्द्र-विन्दु माने जाते थे। तत्कालीन साधुमार्गी समाज मे आप दोनों की आचारनिष्ठा के प्रति अत्यधिक प्रतिष्ठा थी।

३—आचार्य नाथुराम जी स्वामी

आचार्य श्री नाथूराम जी महाराज सा० का जन्म जयपुर राज्य के खडेलवाल दिगम्बर जैन-परिवार मे हुआ था। आपकी ऐसी मान्यता थी कि सच्चा दिगम्वरत्व तो कषाय-रूपी वस्त्रों को उतारने से ही होता है और शुक्ल-ध्यान मे रमण करने से ही सच्चा श्वेताम्बरत्व प्राप्त होता है। यदि ऐसा नहीं है तो नामो का कोई महत्त्व नहीं। हमको तो आगमों की आराधना करनी चाहिए। यही कारण है कि आपकी शिष्य-मडली अत्यधिक स्वाध्याय-परायण थी। आपके बीस शिष्यों ने बत्तीसों शास्त्रों को कठस्थ कर लिया था। इतना ही नहीं किन्तु एकान्त ध्यान और कायोत्सर्ग की तपश्चर्या मे रत रहने वाले अनेक साधु आपके शिष्य-समुदाय मे थे।

स्वमत तथा परमत के आप प्रकाण्ड पडित थे। आपके साथ वाद-विवाद करने वाले पण्डित को अन्त मे जैन-धर्म स्वीकार करना ही पडता था। आचार्य कृष्ण जैसे विद्वान् ने आपके द्वारा ही दीक्षा ग्रहण की थी, जो पजाब मे रामचन्द्र के नाम से विख्यात थे। आपके समय से ही इस समुदाय मे दो विभाग हो गये। जिसका वर्णन आगे किया जायगा।

४—आचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्र जी महाराज

आचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्र जी महाराज ने आगमों का तलस्पर्शी अभ्यास किया और इनका मथन कर राजस्थानी मे अनेक पद्य-गीतों की रचना की। आपके गीत सामान्य जनता की जबान पर गूजने लगे।

५—आचार्य श्री छत्रमल जी म०

आचार्य श्री छत्रमल जी महाराज दर्शनशास्त्र के महान् विज्ञाता थे। आपने स्याद्‌वाद और ृेय-प्रमाणों के रहस्य सरल पद्यों मे रचे और सामान्य बुद्धिवालो को भी अनेकान्त सिद्धान्त का वोध कराया।

६—आचार्य श्री राजाराम जी म०

आचार्य श्री राजाराम जी महाराज वाद-विवाद करने वाले विद्वानों के हृदयाधकार को दूर करने मे समर्थ सिद्ध थे। मिथ्यादर्शन के आप कट्टर दुश्मन थे। आपके अनुशासन मे आत्मनिष्ठा दृढ़वती हुई।

७—आचार्य श्री उत्तमचन्द जी म०

आचार्य श्री उत्तमचन्द्र जी महाराज महान् तपस्वी थे। आपके गुरुभ्राता श्री राजचन्द्र पट्-शास्त्रों के पारगत थे। आप दोनों ने मिलकर शासन की अत्यधिक प्रभावना की। श्री रत्नचन्द्रजी महाराज भी आपके वड़े गुरु भाई थे।

८—आचार्य श्री भग्गुमल जी महाराज

आचार्य श्री भग्गुमल जी महाराज का जन्म चन्द्रजी का गुडा नामक ग्राम मे हुआ था। आप पल्लीवाल थे। छोटी-सी वय मे आपने दीक्षा ग्रहण की। आपकी माता और वहन ने भी दीक्षा ग्रहण की थी। आचार्य महाराज अग्रेजी, फारसी और अरबी भापा के भी विद्वान् थे। आपके अक्षर इतने सुन्दर थे कि वाचन मे प्रमाद करने वाले साधु को इस ओर वार-वार आकर्पित करते। गणित, ज्योतिष और योगशास्त्र आदि अनेक विपयों के वहुश्रुत विद्वान् होने के कारण अलवर-नरेश महाराजा मगलसिंह जी ने आपको 'राज्य पडित' की उपाधि से विभूपित किया था।

एक समय श्राद्ध के विषय मे विवाद हुआ। पडितों ने कहा, "जिस प्रकार मनीऑर्डर से भेजे जाने वाले रुपये यथास्थान पहुँच जाते है उसी प्रकार श्राद्ध का अन्न भी पितरो को मिल जाता है।"

तब आचार्यश्री ने भरी सभा मे प्रश्न किया कि " जिस प्रकार आपके पास मनीऑर्डर की रसीद आती है, उसी प्रकार पितरों के यहाँ से आई हुई क्या आपके पास कोई रसीद है?"

इस उत्तर से महाराज मगलसिह अत्यन्त प्रसन्न हुए। महाराजा ने मुनि श्री को वन्दना की और आपके चरणों मे कुछ भेट चढाई। किन्तु जैन साधु तो अपरिग्रही होते है—उनके इस प्रकार की भेट किस काम की? उन्होंने इसे अस्वीकार की और राजा को अनुरोध किया कि इस प्रकार के राज-दरवार मे जैन-मुनि को नहीं बुलाना चाहिये।

आपकी काव्य-शैली प्रासाद गुण सयुक्त थी। 'शान्तिप्रकाश' जैसे गूढ ग्रन्थों का निर्माण आपकी उत्कृष्ट विद्वता का ज्वलन्त उदाहरण है।

९—तपस्वी श्री पन्नालाल जी महाराज

तपस्वी श्री पन्नालाल जी महाराज आचार्य श्री भग्गुलाल जी महाराज के शिष्य थे। आप महा-तपस्वी महात्मा थे। सवत् १६५२ के जेठ सुद ३ को आपकी समाधि-मरण की तिथि मानी जाती है।

आपके जीवनकाल मे अनेक चामत्कारिक घटनाएँ देखी गई थीं। ऐसा कहा जाता है कि आपकी दृष्टिमात्र से रोगों का नाश हो जाता था।

१०—श्री रामलाल जी महाराज

श्री रामलाल जी महाराज का जन्म सवत् १८७० ब्यावर मे हुआ था। वीस वर्ष की युवावस्था मे आपने मुनि श्री उत्तमचन्द जी महाराज से दीक्षा ग्रहण की थी। आप अत्यन्त उग्र विहारी थे। अपने जीवन मे नौ वार आपने मारवाड का विहार किया। भारत के अनेक प्रान्तों को आपने अपने उपदेशामृत का पान कराया। स० १९५० मे जीवन के १० दिन और एक प्रहर जब शेप रहा था—तव सम्पूर्ण आहार का त्याग करके समाधि-मरण से स्वर्गगामी हुए।

११—मुनि श्री फकीरचन्द जी महाराज

मुनि श्री फकीरचन्द जी महाराज का जन्म स० १९१६ की जेठ सुदी १५ की रात्रि को साढ़े वारह वजे सूरत मे हुआ था। सर्वाङ्गसुन्दर कन्या के साथ आपका पाणिग्रहण हुआ किन्तु स० १९४६ मे ३० वर्ष की भर-जवानी मे श्री रामलाल जी महाराज से आपने आर्हती दीक्षा ग्रहण की और शीघ्र ही शास्त्रों का का स्वाध्याय और लेखन-कार्य प्रारम्भ किया। आप अति उग्र विहारी थे। सन् १९३६ मे आपने वगाल, कलकत्ता तक पहुँचकर झरिया मे चातुर्मास किया।

स्वर्ग-गमन से तीन दिन पूर्व आपने सथारा ग्रहण किया और जेठ सुदी १५ स० १९९६ को पाटोदी नगर मे कालधर्म को प्राप्त हुए।

१२—पं० मुनिश्री फूलचन्दजी महाराज

प० मुनि श्री फूलचन्द जी महाराज का जन्म वीकानेर राज्यान्तर्गत 'भाडलासोभा' नामक ग्राम मे चैत सुदी १० सवत् १९५२ को हुआ था। आप राठौड वशीय क्षत्रिय ठाकुर विपिनसिंह के सुपुत्र हैं। सवत् १९६८ मे श्री फकीरचन्द जी महाराज के चरणों में दीक्षा ग्रहण की।

श्री पुप्फ भिक्खु के नाम से प्रसिद्ध आपने कराची आदि क्षेत्रों में विचरण कर अनेक मासाहारियों को पाप से निवृत्त करने का महान् कार्य किया।

पूज्य श्री जीवनराम जी महाराज की सम्प्रदाय

१—पूज्य श्री जीवनराम जी महाराज

पूज्य श्री लालचन्द जी महाराज के शिष्य पूज्य श्री गगाराम जी हुए और आपके पश्चात् पूज्य श्री जीवनराम जी महाराज हुए। आप अत्यधिक प्रभाविक महात्मा थे। समस्त पजाव पर आपका वर्चस्व था। श्री आत्माराम जी महाराज जो पीछे से मूर्तिपूजक सम्प्रदाय मे सम्मिलित हुए और आचार्य विजयानन्द सूरि के नाम से प्रसिद्ध हुए—आप ही के शिष्य थे। पूज्य श्री जीवनराम जी महाराज का त्याग और

भुत था। आत्म साक्षात्कार के लिए आप जीवन की साधना करते थे। आपने गिरा, फिरोजपुर, ।र बीकानेर तक प्रबल विहार किया।

२—पूज्य श्री श्रीचन्द जी महाराज

पूज्य श्री जीवनराम जी महाराज के पश्चात् पूज्य श्री श्रीचन्द जी महाराज हुए। आपने उत्कृष्ट साथ दीक्षा ग्रहण की। आप ज्योतिष के समर्थ और शास्त्र पारगामी विद्वान् थे।

३—परम तपस्वी श्री पन्नालाल जी महाराज

पूज्य श्री श्रीचन्द जी महाराज के बाद आपके पाट पर अनुक्रम से पूज्य श्री जवाहरलाल जी और श्री माणिकचन्द जी महाराज हुए। पूज्य श्री माणकचन्दजी महाराज के बाद वर्तमान मे पन्नालालजी महाराज आते है। आप तप की साकार ज्वलन्त मूर्ति और सयम की विरल विभूति न्दन मुनि जी आप ही के शिष्य है।

४—कवि श्री चन्दन मुनि जी महाराज

श्री चन्दन मुनि जी कवि, लेखक, कथाकार, सयमी और मृदुभाषी है। आपने लगभग २५-३० लखी है जो सब पद्य मे है। आपकी कविताओ मे भाव-भाषा ओज, प्रासाद और लाक्षणिक जना तथा भावोद्रेक गुण अन्वित है। आज की नवीन पीढ़ी के लिए आप एक आशास्पद सत है।

पूज्य श्री रायचन्द्र जी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री जीवराज जी महाराज के चौथे पाट पर श्री नाथूराम जी महाराज आचार्य-पद पर आपके बाद आपकी सम्प्रदाय दो विभागों मे विभाजित हो गई। पूज्य श्री रामचन्द्र जी महाराज ।म जी महाराज के प्रख्यात शिष्य थे। स० १८४२ के आसोज सुद १० विजयादशमी को पूज्य श्री ।म जी महाराज ने आप के पास दीक्षा ग्रहण की। पूज्य श्री रायचन्द्र जी महाराज समर्थ योगी थे।

१—कवि श्री नन्दलाल जी महाराज

पूज्य श्री रतिराम जी महाराज के शिष्य कविराज श्री नन्दलाल जी महाराज साधुमार्गी समाज क बहुश्रुत विद्वान थे। आपका जन्म काश्मीरी ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। दीक्षा लेने के समय के बाद आप शास्त्रों के पारगामी विद्वान् हो गये। आपने 'लब्धिप्रकाश', गौतम पृच्छा' रामा- 'अराडबस' आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की है। इसके सिवाय 'ज्ञानप्रकाश', 'रुक्मिणी रास', आदि क ग्रन्थों का भी आपके द्वारा निर्माण हुआ। आपकी कविताएँ सगीतमय, भावपूर्ण और हृदयस्पर्शी ओ थीं। सवत् १६०७ मे होशियारपुर मे आपका स्वर्गवास हुआ। पूज्य श्रीनन्दलाल जी महाराज के तीन ष्य हुए। मुनि श्री किशनचन्द्र जी महाराज ज्योतिष-शास्त्र के पण्डित थे, रूपचन्द जी महाराज वचनसिद्ध स्वी मुनिराज थे और मुनिश्री किशनचन्दजी महाराज की परम्परा मे अनुक्रम से मुनिश्री बिहारीलालजी,

महेशचन्द्र जी, वृषभान जी तथा मुनि श्री सादीराम जी के नाम उल्लेखनीय हैं।

तीसरे मुनि श्री जौकीराम जी महाराज के पास जगराव-निवासी अग्रवालवंशीय मुनि श्री चैतराम जी दीक्षित हुए। आप के शिष्य मुनि श्री घासीलाल जी महाराज ने इन तीन भव्यात्माओं को महाव्रतधारी बनाया—मुनि श्री जीवनराम जी महाराज मुनि श्री गोविन्दराम जी महाराज और मुनि श्री कुन्दनलाल जी महाराज।

२—पूज्य श्री रूपचन्द जी महाराज

पूज्य श्री रूपचन्द जी महाराज बालब्रह्मचारी, वचनसिद्ध, अलौकिक तपस्वी और महाप्रभावक सन्त थे। मोह से विरक्त रहने के लिये आपने किसी को भी अपना शिष्य न बनाया। आपका जन्म सम्वत् १८६८ मे लुधियाना मे हुआ था। जीवन पर्यन्त रोटी, पानी इसके अलावा एक और कोई वस्तु इन तीन के अतिरिक्त किसी द्रव्य का आपने सेवन नहीं किया।

घी, दूध आदि सभी पौष्टिक पदार्थों के उपयोग पर अकुश धर दिया था। दिन मे एक बार आहार करना और उसमे भी केवल दो रोटी ग्रहण करना। छब्बीस वर्ष की तरुण अवस्था में आपने ससार का त्याग कर स० १८६४ मे फागण सुद ११ को दीक्षा ग्रहण की।

आपके चमत्कार की अनेक घटनाएँ पजाब मे प्रचलित है। इस ग्रन्थ का लेखक भी आपकी आत्मज्योति, त्याग ज्योति और ज्ञान ज्योति से प्रभावित है।

आपका यह नियम था कि जो सवारी करके आता था, उसे आप दर्शन नहीं देते थे। दिन भर मे केवल दो बार ही पानी पीते थे। सतलुज नदी के उस पार न जाने की आपको प्रतिज्ञा थी। जेठवद ११ सवत् १६३७ को इस तेजस्वी सूर्य का अस्त होना पाया गया।

३—मुनि श्री गोविन्दराम जी महाराज

मुनि श्री गोविन्दराम जी महाराज का जन्म सं० १६१६ मे देहरादून मे हुआ था। माह सुद ११ स० १६३६ शनिवार को मुनि श्री वासीलाल जा म० से भटीन्डा मे दीक्षा ग्रहण की। शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। ज्योतिष शास्त्र के आप बडे विद्वान थे। तपस्वी और वचनसिद्ध पुरुष थे। साम्प्रदायिक प्रतिष्ठा आपके समय अत्यधिक विकसित हुई। स० २००८ मे अहमदाबाद के भेडी के उपाश्रम में आपका समाधि-मरण हुआ।

मुनि श्री छोटालाल जी महाराज

पजाब रोहतक जिले के बुलन्दपुर गॉव के पडित तेजराम जी की सहधर्मिणी केसरदेवी की कूख से सवत् १६६० मे मुनि श्री छोटेलाल जी का जन्म हुआ। सिरपुर (मेरठ) इनका निवासस्थान था। सोलह वर्ष की स्वल्प अवस्था मे पण्डित मुनि श्री गोविन्दराम जी महाराज के पास मे आपने दीक्षा धारण की। सोलह वर्ष की क्रीडाप्रिय अवस्था मे असार ससार के मोह को त्याग कर ज्ञान-दर्शन-चारित्र्य की साधना का कठोर सयमपूर्ण मार्ग अपनाने का सदभाग्य किसी विरले को ही मिलता है।

बल बढता गया-त्यों-त्यों माया का जाल छिन्न होता गया। तपश्चर्या दिन-प्रतिदिन बढती गई। तप की साधना के कारण आपका शरीर काचन वर्ण को प्राप्त हो गया। ज्ञान, तप और शरीर का तेज दर्शनार्थियों पर अनेक प्रभाव डालता है। आपने शास्त्रों का समुचित अध्ययन, मनन-चिन्तन किया है। श्रमण-धर्म मे आप सदा कर्त्तव्यपरायण रहते है। आपका स्वभाव स्पष्टवादिता के साथ-साथ कोमल और सरल है। श्री सुशील मुनि जी, श्री सौभाग्य मुनि जी और श्री शान्तिप्रिय जी इस प्रकार आपके तीन शिष्य है।

पं० मुनि श्री सुशीलकुमार जी महाराज

आपने ब्राह्मण जाति मे जन्म लिया था। बचपन से ही वैराग्य भाव होने से मुनि श्री छोटेलाल जी म० सा० के पास दीक्षित हुए। सस्कृत, प्राकृत, हिन्दी आदि का अच्छा अभ्यास करके 'आचार्य' 'भास्कर' आदि अनेक उपाधियॉ प्राप्त कीं। श्रमण सघ के आप होनहार परमोत्साही युवक सन्त है। अहिंसा सघ के तथा सर्वधर्म सम्मेलन के आप प्रणेता है। अहिसा के अग्रदूत है। पजाब, वम्बई और राजस्थान मे विचर रहे हैं।

गुजरात के मुनिराज

१—पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय

(दरियापुरी सम्प्रदाय)

पूज्य श्री धर्मसिह जी महाराज के पाट पर उनके शिष्य श्री सोमजी ऋपि हुए। इनके बाद अनुक्रम से मेघजी ऋपि, द्वारकादास जी, मोरारजी, नाथाजी, जयचन्दजी तथा मोरार जी ऋपि हुए।

मोरारजी ऋपि के शिष्य सुन्दरजी के तीन शिष्य हुए—नाथा ऋपि, जीवन ऋपि और प्रागजी ऋपि। ये तीनों सत प्रभाविक थे। सुन्दरजी ऋपि मोरारजी ऋपि के जीवन-काल मे ही गुजर जाने के कारण आपके पाट पर नाथाजी ऋपि आये। नाथाजी ऋपि के चार शिष्य थे—शकरजी, नानकचन्दजी, भगवान जी।

नाथाजी ऋपि के पाट पर उनके गुरु-भाई जीवन ऋपिजी आये और इनके पाट पर प्रागजी ऋपि आये।

२—श्री प्रागजी ऋपि

आप वीरमगॉव के भावसार रणछोडदास के पुत्र थे। श्री सुन्दरजी महाराज के उपदेश से प्रतिबोध पाकर इन्होंने बारह व्रत अगीकार कर लिये। अनेक वर्षो तक श्रावक के व्रत पालने के पश्चात दीक्षा ग्रहण करने के लिये आप तैयार हो गये, किन्तु माता-पिता ने आपको आज्ञा नहीं दी। इस कारण आपने भिक्षाचरी करना आरम्भ किया। दो मास तक इस प्रकार करने पर माता-पिता ने आप को आज्ञा दे दी और स० १८३० मे वीरमगॉव मे धूम-धाम के साथ दीक्षा ग्रहण की। आप सूत्र सिद्धान्तो के अभ्यासी और प्रतापी साधु थे।

आपके पन्द्रह शिष्य थे। अहमदावाद के समीपवर्ती विसलपुर के श्रावकों द्वारा विनति करने के कारण आप विसलपुर पधारे। आपने प्रातीज, वीजापुर, ईडर, खरोलु आदि क्षेत्र खोलकर वहाँ धर्म का प्रचार किया। पैरों मे दर्द होने के कारण पिछले पच्चीस वर्ष तक विसलपुर मे स्थिरवास किया।

आप के समय मे अहमदावाद मे साधु-मार्गी सत वहुत कम पधारते थे क्योंकि वहाँ चैत्य-वासियों का जोर अधिक होने के कारण उनकी तरफ से उपद्रव खडे किये जाते थे। इस स्थिति को सुधारने के लिए प्रागजी ऋषि अहमदावाद पधारे और श्री गुलावचन्द हीराचन्द के मकान मे उतरे।

आपके उपदेश से अहमदावाद मे शाह गिरधर शंकर, पानाचन्द झवेरचन्द, रामचन्द्र झवेर-चन्द, खीमचन्द झवेरचन्द आदि श्रावकों को शुद्ध साधु-मार्गी जैन-धर्म की श्रद्धा प्राप्त हुई। आपके इस प्रकार के धर्म-प्रचार को देखकर मदिर-मार्गी श्रावकों को साधुमार्गियों से ईर्ष्या होने लगी और पारस्परिक झगडे प्रारभ हो गये। अन्त मे ये झगड़े कोर्ट तक पहुँचे। साधुमार्गियों की तरफ से पूज्य श्री रूपचन्द्र जी महाराज के शिष्य श्री जेठमल जी आदि साधु तथा विपक्षियों की तरफ से वीर विजय आदि मुनि और शास्त्री कोर्ट मे पहुँचे। अत इस झगड़े का निपटारा साधु-मार्गियों के पक्ष में हुआ। इस घटना को स्मृतिरूप बनाये रखने के लिये श्री जेठमल जी महाराज ने 'समकित' नाम का शास्त्रीय चर्चा-ग्रन्थ लिखा।

इसके विरोध में श्री उत्तम विजय जी ने "ढु ढक मत खण्डन रास' नामका १७ पंक्तियों का एक रास लिखा जिसमे साधुमार्गियों को पेट भरकर गालियाँ दीं। इस रास मे लिखा है कि—

"जेठा ऋषि आया रे। कागज वाच कर।
देखो पुस्तक लाया रे। गाड़ी एक लाद कर॥"

विरोधी पथ के लोग जव इस प्रकार लिखते हैं, तव यह स्पष्ट हो जाता है कि उस जमाने में जव मुद्रण-कला का इतना विकास नहीं हुआ था फिर भी इतने सारे ग्रन्थों को अदालत मे प्रस्तुत करने वाले मुनि श्री जेठमलजी का वाचन कितना विशाल होगा। वस्तुत आप शास्त्रों के गहन अभ्यासी और कुशल विद्वान् थे। सं० १८६० में मुनि श्री प्रागजी ऋषि जी महाराज विसलपुर मे कालधर्म को प्राप्त हुए। प्रागजी ऋषि के वाद श्री शकर ऋषि जी, श्री खुशाल जी, श्री हर्षसिंह जी और श्री मोरारजी ऋषि हुए।

श्री झवेर ऋषि जी महाराज

श्री मोरार जी ऋषि के वाद आपके पाट पर श्री झवेर ऋषि जी महाराज हुए। आप वीरम-गाँव के दशाश्रीमाली वणिक कल्याण भाई के पुत्र थे। आपने सवत् १६५ मे अपने भाई के साथ श्री प्राग ऋषि के साथ दीक्षा ग्रहण की। पृज्य पदवी प्राप्त करने के पश्चात् आपने यावन् जीवन छठ-छठ के पारण किये। संवत् १६२३ मे इस महान तपस्वी ने स्वर्ग विहार किया।

४—श्री पुंजा जी स्वामी

श्री झवेर ऋषि जी महाराज के पाट पर श्री पुंजा जी स्वामी विराजमान हुए। आप कडी के भावसार थे। आपने शास्त्रों का सागोपाग अध्ययन किया था। उदारचेता आप इतने थे कि अन्य सम्प्र-दायानुयायी मुनियो को भी आप पढाते थे। सवत् १६१५ को आपने वढवाण शहर मे कालधर्म प्राप्त

किया। आपके वाद आपके पाट पर छोटे भगवान जी महाराज हुए जिनका देहावसान स० १६१६ मे हुआ। आपके वाद १६वे पाट पर पूज्य श्री मलूकचन्द जी महाराज आये। आपने अपने चार कुटुम्बी-जनो के साथ दीक्षा ग्रहण की। सवत् १६२६ मे आपका देहावसान हो गया।

५—पूज्य श्री हीराचन्दजी महाराज

श्री मलूकचन्द जी महाराज के पाट पर पूज्य श्री हीराचन्द जी स्वामी आसीन हुए। आप अहमदावाद के समीपवर्ती पालडी ग्राम के आजना कणवी थे। आपके पिता जी का नाम हीमाजी था। आपने केवल तेरह वर्ष की अवस्था मे श्री भवेर ऋषि के पास से स० १६११ मे दीक्षित हुए। आप वडे विद्वान् थे। आपके तेरह शिष्य थे। स० १६३६ से विसलपुर ग्राम मे आपने कालधर्म प्राप्त किया।

६—श्री रघुनाथजी महाराज

पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज वीरमगॉव के भावसार डायाभाई के पुत्र थे। आपका जन्म स० १६०४ मे हुआ था। स० १६२० मे पूज्य श्री मलूकचन्द जी महाराज से कलोल मे दीक्षा ग्रहण की। पूज्य श्री हीराचन्द जी म० सा० के कालधर्म पाने के पश्चात् आपको आचार्य-पद दिया गया। आप युगद्रष्टा थे। समय को वदलते देखकर द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के अनुरूप धार्मिक उन्नति के लिए विधान तैयार करने के लिए स० १६६५ मे साधु-सम्मेलन भरा कर और अनेक सुधार करके स० १६७२ मे काल-धर्म को प्राप्त हुए।

आपके वाद आपके पाट पर पूज्य श्री हाथी जी महाराज पधारे।

७—पूज्य श्री हाथीजी महाराज

पूज्य श्री हाथी जी महाराज चरोतर के पाटीदार थे। आप शास्त्र के अभ्यासी, लेखक तथा कवि थे। आप प्रकृति से भद्रिक, शान्त और सरल स्वभावी महात्मा थे। आपके समय मे ही महामति जी श्री दिवालीवाई तथा महासति जी श्री रुक्मिणीवाई ने छीपा पोल के उपाश्रय मे सथारा किया था। पूज्य श्री हाथी जी महाराज ने अहमदावाद के सरसपुर स्थान पर कालधर्म प्राप्त किया। आपके वाद श्री उत्तम-चन्द जी महाराज पूज्य पदवी पर आये। आप आजीवन ब्रह्मचारी थे।

८—पूज्य श्री ईश्वरलालजी महाराज

पूज्य श्री उत्तमचन्द जी महाराज के वाद पूज्य श्री ईश्वरलाल जी महाराज को पूज्य पदवी दी गई। आप चरोतर के पाटीदार है। शास्त्रो के गहन अभ्यासी और तार्किक वुद्धि वाले है। इस समय ८८ वर्ष की अवस्था मे भी आपकी तेजस्वी वुद्धि और अपराजित तर्क सुने जा सकते है। अत्यन्त वृद्धावस्था और गले के दर्द के कारण अहमदावाद के शाहपुर के उपाश्रय मे आप अनेक वर्षों से स्थिरवास कर रहे है।

९—श्री हर्षचन्द्रजी महाराज

इस सम्प्रदाय मे मुनि श्री हर्षचन्द्र जी महाराज एक समर्थ विद्वान् हो गये है। सवत् १९३८ मे वढवाण के समीपवर्ती राजपुर ग्राम में आपका जन्म हुआ था। चौदह वर्ष की वाल्यावस्था मे स० १९५२ मे पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज के पास आपकी दीक्षा हुई थी। आप संस्कृत, प्राकृत, अर्धमागधी, अगरेजी, उर्दू, फारसी तथा हिन्दी भाषा के विज्ञाता थे। कवि होने के साथ-साथ आप सफल लेखक भी थे। आपने १३ पुस्तके और अनेक कविताएँ लिखीं। आपकी अतिम पुस्तक "सम्यक् साहित्य" प्रत्येक स्थानकवासी के लिए मननीय पुस्तक है। अजमेर के साधु-सम्मेलन मे आप उपस्थित हुए थे और साधु समाचारी निश्चित करने मे आपने महत्त्वपूर्ण भाग लिया था। स० २००८ मे वीरमगॉव मे आपने काल-धर्म प्राप्त किया।

१०—मुनि श्री भाईचन्दजी महाराज

मुनि श्री भाईचन्द जी महाराज इस सम्प्रदाय मे एक उज्ज्वल सितारे है। यद्यपि आप ७५ वर्ष की अवस्था मे पहुँच गये हैं किन्तु आप लगते है ४५ वर्ष के ही। आपका शरीर अत्यत्त सौष्ठववान् और कान्तिमान् है। आपमे विद्वत्ता है, साधुता है और वक्तृत्व शक्ति है। आपमे यह विशिष्टता है कि आज तक किसी ने आपको क्रोध करते नहीं देखा। सरल होते हुए बुद्धिमान, वृद्ध होते हुए भी युवक और निरहकारी होते हुए भी प्रतिभाशाली ऐसे आप अत्यन्त भाग्यशाली मुनिराज है कि जिनके लिए प्रथम दर्शन मे ही दर्शक के हृदय मे सम्मान पैदा हो जाता है।

आपके नवीन शिष्य श्री शान्तिलाल जी महाराज शास्त्रों के अभ्यासी है। आपकी व्याख्यान-शैली रोचक और मधुर है। इसके अलावा इस सम्प्रदाय मे महासति श्री वसुमतिवाई, तारावाई आदि विदुषी महासतियॉ है। महासति श्री ऊजमवाई और दिवालीवाई की विद्वत्ता सर्वविदित है।

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज की सम्प्रदायानुयायी
विशिष्ट मुनियों का संक्षिप्त परिचय

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के ९९वे शिष्यों मे से वाईस विद्वान् मुनिराजो ने वाईस सम्प्रदायों का निर्माण किया। उनमे से २१ तो राजस्थान, पजाव आदि प्रान्तों मे फैले। उनके प्रथम शिष्य मूलचन्द जी महाराज हुए। आपके सात शिष्य वहुत ही प्रभावशाली विद्वान् हुए। इनमे से प्रत्येक ने अपना अलग अलग सगठन वनाया जिसमे से विशाल सघ स्थापित करने वाले श्री अजरामर जी स्वामी थे।

१—पूज्य श्री अजरामरजी महाराज

पूज्य श्री अजरामर जी स्वामी ने कानजी स्वामी से दीक्षा ग्रहण की। आप जामनगर के पास मे पडाणा ग्राम मे स० १८०९ मे जन्मे थे। केवल दस वर्ष की अवस्था मे ही अपनी माता के साथ आपने दीक्षा ग्रहण की। पूज्य गुलावचन्द जी यति के पास १० वर्ष तक सूरत मे रहकर आपने सस्कृत, प्राकृत

भाषा और आगमों का अभ्यास किया। आपकी स्मरण-शक्ति बडी ही तीव्र थी। पूज्य श्री दौलतराम जी म सा. के भी पास रहकर आपने शास्त्रों का परमार्थ जाना। सत्ताईस वर्ष की अवस्था मे प्रकांड पंडित के रूप मे आपकी कीर्ति सर्वत्र व्याप्त हो गई। वि० स० १८४५ मे आचार्य-पद पर विराजमान होकर चारित्र्य की निर्भयता के प्रभाव से आपने समस्त विघ्न-बाधाओं का निवारण कर शिथिल तथा विपरीत विचार-धाराओ का सामना किया। आपके प्रचार का प्रभाव स्थायी था। उस समय सेठ नानजी डुंगरशी को ज्ञान द्वारा आपने खूब सहायता की जिससे धर्म-प्रचार मे पूरी सफलता मिली।

आपके वाद अनुक्रम से देवराज जी स्वामी, भाणजी स्वामी, करमशी स्वामी और अविचल जी स्वामी हुए। श्री अविचल जी स्वामी के दो शिष्य हुए--हरचन्द जी स्वामी और हीमचन्द जी स्वामी। इन दोनों का परिवार अलग-अलग रूप से फैला।

१—लींबड़ी मोटी सम्प्रदाय

हरचन्द जी स्वामी के वाद देवजी स्वामी, गोविन्द जी स्वामी, कानजी स्वामी, नत्थु जी स्वामी, दीपचन्दजी स्वामी और लाधा जी स्वामी हुए।

१—पूज्य श्री लाधाजी स्वामी

पूज्य श्री लाधा जी स्वामी कच्छ-गु दाला ग्राम के निवासी श्री मालसीभाई के सुपुत्र थे। आपने स० १६०३ मे वाकानेर मे दीक्षा ग्रहण की और स० १६६३ मे आपको आचार्य-पद पर विठाया गया। तत्कालीन विद्वान सतों मे आप प्रख्यात विद्वान् सत थे। जैन-शास्त्रों का अध्ययन करके "प्रकरण सग्रह" नामक ग्रन्थ की आपने रचना की। यह ग्रन्थ सर्वत्र उपयोगी सिद्ध हुआ है। प्रसिद्ध ज्योतिष शास्त्रवेत्ता श्री सदानन्दी छोटेलाल जी महाराज आप ही के शिष्य हैं। श्री लाधाजी स्वामी के पश्चात् मेघराज जी स्वामी और इनके बाद पूज्य देवचन्द जी स्वामी हुए।

२—पूज्य देवचन्दजी स्वामी

पूज्य देवचन्द जी स्वामी का जन्म वि० स० १६०२ मे कच्छ के समाडिया ग्राम मे हुआ था। ग्यारह वर्ष की अवस्था मे ही आपने दीक्षा ग्रहण की थी। आपके पिता श्री रग जी स्वामी ने भी आप ही के साथ पच महाव्रत धारण किये। आपने निष्पक्ष भाव से शास्त्रों का वहुमुखी स्वाध्याय किया। अनेकान्त का मर्म समभाव के रूप मे हृदयगम किया। कविवर नानचन्द जी महाराज आप ही के शिष्य हैं। वि० स० १६७७ मे आप स्वर्गवासी हुए।

३—पूज्य श्री गुलाबचन्दजी महाराज

पूज्य श्री देवचन्द जी स्वामी के पश्चात् श्री लवजी स्वामी और उनके बाद पूज्य श्री गुलाबचन्द जी महाराज हुए। आपने अपने भाई वीरजी स्वामी के साथ कच्छ के अजार नगर मे दीक्षा ग्रहण की

थी। वि० स० १६२१ में भोरारा ग्राम मे आपका जन्म हुआ था। स० १६८८ मे आप आचार्य-पद पर विभूषित किये गए। प० रत्न शतावधानी रत्नचन्द जी महाराज आप ही के शिष्य थे। आपने मूल सूत्रों का गम्भीर अध्ययन किया था और सस्कृत-प्राकृत भाषाओं के आप धुरन्धर विद्वान् थे।

४—पूज्य नागजी स्वामी

पूज्य नागजी स्वामी मे प्रवल व्यवस्था-शक्ति थी। विद्वत्ता, गाम्भीर्य और आचार-विचार की दृढता आप मे प्रचुरमात्रा मे विद्यमान थी। आचार्य-पद पर नहीं होते हुए भी सम्प्रदाय का समस्त सचालन आपके ही द्वारा होता था। लींवडी ही मे आपने नौ वर्ष की अवस्था मे दीक्षा ग्रहण की और यहीं पर ही आपने कालधर्म को प्राप्त किया। आपके स्वर्गवास के पश्चात् एक यूरोपियन महिला तथा लींवडी के ठाकुर सा० की जो शोकजनक अवस्था हुई उस पर से आपकी भावनाशीलता और धर्मानुराग का परिचय प्राप्त होता है। आपने अनेक जैनेतरो को जैन वनाया और रजवाडो को अपने धर्मोपदेश से प्रभावित कर जैन-धर्मप्रेमी वनाया।

५—शतावधानी पं० रत्नचंदजी महाराज

शतावधानी प० रत्नचन्द्र जी महाराज ने अपनी पत्नी के अवसान के वाद दूसरी कन्या के साथ किये गए सम्वन्ध को छोडकर दीक्षा ग्रहण की। स० १६३६ मे भोरारा (कच्छ) मे आपका जन्म हुआ था। आप स्वभाव से अत्यन्त शान्त और हृदय से स्फटिक के समान निर्मल थे। अपने गुरुदेव श्री गुलावचन्द जी महाराज की नेश्राय मे रहकर गहन अध्ययन किया। सस्कृत भाषा मे अस्खलित रूप से धाराप्रवाही प्रवचन करते थे। अनेक गद्य-पद्यात्मक काव्य आपके द्वारा रचे गये है। अर्धमागधी कोष तैयार कर आपने आगमो के अध्ययन का मार्ग सरल और सुगम वना दिया है। साहित्य-सशोधन करने वाले विद्वानों के लिए आप द्वारा निर्मित यह कार्य अत्यधिक सहायकरूप है।

'जैन सिद्धान्त कौमुदी' नाम का सुवोध प्राकृत व्याकरण भी आपने तैयार किया है। 'कर्त्तव्य-कौमुदी' और 'भावना शतक' 'सृष्टिवाद और ईश्वर' जैसे ग्रन्थों की भी आपने रचना की है। न्यायशास्त्र के भी आप प्रखर पडित थे। अवधान-शक्ति के प्रयोग के कारण आप शतावधानी कहलाये। समाज सुधार और सगठन के कार्य मे आपको खूव रस था। अजमेर के साधु-सम्मेलन मे शान्ति-स्थापकों मे आपका अग्रगण्य स्थान था। जयपुर मे आपको 'भारत रत्न' की उपाधि प्रदान की गई थी। साधु-मुनिराजों के सगठन के लिए आप सदा प्रयत्नशील रहते थे। घाटकोपर मे आपने "वीर सघ" की योजना का निर्माण किया था।

वि० स० १६६० मे आपको शारीरिक व्याधि उत्पन्न हुई। उसकी शल्य-चिकित्सा की गई किन्तु आयुष्य पूर्ण हो जाने के कारण आपका घाटकोपर मे स्वर्गवास हो गया।

आचार्य-पद पर नहीं होते हुए भी आप एक सम्माननीय सन्त गिने जाते थे। आपकी प्रवचन-शैली अत्यन्त सुवोध और लोकप्रिय थी। आपके देहावसान से समाज ने एक धुरन्धर विद्वान और महान सगठन-प्रिय भारत-रत्न गुमाया है। आपके स्मारक-रूप मे घाटकोपर मे कन्या हाई स्कूल, सुरेन्द्रनगर मे ज्ञान-मन्दिर, और वनारस मे लायब्रेरी वनाकर श्रावकों ने आपके प्रति भक्ति-भाव प्रकट किया है।

६—कविवर्य श्री नानचंदजी महाराज

कविवर्य की नानचन्द जी महाराज का जन्म वि० स० १६३४ मे सौराष्ट्र के सायला ग्राम मे हुआ था। वैवाहिक सम्बन्ध का परित्याग करके आपने दीक्षा ग्रहण की। आप प्रसिद्ध सगीतज्ञ और भावनाशील विद्वान् कवि है। आपके सदुपदेश से अनेक शिक्षण-सस्थाओ की स्थापना हुई हे। पुस्तकालय की स्थापना करने की प्रेरणा देने वाले ज्ञान-प्रचारक के रूप मे आप प्रसिद्ध है। अजमेर साधु-सम्मेलन के सूत्रधारो मे आपका अग्रगण्य स्थान था। आपकी विचारधारा अत्यन्त निष्पक्ष और स्वतन्त्र है। "मानवता का मीठा जगत्" आपकी लोकप्रिय कृति है। सौराष्ट्र मे दया-दान विरोधी प्रवृत्तियो को अटकाने मे आपको पर्याप्त सफलता मिली है। सतवाल जी जैसे प्रिय शिष्य को शिष्य के रूप मे रद्द करने की सार्वजनिक घोषणा करने मे आपने आनाकानी नहीं की। यह आपकी सिद्धान्तप्रियता का स्पष्ट उदाहरण है। आप सौराष्ट्र वीर श्रमण सघ के मुख्य प्रवर्तक मुनि हे।

७—श्री मुनि श्री छोटेलालजी महाराज

मुनि की छोटालाल जी महाराज पूज्य श्री लाधा जी स्वामी के प्रधान शिष्य है। अपने गुरुदेव के नाम से आपने लींबडी मे एक पुस्तकालय स्थापित कराया हे। लेखक और ज्योतिष-वेत्ता के रूप मे आप प्रसिद्ध है। आपने 'विद्यासागर' के नाम से एक धार्मिक उपन्यास भी लिखा है। आप द्वारा अनुवादित राजप्रश्नीय सूत्र का गुजराती अनुवाद वहुत ही सुन्दर वन पडा हे।

८—श्री जेठमलजी स्वामी

स्वामी श्री जेठमल जी महाराज क्षत्रिय कुलोत्पन्न सत है। स० १६५८ मे पूज्य लवजी स्वामी के पास से आपने दीक्षा ग्रहण की। आपने कुव्यसनो के विरुद्ध आन्दोलन चलाया था। अग्रेजी का अभ्यास थोड़ा होते हुए भी अग्रेजी मे अस्खलित धारावाहिक प्रवचनों के द्वारा अनेक प्रोफेसरो को प्रतिवोधित कर सस्कार प्रदान किये है। गॉव-गॉव विचरण करके महावीर जयन्ती की सार्वजनिक छुट्टी के लिये प्रचार करते है, मद्य-मास का त्याग कराते है और जैनेतर लोगो मे भी आध्यात्मिक भावना और अहिसा का प्रखर प्रचार करते है।

लींबड़ी छोटी (संघवी) सम्प्रदाय

वि० स० १६१५ मे लींवडी सम्प्रदाय के दो विभाग हुए। मोटी (वडी) सम्प्रदाय के विशिष्ट मुनिवरों का परिचय पहले दिया जा चुका है।

पूज्य श्री हीमचन्द जी महाराज

पूज्य श्री हीमचन्द जी महाराज के समय से लींवडी (छोटी) सघवी सम्प्रदाय प्रारम्भ हुई। पूज्य श्री देवराज जी स्वामी के शिष्य मुनि श्री अविचलदास जी के पास मे पूज्य श्री हीमचन्द जी महाराज

ने दीक्षा प्राप्त की। आप वढवाण के अन्तर्गत टीम्बा निवासी वीसा श्रीमाली जाति में जन्मे थे। वि० स० १८७५ मे आपने दीक्षा प्राप्त की थी। स० १९११ मे धोलेरा मे आपने चातुर्मास किया था-तभी से लींबडी सम्प्रदाय दो विभागों मे विभाजित हो गई। स० १९२९ मे आप का स्वर्गवास हुआ। आपके पाट पर पूज्य श्री गोपाल जी स्वामी आचार्य हुए।

पूज्य गोपालजी स्वामी

वि० सं० १८८५ मे ब्रह्मक्षत्रीय वश मे जेतपुर मे आप का जन्म हुआ था। आपके पिता का नाम श्री मूलचन्द जी था। मात्र दस वर्ष की अवस्था मे ही आपने दीक्षा ग्रहण कर सूत्रों का गहन अध्ययन प्रारम्भ किया। आगमों के अध्ययन मे आप विलक्षण प्रतिभाशाली थे। दूर-दूर के साधु-साध्वी शास्त्राभ्यास के लिए आपके पास आते थे। वि० स० १९४० मे आप का स्वर्गवास हुआ। लींवडी की छोटी सम्प्रदाय श्री गोपाल जी स्वामी' की सम्प्रदाय के नाम से भी प्रसिद्ध है।

पूज्य मोहनलालजी महाराज

पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज का जन्म धोलेरा मे हुआ। आप के पिताजी का नाम श्री गागजी कोठारी था। अपनी वहिन मूलीवाई के साथ स० १९३८ से दीक्षा ग्रहण की। आपकी लेखन-शैली सरल और प्रवल शक्तिवान् थी। आप द्वारा लिखित "प्रश्नोत्तर मोहनमाला" एक सुप्रसिद्ध चर्चा ग्रन्थ है।

पूज्य श्री मणिलालजी महाराज

पूज्य श्री मणिलाल जी महाराज ने वि० स० १९४७ मे धोलेरा मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप शास्त्रों के गहन अभ्यासी थे। ज्योतिप विद्या मे भी आप निष्णात थे। "प्रभु महावीर पट्टावली" नामका ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखकर आपने समाज की उल्लेखनीय सेवा की है। "मेरी विशुद्ध भावना" और शास्त्रीय विपयों पर प्रश्नोत्तर के रूप मे भी आपने पुस्तके लिखी है। अजमेर के साधु-सम्मेलन मे आप एक अग्रगण्य शान्तिरक्षक थे।

ज्ञान के साथ क्रिया का होना—यह विरल पुरुपों मे ही देखा गया है। पूज्य श्री मणीलाल जी महाराज मे इन दोनो का समन्वय था। अन्तिम दिनो मे तो आप केवल दूध, छाछ, पापड, गाठियाँ, रोटी, भाखरी और पानी इतने ही द्रव्यों मे से कुछ का उपयोग करते थे। इन मे भी प्रतिदिन केवल तीन द्रव्यों का ही उपयोग करते थे और वह भी सीमित मर्यादा मे। इस प्रकार इस ज्ञानवान् और क्रियावान् महापुरुप का स०१९८९ मे स्वर्गवास हुआ।

आप के शिष्य मुनि श्री केशवलाल जी और तपस्वी श्री उत्तमचन्द्र जी महाराज इस सम्प्रदाय मे मुख्य है।

पूज्य मुनि श्री केशवलालजी महाराज

पूज्य श्री केशवलाल जी महाराज कच्छ-देशलपुर कठी वाली के निवासी है। आप जेतमी

करमचन्द के सुपुत्र है। स० १६८६ मे कच्छ आठ-कोटि छोटी पक्ष के पूज्य श्री शामजी स्वामी के पास मे देशलपुर मे दीक्षा ग्रहण की। स० १६८४ मे आप इस सम्प्रदाय से अलग होकर पूज्य श्री मणीलाल जी के महाराज पास आगये। आपने शास्त्रो का खूब अध्ययन किया है। आपके द्वारा धर्म का प्रचार प्रचुर मात्रा में किया जा रहा है। आप श्री सौराष्ट्र वीर श्रमण सघ के प्रवर्त्तक मुनि है।

गोंडल सम्प्रदाय

पूज्य श्री डुंगरशी स्वामी

पूज्य श्री डु गरशी स्वामी गोंडल सम्प्रदाय के आद्य सत हैं। पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के शिष्य प० प्रचाण जी महाराज के पास मे आपने दीक्षा अगीकार की। आपका जन्म सौराष्ट्र के मेदरड़ा नामक गाँव मे हुआ था। आपके पिता का नाम कमलशी भाई था। आपने पच्चीस वर्ष की अवस्था मे दीक्षा ग्रहण की और स० १८४५ मे आचार्य-पद पर आरूढ़ हुए। शास्त्र-स्वाध्याय मे निरतर जागृत रहते थे—यहाँ तक कि कभी-कभी निद्रा का भी परित्याग कर देते थे। सुप्रसिद्ध राज्यमान्य सेठ सौभाग्यचन्द जी आप ही के शिष्य थे। स० १८७७ मे गोडल मे आप का स्वर्गवास हुआ। आपकी चारित्र-शीलता और सम्प्रदाय-परायणता आगमानुसारी बुद्धिमूलक थी।

तपस्वी श्री गणेशजी स्वामी

तपस्वी श्री गणेशजी स्वामी का जन्म राजकोट के पास खेरडी नामक ग्राम मे हुआ था। आप एकान्तर उपवास करते थे। अभिग्रहपूर्वक तपश्चर्या भी आप अनेक वार करते थे। वि० स०१८६६ मे ६० दिन के सन्थारे मे आप का स्वर्गवास हुआ।

पूज्य श्री वड़े नेणशी स्वामी का परिवार

पूज्य खोड़ाजी स्वामी

वडे नेणशी स्वामी के ६ शिष्यों के परिवार मे पूज्य खोडा जी स्वामी अत्यधिक प्रभावशाली सन्त थे। पूज्य मूलजी स्वामी के शिष्य पूज्य वोलाजी स्वामी के पास मे १६०८ मे आपने दीक्षा ग्रहण की। आप का शास्त्रीय ज्ञान विशाल था और प्रवचन की शैली आकर्षक थी। आप प्रसादगुण-सम्पन्न सुकवि और गायक थे। 'श्री खोडाजी काव्यमाला' के नाम से आपके स्तवन और स्वाध्याय गीतो का सग्रह प्रकाशित हो चुका है। गुजराती साहित्य मे भक्त कवि अखा का जैसा स्थान है वैसा ही गुजराती जैन साहित्य मे पूज्य खोडा जी का स्थान है। स्व० वाडीलाल मोतीलाल शाह ने 'जैन कवि अखा' के नाम से आपको विरुद दिया है।

पूज्य जसाजी महाराज

पूज्य जसाजी महाराज राजस्थान मे जन्मे थे फिर भी गुजरात तथा सौराष्ट्र मे प्रसिद्ध सन्त के रूप मे आप प्रसिद्ध हुए। आप शास्त्र के पारगत और क्रियावान् थे। वि० स० १६०७ मे आपने दीक्षा ग्रहण की और ६० वर्ष तक सयम पाल कर स्वर्ग सिधारे। पूज्य जसा जी के गुरुभाई हीराचन्द जी स्वामी के शिष्य पूज्य देवजी स्वामी हुए। आपके पास मे पूज्य कविवर्य आम्बा जी स्वामी दीक्षित हुए। आपने "महावीर के वाद के महापुरुष" नाम की पुस्तक लिखने मे वहुत परिश्रम उठाया था। पूज्य आम्वा जी स्वामी के शिष्य भीमजी स्वामी हुए। आपसे छोटे नेणशी स्वामी ने दीक्षा ग्रहण की। आपके शिष्य पूज्य देवजी स्वामी हुए। आपके शिष्यो मे पूज्य जयचन्दजी स्वामी विद्वान् थे और पूज्य माणकचन्द जी स्वामी तपस्वी। ये दोनो सगे भाई थे

पूज्य श्री जयचन्दजी स्वामी

आप का जन्म स० १६०६ मे हुआ था। आप जेतपुर के निवासी दशाश्रीमाली प्रेमजी भाई के सुपुत्र थे। आपने २२ वर्ष की अवस्था मे मेदरडा ग्राम मे दीक्षा ग्रहण की और वि० स० १६८७ मे आप का स्वर्गवास हुआ।

आप के प्रवचन अत्यन्त लोकप्रिय थे। प्रकृति से गम्भीर, विनीत और प्रशान्त होने के कारण श्री सघ पर आपका प्रभाव था। आपने एक साथ ३५ उपवास किये थे। आप सतत तपश्चर्या मे निरत रहे थे। अत आपका तेज दिन-प्रतिदिन वढता जाता था। अनेक शिक्षण सस्थाओं के जन्मदाता मुनि श्री प्राणलाल जी महाराज जैसे समाजसेवी मुनिराज आप ही के सुशिष्य है। आप के शिष्यों मे मुनि श्री जयन्तिलाल जी आज मुनिराजो मे प्रकाड विद्वान् गिने जाते है। आपने काशी मे रहकर न्याय-दर्शन का गहन अध्ययन किया है। आपके पिताजी ने भी दीक्षा ली है। आपकी दो वहिने भी दीक्षित है। इस सम्प्रदाय की अन्य महासतियाँ भी अत्यन्त विदुषी है।

६—तपस्वी मुनि श्री माणकचन्दजी महाराज

तपस्वी मुनि श्री माणकचन्द जी महाराज वय मे जयचन्द जी महाराज से वडे थे किन्तु दीक्षा मे छोटे थे। आपका आगम ज्ञान सुविशाल था। ज्यो-ज्यो स्वमत तथा परमत का आप अभ्यास करते जाते थे त्यो-त्यो आपकी जिज्ञासा वढ़ती जाती थी। आप अत्यन्त नम्र और उत्कट तपस्वी थे। आपने अनेक शिक्षण-सस्थाओ का सचालन किया है। योगासनों मे भी आप प्रवीण थे—सौराष्ट्र के मुनियो मे आप अग्रगण्य माने जाते थे।

सायला सम्प्रदाय

पूज्य नागजी स्वामी का परिवार

वि० स० १८७२ में पूज्य बाल जी स्वामी के शिष्य पूज्य नाग जी स्वामी ने इस सम्प्रदाय की स्थापना की है। आप छठ-छठ के पारणा करते थे और पारणे मे आयम्बिल करते थे। आपने अनेक अभिग्रह भी धारण किये थे। चर्चावादी पूज्य भीम जी स्वामी और शास्त्रों के अभ्यासी श्री मूल जी स्वामी आप ही के शिष्य थे। ज्योतिष-शास्त्रज्ञ पूज्य मेघराज जी महाराज और लोकप्रिय प्रवचनकार पूज्य सघ जी महाराज भी आप ही के परिवार मे हुए है। तपस्वी मगनलाल जी महाराज, कान जी मुनि आदि लगभग चार मुनि इस समय इस सम्प्रदाय मे हैं।

बोटाद-सम्प्रदाय

१—पूज्य जसराज जी महाराज

पूज्य धर्मदास जी महाराज के पाचवे पाट पर पूज्य जसराज जी महाराज आचार्य हुए। आपने वि० सं० १८६७ में पूज्य वशराम जी महाराज के पास मे १३ वर्ष की अवस्था मे मोरवी मे दीक्षा ग्रहण की। आपकी तेजस्विता समाज में विख्यात है। आगमों के गम्भीर ज्ञानी होने के कारण तत्कालीन मुनि-जगत् मे आपका अत्यधिक सुयश था। धागध्रा से आप बोटाद मे स्थिरवास करने के लिए पधारे। तब से इस सम्प्रदाय का नाम बोटाद सम्प्रदाय पडा। वि० सवत् १६२६ मे आपका स्वर्गवास हुआ।

२—पूज्य अमरशी जी महाराज

पूज्य अमरशी जी महाराज क्षत्रियवशी थे और वि० स० १६८६ मे आपका जन्म हुआ था। छोटी उम्र मे ही माता-पिता का अवसान होने से 'लाठी' के दरबार श्री लाखा जी द्वारा आपका पालन-पोषण हुआ था। सवत् १६०१ मे पूज्य जसराज जी महाराज के पास मे उत्कृष्ट भाव से दीक्षा ग्रहण की। संस्कृत-प्राकृत-ज्योतिप आदि विषयों का आपने विशिष्ट ज्ञान प्राप्त किया। वर्तमान आचार्य माणकचन्द जी महाराज आप ही के शिष्य है।

३—पूज्य हीराचन्द जी महाराज

पूज्य हीराचन्द जी महाराज का जन्म खेडा (मारवाड) मे हुआ था। वि० स० १६२५ मे दामनगर में जसराम जी स्वामी के शिष्य श्री रणछोडदास जी महाराज के पास मे आपने दीक्षा ली। आपकी व्याख्यान-शैली वडी ही रोचक थी। आप क्रियाशील और स्वाध्याय-प्रेमी थे। स० १६७४ मे वढवाण शहर में आपका स्वर्गवास हुआ।

४—पूज्य मूलचन्द जी स्वामी

पूज्य मूलचन्द जी स्वामी का जन्म नागनेश ग्राम में वि० स० १६२० में हुआ था। आपकी स्मरण-शक्ति अत्यधिक तीव्र थी। वि० स० १६४८ मे पूज्य हीराचन्द जी महाराज से आपने दीक्षा ग्रहण

की अत्यन्त भक्तिभाव पूर्वक सूत्र-सिद्धान्तों का अभ्यास किया। चर्चा मे बिना आगम प्रमाण के बोलना आपको कतई पसन्द नही था।

५—पूज्य माणक चन्द जी महाराज

पूज्य माणकचन्द जी महाराज का जन्म बोटाद के पास मे तुरखा ग्राम मे हुआ था। वि० स० १९४३ मे पूज्य अमरशी महाराज के पास मे आपने दीक्षा ग्रहण की। सस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं का आपने गहरा अध्ययन किया। अपने चरित्र बल से आपने बहुत सारे परिषह सहन किये। बोटाद सम्प्रदाय मे आप अत्यन्त प्रतिष्ठावान सत थे। आपके सुशिष्य न्यालचन्द जी शुद्धचित्त वाले शान्त मुनिराज थे। मृत्यु को आप पहले ही से देख चुके थे। जिस दिन आपने ऐसा कहा कि "आज शरीर छोडना है" उसी दिन ही आप स्वर्गवासी हुए।

६—पूज्य शिवलाल जी महाराज

पूज्य शिवलाल जी महाराज भावसार जाति मे उत्पन्न हुए थे। वैवाहिक सम्बन्ध छोड कर स० १९७४ मे आपने पूज्य माणकचन्द जी महाराज के पास दीक्षा ग्रहण की। 'पच परमेष्ठी का प्रभाव" नामक एक पुस्तक तथा कुछ अन्य पुस्तके भी आप ने लिखी है। आप की प्रवचन शैली चित्ताकर्षक एव हृदयग्राही है। बोटाद के मुनिवरों मे आप अत्यन्त क्रियापात्र मुनिराज है। आप भी श्री सौराष्ट्र वीर श्रमणस के प्रवर्तक हैं।

कच्छ आठ कोटि पक्ष

कच्छ में स्थानकवासी धर्म का प्रारम्भ

लगभग वि० स० १६०८ मे एकल पात्रिया श्रावक हुए। जामनगर मे इन लोगों का जोर विशेष-रूप से था। जामनगर और कच्छ माडिवी के श्रावकों मे पारस्परिक सुन्दर सम्बन्ध था। व्यावसायिक कार्यों के लिये भी ये एक-दूसरे के यहाँ आया जाया करते थे। इस कारण एकल पात्रियासाधु भी कच्छ मे आये। ये कच्छ के बडे ग्रामों मे चौमासे करते और छोटे-मोटे ग्रामों मे भी दूसरे समय मे घूम-घूम कर धर्म का प्रचार करते थे। ये श्रावकों को आठ कोटि के त्याग से सामायिक-पौषध कराते थे।

सवत १७७२ मे पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के शिष्य मूलचन्द जी स्वामी और उनके शिष्य इन्द्र जी स्वामी ठा० दो प्रथम बार कच्छ मे पधारे।

१—पूज्य श्री सोमचन्द जी महाराज

पूज्य श्री इन्द्र जी महाराज ने धर्मसिंह जी मुनि के टब्बों तथा शास्त्रों का अच्छी तरह से अभ्यास किया था अत आठ कोटि के उपदेश की प्ररूपणा की। आपके पास मे स० १७८६ मे पूज्य श्री सोमचन्द

जी स्वामी ने दीक्षा ग्रहण की पूज्य श्री सोमचन्द जी म० सा० के पास मे कच्छ के महाराव श्री लखपत जी के कामदार श्री थोमण जी पारख तथा बलदीया ग्राम के निवासी कृष्ण जी तथा उनकी माता मृगा वाई ने सं० १८१६ मे भुज में दीक्षा ग्रहण की। स० १८३१ मे देवकरण जी ने दीक्षा ग्रहण की। स०१८४२ मे पूज्य डाया जी स्वामी ने दीक्षा ग्रहण की। आपके समय से श्री कृष्ण जी स्वामी का सघाडा—आठ कोटि के नाम से प्रसिद्धि मे आया।

२—पूज्य कृष्ण जी महाराज

सवत् १८४४ मे लींवडी सम्प्रदाय के पूज्य अजरामर जी स्वामी कच्छ मे पधारे। उस समय कच्छी सम्प्रदाय के पूज्य श्री कृष्ण जी महाराज ने आपके सामने २१ बोल उपस्थित किये —

१—मकान के मेडे (भवन का बनाया हुआ छोटा सा ऊपरी हिस्सा) पर उतरना नहीं।

२—गृहस्थ की स्त्री को पढ़ाना नहीं।

३—गृहस्थ के घर पर कपडों की गठडी रखनी नहीं।

४—गोचरी लेते समय गोचरी वहरान वाले के द्वारा त्रस-स्थावर जीवों का यदि घात हो जाय तो गोचरी लेना नहीं।

५—ससारी खुले मुँह वोले तो उससे वोलना नहीं।

६—नारियल के गोले लेना नहीं।

७—दाडिम के दाने लेना नहीं।

८—वादाम की कुली लेना नहीं।

९—पवड़ी के पूरे गोले लेना नहीं।

१०—गन्ने की गडेरी (टुकड़े) लेना नहीं।

११—पक्के खरवूजे का रायता जो बीज सहित हो—लेना नहीं।

१२—प्याज, लहसुन या मूला का धु गारा हुआ कच्चा शाक लेना नहीं।

१३—खरीद कर कोई पुस्तक दे तो लेना नहीं।

१४—खरीद कर कोई लडका दे तो दीक्षा देना नहीं।

१५—प्याज और गाजर का शाक वहरना नहीं।

१६—माले पर से कोई वस्तु लाकर के दे तो बहरना नहीं।

१७—भोंयरे मे से निकाल कर कोई वस्तु दे तो वहरना नहीं।

१८—न दिख सके ऐसे घोर अन्धेरे मे से कोई वस्तु लाकर दे तो लेना नहीं।

१९—वहराई जाने वाली भोजन-सामग्री पर यदि चींटी चढी हुई हो तो लेना नहीं।

२०—मिष्टान्न आदि कालातिक्रम के बाद लेना नहीं।

२१—मण्डी पाहुडिए, वलि पाहुडिए, सकीए, सहस्सागारे के दोष युक्त आहार लेना नहीं।

ऊपरोक्त २१ वोल पूज्य अजरामर जी स्वामी को मजूर न होने के कारण आहार-पानी का व्यवहार इनसे बन्द हुआ। यहाँ से ही छ कोटि और आठ कोटि इस प्रकार दो पक्ष हुए।

स० १८७५ मे लींवडी से अजरामर जी स्वामी के शिष्य देवराज जी महाराज कच्छ मे आये।

आपने स० १८५६ मे कच्छ माण्डवी मे चातुर्मास किया। उस समय प्रथम श्रावण वद पक्ष में एक सध्या को शा० हसराज सामीदास की पत्नी राम बाई को छ कोटि से सामयिक कराई। इसके बाद स० १८५७ मे मुन्द्रा मे तथा स० १८५८ मे अन्जार मे चातुर्मास किया। इस प्रकार छ कोटि की श्रद्धा यहाँ प्रारम्भ हुई।

पूज्य डाया जी स्वामी के दो शिष्य हुए। स० १८४५ मे जसराज जी स्वामी तथा १८४६ मे देव जी स्वामी ने दीक्षा ग्रहण की। ये दोनों शिष्य अपने-अपने अलग ही शिष्य बनाते थे। इस प्रकार क्रियाओं मे भी धीरे-धीरे भिन्नता होने लगी। स० १८७२ मे जसराज जी महाराज ने ३२ बोल निश्चित किए जो इस प्रकार है —

१—विना कारण के पात्र लेकर गॉव मे जाना नहीं।

२—विना कारण गृहस्थ के यहॉ रुकना नहीं।

३—वेचे जाते हुए सूत्र नहीं लेना और पैसा दिलाकर सूत्र नहीं लिखाना।

४—खरीद कर कोई कपड़ा दे तो लेना नहीं।

५—वरसी तप के पारणे के समय किसी के यहॉ जाना पडे तब यदि कपड़ा बहराया जाय तो लेना नहीं।

६—मिठाई, गुड, या शक्कर आदि खरीद कर कोई दे तो नहीं लेना।

७—किंवाड, टाड या पेटी बनवाना नहीं।

८—कन्दमूल का शाक या अचार वहरना नहीं।

९—ससारी को पूँजनी, मुँहपत्ति या डोरा देना नहीं।

१०—संसारी का—आश्रव का कोई काम करना नहीं।

११—आहार करते हुए माण्डलिया रखना तथा पात्रे चिकने हों तो आटे से साफ करना—धोना और उस धोवन को पी जाना।

१२ अतेवासी का आहार रखना नहीं।

१३—पत्र लिखना या लिखाना नहीं।

१४—द्राक्ष, किसमिस, नारियल के गोले और बादाम की गुली नहीं लेना।

१५—पुट्ठे के लिये मशरु (रेशमी वस्त्र) या छींट नहीं लेना।

१६—बाग-बगीचे आदि देखने के लिये जाना नहीं।

१७—प्रतिक्रमण करते हुए बीच मे बातें नहीं करना।

१८—प्रतिलेखन करते हुए बीच मे बाते नहीं करना।

१९—रात्रि के समय में स्त्रियों का उपाश्रय मे आना नहीं।

२०—अचित्त पानी मे सचित्त पानी की शका हो तो लेना नहीं।

२१—चौमासे की आलोचना छ मास मे करना।

२२—पूर्ण-रूप से स्वस्थ होने पर स्थानक मे थडिल बैठना नहीं।

२३—मर्यादित पात्रों या मिट्टी के बर्तनो से अधिक रखना नहीं।

२४—यन्त्र, मन्त्र अथवा औषधि रखना नहीं।

२५—छोटे ग्रामो मे पूछे विना आहार—पानी लेना नहीं।

२६—ससारी की जगह मे जहाँ स्त्रियाँ हो—वहाँ रात्रि मे रहना नहीं।

२७—ससारी खुले मुँह वोले तो उनसे वोलना नहीं।

२८—छत पर खड़े हो कर रात्रि मे वाते करना नहीं।

२९—ससारी घर से वार-वार नही जाँचना।

३०—दर्शनार्थियो के यहाँ से आहार-पानी लेना नहीं।

३१—श्राविकाओं की वारह व्रत ग्रहण करने की पुस्तिका पाट पर वैठ कर (सव के सामने) पढ़ना नहीं।

३२—चातुर्मास तथा शेखा काल पूरा होने पर शक्ति होते हुए निष्कारण रुकना नहीं।

इन वत्तीस वोलों के साथ श्री देवजी स्वामी सम्मत नहीं हुए। इस कारण कच्छ-आठ-कोटि मे दो पक्ष हो गये। श्री देव जी स्वामी का सघाडा "आठ कोटि नानी पक्ष" के नाम से और श्री जसराज जी स्वामी का सघाडा "आठ कोटि नानी पक्ष" के नामों से प्रसिद्ध हुआ।

आठ कोटि मोटी पक्ष

१—पूज्य करमशी जी महाराज

पूज्य कृष्ण जी महाराज के दसवे पाट पर पूज्य करमशी जी महाराज हुए। आपका जन्म स० १८८६ मे कच्छ वाकी मे सेठ हसराज जी के यहाँ हुआ था। पूज्य पानाचन्द जी महाराज के पास स० १९०४ मे गुजरात के सिधपुर ग्राम मे आपकी दीक्षा हुई थी। स० १९५६ मे आप आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित हुए। आप कर्त्तव्यपरायण और उग्र विहारी मुनिराज थे। ज्ञान-चर्चा के प्रति आपकी अत्यधिक रुचि थी। शान्ति और सहिष्णुता आपके विशिष्ट गुण थे। वि० स० १९६६ मे आपका स्वर्गवास हुआ। आपके वाद पूज्य श्री बृजपाल जी, पूज्य कान जी स्वामी और पूज्य कृष्ण जी स्वामी आचार्य हुए।

२—पूज्य श्री नागजी स्वामी

आप कच्छ-भोजाय के निवासी श्री लालजी जेवत के पुत्र थे। स० १९४७ मे केवल ११ वर्ष की अवस्था मे पूज्य करमशी जी महाराज के पास दीक्षा ग्रहण की। स० १९८५ मे आपको आचार्य-पद दिया गया। आप उत्तम विद्वान् और सरस कवि थे। गुजराती भाषा मे आपने अनेक रास वनाये हैं।

३—पूज्य श्री देवचन्द जी महाराज

पूज्य श्री देवचन्द जी महाराज इस सम्प्रदाय मे उपाध्याय थे। वि० स० १९४० मे आपका जन्म हुआ था। आपके पिता का नाम सेठ साकरचन्द भाई था। वि० स० १९५७ मे आपने दीक्षा ग्रहण की। न्याय, व्याकरण और साहित्य के आप प्रखर विद्वान थे। 'ठाणाग-सूत्र' पर भाषान्तर भी आपने लिखा है। न्याय के पारिभाषिक शब्दों को सरल रीति से समझाने वाला आपने एक ग्रन्थ लिखा है। सवत् २००० मे पोरवन्दर मे आपका स्वर्गवास हुआ।

४—पं० मुनि रत्नचन्द जी महाराज

सवत् १६७५ मे पूज्य नागजी स्वामी के पास मे प० मुनि श्री रत्नचन्द जी महाराज ने दीक्षा ग्रहण की। आपके पिता का नाम कानजी भाई था। प० रत्नचन्द जी म० कच्छी के रूप मे आप प्रख्यात हैं। आपने सस्कृत, प्राकृत का गहन अध्ययन किया है। तीन चरित्र-ग्रन्थों की रचना आपके द्वारा सस्कृत भाषा मे हुई है।

कच्छ आठ कोटि नानी प .

पूज्य डाया जी महाराज के दो शिष्यों ने अलग-अलग सघाड़े चलाये थे। उनमे से पूज्य देव जी स्वामी के 'आठ कोटि नानी पक्ष' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। पूज्य जसराज जी स्वामी के पश्चात् पूज्य वरसा जी स्वामी और पूज्य नथु जी स्वामी पाट पर आये।

१--पूज्य हंसराज जी स्वामी

आपने सवत् १६०३ मे पूज्य नथु जी स्वामी के पास दीक्षा ग्रहण की। आपने कच्छ मे से विहार करके रेगिस्तान पार करके गोंडल जाकर श्री पुजा जी स्वामी के पास में शास्त्राभ्यास किया। स० १६१६ मे आप फिर से कच्छ लौटे और शुद्ध वीतराग धर्म की प्ररूपणा की। आपने अनेक उपसर्ग और परिषद् समभाव से सहन किये थे। स० १६३५ मे कच्छ के वडाला ग्राम मे आपने कालधर्म प्राप्त किया।

२—पूज्य श्री व्रजपालजी स्वामी

पूज्य श्री हसराज जी स्वामी के पाट पर पूज्य श्री व्रिजपाल जी स्वामी हुए। आपने बाल-ब्रह्मचारी के रूप मे स० १६११ मे दीक्षा ग्रहण की और स० १६३५ मे आपको पूज्य पदवी प्रदान की गई। आप महान वैराग्यवान् थे। सवत् १६५७ मे आपका स्वर्गवास हुआ।

३—पूज्य श्री डुंगरशी स्वामी

पूज्य श्री व्रजपाल जी स्वामी के पाट पर आपके गुरुभाई डुंगरशी स्वामी आये। आप भी बाल ब्रह्मचारी थे और अत्यधिक वैराग्यवान थे। आपने स० १६३७ मे कच्छ वडाला ग्राम मे दीक्षा ग्रहण की। आपका स० १६६६ मे स्वर्गवास हुआ।

४—पूज्य श्री शामजी स्वामी

पूज्य श्री डुंगरशी स्वामी के पाट पर पूज्य श्री शाम जी स्वामी आचार्य पदारूढ़ हुए। आपने ६७ वर्ष तक सयम पाल कर स० २०१० मे कच्छ-माडाऊ मे कालधर्म प्राप्त किया।

५—पूज्य श्री लालजी स्वामी

पूज्य श्री शामजी स्वामी के पाट पर पूज्य श्री लाल जी स्वामी आचार्य-पद पर आये। आपने

सं० १६७२ मे दीक्षा ग्रहण की। वर्तमान मे इस सम्प्रदाय में १६ साधु-मुनिराज और २६ महासतियाँ है। इन सब पर पूज्य श्री लाल जी स्वामी का शासन है। इस सम्प्रदाय का एक ऐसा नियम है कि गुरु की उपस्थिति मे कोई भी मुनि अपने अलग शिष्य नहीं बना सकते। इस कारण सम्प्रदाय मे नवीन शाखाएँ फूटने की सभावना कम रहती है। और साम्प्रदायिक-एकता दृष्टिगोचर होती है।

खम्भात-सम्प्रदाय

पूज्य श्री तिलोक ऋषि जी महाराज के सुशिष्य मगल ऋषि जी महाराज गुजरात मे विचारे। खम्भात मे आपके अनेक शिष्य हुए—इस कारण इस सम्प्रदाय का नाम 'खम्भात सम्प्रदाय' पडा।

श्री मगल ऋषि जी महाराज के वाद अनुक्रम से पूज्य श्री रणछोड जी महाराज, पूज्य श्री नाथा जी, वेचरदास जी और वडे माणकचन्द जी महाराज पाट पर आये। इनके वाद पूज्य श्री हरखचन्द जी महाराज के समय मे यह सम्प्रदाय सुदृढ हुई। आपके वाद पूज्य श्री भाण जी ऋषि जी महाराज पाट पर आये।

१—पूज्य श्री गिरधरलाल जी महाराज

पूज्य श्री भाण जी ऋषि जी महाराज के वाद पूज्य श्री गिरधरलाल जी महाराज आपके पाट पर आये। आप संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं के विज्ञाता और समर्थ विद्वान् थे। आप एक महान् कवि भी थे। आपकी कविता अत्यन्त सौष्ठवयुक्त और पिंगलवद्ध थी। आपने वम्वई मे भी चातुर्मास किया था। अन्य दर्शन शास्त्रों के भी आप विज्ञाता थे। योग और ज्योतिष-शास्त्र के भी आप प्रखर अभ्यासी थे। आपमे गहरा ज्ञान और अगाध वुद्धि थी। मस्तक मे अकस्मात् चोट लग जाने के कारण आपने कालधर्म प्राप्त किया।

२—पूज्य श्री छगनलालजी महाराज

पूज्य श्री गिरधरलाल जी महाराज के वाद पूज्य श्री छगनलाल जी महाराज आचार्य हुए। आपने २२ वर्ष की अवस्था मे स० १६४५ मे दीक्षा ग्रहण की। आप निर्भय वक्ता, शुद्ध हृदयवान्, सत पुरुष थे। आपकी पहाडी आवाज थी—वुलन्द और जोशीली। तत्कालीन धर्मप्रचारक आचार्यो मे आपकी अत्यन्त प्रतिष्ठा थी। अजमेर साधु-सम्मेलन मे आप पधारे थे।

३—पूज्य श्री गुलावचन्दजी महाराज

पूज्य श्री गुलावचन्द जी महाराज अत्यन्त सरल हृदय के थे। आप उग्र तपस्वी थे। अपने शरीर के प्रति रचमात्र भी आपमे ममत्व भाव नहीं था। आपको सारण गाँठ की पीडा थी, जिसका ऑपरेशन कराने के लिए श्रावक अनेक वार आपसे विनती करते थे किन्तु शरीर के प्रति निर्ममत्व के कारण आप अस्वीकार करते थे। सवत् २०११ मे इस सम्प्रदाय के इन अन्तिम आचार्य और तपस्वी मुनिराज का अहमदावाद मे स्वर्गवास हुआ। इस सम्प्रदाय मे अव केवल दो मुनि हैं, शेष सभी साध्वियाँ है।

इस सम्प्रदाय की साध्वियों मे महासति जी श्री शारदाबाई अत्यन्त विदुषी है जो अहमदाबाद के समीपवर्ती साणन्द ग्राम की हैं। बहुत छोटी उम्र मे दीक्षा अगीकार करके आपने गहरा अध्ययन किया है। अपनी आकर्षक और सुन्दर व्याख्यान-शैली से आप धर्मप्रचार मे लगी हुई है।

हमारा साध्वी सघ

जैन धर्म की व्यवस्था का भार चतुर्विध सघ पर है। श्रमण भगवान् महावीर ने चतुर्विध सघ के चार स्थम्भों को—साधु-साध्वी, और श्रावक-श्राविकाओं—को समानाधिकार दिये है।

साधु समाज का इतिहास ही केवल जैन धर्म का इतिहास नहीं है किन्तु चतुर्विध सघों का सम्मिलित इतिहास ही जैन समाज का सम्पूर्ण इतिहास हो सकता है। किन्तु समाज की रूढ़ प्रणालिकानुसार आज तक साध्वी समाज की अपेक्षा साधु समाज का ही नामोल्लेख विशेष मिलता है। इसका कारण पुरुष प्रधानता की भावना होना जाना जा सकता है।

चाहे जो कुछ हो-धर्म और वलिदान का जहाँ सम्वन्ध है वहाँ तक जैनधर्म के सत्य उत्सर्ग का ज्वलन्त और साकार रूप साध्वी समाज है। दु ख के जितने पहाड और विपत्तियों के बादल साध्वी-वर्ग पर टूटे है, आँधियों और तूफानों का जितना सामना साध्वी समाज को करना पडा है, उतना साधु-वर्ग को नहीं। साध्वी समाज द्वारा दिए गये महामूल्यवान बलिदानों की अमर कहानी केवल जैन साध्वी समाज के लिए ही नहीं किन्तु समस्त ससार के लिए दिव्य ज्योति के समान है। भगवान महावीर के कष्ट और चन्दन वाला के सकटों को कौन भूल सकता है ?

जैन धर्म ने स्त्री जाति को तीर्थंकर पद मे भी समावेश किया है—यह उसकी एक अप्रतिम विशेषता है। फिर भी यह सत्य है कि साध्वी समाज की परम्परा का अखण्डित इतिहास नहीं मिलता। जो-कुछ भी इतिहास मिलता है वह विखरे हुए रत्न-कणों के समान है।

महासती जी श्री पार्वती जी महाराज

महासती श्री पार्वती जी (पजाव) का नाम वर्तमान मे सुप्रसिद्ध है। आप का जन्म आगरा जिले मे सवत् १६१६ मे हुआ था। सवत् १६२४ मे केवल आठ वर्ष की अवस्था मे आपने दीक्षा ग्रहण की थी। सवन १६२८ मे आप पजाव के श्री अमरसिंह जी महाराज की सम्प्रदाय मे सम्मिलित हुई आप वडी क्रिया पात्र थीं। पजाव के साध्वी सघ पर तो आप का प्रभुत्त्व था ही, परन्तु श्रमण सघ भी आपकी आवाज का आदर करता था। आपने अनेक प्रान्तों मे विचरण कर के धर्मध्वजा फहराई थी। आपका प्रचण्ड देह और व्याख्यान 'छटा वडी प्रभावोत्पादक थी, आप अत्यन्त विदुषी साध्वी थीं। आपने सस्कृत प्राकृत आदि भाषाओं का वडा ही सरस ज्ञान प्राप्त किया था। आपने 'ज्ञान दीपिका', 'सम्यक्त्व सूर्योदय', सम्यक् चन्द्रोदय 'आदि महान ग्रन्थों की रचना की है। आप के ग्रन्थों मे अद्भुत' तर्क और सचोट दलीलें भरी हुई है। आपके विरोधी आपकी दलीलों का बुद्धिपूर्वक उत्तर देने मे असमर्थ होने के कारण उद्दण्डता पर उतर जाते। सवन १६६७ मे जालन्धर मे आप का स्वर्गवास हुआ।

महासती श्री उज्ज्वलकुमारीजी

आपका जन्म वरवाला (सौराष्ट्र) मे हुआ हे। माँ-बेटी ने श्री विदुषी महासती श्री राजकुवँर के

पास दीक्षा ली थी। आधुनिक समयानुसार प्रखर प्रवचनकर्ता के रूप मे महासति जी श्री उज्ज्वल कुमारी जी का नाम जैन और अजैन समाज मे सर्वत्र प्रसिद्ध है महात्मा गाधी और अन्य राष्ट्रीय नेताओ ने भी आप का सान्निध्य प्राप्त किया है। आप सस्कृत, प्राकृत, गुजराती, हिन्दी व मराठी भापा के अतिरिक्त इग्लिश भाषा पर भी अधिकार रखती है। आपके कई व्याख्यान प्रकाशित हो गये है।

महासती जी श्री सुमति कुंवरजी

स्थानक वासी जैन-धर्म के जानकार महासति जी श्री सुमति कुंवर जी को भली भाति जानते है। श्रमण सघ के समान श्रमणी सघ की आवश्यकता पर आप समाज का ध्यान आकर्पित कर रहे हैं। आप उग्र विहारिणी, परम विदुषी और मधुर व्याख्यात्री है। अपनी दीक्षा—गुरु रम्भा कुॅवर जी महासती जी के साथ दक्षिण, मध्यभारत, राजस्थान, थली प्रदेश और पजाब मे विचर कर आप बहुत ही धर्म प्रचार कर रही है।

महासती जी श्री वसुमती बाई

दरियापुरी सम्प्रदाय की महासति जी श्री वसुमति बाई के व्याख्यान बडे ही तर्कपूर्ण युक्तियों से परिपूर्ण और जोरदार भाषा से भरे हुए होते हैं। आपका जन्म पालनपुर में हुआ और छोटी उम्र मे दीक्षा लेकर गहन ज्ञान सम्पादन किया।

प्रवर्तिनी जी श्री देवकुॅवर बाई

कच्छ आठ कोटि छोटी पक्ष मे वर्तमान में प्रवर्तिनी पद पर महासति जी श्री देवकुॅवर बाई विराजमान हैं। कच्छ के वडाला ग्राम मे स०१६७५ मे आपकी दीक्षा हुई थी। प्रवर्तिनी जी श्री पाची बाई के कालधर्म के पश्चात् स० १६६६ मे उनके पाट पर आप विराजमान हुई।

महासती जी श्री लीलावती बाई

लींवड़ी सघ की सम्प्रदाय मे सुप्रसिद्ध महासती जी श्री बा० ब्र० लीलावती बाई क्रियाशील और प्रभावक व्याख्यात्री हैं।

इनके सिवाय अनेक महासतियॉ अनेक सम्प्रदायों मे हैं। उनमे से अनेक विद्वान् और अभ्यासी हैं। आवश्यक सामग्री मिलने के अभाव मे और अधिक महासतियों का सविस्तर वर्णन नहीं दिया जा सका।

महासति श्री रगुजी (राजस्थान), महासति श्री टीबुजी (मालवा), नन्द कुॅवर जी (मारवाड) श्री रतन कुॅवर जी (मालवा), और श्री सारसकुॅवर जी (खभात), आदि महासतियों ने समस्त भारत मे जैनधर्म का प्रचार और प्रसार करने मे अग्रणी भाग लिया है।

महासती जी श्री राजीमति जी, चन्दा जी, मोहन देवी जी, श्री पन्ना देवी जी, श्री मथुरा देवी जी आदि महासतियों ने भगवान महावीर स्वामी का सदेश पजाब मे पहुँचाया। इनके इस महान कार्य को कौन भूल सकता है। गुजरात मे श्री ताराबाई, श्री शारदा बाई आदि सौराष्ट्र मे श्री प्रभावती बाई, श्री

लीलावती जी आदि महासतियों ने आर्हत् धर्म का प्रचार किया है।

महासती वर्ग का प्रचार, उत्सर्ग, त्याग, तपश्चर्या और संयम साधुवर्ग से किसी भी प्रकार से कम नहीं है।

महासती वर्ग का भावी उज्ज्वल प्रतिभासित हो रहा है। साध्वी समाज यदि शिक्षण की तरफ विशेष लक्ष्य दे तो साध्वियाँ जैनधर्म का महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पादन कर सकेंगी और संघ की उन्नति में दायित्वपूर्ण अपना सहयोग प्रदान कर सकेंगी।

पूज्य श्री लवजी ऋषिजी की परंपरा की महासतियाँ

क्रियोद्धारक परम पुरुष पूज्य श्री लव जी ऋषि जी म० के तृतीय पाट पर पूज्य श्री कहान जी ऋषि जी म० के पाट पर विराजित पूज्य श्री तारा ऋषि जी म० ने संवत् १८१० में पचेवर ग्राम में ४ सम्प्रदाय का संगठन किया। उस समय सती शिरोमणि श्री राधाजी म० उपस्थित थे। महासतीजी ने संगठन कार्य में विशेष सहयोग दिया था। उनकी अनेक शिष्याओं में श्री किसन जी म० आपकी शिष्या श्री जोता जी म० इनके शिष्य परिवार में श्री मोता जी म० मुख्य थीं। आपकी अनेक शिष्याओं में दीपकवत् प्रकाश करने वाली शिष्या श्री कुशल कुँवर जी म० पदवीधर थीं, उन्हीं की सेवा २७ शिष्या हुइ थीं। उनमें से शान्त मूर्ति श्री दया जी, सरदारा जी तथा महासती जी श्री लिछमा जी म० का परिवार वृद्धिंगत हुआ। महासती जी दया कुँवर जी महाराज की भी अनेक शिष्याएँ हुईं, उनमें श्री गुमाना जी म०, श्री झमकु जी म०, श्री गंगा जी म०, श्री हीरा जी म० आदि शिष्या और परिवार आगे बढ़ता गया। श्री गुमानकुँवर जी से तपस्विनी श्री सिरेकुँवर जी और उनकी शिष्या पंडिता प्र० श्री रतन कुँवर जी म० जो कि वर्तमान में अनेक क्षेत्रों में विचर कर जैनधर्म के गौरव को बढा रही हैं। उनकी शिष्याओं में प्रखर व्याख्यानी पंडिता वल्लभ कुँवर जी म० भी जैन धर्म का खूब प्रचार कर रही है। श्री हीरा जी म० के परिवार में श्री भूरा जी म० शान्त मूर्ति श्री राम कुँवर जी म०, तपस्विनी श्री नन्दू जी म० आदि हुईं। उनमें अनेक सतियाँ विदुषी हुईं। श्री भूरा जी म० की शिष्या पंडिता प्रवर्तिनी जी श्री राज कुँवर जी म० प्रखरव्याख्यानी, मधुर स्वर, अनेक शास्त्र कण्ठस्थ, संस्कृत, उर्दू, फारसी, अरबी, हिन्दी, मराठी गुजराती भाषा से विशेष अवगत थे। आप के द्वारा मुंबापुरी पधारने का अवसर सर्वप्रथम हुआ। जिससे अन्य सतियाँ बम्बई क्षेत्र में पधारती हैं। आपका अनेक शिष्याओं में पंडिता सुव्याख्यानी श्री उज्ज्वल कुँवर जी म० वर्तमान में जैन समाज में उज्ज्वल कीर्ति को बढा रही है। आपने संस्कृत प्राकृत का उच्च शिक्षण लिया है साथ-साथ अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, गुजराती आदि भाषाओं के ऊपर अच्छा अधिकार है। तपस्विनी श्री नन्दूजी म० शान्त और उग्र तपस्विनी थीं। आप की शिष्याओं में मधुरव्याख्यानी पंडिता प्र० श्री सायर कुँवर जी म० जो कि वर्तमान में मद्रास, बैंगलोर आदि प्रान्तों में विचर कर धर्म का तथा शिक्षण का प्रचार कर रही हैं। आपके सदुपदेश से अनेक पारमार्थिक संस्थाएँ निर्माण हुई हैं। शान्त मूर्ति श्री राम कुँवर जी म० आप की २३ शिष्याएँ हुईं, उनके प्रमुख्य श्री सुन्दर जी म० प्रधान थीं। प० प्रवर्तिनी जी श्री शान्ति कुँवर जी म० प्रखर व्याख्यानी विदुषी सती थी। इन्होंने दक्षिण प्रान्त खान देश आदि प्रान्तों में विचरकर जैनधर्म की अच्छी जागृति की है। उन्हीं के परिवार में शान्त सरल विदुषी और प्रखर व्याख्यानी सती जी श्री सुमति कुँवर जी म० अनेक प्रान्तों में उग्र विहार करके भव्य

जीवों को अपने वचनामृत का पान करा रही है। आपके वचनों मे ऐसी आकर्षण शक्ति है कि जैनों के अतिरिक्त अन्य समाज भी आपके वचनामृतका पिपासु रहता है। स्थली के प्रान्त रतन गढ मे जो तेरह पथी समाज का गढ है, ऐसे क्षेत्रों मे आपने अन्य भाई अग्रवाल, ब्राह्मण आदि समाज की विनती से थली प्रदेश क्षेत्रों मे चातुर्मास किया। अनेक परपहों को सहन कर स्था-जैनधर्म का गौरव बढाया है। आपके सदुपदेश मे वम्बई चातुर्मास मे आयम्बिल खाता ७०,१७५ हजार का स्थायी फड हो कर वर्तमान मे सुव्यवस्थित चल रहा है। अनेक स्थानों पर कन्याओं के लिए धार्मिक कन्या पाठशाला स्थापित हुई हैं।

श्री महाभाग्यवान् श्री लछीमा जी म० प्रभावशालिनी सती जी थीं। आपके उपदेशामृत से सद्बोध पाकर अनेक भव्य आत्माओ ने जीवन सफल बनाया। उनमे मुख्य श्री सोना जी म०, श्री हमीरा जी, श्री लाडु जी, तपस्विनी रुखमा जी आदि महासतियाँ जी हुई। श्री सोना जी म० की सुशिष्या तपस्विनी श्री कासा जी म० हुई। इन सतियों के परिवार मे अनेक सतियाँ हुई है। प्रवर्तिनी श्री कस्तूरा जी म०, प्र० श्री हगामकुँवर जी म० और श्री जडावकुँवर जी म०। इन महासतियों ने मालवा, वागड, वरार, मध्यप्रदेश आदि प्रान्तों मे विचरकर शुद्ध जैन धर्म की खूव प्रभावना की है। वर्तमान मे प्र० श्री हगाम कुँवर जी म० और उनका शिष्या-परिवार श्री सुन्दर कुँवर जी म० आदि मालवा प्रान्त मे विचर रही है।

श्री जडावकुँवर जी म० का परिवार व्याख्यानी श्री अमृतकुँवर जी म० तथा श्री वरजु जी म० आदि सतियाँ हुईं। उनकी शिष्या का परिवार वर्तमान मे अहमदनगर, पूना तथा वरार, मेवाड मालवा प्रान्तों मे विचर रहा है।

पं० महासती जी श्री सिरेकुँवर जी म० अपने वचनों द्वारा धर्मप्रचार कर रही है। महासती श्री इन्द्रकुँवर जी और श्री दौलतकुवँर जी म० की शिष्या श्री गुमान कुँवर जी तथा श्री हुलासकुँवर म० ठा० २ महासती जी श्री सिरेकुँवर जी म० की सेवा मे विचर रही है। श्री हमीरा जी म० की शिष्या श्री प्रवर्तिनी जी रंभा जी महाराज आदि हुई हैं। उनमे प्रवर्तिनी जी म० वहुत भद्र परिणामी सरल प्रकृति की थीं। कई वर्ष तक स्थविरवास पूना मे विराजती थीं। अन्तिम ४५ दिनों का सथारा ग्रहण कर आप पूना मे ही स्वर्गवासी हुई। आपकी करीव २२ शिष्याएँ हुईं। उनमे शान्त और सरल मूर्ति श्री पान-कुँवर जी म०, पडिता सुव्याख्यानी श्री चन्दकुँवर जी म०, सेवाभावी श्री राजकुँवर जी म०, श्री सूरज-कुँवर जी म०, श्री आनन्दकुँवर जी म० आदि अच्छी विदुषी सतियाँ हुई।

पडिता श्री चन्द्रकुँवर जी म० की सुशिष्या प० प्रवर्तिनी जी श्री इन्द्रकुँवर जी म० जो कि वर्त-मान मे पूना व अहमदनगर जिले मे विचर के धर्म जागृति कर रही है। सुव्याख्यानी श्री आनन्दकुँवर जी म० मद्रास वैंगलोर प्रान्त मे विचर कर धर्म की प्रभावना कर रही है आपकी सेवा मे ५ शिष्या हुई है। उनमें पडिता श्री सज्जनकुँवर जी म० ने पाथर्डी मे श्री अमोल जैन सिद्धान्तशाला मे शिक्षण लेकर अच्छी योग्यता प्राप्त कर अनेक प्रान्तों मे विचर कर जैन-धर्म का प्रचार कर रही है।

इस प्रकार ऋषि सम्प्रदायी महासतियों ने अनेक देश-देशान्तर मे विचर के और धर्म की सेवा करके गौरव वढाया है।

स्था० जैन के । ।

श्री अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रन्स के अध्यक्ष
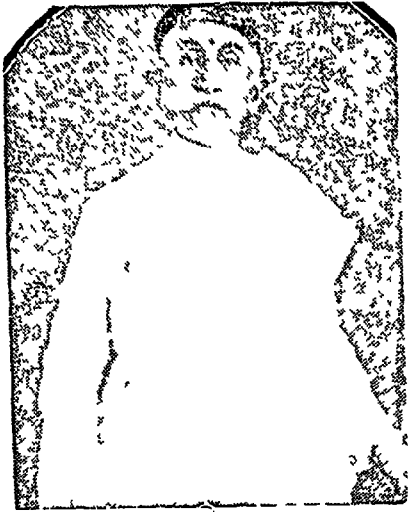
श्री मेघजी भाई थोभण, वम्बई

श्री केवलचन्द त्रिभुवनदास,
अहमदावाद
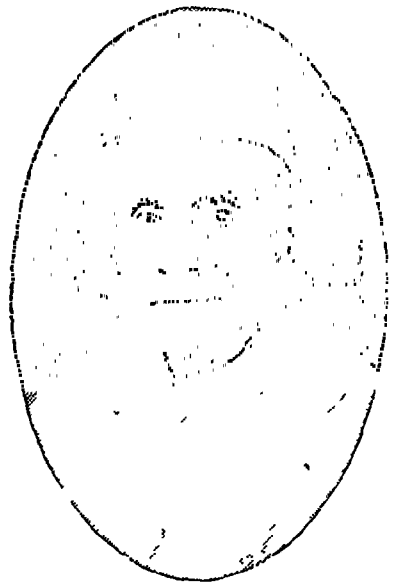
श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया, अहमद नगर
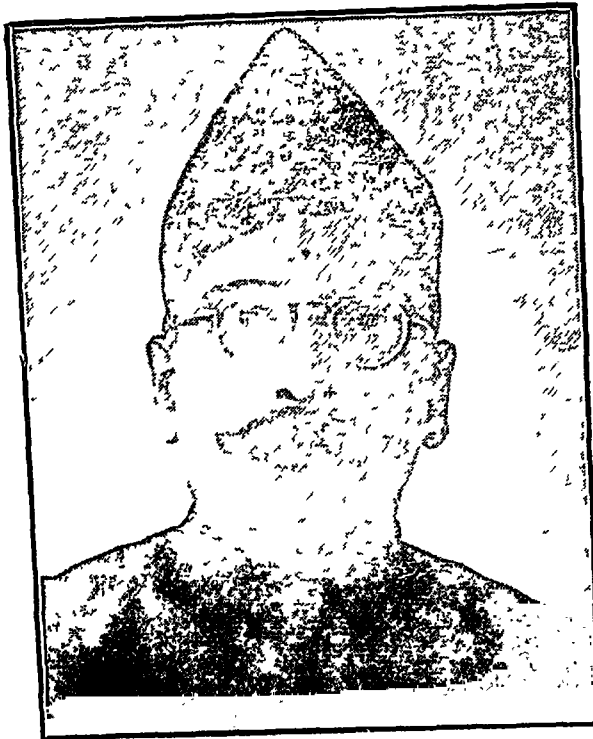
श्री वीरचन्दभाई मेघजी भाई थोभण, वम्बई
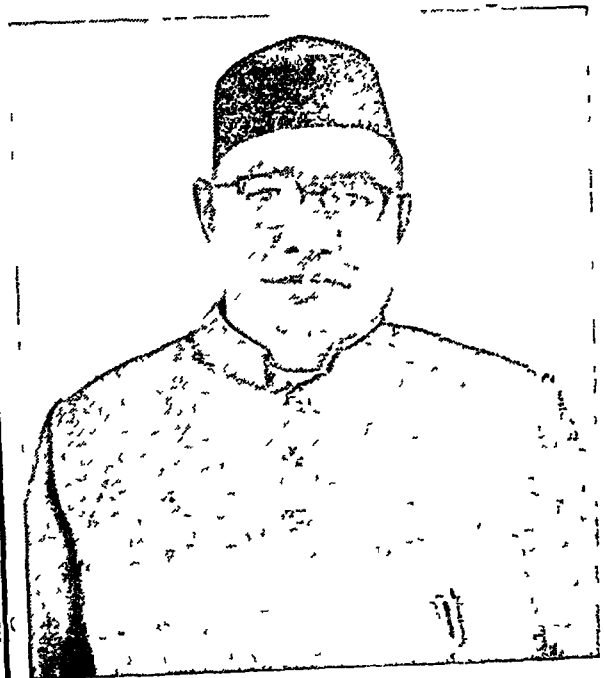
श्री विनयचन्द भाई जौहरी, जयपुर

श्री अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रन्स के स्वागताध्यक्ष
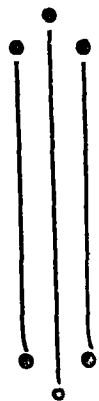
श्री अम्बावीदासभाई डोसानी मोरवी

लाल ज्वालाप्रसादजी जौहरी

लाला राजवहादुर सुखदेवसाय जी जौहरी

सेठ अमरचन्द जी पितलिया

श्री अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेन्स के स्वागताध्यक्ष

सेठ धनजी भाई देवशी भाई

श्री दानमल जी बलदौटा सादडी, मारवाड
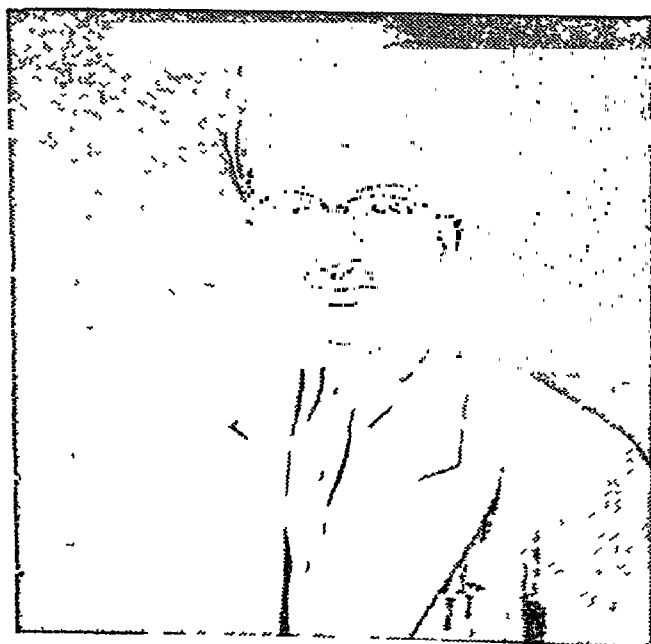
जयचदलाल जी रामपुरिया, बीकानेर

श्री मोहनमल जी चोरडिया, मद्रास

परिच्छेद—७

स्था० जैन समाज के उन्नायक श्रावक

कॉन्फरन्स छठवें अधिवेशन के अध्यक्ष

मलकापुर अधिवेशन के प्रमुख

श्री मेघजी भाई थोभण, जे० पी०

आपका जन्म स० १६१६ भाद्रपद कृष्णा १३ को भुज में हुआ। आप जाति से वीसा ओसवाल थे। १५ वर्ष की उम्र में ही आप व्यापारार्थ बम्बई आये और स० १६३५ में आपने वहाँ मैसर्स मिल कम्पनी के साथ भागीदार बन कर रुई की दलाली का काम आरम्भ किया। यह कम्पनी यूरोपियन कम्पनी थी। आपकी कार्यकुशलता से यूरोपियन लोग बडे प्रसन्न हुए। स० १६३५ से १६८१ तक आपका यह व्यवसाय खूब जोर-शोर से चलता रहा। लाखो रुपए आपने कमाये।

बचपन से ही आपका धर्म-प्रेम अनुपम था। साम्प्रदायिक ममत्व आपको पसन्द न था। बम्बई में जबसे स्था० साधुओ का पदार्पण होने लगा तब से ही आप धार्मिक कार्यों में विशेष रस लेने लगे। आप लगभग १५ वर्ष तक श्रीदाम जी लक्ष्मीचन्द जैन धर्म स्थानक, चीचपोकली के प्रमुख रहे। बम्बई शहर में स्थानक का अभाव आपको खटका करता था। उसकी कमी को दूर करने के लिए आपने स्वय १० हजार रु० दिये और यो ढाई लाख रुपयो का चन्दा कर एक बगला चाँदावाडी में खरीदा।

आपकी दानप्रियता प्रशसनीय थी। पूज्य श्री जवाहरलाल जी म० का चातुर्मास जब घाटकोपर में हुआ तो वहाँ सार्वजनिक जीवदया फड स्थापित किया गया था, उसमें आपने २१०० रु० प्रदान किये थे।

मैसूर स्टेट में प्रतिवर्ष शारदा देवी के यहाँ करीब ७ हजार जानवरो की बलि हुआ करती थी, जिसको आपने सदैव के लिए बन्द कराया। इस उपलक्ष्य में मैसूर राज्य ने आपके नाम से एक अस्पताल बनाया जिसमें ७५०० रु० आपने और ७५०० रु० सेठ शान्तिदास आसकरण ने——जो आपके मामा के बेटे भाई होते हैं, दिये।

माडवी-कच्छ में जब अकाल था तब आपने सस्ते भाव से अनाज दिया। रुपया दिया, वस्त्र दिये। इन सब दान के अलावा आपने विभिन्न कार्यों के लिए दो लाख, पैसठ हजार रुपये का दान दिया। इन सब दान की ऐसी सुव्यवस्था कर रखी है कि उनसे गवर्नमेंट प्रोमेसरी नोट, म्युनिस्पैलिटी लोन आदि ले रखी हैं, जिनके व्याज से सम्बन्धित प्रवृत्तियाँ आज भी चल रही हैं।

आपने अपने नाम से एक स्वजाति जैन सहायक फड स्थापित किया है जिसमें १,४३,५०० रु० दिये। इसका प्रतिवर्ष ६३०० रु० व्याज आता है।

२६००० रु० में श्री मेघजी थोभण जैन सस्कृत पाठशाला, कच्छपाडा में स्थापित की, जिसमें मुनिराजो को व वैरागियो को शिक्षा दी जाती है। इसके साथ एक लायब्रेरी भी है।

१५००० जीवदया में, १८००० गायो को घास डालने के लिए, १४००० कुत्तो को रोटी डालने के लिए, १४००० पक्षियो को चुगा डालने के लिए, ३५०० कीडियो को आटा डालने के लिए, २२०० सदाव्रत देने के लिए, इस तरह २,६५,००० रु० प्रदान किये। जिसका व्याज ११११२५ रु० आता है जो प्रतिवर्ष व्यय कर दिया जाता है।

कान्फरन्स के छठवें अधिवेशन मलकापुर के आपअध्यक्ष चुने गए। यहाँ से काफ्रन्स में जागृति आ गई। ऑफिस बम्बई में लाया गया। श्री सूरजमल लल्लूभाई जौहरी तथा सेठ वेलजीभाई लखमसी को मन्त्री बनाया।

आपने बम्बई के भव्य सघ की अध्यक्षता को आजीवन बडी कुशलता के साथ सँभाला था। आपका स्वर्गवास बम्बई में हुआ। आपके सुपुत्र श्री वीरचन्द भाई ने भी सघ का और कनफरन्स का कार्यभार निभाया।

कान्फ्रन्स के सातवें अधिवेशन के प्रमुख

दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया, बीकानेर

श्री सेठियाजी का जन्म सवत् १९२३ आश्विन शुक्ला अष्टमी को बीकानेर स्टेट के कस्तुरिया' नामक गाँव में हुआ था। आपके पिताजी का नाम धर्मचन्द्रजी था। आप चार भाई थे जिनमें से दो बडे—श्री प्रतापमलजी और अगरचन्दजी तथा एक श्री हजारीमलजी आपसे छोटे थे। अभी इनमें से आप ही मौजूद हैं।

श्री सेठिया जी ने शिक्षा सामान्य ही प्राप्त की। लेकिन आपने अनुभव से ज्ञान बहुत प्राप्त किया। आपको हिन्दी, अगरेजी, गुजराती और मारवाडी भाषाओ का अच्छा ज्ञान है। व्यवसाय का क्षेत्र प्रारम्भ में बम्बई और फिर स्वतत्र रूप से कलकत्ता रहा। जहाँ आपने अपना रग का कारोबार किया जिसमें आपने काफी प्रतिष्ठा तथा लक्ष्मी का भी उपार्जन किया। इससे पूर्व आप बम्बई में ५०० रु० सालाना पर काम करते थे, जहाँ आपने ६ वर्ष तक कार्य किया।

कलकत्ता में आपने 'दी सेठिया कलर एड केमीकल वर्क्स लिमिटेड' की स्थपना की एव उसको बडी योग्यता से चलाया। इस कारखाने में आपके बडे भाई श्री अगरचन्दजी भी बाद में भागीदार बन गये थे। इस कारखाने की आपने भारत के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध नगरो—कानपुर, दिल्ली, अमृतसर, अहमदाबाद, बम्बई, मद्रास, कराची आदि स्थानों में शाखाएँ खोलीं। जापान के प्रसिद्ध नगर ओसाका में भी आपकी शाखा थी।

स० १९७२ में आप भयकर बीमारी से ग्रस्त हो गये। कई उपचार किये, पर आराम न हुआ। अन्त में हौमियोपैथिक दवा से आपको आराम हुआ। तब से आपने अपना कारोबार समेटना शुरू किया और धार्मिक जीवन में अपना अधिक समय व्यतीत करने लगे। तभी से होमियोपैथिक दवाइयो के प्रति आपकी श्रद्धा जमी और उन्हीं दवाइयो का उपयोग करने कराने लगे। आज भी आप सैकडो व्यक्तियो को मुफ्त में यह दवा देते हैं।

स० १९७० में आपने सर्वप्रथम बीकानेर में एक स्कूल खोला। यहीं से आपका धार्मिक-जीवन आरम्भ होता है। स० १९७८ में आपके बडे भाई अगरचन्दजी बीमार हुए। उन्होने आपको कलकत्ता से बुलाया और स्कूल के कार्य में वे भी सहयोगी बने। कन्या पाठशाला और लायब्रेरी को वृहदाकार देने का भी तय किया। स० १९७८ चैत्र कृष्ण ११ को श्री अगरचन्दजी का स्वर्गवास हो गया। चार मास बाद आपके पुत्र उदयचन्द जो कलकत्ता में बीमार थे उनका भी स्वर्गवास होगया। अगरचन्दजी के कोई सन्तान न होने से आपने अपने बडे लडके श्री जेठमलजी को गोद दे दिया। श्री जेठमलजी बडे विनीत और मिलनसार प्रकृति के सज्जन है। सेठिया जैन पारमार्थिक सस्थाओ का कार्य अभी आप ही सँभाल रहे है। श्री सेठिया जी के चार लडके हैं—पानमलजी, लहरचन्दजी, जुगराजजी और ज्ञानमलजी। स० १९७८ में आपने चारो पुत्रो को सम्पत्ति का विभाजन कर अलग-अलग व्यवसाय में लगा दिया। सेठिया जैन पारमार्थिक सस्थाओ के लिये जो ध्रौव्य सम्पत्ति आपने तथा आपके बडे भाई श्री अगरचन्दजी ने व श्री जेठमलजी ने निकाली है, वह ४०५००० चार लाख पाच हजार रु० है। लायब्रेरी में जो पुस्तकें व शास्त्र आदि है वे इस सम्पत्ति से अतिरिक्त हैं।

श्री सेठियाजी का जीवन कर्मनिष्ठ जीवन रहा है वे आज भी ९० वर्ष की उम्र में नियमित कार्य करते है

श्रौर शास्त्र श्रवण करते रहते हैं। श्राप म्युनिसिपल कमिश्नर, म्युनिसिपेलिटी के वाइस प्रेसिडेन्ट, श्रानरेरी मजिस्ट्रेट श्रादि कोई सरकारी पदो पर कार्य करते रहते हैं। श्राप स्था०-जैन कोन्फ्रेन्स के ७ वें श्रधिवेशन के जो कि बम्बई में हुश्रा था, सभापति निर्वाचित हुए थे। बीकानेर में वुलन प्रेस भी श्रापने सचालित किया। इससे बीकानेर राज्य में ऊन या व्यवसाय की बहुत उन्नति हुई।

श्री सेठिया जी का मृदुल, मजुल स्वभाव, उनकी शात गम्भीर मुद्रा, उनका उदार व्यवहार श्राकर्षण की ऐसी वस्तुएँ हैं जो सामने वाले को प्रभावित कर लेती हैं। श्राप श्रभी निवृत्ति-जीवन व्यतीत कर रहे हैं श्रौर श्रपना समय शास्त्र-स्वाध्याय में ही लगा रहे हैं। स्था० जैन समाज पर सेठिया जी के श्रनेकविध उपकार हैं, उन सबका वर्णन यहाँ नहीं किया जा सकता। बीकानेर सघ के धर्मध्यान श्रौर सन्त सतियो के ठहरने के लिये श्रापने श्रपनी एक विशाल कोटडी भी दी हुई है जिसकी व्यवस्था व खर्च पारमार्थ ट्रस्ट द्वारा ही होता है। जिसकी रजिस्ट्री भी कराई हुई है।

पारमार्थिक सस्थाश्रो श्रौर स्थानक का परिचय सस्थाश्रो के परिचय में दिया गया है, जिससे पाठकगण विशेष रूप से जान सकेंगे।

कॉन्फरन्स के श्राठवें श्रधिवेशन के प्रमुख

श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह (श्रहमदावाद)

श्री वाडीलालभाई का जन्म स० श्रहमदावाद में हुश्रा था। श्रापके पिता श्री मोतीलाल भाई को साहित्य का बहुत शौक था। वे 'जैन-समाचार' नामक एक मासिक पत्र भी निकालते थे। श्री वाडीलाल भाई ने इस पत्र द्वारा बीस वर्ष की वय में ही श्रपने विचार जनता के सामने रखना श्रारम्भ कर दिया था। प्रारम्भ में उन्होने जैन-कथाश्रो को श्रपने ढग से लिखना शुरू किया था जो इतनी रसप्रद होती थी कि पाठक उनके पढने के लिये उत्सुक रहा करते थे। उनकी भाषा-शैली हृदयस्पर्शी श्रौर चित्ताकर्षक थी।

श्रापके पिता के श्रवसान के बाद श्रापने उनकी साहित्य प्रवृत्तियाँ सँभाल ली श्रौर उन्हें पूर्ण योग्यता से सचालित करते रहे।

श्रापकी पहली पुस्तक 'मधु मक्षिका' बीस वर्ष की उम्र में लिखी गई थी। इसके बाद 'हितशिक्षा' राजर्षि नमीराज', ससार में सुख कहाँ है' ? 'कबीर के पद', सम्यक्त्व नो दरवाजो', 'श्री दशवैकालिक सूत्र रहस्य' महावीर कहेता हता', 'पर्युपासना', 'मृत्यु के मुख में', 'जैन दीक्षा ,'मस्तविलास','पोलिटिकल गीता' ग्रन्थ प्रकाशित हुए थे जिनमें कई पुस्तको की तो २५ हजार प्रतियाँ तक बिकी थीं। जैन हितेच्छु, नामक मासिक पत्र श्राप लगातार ३० वर्ष तक निकालते रहे थे। यह पत्र प्राय सारा श्राप स्वय लिखते थे। इसमें ऐतिहासिक सामग्री के साथ-साथ जैन तत्त्वज्ञान का प्रधान निरूपण हुश्रा करता था। इस पत्र के श्रन्तिम दस वर्षों में इसके ५ हजार ग्राहक बन गये थे जिनमें हिन्दू, मुसलमान, पारसी श्रादि कौम के भी ग्राहक थे।

श्राप सिद्धहस्त निडर लेखक तथा वक्ता थे। एक लेख पर श्रापको सी० वी० गलियारा का एक हजार का इनाम भी प्राप्त हुश्रा था। श्रापका सारा साहित्य गुजराती भाषा में लिखा हुश्रा है। गुजराती भाषा के वे एक श्रजोट साहित्यकार थे।

'जैन समाचार' पत्र को मासिक के बजाय साप्ताहिक शुरू करके श्रापने समाज में नूतन रक्त-सचार किया। जैन समाचार में प्रकाशित समाचार पर श्राप पर विरोधी-पक्ष की तरफ से केस किया गया था, जिसमें श्रापको दो मास

की सादी कैद भी हुई थी। लेकिन आपने इस केस के लिये कोई वकील या बैरिस्टर नहीं किया था। जब आपको वकील करने के लिये कहा गया तो आपने उत्तर दिया कि किसी की सहायता से जीतना तो हारने से भी खराब है। जो मदद देना चाहें वे असहायो को और गायो को दें।

इन्होने अपने पत्रो के लिए कभी किसी से मदद न ली। अपने व्यय से ही आप अपनी सब प्रवृत्तियां चलाते रहे।

आप कोन्फ्रेन्स के बीकानेर अधिवेशन के प्रमुख निर्वाचित हुए थे और कोन्फ्रेन्स के इतिहास में भी क्राति की शुरुआत की थी। स्था० जैन समाज में जैन ट्रेनिंग कालेज की स्थापना में आपका भी महत्वपूर्ण भाग रहा था। साम्प्रदायिक भेद-भाव दूर करने के लिये भी आपने सक्रिय प्रयत्न किये। तीनो सम्प्रदायो के छात्र एक ही बोर्डिंग में रह कर उच्चाभ्यास कर सकें इसके लिये उन्होनें बम्बई और अहमदाबाद में एक सयुक्त जैन छात्रालय की स्थापना की थी। बम्बई का सयुक्त विद्यार्थीगृह आज भी प्रिन्सेसस्ट्रीट पीरभाई बिल्डिंग में और शीव में निजी भवन में चल रहा है। श्री वाडीभाई को समाज से काफी लोहा लेना पडा था। सामाजिक व धार्मिक रीति-रिवाजो पर भी उन्होने कलम चलाई थी जिससे समाज के हर क्षेत्र में तूफान-सा खडा हो गया था। इतना विलक्षण और तत्वज्ञ होते हुए भी समाज ने उन्हें कुछ समय ठीक रूप से नही पहचाना। उन्हे जो सम्मान मिलना चाहिये था, वह उन्हे न मिल सका। वे आजीवन अपने विचारो पर दृढ बने रहे और अपना मिशन पूरा करते रहे। ता० २१-११-३१ को आपका स्वर्गवास हो गया। आपका सम्पूर्ण साहित्य समाज के सामने प्रकाशित रूप में आ सका होता तो उससे समाज को बहुत लाभ पहुँचता।

कॉन्फरन्स के नवम अधिवेशन अजमेर के प्रमुख

श्री हेमचन्दभाई रामजीभाई मेहता (भावनगर)

दुनिया में प्राय यह देखा जाता है कि जो व्यक्ति आगे जाकर बडा आदमी बनता है, प्रतिभाशाली व्यक्ति होता है, वह बचपन में अपने-आप ही अपनी प्रगति करता है। प्रतिकूल परिस्थिति में भी उसे अपने अनुकूल वातावरण बनाने में रस आता है। इतना वह धैर्यशाली और विश्वासी होता है।

अपनी समाज में जो व्यक्ति अपने आत्म-बल से आगे बढे हैं उनमें से एक हेमचन्द भाई भी है। श्री हेमचन्द भाई का जन्म काठियावाड में मोरबी में हुआ। आपके पिता श्री रामजी भाई मध्यस्थ स्थिति के गृहस्थ थे। आर्थिक स्थिति साधारण होने पर भी उन्होने अपने पुत्र को उच्च शिक्षा प्रदान कराई। उस समय और आज भी कई लोग यह कहते हैं कि अग्रेजी पढे-लिखे व्यक्ति धर्म-कर्म में विश्वास नहीं रखते हैं। उनकी यह बात श्री हेमचन्द भाई के जीवन से असत्य सिद्ध होती है। आप काठियावाड के ख्यातिप्राप्त इन्जीनियरो में से एक हैं।

आप श्री दुर्लभजी भाई त्रिभुवन जौहरी के बाल-साथी हैं। दोनो ने स्था० समाज में अपनी सेवा देकर अपना नाम सदा के लिए अमर कर दिया।

आप भावनगर स्टेट की रेल्वे के इन्जीनियर और मॅनेजर रह चुके हैं। आपकी कार्य-कुशलता की प्रशसा सर पटणी, वायसराय, कच्छ के राव, भोपाल के नवाब और मोरवी के ठाकुर साहब ने भी की है। आप जब इजीनियर के पद पर थे तब आप लोकप्रिय और राजमान्य व्यक्तियो में से थे।

प्रारम्भ में आपने १५० रु० मासिक पर ग्वालियर में सर्विस की थी, पर धीरे-धीरे उन्नति करते हुए आप भावनगर स्टेट के प्रमुख इन्जीनियर पद पर आरूढ हुए और १५०० रु० मासिक वेतन पाने लगे।

अजमेर साधु सम्मेलन के अवसर पर हुए कान्फ्रेंस के ऐतिहासिक अधिवेशन के आप अध्यक्ष मनोनीत हुए।

कान्फ्रेंस के प्रमुखपद पर रहकर आपने कई सामाजिक व धार्मिक प्रश्नो का दीर्घदृष्टिपूर्ण समाधान किया। जगह-जगह भ्रमण भी किया और अपनी सेवाएँ समाज को समर्पित कीं। कान्फ्रेंस के इतिहास में आपका नाम श्रमशील प्रमुखो में रहेगा, जिन्होने समाज के लिए काफी श्रम उठाया। अभी आप सर्विस से मुक्त है और वम्बई में अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं।

१०वें अधिवेशन घाटकोपर के प्रमुख

श्री वीरचन्दभाई मेघजीभाई थोभण

श्री वीरचन्द भाई का जन्म कच्छ में हुआ था। आप सुप्रसिद्ध दानवीर सेठ मेघजी भाई के सुपुत्र थे। आपका प्रारम्भिक शिक्षण भी कच्छ में ही हुआ। वम्बई आकर आप छोटी उम्र में ही व्यापार-क्षेत्र में कूद पडे और अपने पिताश्री का सारा धन्धा सँभालने लगे। आपने अपनी कुशलता से व्यापार में अच्छा नाम कमाया।

आप गुप्त दान देना अधिक पसन्द करते थे। कई छात्रो को आप छात्रवृत्ति दिया करते थे। आपके पास से कोई भी निराश होकर नही जाता था। आपने वम्बई सघ को एक मुश्त ५१ हजार रुपये का दान दिया जिससे वम्बई सघ ने अपने कादावाडी स्थानक का नाम सेठ मेघजी थोभण जैन धर्म स्थानक, रखकर आपका सम्मान किया।

माडवी पाजरापोल को आपने २५ हजार का उदार दान दिया।

आपकी धर्मपत्नी श्री लक्ष्मीवेन और सुपुत्र श्री मणिभाई भी सामाजिक प्रवृत्तियो में अच्छा रस लेते हैं।

आप कान्फ्रेंस के घाटकोपर अधिवेशन के प्रमुख हुए और वडी कुशलता से अधिवेशन को सफल वनाया। १ वर्ष के वाद आपने प्रमुखपद छोड दिया जिससे ऑफिस-प्रमुख के रूप में श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरौदिया को चुनना पडा। आपके वडे पुत्र श्री मणिलाल भाई हैं जो आपका कारोवार और सेवा-क्षेत्र को सँभाल रहे हैं जो कान्फ्रेंस के आज भी ट्रस्टी हैं।

कॉन्फरन्स के ११वें अधिवेशन के प्रमुख

श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया, अहमदनगर

श्री फिरोदिया का जन्म अहमदनगर में हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री शोभाचन्दजी था। आप सन् १९०७ में पूना की फर्ग्युसन कालिज से ग्रेजुएट हुए थे। कालेज के दिनो से ही आप लोकमान्य तिलक के अनुयायी थे और कट्टर राष्ट्रवादी थे। आगे चलकर आपने एल-एल० बी० परीक्षा पास की और वहीं अपने शहर में वकालत आरम्भ कर दी। अपने इस धन्धे में भी उन्होने प्रामाणिकता से काम किया और काफी यश तथा धन कमाया। आप कांग्रेस के मूक सेवक हैं। अहमदनगर जिले में आपका सम्मान प्रथम पक्ति के राष्ट्र-सेवक के रूप में है। सन् १९३६ में आप अपने प्रान्त की तरफ से एम० एल० ए० वनाये गए थे। इतना ही नहीं आप वम्बई धारा-सभा के स्पीकर भी निर्वाचित किये गए। इस पद पर आपने कई वर्षो तक जिस योग्यता से कार्य किया उसकी प्रशसा हरएक पार्टी के नेताओ ने की है। स्पीकर का कार्य वहुत टेढा होता है, लेकिन आपने उसे वडी योग्यता से सँभाला। अहमदनगर की सुप्रसिद्ध आयुर्वेद रसशाला, लि० के आप प्रमुख हैं। अहमदनगर की म्युनिस्पॅलिटी के वर्षो तक आप प्रमुख रहे हैं। कान्फ्रेंस के आप वर्षो तक प्रमुख रहे हैं। मद्रास के ग्यारहवें अधिवेशन के प्रमुख भी आप ही निर्वाचित किये गए थे। यह अधिवेशन कान्फ्रेंस का अद्भुत अधिवेशन था जिसमें कई एक जटिल प्रश्नो उपस्थित हुए थे, जिनका निराकरण

करना आप जैसे सुयोग्य प्रमुख का ही काम था। यही कारण था कि यह अधिवेशन पिछले सभी अधिवेशनो से महत्व पूर्ण रहा।

आपने अपनी ६३ वर्ष की जन्म-गाँठ पर ६३ हजार रु० का दान देकर एक ट्रस्ट कायम किया है।

आपके प्रमुख पद पर रहते हुए कान्फ्रेंस ने भी कई उल्लेखनीय कार्य किये। सघ-एक्य योजना की शुरूआत और उसे सफलता के साथ आपने ही पूरी की।

कॉन्फरन्स के १२वें अधिवेशन के प्रमुख

सेठ चम्पालालजी वाठिया, भीनासर

सेठ श्री चम्पालाल जी वाठिया के नाम से समाज परिचित है। आप भीनासर (बीकानेर) के निवासी हैं आपके पिताजी का नाम श्री हमीरमल जी वाठिया था। प्रकृति से विनोदशील, सुस्पष्टवक्ता, मिलनसार, निरभिमानी और उदार हैं। आपका उत्साह भी अपूर्व है। जिस किसी कार्य में जुटते हैं अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ जुट पड़ते हैं। समाज-सेवा का उत्साह भी प्रशसनीय है। रूढियो की गुलामी आपने कभी पसन्द नहीं की और जब भी अवसर आया सदैव उन्हें ठुकराया।

शिक्षा के प्रति आपका गाढ अनुराग है। आप जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला, जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ और जैन गुरुकुल, व्यावर के वार्षिक उत्सवो की अध्यक्षता कर चुके हैं। भीनासर में स्थापित श्री जवाहर विद्यापीठ के मन्त्री तथा सचालक आप ही हैं। भीनासर में आपने अपने पिताजी के नाम पर श्री हमीरमल बालिका विद्यालय की स्थापना की जिसे आप अपने व्यय से चला रहे हैं। इसके सिवाय समाज की अन्य सस्थाओ को भी आपकी तरफ से समय-समय पर सहयोग मिलता रहता है।

व्यापारिक दृष्टिकोण भी आपका उल्लेखनीय है। जिस व्यापार से देश की कमी दूर कर उसको लाभ पहुँचाया जा सके वही व्यापार आप करना ठीक समझते हैं। कलकत्ता, दिल्ली, बम्बई और बीकानेर में आपके बडे-बडे फार्म चल रहे हैं।

श्री वाठिया जी का साहित्य-प्रेम भी प्रशसनीय है। विद्वानो का आदर-सम्मान भी आप बहुत करते हैं आपने स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० के व्याख्यान 'जवाहर किरणावली' के रूप में कई भाग में प्रकाशित किये हैं स्था० जैन समाज में यह साहित्य अनूठा है।

आप बीकानेर की लेजिस्लेटिव असेम्बली के एम० एल० ए० भी रह चुके हैं। एसेम्बली के मेम्बर रहते हुए आपने वाल दीक्षा प्रतिवन्ध विल उपस्थित किया था, जिसके कारण रुढिवादियो में खलबली मच गई थी।

उदारता आपको अपने पिताजी से विरासत में मिली थी। आपके पिताजी ने लाखो रु० का गुप्त और प्रकट दान दिया था। आपने भी अपने जीवन में अनेक वार वडी-वडी रकमें दान की है और करते रहते हैं। एक प्रसग पर आपने एक मुश्त ७५ हजार रु० का दान दिया।

आप कान्फ्रेंस के बारहवें अधिवेशन के जो कि सादडी (मारवाड) में हुआ था, प्रमुख निर्वाचित किये गए थे तब से आप कान्फ्रेंस के प्रमुखपद पर कार्य कर रहे हैं। आपकी धर्मपत्नी श्री तारावेन भी स्त्री-सुधार की प्रवृत्तियों में वडे उत्साह से भाग लेती रहती हैं।

१३वे अधिवेशन, भीनासर के अध्यक्ष

श्री विनयचन्द्रभाई दुर्लभजी भाई जौहरी, जयपुर

धर्मवीर स्व० दुर्लभजी भाई के पाँच पुत्रो में से—श्री विनयचन्द्र भाई, श्री गिरधरलाल भाई, श्री ईश्वरलाल भाई, श्री शान्तिलालभाई और श्री खेलशकर भाई—आप सबसे बडे पुत्र है। आपका जन्म सन् १६०० में हुआ। मैट्रिक तक शिक्षा ग्रहण कर आपने व्यावसायिक कार्य सँभाल लिया। आप प्रतिदिन १२ घण्टे तक काम करने वाले और बारीकी से जाँच करने वाले है। आप अब तक १०-१२ बार व्यापारिक कार्यो को लेकर अमेरिका और योरुप घूमकर आये है। आपने अपने हाथो से लाखो रुपये कमाये तथा खर्च किये है और समय-समय पर हजारो का दान किया है। आज इस समय भी आपकी कार्यशक्ति और प्रतिभा अद्भुत है।

स्व० धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई ने व्यवसाय तथा इतर समस्त कार्यो का दायित्व आपको देकर स्थानकवासी जैन समाज को अपना जीवन सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। सन् १६४२ से श्री विनयचन्द्रभाई तथा श्री खेलशकर भाई ने 'आर० वी० दुर्लभजी' के नाम से जवाहरात का व्यापार विकसित किया। अपनी व्यवस्था, कार्य-कुशलता, सच्चाई, प्रामाणिकता और कार्य-शक्ति से आज जयपुर मे अपना सर्वप्रथम स्थान बना लिया है।

अपने पिताश्री के स्वर्गवास के पश्चात् सार्वजनिक जीवन का भार भी आपको वहन करना पडा। श्री जैन गुरुकुल शिक्षण सघ, व्यावर के प्रमुख और ट्रस्टी बने, कान्फ्रेंस की प्राय प्रत्येक जनरल कमेटी और अधिवेशनो में आप उपस्थित रहे और प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में काम किया। जयपुर के श्री सुबोध जैन हाईस्कूल को आपने कालिज बनवाया। जयपुर के रोटरी क्लब और चेम्बर ऑफ कामर्स के आप अध्यक्ष है।

इसके साथ ही जयपुर की गुजराती समाज के प्रमुख बनने के पश्चात् गुजराती स्कूल के लिए ५,००० गज जमीन की व्यवस्था कराई तथा भारत के गृहमन्त्र सरदार वल्लभभाई पटेल के हाथो से शिलान्यास कराकर उसके लिए मकान बनवा दिया तथा हजारो का फड भी एकत्रित कर दिया।

आप व्यापारिक जगत् में प्रतिष्ठित व्यापारी और सामाजिक क्षेत्र में प्रमुखतम कार्यकर्ता है। राजकीय क्षेत्र में आपकी सर्वत्र पहुँच है। धर्म के प्रेमी, उदार दानी और सन्त-मुनियो के भक्त श्री विनयचन्द्रभाई सत्यत स्थानकवासी समाज के गौरव है। आपकी सादगी, सरलता, परोपकारी उदारवृत्ति और गुप्त सहायता आपके अप्रतिम गुण है। आपके एक पुत्र तथा दो कन्यायें है।

श्री अखिल भारतीय श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस के भवन की प्रगतिशील योजना का मगल-मुहूर्त श्री विनयचन्द्र भाई और श्री खेलाशकरभाई ने ५१,०००) भर कर किया। यह है आपका उदार दिल और समाज की प्रगति के लिए ज्वलत दृष्टात।

समाज के बालको को आप ऊँची शिक्षा में जाते हुए देखना चाहते है। यही कारण है कि समाज के कॉलेज का शिक्षण लेने वाले छात्रो को कान्फ्रेंस के मार्फत आप अपनी तरफ से प्रतिवर्ष ३,०००) की छात्रवृत्तियाँ देते है। श्री नरेन्द्र बालमदिर की जयपुर में स्थापना कर बच्चो के लिए शिक्षण की व्यवस्था की है।

लक्ष्मी-सम्पन्न होकर भी आप विचार-सम्पन्न है और यही कारण है कि आप द्वारा अर्जित लक्ष्मी का समाजहित में अधिकाधिक उपयोग हो रहा है। शासनदेव आपके जीवन को और आप के परिवार को और अधिक सुसमृद्ध बनावे ताकि आपकी समृद्धि से समाज एव देश और और अधिक समृद्ध और लाभान्वित हो।

कॉन्फरन्स अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष

कॉन्फरन्स के दूसरे अधिवेशन, रतलाम के स्वागताध्यक्ष

श्री अमरचन्दजी सा० पितलिया, रतलाम

आपका जन्म स० १६०० में हुआ। आपके पिताजी का नाम सेठ वरदीचन्दजी था जो 'ताल वाले' के नाम से प्रसिद्ध थे। तत्कालीन प्रचलित शिक्षा प्राप्त करके आपने व्यवसाय का कार्य सँभाल लिया। विचक्षणतापूर्वक व्यवसाय करते हुए आपने सम्पत्ति के साथ-साथ प्रतिष्ठा भी अर्जित की। जाति-समाज में तथा सुदूर तक आपका वडा सम्मान था। रतलाम-नरेश ने प्रसन्न होकर आपको सेठ की पदवी दी एव दरबार में बैठक प्रदान की थी। इसके अतिरिक्त दरवार की तरफ से हाथी-घोडे तथा पालकी प्रदान कर आपके प्रति राज्य की तरफ से सम्मान प्रकट किया। ऐसा सम्मान रियासतो में बहुत कम व्यक्तियो को मिलता है। आपका धार्मिक ज्ञान बहुत विशाल था। बाहर गाँव से धार्मिक-सैद्धान्तिक प्रश्न आपके पास आया करते थे। इनके उत्तर प्रश्नकर्ताओ को इस खूबी से मिलते कि वे सतुष्ट ही नहीं किन्तु आपकी इस अलौकिक प्रतिभा से आश्चर्य-चकित हो जाते थे। आपकी उत्पादिका बुद्धि बडी ही तीव्र थी। सुप्रसिद्ध आचार्यो की सेवा करने एव उनसे ज्ञान-चर्चा करने में आपको बडा ही आनन्द मिलता था।

आपने रतलाम में धार्मिक पाठशाला एव दयापौषध सभा की स्थापना की—जो अब तक चल रही है। आप जब मोरवी कान्फ्रेंस में पधारे तब राजकोट के प्रसिद्ध राय बहादुर सा० आपके अनुभवो को देखकर दग रह गये और आपको 'गुरुजी' के रूप में सम्बोधित करने लगे। आपकी मालवा-मेवाड के सुप्रसिद्ध श्रावको में गणना होती थी। जीवन के पिछले भाग में मकान-दुकान का काम अपने पुत्र के हाथो में देकर अपना अमूल्य समय धर्मध्यान तथा ज्ञान-चर्चा में लगाते और अपने कुटम्बियो को हित-शिक्षा देते थे। स० १६७१ में आपका स्वर्गवास हुआ, किन्तु आज भी आपकी कीर्ति लोगो के हृदयो पर अकित है।

श्री वरदभाणजी सा० पितलिया, रतलाम

आपका जन्म स० १६३७ में हुआ। आप श्रीमान् सेठ अमरचन्दजी सा० के सुपुत्र थे। आप बडे ही कार्य कुशल सेवाभावी एव परिश्रमी थे। आपने कई सस्थाओ के अध्यक्ष एव मत्री रहकर उनका सुयोग्यतापूर्वक सफल सचालन किया। आप ही के भगीरथ प्रयत्नो के फलस्वरूप कान्फ्रेंस का द्वितीय अधिवेशन रतलाम में हुआ और यशस्वी बना। यो आप मितव्ययी थे किन्तु स० १६६३ एव १६७१ का पूज्य श्री श्रीलालजी म० सा० का चातुर्मास, पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० की युवाचार्य पदवी और स० १६७६ एव १६६२ के चातुर्मास में आपने दिल खोलकर खर्च किया। राज्य में भी आपकी बहुत अधिक प्रतिष्ठा थी। रतलाम नरेश आपको समय समय पर बुलाते और कई बातो में आपसे सलाह लिया करते थे।

यो आपका घराना सदा से ही लब्धप्रतिष्ठ रहा है। आपने अपने समयोचित एव सुयोजित कार्यो से अपनी परम्परा को और अधिक उज्ज्वल बनाया। आपका धार्मिक ज्ञान एव क्रिया की रुचि अत्यन्त प्रशसनीय थी। जैन ट्रेनिंग कालेज के मानद मत्री और जैन हितेच्छु श्रावक मडल के आप अध्यक्ष थे। धार्मिक भावनाओ तथा धार्मिक प्रवृत्तियो के आप चुस्त आराधक थे। ससार के आवश्यक कार्यों को छोडकर समय-समय पर धार्मिक क्रियाएँ आप बराबर करते रहते थे। आपको १०० थोकडे और कई बोलो का ज्ञान कठस्थ था। जैन सिद्धान्तो के चिन्तन, मनन तथा वाचन में आप लगे रहते थे।

पिछली आयु में अनेक प्रकार की आपत्ति-विपत्ति आने पर भी आपने अपनी धीरता की वृत्ति का त्याग नहीं किया। झूठ से आपको घृणा थी। इस प्रकार इस धर्म-परायण, व्यवसाय-कुशल, सुश्रावक एव आराधक का स० १९९९ में स्वर्गवास हुआ।

पाँचवें अधिवेशन, सिकन्द्राबाद के स्वागताध्यक्ष

राजा वहादुर सुखदेव सहायजी, जौहरी हैदरावाद का परिचय

पटियाला राज्य में महेन्द्रगढ नामक एक नगर है। जहाँ सेठ नेतराम जी जैन अग्रवाल नामक सद्गृहस्थ रहते थे। आप स्थानकवासी पूज्य श्री मनोहरदासजी म० की सम्प्रदाय के अग्रगण्य सुश्रावक थे। सवत् १८८८ पौषकृष्णा ९ को आपके एक पुत्ररत्न हुआ, जिसका नाम रामनारायणजी रखा गया। रामनारायणजी योग्य वय में व्यापारार्थ हैदरावाद (दक्षिण) गये और वहाँ अपनी चतुरता से लाखो रुपयो का उपार्जन किया। हैदराबाद के धनीमानी व्यापारियो में आप अग्रगण्य माने जाते थे। आपको निजाम सरकार ने अपना मुख्य जौहरी नियुक्त किया। आपके कोई सन्तान न थी अत आपने सुखदेवसहायजी को दत्तक ग्रहण किया। श्री सुखदेवसहायजी का जन्म सवत् १९२० पौषकृष्णा १५ को हुआ था। आप भी अपने पिता की तरह बडे उदार हृदय वाले थे। निजाम सरकार के यहाँ आपने पिताजी से भी अधिक आदर प्राप्त किया। स० १९७० में निजाम सरकार ने आपको राजा बहादुर की उपाधि से समलकृत किया। आप वडे ही दयालु एव शान्त प्रकृति के सज्जन थे। कितने ही भाइयो की दयनीय दशा को देखकर आपने हजारो रुपयो का ऋण माफ कर दिया था।

इन्हीं दानवीर सेठ सुखदेवसहायजी के घर श्रावण कृष्णा १ सवत् १९५० को एक पुत्ररत्न उत्पन्न हुआ जिसका नाम ज्वालाप्रसादजी रखा। जब आपको लेकर सेठ सुखदेवसहायजी निजाम सरकार के दरबार में गये तो नवाव साहिब ने प्रसन्न होकर जेब-खर्च के लिये १०० रु० मासिक राज्य कोष से देने का फरमान जारी किया था।

स० १९६३ में ऋषि-सम्प्रदाय के तपस्वी मुनि श्री केवल ऋषिजी तथा अमोलक ऋषिजी म० यहाँ (हैदरावाद) पधारे। सेठ सुखदेवसहायजी ने मुनि श्री की सेवा में अच्छी दिलचस्पी ली। आपनें कई पुस्तकें अपनी तरफ से प्रकाशित कराई और अमूल्य वितरण कीं। इस समय हेदराबाद में तीन दीक्षाएँ हुई, जिसका सारा व्यय भी आपने ही उठाया।

सवत् १९७० में आपने ही स्था० जैन कान्फ्रेंस का पाँचवा अधिवेशन सिकन्दरावाद में कराया था, जिसका समस्त खर्च सेठ सुखदेवसहायजी ने दिया। उस समय आपने ७ हजार रुपये जीवदयाफड में प्रदान किये थे। साथ ही धार्मिक साहित्य प्रकाशन के लिये ५००० की लागत का एक प्रेस भी कान्फ्रेंस को दिया था, जो सुखदेवसहाय जैन प्रिंटिंग प्रेस के नाम से अजमेर में और वाद में इन्दौर भी चलता रहा था।

पूज्य अमोलक ऋषिजी म० की प्रेरणा से आपनें शास्त्रोद्धार का भी महान् कार्य किया। लेकिन आप अपने जीवन में इस कार्य को पूर्ण हुआ नहीं देख सके। सवत् १९७४ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके वाद सारा भार ज्वालाप्रसादजी पर आ पडा, जिसे आपने वखूबी निभाया। अपने स्व० पिताजी का प्रारम्भ किया हुआ शास्त्रोद्धार का कार्य चालू रखा और पूज्य अमोलक ऋषिजी द्वारा हिन्दी अनुवाद किये हुए आचाराग आदि ३२ सूत्र 'लाला जैन शास्त्र-भडार' के नाम से स्थान-स्थान पर अमूल्य वितरण किये, फलस्वरूप आज गांव-गांव में शास्त्रभडार है। शास्त्रोद्धार के कार्य में ४२००० रु० व्यय हुए थे।

सेठ ज्वालाप्रसादजी भी अपने पिताश्री की तरह वडे उदार-हृदयी सज्जन थे। कितने ही असहाय गरीब मनुष्यो का आपकी तरफ से पालन-पोषण होता था।

जिनेन्द्र गुरुकुल पचकूला के विशाल भवन की नींव सवत् १६८५ माघ शुक्ला १३ के दिन आपही के कर-कमलों से डाली गई। उस समय आपने गुरुकुल के स्थायी फड में १,१०० रुपये प्रदान किये थे। बाद में ७ हजार रुपयों की लागत से अपने पूज्य पिताजी के स्मृति में 'साहित्य भवन और सामाजिक भवन' का दो मजिला भव्य भवन बनाकर गुरुकुल को भेंट किया था। इसके बाद गुरुकुल को ६०० रु० की जमीन और खरीद कर दी और वहाँ अध्यापको के लिए मकान वनवाने के लिये २,५०० रु० का दान दिया था। गुरुकुल का यह स्थान आपको इतना अधिक पसद आया कि आपने यहाँ ११०० रु० में जमीन खरीदकर अपने लिये एक कोठी बनवाई। आपकी इन आदर्श सेवाओ से प्रसन्न होकर जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला के चतुर्थ वार्षिकोत्सव पर उपस्थित जैन समाज ने आपको 'जैन समाज भूषण' की उपाधि से विभूषित किया था।

स० १६८८ में फाल्गुन कृष्णा ५ को महेन्द्रगढ में पूज्य श्री मनोहरदासजी म० की सम्प्रदाय के शान्तस्वभावी वयो० मुनि श्री मोतीलालजी म० को श्रीसघ की ओर से आचार्य पदवी दी गई थी। इस महोत्सव का सारा खर्च आपने ही उठाया था।

स० १६६६ ज्येष्ठ सुदी १२ को इन्दौर में ऋषि सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध शास्त्रोद्धारक प० मुनि श्री अमोलक ऋषिजी म० को श्री सघ की तरफ से जो पूज्य पदवी दी गई थी उसमें भी आपका उल्लेखनीय भाग रहा। ऋषि श्रावक समिति की स्थापना के समय आप उसके सरक्षक और प्रमुख निर्वाचित हुए। इसी समय जैन गुरुकुल, ब्यावर के निजी भवन के लिये अपील की जाने पर आपने गुरुकुल को २५०१ रु० की सहायता प्रदान की। आप कान्फ्रेंस के नववें अधिवेशन के जो कि अजमेर में साधु सम्मेलन के साथ सम्पन्न हुआ था, स्वागताध्यक्ष निर्वाचित हुए थे।

आप उदारता के पूरे धनी थे। आपकी तरफ से तीन लाख रुपये से अधिक का दान हुआ। आप अगार धन-राशि के स्वामी होते हुए भी अतीव नम्र, विनयी एव शान्त प्रकृति के हैं। आपके दो पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं। बड़े पुत्र का नाम माणिकचन्द और छोटे का नाम महावीरप्रसाद है। आप भी अपने पिता की तरह ही धर्म प्रेमी और उदार स्वभाव वाले हैं।

आपका व्यवसाय हैदरावाद (दक्षिण) में बैंकर्स का और कलकत्ता (लिलुआ में आर० बी० एस० जैन रबर मिल्स के नाम से चल रहा है।) आपका स्वर्गवास दिल्ली में हुआ। आपकी धर्म पत्नी जी बहुत धर्मनिष्ठा और उदार हैं। आपके वडे पुत्र माणिकचन्दजी का स्वर्गवास हो गया है और वर्तमान में राजा महावीर प्रसादजी कलकत्ता में रहकर सब कारोवार सँभाल रहे हैं।

श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स के ६वें अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष

सेठ ज्वालाप्रसादजी जौहरी

आप राजा वहादुर दानवीर सेठ सुखदेवसहाय जी के सुपुत्र थे। आपका जन्म श्रावण कृष्ण १ स० १६५० में हुआ था। आपके पिताजी ने शास्त्रोद्धार का कार्य प्रारम्भ किया था, लेकिन दुर्भाग्य से वे अपने सामने उसे पूरा हुआ न देख सके। उस कार्य को आपने पूरा किया। वत्तीस सूत्रो को पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म० कृत हिन्दी अनुवाद सहित छपाकर आपने स्थान-स्थान पर अमूल्य वितरण किया। इस शास्त्रोद्धार के कार्यो में आपने ४२००० रु० खर्च किये।

आपका हृदय वडा कोमल और उदार था। दीन-असहायो का दुख आप देख नहीं सकते थे। प्रतिवर्ष सर्दी में आप गरीबो को कम्बल बाँटा करते थे। आपकी जन्मभूमि महेन्द्रगढ में आपने दानशाला (सदाव्रत) भी खोल रखी थी।

जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला आपके सहयोग से ही फूला-फला। आपने उसके लिये जमीन दी और मकान भी बनवा दिये। बाद में भी समय-समय पर सहयोग देते रहे। सामाजिक सेवाओ के उपलक्ष में आपको समाज ने 'समाज भूषण' की पदवी प्रदान की थी।

कान्फ्रेंस के अजमेर अधिवेशन के आप स्वागताध्यक्ष थे। आपने अपने जीवन में लगभग ४ लाख रुपयो का दान किया।

आपने आर० बी० एस० रबर मिल्स की भी स्थापना की जिसमें रबर का सामान, टायर आदि बनते है और इस मिल में लगभग ६०० आदमी काम करते है। अन्तिम समय में आपने १० हजार का दान दिया था। सन् ३६ में आपका स्वर्गवास महेन्द्रगढ में ही हुआ।

बीकानेर अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष

श्री मिलापचन्दजी वैद, झाँसी

आपका जन्म स० १८५३ के वैशाख मास में हुआ। आप झाँसी के प्रतिष्ठित सेठ श्रीमान् गुलाबचन्दजी वैद मेहता के इकलौते पुत्र है। लगभग ६० वर्षो से आप झाँसी में रह रहे हैं। इससे पूर्व आपके पूर्वज बीकानेर में रहते थे। बीकानेर राज्य-शासन से आप के वैद परिवार का घनिष्ठ सम्पर्क रहा है। बीकानेर की ओसवाल समाज में वैद परिवार को जो राजसी मान-सन्मान प्राप्त हुआ है। वह दूसरो को नहीं मिला। आपके वशज—लालसिंहजी, अमरोजी, ठाकुरसिंहजी, मूलचन्दजी, अमीचन्दजी, हरिसिंहजी, जसवन्तसिंहजी और छोगमल जी विशेष उल्लेखनीय है, इनमें से कई तो बीकानेर राज्य के दीवान रहे है और बीकानेर राज्य की उन्नति में उनका विशेष हाथ रहा है।

आपके पिता श्री गुलाबचन्दजी वैद बीकानेर से झाँसी में गोद आये थे। तब से आप वहीं बस गये हैं।

आप झाँसी के प्रथम श्रेणी के जमीदारो मे से है। युद्ध के समय में आपने सरकार की बडी मदद की थी। आप झाँसी के म्युनिसिपल कमिश्नर भी रहे। आनरेरी मजिस्ट्रेट के सम्मानित पद पर भी रहे।

स्था० जैन कान्फ्रेंस के आठवें अधिवेशन के जो कि बीकानेर में हुआ था, उसके आप स्वागताध्यक्ष निर्वाचित हुए थे।

घाटकोपर अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष

सेठ धनजीभाई देवसी, घाटकोपर

श्री धनजी भाई का जन्म सन् १८८६ में कच्छ-मुद्रा में हुआ। आप बीसा ओसवाल थे। आपकी शिक्षा बम्बई में हुई थी और वहीं आपने हाईस्कूल तक अभ्यास किया। सन् १९०६ में आप रगून गये और वहाँ चावल का व्यापार किया। उसमें आपने अपनी योग्यता से अच्छी सफलता प्राप्त की।

रगून से आप वापिस बम्बई आये और अनाज, रुई, शेअर, सोना, चाँदी आदि बाजारो में बडे पैमाने पर व्यापार आरम्भ किया। कुछ ही अर्से में आप बम्बई में 'जब्बर शाह सौदागर' के रूप में प्रसिद्ध हो गये। सींगदाणा (मूगफली) बाजार के तो आप 'राजा' कहे जाते थे। व्यापारी-मडल के आप प्रमुख थे। शक्ति सिल्क मिल तथा ऐस्ट्रेला बेटरीज लिमिटेड के आप डायरेक्टर थे। स्था० जैन सघ के आप प्रमुख तथा ट्रस्टी थे।

श्री धनजी भाई सामाजिक व धार्मिक कार्यो में भी बडी उदारता से भाग लेते थे। घाटकोपर राष्ट्रीयशाला को उन्होंने ५१,००० रुपये प्रदान किये थे। स्थानक जैन पौषधशाला के लिए १५ हजार की कीमत की जमीन,

श्रावकाश्रम के लिए १६ हजार रु० नकद तथा ४ हजार रु० की जमीन दान में दी थी। कान्फ्रेंस के घाटकोपर अधिवेशन के आप स्वागत-प्रमुख थे। पूना बोर्डिंग फंड में आपने ५ हजार रु० प्रदान किये थे। कई छात्रो को आप छात्रवृत्तियाँ भी देते रहते थे।

आप स्वभाव से बडे शान्त और मिलनसार थे। रहन-सहन सादा था। तारीख १७-२-४४ को ५८ वर्ष की उम्र में आप अपने पीछे एक धर्मपत्नी ६ पुत्र व दो लडकियाँ छोडकर स्वर्गवासी हुए।

कॉन्फरन्स अधिवेशन, मद्रास के स्वागताध्यक्ष

सेठ मोहनमलजी चौरडिया, मद्रास

श्रीमान् सेठ मोहनमलजी चौरडिया का जन्म नोखा (मारवाड) में स० १९५९ भाद्रपद वदी ८ को हुआ था। आपके पिताजी का नाम श्री सिरेमल जी चौरडिया था। आप श्री सोहनमलजी चौरडिया, मद्रास, के गोद गये श्री अगरचन्द मानमल मद्रास की प्रसिद्ध फर्म है जिसके आप मालिक हैं। आपके दादा श्री अगरचन्द जी सवत् १८४७ में पैदल चलकर मारवाड से मद्रास आये थे। आपसे पूव तीन पीढी में इस फर्म का मालिक दत्तक पुत्र ही हुआ। आपके आने पर इस फर्म की उन्नति भी हुई और प्रतिष्ठा में भी वृद्धि हुई। आपके ५ पुत्र और २ पुत्रियाँ अभी वर्तमान हैं। आपका स्वभाव बडा सरल है। मृदुता, सज्जनता और मिलनसारिता आपके मुख्य गुण हैं। एक सम्पन्न परिवार में रहते हुए भी आप बडे सीधे-सादे और सरल व्यक्तित्व वाले हैं। आपने अपने हाथो से लाखो रुपये कमाये और लाखो का दान दिया है। सन् १९४० में जब मारवाड में दुष्काल था, तब आपने अपनी तरफ से २० हजार रुपये खर्च कर लोगों को बिना मौत मरने से बचाया था और उन्हें खाने को अनाज दिया था। आपकी इस दानवृत्ति से खुश होकर उस समय महाराजा जोधपुर ने आपको पालकी और सरपाव भेंट स्वरूप प्रदान किये थे। आपकी तरफ से विक्रम स० १९४८ से कुचेरा में दानशाला चल रही है। सामाजिक कुरीतियो को दूर करने के आप बडे हिमायती रहे हैं। आपने सेठ श्री सोहनमल जी का मौसर न कर २० हजार रुपये का दान दिया और कुचेरा में एक डिस्पेंसरी की स्थापना की।

सन् १९४४ में आपने अगरचन्द मानमल बैंक की शुरूआत की, जो आज मद्रास में एक प्रतिष्ठित बैंक मानी जाती है। आपने स्थानीय बोर्डिंग स्कूल, हाईस्कूल, कालेज आदि सामाजिक प्रवृत्तियो में लगभग ५ लाख रुपये का दान दिया है। सन् १९४७ में आपने अगरचन्द मानमल राँचरी ट्रस्ट के नाम से ५० हजार का एक ट्रस्ट भी किया है।

मद्रास सघ के आप सघपति हैं। सतो की सेवा आप तहदिल से करते हैं। धर्म के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा है। कान्फ्रेंस के ११वें अधिवेशन के आप स्वागत-प्रमुख बने थे। मद्रास प्रान्त में आपके सात-आठ गाँव जमीदारी के हैं। मद्रास ओसवाल समाज में 'बडी दुकान' के नाम से आपकी फर्म प्रसिद्ध है। कई धार्मिक तथा सामाजिक सस्थाओं के आप सहायदाता हैं।

श्री दानमलजी बलदोटा, सादडी

आप सादडी (मारवाड) के निवासी और पूना के प्रसिद्ध व्यवसायी हैं। सादडी अधिवेशन के आपही स्वागताध्यक्ष थे। आपके दोनो भाई—श्री फूटरमलजी बलदोटा और श्री हस्तीमलजी बलदोटा व्यवसाय में सम्मिलित रूप से पूना की तीनो दुकानें सभाल रहे हैं। आप तीनो भाइयों की तरफ से साधु-सम्मेलन और अधिवेशन के लिये १५, १११) का आदर्श दान दिया गया था। इसके अतिरिक्त आपके बडे भाई श्रीमान नथमलजी राजमलजी बलदोटा ने श्री लोकाशाह जैन गुरुकुल सादडी को ३१ हजार रुपये प्रदान किये थे।

श्री दानमलजी सा० और आपका बलदोटा-परिवार समाज के लिये एक आदर्श परिवार है जो कमाना भी जानता है और लक्ष्मी का वास्तविक उपयोग करना भी जानता है। समाज अपने इस उत्साही परिवार के प्रति हर्ष एव गौरव प्रकट करता है।

श्री जयचन्दलालजी रामपुरिया, स्वागताध्यक्ष

बीकानेर के प्रसिद्ध रामपुरिया परिवार के श्रीमान् सेठ जयचन्दलालजी रामपुरिया राष्ट्र उत्थान के कार्य में सक्रिय रुचि रखने वाले नवयुवक हैं। अपने बहुविस्तृत कल-कारखानो और वाणिज्य-व्यवसाय का कार्यभार सम्भालते हुए भी आप जनहितकारी विभिन्न कार्यों में समय और धन लगाते हैं। हाल ही में आपने अपने पिता और पितामह की पावन स्मृति में बडी धनराशि निकालकर आधुनिक प्रणाली का शिक्षालय गगाशहर–बीकानेर में चालू किया है।

औद्योगिक और व्यापारिक क्षेत्र में श्री जयचन्दलालजी कलकत्ता के सुप्रसिद्ध फर्म हजारीमल हीरालाल के साझेदार हैं। इसके अतिरिक्त आप रामपुरिया काटन मिल लि०, बीकानेर जिप्सम्स लि०, रामपुरिया ब्रादर्स लि०, रामपुरिया प्रोपरटीज़ लि० आदि के सक्रिय डायरेक्टर हैं।

स्व० धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई का जीवन-परिचय

सौराष्ट्र प्रान्तान्तर्गत (मोरवी) में आपका शुभ जन्म १९३३ की चैत्र वदी त्रयोदशी (गुजराती) को श्रीमान् त्रिभुवनदास भाई झवेरी के सुप्रतिष्ठित कुटुम्ब में धर्मपरायण श्रीमती साकली बाई की कुक्षि से हुआ। अमूल्य रत्नो के परीक्षक धर्मनिष्ठ माता-पिता ने दुर्लभरत्न 'दुर्लभ' को प्राप्त कर जीवन को धन्य माना।

धर्म प्रभावक परिवार के धार्मिक सस्कार बाल्यावस्था में ही आपके जीवन में झलकने लगे थे। धार्मिक-शिक्षण के साथ-साथ गुजराती तथा अग्रेजी का शिक्षाक्रम बराबर चलता रहा। छ वर्ष की लघुवय से ही आप में अतिथि सत्कार, असहायो के प्रति सहानुभूति, गुरुभक्ति, धर्मश्रद्धा तथा सहपाठियो के प्रति स्नेहभाव एव विनोद-प्रियता आदि-आदि सद्गुणो का विकास होने लगा। आप में वक्तृत्व-शक्ति, लेखन कला, नयी बात सुनने, सीखने तथा उस पर मनन करने की हार्दिक वृत्ति जागृत हो चुकी थी।

उस समय की प्रचलित रूढि के अनुसार आपका भी अल्पायु में ही श्रीमती सतोकबाई के साथ शुभ लग्न कर दिया गया। विवाह के पश्चात् अध्ययन-क्रम छूट गया। अब आपको अपने खानदानी व्यवसाय में लगा दिया गया। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि तथा प्रतिभा से सन् १९११ में जयपुर में 'मोरासी अमोलख' के नाम से फर्म की स्थापना की और अपनी विचक्षणता एव दीर्घदर्शिता के फलस्वरूप अर्थलाभ की अभिवृद्धि के साथ प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि भी प्राप्त कर ली। सद्निष्ठा और प्रामाणिकता ही आपके व्यापारिक जीवन का लक्ष्य रहा। लघुभ्राता श्री मगनलाल भाई के कलकत्ता में प्लेग की बीमारी से अवसान हो जाने से आपके हृदय पर बडा आघात पहुँचा और इससे सुपुत्र धर्म भावना जागृत हो उठी। कौटुम्बिक बन्धनो से शीघ्र छुटकारा पाने के लिये आपने अपने लघु भ्राता श्री छगनलाल भाई से पृथक होकर सवत १९७८ में जयपुर में 'दुर्लभजी त्रिभुवन झवेरी' नाम से नई फर्म की स्थापना कर ली। किन्तु भ्रातृ-स्नेह पूर्ण रूप से कायम रहा। ज्यो-ज्यो व्यापार का विस्तार बढता गया त्यो-त्यो लक्ष्मी भी आपके चरणो की चेरी बनती गई।

आपके पाँच सुपुत्र हुए जिनके क्रमश विनयचन्द भाई, गिरधरलाल भाई, ईश्वरलाल भाई, शान्तिलाल भाई तथा खेलशकर भाई नाम हैं। पाँचो ही भाई अपने व्यापार-कुशल पिता के समान ही जवाहिरात परीक्षण में निष्णात हैं। विदेशो के साथ सबन्ध स्थापित करने के लिये श्री विनयचन्द भाई, शान्तिलाल भाई तथा खेलशकर भाई को रगून

तथा पेरिस आदि देशो में भेजा। आपने ५० वर्ष की आयु में लगभग सपूर्ण व्यापार सुपुत्रो को सौंपकर निवृत्तिमय जीवन व्यतीत करने का निश्चय कर लिया। अब आपने अपने जीवन का लक्ष्य धर्म तथा समाज की तन, मन एव धन से सेवा करने का वना लिया।

सर्वप्रथम समाज में नव-चेतना का सचार करने के हेतु आपने कान्फ्रेंस की आवश्यकता तथा उपयोगिता से अवगत कराने के लिये गुजरात, काठियावाड, कच्छ, मारवाड, मेवाड, मलावा, यू० पी०, पजाव, खानदेश तथा दक्षिण प्रान्तो का सहयोगियो के साथ प्रवास करके स्था० जैनो को जागृत किया। सेठ श्री अवावीदास भाई को श्रा० भा० श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस के प्रथम अधिवेशन सम्बन्धी खर्च के लिये तैयार करके स० १९६१ में रा० सा० सेठ चाँदमलजी अजमेर की अध्यक्षता में मोरवी-अधिवेशन सफलतापूर्वक सपन्न करवाया। तदनन्तर आपने उसी लगन तथा उत्साह से समाजोन्नति की प्रत्येक प्रवृत्ति में सक्रिय सहयोग दिया। वाद में रतलाम, अजमेर, जालन्धर, सिकन्दरावाद, मल्कापुर, वम्वई और वीकानेर कान्फ्रेंस-अधिवेशनो की सफलता का श्रेय भी आप श्री को मिला। नवम अधिवेशन तथा बृहत्साधु-सम्मेलन अजमेर, भी आपके ही भगीरथ प्रयत्नो का सुफल था। आपने भारत के कोने-कोने में प्रवास करके समाज में धर्मक्रांति फैला दी और अजमेर-साधु सम्मेलन को सफल बनाकर सगठन का बीजारोपण कर दिया।

आपने व्यापारिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति के साथ-साथ विद्या-प्रचार क्षेत्र में भी अपने जीवन का अमूल्य समय दिया। सन् १९११ में रतलाम में कॉन्फ्रेंस की तरफ से अन्यान्य विषयो का शिक्षण देने के साथ-साथ छात्रो को धर्मनिष्ठ, समाज सेवक और जैन धर्म के प्रखर प्रचारक युवक तैयार करने के लिये जैन ट्रेनिंग कॉलेज की स्थापना की। आपका इस कॉलेज के प्रति अनन्य प्रेम था। किन्तु कुछ समय वाद यह सस्था वन्द हो गई। मल्कापुर में अधिवेशन में कौलेज की पुन आवश्यकता महसूस हुई और बीकानेर में पुन ट्रेनिग कालेज सेठ श्री अगरचन्द जी भैरोदान जी सेठिया की सरक्षणता में खोला गया जिसने पूर्ण विकास किया। वाद में आपने सतत प्रयत्न द्वारा इसे जयपुर लाकर सक्रिय रस लिया और श्री धीरजलाल भाई के० तुरखिया के हाथ में इसकी वागडोर सौंपी। इस कौलेज ने नेतृत्व में पूर्ण विकास किया और समाज को अनमोल रत्न प्रदान किये। कुछ वर्षों के पश्चात् तब व्यावर में आप के सफल प्रयत्नो से जैन गुरुकुल की स्थापना हुई तो कॉलेज भी इसी के अन्तर्गत मिला दिया गया। आपका इस गुरुकुल के प्रति अनन्य प्रेम था। समय-समय पर पधारकर सार-सँभाल करते रहते थे। इस गुरुकुल की भी स्था० समाज म काफी ख्याति फैली। श्रीमान् धीरजलाल भाई के० तुरखिया ने इसका सफल सचालन किया। आप श्री ने प्रत्येक सामाजिक प्रवृत्ति में इन्हे अपना सगी-साथी निर्वाचित कर लिया था। आपने गुरुकुल में तन, मन, धन से सहायता दी।

इन मवके अतिरिक्त श्री दुर्लभजी भाई ने सिद्धान्तशाला काशी, विद्यापीठ वनारस में जैन चेयर, श्री हसराज जिनागम फण्ड, आदि-आदि ज्ञान खातो में मुक्त हस्त से हजारो की उदारता दर्शायी और उसी उदारता की परम्परा आपके सुपुत्रो में भी वरावर चली आ रही है।

आप समाज के सामने एक ग्रन्थकार के रूप में भी आए। आप के द्वारा लिखित पूज्य श्री श्रीलालजी म० का जीवन-चरित्र, श्री वृहत्साधु मम्मेलन का इतिहास, 'सुभद्रा' 'मधु विन्दु' तथा 'आडत के अनुभव' आदि-आदि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

इस प्रकार शात, दात, धीर गम्भीर, राष्ट्र धर्म तथा समाज के सच्चे सेवक ने स्था० समाज में सघ-ऐक्य की भावना भरकर जागरणा सहित ता ३०-३-३९ तदनुसार चैत्र शुक्ला दशमी (साधु-सम्मेलन जयन्ती दिवस) के दिन ही पण्डित मरण प्राप्त किया और अपने सुयश की सुवास प्रसरित कर जैनाकाश के दिग्-दिगन्त में फैला गए।

कॉन्फरन्सके जनरल सेक्रेटरी

राय वहादुर सेठ छगनमलजी रीयावाले, अजमेर,

रायबहादुर सेठ छगनमलजी का जन्म सवत् १९४३ में भाद्रपद मास में हुआ था। आपने छोटी उम्र में ही बडा यश प्राप्त कर लिया था २२ वर्ष की उम्र में आपने अपनी तरफ से अजमेर में कार्फ्रेंस का तीसरा अधिवेशन कराया था और उसके प्रधान मत्री पद का भार ग्रहण विया था। आपने लगभग १० वर्ष तक मत्री पद पर रहते हुए कार्फ्रेंस की सेवा की थी।

धर्म के प्रति आपका प्रेम उल्लेखनीय था। आपके पिता श्री सेठ चाँदमल जी की तरह आपको भी जीव-दया की तरफ वडी अभिरुचि थी। गरीबो को अन्न और वस्त्र आपकी ओर से मिला करता था।

पच्चीस वर्ष की उम्र में आप म्युनिसिपल कमिश्नर और आनरेरी मजिस्ट्रेट हो गये थे। गवर्नमेंट ट्रेजरर रह कर आपने जो सेवा वजाई थी उसके उपलक्ष में आपको राय वहादुर का खिताव प्रदान किया गया था।

आपकी समाज-सेवा की लगन वडी प्रशसनीय थी। हर एक कार्य में आप वडे उत्साह से भाग लेते थे। हुनरोद्योग शाला का भी आपने कई वर्षो तक सचालन किया था।

दुर्भाग्य से आप बहुत कम उम्र में ही स्वर्गवासी हो गये, अन्यथा आपसे समाज की सुन्दर सेवा होने की सभावना थी। ता० ३६ मार्च सन् १९१७ (स० १९७३) को आपका टाईफाईड से स्वर्गवास हो गया।

आपके सात वच्चे हुए थे, पर दुर्भाग्य से वे सव जीवित न रहे और एक के वाद एक गुजरते रहे।

कार्फ्रेंस ओफिस के स्थायित्य में आपका मुख्य हाथ रहा था। आपके स्वर्गवास के वाद आपके लघुभ्राता श्री मगनमलजी सा० ने कार्फ्रेंस का मत्रीपद जीवन भर (८ वर्ष) सँभाला।

श्रीमान् सेठ मगनमलजी रीयावाले, अजमेर,

स्थानकवासी धर्म को मानने वाले समस्त घरानो में रीयावाले सेठ का घराना सव तरह से समृद्ध और उन्नत माना जाता रहा है। यह घराना बहुत समय से असीम धन-वैभव और दानप्रियता से केवल मारवाड में ही नहीं, परन्तु सारे भारतवर्ष में प्रसिद्धि प्राप्त है।

एक वार मारवाड के महाराजा मानसिंहजी से किसी अग्रेज ने पूछा था कि 'तुम्हारे राज्य में कुल कितने घर है ? तब उन्होने कहा कि केवल ढाई घर। एक तो रीया के सेठो का है, दूसरा विलाडे के दीवान का और आधे में सारी मारवाड है।' कहते है एक वार जोधपुर नरेश को रुपये की आवश्यकता हुई। रियासत का खजाना खाली हो गया था अत महाराज रीया के सेठ के पास गये और अपना अभिप्राय वतलाया। उस समय सेठ ने अपने भडार से इतने छकडे रुपये से भर दिये कि जोधपुर से रींया तक उनकी एक कतार-सी वध गई।

इस अपरिमित धनराशि को देखकर तत्कालीन नरेश ने उनको परम्परागत 'सेठ' की पदवी से सम्मानित किया। इस धनकुवेर घराने में रेखाजी, सेठ जीवनदासजी, सेठ हजारीमलजी, सेठ रामदासजी, सेठ हमीरमलजी, और उनके पीछे राय सेठ चांदमलजी हुए। इसी प्रसिद्ध धन कुवेर घराने में सवत् १९८६ में सेठ मगनमलजी का भी जन्म हुआ। आप राय सेठ चांदमलजी के तीसरे सुपुत्र थे। राय सेठ चांदमलजी की सरकार में और समाज में वडी भारी

प्रतिष्ठा थी। वे बडे ही परोपकारी और धर्मात्मा सज्जन थे।

सेठ मगनमलजी भी अपने पिता की तरह ही उदार और धर्मात्मा थे। इतने अधिक धनाढ्य होने पर भी आपका जीवन बडा सादा और धार्मिक था। आपको 'नवकार मत्र' में गहरी श्रद्धा थी। घटो तक आप इस महामत्र का जाप करते रहते थे। भक्तामर और कल्याण मन्दिर आपके प्रिय स्तोत्र थे। सदाचार आपके जीवन ः मुख्य विशेषता थी। इतने बडे धनी व्यक्ति में यह गुण कदाचित् ही दृष्टिगोचर होता है।

आपका स्वभाव बडा मधुर था। आप सदैव हसमुख रहते थे। वाणी की मधुरता से ही आप बडे व काम बना लेते थे। अजमेर के हिन्दू-मुसलमानो के झगडो को कई बार अपने शब्द-चातुर्य से ही मिटा दिया था।

समाज-सेवा की लगन आपकी उल्लेखनीय थी। लगभग ८ वर्ष तक आप कान्फ्रेंस के जनरल सेक्रेटरी के प पर रहे। दुर्भाग्य से आप अधिक लम्बा आयुष्य न भोग सके, लेकिन अपने ३६ वर्षो के जीवन में ही आपने ऐसे ऐ कार्य कर दिखलाये कि आप सबके प्रिय हो गये थे। लाखो रुपयो का आपने सत्कार्यो में दान किया। अहिंसा के प्रचा में ही आप दान किया करते थे। यह आपके जीवन की विशेष खूबी थी।

बुन्देलखड में कई स्थानो पर हिंसा होती थी, जिसे आपने स्वय परिश्रम कर बन्द कराया। अहिंसा का प्रचा करने के लिये आप एक 'अहिंसा प्रचारक' नामक साप्ताहिक पत्र भी निकालते थे। पुष्कर और बगलौर में गौशाल स्थापित कराई, जिसका तमाम खर्च आप स्वय देते थे। मैसूर स्टेट में गोवध बन्द कराने में आपने मुख्य भाग लिया मिर्जापुर में कुत्तो को गगाजी में डुबो-डुबोकर मारा जाता था, उनकी रक्षा के लिये वहाँ आपने कुत्ताशाला स्थापि की। इस तरह आपने अहिंसा के प्रचार में खूब प्रयत्न किया था।

सामाजिक जीवन भी आपका आदर्श था। आप कई छात्रो को स्कॉलरशिप दिया करते थे। विधवाओं कं हालत देखकर आपको बहुत दुख होता था। कई विधवा बहनो को आप मासिक सहायता देते रहते थे।

तारीख ७-११-१९२५ को आपका स्वर्गवास हुआ। यह शोक समाचार जहाँ भी पहुँचा सभी ने हार्दिक शो प्रकट किया।

यद्यपि सेठ जी का नश्वर देह विद्यमान नही है, पर उनके सत्कार्य अब भी विद्यमान हैं और वे जब त रहेगे तब तक आपकी उदार कीर्ति इस ससार में कायम रहेगी।

कॉन्फरन्स ऑफिस, बम्बई के जनरल सेक्रेटरी

शेठ अमृतलाल रायचन्द जवेरी, बम्बई

श्री अमृतलालभाई जवेरी का जन्म सन् १८७९ में पालनपुर में हुआ था। आपने प्रारम्भ में २० रु० मासिक की नौकरी की, पर बाद में आपको नौकरी करना ठीक न प्रतीत हुआ और आप २० वर्ष की उम्र में बम्बई आ गये।

बम्बई आकर आप जवाहरात की दलाली करने लगे। इस व्यवसाय में आप सफल होते गये और एक दिन इस श्रेणी तक पहुँचे कि आप बम्बई के जवेरी बाजार में प्रसिद्ध हो गये।

आप का जीवन धार्मिक सस्कारो से ओत प्रोत था। समाज की सेवा करने की भावना आप की पुरातन थी। घाटकोपर जीव दयाखाता के सचालन में आपका प्रमुख भाग था। आप इस सस्था के उप प्रमुख थे। पूना बार्डिंग के लिये आपने १० हजार रु० का उदार दान दिया था। हितेच्छु श्रावक मडल, रतलाम और बम्बई के श्री रत्न चिन्तामणि मित्र मडल के आप जन्म से ही पोषक थे। स्था०

जैन कान्फ्रेंस के आप वर्षो तक ट्रस्टी तथा रेसिडेन्ट जनरल सेक्रेटरी रहे है ।

इस तरह आप कई सस्थाओ को पूर्ण सहयोग देते रहते थे । आप के कोई सन्तान न थी । अपने भाइयो के पुत्र-पुत्रियो को ही आपने अपनी सन्तान समझी और उनका पालन-पोषण किया । आप की धर्मपत्नी श्री केशरबेन से भी समाज सुपरिचित है । समय-समय पर आप भी सामाजिक कार्य में सक्रिय भाग लेती रहती है । आप श्री अमृतलाल भाई का स्वर्गवास ता० १३-१२-४१ को हृदय गति बन्द हो जाने से पालनपुर में हुआ था । पालनपुर का 'तालेबाग' श्रीमती केशरबहिन न शिक्षण प्रचारार्थ दान कर दिया ।

समाज भूषण श्री नथमल जी चौरडिया, नीमच

श्री चौरडिया जी का जन्म सवत् १९३२ भाद्रकृष्णा ८ (जन्माष्टमी) को हुआ था । आप के अग्रज डीडवाने से १२५ वर्ष पूर्व नीमच-छावनी में आकर बस गये थे । आप के पिता जी का देहावसान आपकी छोटी उम्र में ही हो गया था । आप बचपन से ही परिश्रमी, अध्यवसायी एव कुशाग्र बुद्धि थे ।

आप ने व्यापार में अच्छी प्रगति की । व्यापार के लिए आप ने बम्बई का क्षेत्र पसन्द किया और वहाँ मेसर्स माधोसिह मिश्रीलाल के नाम से व्यापार करना आरम्भ किया । आप की व्यापार कुशलता को देखकर मेवाड के करोडपति सेठ मेघजी गिरधरलाल ने आप को अपना भागीदार बना लिया और ऊँचे पैमाने पर व्यापार करना शुरू किया । फलत लाखो रुपया आपने पैदा किये ।

बम्बई में आप ने मारवाडी चेम्बर ऑफ कामर्स की स्थापना की और वर्षो तक उसके अवैतनिक मत्री तरीके आपने कार्य किया । व्यापारिक विषयो पर आप की सम्मति महत्वपूर्ण समझी जाती थी ।

आप शिक्षा के पूरे हिमायती थे आप की ओर से असहाय विद्यार्थियो को समय-समय पर छात्रवृत्तियाँ प्राप्त होती रहती थी ।

स्त्री-शिक्षा के आप बडे पक्षपाती थे । राजपूताने में एक जैन कन्या गुरुकुल की स्थापना के लिये आपने ७५ हजार रु० का उदार दान दिया था । इस गुरुकुल का उद्घाटन ता० २०-४-३६ को होने वाला था, परन्तु आपकी यह इच्छा पूर्ण न हो सकी । आपका देहावसान ता २९-३-३६ को ही हो गया । गुरुकुल की शुरूआत न हो सकी । परन्तु उन रुपयो का ट्रस्ट बना हुआ है और प्रतिवर्ष उसमे से कुछ रुपया छात्रवृत्ति के रूप में छात्राओ को दिया जाता है ।

आप समाज सेवा के लिये हर समय तैयार रहते थे । कोन्फरन्स की स्थापना से लगाकर अन्त समय तक आप उसके स्वयसेवक दल के मन्त्री पद को आप सुशोभित करते रहे और प्रत्येक अधिवेशन में भाग लेते रहे । आपके इस सेवा भाव को लक्ष्य मे रख कर अजमेर के नवें अधिवेशन के समय आपको 'समाज भूषण' की पदवी से विभूषित किया गया ।
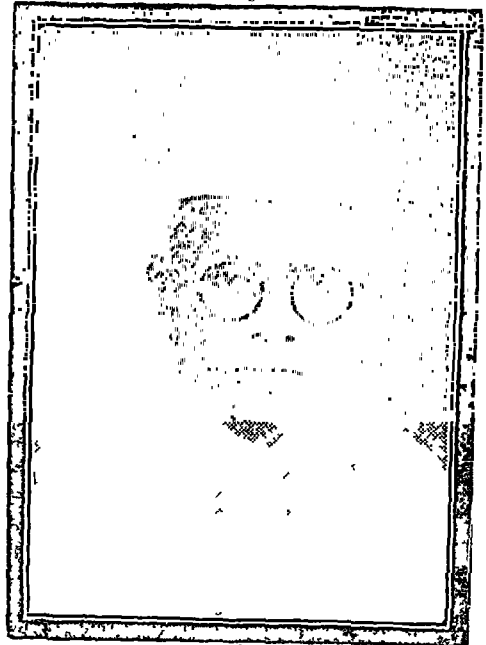
सामाजिक सुधार के आप कट्टर हिमायती थे । परदा प्रथा को आप ठीक नही समझते थे । आप की पुत्री तथा ज्येष्ठ पुत्र वधू ने पर्दा-प्रथा का त्याग कर दिया था । फिजूल खर्चो और मृतक भोज के भी आप विरोधी थे ।

आपकी राष्ट्रीय सेवायें भी उल्लेखनीय थी । राजपूताना मालवा प्रान्तीय काग्रेस कमेटी के आप प्रधान रहे । सत्याग्रह आन्दोलन में आप एक वर्ष तक सरकार के मेहमान भी रहे । हरिजन-स्थान के लिये आपकी ओर से

एक हरिजन पाठशाला भी चलती थी। जो आज सरकार द्वारा सचालित होती है।

जैन समाज का सुप्रसिद्ध जैन गुरुकुल छोटी-सादडी के आप ट्रस्टी तथा मन्त्री रहे। इस तरह आप की सेवायें बहुमुखी थी। सन् '३६ में टाईफाईड से आपका स्वर्गवास हो गया।

श्री सेठ अचलसिहजी जैन, आगरा M P

उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध काग्रेस नेता सेठ अचलसिहजी ऐसे देश भक्तो में से हैं, जिन्होने अपनी मातृभूमि की सेवा करना अपने जीवन का एक विशेष अग बना लिया है। आपका जन्म वैशाख सुदी ६ स० १९५२ में आगरा मे हुआ। आप प्रसिद्ध बैंकर और जमींदार श्री सेठ पीतममलजी के सुपुत्र है आपकी माता भी अत्यन्त धर्म परायण नारी थी। बचपन में ही माता-पिता के स्वर्गवासी हो जाने के कारण आपके सौनेले भ्राता श्री सेठ जसवन्तरायजी द्वार बडे लाड- प्यार से आपका पालन-पोषण हुआ। बलवन्त राजपूत कालेज आगरा में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आपने कृषि विद्यालय, इलाहाबाद मे अध्ययन के लिये प्रवेश किया किन्तु आपका ध्यान किताबो में न लग कर देश-सेवा की ओर आकर्षित हुआ। आपने सन् १९१८ मे अध्ययन छोडकर निर्णयात्मक रूप से अपने को राजनैतिक और सामाजिक कार्यो में लगा दिया।

अब आप व्यावसायिक क्षेत्र में रहते हुए राजनैतिक क्षेत्र में आये। रोलेट एक्ट के विरुद्ध सारे देश में क्रान्ति फैली हुई थी। आप भी उस क्रान्ति में सम्मलित हुए। सन् १९१८ से १९३० तक आगरा ट्रेड एसोसिएशन के आप मत्री और फिर १९३१ से १९३८ तक इसी सस्था के अध्यक्ष रहे। सन् १९२१ १९३० तक आप आगरा नगर काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और १९३३ से १९५६ तक लगातार जिला काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे। भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस कमेटी की तरफ से प्रारम्भ किये गये। आन्दोलनो में आपने प्रमुखता से भाग लिया, जिसके फल वरूप आपको अनेक वार जेल कष्ट का सामना करना पडा। "भारत छोडो" आन्दोलन में आपको सत्ताईस माह की जेल-यात्रा करनी पडी।

सेठ सा० का विधान सभा में भी प्रशसनीय जीवन रहा है। आप सन् १९२३ में उत्तर-प्रदेश विधान सभा के सदस्य हुए। सन् १९५३ में आगरा में किये गये काग्रेस के अधिवेशन में आप स्वागताध्यक्ष थे। सन् १९५२ में लोक-सभा में आगरा पश्चिम-क्षेत्र से सदस्य चुने गये। अपने विरोधी उम्मीदवार श्री एस० के० पालीवाल को जो यू० पी० सरकार के भूतपूर्व मत्री रह चुके हैं, ५६,००० वोटो से पराजित किया।

आपने सन् १९३६ में १,००,०००) रु० का अचल ट्रस्ट का निर्माण किया। इस ट्रस्ट से एक विशाल भवन बनाया गया जिसमें एक पुस्तकालय और वाचनालय चालू किया गया। आपने एक दूसरा ट्रस्ट २,५०,०००) रुपये की लागत का अपनी स्व० पत्नी श्रीमती भगवतीदेवी जैन के नाम से बनाया। आपने इन दोनो ट्रस्टो के नाम लगभग ५ लाख रुपये की सम्पति दान करदी है। राजनैतिक जीवन के साथ-साथ आप धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रो में भी पूर्णरूप से दिलचस्पी लेते रहे हैं। समाज सुधारक के रूप में आगरा के विभिन्न समाजो में मुख्यत ओसवाल और वैश्य समाज में शादियां, दहेज आदि कार्यों में फिजूल खर्ची बन्द कराई। सन् १९२१ में आपने जैन सगठन सभा का निर्माण किया जिसके द्वारा महावीर भगवान की जयन्ती सम्मिलितरूप से मनाई जाती है। सन् १९५२ में आपने दिल्ली में अखिल भारतीय महावीर जयन्ती कमेटी की स्थापना की जिसके द्वारा महावीर जयन्ती के दिन छुट्टी कराने का प्रयास जारी है। आप द्वारा आयोजित गत महावीर जयन्ती समारोह में प्रधान मन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू,

उपराष्ट्र पति राधाकृष्ण, गृहमन्त्री गोविन्दवल्लभ पत, अन्य मन्त्रियो तथा लोक सभा के सदस्यो ने भाग लिया। सात अप्रैल को राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद भी पधारे थे। दोनो उत्सवो का वर्णन रेडियो द्वारा प्रसारित किया गया था।

इस प्रकार सेठ सा० का जीवन क्या राष्ट्रीय क्षेत्रो में और क्या सामाजिक क्षेत्रो में वरदान रूप सिद्ध हुआ है। आपकी सुयश-सुवास सर्वा गीण क्षेत्र में प्रसर रही है। निस्सन्देह सेठ सा० समाज के गौरव हैं।

डॉ० दौलतसिहजी सा० कोठारी M Sc, Ph D, दिल्ली

आप उदयपुर—राजस्थान निवासी श्री सेठ फतहलालजी सा० कोठारी के सुपुत्र है। आपका जन्म स० १९६३ में हुआ था। आपका प्राथमिक शिक्षण उदयपुर और इन्दौर में हुआ। यहाँ का शिक्षण पूर्ण कर आप इलाहाबाद की यूनिवर्सिटी में प्रविष्ठ हुए। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक स्वर्गीय मेघनाथजी शाहा के आप विद्यार्थी रहे है और आप ही के अध्यापन में आपने M Sc किया। तत्पश्चात् सरकारी छात्रवृत्ति प्राप्त करके केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में प्रसिद्धतम वैज्ञानिको के सरक्षण में रिसर्च किया। भारत में लौटने के पश्चात् आपने अनेक यूनिवर्सिटियो में प्रोफेसर, रीडर बनकर बडी ही योग्यता और दक्षता से कार्य किया।

इस समय आप भारत सरकार के रक्षा विभाग में बडी ही योग्यता से कार्य कर रहे है। आपकी योग्यता और कार्यकुशलता को अनगिनती वैज्ञानिको ने मुक्त-कण्ठ से सराहना की है।

श्री कोठारी जी साहब ने भौतिक विज्ञान पर आश्चर्यकारक अनुसन्धान करके और कई निबन्ध लिखकर ससार के भौतिक शास्त्र के वैज्ञानिको को चकित कर डाला है। सन् १९४८ की आयोजित अखिल भारतीय वैज्ञानिक काग्रेस के आप स्वागताध्यक्ष के सम्माननीय पद पर थे। सन् १९५४ में स्वर्गीय मेघनाथ शाहा के साथ भारत सरकार के प्रतिनिधि बनकर वैज्ञानिको की कान्फ्रेंस में सम्मिलित होने के लिए आप रूस पधारे थे। १ फरवरी सन् '५६ में भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में कॉमनवेल्थ डिफेंस साइस कान्फ्रेंस में सम्मिलित होने के लिए कनाडा की राजधानी ओटावा पधारे।

आप भारत सरकार के प्रमुख और प्रतिष्ठित वैज्ञानिक हैं। सन् १९५३ में दिल्ली यूनिवर्सिटी के दीक्षान्त समारोह के विशाल कक्ष में पजाब-मन्त्री प० मुनिश्री शुक्लचन्द्रजी म० सा० का प्रवचन कराकर जैनतरो को जैनधर्म की जानकारी दिलाई।

इतने ऊँचे पद पर आसीन होकर भी आपका धर्म और समाज के उत्थान की भावना प्रशसनीय और आदर्श है। इस समय आप अ० भा० श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस के उपाध्यक्ष है।

श्री कोठारीजी सा० जैसे वैज्ञानिक को पाकर समस्त स्थानकवासी समाज गोरवान्वित है। जिन सपूतो से देश और समाज का मानवर्धन हो—ऐसे सपूतो के लिए किसे गौरव नहीं होगा?

आपके तीन भाई है—श्री मदनसिहजी राजस्थान सरकार के सेक्रेटरी है। श्री दुलेसिहजी महाराणा कालेज में प्रोफेसर है और श्री प्रतापसिहजी पेपर मिल, शिरपुर (हैदराबाद) के मैनेजर है।

इस प्रकार यह कोठारी परिवार भारत की शान है। अपनी बुद्धिमत्ता से इस परिवार ने अपने प्रान्त को, अपने समाज को तथा देश को गौरवान्वित किया है। ऐसे भाग्यशाली परिवार के प्रति किसे हर्षयुक्त ईर्ष्या नहीं होगी?

स्वर्गीय श्री किशनलाल जी सा० काकरिया, कलकत्ता

आपका जन्म नागौर परगने के अन्तर्गत "गोगलाव" नामक ग्राम के एक प्रतिष्ठित स्थानकवासी जैन-घराने में स० १९५१ में हुआ था। आप के पिताजी का नाम श्री हजारीमल जी काकरिया था। श्री हजारीमल जी सा० बड़े ही सहृदयी और परोपकारी व्यक्ति थे। आपकी माता भी अत्यन्त धार्मिक और उदार प्रकृति की महिला थी। माता-पिता के उज्ज्वल चरित्र की स्पष्ट छाप आप पर भी पडी। आप अपने काकाजी श्री मुल्तानमल जी काकरिया की गोद चले गये। व्यापार करने के विचार से आप कलकत्ता पधारे और श्री छत्तूमल जी मुल्तानमल प्रतिष्ठित फर्मों में गिना जाने लगा। पूर्वी पाकिस्तान के पाट-व्यापारी आपको कुशल व्यापारी के रूप में सम्मान की दृष्टि से देखते थे।

कलकत्ता स्थित कितनी ही धार्मिक और परोपकारिणी सस्थाओं को बिना भेद-भाव के आप मुक्त हस्त सहायता प्रदान करते थे। आप धार्मिक वृत्ति के पुरुष थे। सामयिक और उपवास आपके जीवन के अभिन्न अग थे।

सामाजिक कार्यों में भी आप की बडी दिलचस्पी थी। कलकत्ता स्थित श्री श्वे० स्था० जैन सभा के आप कई वर्षो तक सभापति रहे। सभा द्वारा सचालित विद्यालय को हाईस्कूल के रूप में देखना चाहते थे और इसके लिये आजन्म प्रयत्नशील रहे।

व्यापारिक कामो से आप पूर्वी पाकिस्तान बराबर आया-जाया करते थे किन्तु २० जुलाई सन् १९५२ को गायबाधा से नारायण गज जाते समय चलती ट्रेन में आततायियो द्वारा आप की निर्मम हत्या कर दी गई।

इस प्रकार समाज का एक आशावान दीपक ५८ वर्ष की अवस्था में ही अकस्मात् बुझ गया।

आपकी विधवा धर्म-पत्नी भी बडी ही उदार तथा धर्म-परायण हैं। आप के ज्येष्ठ पुत्र श्री पारस मल जी और भतीजे श्री दीपचन्द जी काकरिया भी बडे ही होनहार, धर्म प्रेमी एव समाज सेवी हैं। सामाजिक प्रवृत्तिया में भाग लेकर समाज में नव चेतना लाने का आप की तरफ से प्रयास होता रहता है।

श्री सेठ आनन्दराजजी सुराणा, M L A

आप दिल्ली राज्य की प्रथम विधान सभा के निर्वाचित प्रसिद्ध काग्रेसी कार्यकर्ता श्री सुराणाजी एक सफल व्यापारी हैं। आप इडो योरोपा ट्रेडिंग कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं।

आप जोधपुर के निवासी हैं। आपका जन्म सवत् १९४८ को हुआ था। प्रारभ से ही आप राष्ट्रीय दृष्टिकोण के एव सगठन-प्रेमी हैं। जोधपुर राज्य की सामन्तशाही के खिलाफ आपने सघर्ष में भाग लिया। वर्षों तक आप इस सघर्ष में जूझते रहे। देशी रियासतों में राष्ट्रप्रेमियो पर कैसा दमन और अत्याचार उस समय किया जाता था यह सर्वविदित है। राज्य सरकार को उलटने के लिये षड्यन्त्र करने के अभियोग में आपको पांच साल की सख्त कद की सजा हुई और आपको तथा आपके साथी श्री जयनारायण व्यास और श्री भँवरलालजी अग्रवाल को नागौर के किले में नजरबन्द रखा।

सन् १९४९ के भारत छोडो आन्दोलन में आपनें श्रीमती अरुणा आसफअली, श्री जुगलकिशोर खन्ना तथा डा० केसकर को अपने यहाँ आश्रय दिया और राष्ट्रीय काग्रेस का सघर्ष चालू रखा। सरकार को आप पर शक होने लगा अत आपको भी ९ साल तक भूमिगत होकर रहना पडा।

स्टेट पीपल कान्फ्रेंस का दफ्तर भी दिल्ली में आपके पास रहा है। इसी कान्फ्रेंस के द्वारा देशी रियासतो में आजादी की लडाई चलाई जाती थी। प० जवाहरलाल नेहरू जी अत्यन्त व्यस्त रहने के कारण किसी के यहाँ नहीं आते-जाते किंतु आपके यहाँ श्री पडितजी ने तीन घटे व्यतीत किये। सत्य ही सुराणा जी एक भाग्यशाली व्यक्ति है।

हिन्दुस्तान पाकिस्तान के बँटवारे के समय शरणार्थियो की पुनर्वास समस्या सुलझाने में आपने अद्भुत कार्यक्षमता तथा दानशूरता का परिचय दिया। कान्फ्रेंस द्वारा सग्रहीत फड में से लगभग ५०,००० रु० आपके ही हाथो से शरणार्थियो को बाँटा गया। आपने अपनी तरफ से भी लगभग १५ ००० रु० की सिलाई की मशीनें और ला दीं शरणार्थियो को वितरण कर उनकी उजडी हुई दुनिया को फिर से बसाने में आपका वडा हाथ रहा है। धार्मिक, सामाजिक, और राजनीतिक सस्थाओ को आपकी तरफ से अबतक १,५०,००० का दान हो चुका है।

आप इस ससय अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के प्रधान मत्री है। समाज सेवा की आप में उत्कट भावना है। किसी को दीन-दुखी देखकर आपका हृदय द्रवित हो जाता है। आपके द्वार पर आया हुआ किसी भी प्रकार का प्रार्थी खाली हाथ नहीं लौटता।

निर्भीकता, तेजस्विता और स्पष्टवादिता एव उदारता के कारण आपने जिस कार्य में हाथ डाला उसमें सफलता प्राप्त की। जोधपुर में १२ रु० में आपने नौकरी की थी। किन्तु मनुष्य को पुरुषार्थ और महत्वाकाक्षा क्या नही बना देती यह हम श्री सुराणा जी के जीवन से सीख सकते है। इस वृद्धावस्था में भी आपका समाज-प्रेम, नित्य क्रिया कर्म, और आतिथ्य सत्कार प्रशसनीय ही नहीं किन्तु अनुकरणीय है।

श्री लाला उत्तमचन्द जी जैन, दिल्ली

आप के पूर्वज मेरठ जिले के निरपुरा ग्राम के रहने वाले थे। आपके दादा श्री ला० लक्खूमल जी सा० अत्यन्त ही धर्म परायण तथा दानवीर थे। आप ने कई स्थानो पर स्थानक-भवन, धर्मशालाए बनाकर अपनी सम्पत्ति को जन-कल्याण के लिये लगाई। श्री उत्तमचन्द जी के पिता जी श्री रामनाथजी ने दिल्ली में आकर अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया और यहाँ के एक प्रसिद्ध व्यवसायी बन गये। आपके सुपुत्र श्री उत्तमचन्द जी जैन का व्यवस्थित शिक्षण हुआ, जिसके फलस्वरूप बी० ए० पास कर लेने पर आपने सन्मान सहित 'लॉ' की उपाधि प्राप्त की। कुछ समय तक वकालत करने के पश्चात् आपने व्यावसायिक क्षेत्र में पदार्पण किया। व्यापार मे व्यस्त रहते हुए भी आप सामाजिक, शैक्षणिक तथा इतर सस्थाओ में सक्रिय भाग लेते है। इस

समय आप नया बाजार, दिल्ली के सरपच है। बाजार की कठिन और जटिल समस्याओ को आप बडी ही बुद्धिमत्ता तथा न्यायपरायणता से हल करते हैं। आप ने दिल्ली की श्री महावीर जैन हायस्कूल का डाँवाडोल स्थिति में जिस कुशलता मे सचालन किया वह अत्यन्त सराहनीय है। आपके प्रयत्नो से यह सस्था प्रतिदिन प्रगति कर रही है। गरीब बालक बालिकाओ को शिक्षण देने और दिलाने की आपकी सदा प्रेरणा रही है।

आप अखिल भारतीय स्था० जैन कान्फ्रेंस के मानद् मन्त्री हैं तथा दिल्ली की कई अन्य धार्मिक सस्थाओं के पदाधिकारी हैं। आप ने अपने ग्राम निरपुरा में एक धर्मशाला और एक स्थानक का निर्माण कराया है।

श्री लाला गिरधारी लाल जी जैन M A, P V E S class 1, दिल्ली

आप जिन्द निवासी लाला नैन सुखराय जी जैन के सुपुत्र है, जो आज दिल्ली स्टेट और पेप्सु राज्य के शिक्षा-विभाग में उच्चाधिकारी के सम्माननीय पद पर हैं। आप धुरन्धर शिक्षण-शास्त्री हैं। जिन्द स्टेट के आप M L A रह चुके हैं और इस सरकार की तरफ से आपको "सरदार ग्रामी" की पदवी भी प्राप्त कर चुके हैं। सरकारी विभागो में काम करते हुए सम्मान और सुयश प्राप्त कर अपने को समाज सेवा में भी लगाया है।

स्वर्गीय शतावधानी प० मुनि श्री रतनचन्द्रजी महाराज के दिल्ली, पचकूला, आगरा और पटियाला आदि नगरो में धूम-धाम से अवधान कराकर जैनधर्म, जैन समाज और जैन मुनिराजो का गौरव बढाया है।

इतने उच्च शिक्षण-शास्त्री होते हुए भी धर्म पर आप पूर्णरूप से दृढ श्रद्धावान हैं। अनेक मुनिराजो के सान्निध्य में आकर धार्मिक सिद्धान्तो की आप ने अच्छी जानकारी प्राप्त कर ली है। इस समय दिल्ली के वर्द्धमान स्था जैन समाज के आप अध्यक्ष हैं।

हमें विश्वास है कि आप की बहुमूल्य सेवाओ से समाज और अधिक लाभान्वित हो कर गौरवान्वित होगा। सुलझे हुए विचार, गम्भीर चिन्तन, समाज-प्रेम, धर्म पर अनन्य श्रद्धा और आकर्षक भव्य आप के इन गुणो के प्रति प्रेम एव सद्भावना प्रकट होती है।

बाबू अजितप्रसाद जी जैन M A L-L B, दिल्ली

आप बडौत जिला मेरठ निवासी लाला मामचन्दराय जैन के सुपुत्र हैं। आपके परिवार ने स्थानकवासी जैन समाज की बहुत सेवा की है। आपके परिवार के प्रयत्नो से ही बडौत में जैन पाठशाला, जैन धर्मशाला व जैन स्थानक भवन का निर्माण हुआ।

आप अपनी समाज के सेवाभावी कार्यकर्ता हैं। आप इस समय अ० भा० श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस के मन्त्री हैं और उत्तरीय रेलवे में 'अकाउट ऑफिसर' हैं। आपकी समाज-सेवा की भावना और धर्मप्रियता सराहनीय है।

श्री धीरजभाई केशवलालभाई तुरखिया

स्था० जैन जगत् के कोने-कोने में चतुर्विध श्री सघ का शायद ही ऐसा सभ्य होगा जिसने 'धीरजभाई' यह कर्ण-प्रिय मधुर शब्द न सुना हो।

धीरजभाई के नाम की इतनी प्रसिद्धि केवल उनके कार्यकलापो से है। व्यक्तिगत रूप से जैन समाज इनसे कम परिचित है। क्योकि इन्होने अपने-आपको कार्यसिद्धि के यश का भागी वनाने का कभी मौका नही दिया। निस्वार्थ समाज-सेवा ही उनके जीवन का परम लक्ष्य रहा।

सादगी एव सयम की साक्षात् मूर्ति श्री धीरजभाई की वेष-भूषा है इकलगी छोटी धोती पर सफेद खादी का कुर्ता और टोपी, पैरो में जूते या चप्पल। सीधे-सादे, धीर-गम्भीर मुद्रा, नाटा कद, कार्य-भार की चिन्ता-रेखाओ से अकित ललाट, हँसमुख, मिष्टभाषी और कार्य में व्यस्त रहने वाले है श्री धीरजभाई।

आज से ३५ वर्ष पूर्व आप वम्बई शहर के एक नागरिक थे। समाज में अन्धकार व्याप्त था और सामाजिक कार्यकर्ताओ का नितान्त अभाव था। उस समय 'जैन जागृति' द्वारा आपने जैन समाज में प्राण-वायु फूकने का अकथ परिश्रम किया और 'श्री चिन्तामणि मित्र मण्डल' के सचालक का पद स्वीकार कर जैन नवयुवको में जैनत्व के सस्कार सिंचन का उत्तरदायित्व अपने कन्धो पर उठाया।

इसी समय वम्वई के रेशम वाजार के व्यापारी मित्रो ने जापान की ओर व्यवसाय के लिए जाने का उन्हे आग्रह किया और दूसरी ओर श्री स्व० सूरजमल लल्लूभाई झवेरी एव स्व० श्री दुर्लभजी भाई झवेरी ने जैन ट्रेनिग कॉलिज की वागडोर सँभालने का अत्याग्रह किया। किन्तु आर्थिक प्रलोभन की अग्नि-परीक्षा में खरे उतरे और शासन-सेवा के लिए निष्काम और अनासक्त भाव से आपने अपने व्यवसाय को भी त्याग दिया। आपकी २५ वर्षीय सेवाओ का रौप्य महोत्सव मनाने का सद्भाग्य समाज को व्यावर गुरुकुल के १७वें वार्षिकोत्सव के शुभ प्रसगपर प्राप्त हुआ।

जैन ट्रेनिग कॉलेज का आपने जिस योग्यता से सचालन किया उसका ज्वलन्त उदाहरण है। वहाँ से निकले हुए उत्साही नवयुवक, जो आज वर्तमान में विभिन्न सस्थाओ में व समाज में जागृति का कार्य कर अपना नाम रोशन कर रहे है।

श्री जैन ट्रेनिग कॉलेज की सफलता देखकर कतिपय विद्या-प्रेमी मुनिराजो एव सद्गृहस्थो की अन्तरात्मा से प्रेरणा हुई कि जैन गुरुकुल सरीखी सस्था सस्थापित हो। सद्विचार कार्यरूप में परिणत हुए और उसके सुयोग्य सचालक के रूप में आपश्री को कार्यभार सौंपा गया। समाज के सच्चे सेवक ने जैन ट्रेनिग कालेज का कार्यभार सिर पर होने के वावजूद भी गुरुकुल का उत्तरदायित्व सहर्ष स्वीकार किया और थोडे ही समयान्तर में आपने अपनी अनवरत तपश्चर्या, अथक उद्योग एव अतिशय सहनशीलता के परिणाम स्वरूप गुरुकुल के लिए निभाव फड, स्थायी फड, निजी मकान तथा सभी साधन-सामग्रियाँ जुटा लीं।

आपकी दीर्घकालीन तपस्या तथा कर्तव्य-पालनता केवल एक ही उदाहरण से प्रगट हो जाती है कि जव एक वार आपके पिताश्री की अस्वस्थता का वुलाने का तार आया और आपने प्रत्युत्तर में यही जवाव दिया कि 'मेरे पर सस्था के वालको की सेवा का और उन पर मातृ-पितृ-वात्सल्य का भार है अत मै उक्त फर्ज को छोडकर आने में असमर्थ हूँ।' ऐसे उदाहरण समाज में कम ही देखने को मिलते है।

जैन गुरुकुल व्यावर का यथोचित ढग से सचालन करते हुए आपके द्वारा मारवाड की अनेक छोटी-वडी शिक्षण-सस्थाओ को सत्प्रेरणा एव सक्रिय सहयोग मिलता रहा।

श्री बृहत् जैन थोक सग्रह तथा तत्त्वार्थ-सूत्र का आपने सम्पादन किया है।

सन् १९३२ में अजमेर बृहत् साधू सम्मेलन व उसकी भूमिका के समान अनेक प्रान्तीय सम्मेलनो में आपकी सेवाएँ अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। कान्फ्रेंस के पचम अधिवेशन से लेकर आज तक के अधिवेशनो एव उसकी जनरल कमेटी की प्रत्येक बैठको में आपकी उपस्थिति अनिवार्य रही है और कान्फ्रेंस की अनेक विध-प्रवृत्तियो को आप श्री ने साकार रूप प्रदान किया।

मारवाड को अपनी साकार सेवा का केन्द्र बना देने पर भी काठियावाड, पजाव एव खानदेश की शिक्षा एव धर्मज्ञान प्रचार और साधु-सगठन के प्रत्येक आन्दोलन से आप कभी भी अलिप्त नही रहे। आपने सामाजिक एव धार्मिक सेवाएँ करते हुए अपने ऊपर टीकाओ एव निन्दाओ की बौछारें बडे ही धैर्यभाव से सहन कीं। सेवा करते ही जाना किन्तु कर्तव्य नहीं छोडना ही आपका चरम लक्ष्य रहा।

वर्तमान में आपने सघ ऐक्य योजना के मन्त्री पद को सँभालकर उसे मूर्तस्वरूप दिया। धार्मिक शिक्षण समिति का मन्त्री पद सँभालकर कार्य को वेग दिया। आप इस समय कान्फ्रन्स ऑफिस के मान्य मन्त्री तथा 'जैन-प्रकाश' के ऑ० सम्पादक भी है।

इस प्रकार आपकी अथक और सतत् नि स्वार्थ सेवा तथा कर्तव्यनिष्ठता के लिए स्था० समाज सदैव आभारी है और भविष्य में भी आपकी सेवाओ के लिए बडी-बडी आशाएँ रखता है।

मध्य भारत के प्रमुख कार्यकर्ता

श्री सेठ कन्हैयालालजी सा० भण्डारी इन्दौर

आप मूल निवासी रामपुरा के थे। आपने वहाँ की के लाभार्थ एव अपने पिता श्री की अमर यादगार में "श्री नन्दलालजी भण्डारी छात्रावास" एव यहा के चिकित्सालय में एक भवन नेत्र-चिकित्सा के लिए भी बनवाया है। आप रामपुरा पाटशाला के ट्रस्टी व आदि अध्यक्ष थे। श्री चतुर्थ वृद्धाश्रम, चित्तौड के भी आप अध्यक्ष थे। आप भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति एव मिल्स-मालिक थे। देशी औषधियो के विशेषज्ञ एव जैन समाज के सच्चे रत्न थे। आज उनके स्थान पर उन्हीं के लघुभ्राता श्री सुगनमलजी सा० भण्डारी समस्त कार्यों की पूर्ति तथा गौरव को वडी योग्यतापूर्वक वढा रहे हैं। समाज को भविष्य में आप से भी वडी-वडी आशाएँ हैं।
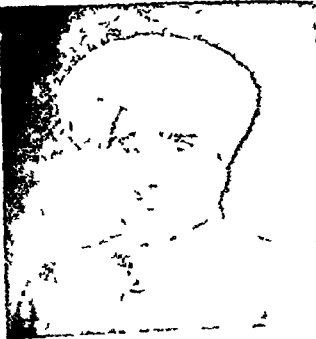
श्री सरदारमलजी भण्डारी, इन्दौर

आप इन्दौर के सुप्रसिद्ध 'सरदार प्रिंटिंग प्रेस' के मालिक है। आपको स्थानकवासी धर्म का गहरा अध्ययन है और यह कहा जाता है कि इस रूप से कार्य करने वालो में आपकी तुलना का अन्य व्यक्ति नही है। आप कई वर्षों से स्थानीय स्थानकवासी समाज की धार्मिक प्रवृत्तियो में मुख्य रूप से सक्रिय भाग लेते रहे हैं।

योग्यताओं से विभूषित होकर आपने होल्कर राज्य में शासकीय सेवाएँ स्वीकार कीं। पदोन्नत होते हुए वे आज कई वर्षो से क्षय-चिकित्सा विभाग के प्रमुख के रूप में कार्य कर रहे हैं। देश में बढ़े हुए इस रोग को नष्ट करने में आप सिद्धहस्त हो चुके है। फुफ्फुस की रोग युक्त अस्थि के स्थान पर कृत्रिम अस्थि आरोपित करने में भी आप विलक्षणत दक्ष हैं। सन् १९४७ में आपने अमेरिका की यात्रा की और वहाँ से आप एफ० सी० सी० पी० की उपाधि प्राप्त कर भारत लौटे।

आत एव पीडितजन के साथ आपकी सहानुभूति एव निस्वार्थ करुणा ने आपको सभी का प्रिय बना दिया है। आप न्यूट्रेशन रिसच इस्टीट्यूट के 'फेलो' भी रह चुके हैं। विश्व-स्वास्थ्य सघ ने आपको जिनेवा में सात मास तक विश्व-स्वास्थ्य की समस्याओं के सम्बन्ध में परामर्शदाता के पद पर प्रतिष्ठित रखा। आप 'भारतीय टी० बी० असोसिएशन' के सदस्य तथा 'क्षयपीडित सहायक सघ' के प्रधानमन्त्री हैं।

चिकित्सा-विज्ञान में और अधिक निपुणता सम्पादित कर आप अभी-अभी ही अपनी दूसरी अमेरिका-यात्रा सम्पन्न कर स्वदेश लौटे हैं।

'आध्यात्मिक विकास-सघ' का भी सयोजन स्वय डॉ० सा० ने मुनि श्री सुशीलकुमारजी शास्त्री की सत प्रेरणा से किया था। वास्तव मे डॉ० सा० स्था० समाज के गौरवान्वित श्रावक हैं।

भी आप की चेरी बन जाती थी। आप के इन कार्यो को सफल बनाने में स्व० रा० ब० सेठ कन्हैयालाल जी भण्डारी तथा उनके लघुभ्राता सेठ सुगनमल जी भण्डारी का शुभाशीर्वाद रहता था।

आप एक उत्साही एव कर्मठ कार्यकर्ता थे। किन्तु असाध्य रोग से पीडित रहने के कारण आप का अल्पायु में ही देहावसान हो गया।

श्री सागरमल जी चेलावत, इन्दौर

आप अ० भा० स्थानकवासी जैन कॉफ्रेंस की मध्यभारत, मेवाड प्रान्तीय शाखा की कार्यकारिणी के सदस्य हैं। आप जोधपुर से निकलने वाले साप्ताहिक 'तरुण-जैन' के सम्पादक मण्डल में भी हैं। इन्दौर नगर के स्थानकवासी समाज की प्रत्येक सामाजिक व धार्मिक कार्य में मुख्य रूप से सदैव सक्रिय भाग लेनेवाले एक क्रान्तिकारी नवयुवक हैं। आप निम्नलिखित सस्थाओं के मुख्य सक्रिय सहयोगी भी है—

१—आध्यात्मिक विकास सघ, इन्दौर।
२—श्री महावीर जैन सिद्धान्तशाला-सयोजक।
३—महिला कला-मन्दिर इन्दौर।

श्री मानकमल नाहर "विद्यार्थी" पत्रकार, इन्दौर

आप स्थानकवासी जैन-जगत् के तरुण कार्यकर्ता, लेखक तथा पत्रकार है। आप श्रीमान्

ढग से कार्य करके अपनी तरुणाई प्रकटाई है। आप तरुण जैन' के सहायक सम्पादक है। आपके विचार अत्यन्त सुलझे हुए तथा राष्ट्रीयता से ओतप्रोत रहते है। इन्दौर तथा मध्य-भारत के सामाजिक कार्यकर्ताओ मे अनवरत परिश्रम एव लगन के कारण आपने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। भविष्य में बनने वाले तथा विकसित होने वाले आप के उत्साही जीवन की हम पूर्णत सफलता चाहते है।

राय० सा० जमनालालजी रामलालजी, इन्दौर

श्री जमनालालजी

श्री रामलालजी

आप दोनो भाई धर्मनिष्ठ कीमती सेठ पन्नालाल जी कीमती रामपुरा निवासी के सुपुत्र है। आपका कारोबार दक्षिण हैदराबाद में जवाहारात का रहा। निजाम सरकार के आप विश्वासपात्र जौहरी थे। आप दोनो भाई बडे धर्मनिष्ठ और उदार है। आपकी तरफ से स्वर्गीय पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म० सा० का 'जैन तत्त्व प्रकाश' जैसा बडा ग्रन्थ और अन्य विविध जैन साहित्य प्रकाशित कराकर अमूल्य वितरित होता रहा है। आपकी धार्मिक क्रियाओ में अच्छी रुचि है। ब्रह्मचर्य चौविहार आदि खध रखते है। आप श्रद्धालु मुनिभक्त है और धर्म-कार्य में उदार दिल से हजारो का खर्च करते है।

स्व० पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म० सा० के आचार्य पदमहोत्सव का पूरा खर्च आप ही ने किया था। आपने एक लाख रुपये से "कीमती ट्रस्ट" बनाया है। जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला में आपने अपनी तरफ से "कीमती बोर्डिग हाऊस" बना दिया है। जैन गुरुकुल, ब्यावर के वार्षिक सभापति होकर रु० १०,००० की बीमा पोलिसी—भेंट की है। इन्दौर में आपकी तरफ से कन्याशाला चलती है और गरीबो को अन्न-वस्त्र और औषधी वितीर्ण की जाती है। रामपुरा में "श्री पन्नालालजी कीमती औषधालय" आपने बनवा दिया है और सरकारी औषधालय मे "जमनालाल रामलाल कीमती वोर्ड" बना दिया है। इस प्रकार आपकी उदारता, धर्मनिष्ठा, साहित्य और शिक्षा प्रेम की धारा समाज को प्रभावित करती रहती है। स्थानकवासी समाज और कान्फ्रेंस के आप अग्रगण्य है।

स० १९७६ में सथारा-सलेखनायुक्त पडित मरण पाकर आप स्वर्गवासी हुए।

छोगमलजी उम्मेदमलजी छाजेड, रतलाम

ये दोनो भाई रतलाम के निवासी थे। दोनो में प्रेम ऐसा था कि आप लोग इन्हे कृष्ण और बलभद्र के नाम से कहा करते थे। शरीर के वर्ण से भी एक श्याम और दूसरे गौर वर्ण थे। दोनो भाइयो के कई वर्षों से चारो खद के त्याग थे। एक साल में १५१ छकाया करते थे और ५१ द्रव्यके उपरान्त यावत् जीवन के त्याग थे।

छोटे भाई छोगमलजी का सन् १९७३ में स्वर्गवास हुआ। वडे भाई उम्मेदमलजी का स० १९७९ में कार्तिक सुदी ६ को स्वर्गवास हुआ। आपने अन्त समय में पूज्य माधव मुनिजी से सथारा ग्रहण किया था।

श्री नाथूलालजी सा० सेठिया, रतलाम

आप एक होनहार और उत्तम व्यक्ति है। आपका जन्म स० १९९१ में हुआ था। आपके पिताजी श्री हीरालालजी सा० भी सज्जन पुरुष एव उत्साही थे तथा आपकी धर्म-भावना अत्यन्त प्रशसनीय थी। आप प्रतिवर्ष अपने परिवार को लेकर मुनि-महात्माओ के दर्शनार्थ पधारते थे। अपने पिताजी के धार्मिक सस्कार पुत्र में भी उतरना स्वाभाविक है।

अपनी अल्पवय में ही आपने व्यवसाय सँभाला और उसे वढाना प्रारम्भ कर दिया। सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्रो में आपने वहुत अधिक लोकप्रियता प्राप्त की है। आप वडे ही मिलनसार, हँसमुख एव प्रतिभासम्पन्न है। आपने स्थानीय सघ के कार्यों में तन-मन-धन से सहयोग दिया और दे रहे है। आपकी धार्मिक भावना भी वहुत अच्छी है। प्रतिदिन सामायिक व्रत में आप दृढ है। सन्त-मुनिराजों की सेवा भक्ति में आप सदा अग्रसर रहते है। आप रतलाम श्री सघ के अध्यक्ष है। इस कार्य का वडी योग्यतापूर्वक आप सचालन कर रहे हैं।

श्री वालचन्दजी सा० श्रीश्रीमाल, रतलाम

आप रतलाम के निवासी, धर्म-प्रेमी, नित्यनियम में चुस्त, शास्त्रो के चिन्तन-मनन तथा पठन-पाठन में उत्सुक दृढ श्रद्धावान् श्रावक है। स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा० के आप अनन्य भक्त हैं। वर्षो तक श्री हितेच्छु श्रावक मण्डल का काम वडी योग्यता एव दक्षता के साथ सँभाला था। मण्डल के तथा धार्मिक परीक्षा वोर्ड के आप मानद् मन्त्री रहे। इसी मण्डल से आप द्वारा प्रकाशित सम्पादित एव लिखित साहित्य अपना अग्रिम स्थान रखता है। सवत् १९९५ में कॉन्फ्रेन्स ऑफिस में दो वर्ष तक रहकर अपनी सेवाएँ आपने अर्पित की थीं। अजमेर सम्मेलन के समय Treasurer के रूप में काम सँभाला था। कॉन्फ्रेन्स के तत्कालीन सभापति श्री हेमचन्दभाई के हाथो से कॉन्फ्रेन्स की तरफ से आपको स्वर्ण-पदक प्रदान किया था। मण्डल ने आपको सन्मान-थैली दी थी वह आपने मण्डल को भेंट कर दी।

आप इस समय ६७ वर्ष के है। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा सराहनीय है। आदर्श श्रावक हैं।

श्री मूलचन्दजी भडारी, रतलाम

श्री भडारी का जन्म सन् १८७५ में हुआ था। आप एक निर्धन कुटुम्ब में उत्पन्न हुए थे, परन्तु अपने पुरुषार्थ से आपने सवालाख रुपये की सम्पत्ति पैदा की थी। आपने अपने जीवन में ८५,००० हजार रुपये से अधिक का दान किया। श्री धर्मदास जैन मित्र मडल के तो आप सर्वेसर्वा थे। मडल की स्थापना तथा प्रगति में आपका प्रमुख हाथ था। उसकी हरएक प्रवृत्ति में आप सक्रिय भाग लेते थे।

धार्मिक लगन आपकी प्रशसनीय थी। आपकी तर्कशक्ति भी उल्लेखनीय थी। थोकडो तथा सूत्रो का आपको अच्छा ज्ञान था। अन्त में आप ता० ३१-३-१९४० को ६५ वर्ष की उम्र में स्वर्गवासी हुए।

श्री मोतीलालजी सा० श्री श्रीमाल, रतलाम

आपका जन्म स० १९४९ में हुआ था। आपके पिता श्री रिखवदासजी श्रीश्रीमाल वहुत ही धर्मात्मा और ज्ञानी थे। यद्यपि आपका व्यावहारिक शिक्षण नगण्य ही हुआ तथापि आप प्रकृति के सौम्य, शान्त और कोमल हैं। धर्म पर आपकी प्रगाढ श्रद्धा है। वाल्यावस्था में ही आपने जमींकन्द का त्याग कर दिया। रतलाम में जैन ट्रेनिंग कॉलेज जब प्रारम्भ हुआ तव आपके भ्राता श्री वालचन्दजी सा० ने आपको इस कॉलेज में प्रविष्ट करा दिया। एकाग्रता से शिक्षण प्राप्त कर आपने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो त्रैवार्षिक महोत्सव में श्री रतलाम नरेश के कर-कमलो से स्वर्ण-पदक प्राप्त किया। उक्त कॉलेज में कुछ समय तक सुपरिन्टेण्डेण्ट का भी कुशलता से काम किया। शिक्षा में अभिरुचि होने के कारण आपने अभ्यास जारी रखा और क्रमश वढते हुए वी० ए० पास कर लिया। कई वर्षो तक श्री धार्मिक परीक्षा बोर्ड, रतलाम के मन्त्रीपद पर आपने कार्य करके समाज में धार्मिक शिक्षण के महान् कार्य में हाथ वँटाया।

श्री सेठ हीरालालजी सा० नांदेचा, खाचरौद

आप श्रीमान् सेठ स्वरूपचन्दजी सा० के पौत्र तथा श्री प्रतापचन्दजी सा० के सुपुत्र हैं। आपका मूल निवास धार जिले में मुलथान गाँव है परन्तु आपकी अल्पायु में ही दादाजी एव पिताजी का स्वर्गवास होने से खाचरौद स्थित अपनी दुकान को सँभालने के लिए आपकी माताजी आपको लेकर खाचरौद आई और तभी से आप यहाँ रहने लगे। आपकी शिक्षा आदि की देखरेख श्री इन्दरमलजी सा० कोठारी के सरक्षण में हुई। आपकी बुद्धि वडी तीक्ष्ण थी अत स्वल्प समय में ही शिक्षा ग्रहण कर अपना फैला हुआ कारोबार सँभाल लिया। आप वडे ही मिलनसार, बुद्धिमान् तथा हँसमुख सज्जन है। श्री जैन हितेच्छु श्रावक मण्डल के आप अध्यक्ष के रूप में कई वर्ष तक सेवा देते रहे। इसके अतिरिक्त कॉन्फ्रेन्स की मध्यभारत शाखा के आप वर्तमान में अध्यक्ष हैं।

समाज में शिक्षा-प्रचार के कार्य में आप वडी दिलचस्पी के साथ भाग लेते हैं और शिक्षा सस्थाओ तथा छात्रो को समय-समय पर प्रोत्साहन देते रहते हैं। खाचरौद में चलने वाले श्री जैन हितेच्छु मण्डल विद्यालय को उसके प्रारम्भ से लेकर अव तक प्रतिमाह २००) आप देते रहे। अव जव कि यह विद्यालय वन्द हो गया है उसको दी जाने वाली रकम में से प्रतिवर्ष लगभग १०००) निर्धन छात्रो को देकर ज्ञानदान में सक्रिय हाथ वँटाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के सुख-दुख के प्रसगो पर उपस्थित होकर उसके सुख-दुख में हाथ वँटाते हैं।

इस प्रकार क्या सामाजिक और क्या सार्वजनिक क्षेत्रो में आपकी लोकप्रियता "दिन-दूनी रात चागुनी" वढ रही है।

श्री चाँदमलजी सा० पितलिया, जावरा

आप श्रीमान् सेठ अमरचन्द जी सा० के लघुभ्राता सेठ वच्छराज जी के सुपुत्र थे। स० १९४३ मे आप का जन्म हुआ था। आप के पिता जी का अल्प आयु में ही देहावसान हो जाने के कारण आपकी शिक्षा आदि का प्रबन्ध सेठ अमरचन्द जी सा० को ही करना पडा। आप बडे ही उत्साही-सेवाभावी सज्जन थे। कॉन्फ्रेंस का दूसरा अधिवेशन रतलाम में हुआ था तब आप ने बडी सफलता के साथ खजांची का काम किया। इसके अतिरिक्त कॉन्फ्रेंस की मालव प्रान्तीय शाखा के कई वर्ष तक सेक्रेटरी के रूप में समाज के लिए अपनी सेवाएँ समर्पित कीं। जावरा संघ के आप अग्रगण्य नेता थे तथा प्रत्येक शुभ कार्य में आपका सहयोग रहता था। प्रत्येक व्यक्ति के प्रति आपका व्यवहार सराहनीय रहता था। स० १९९५ में स्वर्गीय पूज्य श्री श्रीलालजी म० सा० चातुर्मास कराकर जावरा संघ को यशस्वी बनाया था। इस प्रकार सामाजिक तथा धार्मिक

क्षेत्रो को अपने सुकृत्यो से प्रभावित करते हुए मालवा की इस महान् विभूति का स० १९८३ में स्वर्गवास हो गया।

फूल नहीं रहा किन्तु उसकी सुवास अब तक विद्यमान है।

श्री सुजानमलजी मेहता, जावरा

आप जवरा के निवासी श्रीमान् सौभागमल जी सा० मेहता के सुपुत्र है। आप को हिन्दी, उर्दू, अग्रेजी और गुजराती का अच्छा ज्ञान है। आप कपडे के व्यापारी एव कमीशन एजेन्ट है।

श्री सुजानमलजी मेहता

सामाजिक और धार्मिक प्रवृत्तियो और गति-विधियो के आप प्रमुख आधार है। आप वर्तमान में श्री वर्द्धमान जैन युवक मण्डल के अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस एव सघ ऐक्य सचालक समिति की मध्यभारत एव मेवाड प्रान्तीय शाखा के मानद् मन्त्री व स्थानीय श्रावक सघ के मन्त्री हैं। नगरपालिका के आप सम्मानित निर्वाचित सदस्य है। इनके अतिरिक्त अनेक सामाजिक, धार्मिक तथा स्थानीय सस्थाओ और समितियो के अध्यक्ष, मन्त्री तथा सदस्य है।

इनके अतिरिक्त जावरा क्लॉथ मर्चेंट्स असोसिएशन के मन्त्री, नगर कांग्रेस के कोषाध्यक्ष व अन्य कई सस्थाओं के पदाधिकारी व प्रमुख कार्यकर्ता रहे हैं।

आपने कई बार कॉन्फ्रेंस द्वारा आयोजित डेपुटेशनो में सम्मिलित हो कर समाज-सेवा में पूर्णरूप से तन-मन-धन से सक्रिय सहयोग दिया है और दे रहे हैं।

श्री सौभाग्यमलजी मेहता

पिछले तीन वर्षो से कान्फ्रेन्स की प्रान्तीय शाखा के मानद् मन्त्री के रूप में अथक परिश्रम किया है। अभी-अभी मध्यभारत एव मेवाडप्रान्तीय श्रावक सम्मेलन आयोजित कर आगामी भीनासर के अधिवेशन की पृष्ठभूमिका तैयार कर महान् कार्य किया है।

समाज को आप से बडी-बडी आशायें है, जिसका पूर्वाभास हमें अभी से होने लगा है।

श्री चम्पालाल जी सा० कोचेटा, जावरा

आज के इस दूषित वातावरण में धर्मानुराग और सच्ची समता का जीवन देखना हो तो श्री चम्पालाल जी सा० को देख ले। निर्धन परिवार में जन्म लेकर आपने आशातीत सफलता के साथ व्यापार में प्रगति की। अर्थ-सचय ही आपके जीवन का उद्देश्य नही है। अब तो आपने जीवन का समस्त भाग धर्माराधन में लगा दिया है। आप प्रतिदिन पाँच सामायिक और प्रतिक्रमण करते है। गर्म पानी का सेवन करते हैं

और एक ही समय भोजन करते है। भोजन-पदार्थो में भी जीवन के लिए अनिवार्य वस्तुओ के अतिरिक्त सभी वस्तुओ का त्याग कर दिया है। इस प्रकार आपका जीवन पूर्णरूप से सयत-नियमित एव मर्यादित है। आप अनेक सस्थाओ के सरक्षक एव समाज के अग्रगण्य व्यक्ति हैं। श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावकसघ, जावरा के आप मनोनीत अध्यक्ष हैं।

आप के सुयोग्य पुत्रो में श्री सौभाग्यमल जी कोचेटा, श्री राजमलजी कोचेटा B A L-L B एव श्री हस्तीमल जी कोचेटा तीनो ही सामाजिक कार्यो में प्रमुखता से भाग लेते हैं। श्री सौभाग्यमल जी सा० तो समाज के सुयोग्य लेखक और वक्ता हैं।

श्री केशरीचन्दजी भण्डारी, इन्दौर

आप देवास के निवासी थे और बाद में इन्दौर रहने लग गये थे। स्थानकवासी जैन समाज के कर्मवीर और उत्साही कार्यकर्ताओ में से आप एक थे। कॉन्फरन्स के प्रत्येक अधिवेशन में आप सम्मिलित होते थे। आप बडे अनुभवी, सरल स्वभावी, धर्मात्मा और विद्वान थे। आप को प्राचीन बातो की खोज का बडा शौक था। आप ने अग्रेजी में एक Notes on the Sthanakwası Jain पुस्तक भी लिखी थी। देवास समाचार' नामक पत्र का आप ने सम्पादन भी किया था। अर्धमागधी शब्द सग्रह का कार्य आप ने ही सर्व प्रथम आरम्भ किया था। बाद में इस कार्य के महत्व को कान्फरन्स ने समझा और उसे शतावधानी प० मुनि श्री रत्नचन्द जी म० के सम्पादकत्व में सम्पन्न कराया।

अर्धमागधी कोष के निर्माण तथा प्रकाशन में आपका विशिष्ट हाथ रहा है।

अन्त समय में आप को लकवा हो गया था। कई उपचार कराये गये, पर ठीक न हुआ और आपका स्वास्थ्य गिरता ही चला गया। स० १९८१ श्रावण सुदी ५ को आप स्वर्गवासी हुए। आप के बाद अर्धमागधी कोष का प्रकाशनकार्य पूर्ण किया था।

श्री भीमसिहजी सा० चौधरी, देवास

आप श्रावक सघ के अध्यक्ष है। आप वकील है और राजघराने में आपका बडा सम्मान है। केवल जैन समाज में ही नहीं अन्य सभी सामाजिक सस्थाओ में आप किसी-न-किसी रूप में भाग लेते है। आप उत्साही एव मिलनसार कार्यकर्ता है।

श्री मोतीलालजी सा० सुराना, देवास

आज श्रावक सघ के मन्त्री, नगर कॉग्रेस के अध्यक्ष मण्डी कमेटी के अध्यक्ष, जिला सहकारी बैंक के डायरेक्टर तथा अनेक जिला और नगर की सस्थाओ के प्रमुख पदाधिकारी हैं। रामपुरा, इन्दौर तथा अमृतसर की कई सस्थाओ में भी आप अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान कर चुके हैं। नि स्वार्थ सेवा ही मानो आपके जीवन का लक्ष है। राजनीतिक, सामाजिक एव धार्मिक सस्थाओ में आपका सदैव एक विशिष्ट स्थान रहा है।

श्री चादमलजी वनराजजी जैन, देवास

सेठ लक्ष्मीचन्द जी केशरीमलजी फर्म के ये उभय बन्धु धार्मिक कार्यो में सदैव आर्थिक सहयोग प्रदान करते है। आप दोनो ही स्थानीय कई सस्थाओ के सम्माननीय पदाधिकारी हैं।

सेठ रतनलालजी मुन्नालालजी, देवास

वृद्धावस्था होने पर भी सदैव लगन के साथ धार्मिक कार्यो में उत्साहपूर्वक तन-मन-धन से सहयोग देते हैं। आपके सुपुत्र माणकलाल जी भी उत्साही कार्यकर्ता हैं।

श्री किसनसिहजी, लक्ष्मणसिहजी, दौलतसिहजी, देवास

तीनो बन्धु सामाजिक कार्यो में अदम्य उत्साह के साथ भाग लेते है। सुधारक तथा शास्त्रो के ज्ञाता है तथा राज्य में भी आप लोगो का सम्मान है।

श्री शिवसिहजी सराफ, देवास

आपका जीवन धर्म-नियमो के अनुसार बडा ही नियमित है। आडम्बररहित सदंव धार्मिक कार्यो मे आप ठोस मदद देते है।

सेठ राजमल जी हीरालालजी, देवास

आप धार्मिक कार्यों में अदम्य उत्साह से भाग लेते है तथा तन-मन-धन से सहयोग देते है।

श्री नन्नूमलजी, देवास

उत्साही एव मिलनसार सामाजिक कार्यकर्ता है। सदैव धार्मिक कार्यों में हर प्रकार से सहयोग देते है।

श्री विजयकुमारजी जैन, देवास

अठारह वर्षीय प्रतिभाशाली यह छात्र सदैव धार्मिक तथा सामाजिय प्रवृत्तियो में उत्साह के साथ सहयोग देते हैं। साहित्यिक तथा उत्कृष्ट चित्रकार है।

श्री केशरीमल जी, शिवसिंह जी, रतनलाल जी, रणबहादुरसिह जी, राजमल जी, चैनसिह जी आदि सज्जन भी सदैव उत्साह के साथ धार्मिक प्रवृत्तियो में सहयोग देते है।

श्री पारसचन्दजी सा० मुथा, उज्जैन

आपका जन्म सन् १९२१ में हुआ। आप प्रसिद्ध समाज-सेवी तथा श्रीमन्त छोटमल जी मुथा के सुपुत्र है। अपने पिता के समान ही धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में आपका भी प्रमुख हाथ रहता है। आप एक कर्मठ नवयुवक कार्यकर्ता है किन्तु कभी भी आगे आने का प्रयत्न नहीं करते। अवन्तिका में आयोजित अखिल भारतीय सर्व धर्म-सम्मेलन की सफलता में आपका योगदान महत्त्वपूर्ण रहा। समाज को और अधिक सेवाएं आपसे प्राप्त होने की आशा है।

श्रीमान सेठ छोटेमलजी सा० मुथा, उज्जैन

आपका जन्म संवत् १९४५ फागुन सुदी ७ को हुआ था। बाल्यावस्था से ही अध्ययन की ओर आपकी अत्यन्त रुचि थी। चौदह वर्ष की अवस्था में ही इतिहास सीखने के लिए एक पुस्तिका आपने प्रकाशित करवाई थी, जिसका प्रचार उन दिनो में अत्यधिक हुआ था। किशोरावस्था में ही आपके पिता एव बडे भाइयो का स्वर्गवास हो गया था। उस समय आपकी उम्र केवल १५ वर्ष की थी। आपने अपनी कुशाग्रबुद्धि से व्यापार कर प्रसिद्धि प्राप्त की थी। कान्फ्रेन्स के मोरवी और रतलाम के अधिवेशनो में आपका काफी सहयोग रहा था। धर्मध्यान की ओर आपका विशेष लक्ष था। गत चार वर्षों में अस्वस्थ रहते हुए भी मुनिराजो की बडी भक्ति-भाव से सेवा करते थे। आपका स्वर्गवास सवत् २०१२ असौज वदी ६ को हुआ।

श्री मानमलजी मुथा, रतलाम
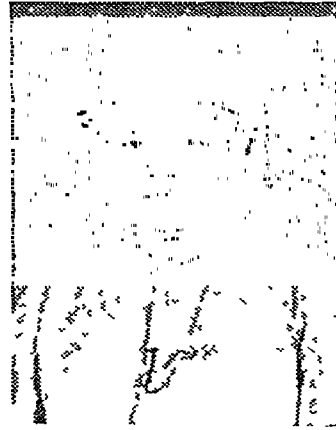
आप सेठ श्री उदयचन्द जी मुथा के सुपुत्र है। समाज एव धर्म के प्रति आप अत्यन्त कर्त्तव्यनिष्ठ है। सर्व धर्म सम्मेलन उज्जैन में आपका सहयोग उल्लेखनीय रहा है।

श्री लक्ष्मीचन्दजी सा० राका, शुजालपुर (म० भा०)

आप स्थानकवासी समाज के अग्रणी श्रावक हैं। आपका समाज के दानवीरो में प्रमुख नाम है। आपने अपना निजी भवन कन्या पाठशाला को दे दिया है जिसकी लागत करीब २० हजार रु० है। आपका खानदान बडा ही यशस्वी है। लेन-देन का व्यापार होता है। आप सुप्रसिद्ध व्यापारियो में से हैं।

श्री सौभाग्यमलजी जैन राजस्व-मन्त्री, मध्यभारत

श्री सौभाग्यमल जी जैन का जन्म मालवा प्रदेश के ऐतिहासिक नगर शुजालपुर के एक सम्पन्न परिवार में हुआ। बाल्यावस्था में आपका लालन-पालन बडे लाड-चाव से होने पर भी सामाजिक कार्यो की ओर आपकी अभिरुचि उसी समय से स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी थी। सर्वप्रथम सवत् १६२७ में आप श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेन्स के अधिवेशन बीकानेर में सम्मिलित हुए। उनके पश्चात् सन् १६३३ में जैन कॉन्फ्रेन्स के अजमेर अधिवेशन में फिर १६४६ में मद्रास अधिवेशन में सम्मिलित हुए, जैन-समाज सम्बन्धित कार्यो में अवसर आने पर आपकी सेवायें सदैव समर्पित रहीं—धार्मिक प्रश्नो पर आप उदार विचार के हैं। सन् १६३० से आप राष्ट्रीय प्रवृत्तियो और कार्यक्रमो में सक्रिय भाग लेने लगे। आपने वकालत परीक्षा पास की और सन् १६३१ से शुजालपुर में ही वकालत शुरू कर दी। आपकी गणना जिले के सफल वकीलो में की जाती रही है।

सामाजिक प्रवृत्तियो की ओर रुचि आपकी विशेषतया है। अनेक सामाजिक सस्थाएँ आपके मार्ग-दर्शन में चल रही हैं। आप काग्रेस की मुकामी और जिला कमेटियो के अध्यक्ष तो रहे ही, मध्यभारत प्रादेशिक समिति की कार्यकारिणी के भी सदस्य रहे और मध्यभारत-निर्माण के बाद मध्यभारत प्रान्तीय काग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य भी रहे हैं।

विधान सभाओ के सम्बन्ध में आपका दीघकालीन अनुभव है। सन् १६४५ में आप ग्वालियर राज्य धारा-सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। धारा-सभा-दल की ओर से आप डिप्टी लीडर चुने गये। बाद को राज-सभा तथा प्रजा सभाके एक हाउस हो जाने के कारण आप प्रजा सभा के सदस्य रहे। मध्यभारत निर्माण के समय भी जो धारा-सभा बनी, उसके भी आप पुन सदस्य चुने गये। इस प्रकार सन् १६४५ से आप लगातार धारा-सभा के सदस्य रहे हैं, जिससे ग्वालियर राज्य और बाद में मध्य-भारत की विधान-सभा में आपकी सेवाओ से शासन के कार्य की प्रगति में बडी सहायता मिली है। आप अपने राजनीतिक जीवन में गुटबन्दी और पारस्परिक वैमनस्य-पूर्ण कार्यो से सर्वथा अलग रहे और बहुत-कुछ इसी कारण से आप सन् १६५१ तक मन्त्रीपद के निमन्त्रण को अस्वीकार करते रहे।

मध्यभारत-निर्माण के पश्चात् मध्यभारत धारा-सभा का निर्माण हो जाने पर आप उसमें धारा-सभा के प्रथम कार्यवाहक अध्यक्ष रहे। मार्च, १६५२ में मध्यभारत नवनिर्मित विधान-सभा के उपाध्यक्ष पद पर आप निर्वाचित हुए थे और इसके बाद आपने मन्त्री-मण्डल में सम्मिलित हो जाने से त्यागपत्र दे दिया।

श्री सौभाग्यम लजी जैन सफल वकील, कर्मठ कार्यकर्ता और प्रसिद्ध साहित्य-प्रेमी हैं। आप जितने अधिक मौन और सादगीप्रिय हैं उतने ही अधिक कर्मण्य हैं। इसी कारण आप स्वतन्त्र भारत के प्रथम चुनावो में काग्रेस के आदेश पर अपने निवास-स्थान शुजालपुर से चुनाव मे खडे न होकर आगरा से खडे हुए और वहाँ के साथी कार्यकर्ताओ के सहयोग से रामराज्य परिषद्, जनसघ और समाजवादी उम्मीदवारो को हराकर आप विजयी हुए। मध्यभारत के राजनीतिक क्षेत्र मे आप अधिक मौन, सजीदगी और सादगीप्रिय हैं तथा अपनी कर्मण्यता के लिए प्रसिद्ध हैं। आप उच्च कोटि के साहित्य-प्रेमी हैं। हिन्दी तथा अग्रेजी के साथ-साथ आप उर्दू और फारसी भाषाओ के भी ज्ञाता हैं। आपकी अध्ययनशीलता तथा साहित्यानुरागी होने का पता पुस्तको के उस विशाल सग्रह से चलता है, जिसमें साहित्य और अन्य विषयो के उत्तमोत्तम ग्रन्थ सग्रहीत हैं। आप साहित्यकारो को निरन्तर प्रोत्साहित करते रहते हैं, आपका जीवन जितना अधिक सादगीपूर्ण है, स्वभाव उतना ही मधुर है, जिसने आपको जग-जीवन में लोकप्रिय बना दिया है।

श्री केसरीमलजी मगनमलजी राका, शुजालपुर, म० भा०

आप स्थानकवासी समाज में प्रमुख कार्यकर्ता हैं। आपके सुपुत्र का नाम श्री वसन्तीलालजी है। आप भी अपने पिता श्री की तरह ही सुयोग्य एव विद्वान् हैं। मडी में आपके क्लोथ मर्चेन्ट और आढत का कार्य अच्छा चल रहा है। प्रतिवर्ष हजारो का व्यापार होता है। आप एक उच्चकोटि के दानी भी हैं। आपके घर से कोई खाली हाथ नहीं जाता। आपका पूर्ण सादगीमय जीवन है। समाज की सेवा में आप तन, मन, और धन से हाथ बँटाते हैं और अपना अहोभाग्य समझते हैं। समाज को आप जैसे कर्मठ दानियो से भविष्य में पूर्ण आशाएँ हैं।

श्री किशनलालजी सा० चौधरी, पोरवाल

आपका शुभ जन्म स० १९५५ की कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को शुजालपुर में हुआ था। आपके पिता जी श्री का शुभ नाम गिरनारसिंह जी हैं। आप स्था० समाज के प्रमुख व्यक्तियो में से हैं। आपके चार सुपुत्र हैं जिनके क्रमशः नाम श्री मोतीलालजी, श्री हुक्मीचन्दजी, श्री राजेन्द्र-कुमारजी, और श्री शान्तिकुमारजी हैं। चारो ही सुपुत्र धर्म-शील एव उत्साही कार्यकर्ता हैं। आपके पूर्वज स्व० श्री मन्सुखलालजी ने एक मकान बनवाकर स्थानक के लिए स्थानीय श्री सघ को भेंट कर दिया था जिसकी लागत आज अनुमानत ८०००) रु० समझी जाती है। अब वह श्री व० स्था० जैन श्रावक सघ के अधिकार में है। आपके पूर्वजो से ही सस्थाओ को उदारतापूर्वक दान देने की प्रणाली चली आ रही है। आपने जनता की सेवा खूब तन-मन से की। जिसके उपलक्ष्य में आपको ग्वालियर सरकार की ओर से एक पोशाक और सनद सर्टिफिकेट दिया गया। आपकी सादगी एव उदारता लोकप्रिय हैं। आप मधुरभाषी भी हैं। समाज के हर कार्य में दक्ष हैं। वर्तमान में आप कोषाध्यक्ष हैं।

श्री मनसुखलालजी भँवरलालजी पोरवाल गुजराती

आपका शुभ जन्म १९७३ में शुजालपुर ग्राम नलखेडा में हुआ था। आपके पिता श्री का नाम श्री पदमसिंहजी था। आप स्थानीय स्थानकवासी समाज में प्रमुख व्यक्ति है। आपने एक पुत्र गोद लिया जिनका शुभ नाम सतोषी-लालजी है। श्री सन्तोषीलालजी के भी दो पुत्र हैं जिनके क्रमश शान्तिलालजी व पोखरमलजी नाम हैं। आपने अभी-अभी सामाजिक कार्यो में धर्मशाला के लिए एक मुश्त २५०००) रु० देने की भावना अभिव्यक्त की है। आप धनीमानी एवं धार्मिक विचारो के सद्गृहस्थ है। प्रत्येक धर्मकार्य में दिलचस्पी से काम करते हैं। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है। प्रकृति से आप भद्रिक, सन्तोषी, सज्जन और मिलनसार हैं। हर एक सस्था को खुले दिल से दान देते हैं।

स्वर्गीया श्री सुन्दरबाई, शुजालपुर

आपका जन्म स० १९२९ में सीतामऊ ग्राम में हुआ था। आप का विवाह शुजालपुर निवासी श्री ओकार-लालजी चौधरी के साथ हुआ था। आप में सेवा व त्याग की उच्च कोटि की भावना थी। आपने अपने जीवन में अमीरी और गरीबी के दिन भी देखे थे। गरीबी भी ऐसी कि २-३ पैसो का १५ सेर अनाज पीसती, कपडो की सिलाई करतीं और इस प्रकार ३-४ आने आजीविका के लिए उपार्जन करतीं। विपत्ति के इन कठिन दिनो में भी आप घबराई नहीं। आपका पूरा जीवन एक सघर्ष का जीवन है, दृढ चट्टान के समान आपने अपने जीवन-काल में कठोर-से-कठोर आघात सहे थे।

आप प्रतिदिन निराश्रितो एव दीन-दुखियो को भोजन कराये विना आप भोजन नहीं करती थीं। रसनेन्द्रिय को वश में करने के लिए दूध में शक्कर के बदले नमक-मिर्च डालकर ग्रहण करती थीं।

आप में दयालुता की भावना कैसी थी—यह इस उदाहरण से जाना जा सकता है। एक बार आप तागे में बैठकर कहीं जा रही थीं। रास्ते में तागे वाले ने घोडे को

आत्मविश्वास आप में ऐसा गजब का था कि एक बार आपने अपने एक भयकर गाठ का उपचार भाप द्वारा कर लिया, जिसके लिए डाक्टर शल्य-चिकित्सा अनिवार्य वतलाते थे। भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने के लिए आपने श्री व्रिजलालजी वियाणी को अपनी इच्छा प्रकट की थी किन्तु आपकी अवस्था को देखकर श्री वियाणीजी ने मना कर दिया।

अपने अन्तिम समय में आपने औषधी ग्रहण नहीं की अपितु सथारा कर अपना प्राणोत्सर्ग किया। आजके देहावसान पर आपके सुपुत्रो ने हजारो रुपये सुकृत कार्य के लिये निकाले।

निस्सन्देह आप एक आदर्श नारी थीं, जिसके जीवन के कण-कण से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

श्री देवेन्द्रकुमारजी जैन, शाजापुर

आप श्रीमान् गेंदमल जी पोरवाड के पुत्र तथा श्री वर्धमानजी सराफ के पौत्र हैं। आपने अल्पआयु में ही M com LL B तथा साहित्यरत्न की उपाधियाँ प्राप्त कर ली हैं। आप श्रम-विधान तथा रशियन भाषा के भी विशेषज्ञ हैं। इस समय आप मध्य भारत के वित्तमत्री माननीय श्री सौभाग्यमलजी जैन के पूर्व-अभिभाषण-कार्यालय, शाजापुर को सचारुरूप से चला रहे हैं। इसके साथ ही आय-कर

श्री आष्टा निवासी श्री फूलचन्दजी सा० वनवट

आप स्थानकवासी समाज के प्रमुख कार्यकर्ता हैं। आप समाज में बडे गौरवशाली, सुदृढ धर्मी, समाज भूषण एव अदम्य उत्साही व्यक्ति हैं। आपके स्व० पिता श्री का नाम श्री प्रतापमलजी बनवट था। शहर में आपकी काफी ख्याति फैली हुई है। राज्यकीय कार्यों में आज भी और पहले भी प्रभावशाली स्थान रहा है। आपने चन्दनमल जी कोचर-फलौदी (मारवाड) निवासी, स्नातक जैन गुरुकुल ब्यावर को दत्तक पुत्र के रूप में लिया है। आप भी पूर्ण प्रभावशाली नवयुवक हैं।

श्री चन्दनमलजी वनवट, आष्टा (भोपाल)

आपका जन्म स्थान खींचन फलौदी (मारवाड) है। आपका शैक्षणिक स्थल श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर करीब सात वर्ष रहा है। बाल्यावस्था से ही आपकी प्रतिभा गुरुकुल परिवार में चमकने लगी थी। आपकी वक्तृत्वशक्ति, कवित्व शक्ति, लेखनकला, सगीत कला और मिलनसारिता आदि-आदि चेतनाएँ गुरुकुल समाज में चार चांद लगाती हुई थीं। कौन जानता था कि कोई साधारण स्थिति में बढ़कर एक ऐश्वर्य-सम्पन्न घर का मालिक बन जायेगा। किन्तु पूत के लक्षण पालने में ही नजर आने लगते हैं। यह कहावत आपको भली प्रकार चरितार्थ करती है।

से भारी बहुमत और सबसे अधिक वोट्स प्राप्त करने वाले सदस्य हैं। विधान सभा के चीफ विप (मुख्य सचेतक) हैं। आप भोपाल मध्यभारत राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के उपाध्यक्ष हैं। आपके यहाँ कृषि, लेन-देन थोकफरोश आदि हजारो का व्यापार चल रहा है। सामाजिक क्षेत्र में और धार्मिक क्षेत्र में भी आप अग्रणी हैं। तन,मन, एव धन से पूर्ण सहयोग देते हैं। सब कुछ होते हुए भी आपका जीवन सादगीमय है।

श्री प्यारचन्दजी सा० राका, सैलाना

आपका जन्मस्थान जावरा (मालवा) है किन्तु सैलाना वाले सेठ [illegible]जी के यहाँ आप गोद आए हैं। आपका धर्म-प्रेम अनुकरणीय है। स्थानकवासी जैन-सघ, सैलाने के आप अग्रगण्य हैं। प्रत्येक धार्मिक-कार्य में आप अग्रभाग लेते रहते हैं। [illegible] मुनि-सम्मेलन में आपने स्थानीय और आसपास के १५० से भी अधिक भाई-बहनों को एक ओर का रेलवे आदि का खर्चा देकर ले गए थे। अनेक धर्म-सस्थाओ को आपकी ओर से सहायता मिली है और मिलती रहती है। आपकी ओर से धार्मिक साहित्य भी भेंट स्वरूप प्रकाशित होता रहता है।

'श्रमणोपासक जैन पुस्तकालय' आप ही की उदारता का फल है। पुस्तकालय वाला भवन आपके स्व० पूज्य पिता श्री द्वारा धर्मध्यानार्थ सघ को दिया हुआ है।

सैलाना में बाहर से आने वाले धर्म-बन्धुओ का आतिथ्य कम-से-कम एक बार तो आपके यहाँ होता ही है। यह सब होते हुए भी आप में निरभिमानता तथा विनयशीलता इतनी है कि जो अन्यत्र बहुत कम मिलेगी।

श्री रतनलालजी सा० डोसी, सैलाना (मध्य भारत)

आप समाज के प्रसिद्ध तत्वज्ञ चर्चावादी, साहित्य-प्रणेता एव निष्ठावान चिन्तन-मननशील सेवाभावी दृढ आस्थावान कार्यकर्ता हैं। धार्मिक-क्षेत्र में—विशेषतया सन्त-मुनिराजो में—आई हुई अथवा आती हुई शिथिलताओ के प्रति आपका मानस अत्यन्त क्षुब्ध है। आप कट्टर सिद्धान्तों के अनुसार चलने वाले सिद्धान्तवादी हैं, जिसमें काल-मर्यादा का हस्तक्षेप भी अवाचछनीय है। नवीन-सुधारो के नाम पर जो विकार धार्मिक-क्षेत्र में अकुरित हो रहे हैं—उनके उन्मूलन के लिए आपकी लोह-लेखनी सदैव तैयार रहती है।

आप 'सम्यक् दर्शन' पत्र का सचालन तथा सम्पादन कर रहे हैं। कहना न होगा कि इस पत्र ने समाज में अपना अनेरा स्थान बना लिया है। आपकी मान्यता है कि निग्रन्थ धर्म में और इसके सिद्धान्तो में हम छद्मस्थ किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं कर सकते। समाज के धार्मिक-क्षेत्रो में पनपने वाली शिथिलताओ के लिए आप 'लाल बत्ती' हैं।

प्रसिद्ध चर्चावादी होने के नाते चर्चा में आपको बहुत आनन्द आता है। लोकाशाहमत समर्थन जैनागम विरुद्ध मूर्ति-पूजा, सोनगढी सिद्धान्त पर एक दृष्टि आप द्वारा लिखित ऐसे ग्रन्थ हैं जो किसी खास चर्चा से सम्बन्धित हैं। आप द्वारा लिखित तथा सम्पादित धार्मिक साहित्य अनेक प्रकाशन-सस्थाओ द्वारा प्रकाशित हुआ है।

श्री डोसीजी समाज तथा धार्मिक जगत् के एक सुदृढ़

स्तम्भ है—वल्कि प्रकाशस्तम्भ है। शास्त्रीय चर्चाओ की आपको विशेष आनन्द आता है। आपने अपना जीवन धार्मिक विचारो के स्थिर करने एव प्रसार करने में लगा दिया है। पूर्ण रूप से आस्थावान समाज के धार्मिक-क्षेत्र में यह ज्योतिर्मय नक्षत्र अपनी ज्योति-किरणो से धार्मिक-क्षेत्र को आलोकित करे—यही शासन देव से प्रार्थना है।

श्रीयुत मोतीलालजी माडोत, सैलाना

आप श्री सैलाना-निवासी है। समाज में आप एक आदर्श श्रावक की गणना में है। आपकी अवस्था वर्तमान में ५१ वर्ष की है। आपने कई वर्षो से ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिया है। नित्य प्रति कम-से-कम तीन विगय का तो त्याग करते ही है। आप अन्य तपस्या के साथ-साथ हमेशा एकासन करते है। अष्टमी चतुर्दशी को प्राय पौषध करते हैं और रात्रि-शयन स्थानक में ही होता है। रात्रि में दो वजे बाद धर्म जागरण में व्यस्त हो जाते है। आप परम वैराग्यावस्था का अनुभव कर रहे है। आपके पिता श्री भी मौजूद हैं। आपकी श्रीमतीजी ने एक पुत्र तथा चार पुत्रियो को जन्म दिया है। इस प्रकार धर्म-साधना में रत एव त्यागमय जीवन से सैलाना का स्था० समाज गौरवान्वित है। सरकारी नौकरी को छोडकर आपने अपना भविष्य परमोज्ज्वल वनाने का वीडा उठाया है।

स्व० आदर्श श्रावक श्री केशरीचन्द जी सुराना, रामपुरा

आप उन आदर्श श्रावको में से थे जो साधु न होते हुए साधुओ के समान कहे जा सकते है। आपका जन्म स० १९२० में रामपुरा में हुआ था। आप के पिता श्री का नाम जवरचन्दजी था जो उस समय अनाज के प्रसिद्ध व्यापारी थे। श्री केशरीचन्द जी सा० जब बारह वर्ष के थे तब उन्हे तोल करने के लिये जुवार के कोठे पर भेजा गया। जुवार पुरानी थी अत उसमें जानवर पड गये थे और तोल करते समय जानवरो का मरना स्वाभाविक था। विजली की तरह दया की भावना आपके हृदय में प्रवाहित हुई और कोठे से हटकर सीधे स्थानक में जाकर बैठ गये। इस प्रकार माता-पिता भाई-वहन आदि १०० कुटुम्वी जनो को छोडकर विरक्त हो गये। स्थानक में आने के वाद श्रावकजी ने खुले मुँह बोलना, कच्चा पानी पीना, हरी वनस्पति खाना आदि कई त्याग कर दिये। दिन में कभी सोते नहीं थे और दीवार के सहारे बैठते न थे। आहार रात्रि के ६ घण्टे के अतिरिक्त आपका सब समय धर्मध्यान में लगता था। वत्तीसो शास्त्रो का कई वार आपने पारायण कर लिया था। वर्षभर में सब मिलाकर पाँच माह भोजन करते थे।

आप वडे ही साहसी थे। जिस स्थानक में आपने अपना जीवन बिताया वह इतना विशाल था कि उसमें दो-तीन साधु अथवा दो-तीन श्रावको के रहने में रात के समय डर लग सकता है। कई माह तक आप अकेले उस स्थान में रात के समय रहे थे। आप के इस अपूर्व साहस को देखकर जनता आश्चर्य-चकित रह जाती थी। इस प्रकार त्यागमय धर्ममय और सयममय जीवन यापन करते हुए इस आदर्श श्रावक का स० १९९० में कुछ दिनो की बीमारी के कारण देहावसान हुआ किन्तु अपनी बीमारी के दिनो में आपने कभी भी कसूर अथवा टीस न भरी। यह थी आप की अपूर्व सहनशीलता।

आप सदैव मुँह पर मुँहपत्ती रखते थे। न कभी वाहन पर बैठे और न कभी जूते पहने। आप को ३०० थोकडे कण्ठस्थ याद थे।

आपके जीवन की विशेष महत्व की बात एक यह भी है कि साधु-साध्वी जी रामपुरा में चातुर्मास प्राय इसलिए करते थे कि यहाँ पर वे श्रावकजी से शास्त्र-सम्बन्धी अपनी शकाओ का निराकरण करा सके।

धर्मध्यान की पृच्छा के अतिरिक्त आप किसी से कुछ भी वोलते तक न थे। सत्य ही ऐसे आदर्श और विरक्त श्रावक ही जिनशास्त्र के गौरव को वढाने वाले होते हैं।

श्री राजमलजी कडावत, रामपुरा

आप सच्चे श्रावक तथा गरीवो के प्रति दया एव प्रेम के घर थे। आपने एक मुश्त ५१,०००) का दान देकर "श्री वर्द्धमान जैन हितकारी ट्रस्ट" की स्थापना की जिसके वर्तमान सभापति इन्दौर वाले श्री सुगनमलजी सा० भण्डारी ह। नाम की तथा यश की आपको तनिक भी लालसा

नहीं थी और यही कारण है ट्रस्ट में न तो आपने अपना नाम रखा और न उसके सदस्य ही रहे।

श्री विट्ठलजी केदारजी चौधरी, रामपुरा

आपका जन्म स० १९४४ में हुआ था। छोटी उम्र में ही आप व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त कर अपने पिताजी के कार्य में मदद करने लगे। धार्मिक प्रवृत्ति तथा आचार-विचार की तरफ आपका झुकाव बचपन से ही था। आपके सुपुत्र श्री लक्ष्मीचन्द्रजी अपने पिता के समान ही धार्मिक एव सामाजिक कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। अपने यहाँ के स्वाध्याय-मण्डल-सयोजन का कार्य आप ही सँभाल रहे हैं। सवत् १९९७ में स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज तथा श्री देवीलालजी महाराज के पास से आपने श्रावक के १२ व्रत धारण किये और तभी से नियमित रूप से पाँच सामायिक का व्रत निभाते चले आ रहे हैं। सवत् १९८६ में स्व० पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज सा० के चातुर्मास में दर्शनार्थी बन्धुओ के स्वागत-सत्कार का अपूर्व लाभ आपने ही लिया था। स्थानीय पाठशाला की स्थापना में १५,०००) का दान देकर उसके लिए ट्रस्ट बना दिया। सत्य ही सेठ सा० का जीवन और व्यवहार आदर्श एव अनुकरणीय रहा है।

श्री नन्दलालजी भण्डारी छात्रावास, रामपुरा

यह छात्रालय स्वर्गीय सेठ नन्दलालजी भण्डारी की स्मृति में श्री सेठ कन्हैयालालजी सुगनमलजी भण्डारी ने अपनी जन्मभूमि में शिक्षा का प्रचार करने के लिए सन् १९३[illegible] में चालू कर रखा है। इसका सारा खर्च आप ही [illegible] रहे हैं। इस समय इस छात्रालय में २० विद्यार्थी लाभ उठा रहे हैं। इसके अतिरिक्त श्री भण्डारीजी सा० ने यहाँ के अस्पताल में Eye Operation Room बनाकर जनता की सेवा की है।

श्री केशरीमलजी सुराणा, रामपुरा

यहाँ के आप प्रसिद्ध श्रावक थे। आप अनेक शास्त्रो और थोकडो के जानकार थे। कई सन्तो को एव कई श्रावको को शास्त्रो की वाचना देने वाले थे और ससार से उदासीन वृत्ति वाले थे। आपने अन्तिम समय में स्थानक में ही रहने लगे थे।

श्री भवरलालजी धाकड, रामपुरा

आप चतुर्विध सघ की निष्काम भाव से मूक सेवा करने वाले सरल व उदार व्यक्ति हैं। भण्डारी मिल, इन्दौर के कोषाध्यक्ष हैं। आप प्रत्येक सामाजिक प्रवृत्तियो में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं।

श्री रूपचन्दजी सा० धाकड, रामपुरा

आप जैन सिद्धान्त के ज्ञाता व धार्मिक, सामाजिक कार्यों में आगे रहने वाले व्यक्ति हैं। आपको रामपुरा में 'महात्माजी' के नाम से पुकारते हैं। साधु-मुनिराजो की अत्यन्त भाव-भक्तिपूर्वक आप सेवा करते हैं।

श्री पन्नालालजी तेजमलजी मारू, रामपुरा

आप यहाँ के प्रसिद्ध श्रावक हो गए हैं। गायन-कला में आप अत्यन्त निपुण थे। समय-समय पर गायनो से समाज का गौरव बढाते थे।

श्री रिखवचन्दजी अगरिया, रामपुरा

यहाँ के प्रमुख कार्यकर्ताओ में से आप उदार व दान-शील वाले व्यक्ति हैं। यहाँ की कन्या पाठशाला को आपने दो वर्ष तक सारा खर्चा दिया। अभी उज्जैन में सर्व धर्म-सम्मेलन के अवसर पर ५०१) प्रदान किये थे।

श्री वापूलालजी भण्डारी, रामपुरा

आप यहाँ के प्रसिद्ध श्रावक हैं। कई वर्षों से लगातार प्रति रविवार को उपवास करते आ रहे हैं। ट्रस्ट बनाकर एक अच्छी रकम निकालने की आपने हार्दिक अभिलाषा प्रकट की है।

श्री छगनलालजी नाहटा, रामपुरा

आप यहाँ के नगर सेठ थे। गरीबो के प्रति आप अत्यन्त दयालु और भावुक थे। आपके सुपुत्र श्री मानसिंहजी समाज-सेवा में भाग लेने वाले और नगरपालिका के अध्यक्ष हैं। आपके एक Cotton factory चल रही है। आप मन्दसौर जिले के कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता और राष्ट्रीय विचारो के गाधीवाद के अनन्य भक्त हैं।

श्री रतनलालजी सुराना, रामपुरा

आप स्थानीय श्रावक सघ के अध्यक्ष हैं। आपके पिता श्री चादमलजी सा० अपने समय के अग्रगण्य श्रावक थे। साधु-सन्तो के भक्त और सामाजिक ट्रस्टो के ट्रस्टी हैं।

श्री रामलालजी पोखरणा, M L. A रामपुरा

आप यद्यपि क्रियाकाण्ड को नहीं मानते किन्तु शुद्ध जैनत्व के प्रेमी हैं। गाधीवाद को समझकर अपने जीवन में उसे क्रियान्वित कर रहे हैं। मध्यभारत विधान सभा के आप माननीय सदस्य हैं। मन्दसौर जिला काग्रेस कमेटी के प्रधानमन्त्री और स्थानीय नगरपालिका के आप सदस्य भी हैं। प्रत्येक राष्ट्रीय और सामाजिक प्रवृत्तियो में आपका सहयोग बना रहता है।

श्री तेजमलजी सा० धाकड, रामपुरा

धाकड-परिवार के आप अग्रगण्य श्रावक हैं। स्थानीय पाठशाला और छात्रालय के आप मन्त्री हैं। साधु-मुनिराजो को दवा-औषधि से प्राय लाभ पहुँचाते रहते हैं। आपके परिवार की धार्मिक भावना सराहनीय है।

सेठ मोतीलाल जी पन्नालाल जी पोरवाड़

आप श्री पन्नालाल जी के सुपुत्र थे। सन् १९०० से १९२१ तक आपसे ही धार की ऐतिहासिक जीवदया का कार्य सुचारु रूप से होता रहा। आपके घर से कई सत-सतियो का दीक्षोत्सव समारोह हुआ। आपका स्वर्गवास सन् १९२१ में हुआ।

सेठ चम्पालाल जी पूनमचन्द जी पोरवाड
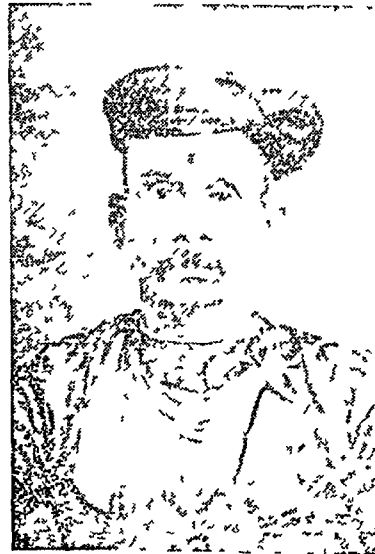
आप श्री पूनमचन्द जी के सुपुत्र थे। आप संवत् १९४८ से १९८३ तक समाज के कार्यों में प्रमुख भाग लेते रहे। आपका जीवन धर्ममय था। तीनो काल स्थानक में आकर स्वाध्याय-ध्यान आदि करना आपके जीवन का दैनिक क्रम था। दया (छ काय) पालने व पलाने में आपकी विशेष रुचि थी। भजन व दृष्टान्त के लिये आप प्रसिद्ध थे। आपका स्वर्गवास सवत् १९८३ में हुआ।

सेठ वल्लभदास जी जगन्नाथ जी जैन

आपका जन्म नीमा जाति में सेठ जगन्नाथ के यहाँ हुआ था। आप जैन धर्म के पक्के उपासक थे तथा जीव-दया के वडे प्रेमी थे। आप घर पर कुत्ते-बिल्ली आदि पशु वैरभाव को भूलकर एक साथ रहते थे। चातुर्मास की विनति करने में आपका प्रमुख भाग रहता था। प्रतिवर्ष १५०-२०० छ काया पलाते थे।

सेठ मोतीलाल जी मनावरी

समाज के आप प्रमुख कार्यकर्ता थे। अतिथि-सत्कार के लिए आप सुविख्यात थे। आपका स्वर्गवास स० १९९० को हुआ।

सेठ चम्पालालजी रतीचन्दजी वजाज

आप जीव-दया में अत्यन्त रुचि रखते थे। अपग-घायल एव बीमार पशुओ की सेवा बिना किसी घृणा भावना के करते थे। आपका स्वर्गवास सवत् १९९६ में हुआ।

सेठ भेरूलालजी बूलचन्दजी पोरवाड

आप समाज के प्रमुख कार्यकर्ता थे। समाज के प्रत्येक कार्य में आप आगे रहते थे। चातुर्मास कराने व अतिथि-सत्कार में प्रमुख भाग लेते थे। आप वडे सरल-हृदय व नम्र स्वभाव वाले थे। आपका स्वर्गवास स० २००० के लगभग हुआ।

सेठ रूपचन्द जी (उस्ताद)

आप सेठ मथुरालाल जी पोरवाड के सुपुत्र थे। समाज में आपका अच्छा व्यक्तित्व था। आप वडे ही तार्किक और हाजिर-जवाबी होने के कारण प्रसिद्ध थे। आपका स्वर्गवास स० २००६ में हुआ।

सेठ भेरूलाल जी लुहार

आप जाति के लुहार होते हुए भी जैन धर्म के सच्चे उपासक थे। स्थानक में जाकर धर्म-क्रिया करते थे। [illegible] आपने जीवन-पर्यन्त त्याग किया था। साधु-सतो की सेवा सदा [illegible] करते थे। आज भी अनेक सत-सतिया आपकी सेवाओ को याद करती है।

श्री चादमल जी जैन B A L-L B

आप श्री मदनलालजी जैन के सुपुत्र थे। बचपन में ही माताजी का देहावसान हो जाने के कारण आपका पालन-पोषण शिक्षण आपके मामा श्री वोदरलालजी चम्पालालजी के यहाँ हुआ। आपने छोटी-सी उम्र में B A L L B पास कर और प्रेक्टिस करने ४-५ वर्ष में ही प्रसिद्ध वकीलो की श्रेणी में गिने जाने लगे। धार्मिक ज्ञान का भी आपको अच्छा अध्ययन था। धर्म के प्रति आपकी दृढ़ श्रद्धा थी। अपनी भाषण-शैली द्वारा राजनैतिक-क्षेत्र में भी आप अति लोकप्रिय बन गए थे। सन् १९५४ में अचानक आपका स्वर्गवास हो गया जिससे समाज को बहुत क्षति हुई।

भक्त श्री चम्पालालजी जैन

आप धार जैन-समाज के शिरोमणि व जैन-सिद्धान्त के अच्छे ज्ञाता है। आपने स्था० समाज के वडे-वडे आचार्यो एव विद्वान् सन्त-सतियो की सेवा करके सिद्धान्त की रहस्य-कुजियो की धारणाएँ प्राप्त की है। सन्त सतियो की सेवा अत्यन्त लगन व रुचि से करते है। आप अच्छे गीतकार तथा गायक है। आपका जीवन सासारिक झझटो से परे

होकर त्यागमय है और जीवन का अधिकाश भाग धर्मध्यान में ही व्यतीत होता है।

श्री माणकलालजी वकील B Sc L-L B

आप धार स्थानकवासी समाज में गत १० वर्षों से प्रमुख कार्यकर्ता रहे हैं तथा वर्तमान में सघ के अध्यक्ष हैं। बडे-बडे सन्तो एव विद्वानो से धार्मिक सिद्धान्तो का अध्ययन किया। प्रथम श्रेणी के एडवोकेट होते हुए भी धर्म में इतने दृढ हैं कि प्रतिदिन सामायिक आदि धार्मिक क्रियाएँ करते हैं। आप बडे ही स्पष्ट वक्ता हैं। राजनैतिक-क्षेत्र में भी आप अत्यन्त लोकप्रिय हैं। समाज के प्रमुख पत्र और समाज-सुधार के महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

श्री रतनलालजी वाटे

आप समाज के कार्यों में विशेष दिलचस्पी लेते हैं। दान तथा अतिथि-सेवा करने में सदा अग्रसर रहते हैं। आपके घर से कई दीक्षाएँ बडे ही समारोह के साथ हुई।

श्री कन्हैयालालजी वकील

समाज के आप प्रमुख कार्यकर्ता हैं। धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक-क्षेत्रो में बडी ही दिलचस्पी से भाग लेते हैं। आजकल आप मनावर में रहकर वकालत करते हैं।

श्री बाबूलालजी जैन

सामाजिक सेवाओ में आप बचपन से ही भाग लेते आ रहे हैं। आप स्थानीय महावीर मित्र-मण्डल के मन्त्री सन् १९३४ से सन् १९५३ तक रह चुके हैं। अभी वर्तमान में सन् १९५४ से स्थानीय सघ के मन्त्री है। स्थानीय महावीर जैन पाठशाला को उन्नत बनाने में आपका प्रमुख भाग रहा है। सामाजिक तथा व्यापारिक सस्थाओ में अनेकविध-कार्य करते हुए भी धार्मिक क्रियाएँ सम्पन्न करने में कभी नहीं चूकते।

श्री चोंदरलालजी जैन

आप करीब ४० वर्षों से भी अधिक समय से धार में कुत्तों को रोटी डालने के कार्य में लगे हुए हैं। सम्पत्तिवान् गृहस्थ होते हुए भी कुत्तों के लिये घर-घर आटा मांगने जाने में सकोच नहीं करते। अपनी [illegible] वय की अवस्था में कन्धे पर झोला लिये हुए और गली-गली घूमते हुए कुत्तों को रोटी डालते हैं।

श्री सागरमलजी जैन

आपका जीवन धार्मिक प्रवृत्तियो से ओतप्रोत है। आप दृढ श्रद्धावान् है तथा सदैव धर्म-प्रचार में योग देते है। सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि से भाग लेते है। आप महावीर जैन पाठशाला के कोषाध्यक्ष हैं।

श्री कस्तूरचन्दजी जैन
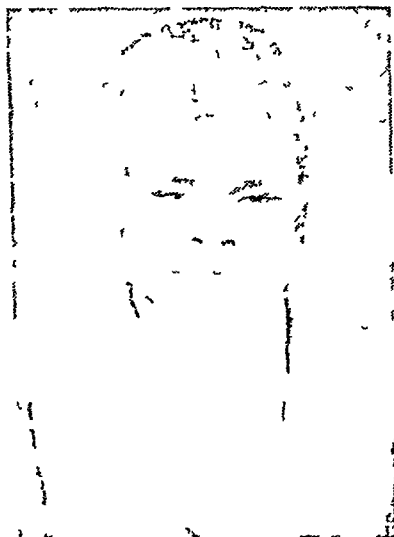
आप जीवदया के पक्के भक्त है। देवी देवताओं के आगे बलिदान होने वाले प्राणियों की रक्षा करने के लिये प्राणों की भी परवाह नहीं करते। आप निर्भीक, निडर, व उत्साही कार्यकर्ता हैं।

श्री प्रतापसिंहजी

आप उत्साही कार्यकर्ता है और समाज के कार्यों मे सदा अग्रणी रहते है। नित्य-नियमानुसार धार्मिक क्रियाएँ सम्पन्न करते हैं। आप महावीर जैन पाठशाला के ट्रस्ट मंडल के कोषाध्यक्ष हैं।

श्री मिश्रीलालजी जैन

आप एक उत्साही व सेवाभावी कार्यकर्ता है। महावीर जैन पाठशाला के प्रारम्भ काल से लेकर आजतक संस्था की सेवा अथक परिश्रम व जी-जान से कर रहे हैं। आप अपना अधिकांश समय संस्था तथा समाज की सेवा के

मिश्रीलालजी जैन

कार्य मे लगाते हैं। आप दृढ श्रद्धावान् हैं। अनेक प्रमुख सन्त- मुनिराजो तथा विख्यात् श्रावकों ने आपके सेवाकार्य की प्रशंसा की है। आपके निःस्वार्थ सेवाभाव तथा अथक परिश्रम से ही संस्था ने उन्नति की है।

इनके अतिरिक्त श्री मनसुखलालजी जैन, श्री छगनमलजी वकील, श्री फूलचन्दजी ओसवाल, श्री छगनमल जी बजाज तथा श्री जीतमलजी मास्टर आदि बड़े ही उत्साही एव सेवाभावी कार्यकर्ता है। सामाजिक एव धार्मिक कार्यों में आप लोग उत्साहित होकर भाग लेते हैं।

श्री जोरावरमलजी प्यारेलालजी शाहजी, थांदला

आप स्था० समाज के सम्माननीय एव प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। श्री जोरावरमलजी का शुभ जन्म मिति वैशाख वदी २ सं० १९४५ को हुआ था। आपके पिता श्री का शुभ नाम मोतीलालजी था। आपका खानदान प्रशंसापात्र रहा। वर्तमान मे आपके दो सुपुत्र है श्री प्रेमलालजी तथा श्री गेंदालालजी। आपके पूर्वजो ने एक मकान धर्म स्थानक के रूप में दे दिया है। वर्तमान में आपने अपनी

पत्नी केशरबाई की पुण्य स्मृति में एक भवन श्री औषध भवन के पीछे की जमीन मे, धार्मिक शिक्षण के लिए ट्रस्ट बनाकर तैयार करने की प्रतिज्ञा की है। आप एक समय जीव-दया धर्म के लिए प्राणों तक की बाजी लगाने को तैयार हो गए किन्तु धर्म पर दृढ रहे। यही है आपकी धर्म-परायणता एव दृढता का आदर्श नमूना। आप सदैव प्रतिज्ञा मे बधे हुए जीवन में रहते है। आपका कपडे तथा गल्ले और लेन-देन का व्यापार प्रतिवर्ष हजारो का होता है। प्राचीन राजाओं की ओर से प्रतिष्ठा-स्वरूप आपके मकान पर सोने के कलश लगे हुए है।

श्री रिखबचन्द्रजी घोडावत, थाडला

श्री रिखबचन्द्रजी घोडावत का शुभ जन्म मिगसर सुदी ५ स० १९५७ मे हुआ था। आपके पूज्य पिताश्री का नाम श्री दौलाजी है। श्री रिखबचन्द्रजी के चार पुत्र है। जिनके क्रमश श्री रमेशचन्द्रजी, श्री चन्द्रकान्तिजी श्री कनकमलजी तथा श्री उम्मेशजी नाम है। श्री उम्मेशजी ने भगवती दीक्षा ग्रहण कर ली है। प्रारम्भ से ही आपका खानदान धार्मिक कार्यों मे मुक्तहस्त से दान देता आया है।

श्री रमेचन्द्रजी भी अपने पिता श्री की तरह ही धर्म प्रेमी है। वर्तमान में आप राजनैतिक क्षेत्र मे अग्रणी है। आप कपडे के थोक व्यापारी है और नकद लेन-देन प्रतिवर्ष लाखो रुपयों का करते हैं। आप श्री भी दानवीर सज्जन है। प्रान्त मे आप गौरवशाली व्यक्ति है।

श्री लहरमलजी गेंदमलजी भण्डारी, कजर्डा

आप कजर्डा के निवासी है। आप की अवस्था ४० वर्ष की है। आप व्यवसाय करते हुए भी समाज सुधार तथा धार्मिक प्रवृत्तियो में प्रमुख भाग लेते रहते हैं। आप मिलनसार व्यक्ति हैं।

श्री मोहनलालजी पूनमचन्दजी तगवा, कजर्डा

आपका भी निवास-स्थान कजर्डा है। आप व्यापार एव दलाली करते है। वर्तमान में आप जैन पाठशाला में अध्यापक का कार्य कर रहे हैं जिसे श्रावक मण्डल सचालन कर रहा है।

श्री चाँदमलजी नाथूलालजी भण्डारी, कजर्डा

आप रामपुरा के निवासी हैं। उम्र आप की ३८ वर्ष की है। माध्यमिक पाठशाला कजर्डा के प्रधान पाठक ४ वर्ष से है। आप इण्टरमीडिएट, विज्ञान रत्न तथा साहित्य रत्न (प्रथम खण्ड) उत्तीर्ण हैं।

श्री चाँदमल जी गब्बालाल जी पीपाडा, कजडा

आप कजार्डा निवासी है। आप की आयु २७ वर्ष की है, आप तरुण व्यापारी एव समाज के कार्यो में अत्यन्त अभिरुचि रखते हैं।

श्री रामचन्दजी नाथूलालजी भण्डारी

आप भी कजर्डा के रहने वाले ३७ वर्षीय कुशल व्यापारी है। हिसाब के कार्य में दक्ष है।

श्री झमकमलजी नन्नालालजी पटवा

आप कजर्डा निवासी हैं और शिल्पकला का कार्य करते हैं। आप की उम्र २८ वर्ष की है। व्यवस्था-कार्य में कुशल है।

श्री सुजानमलजी भेरूँलालजी भण्डारी

आप एक कुशल नवयुवक व्यवसायी हैं। उम्र आप की ३० वर्ष की है। आप नि सकोच हो व्यवस्था कार्य मे जुट जाते हैं।

श्री लक्ष्मीलालजी केशरीमलजी नलवाया

आप कजर्डा निवासी ४० वर्षीय कुशल व्यापारी है। सामाजिक कार्यो में आपका पूर्ण सहयोग रहता है।

श्री कन्हैयालालजी गेंदमलजी पटवा

आप ३३ वर्षीय कजर्डा निवासी एजेन्सी का कार्य करते है। स्थानीय प्रारम्भिक कांग्रेस के अध्यक्ष हैं।

श्री सुन्दरलालजी केसरीमलजी भण्डारी

आपकी अवस्था ३२ वर्ष की है। आप वर्तमान मे कपडे के व्यापारी हैं। इससे पूर्व आप सघ के मन्त्री थे।

श्री पन्नालालजी किशनलालजी भण्डारी

आप एक २५ वर्षीय उत्साही नवयुवक हैं। समाज हित के कामो में आप विशेष दिलचस्पी रखते हैं। आप व्यापार करते हैं।

राजस्थान के प्रमुख कार्यकर्ता

स्वर्गीय सेठ श्री चांदमलजी सा० सुराणा, जोधपुर

जोधपुर राज्य में तथा राजघराने मे प्रतिष्ठा सम्पन्न श्री चांदमलजी सुराणा को जोधपुर में कौन नहीं जानता ? राज्य में रहने वाली जनता की भलाई के लिए आपने जीवन-भर अपने को संकट तथा कष्ट में डालकर भी

जनता की विचारधारा का प्रतिनिधित्व किया। आपका जन्म संवत १९२० की भादवा सुद १५ को और स्वर्गवास संवत १९९९ की आषाढ़ वद ५ को हुआ। वह समय था जब जोधपुर के सर प्रतापसिंहजी ने बन्दरों को मरवाने की आज्ञा निकाली। इसके खिलाफ राज्य भर मे तीव्र आन्दोलन हुआ। इस आन्दोलन के सूत्रधार आप ही थे। आखिर यह राजाज्ञा रद्द की गई। सन् १९२६ मे जोधपुर राज्य के अर्थमन्त्री श्यामबिहारीलाल ने राज्य मे जोधपुरी तोल के बदले बंगाली तोल करना चाहा। राज्य की जनता इसे सहन न कर सकी। इस आन्दोलन को आपने अपने हाथो में लिया। इस आन्दोलन ने इतना जोर पकड़ा कि अर्थमन्त्री को चौबीस घण्टे के भीतर ही जोधपुर छोड़कर जाना पड़ा। इस प्रकार के कई आन्दोलनों का आपने नेतृत्व कर अपनी निर्भीकता का परिचय दिया। आप अपनी बात के पक्के थे। जिस बात का आप धार लेते—उसे पूरा करके छोड़ते थे—भले ही उसमें सैकड़ों का खर्च हो या हजारों का। अपनी टेक के सन्मुख धन को आप तुच्छ समझते थे।

वह समय था जब पालनपुर, नसीराबाद, डीसा की फौजी छावनियों को मांस पहुँचाने के लिए मारवाड़ से मादी जानवरों की निकासी प्रारम्भ हो गई। आपको यह कब सहन होने वाला था। हजारों आदमियों को अपने साथ में लेकर तत्कालीन जोधपुर नरेश के बंगले पर तीन दिन तक धरना दिया। इन हजारों आदमियों को खिलाने पिलाने का इन्तजाम आपकी तरफ से था। आखिर दरबार को मादा जानवरों की निकासी की आज्ञा रद्द करनी पड़ी। जिस काम को आपका आशीर्वाद प्राप्त हो जाता—उसमें मानो जान आ जाती थी। इस प्रकार के आन्दोलनों में आपको कई माह तक राज्य से निर्वासित होकर रहना पड़ा था—किन्तु आपने कभी भी न्यायोचित मांग के सन्मुख झुकना मंजूर नहीं किया।

दिल-दिमाग की तेजस्विता, निर्भीकता और उग्रता के साथ साथ धार्मिकता और श्रद्धा भी आप में महान् थी और ऐसा होना इसलिए भी उचित था कि आप संसार पक्ष में पूज्य उदयसागरजी महाराज के भानजे थे। आपके घराने की धार्मिकता का क्या कहना ?—आपकी बहन सरदार कंवरजी ने दीक्षा धारण कर संयम और तप-त्याग का अपूर्व एवं आदर्श उदाहरण उपस्थित किया था। केवल ३७ वर्ष की अवस्था में ही आपने शीलव्रत और चौविहार के प्रत्याख्यान कर लिए थे। बीस साल तक एकान्तर भोजन किया था और जीवन की अन्तिम घड़ियों में समस्त जीवराशि को खमाकर संथारा कर पण्डित मरण को प्राप्त हुए थे।

दयालुता और पर दुख कातरता आप में इतनी थी कि गुप्तरूप से कितने ही धर्म-पुत्र बनाकर उनका पालन-पोषण करते थे। अपने कार्य-कलापों से राज्य

के इतिहास मे आपका नाम सदैव स्वर्णाक्षरों से अंकित रहेगा।

आपकी लोकप्रियता का इस बात से पता चलता है कि हरिजन से लेकर उच्च कौम—३६ ही कौम के अनगिनती लोग आपकी अर्थी के साथ थे।

अपने पीछे अपने गुणों की पैतृक वसीयत अपने बड़े पुत्र श्री आनन्दराजजी सुराणा मे छोड गए हैं जो अपने पिता के समान ही तेजस्वी, निर्भीक, स्पष्टवक्ता और उदार-दिल हैं। निर्धन और असहाय को देखकर आपका दिल भी पसीज उठता है। योग्य पिता के योग्य पुत्र पर आज समस्त समाज और राष्ट्र को गौरव हो सकता है।

श्री बच्छराजजी सुराणा श्री आनन्दराजजी सुराणा के लघु बन्धु हैं। आप भी समाजसेवी और धार्मिक वृत्ति वाले हैं।

श्री कानमलजी सा० नाहटा, जोधपुर

आपका जन्म जोधपुर मे स० १९६१ में हुआ था। आपके पिताजी का नाम जवानमलजी तथा माता का नाम सरदार कुँवरजी है। आपका खानदानी व्यवसाय राज्य मे कारोबार और Banking का रहा है। आपके दादाजी श्री थानमलजी सा० जोधपुर राज्य के कस्टम ऑफिसर थे और प्रजा के सच्चे सलाहकार थे।

सवत् १९७४ से ७६ तक के भीषणतम अकाल के युग मे आपके घर के १८ व्यक्तियों की मृत्यु हो जाने से आप और आपके भाई पूनमचन्दजी ही बचे। कई वर्ष तक आप नौकरी करते रहे। किन्तु काल का चक्र जैसे उल्टा चलता है तो कभी-न-कभी सुल्टा भी चलता है। सुख और दुख तथा दुख और सुख का अभिन्न जोडा है। भाग्य-चक्र ने पलटा खाया। अब तक जो कुछ भी प्रतिकूल था अब अनुकूल होने लगा। सन् १९२६ मे आपने बम्बई मे कानमल एण्ड सन्स के नाम से सिल्क का व्यवसाय प्रारम्भ किया। सन् १९४० में मुलुन्द मे ज्योति सिल्क मिल्स प्रारम्भ की और इसके साथ ही जवाहरात का व्यवसाय भी प्रारम्भ किया। बम्बई मे कालका देवी तथा ऑपेरा हाउस में तथा मसूरी आदि स्थानों मे आपकी दुकानें थीं। अत्यन्त सुसस्कारी और धर्मपरायणा सौ० विलम कुँवरी का ता० ३१-३-५९ को सथारा और समाधिमरणपूर्वक स्वर्गवास हुआ।

आपके द्वारा निर्मित भव्य नाहटा भवन जोधपुर की एक शानदार और भव्य इमारत है।

व्यवसाय में आप खूब बढे किन्तु जीवन की वास्तविकता से भी आप अनभिज्ञ नहीं थे। बुरे दिन भी आपने देखे थे और अब अच्छे दिन भी। किन्तु धन-वैभव ने आपको अन्धा नहीं बनाया। आपकी रुचि धर्म-प्रेम की ओर क्रमश बढती गई। साधु-सम्मेलन सादडी से आपने धार्मिक कार्यों मे रस लेना प्रारम्भ किया। स्व० प० मुनि श्री चौथमलजी म० सा० के जोधपुर मे सथारा-काल में आपने ब्रह्मचर्य धारण कर लिया। अब तो जोधपुर की धार्मिक प्रवृत्तियो के आप केन्द्र ही बन गए। श्रावक सघ के निर्माण और निर्वाचन के समय आप जोधपुर श्रावक सघ के उपप्रमुख निर्वाचित किये गए। सघ का सारा कार्य आप ही करते है।

आपकी अभिरुचि स्वाध्याय की ओर बढी और आपने भक्तामर, तत्त्वार्थसूत्र, पुच्छिसुणं, नमिप्रव्रज्जा आदि कण्ठस्थ कर लिए। कई थोकडे भी आपको कण्ठस्थ हैं।

आप इस समय ओसवाल श्री सघ सभा के चीफ ट्रस्टी, स्था० जैन श्रावक सघ के चीफ ट्रस्टी तथा अध्यक्ष बीकानेर बैंक के लोकल बोर्ड के डायरेक्टर हैं। इसके अतिरिक्त व्यापारी और सरकारी क्षेत्र में आप अत्यन्त प्रतिष्ठावान है।

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फ्रेन्स की व्यवस्थापिका कमेटी के आप वर्षों से मेम्बर है। साधु-मुनि-राजों की सेवा-भक्ति अत्यन्त भक्तिभावपूर्वक करते हैं। सस्थाओं को समय समय पर आपकी तरफ से दान मिला करता है।

इस प्रकार श्री नाहटाजी जोधपुर के ही नहीं किन्तु समस्त राजस्थान के एक आशावान और प्राणवान व्यक्ति हैं जिनसे समाज और धर्म के विस्तीर्ण क्षेत्र मे और अधिक आगे बढ़कर तथा अधिक सेवाएँ प्रदान करने की स्वाभाविक रूप से सहज कामना की जा सकती है।

श्रीमान रिखबराजजी कर्णावट, एडवोकेट, जोधपुर

श्री कर्णावट जी का शुभ जन्म भोपालगढ़ ग्राम जिला जोधपुर मे सन् १६१६ मे हुआ। आपने स्थानीय श्री जैन रत्न विद्यालय मे प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर व्यापार व बीमा एजेन्सी का कार्य प्रारम्भ किया। साथ ही प्राइवेट अध्ययन जारी रखते हुए मिडिल व मेट्रिक की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। प्रारम्भिक जीवन मे ही आप में सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक कार्यों में भाग लेने की अभिरुचि रही। आप वहाँ की कन्या पाठशाला, हरिजन स्कूल, श्री जैन रत्न विद्यालय तथा लोक परिषद् शाखा आदि के भी मानद् मन्त्री रहे। तदनन्तर सन् १६३८ मे जोधपुर मे सरदार हाई स्कूल मे अध्यापक नियुक्त हुए और अध्यापन करते हुए प्राइवेट मे इन्टर, बी० ए० व नागपुर विश्व विद्यालय से एल० एल० बी० की डिग्री की हासिल की। बाद मे आपने जोधपुर में वकालात करना प्रारम्भ किया। वकालत करते हुए सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक कार्यों मे भी सक्रिय भाग लेते रहे। आप श्री महावीर जयन्ती प्रचारणी सभा के मन्त्री रहे और महावीर जयन्ती सार्वजनिक छुट्टी कराने मे भी सक्रिय भाग लिया। स्थानीय महावीर कन्या पाठशाला के भी आप ऑनरेरी सुपरिटेन्डेन्ट रहे। राजस्थान प्रान्तीय कांग्रेस के तथा सरकार द्वारा स्थापित किसान बोर्ड के भी सदस्य रहे। बार एसासियेशन के प्रथम मन्त्री और बाद मे उपाध्यक्ष पद पर आसीन हुए। इस प्रकार कर्णावट जी का भोपालगढ व जोधपुर में सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक कार्यकर्ताओं में विशेष स्थान है।
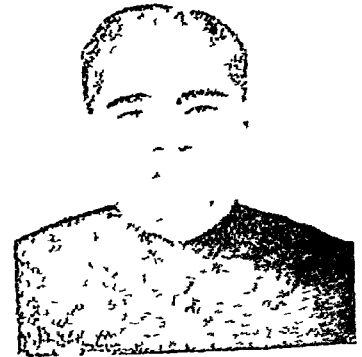
वर्तमान में कर्णावटजी सरदार हाईस्कूल, सरदार लोअर प्राइमरी स्कूल, ओसवाल बोडिङ्ग हाउस, ओसवाल स्कॉलरशिप कमिटि, स्था० जैन श्रावक सघ, तथा रा० प्रान्तीय स्था० श्रावक सघ के मानद् मन्त्री हैं। समाज के प्रत्येक शुभ काम मे आप समय निकालकर कुछ न-कुछ सहयोग देते ही रहते हैं। आशा है कि समाज को भविष्य में भी आप जैसे उत्साही नवयुवक कार्यकर्ता का सहयोग प्रदान होता रहेगा।

श्री दौलतरूपचन्दजी भडारी, जोधपुर

आप जोधपुर निवासी श्री सुपात्रचन्दजी भडारी के सुपुत्र हैं। आपके पिताजी बडे ही धर्मनिष्ठ और धर्मपरायण थे। श्री दौलतरूपचन्द जी राजस्थान के सुप्रसिद्ध भजनीक हैं। आपकी व्याख्यान शैली और कवित्व ओज से श्रावकगण प्रभावित हैं। जन्म से ही सगीत के प्रति आपका अनुराग रहा है। जनमत पर आपकी बडी धाक है।

अनेक प्रकार से व्यावसायिक क्षेत्रो में कुशलतापूर्वक कार्य करने के पश्चात् आप इस समय ओरियटल के एजेंट है। आप दो भाई है किशनरूपचन्दजी और राजरूपचन्दजी। दोनो सरकारी क्षेत्र मे सम्मानित पद पर कार्य कर रहे है।
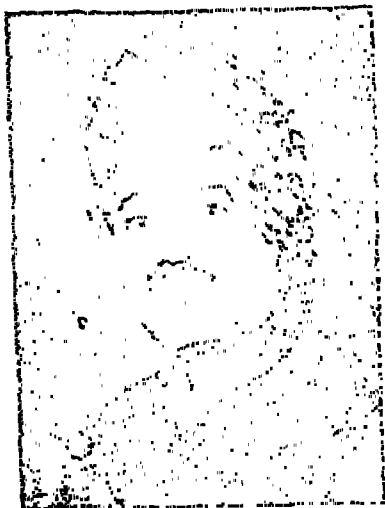
श्री विजयमलजी कुम्भट, जोधपुर

जोधपुर के सुप्रसिद्ध श्री चन्दनमल जी सा० कुम्भट के घराने में श्री गणेशमलजी सा० कुम्भट के आप सुपुत्र हैं। आपके पिताश्री राजकीय पद से रिटायर्ड हो जाने के बाद धार्मिक रंग में अनुरक्त श्रावक है। श्री विजयमल जी धर्मनिष्ठ श्रद्धालु श्रावक हैं। धर्मानुराग आपको वपौती के रूप मे मिला है। स्थानीय सामाजिक क्षेत्र में आप कर्मठ और मिलनसार-मृदुभाषी कार्यकर्ता है, जो बोलते कम और करते अधिक हैं। सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करने के लिये आप सदैव तैयार रहते हैं।
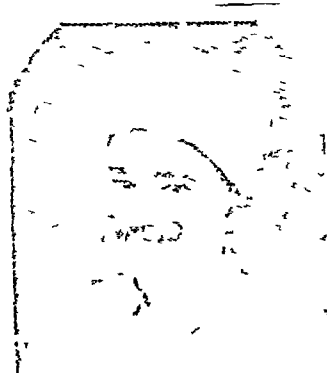
श्री अमोलकचन्दजी लोढा, बगडी

श्री लोढाजी उन सज्जनों में से थे जो बिना किसी मान की इच्छा के सहयोग प्रदान करते रहते हैं। श्री जैन गुरुकुल-ब्यावर तथा आत्म-जागृति कार्यालय की स्थापना में आपका प्रमुख हाथ था। बगडी का जैन मिडिल स्कूल भी आपके ही प्रयत्नों का फल है।

आप स्वभाव से सरल, व्यवहार कुशल, सेवा-भावी और धर्मशील सज्जन थे। वे समय-समय पर राजनीतिक कार्यों में भी भाग लिया करते थे। दुर्भाग्य से ४० वर्ष की अल्प वय में ही उनका स्वर्गवास हो गया, अन्यथा उनके द्वारा कई समाजोपयोगी कार्य होने की आशा थी।

श्री मिलापचन्दजी कावडिया, सादडी

आप सादडी (मारवाड) के उत्साही एवं कर्मठ समाजसेवी कार्यकर्ता है। लोंकाशाह जैन गुरुकुल भवन निर्माण का प्रश्न जब अत्यन्त जटिल, पेचिदा और विवादास्पद बन गया था तब इस कार्य को आपने अपने हाथ में लिया और एक लम्बे अर्से तक कठोर परिश्रम कर भवन-निर्माण का कार्य सम्पन्न कराया। गुरुकुल का वर्तमान विशाल और सुन्दर भवन आपके परिश्रम और लगन की साकार मूर्ति है। इतना ही नहीं भवन-निर्माण कार्य में आपने अभी अपनी तरफ से २५००) भी प्रदान किये। यद्यपि आपकी स्थिति इतनी अधिक प्रदान करने की नहीं थी।
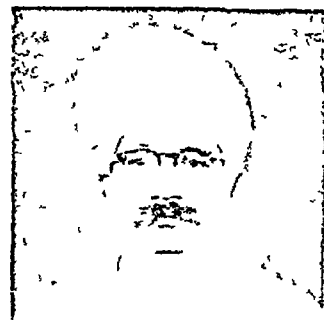
दीन-दुखियो के प्रति आप अत्यन्त दयावान् एव कुरूढियो के आप एकदम विरोधी हैं। सादडी-सम्मेलन के समय आपकी सघ-सेवा और कार्य तत्परता, आदर्श और अनुकरणीय थी।

श्री अनोपचन्दजी अमीचन्दजी पुनमिया (माड) (सादडी मारवाड)

मारवाड के गोडवाड प्रान्त में आपको कौन नहीं जानता ? आप अपने प्रान्त में 'शेर' कहे जाते हैं। वस्तुत आपमें सिंहोचित गुण विद्यमान हैं। आपको देखकर अन्यमत के लोग एकदम शान्त एव तर्कहीन हो जाते हैं—ऐसा है आपका व्यक्तित्व। आपके ही अथक परिश्रम से इस प्रान्त में श्री लोंकाशाह के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए आपकी जन्मभूमि 'सादडी' में श्री लोंकाशाह जैन गुरुकुल की स्थापना हुई।

यद्यपि आपका शिक्षण प्राइमरी तक हुआ किन्तु अपनी कुशाग्र बुद्धि के बल से अदालतों मे बडे-बडे वकीलों से टक्कर लेते हैं। अपनी इस प्रखर बुद्धि से आपने अच्छी धनराशि एकत्रित की, जिसको आप समाज व देश की सेवा मे समय-समय पर लगाते रहते हैं।

मरुधर केशरी प० मुनि श्री मिश्रीमलजी म० सा० के सदुपदेश से तथा बलदौटा बन्धुओं के सहयाग से आप द्वारा स्थापित श्री लोंकाशाह जैन गुरुकुल, सादडी में आपकी ही प्रेरणा एव उत्कट उत्साह से स० २००६ के अक्षय तृतीया के दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधु-सम्मेलन व कॉन्फ्रेन्स का १२वाँ अधिवेशन हुआ। सम्मेलन की सफलता, साधु मुनिराजों की भक्ति तथा सम्मेलन में सम्मिलित हुए हजारों की सख्या में स्वधर्मी भाइयों की सेवा एव सुव्यवस्था का श्रेय आपको तथा बलदौटा बन्धुओं को है सादडी सम्मेलन के समय की सुव्यवस्था एव सञ्चालन प्रणाली की सराहना आज प्रत्येक स्थानकवासी जैन कर रहा है।

अभी आप वर्तमान में स्थानीय श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ के मन्त्री, श्री लोंकाशाह जैन गुरुकुल के उपसभापति, श्री वर्द्धमान स्था० जैन महिला-मण्डल के सयोजक तथा अखिल भारतवर्षीय स्थानक जैन कॉन्फ्रेन्स की जनरल कमेटी के सदस्य हैं।

आपके सेवाभावी सस्कारों की छाप आपके समूचे परिवार पर भी पडी हैं। यही कारण है कि आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री हस्तीमलजी सा० पुनमिया जैन गुरुकुल, सादडी के मन्त्री पद पर लगातार ६ वर्षों से बडे उत्साह एवं परिश्रम के साथ कार्य करते हुए बडी योग्यता के साथ गुरुकुल का सचालन कर रहे हैं। आपके कनिष्ठ पुत्र श्री मोहनलालजी भी पाली परगने-की किसान मजदूर पार्टी के मन्त्री हैं और आज की राजनीतिक हलचलों में प्रमुख रूप से भाग ले रहे हैं।

सेठ सा० की ६४ वर्ष की उम्र है फिर भी नवयुवकों जैसे अदम्य उत्साह से काम करते हैं। आपके समान आपकी धर्मपत्नी भी सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों मे मुक्त हस्त व उदार हृदय से हाथ बँटाती है। निस्सन्देह सादडी के इस सेवाभावी परिवार से समाज को बडी-बडी आशाएँ हैं। हमारा काम ही हमारे नाम को अमर बनाता है और इस दृष्टि से सेठ सा० के जाति-धर्म-समाज-सेवा के कार्य कदापि नहीं भुलाए जा सकते।

श्री केवलचन्द जी सा० चोपड़ा, सोजत

श्री चोपडाजी सोजत शहर के चोपडा खानदान के एक उदार-दिल वाले युवक है। आपके पिता श्री गोपालमल जी चोपडा बम्बई में भागीदारी में व्यापार करते थे। अत आप भी प्रारम्भ से ही बम्बई में रहने लगे और अपने पिताश्री के स्थान पर आप स्वय भागीदार वन गये। इस समय आप बम्बई के गण्यमान व्यापारियो में से हैं। पिछले बीस वर्षो से आप खादी के प्रेमी रहे है। आपकी उदारता का परिचय तो इससे सहज ही मिल सकता है कि आपके पास जाने वाला कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता।
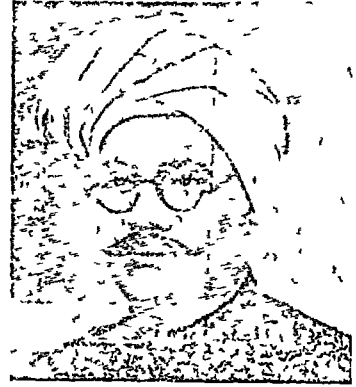
आप सोजत के "जैन गौतम गुरुकुल" के प्राण है। एक मुश्त २५,०००) रु० की धनराशि प्रदान कर सस्था की नींव डाली, जो आज भी उसके व्याज में सुचारुरूप से चल रही है। सोजत में गौशाला और जैन धर्मशाला बनवाने में हजारो रुपया दिया। सार्वजनिक कार्यों में आपका हाथ सदैव खुला रहता है। लौंकाशाह गुरुकुल को आपने ५०००) की सहायता प्रदान की। इसके अतिरिक्त सोजत में एक स्थानक भी बनवाया। आप आज भी गुप्तरूप से कई भाई-बहिनो को आर्थिक सहायता देते रहते हैं। कबूतरो पर आपका विशेष प्रेम है। प्रतिदिन ८--१० रुपयो का अनाज डलवाते रहते हैं। आप एक होनहार, समाज-सेवी और धर्म-प्रेमी व्यक्ति हैं, जिनमें सेवा की भावना कूट-कूट कर भरी है।

श्री विजयलालजी गोलेछा, खींचन

आप खींचन (मारवाड) के निवासी है। आपका हृदय वडा उदार और दया-भाव से परिपूर्ण है। मरुभूमि में जल का वडा कष्ट है। पानी की प्राप्ति के लिये मीलो दूर जाना पडता है। आपने इस असह्य कष्ट को मिटाने के लिये यहाँ स० १९८६ में अपने स्व० पिता जी के नाम पर एक विशाल तालाव खुदवाना आरम्भ किया, जो प्रतिवर्ष थोडा-थोडा खुदवाया जाता है और इससे यहाँ का कष्ट वहुत कम हो गया है।

दीन-अनाथो के प्रति आपकी वडी हमदर्दी रहती है। पहले यहाँ रुणीजा रामदेव जी का मेला भरा करता था, जिस मौके पर सैंकडो अपाहिज व गरीव लोग आया करते थे। इन सब को आपकी ओर से भोजन कराया जाता था। वाद में रुणीजा तक रेल्वे लाईन हो जाने से यात्रियो का फलौद उतरना वन्द हो गया फलत यह अन्न-दान भी वन्द कर दिया गया।

आपकी आयुर्वेद चिकित्सा के प्रति अत्यधिक रुचि है। आप अपने क्षेत्र में कुशल आयुर्वद चिकित्सक माने जाते थे। दूर-दूर से आपके पास वीमार आते ँ, जिनकी सारी व्यवस्था खान-पान निवास आदि की आप अपनी तरफ से करते हं और उसकी योग्य चिकित्सा कर आरोग्य प्रदान करके विदा करते रहे। आपन कई असाध्य वीमारो को जीवन-दान दिया है।

शिक्षा-प्रचार में भी आपका वडा हाथ रहा है। आपकी तरफ से स्थानीय श्री महावीर जैन विद्यालय को आधा खर्चा दिया जाता है। व्यावर जैन गुरुकुल के १२ वें उत्सव के आप सभापति भी वन थे। समाज की अन्य सस्थाओ को भी आप समय २ पर सहायता प्रदान करते रहते थे।

स्त्री-शिक्षा के प्रति भी आपका वडा लक्ष्य रहा। आपन अपने यहाँ जैन कन्या पाठशाला की स्थापना भी की थी, परन्तु तीन वर्ष बाद योग्य अध्यापिका के अभाव में वह वन्द कर देनी पडी।

आपकी उदारता गांव या समाज तक ही सीमित नहीं है। आपने उम्मेद हॉस्पिटल, जोधपुर को टी० वी० वाड के लिये ५७०००) हजार का आदर्श दान भी दिया।

श्रीमान स्व० नौरतनमलजी भाडावत, जोधपुर

श्री लक्ष्मीमलजी सिंघवी, मिनर्वा भवन, जोधपुर

श्री केशरीमलजी चौरडिया, जयपुर

श्री मगनमलजी कोचेटा भँवाल, (मारवाड)
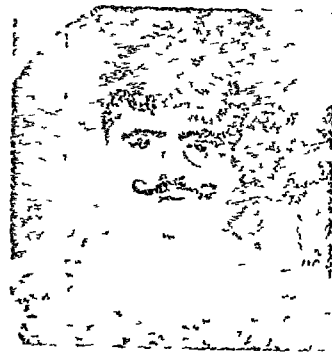
श्री मलजी सेठिया, बीकानेर

श्री बलवन्तसिहजी कोठारी, उदयपुर

आपका जन्म सन् १८६२ में हुआ था। आप मेवाड राज्य के दीवान थे। आपका शिक्षण तो बहुत कम था, परन्तु अनुभवज्ञान विशाल था। महाराणा फतहसिहजी के कार्यकाल में आपने १६ वर्ष तक प्रधान मन्त्री (दीवान) के पद पर रह कर राज्य की महान् सेवा की थी।

आप ओसवाल होते हुए भी आकृति की भव्यता से क्षत्रिय जैसे प्रतीत होते था। आपके पूर्वज क्षत्रिय थे। परन्तु पीछे जैन धर्म अगीकार करने से आपकी गणना ओसवालों में हुई। आप कोठारी केशरीसिहजी के गोद में गये थे।

आपकी कार्यदक्षता तथा बुद्धिमत्ता से महाराणा सा० बडे प्रभावित थे। सन् १९०३ व १९१२ मे जब देहली में दरबार हुआ था तब आपको महाराणा ने सरदारों के साथ वहाँ भेजा था।

आपकी धर्म मे अटल श्रद्धा थी। घाटकोपर जीव दया खाता, बम्बई, शिक्षण सस्था, उदयपुर, हितेच्छु-श्रावक मडल रतलाम आदि को आपने सहायता प्रदान की थी। जीव दया के प्रति आपकी बडी रुचि थी। मेवाड से पहले गौ का निकास होता था, वह आपके प्रयत्नों से बन्द करा दिया।

आपके पुत्र का नाम गिरधारीसिहजी है आपने अपने जीवन मे चार पीढियाँ देखी हैं। ऐसा सद्भाग्य विरले व्यक्ति को ही प्राप्त होता है।

आपके पौत्ररत्न का जन्म होने पर आपने महाराणा सा०का भी अपने घर आतिथ्य किया था। महाराणा सा० ने कठी सिरोपाव व पैरों मे सोना प्रदान कर इन्हे सन्मानित किया था। पूज्य जवाहरलालजी म० के प्रति आपकी असीम भक्ति थी। आपका अवसान ७६ वर्ष की उम्र मे ता० ५-१-३८ को हुआ।
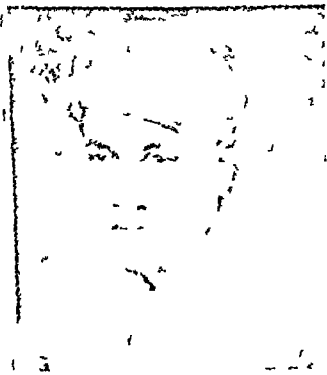
हिम्मतसिंहजी सरूपरिया, जयपुर

आर० ए० एस०, एम० ए०, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०
हिन्दी साहित्य रत्न, जैन सिद्धान्ताचार्य। प्रथम खड।

आपका जन्म उदयपुर की पवित्र भूमि में हुआ। यह मेवाड देश के अनमोल रत्न श्रीदयालशाह के वशज हैं। श्री दयालशाह हिन्दुआ सूर्य महाराणा श्री राजसिह जी जिन्होंने हिन्दू धर्म व आर्य सस्कृति का रक्षण करने ने लिए दिल्लीपति शाह औरगजेब से लोहा लिया उनके मन्त्री व सैनानायक थे। इनकी धवल कीति का स्मराक अभी श्री आदेश्वरनाथ का विशाल मन्दिर राजसमन्द की पाल पर स्थिति नवचौकियों के ऊपर पहाडी पर विद्यमान है।

आपने राजपूताना हाईस्कूल अजमेर से प्रथम श्रेणी में परीक्षा पास कर फर्ग्युसन कॉलेज पूना से इन्टर साइन्स, विलसन कॉलेज बम्बई से बी० एससी०, (प्रकृतिशास्त्र व गणित) आगरा कॉलेज व इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से एम ए० (इतिहास) एल-एल० बी० प्रथम श्रेणी में पास किया। मेवाड के हाईकोर्ट में जुडीशियल शिक्षण लेकर दो-तीन मास महाराणा कॉलेज उदयपुर मे हिस्ट्री के प्रोफेसर रहे। वहां से स्वस्थान नाथद्वारा में सिटी मजिस्ट्रेट व मुनसिफ के पद पर छ वर्ष तक काम कर फिर डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, माल हाकिम व असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर चौदह वर्ष तक काम किया। आपकी निष्पक्ष न्याय प्रणाली, सुव्यवहार, सच्चरित्रता की समय-समय पर उच्चाधिकारियों ने प्रशसा की है और जनता के हृदय पर आपकी गहरीछाप है। आपके अपने शासन काल में नाथद्वारा के समस्त गाँवो मे देवी-देवताओं के नाम पर होने वाले बलिदान की व गाँवों की सीमा में

जीवहिंसा होने व मदिरा मॉस लाने की सख्त रोक थी। कृषकगण पर चढ़ी हुई सहस्रों रुपयों की पुरानी बाकियात मेवाड सरकार से प्रेरणा कर छूट कराई।

स्वधर्मी बन्धु, दुखी और रोगग्रस्त पीडितों की सहायता मे आप विशेष भाग लेते हैं और जैन धर्म के ज्ञान प्रचार व कार्यप्रणाली में आपकी मुख्य लगन है। फलस्वरूप स्थानीय जैन सेवा समिति नाथद्वारा आप ही ने स्थापित करवाई हैं। स्वय आप अपने स्वधर्मी बन्धुओं के साथ परीक्षा में बैठे और जैन सिद्धान्त शास्त्रीय परीक्षा रतलाम बोर्ड से पास कर स्वर्णपदक प्राप्त किया। आपके लगाए हुए पौधे अभी भी प्रफुल्लित हो रहे हैं और प्रत्येक दिन बालक-बालिकाएँ जैन धर्म का अभ्यास कर वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित होते हैं।

शरणार्थियों की आपने पूर्ण रूप से सेवा की। आप मेवाड सरकार की ओर से इस कार्य मे नि शुल्क सेवा के लिए मन्त्री पद पर नियुक्त किये गए।

जागीर पुनर्ग्रहण के कारण नाथद्वारा के जुडीशियल व माली अधिकार लुप्त होने से स्थानीय सेवा से मुक्त होकर राजस्थान रेलवे मे आप एकाउन्टेन्ट के पद पर रहे। वहाँ से कमिश्नरी उदयपुर डिवीजन में स्थानान्तर होकर सन् १६५० मे बृहत् राजस्थान बनने पर आप आर० ए० एस० श्रेणी मे लिये गए। रेन्ट कन्ट्रोलर एस० डी० ओ० फलासिया, एस० डी० ओ० कपास, सुपरिन्टेन्डेन्ट कोर्ट ऑफ वार्डज, सहायक कलेक्टर तथा फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट वाली के पदों पर सुशोभित होकर हाल में असिस्टेन्ट कमिश्नर देवस्थान विभाग राजस्थान उदयपुर के पद पर आरूढ हैं। स्वर्गीय महाराणा श्री भोपालसिंहजी साहब बहादुर ने आपको बैठक व पैर मे सोना पहिनने की इजाजत बख्शी है।

स० २००६ मे उपाचार्य श्री के चातुर्मास के अवसर पर समस्त स्थानकवासी जैन समाज उदयपुर की तरफ से स्वागतकारिणी समिति के सभापति मनोनीत किये गए व श्रावक सघ के सर्वानुमत प्रथम सभापति चुने गए। इसी वर्ष ओसवाल (बडे साजन) समाज की नई कमेटी का चुनाव हुआ उसमे आप सर्वानुमति से मन्त्री पद पर चुने गए। इस कमेटी मे आपने समाज के उत्थान व असहाय-सहायता आदि के लिए भरसक प्रयत्न किया और कमेटी की प्रगति में जो कार्य किया वह सराहनीय है।

अभी श्री जैन स्थानकवासी सेवा समिति उदयपुर ने जो आप ही की प्रेरणा से कायम की गई थी उसमें ज्ञान सम्पादन, प्रौढ शिक्षण, आयम्बिल शाला, स्वाध्यायशाला, दया, तपस्या, असहाय सहायता आदि में पूर्णरूप से सहयोग देकर प्रवृत्ति आगे बढ़ा रहे हैं।

हिन्दी साहित्यरत्न की परीक्षा पास कर सिद्धान्ताचार्य का प्रथम खड पास किया है। आगे अभ्यास चालू है।

आप आठ भाषा हिन्दी, सस्कृत, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, गुजराती, अर्द्धमागधी, व प्राकृत के उच्च ज्ञाता हैं।

जैन धर्म के विशेषज्ञ व प्रभावशाली भाषणदाता हैं। आप जैसे विद्वान् एव चरित्रनिष्ठ पुरुष से समाज को गौरव है।

श्री अमरसिंहजी मेहता, उदयपुर

आपका शुभ जन्म उदयपुर (राजस्थान) में ता० ८ मई सन् १९३१ को हुआ था। आपका प्रसिद्ध खानदान 'चील मेहता' नाम से महाराणा हमीर से चला आ रहा है। आपके पूज्य पिताश्री का नाम श्री बलवन्तसिंह जी मेहता है, जो कि भारतीय संविधान परिषद के सदस्य, लोक सभा सदस्य, अन्तर्कालीन संसद के सदस्य एवं राजस्थान के उद्योग तथा वाणिज्य मन्त्री रह चुके हैं।

आपने राजपूताना विश्व विद्यालय से बी० कॉम० की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की। देहली स्कूल ऑफ इकॉनामिक्स से योजना कमीशन से सिफारिशत आर्थिक प्रशासन कोर्स उत्तीर्ण की है। अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन की 'विशारद' परीक्षा उत्तीर्ण की है। वर्तमान में एम० कॉम (फाइनल) का अध्ययन कर रहे हैं। महाराणा भूपाल कॉलेज में सन् १९५१ का प्रथम सम्मान्य ज्ञान पारितोषिक प्राप्त किया है।

श्री रतनलालजी मेहता, उदयपुर

आप उदयपुर के निवासी श्री एकलिंगदास जी के सुपुत्र हैं। आप अत्यन्त सेवा-भावी, कर्मनिष्ठ एवं धार्मिक आस्था के व्यक्ति हैं। बचपन से ही धार्मिक संस्कारो से संस्कारित होने के कारण आपका जीवन अत्यन्त सरल है। सरकारी नौकरी छोडकर इस वृद्धावस्था में भी आप तन-मन से समाज की सेवा कर रहे हैं। मेवाड के आदिवासियो को जीवन-धरातल से ऊँचा उठाने में आप सतत् प्रयत्नशील हैं। पैंतालीस वर्ष की अवस्था में ही आपने सपत्नीक ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिया था। बडी योग्यता और दक्षतापूर्वक उदयपुर में जैन शिक्षण-संस्था, कन्या पाठशाला और ब्रह्मचर्याश्रम का सफल संचालन कर रहे हैं। इन संस्थाओ के लिए आपने भारत के भिन्न-भिन्न भागो में घूम-घूमकर लगभग सवा लाख रु० का चन्दा एकत्रित किया।

अब आप वर्द्धमान सेवाश्रम के द्वारा आदिवासियो के बीच शिक्षा तथा संस्कारो का प्रचार कर रहे हैं। अपनी ७९ वर्ष की आयु में भी पौषधोपवास आदि क्रियाएँ नियमित और व्यवस्थित रूप से करते आ रहे हैं।

धार्मिक थोकडे, शास्त्र आदि का आपको सुन्दर ज्ञान है। आपकी अद्भुत लगन और कार्यशक्ति को देखकर आपके प्रति सहज ही प्रेम एवं आदर प्रकट होना स्वाभाविक है।

श्री मनोहरलाल जी पोखरना, चित्तौडगढ
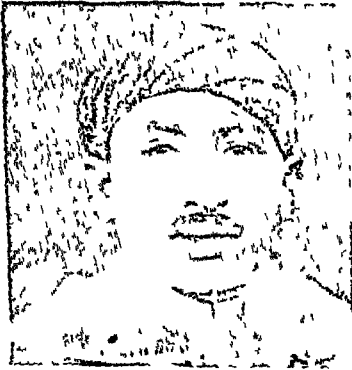
आप श्री मनोहरलाल जी पोखरना के सुपुत्र और चित्तौडगढ के निवासी हैं। चित्तौड नगर के ओसवाल समाज के आप एक उत्साही और समाज-सेवी कार्यकर्ता हैं। नगरपालिका चित्तौड के आप माननीय सदस्य हैं। नगर के धार्मिक एव सार्वजनिक कार्यक्रमो में आप अपना सक्रिय सहयोग देते रहते हैं। श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स के विगत दस वर्षो से आप सहायक सदस्य हैं। प्रत्येक धार्मिक कार्य को सम्पन्न कराने में आप विशेष रुचि रखते हैं। साधु-मुनिराजो की सेवा आपका परम लक्ष्य है। आपके गम्भीर स्वभाव और कार्य-तत्परता से जैन समाज आपसे अत्यन्त ही आशावान है।

० ० ०

श्री अर्जुनलाल जी डागो, भीलवाडा

आप श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक-सघ, भीलवाडा के अध्यक्ष हैं। आपने अपने पिताश्री की स्मृति में ५०,०००) रु० की लागत से "मोती-भवन" बनाया है, जिसमें स्थानीय मिडिल स्कूल, सघ की तरफ से सचालित किया जा रहा है।

० ० ०

सेठ बहादुरमलजी बांठिया, भीनासर

श्री बांठियाजी का जन्म स० १९४६ मिति आषाढ सुद ३ को हुआ था। आप कलकत्ता की सुप्रसिद्ध फर्म प्रेमराज हजारीमल के मालिक थे। छातो के आप बडे व्यापारियो में से थे।

आप बडा सयमी जीवन जीने वालो में से थे। ३९ वर्ष की उम्र में आपकी धर्मपत्नी का देहान्त हो जाने पर भी आपने दूसरी शादी नहीं की थी।

आपकी तरफ से दीक्षार्थियो को भण्डोपकरण, शास्त्रादि मुफ्त दिये जाते थे। स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० के आप अनन्य भक्त थे। पूज्य श्री का जहाँ चातुर्मास होता था वहाँ प्राय आप जाते ही थे।

स० १९८४ में पूज्य श्री का चातुर्मास भीनासर में हुआ था। इस समय पूज्यश्री के व्याख्यानो से प्रेरित हो आपने श्री श्वे० साधुमार्गी जैन हितकारिणी सस्था, बीकानेर को १९१११) रु० का दान दिया था। स्थानीय गौशाला तथा स्टेट मिडिल स्कूल की इमारतें भी आपकी तरफ से ही प्रदान की हुई हैं। आपकी तरफ से स्था० जैन श्वे० औषधालय भी भीनसर में चल रहा है। इस औषधालय को भवन-निर्माणार्थ आपने अपने कनिष्ठ पुत्र स्व० श्री बशीलालजी के नाम से ५००१) रु० प्रदान किया था। २८००१) रु० आपने अपने नाम से दिया और इस औषधालय को स्थायी रूप प्रदान कर दिया। जनवरी सन् १९४५ को ५६ वर्ष की उम्र में आपका देहावसान हुआ।

सेठ श्री गोविन्दरामजी भसाली, बीकानेर

आपका जन्म संवत् १९३५ में राणीसर नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिताजी का नाम सेठ श्री देवीचन्दजी था। अनेक कठिनाइयो का सामना करते हुए आप आगे बढे और जीवन के हर पहलू में आपने सफलता प्राप्त की।

आठ वर्ष की अवस्था में ही आपको कलकत्ता आना पडा और एक फर्म में नौकरी की। आपने साहस करके स्वतन्त्र व्यवसाय में हाथ डाला और 'प्रतापमल गोविन्दराम' फर्म के नाम से दुकान स्थापित की। आपका इस समय दवाइयो का विशाल पैमाने पर व्यवसाय चल रहा है। बीकानेर में भी रग और पेटेन्ट दवाइयो की एक बडी दुकान है, जिसकी देख-रेख आपके सुपुत्र भीखमचन्दजी करते है।

आप बीकानेर के नामाकित प्रतिष्ठित सज्जनो में से है। आजकल आप व्यावसायिक कार्यो से निवृत्त होकर धर्म-ध्यान आदि में सलग्न है। आपकी ओर से चलने वाली "श्री गोविन्दराम भसाली पारमार्थिक सस्था" की तरफ से कलकत्ता में एक पचास हजार रुपये का भवन निकाला हुआ है जिसके व्याज की आमदनी से 'श्री गोविन्द पुस्तकालय' तथा 'श्री जीवन कन्या पाठशाला' का सचालन होता है। ारगढ में आपकी फर्म द्वारा धर्मशाला और उसके पास एक कुआ बनाया गया है।

आपके सुयोग्य पुत्र श्री भीकमचन्दजी सा० भी समाज-प्रेमी है। सन्त-मुनिराजो की सेवा-भक्ति में आप उदार-त से धनखर्च करते है।

श्री नथमलजी बाठिया परिवार, भीनासर निवासी का सक्षिप्त परिचय

श्री नथमलजी बाठिया का जन्म भीनासर में स० १९७२ के सावन सुदी १ को हुआ था। आप तीन भाई है। सबसे बडे भाई श्री मगनमलजी तथा नसे छोटे श्री गोरधनदासजी है। आपकी वर्तमान में तीन दुकानें चल रही है। थम 'मेनरूप फतेचन्द' के नाम से कलकत्ता में, द्वितीय 'गोवर्धनदास बाठिया' ; नाम से छापरमुख (आसाम) में और तीसरी विराव (लिगरीमुख) में ;। उक्त दुकानो पर जूट, चाय, किराना, मनिहारी आदि का व्यापार होता ;। आपकी फर्म करीब ५० वर्ष से है। श्री मगनमलजी सा० कुशल व्यापारी है।

आपके पिताश्री धर्म-कार्य में सदैव तत्पर रहते थे और यथाशक्ति दान भी देते रहते थे। तदनुरूप आज तीनो भाई (पार्टनर) भी धर्म-कार्य तथा समाज-कार्य में पूर्ण उदारतापूर्वक सहयोग देते रहते है। आपने श्री मज्जैनाचार्य स्व० श्री जवाहरलालजी म० सा० की सेवा भी तन-मन और धन से खूब की।

श्री मागीलालजी सेठिया भीनासर निवासी का परिचय
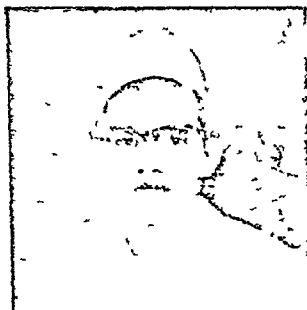
आपका शुभ जन्म भीनासर में सेठिया परिवार में हुआ था। आपके पूज्य पिताश्री का शुभ नाम हीरालालजी है। आप गत ५ साल से छापर मुख (आसाम) में पाट का व्यापार कर रहे है। आप भी धर्म-प्रेमी सज्जन है।

○ • ●

श्री चान्दमलजी, सचेती, अलवर

आप स्वर्गीय श्री चन्दनमलजी चौधरी के सुपुत्र है। कपडे के प्रतिष्ठित व्यापारी है। 'वृजलाल रामवक्श' नाम से आप फैसी कपडे का व्यापार कर रहे है। सामाजिक कार्यों में आपका सहयोग प्रशसनीय है। आपके जीवन में एक विशेषता यह रही है कि आप जिस कार्य को हाथ में लेते है उसे नियमित रूप से पूरा करके छोडते है।

महाराजा अलवर के शासन काल में आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी रह चुके है। स्थानीय भव्य-भवन 'श्री महावीर भवन' के निर्माण में आपका सहयोग प्रशसनीय रहा है। सामाजिक एव धार्मिक कार्यों में आपका प्रमुख सहयोग रहता है। श्री वर्द्ध० स्था० जैन श्रावक सघ की कार्यकारिणी के आप माननीय सरक्षक सदस्य है।

श्री चान्दमलजी पालावत अलवर

आप स्व० श्री स्वरूपचन्दजी पालावत के सुपुत्र है। आपका जन्म फाल्गुन कृष्णा अष्टमी स० १६४८ में अलवर में हुआ था। बचपन से ही आपकी अभिरुचि अध्ययन एव तत्त्वचिन्तन में रही है। स० १६७० में आपने आदरणीय महासतीजी श्री पार्वती म० लिखित 'सम्यक्त्व सूर्योदय', 'सत्यार्थ चन्द्रोदय' और 'ज्ञानदीपिका' आदि ग्रन्थो का अध्ययन स्वनामधन्य प० मुनि श्री माधव मुनिजी के चरणो में रहकर किया और फलस्वरूप अपने परम्परागत मूर्तिपूजा के विचारो को छोड़कर आप चेतन गुण पूजा की ओर पूर्णरूप से प्रवृत्त हो गए।

सवत् १६७३ में वर्तमान सह मन्त्री प० रत्न श्री हस्तीमलजी म० के दादा-गुरु पूज्य श्री विनयचन्दजी म० ने आपकी प्रगल्भबुद्धि को देखकर आपको कर्मग्रन्थ सग्रहणी और क्षेत्र समासादि के स्वाध्याय करने को प्रेरित किया। तभी से कर्मवाद

का आपका अध्ययन गहन से गहनतर होता रहा। कर्म सिद्धान्त के सूक्ष्म विवेचन की आपकी क्षमता की प्रशसा वर्तमान आचार्य श्री एव उपाचार्य श्री ने भी मुक्तकण्ठ से की है।

आप स्थानीय श्री व० स्था० श्रावक सघ के सरक्षक सदस्य है। स्थानीय श्री 'महावीर-भवन' में आपने भी श्री चादमलजी पालावत के साथ-साथ प्रशसनीय सहयोग दिया है। रात्रिकालीन स्वाध्याय मण्डल के सचालन का भार भी आप पर ही है। जिस प्रकार व्यापारिक-क्षेत्र में आपने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है उसी प्रकार धार्मिक तत्त्व-चर्चा में भी आपने अपनी बुद्धि की प्रखरता प्रमाणित की है।

श्री खुशहालचन्दजी सचेती, अलवर

आप स्व० श्री केशरीचन्दजी के सुपुत्र हैं। कपडे के प्रतिष्ठित व्यापारी है। 'कस्तूरचन्द ज्ञानचन्द' और 'खुशालचन्द अभयकुमार' के नाम से आपकी दो व्यापारिक फर्में है जिन पर कपडे का थोक व्यापार होता है। सुप्रसिद्ध बिन्नी क्लॉथ के आप डिस्ट्रीब्यूटर हैं।

धार्मिक तत्त्वचिन्तन में आप श्री चादमलजी पालावत के निकट सहयोगी हैं और उनके साथ-साथ आप भी कर्म-ग्रन्थ का स्वाध्याय करते हैं। स्वनामधन्य चारित्र चूडामणि महातपस्वी श्री सुन्दरलालजी म० जब गृहस्थावस्था में थे तब उनकी ही सद्प्रेरणा से आपका झुकाव शास्त्रीय तत्त्व चिन्तन की ओर हो गया था। तभी से आप निरन्तर इस मार्ग पर आरूढ हैं।

आपका थोकडों का ज्ञान महत्त्वपूर्ण है। सामाजिक कार्यों में आपकी प्रशसनीय अभिरुचि है। आप श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक सघ के कोषाध्यक्ष हैं।

श्री पदमचन्दजी पालावत, अलवर

आप स्व० श्री किरणमलजी पालावत के सुपुत्र है। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने श्री राजर्षि कॉलेज से मेट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् आप व्यापारिक कार्यक्षेत्र में उतर पडे। 'छोटेलाल पालावत' के नाम से आप कपडा, पगडी व सूत का थोक व्यापार करते हैं। अभी कुछ वर्ष पूर्व से आपने जयपुर में भी इसी नाम से कार्यारम्भ किया है।

जिस प्रकार आप व्यापारिक कार्यक्षेत्र में अग्रणी हैं, उसी प्रकार सामाजिक कार्यों में भी प्रमुख भाग लेते हैं। महाराजा अलवर के शासन काल में आप नगरपालिका के उपाध्यक्ष एव राज्य की ओर से ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रह चुके हैं।

श्री जैन युवक सघ की कार्यवाहियो में आपने प्रमुख भाग लिया है। सघ के छठे अविस्मरणीय वार्षिक अधिवेशन में आपने शारीरिक व्यायाम के आश्चर्यजनक खेल दिखाकर जनता को विस्मयान्वित कर दिया था। लोहे के मोटे सरिए को गले एव आँख के कोमल भागो पर रखकर मोडना एव सीने पर मनो वजन से पत्थर रखवाकर तुडवाना आदि कार्य आपके आसानी से कर दिखाए थे।

इस समय आप श्री वस्त्र-व्यापार समिति, पगडी असोसिएशन और श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक सघ के माननीय अध्यक्ष हैं। और दी यूनाइटेड कॉमर्शियल बैंक की अलवर शाखा के अध्यक्ष हैं।
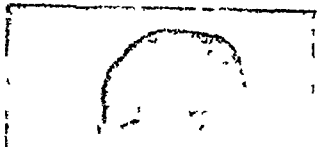
छुट्टनलालजी लोढा, अलवर

आप स्व० श्री दानमलजी लोढा के सुपुत्र हैं। आपका जन्म वि० स० १९६० की आश्विन शुक्ला ९ को हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद, परम्परागत सरकारी खजाञ्ची पद पर आपने कार्य किया। इस समय आप गवर्नमेन्ट कन्ट्राक्टर हैं।

व्यापारिक कार्य के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी अभिरुचि अच्छी है। प्रत्येक सामाजिक कार्य में आप तन, मन, धन से जुट जाते हैं और पूर्ण कर डालते हैं। पजाब-सम्प्रदाय के यशस्वी स्व० पूज्य श्री रामबख्शजी म० का सासारिक सम्बन्ध आपके कुटुम्ब के साथ है।

आपकी सामाजिक प्रवृत्तियो को लक्ष्य में रखते हुए आपको श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक सघ का उपाध्यक्ष चुना गया है।

श्री रतनलालजी सचेती, अलवर

आप अलवर जिला स्थित ग्राम बहादुरपुर निवासी श्री बुधमलजी के सुपुत्र हैं। आपका शुभ जन्म मिती कार्तिक कृष्णा १३ सवत् १९७५ को हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद आप व्यापारिक क्षेत्र में काम करने लगे। अलवर में 'रतनलाल ताराचन्द' के नाम से तथा इन्दौर में 'उमरावसिह सुआ-लाल' और 'रतनलाल मगलचन्द' के नाम से तीन फर्मे कपडे का व्यापार कर रही हैं।

सामाजिक कार्यो में आपकी विशेष रुचि रहती है। स्थानीय काग्रेस के आप कर्मठ सदस्य हैं।

सवत् २००७ में जब तेरह पथ सम्प्रदाय के आदर्श श्री तुलसी अपनी शिष्य-मण्डली सहित यहाँ पधारे तो आपकी धर्मपत्नी तेरह पथ विचारधारा से सम्बन्धित होने से वे आपके ही मकान पर सदल-बल पधारे। उस समय आपने साहसपूर्वक उन्हे अपने सिद्धान्तो की चुनौती दी। आचार्य श्री ने अपने स्थान पर मिलने की स्वीकृति दी। तब आप अपने समाज के अन्य उत्साही एव विद्वज्जनो को साथ लेकर वहाँ उपस्थित हुए। सौभाग्य से सरदार शहर के निवासी श्री मोतीलालजी बरडिया भी यहीं उपस्थित थे। अन्ततोगत्वा तुलसी गणी को निरुत्तर होकर यहाँ से विहार करना पडा।

पजाब से विहार कर जब पूज्य श्री खूबचन्दजी म० अलवर पधारे तब आपको म० श्री के परिचय में आने का सौभाग्य मिला और इन्दौर में श्रद्धेय प० मुनि श्री सहस्रमलजी म० की पुनीत सेवा में जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। तभी से निरन्तर आपकी धर्म एव दर्शन के प्रति रुचि प्रगति पथ पर है। आपकी सामाजिक एव धार्मिक चेतना तथा उत्साह को देखकर ही श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक सघ ने आपको अपना मन्त्री चुना है।

श्री पद्मचन्दजी सचेती, अलवर

आप स्व० श्री खैरातीमलजी सचेती के सुपुत्र है। आपने प्रारम्भिक शिक्षा यहाँ ग्रहण की और आगे अध्ययन कलकत्ता में किया। सन् १९४० में आपको अध्ययन छोडकर अलवर आना पडा। तभी से आपने व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश किन्तु साहित्य से आपका सपर्क निरतर चलता रहा। स्थानीय 'श्री जैन युवक सघ' से सहयोग रहा। सघ के छठे वार्षिक अधिवेशन में वाद-विवाद प्रतियोगीताएँ जैन युवक सघ की ओर से आपने तथा अभयकुमार जी ने भाग लिया था। फलत सब सस्थाओ से विजय प्राप्त की और कप जीता।

सामाजिक कार्यो में आपकी सेवाएँ सर्वतोमुखी है। सामाजिक चेतना एव उन्नति के प्रत्येक कार्य में आपका सहयोग प्रशसनीय है। आपकी सेवाओ एव कार्यदक्षता को दृष्टिगत रखते हुए आपको श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक सघ का सहमन्त्री चुना गया है।

श्री नानकचन्द जी पालावत, अलवर

आप स्व० श्री कुन्दनमल जी पालावत के सुपुत्र है। कपडा, पगडी व सूत के प्रतिष्ठित व्यापारी है। धार्मिक तत्त्व चिन्तन एव सामाजिक उन्नति के कार्यो में आपकी अत्यधिक अभिरुचि है। विद्यार्थियो की स्कूली शिक्षण की रुचि के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा की तरफ अभिरुचि पैदा कराने में भी आप सतत प्रयत्नशील रहते हैं।

पजाव केशरी श्री मज्जैनाचार्य स्व० श्री काशीरामजी म० के सदुपदेश से 'श्री ओसवाल जैन कन्या पाठाशाला' की स्थापना हुई और आप पाठशाला के जन्मकाल से ही उसकी उन्नति में सतत प्रयत्नशील रहे है। आज आपके प्रयत्नो से शैक्षणिक पाठ्यक्रम के साथ-साथ धार्मिक शिक्षण और सिलाई, कढाई आदि का शिक्षण भी दिया जाता है।

आपके द्वारा वाल एव युवक वर्ग को धार्मिक सस्कारो से अपने जीवन को सुसस्कृत वनाने की प्रेरणा भी समय २ पर मिलती रहती है आप श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक सघ की कार्यकारिणी समिति के माननीय सदस्य है।

श्री कुन्जलालजी सा० तालेडा, अलवर

आप स्यालकोट निवासी स्व० फग्गूशाह जी के सुपुत्र है। स्यालकोट में आप प्रतिष्ठित व्यापारी थे। वहाँ आपका सर्राफे का मुख्य व्यापार था। भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय जो हृदयद्रावक काण्ड पाकिस्तान में हुआ और लाखो घरो को उजडकर खानावदोश होकर भागना पडा उस समय आपको भी अपनी चल-अचल सम्पत्ति छोडकर भागना पडा। किन्तु इतनी मुसीवतो का सामना करने के वावजूद भी आप हताश और निराश नही हुए। और सकुटुम्व अलवर पधार गए। यहाँ आपने 'स्यालकोटियो दी हट्टी' के नाम से कपडे का व्यापार आरम्भ कर दिया है। इसके अतिरिक्त दिल्ली में अपने अन्य सहयोगियो के साथ "दिल्ली एल्यूमोनियम कारपोरेशन के नाम से एल्यूमोल्यिम के वर्तनो की फैक्ट्री चालू की है।

भारत के मध्यप्रदेश स्थित कटनी नगर में स्यालकोट के उत्साही एव व्यापार-कुशल व्यक्तियो ने "दी नेशनल रबर वर्क्स" के नाम से फैक्टरी प्रारम्भ की है। अत्यल्प समय में ही इस फैक्टरी ने भारत के रबर-उद्योग में महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर लिया है। आप वर्तमान में इस कम्पनी के डायरेक्टर हैं।

सामाजिक उन्नति के कार्यो में आप सदैव अग्रणी रहते है। श्री वर्द्ध० स्था० जैन श्रावक सघ की कार्यकारिणी के आप माननीय सदस्य है।

श्री अभयकुमारजी बोहरा, अलवर

आप स्वनाम धन्य तपस्वी श्री नानकचन्दजी म० के सासारिक सुपुत्र है। आपकी अल्पायु में ही आपके पिता श्री ने भगवती दीक्षा अगीकार कर ली थी। अत आपको रा० सा० श्री जमुनालालजी रामलालजी कीमती इन्दौर वालो के सरक्षण में रखा गया। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् आपने जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला में सन् १९३४ तक विद्याध्ययन किया। धार्मिक अध्ययन के साथ-साथ आपने हिन्दी में प्रभाकर की परीक्षा पास की है।

आपके काका सा० श्री प्यारेलालजी आपको यहाँ ले आए और अपना दत्तक पुत्र स्वीकार कर लिया। तभी से आप यहाँ व्यापार कर रहे हैं। सामाजिक कार्यो में आपका प्रशसनीय सहयोग रहता है। वर्तमान में आप स्थानीय श्री जैन युवक सघ के कोषाध्यक्ष एव श्री वर्द्ध० स्था० जैन श्रावक सघ की कार्यकारिणी समिति के माननीय सदस्य हैं।

श्री ताराचन्दजी पारिख, अलवर

आप दिल्ली निवासी स्व० श्री बालचन्दजी पारिख के सुपुत्र है। आपके पूज्य पिता श्री का स्वर्गवास ३२ वर्ष की अल्पायु में ही हो गया था। अत आपके नाना सा० श्री गणेशीलालजी पालावत आपकी माताजी को बच्चो सहित अलवर ले आए।

सन् १९३९ तक आपने विद्याध्ययन किया। इसी बीच सौभाग्यवश आपका स्थानीय जनाने शफाखाने की प्रिंसिपल मेडीकल ऑफीसर डा० एस० शिवाकामू से परिचय हो गया, जिनके आशीर्वाद से आपने शीघ्र ही अच्छी उन्नति की। इस समय आप गवर्नमेन्ट कन्ट्रेक्टर है और श्री सवाई महाराजा सा० अलवर के पैलेस कन्ट्रेक्टर का काय भी करते है।

सामाजिक कार्यो में आप रुचिपूर्वक भाग लेते है। स्था० श्री जैन युवक सघ की समस्त कार्यवाहियो में आपका प्रशसनीय योग रहा है। सघ की ओर से चालू किये गए वाचनालय एव पुस्तकालय की उन्नति का मुख्य श्रेय आपको ही है। पुस्तकालयाध्यक्ष बनने के बाद आपने पुस्तको की सख्या द्विगुणित से भी अधिक पहुँचा दी है और पुस्तकालय को भी नवीन ढग से सुसज्जित कर दिया है। श्रद्धेय कविवर्य श्री अमरचन्दजी म० के परिचय में हिज हाइनेंस श्री सवाई अलवरेन्द्र देव को लाने में भी आपने महत्त्वपूर्ण भाग लिया था। वर्तमान में आप श्री वर्ध० स्था० श्रावक सघ की कार्यकारिणी समिति के माननीय सदस्य है।

श्री अभयकुमारजी संचेती, अलवर

आप श्री खुशहालचन्दजी सचेती के सुपुत्र है। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने श्री राजर्षि कॉलेज से मेट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् आपने व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश किया।

सामाजिक कार्यो में भी आप सदैव सहयोग देते आए हैं। स्थानीय श्री जैन युवक सघ की मानसिक एव शारीरिक उन्नति के लिए चालू की गई प्रवृत्तियो में आपने महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया है। श्री ओसवाल जैन कन्या-पाठशाला के कार्यों में भी आप सोत्साह भाग लेते रहते है। आप एक अच्छे वक्ता तथा विचारक है

श्री मंगलचन्दजी सचेती, अलवर

आप स्व० श्री खैरातीमलजी सचेती के सुपुत्र है आप पगडी व सूत के प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् आपने व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश किया। किन्तु सामाजिक कार्यक्रम भी साथ-साथ चलता रहा। श्री जैन युवक सघ के प्रादुर्भाव से ही आप उसकी कार्यवाही में प्रमुख भाग लेते रहे हैं। आपने 'मगलचन्द पन्नालाल' के नाम से फर्म स्थापित की। वर्तमान में सामाजिक कार्यो में विशेष रुचि लेने के फलस्वरूप आपको श्री जैन युवक-सघ का अध्यक्ष चुना गया है।
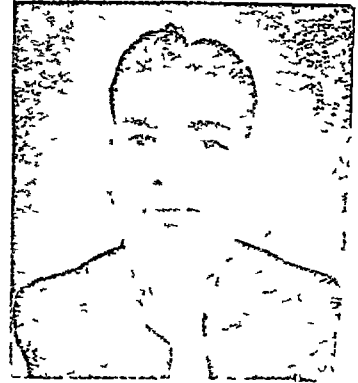
स्व० श्री सुगनचन्दजी नाहर, अजमेर

आपका जन्म स० १९२९ के मार्गशीर्ष वदी १३ को अजमेर में हुआ था।

आपने इन्टर की शिक्षा प्राप्त करके रेलवे की नौकरी की और S T I A रहकर अपनी पूर्ण सेवाओ द्वारा सफलतापूर्वक अवधि समाप्त करके अवकास ग्रहण किया।

अप्पने समाज के कार्यो में भी पूरी दिलचस्पी ली, और कई सस्थाओ के स्तर को ऊँचा उठाया। आप श्री ओसवाल जैन हाई स्कूल के प्रेसिडेण्ट, श्री ओसवाल औषधालय के वाइस प्रेसिडेन्ट, श्री जैन लायब्रेरी के मन्त्री श्री नानक जैन छात्रालय गुलावपुरा के प्रेसिडेन्ट एव श्री नानक सम्प्रदाय के प्रमुख श्रावक थे। आप साधु-सम्मेलन में स्वागत समिति के मन्त्री थे।

आप अपने विचारो के दृढ एव अनुभवी योग्य मार्ग प्रदर्शक थे। आपने समय-समय पर यहाँ के युवको को प्रेरणा देकर आगे वढाया। ८० वर्ष की अवस्था में भी आप व्यारयान आदि मे पैदल ही आने का अभ्याम रखते थे। आपने अपने जीवन में धार्मिक, सामाजिक एव आर्थिक सभी प्रकार की उन्नति की ओर अजमेर मे नाहर परिवार के गौरव को वढाया। आप जैसे धर्म रतन की पूर्ति होना मुश्किल है।

श्री सरदारमलजी लोढा, अजमेर

आपका जन्म स० १९७२ में सुप्रसिद्ध सेठ गाडमलजी लोढा के यहां हुआ।

अजमेर प्रान्त के प्रमुख लोढावश के श्रीमन्त सेठ सरदादमलजी लोटा वर्तमान में अजमेर श्रावक सघ के

सघपति हैं, आप जिस उत्साह एव विचारधारा से इस समय संघ का कार्यभार सभाल रहे हैं, वह अत्यन्त सराहनीय है।

श्रीमन्त घराने में जन्म पाकर भी आप शान-शौकत एव अभिमान से परे हैं, नम्रता तो आप में कुदरती गुण है। आपने अजमेर में श्रावक सघ बनाने एव उसके बाद भी उलझी हुई गुत्थियो को सुलझाने में जिस चतुराई से काम लिया, वह भुलाया नही जा सकता।

आप पू० श्री नानकरामजी म० की सम्प्रदाय के अगुआ श्रावको में से थे, किन्तु सादडी-सम्मेलन के बाद आपने प्रेम और सगठन की भावनाओ को अपनाया तथा अजमेर में श्रावक सघ की स्थापना के लिए सबसे पहले कदम उठाया।

आप अपने पुराने साथियों एव गत सम्प्रदाय के मुनिवर्ग को भी सघ में सम्मिलित होने के लिए सदैव प्रेरणा देते रहे है। आशा है, अब शीघ्र ही आप इस कमी को भी पूर्ण करने में सफल होगे। समाज को आप से पूर्ण आशाएँ है।

श्री कल्याणमलजी वैद, अजमेर

आपका जन्म स० १९६३ श्रावण वदी ३ को अजमेर में श्री केशरीमलजी बैद के यहाँ हुआ।

जैन कॉन्फरन्स के हर वार्षिक अधिवेशन में आप अवश्य भाग लेते है। श्री बैदजी अजमेर साधु सम्मेलन के कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे और समाज-सेवा के हर कार्य में अपना सहयोग देते रहे हे।

आप स्पष्ट वक्ता एव निडर कार्यकर्त्ता है। आपका अजमेर समाज पर काफी प्रभाव है और आज भी मतदान के अवसर सबसे ज्यादा वोट आप ही को मिलते हैं।

श्री बैदजी यहाँ के प्रमुख कार्यकर्त्ता है। धार्मिक लगन, सन्त-सेवा एव साहित्य के पूरे प्रेमी है, आपके विचारो से युवको को काफी बल मिलता है।

आप कॉन्फरन्स के हर अधिवेशन पर जाकर अपने विचारो को स्पष्ट रूप से रखने में कभी नहीं हिचकते एव हर वर्ष अपने सुझाव और प्रस्ताव अवश्य देते रहे है।

आशा है, समाज-सेवा में आपका सक्रिय सहयोग इसी प्रकार निरन्तर बढता रहेगा।

श्री गणेशमलजी वोहरा, अजमेर

आपका जन्म अजमेर में सेठ भेंरु लालजी वोहरा के यहाँ स० १९६२ भाद्रपद सुदी ४ को हुआ था आपका कारोबार श्री गणेशमल सरदारमल वोहरा के नाम से अजमेर में है।

१९८९ में कॉन्फ्रेन्स की दिल्ली जनरल सभा में होने वाले साधु-सम्मेलन के लिए अजमेर का आमन्त्रण लेकर कुछ नवयुवक गए थे तब श्री दुर्लभजी भाई का एक प्रश्न कि—"तुम सम्मेलन के खर्चे की पूर्ति कहाँ से करोगे," का यह उत्तर कि "जब तक मै और मेरे बच्चे जीवित है सम्मेलन की पूर्ति कर सकूँगा, करूँगा, इसके बाद का भार आप पर होगा" श्री गणेशमलजी वोहरा के इन शब्दो ने जनरल सभा को अजमेर सम्मेलन की स्वीकृति के लिए मजबूर कर दिया था, और आज इन्ही के उक्त साहस ने अजमेर को अजर अमरपुरी का महान् गौरव दिया जो कि स्था० जैन इतिहास में सदैव चिर-स्मरणीय रहेगा।

श्री वोहराजी उन कर्मठ कार्यकर्त्ताओ में से है जो कि जैसा कहते है वही कर दिखाते है। आपने अभी सवत् २०१२ में अपनी २० वर्ष की पूरी लगन के फलस्वरूप स्थानकवासियो के लिए एक स्वतन्त्र धर्म स्थान के हेतु एक विशाल नोहरे की स्थापना कर दी और अब एक विशाल भवन के निर्माण में प्रयत्नशील हैं।

आप वर्तमान में, श्री श्वे० स्था० जैन सघ के सभापति एव श्री व० स्था० जैन श्रावक सघ में स्वेच्छा से किसी पद पर नही रहते हुए भी, सब कुछ हैं।

आप केवल अजमेर ही नही, समस्त स्था० जैन समाज के उज्ज्वल सितारो में से है, एव बाहर की जनता पर भी आपका काफी प्रभाव है। श्री बोहरा जी अजमेर के प्राण और युवकों के हृदय-सम्राट् हैं।

शासनदेव आपको चिरायु, स्वास्थ्य एव बल दें कि जिससे आप समाज के अधूरे कार्यो को पूर्ण करनें में शीघ्र सफल हो, यही कामना !

श्री उमरावमल जी ढड्ढा, अजमेर

आपका जन्म सेठ कल्याणमलजी ढड्ढा के यहाँ ता० १५-१२-१० को बीकानेर में हुआ। आपने बी० ए०, एल-एल० बी० तक अध्ययन किया है।

प्रभुता पाकर उदार, वैभव पाकर सरल, अमीरी में रहकर भी अपने साथियो के साथ जी तोडकर कार्य करने वाले श्री सेठ उमरावमल जी ढड्ढा उन महान् रत्नो में से हैं जिन्होंने समाज में फैले अन्धकार को चीर कर प्रकाश दिया, गिरे हुओ को उठाया और युवको को एक नया जोश और नई प्रेरणा दी।

श्री ढड्ढाजी सवत् २००३ से समाज के क्षेत्र में आए, स्था० जैन सघ के मन्त्रीत्व का भार सभाला ओर तब से अब अपनी सेवाएँ पूर्ण रूप से दे रहे हैं।

आप अब तक कई सस्थाओ के पदाधिकारी रहे है, वर्तमान में श्री व० स्था० जैन श्रावक सघ के प्रधान मन्त्री, श्री ओसवाल जैन हाई स्कूल के प्रेसिडेन्ट, श्री श्वे० स्था० जैन के मन्त्री एव अजमेर के भावी भाग्य विधाता हैं।

समाज का यह चमकता हुआ चाँद युग-युग तक अपने निर्मल प्रकाश द्वारा फूट-कलह के अन्धकार को चीरता हुआ, निरन्तर आगे बढता रहे, आपकी धर्म निष्ठा एव उदारता सोने में सुहागा बनकर फैले, यही मगल भावना !

श्री जवरीलालजी चौधरी, अजमेर

आपका जन्म भिणाय (अजमेर) में स० १९५९ आषाढ वदी १२ को सेठ श्री किशनलालजी चोधरी के यहाँ हुआ।

भिणाय ग्राम से धनोपार्जन के लिए निकले हुए आज अजमेर के लखपति श्रीमल सेठ जेवरीलाल जी चौधरी उन कार्यकर्त्ताओ में से हैं जिनके कि हृदय में समाजोन्नति के लिए सदैव उथल-पुथल मची रहती हे। २५ वर्ष से शुद्ध खादी के वस्त्रो में सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले ये अमीर, अपने गरीब भाइयो के लिए कई योजनाएँ सोचते हैं और उसके लिए प्रयत्न भी करते हैं।

आपका समाज के कार्यों में सदैव ही सक्रिय सहयोग रहा हे, तन, मन, धन से आपने अपने साथियो का कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ दिया हे।

सदैव हँसते हुए चहरे में, सेवा के लिए तत्पर कार्य करनें में, जोश एव चेतना भरने में आप कुशल हैं, धार्मिक विचारो में सलग्न एव सन्तो की सेवा में सदैव आगे रहते हैं।

साधु सम्मेलन में आपका प्रमुख भाग रहा हे, वर्तमान में आप श्री श्वे० स्था० जैन सघ के खजानची एव व० स्था० जैन श्रावक सघ के अगुआ कार्यकर्ताओ में से हैं ! समाज को आपसे बहुत आशाएँ हैं।

श्रीमान भेरोंलालजी सा० हींगड अजमेर

आप समाज के छिपे हुए रत्नो में से हैं। समाज एव धर्म की निस्पृह भाव से सेवा करना ही आपके जीवन का लक्ष्य रहा है। आप श्री ओसवाल औषधालय के कई वर्षो से ऑ० सेक्रेट्री पद पर कुशलता पूर्वक कार्य कर रहे हैं। आप मिलनसार, प्रकृति के उदार हृदया हैं। समाज को आप से बडी २ आशाएँ हैं। आपके एक सुपुत्र तथा दो सुपुत्रियाँ हैं।

श्री मनोहरसिंहजी चण्डालिया, अजमेर

आपका जन्म सं० १९६९ पोष सुदी १२ को सेठ मन्नालालजी के यहाँ हुआ। आपका कारोबार सर्राफी (सोना चादी) का है।

श्री मनोहरसिंहजी चण्डालिया का परिचय आपको इसीसे मिल सकेगा कि आप अजमेर श्रावक सघ की धार्मिक सेवा समिति के कनवीनर है। धार्मिक लगन तो आपमें इतनी है कि आज १२ वर्ष से अजमेर में आपने एक आयबिल प्रतिदिन करने की योजना बना रखी है जिसमें आपको हर समय अपना योग देकर उसकी पूर्ति करनी पडती है, सन्तो की सेवा सुश्रूषा के लिए आपका परिश्रम सराहनीय है।

आपका जीवन सादा एव १२ वर्ष से शुद्ध खादीमय है, विचारो के पक्के और आचार-पालक है।

वर्तमान में श्रावक सघ के खजानची एव धार्मिक समिति के सयोजक भी है। आप इस समय समाज के कार्यों में पूर्ण रूप से भाग लेकर अपने साथियो का साहस बढा रहे हैं, आशा है इसी प्रकार आपका सहयोग समाज के बाकी कार्यों को पूरा करने में सहायक सिद्ध होगा।
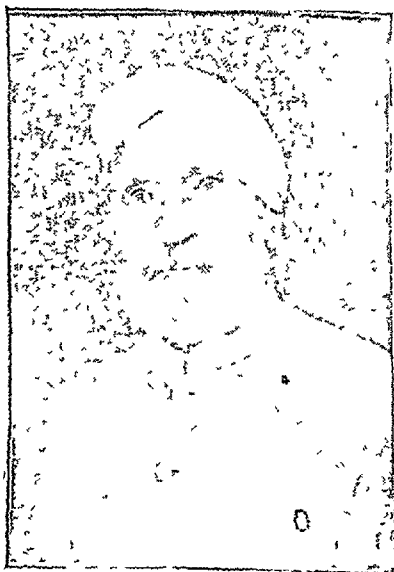
श्री सरदारमलजी छाजेड, शाहपुरा

आप शाहपुरा के निवासी है। कई वर्ष तक आप शाहपुरा में न्यायाधीश का कार्य करते रहे। राज्य में आप अत्यन्त प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति है। मरुधर श्रावक-सम्मेलन, बगडी के आप अध्यक्ष थे। अजमेर साधु-सम्मेलन के उपमन्त्री के रूप में आपने खूब काम किया था। स्व० श्री दुर्लभ जी भाई के बाद आप ही श्री जैन गुरुकुल व्यावर के कुलपति १०-१२ वर्ष तक रहे।

अनेक वर्षो तक कॉन्फरन्स को और समाज को आपकी तरफ से अलभ्य सेवाएँ मिलती रही है। आजकल आप एक प्रकार से 'रिटायर्ड लाइफ' ही व्यतीत कर रहे है।

राय बहादुर सेठ कुन्दनमलजी कोठारी, ब्यावर

आपका जन्म सं० १९२७ में निमाज में हुआ था। ब्यावर में आपने व्यवसाय में अत्यधिक उन्नति की। आप का मुख्य व्यवसाय ऊन का था। इसमें आपने अच्छा पैसा कमाया। ब्यावर में आपने महा लक्ष्मी मिल्स की स्थापना की, जिसमें आप का आधा हिस्सा है। मिल में चर्बी का उपयोग होना आपको बडा खटकता रहता था। अत आपने एक केमिकल ऑइल का आविष्कार करवाया और चर्बी की जगह इसी का उपयोग करवाने लगे। आपने ब्यावर के

अन्य मिल्स वालो से भी चर्बी के वजाय इस तेल को काम में लेने का आग्रह किया। फलत. आज व्यावर के सभी मिल वाले इसी तेल का उपयोग करते हैं।

जैसे आप व्यापारी समाज में अग्रगण्य थे वैसे ही आप राज्य में भी प्रतिष्ठत थे। सन् १६२० में आपको राय साहब और बाद में राय बहादुर का खिताब मिला था। आप ओनरेरी मजिस्ट्रेट भी रहे। आपनें अपने जीवन काल में लाखो रुपए का दान समाज को दिया और कई सस्थाओ की स्थापना की। आपका जीवन वडा सादा था। आप समाज में प्रचलित कुरूढियो के कट्टर विरोधी थे। आपने १,२२,८००) रुपये के व्याज को परमार्थ में लगाने का निश्चय किया था। आपके स्वर्गवास के समय आपके सुपुत्र श्री लालचदजी ने दो लाख रुपयो का आदर्श दान दिया।

आपका स्वर्गवास व्यावर में हुआ। आपके सुपुत्र सेठ लालचदजी सब व्यवसाय को वडी योग्यता पूर्वक सम्हाल रहे है।

शीघ्र लिपि के आविष्कारक श्री एल० पी० जैन व्यावर

विचारशील मस्तक और चौडी ललाट वाले सात भाषाओ में शार्ट हैंड के प्रसिद्ध आविष्कारक श्री एल० पी० जैन का पूरा नाम है श्री लादूराम पूनमचन्द खिवसरा, जो व्यावर में 'मास्टर साहब' के नाम से प्रसिद्ध हो चुके हैं। आपमें धर्म के प्रति अविचल श्रद्धा थी। अपना अधिकाश समय धार्मिक शिक्षा, शास्त्र-स्वाध्याय और चिन्तन-मनन में व्यतीत करते थे। पहली पत्नि के स्वर्गवास हो-जाने के पश्चात् २५ वर्ष की अवस्था में आपका दूसरा विवाह हुआ किन्तु ससार के प्रति उत्कृष्ट उदासीन्ता के कारण पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज से दोनो दम्पति ने ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार कर लिया।

उस समय समाज में शिक्षा की अत्यधिक कमी थी और धार्मिक शिक्षण तो था ही नहीं। सन् १६२१ में आपने जैन पाठशाला की स्थापना की जो आगे जाकर "जैन वीराश्रम" कहलाया। वाहर से पैसा मागे विना नि स्वार्थ और निस्पृह वृत्ति से सस्था का सफल सचालन किया। भाग्यवशात् आपनें नई सकेत लिपि का आविष्कार भी किया हैं। सन् १६३१ में अपने प्रयत्न में आप सफल होगये। कुछ विधार्थियो को अपने इस लिपि का अध्ययन कराया और तैयार किया। आपके शॉर्टहैंड की यह विशेषता है कि वह किसी भी भाषा के लिए काम में ली जा सकती है। क्योंकि वह अक्षर पद्धति पर बनी है। आपके सिखाये हुए कई व्यक्ति आज भी राजस्थान अजमेर तथा मध्यभारत में रिर्पोटर का काम कर रहे हैं और ३००-४००) रु० तक का माहवारी वेतन पारहे हैं। इस कार्य के उपलक्ष्य में श्री मिश्रीलालजी पारसमलजी जैन वेंगलोर वालो की तरफ से ११०००) रुपये की थैली भेंट की गई थी।

आज आप नहीं है। किन्तु आपका नाम और काम अभी भी हैं। जीवन चुराया जासकता है किन्तु जीवन की सुगध नहीं चुराई जासकती।

श्री बेवरचन्दजी वांठिया "वीरपुत्र"

आपका शिक्षण श्रीमान् पूनमचन्दजी खिवसरा के पास श्री जैन वीराश्रम में हुआ। सन्स्कृत, प्राकृत और न्याय की सर्वोच्च परीक्षाएँ देकर आपने समाज में अपना अग्रिमस्थान वना लिया। श्री खिवसराजी द्वारा आविष्कृत सकेत लिपि का अभ्यास कर उसमें अच्छी Speed गति प्राप्त की। इस समय आप बीकानेर में श्री अगरचन्दजी भैंरोदानजी सेठिया के पास रहकर अनेक विद्वानो के साथ लेखन कार्य में सलग्न हैं। आपको शास्त्रो का वोध भी वहुत अच्छा है। बीकानेर पधारने वाले सत-सतियो के शिक्षण का काम आप ही करते हैं। आपका अधिकाश-समय साहित्य-लेखन साहित्य अवलोकन तथा अध्ययन-अध्यापन में ही व्यतीत होता है। इस समय आप सेठिया सस्था के साहित्य-निर्माण सशोधन-प्रकाशन विभाग में प्रमुखरूप से कार्य कर रहे हैं।

श्री शकरलालजी जैन M A L L B साहित्यरत्न
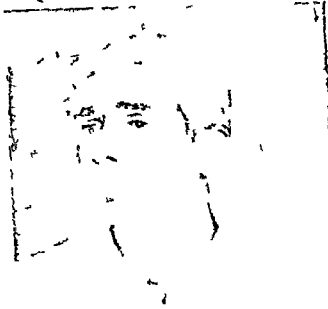
आप राजस्थान मे वरार नामक ग्राम के हैं। कुशाग्र बुद्धि होने के कारण आप कक्षा में सदा ही प्रथम रहा करते थे। आपका हृदय बडा ही भावुक तथा दीन-दुखियो के प्रति करुणार्द्र है। आपने "महावीर शिक्षण-सघ" 'शारदा मन्दिर' तथा जैन युवक-सघ आदि से सस्थाएँ स्थापित कीं। कई समाचार-पत्रो के आप सम्पादक रहे हैं। क्रान्तिकारी और समाजसुधार विचारधारा वाले आप एक मनीषी हैं जिन्हे अपने जीवन मे विरोधी विचारो के विरुद्ध अनवरत सघर्ष करना पडा आप अपने निश्चय के बडे ही दृढ हैं। आपकी सामाजिक सेवाए बडी सराहनीय हैं।

आपने देवगढ मदारिया में श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना की हे। इस आश्रम की स्थापना में आपको अनेक कष्टो का सामना करना पडा यहा तक कि इस आश्रम की स्थापना के उद्देश्य की पूर्ति में आपने वर्षो तक, घी, दही, दूध शक्कर का त्याग कर दिया। बडी योग्यता से इस आश्रम का आप सफल सचालन कर रहे हैं।

श्री देवेन्द्रकुमार जी जैन सिद्धान्तशास्त्री, न्याय काव्य-विशारद H T C H S S

आप वल्लभनगर (उदयपुर-राजस्थान) निवासी हैं। श्री गोदावत जैन गुरुकुल छोटी सादडी के आप स्नातक हैं। इसी गुरुकुल से आपने साहित्य रत्न और जैन सिद्धान्त शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। इस समय आप श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय पाथर्डी में अध्यापन का कार्य करा रहे हैं।

आप हिन्दी, सस्कृत एव जैन साहित्य के उच्चकोटि के विद्वान एव शिक्षण-शास्त्री हैं। आप कुशल अध्यापक वक्ता एव लेखक हैं। सामयिक सामाजिक पत्रो में समय-समय पर आपके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। आपके द्वारा "वाल पचरत्न" और 'महिलादर्शन' वालोपयोगी छोटे-छोटे प्रकाशन भी कराये गये हे। आप एक विचारवान कर्मठ कार्यकर्ता हैं।
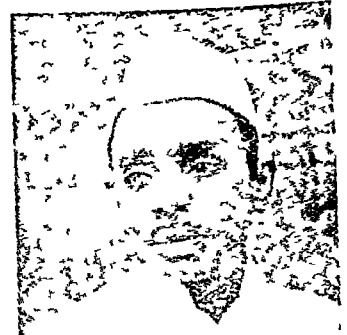
श्री मागीलालजी मेहता, वडी सादडी

श्री गोदावत जैन गुरुकुल, छोटी सादडी के सुयोग्य स्नातक जिन्होने उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्थानकवासी जैन सस्थाओ में ही अपना जीवन बिताया। धार्मिक प्रवृत्तियो में आपकी वडी दिलचस्पी रहती है। आपका परिवार सुशिक्षित है जो समाज के लिए गौरव की वात है। आपके निम्न सुपुत्र और सुपुत्रियाँ हैं —

१ श्री शातिचन्द्रजी मेहता M A LL B सम्पादक 'ललकार'
२ श्री जैनेन्द्रकुमारजी मेहता (इजीनियरिग कॉलेज, जोधपुर)
३ श्री दयावती देवी (वाल मनोविज्ञान व शिक्षण की डिप्लोमैटिस्ट)
४ श्री भगवती देवी (इन्टरमीडिएट)

यह सुशिक्षित घराना हम सब के लिए अनुकरणीय आदर्श है। साधारण घराना भी समय के अनुरूप चलने से कितना आगे वढ सकता है इसके लिए यह उत्कृष्ट उदाहरण है।

श्री शातिचन्द्रजी मेहता, वडी सादडी

आप प्रतिभा सपन्न कवि, सुलेखक, सम्पादक, वकील एव होनहार कार्यकर्ता है। केवल २५ वर्ष की अल्पायु में ही आपने प्रथम श्रेणी में M A LL B उत्तीर्ण कर लिया। विभिन्न प्रकार की दस भाषाओ के आप जानकार प्रसिद्ध पत्रिका 'जिन वाणी' और 'ज्योति' का आप सम्पादन किया और अब जोधपुर तथा चित्तौडगढ—दोनो स्थानो से 'ललकार' साप्ताहिक निकाल रहे हैं।

आपका निजी कहानी सग्रह "चट्टान से टक्कर" प्रकाशित हो गया है। आपकी यह रचना साहित्यिक जगत में काफी समाद्रित हुई है। 'आयकर' नामक ८०० पृष्ठीय ग्रन्थ की भी आपने रचना की है जो अभी अप्रकाशित है।

इस प्रकार ये तरुण युवक सामाजिक राजनीतिक और साहित्यिक जगत में प्रगतिशील गति कर रहा है। समाज के होनहार कार्यकर्ताओ में से आप एक हैं।

श्री रत्नकुमारजी जैन 'रत्नेश', वडी सादड़ी

आप वडी सादडी के निवासी है। श्री मूलचन्दजी आपके पिता का नाम है। श्री गोदावत जैन गुरुकुल, छोटी सादडी में अभ्यास कर श्री सेठिया जैन विद्यालय बीकानेर में उच्चाभ्यास किया। समाज के मुख्य-मुख्य सम्प्रदायो के आचार्यो के सान्निध्य में रहकर आपने लेखन-कार्य किया है। कितनी ही पुस्तको के लेखक तथा सम्पादक हैं।

जैन प्रकाश का ६ वर्ष तक सम्पादन कर आप इस समय जैन बोर्डिंग, अमरावती में गृहपति (सुपरिन्टेन्डेन्ट) हैं। समाज में नवीन विचारधारा के आप अनुयायी है। श्री रत्नेशजी द्वारा समाज को भविष्य में और अधिक उपयोगी साहित्य प्राप्त होगा ऐसा हमें विश्वास है।

पडित सूरजचन्द्रजी डागी 'सत्यप्रेमी'

आप मेवाड में वडी सादडी के निवासी और श्री गोदावत जैन गुरुकुल छोटी सादडी के सुयोग्य स्नातक हैं। आप सर्व-धर्म-समन्वयवाद दृष्टिकोण के हैं। सभी धर्मो का आपने समन्वय की दृष्टि से तुलनात्मक गहरा अध्ययन किया है। बचपन से ही आपमें कविता के प्रति अभिरुचि जागृत हो गई थी—अभिरुचि वढती गई, जिसके फलस्वरूप आज आप समाज के श्रेष्ठ कवि, गायक साहित्य-प्रणेता हैं। आपने चौवीस तीर्थंकरो की स्तुति, रत्न मुकुमाल खडे काव्य, मथन महाशास्त्र आदि अनेक काव्य ग्रन्थों की रचना की है। आपकी रचनाएँ अत्यन्त गम्भीर, महत्वपूर्ण और सरल होती हैं। श्री भारत जैन महामण्डल, वम्बई शाखा के आप व्यवस्थापक हैं। सयुक्त जैन महाविद्यालय, वम्बई के आप गृहपति हैं जहाँ छात्रों को आप धार्मिक शिक्षा प्रदान करते हैं।

श्री अम्बालालजी नागोरी वडी सादडी

आप वडी सादडी के निवासी श्री रतनलालजी नागोरी के सुपुत्र हैं। श्री जैन गुरुकुल छोटी सादडी में कुछ वर्ष तक अध्ययन कर श्री जैन गुरुकुल ब्यावर में मेट्रिक तथा न्यायतीर्थ की परीक्षा दी। इस समय आप B. A होकर M A कर लेने की तैयारी में हैं। धार्मिक सस्कार जो आपको अपने शिक्षण के साथ मिले अब वे इनके विद्यार्थियो को मिल रहे हैं। श्री नागोरी जी जाज्वल्यमान जोश लिये हुए अपने जीवन पथ पर बढते चले जा रहे हैं।

श्री 'उदय' जैन, कानोड
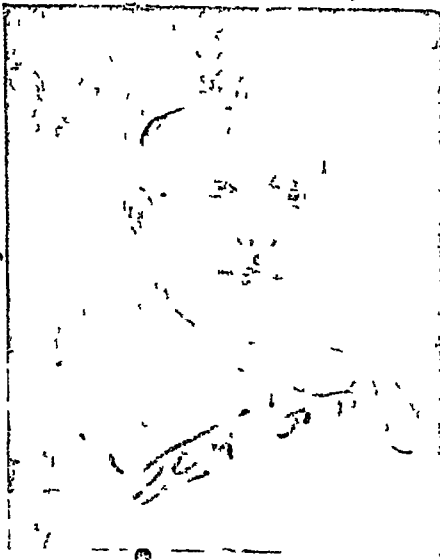
श्री उदयलालजी डू गरवाल कानोडनिवासी श्री प्रतापमल जी डू गरवाल के सुपुत्र है। अपने ही ग्राम में प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् जैन गुरुकुल, छोटी सादडी मे आपका उच्च अभ्यास हुआ। जैन सिद्धान्तशास्त्री, हिन्दी विशारद और न्याय मध्यमा की उच्च परीक्षाए आपने पास की। अनेक सामाजिक कार्यो में भाग लेते हुए कई सस्थाओ में आपने काम किया और अपने ही ग्राम में सन् १९४० में जैन शिक्षण-सघ की स्थापना की जो मेवाड की एक शानदार सस्था हे। आप बडे ही स्पष्टवक्ता और अपनी धुन के पक्के हैं। जैन शिक्षण सघ, कानोड आपकी ही शक्ति और प्रेरणा से अनुप्राणित हो रहा है।

साहित्यरत्न प० महेशचन्द्रजी जैन, न्याय काव्य तीर्थ, कानोड

आप कानोड के निवासी श्री चौथमल जी के सुपुत्र और नन्दावत गोत्रीय है। श्री गौदावत जैन गुरुकुल, छोटी सादडी में आपका उच्च अध्ययन सम्पन्न हुआ। श्री जैनेन्द्र गुरुकुल पचकूला में १०॥ वर्ष तक आपने अध्यापन कराया और वहाँ से 'जैनेन्द्र' नाम की मासिक पत्रिक भी निकाली। श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, भीनासर में गृहपति पद पर काम किया। अब इस समय आप श्री जवाहर विद्यापीठ हाईस्कूल, कानोड में हिन्दी व धर्माध्यापक का काम कर रहे है।

आप स्वभाव के बडे ही शात, उदार तथा मनमौजी प्रकृति के है। आप समाज के नामाकित सफल अध्यापको में से एक है।

श्री पुखराजजी ललवानी

आप यहाँ के श्रावक सघ के बहुत पुराने कर्मठ कार्यकर्ता है। यहाँ के सघ को सगठित करने व समाज में प्रेम, उत्साह व धार्मिक दृढ विचारो का सचार करने में आपका लम्बे समय से हाथ रहा है। नवयुवको को तन, मन, धन से यथा योग्य सहयोग व प्रोत्साहन देते रहते है। सामाजिक उत्थान में आपकी बहुत दिलचस्पी रहती है तथा समाज में आपका बहुत अधिक प्रभाव है। इस समय आपकी अवस्था ४६ वर्ष की है। आप इस नगर के प्रमुख प्रतिष्ठित व धनाढ्य पुरुष हैं। आप यहाँ के पेट्रोल व क्रूड ऑइल के मुख्य विक्रेता हैं। आपका लेन-देन भी बहुत पैमाने पर चलता है।

श्री मोहनलालजी भण्डारी

आप यहाँ के प्रतिष्ठित व्यवसायी, धनाढ्य, होशियार व उत्साही युवक है। आप इस मसय ३४ वर्ष के हैं। समाज को उन्नतिशील बनाने में आप सहयोग देते रहते हैं। सामाजिक तथा व्यापारिक क्षेत्र में आपका काफी प्रभाव है।

श्री मोहनलालजी कटारिया

आप यहाँ के श्रावक सघ के मन्त्री है। आप बहुत ही होनहार, उत्साही व समाज प्रेमी नवयुवक है। आपकी अवस्था ३१ वर्ष की है। मेट्रिक तक आपने शिक्षा प्राप्त की तथा नये विचारो के प्रगतिशील युवक हैं।

श्री विजयमोहनजी जैन

आप 'वीरदल मण्डल' के मन्त्री है। वर्षो से आप समाज सेवा में जुटे हुए हैं। यो आप मिडिल तक शिक्षा प्राप्त है किन्तु आपकी योग्यता काफी वढी-चढी है। लौंकाशाह पत्र का सपादन व सचालन काफी लम्बे अर्से तक कर चुके है। आपके हस्ताक्षर अति सुन्दर हैं। जनता द्वारा आपकी कविताएँ वहुत पसद की जाती है। वर्षो से आप अपना निजी प्रेस सफलता पूर्वक चला रहे है।

श्री नगराजजी गोठी

आप श्रावक सघ के भूतपूर्व अध्यक्ष रह चुके हैं। आप काफी प्रौढ होते हुए भी नये विचारो के विचारशील व धर्म प्रेमी सज्जन है। धार्मिक क्रियाओ तथा थोकडो में आपको बहुत दिलचस्पी है। आप यहाँ के प्रतिष्ठित कपडे के व्यापारी है। व्यापारिक तथा सामाजिक क्षेत्रो में आपका काफी प्रभाव है।

श्री मेहरालालजी पगारिया

आप यहाँ के नवयुवक मण्डल के अध्यक्ष है सादगी व शान्तिमय विचार आपके प्रमुख गुण हैं। नई विचारधारा के आप पक्षपाती हैं। स्थानीय कांग्रेस कमेटी के आप सक्रिय सदस्य हैं। नगर में आपका काफी मान व प्रतिष्ठा है।

श्री मोतीलालजी जैन, गुलाबपुरा (राजस्थान)

आप २८ वर्षीय नवयुवक गुलाबपुरा निवासी है। आपके ६० वर्षीय पिता श्री भूरालालजी बुरड हैं। ननिहाल गुलावपुरा के प्रसिद्ध रुई कपास के व्यापारी कजौडीमलजी रतनलालजी मेडतवाल के यहाँ हैं।

आपने पजाब यूनिवर्सिटी से 'प्रभाकर' सा० रत्न, कलकत्ता से व्याकरण तीर्थ, मा० म० प्रयाग से राजनीति तथा बनारस यूनिवर्सिटी से मैट्रिक की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की।

आप विभिन्न सस्थाओ की सेवा करते हुए वर्तमान में श्री वर्द्धमान जैन महिला विद्यालय, सिकन्दराबाद में तीन वर्ष से प्रधानाध्यापक का काय कर रहे है। वेतन सहित आपकी आय रु० २५०) मासिक है।

आपके तीन भाई तथा दो बहनें हैं। दोनो भाई तथा बहनें राजस्थान में विवाहित हैं। आर्थिक स्थिति सामान्य है। आप सुन्दर, सुडौल तथा स्वस्थ शरीर के उत्साही तथा क्रान्तिकारी विचारो के नवयुवक हैं।

श्री कन्हैयालालजी भटेवडा, जालिया (अजमेर)

आप सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रो में कार्य करने वाले अजमेर राज्य के एक प्रसिद्ध समठ कार्यकर्त्ता हैं। स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा० से आपने खादी धारण करने की प्रतिज्ञा ली थी जिसे आजतक दृढता से साथ निभाये हुए हैं। काप मसूदा क्षेत्र से कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में चुनाव के लिए खडे हुए थे। अनेक सामाजिक

संस्थाओं को आप द्वारा सहायता प्राप्त हुई है। आपने आसपास के क्षेत्र में आप अत्यन्त लोकप्रिय, समाज सुधारक, शिक्षाप्रेमी एव प्रेरणा शील उद्यमी तथा लगनशील कार्यकर्त्ता हैं।

श्री नेमीचन्दजी जैन, राताकोट

आप श्री हरकचन्दजी के सुपुत्र हैं। सामाजिक और धार्मिक प्रवृत्तियो में आपकी बडी दिलचस्पी रहती है। आप बडे ही उत्साही तथा श्रद्धावान हैं सन्त-मुनिराजो की भक्ति में आप सदा तत्पर रहते हैं। समाज की उन्नति और धर्म-प्रचार की भावनाएँ आपकी निस्सन्देह स्तुत्य हैं। अपने सामाजिक और धार्मिक कार्यों के कारण आसपास के गाँवो में आपका नाम प्रसिद्ध है।

कुँ० श्री घेवरचन्दजी जैन, राताकोट

कु० श्री घेवरचन्दजी जैन के पिताश्री का शुभ नाम श्री मिलापचन्दजी जैन है। आप राताकोट विजय नगर निवासी हैं। आपका शुभ जन्म मिती मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्दशी स० १९९० को हुआ था। आप धार्मिक कार्यों में पूर्ण रस लेते हैं। राताकोट स्वाध्याय सघ के आप पाँच साल से सदस्य हैं।

श्री शार्दूलसिंहजी सा०, सरवाड

आप अत्यन्त धर्म-परायण, तपस्वी तथा नित्य नियम के पक्के हैं। आपका कथन है कि "धर्म के प्रताप से ही मेरी हालत सुधरी है, इससे पहले मेरी स्थिति शोचनीय थी।" शास्त्र-वाचन तथा शास्त्र-पठन का आपको शौक है। साधु-साध्वियो के अभाव में अपने गाँव में धार्मिक उपाश्रयो आदि के आप ही अवलम्बन हैं। दीन-दुखियो तथा अन्धे-अपाहिजो को साता उपजाने की ओर आपका विशेष लक्ष्य रहता है। प्रतिमाह एक उपवास और चौदस को १०-११वा पौषधव्रत धारण करने का आपका नियम है। सन् १८८० में पाँच साल तक आपने 'ज्ञान पचमी' तप किया। आपके तीन पुत्र हैं जिनका अपना स्वतन्त्र व्यापार है। ऐसी धर्मनिष्ठ आत्मा सत्य ही अभिनन्दनीय एव अनुकरणीय है। आप कान्फ्रेंस के आजीवन सदस्य हैं। कान्फ्रेंस की भवन निर्माण योजना में आपने १००१) देना स्वीकार किया।

श्री छगनलालजी सा० राका, कोटा

आप आडत के व्यापारी हैं। सन्त मुनिराजो की भक्ति एव स्वधर्मी वात्सल्य आपके विशेष गुण हैं। श्री जैन दिवाकरजी महाराज सा० के चातुर्मास में आपने ८०,०००) खर्च किये थे। आपके ३ सुपुत्र हैं जो बडे ही होनहार हैं।

श्री नाथूसिंहजी सा० वेदमुथा, कोटा

आपके परिवार में भूतपूर्व सेठ मोहनलालजी सा० बडे ही दानवीर तथा उदार वृत्ति वाले थे। कोटा में आपने १५,०००) की लागत का स्थानक भवन निर्माण कराया था। समाज के कार्यो में आपकी बडी दिलचस्पी रहती है। आपका पूरा परिवार सामाजिक एव धार्मिक भावना वाला है।

श्री ताराचन्द्रभाई वारा

आप सौराष्ट्र के शहर राजकोट के निवासी हैं। आपने सौराष्ट्र स्था० जैन धार्मिक शिक्षण सघ के मन्त्रीपद पर रहकर सस्था की दो वर्ष पर्यन्त सेवा की। आप सम्प्रदायवादित्व से परे हैं। आपका अधिक समय वारा में व्यतीत हुआ है।

श्री सेठ हस्तीमलजी श्रीश्रीमाल जसोल

आपके उदार विचारो से प्रेरित होकर स्था० दि० समाज अपने पर्यूषण के दस दिनो में आपको व्याख्यान देने के लिए आमन्त्रित करता है। वर्तमान में आपकी आयु ५० वर्ष से अधिक है फिर भी आप समाज सेवा के लिए सदैव तैयार रहते हैं। आपके धार्मिक जीवन पर आपके पिताश्री त्रिभुवनदास भाई के धार्मिक जीवन की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। आप यहाँ के जैन समाज में अत्यन्त वयोवृद्ध बारह व्रतधारी श्रावक हैं।

आप जसोल के प्रमुख कार्यकर्ता हैं। आपके पिता श्री नेनमलजी तेरापथी थे। आपका खीचन वाले प० मुनिश्री सिरेमलजी म० सा० के साथ सम्पर्क होने से आप प्रभावित हुए और सत्य मान्यता अगीकार की। यहाँ स्थानकवासियों के ७ घर हैं और तेरापथियों के १५०। फिर भी अपनी धर्म-भावना पर अत्यन्त दृढ श्रद्धावान हैं। अत्यन्त उदार वृत्ति होने के कारण विविध सामाजिक और धार्मिक कार्यों में आपकी तरफ से समय-समय पर दान हुआ करता है।

श्री मिश्रीमलजी समदड़ी वालो का परिचय

आपका निवास स्थान समदडी (मारवाड) है। आप एक धार्मिक पुरुष है। समाज के प्रत्येक उन्नति के कार्य में सहयोग देते रहते हैं।

श्रीमान् मगराजजी तेलीडा, वानियावाडी

आप अभी-अभी अ० भा० स्था० कान्फ्रेंस के आजीवन सदस्य बने है। आप धार्मिक एव सामाजिक कार्यो में पूर्ण सहयोग देते रहते है। धर्म भावना आपकी प्रशसनीय है।

दक्षिण भारत के प्रमुख कार्यकर्ता

सेठ राजमलजी ललवाणी, जामनेर
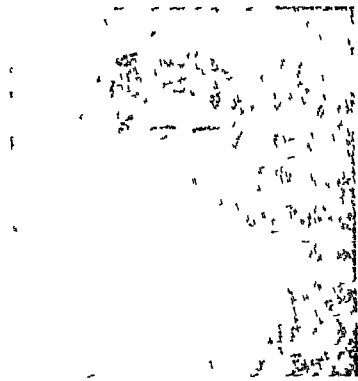
सेठ राजमलजी ललवाणी का जन्म सन् १८९५ में जोधपुर स्टेट के 'ओव' गाँव में हुआ था। आपके पिता खानदेश के आमलनेर तालुके के छोटे से गाँव जामनेर में आकर बस गये थे। अत आपका बचपन भी इसी गाँव में व्यतीत हुआ था। घर की स्थिति सामान्य थी। अत परिस्थितिवश आपमें सहानुभूति, प्रेमभावना और सहनशीलता के गुणो का विकास हो चुका था। १२ वर्ष की उम्र में वे एक धनाढ्य सेठ लखीचन्दजी रामचन्दजी की विधवा पत्नी द्वारा गोद लिये गए। अर्थाभाव मिट गया, पर जो गुण उनके हृदय में घर कर चुके थे। वे बढते ही रहे।

१८ वर्ष की उम्र में ही वे सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र मे प्रविष्ट हो गये। गाँधी जी के कट्टर अनुयायी रहे। काग्रेस के भी मैम्बर है। और वर्षो से शुद्ध खादी ही पहनते है। महाराष्ट्र और खानदेश के आप प्रमुख राष्ट्रीय कार्यकर्ताओ में से एक है।

सामाजिक सेवा भी आपकी विशाल हे। कई धार्मिक तथा सामाजिक सस्थाओ, विद्यालयो के आप सस्थापक, सचालक व सहयोगी है। समय-समय पर आप उदार भाव से दान भी देते रहे है। आपने अब तक लगभग दो लाख रुपयो का दान किया होगा। जलगाँव की सार्वजनिक हॉस्पिटल में आपने ११,०००) रु० प्रदान किये। सरकार को कई बार लडाई के समय में कर्ज दिया है। इसके उपलक्ष्य में सरकार ने जलगाँव के एनीकोक्स हॉल में आपकी प्रस्तर मूर्ति स्थापित की हे।

खानदेश के आप एक कुशल व्यापारी के रूप में भी प्रसिद्ध है। आप लक्ष्मीनारायण स्पिनिग वीविंग मिल्स लिमि० चालीस गाँव के सस्थापक और डायरेक्टर है। जलगाँव की भागीरथी रामप्रसाद मिल्स के भी डायरेक्टर है।

आप सर्वधर्म समभाव के हिमायती और कट्टर समाज सुधारक है। जातिगत रूढियो के आप कट्टर विरोधी है। समाज सेवा के लिये आप सदैव तत्पर रहते है। कॉन्फरन्स के आजीवन मैम्बर है।

आपके सहयोग से आज कई सस्थाएँ, विद्यालय, स्कूल तथा पाठशालाएँ चल रही है। आपकी प्रकृति मिलनसार व विनोद प्रधान है। आप देश समाज व जाति के कर्मवीर योद्धा है, जो आज भी अपनी सेवा प्रदान करते जा रहे है।

श्री सागरमलजी लूकड, जलगॉव

श्री लूकडजी का जन्म सन् १८८२ में हुआ था। आप जलगाँव के लब्ध प्रतिष्ठित एव धर्मानुरागी सज्जन थे। आप व्यापार में बडे कुशल थे। आपकी कई स्थानो पर अपने फर्म की शाखाएँ चल रही है। आप में उदारता का गुण भी विशेष था। २० हजार की लागत का एक भव्य-भवन धार्मिक और सामाजिक कार्य लिये के अर्पण कर आपने जलगॉव की एक बडी भारी कमी की पूर्ति की। आयुर्वेद से आपको बडा प्रेम था। आयुर्वेद औषधालय की स्थापना के लिये आपने २५ हजार का उदार दान घोषित किया था। स्थानीय श्री ओसवाल जैन बोर्डिग हाऊस के शुरू से लगभग १७ वर्ष तक मन्त्री रहे और उसको सफलता के साथ सचालित करते रहे। इन्दौर में भी आपने शान्ति जैन स्थापित की थी जहाँ आपकी ओर से छात्र-छात्राओ को धार्मिक शिक्षा दी जाती है। स्थानीय पाजरा पोल के पाठशाला विकास में भी आपका अनुपम भाग था। जलगांव में भी आपकी 'सागरमल नथमल' के नाम से फर्म है, जो यहाँ की प्रतिष्ठित फर्म मानी जाती है। ता० २१-१-४३ को आपका ६१ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हुआ।

श्री नथमलजी सा० लुंकड, जलगॉव

आप मेसर्स सागरमल नथमल लुंकड प्रख्यात फर्म के संचालक और पार्टनर है। अपने चार भाइयो मे सबसे बडे है। आपकी उम्र इस समय ३८ वर्ष की हे। आपके स्व० पिताश्री सागरमलजी सा० जैन समाज के जाज्वल्यमान रत्न थे। श्री नथमलजी सा० ने अपने पिताश्री के गुणो को पूर्णरूप से अपनाया हे। आप कर्मठ कार्यकर्ता, खद्दरधारी एव राष्ट्रीय विचारो के उत्साही नवयुवक है। कितनी ही धार्मिक, शैक्षणिक और सामाजिक सस्थाओ के आप मुख्य पदाधिकारी और कई व्यापारिक सस्थाओ के चेयरमेन मेम्बर और सेक्रेटरी हैं। इतना गुरुतर कार्य और सुयश लिये हुए भी आपकी नम्रता तथा निरभिमानता अनुकरणीय एव अभिनन्दनीय है।
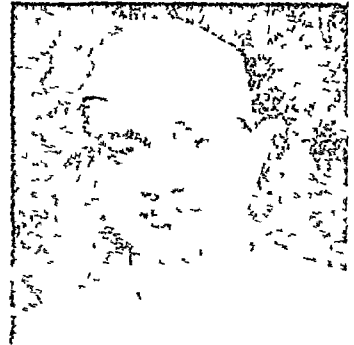
आपके लघुभ्राताओ का सहयोग भी आपके व्यवसाय मे पूर्णरूप से प्राप्त हो रहा हे। चारो बन्धुओ में स्पृहणीय भ्रातृभाव है। आप स्थानीय पाजरापोल सस्था और श्री कानजी शिवजी ओसवाल जैन बोर्डिग के कई वर्षो से जनरल सेक्रेटरी हैं। आप अ० भा० श्वे० स्था० कान्फरेन्स के सादडी अधिवेशन में जनरल सेक्रेटरी चुने गये थे।

आपकी फर्म की तरफ से शहर में 'सागर भवन' नामकी २५,०००) रु० की लागत का भवन धार्मिक एव सामाजिक कार्यो के लिए अपने स्व० पिताजी के स्मरणार्थ समाज को अर्पित कर दी हे। इसके अतिरिक्त सागर आयुर्वेदिक औषधालय सागर हाईस्कूल, सागर पार्क, सागर-व्यायामशाला आदि कई सस्थाएँ अपनी तरफ से चला रहे है।

आपका मुख्य व्यवसाय कपडे का है। इसके अलावा आप सिनेमा फिल्म डिस्ट्रीब्यूटर्स भी है। बम्बई, इन्दौर, बुरहानपुर, भुसावल आदि अनेक स्थानो पर आपके फर्म की शाखाएँ हैं।

अनेक क्षेत्रो में अनेक विध सेवाओ के कारण आपने जन-साधारण से प्रेम और सम्मान प्राप्त किया हे। अपनी नम्रता एव उत्साह से आप खानदेश के युवको के हृदय सम्राट् बने हुए हैं।

श्री पूनमचन्दजी सा० नाहटा, भुसावल

महाराष्ट्र के इस वृद्ध किन्तु तेजस्वी कार्यकर्ता को कौन नहीं जानता ? अपने प्रान्त मे जन-जीवन एव समाज को जीवित एव जागृत करने में जो गोरवमय आपने बढाया हे उसने आपके नाम को सुयश से सुवासित कर दिया है। आपके पिताश्री का नाम ओकारदासजी और आपका जन्म-स्थान वामणादि ह। यद्यपि आपका शिक्षण मराठी की चोथी कक्षा तक ही हुआ हे किन्तु अपनी अलौकिक प्रतिभा एव व्यवहार-कुशलता से समाज में सम्माननीय स्थान बना लिया है। आपही के निरपेक्ष नेतृत्व मे श्री खानदेश ओसवाल शिक्षण सस्था, भुसावल अपने प्रान्त के निर्धन विद्यार्थियो को योग्य पोषण देती हुई अग्रसर हो रही हे। आपका सादगीमय जीवन, व्यसनो से अलिप्त तथा सरल स्वभाव किसी भी व्यक्ति को प्रभावित कर लेता है। लक्ष्मी से सम्पन्न होने पर भी अपने जीवन के दिनचर्याओ में आप पूर्णत स्वावलम्बी हैं।
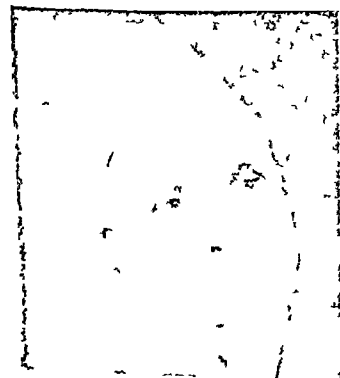
समाज-सुधारक के रूप में कुरीतियो के बन्धन तोडने में आपने हमेशा आगे बढकर काम किया ह। आपकी सभी पुत्रियो के विचार आपकी सुधारक विचारधारा के प्रतीक ह। भारत के राष्ट्रीय सग्राम मे आपने जेल-यात्राएँ भी

की है। भुसावल- नगरपालिका के २१ वर्ष तक आप सभासद रहे हैं। राष्ट्रीय सामाजिक सस्थाओ में आपके अनुशासन एव दृढता की बडी भारी छाप रही है तथा इनके कार्यो में उलझे रहने के कारण घरेलू व्यवसाय में आपका बहुत कम समय लगता है। आपका प्रतिक्रमण सुनने लायक होता है। इस समय आप महाराष्ट्र श्रमण सघ के कार्याध्यक्ष हैं।

हमें विश्वास है कि आपके प्रेरणास्पद नेतृत्व से समाज और अधिक लाभान्वित होकर गौरवान्वित होगा।

श्री फकीरचन्दजी जैन श्रीश्रीमाल, भुसावल

खानदेश जिले के प्रतिष्ठित रूई के व्यापारी राजमलजी नन्दलालजी कम्पनी के भागीदार श्रीमान् सेठ नन्दलालजी Cosson King of Khandesh मेहता के सुपुत्र श्री फकीरचन्द जी जैन खानदेश के एक प्रसिद्ध एव लोकप्रिय सामाजिक एव राजनीतिक स्फूर्तिमान कार्यकर्ता है।

जैन समाज के चारो प्रमुख सम्प्रदायो में एकता प्रस्थापित करने वाली सस्था "श्री भारत जैन महा मण्डल" के आप लगातार चार वर्षो से मन्त्री है। महा मण्डल के दौरे में आपकी उपस्थिति रहती है। खानदेश ओसवाल शिक्षण सस्था" जहाँ से प्रतिवर्ष ११०००) रु० की छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं—इसके महामन्त्री हैं। स्थानीय अनेक राष्ट्रीय सस्थाओ के आप पदाधिकारी है। अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त रोटरीक्लब, भुसावल के डायरेक्टर और तालुका तरुण काग्रेस के सयोजक और श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, भुसावल, के, आप मन्त्री हैं। आपकी धर्मपत्नि सौ० पारसरानी का भी सामाजिक कार्यो में बडा सहयोग रहता है। महिला-जगत में आपका प्रभावशाली स्थान है। आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री सतीशचन्द्रजी मेधावी एव होनहार छात्र हैं जिनमें अभी से काव्य की प्रतिभा फूट निकली है।

श्री सुगनचन्दजी चुन्नीलालजी लुनावत

आप धामण गाँव के प्रसिद्ध व्यवसायी, कार्यकर्ता तथा समाज प्रेमी हैं। आपका जन्म अत्रज ग्राम में माघ सुदी ६ स० १९६६ में हुआ। स्वभाव के मिलनसार और गहरी सूझ-बूझ होने के कारण आपने प्रारम्भिक अवस्था से देश समाज तथा अपने आसपास के बाबत चिन्तन करने के साथ तत्सबधी लोकोपयोगी कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। यही कारण है कि आपका वरार के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, व्यापारिक तथा विभिन्न क्षेत्रो में अक्षुण्ण प्रभाव रहा है। आप अनेक शिक्षण सस्थाओ के सचालक मन्त्री तथा सदस्य हैं। अनेक राजनीतिक सस्थाओ तथा सगठनो के कर्मठ कार्यकर्ता एव सदस्य हैं।

आपने अपने पूज्य दादाजी की स्मृति में नगदी एव जमीन मिलाकर ३०,०००) रु० की सहायता देकर मध्य प्रदेश ओसवाल शिक्षण सस्था नागपुर में स्थापित की, जिसे आज बीस वर्ष हो गये हैं। इस सस्था द्वारा प्रान्त के तथा बाहर के ओसवाल विद्यार्थियो को छात्रवृत्तियाँ मिलती हैं। जैन शिक्षण समिति अमरावती के आप सेक्रेटरी हैं। आपही के प्रयत्नों के फलस्वरूप लगभग १,००,०००) की लागत का बाहर के छात्रो के रहने के लिए छात्रालय का भवन अभी-अभी बनकर तैयार हुआ है।

कृषि एवं गोपालन में आपकी बड़ी दिलचस्पी है। स्थानीय गौ-रक्षण-संस्था के आप ट्रस्टी तथा गौ-सेवा संघ विदर्भ-शाखा के आप मन्त्री हैं। व्यवसायिक क्षेत्रों में भी आपने बुद्धि-कुशलता का विलक्षण परिचय दिया है। "दी बैंक ऑफ नागपुर" तथा "दी भारत पिक्चर्स लिमिटेड, आकोला" के आप डायरेक्टर हैं।

महावीर जयन्ती की सार्वजनिक छुट्टी प्रथमतः मध्यप्रान्त में ही हुई। इस भगीरथ पुण्य-कार्य में आपका बहुत बड़ा सहयोग रहा है।

आपकी प्रथम पत्नी का देहान्त सन् १९३५ में हुआ था, जिसकी स्मृति में स्थानीय अस्पताल में "भ्रमर देवी' प्रसूतिकागृह नाम का मेटरनिटी वार्ड का निर्माण करा कर आपने दान वीरता एवं सामयिकता का परिचय दिया है।

आप कॉन्फरन्स में निष्ठा रखने वाले कई वर्षों से जनरल कमेटी के सदस्य हैं। इस प्रकार आपका समस्त जीवन अनेक क्षेत्रों को अनुप्रमाणित करता हुआ आगे बढ रहा है। श्री लुनावतजी जैसे सामाजिक तथा राजनैतिक कार्यकर्ताओं पर समाज को गौरव होना चाहिए। वरार प्रान्त तथा स्थानकवासी समाज को आपसे बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं। समाज के ऐसे ही उज्ज्वल सितारे समाज को प्रकाशित करते हैं।

श्री भीकमचन्दजी सा० पारख, नासिक

आप श्री राचचन्दजी के सुपुत्र हैं और मूल निवासी तिवरी (मारवाड) के हैं। नौ वर्ष की अवस्था में ही आपके पिताश्री का देहावसान हो जाने के कारण आपका अधिक शिक्षण नहीं हो सका। अपनी माताजी की देख-रेख में मराठी की ५वीं कक्षा तक आपका विधिवत् अध्ययन हो सका। आये हुए आकस्मिक संकट का आपने दृढतापूर्वक सामना किया। नासिक में आपने कपड़े का व्यवसाय प्रारम्भ किया और उसमें आपको आशातीत सफलता प्राप्त हुई। स्वर्गीय पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज सा० की आपको गुरुआम्नाय थी। आपके ही प्रयत्नों से सन् १९१५ में पूज्य श्री प्रेमराजजी म० सा० का नासिक क्षेत्र में चातुर्मास हुआ था। आप अत्यन्त धार्मिक मनोवृत्ति के, दृढ आस्थावान और भावुक श्रावक हैं। भक्तामर आदि स्तोत्र, प्रतिक्रमण, कई थोकडे आपको कण्ठस्थ याद हैं। १९२७ से आपका कान्फ्रन्स से घनिष्ठ सम्पर्क है और प्रत्येक अधिवेशन में आपकी उपस्थिति रहती है। श्रावक के बारह व्रतों का यथाशक्ति पालन करते हुए अनासक्त एवं निष्काम वैराग्यमय जीवन-यापन करते हैं। जैन धर्म के तत्त्वों के आप गहन अभ्यासी हैं। सामाजिक और सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में अग्रसर रहने के कारण आप अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

आप ही के प्रयत्नों से सन् १९३३ में नासिक में नासिक जिला ओसवाल सभा का सफल अधिवेशन हुआ। पूज्य महात्मा गाधी के और उनकी गाधीवादी विचारधारा के आप अनन्य भक्त एवं प्रेमी थे। महात्मा गाधी से आपका सम्पर्क बना रहता था। यथाशक्ति धार्मिक और सामाजिक कार्यों में आपकी तरफ से दान हुआ करता है। इस प्रकार श्री भीकमचन्दजी सा० योगनिष्ठ श्रावक हैं जो एक माह में ६ दिन का मौन रखते हैं, दिन में अमुक घण्टे तक ही बोलते हैं और प्रतिदिन स्वाध्याय, चिन्तन-मनन आपके जीवन का विभिन्न अंग है।

समृद्ध परिवार, समृद्ध व्यापार और समृद्ध धार्मिक, सामाजिक और सार्वजनिक जीवन ने आपको निराकुल बना कर पूर्ण सुखी बना दिया है। आप आदर्श और अनुकरणीय श्रावक हैं, जिनके जीवन से बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

श्री राजमलजी चौरडिया, चालीसगॉव

आपका जन्म स० १९६० पूर्व खानदेश में वाघली ग्राम में हुआ था। आपके पिताश्री का नाम रतनचन्दजी था। आप धार्मिक सस्कारो से, धार्मिक ज्ञान से सम्पन्न व्यवहार एव व्यापार कुशल चालीसगॉव के अग्रगण्य कार्यकर्ता है। अपनी शिक्षा को अपने तक सीमित न रखकर उसे "बहुजनहिताय" बनाने का आपने प्रयत्न किया है। यही कारण हे कि सामाजिक, प्रादेशिक, धार्मिक, राजनीतिक एव शैक्षणिक कार्यो एव तत्सम्बन्धी क्षेत्रो में आपने सक्रिय सहयोग ही नही अपितु इन कार्य-क्षत्रो के आप एक अग से ही वन गए हैं। कान्फ्रेंस के आप सदा से मेम्बर, सन्त-मुनिराजो के अनन्य भक्त, अनेक शिक्षा-सस्थाओ के विभिन्न पदाधिकारी, कुशल एव प्रभावशाली व्याख्यानदाता तथा एक चैतन्य स्फूर्तिमय कर्मठ कार्यकर्ता हैं। आपके अगरचन्द्र और नरेन्द्रकुमार इस प्रकार दो पुत्र ह।

हमें विश्वास है कि आपसे तथा आपके परिवार से समाज-धर्म की अधिकाधिक सेवा बन सकेगी।

श्री सेठ बछराजजी कन्हैयालालजी सुराणा बागलकोट निवासी का परिचय

मारवाड में पीही निवासी सेठ श्री बछराजजी सुराणा ने स० १९७० में अपनी फर्म की स्थापना बागलकोट में की। धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र में भी आपका कार्य सराहनीय रहा है। आप सात साल तक ऑनरेरी मजिस्ट्रेट तथा ८ वर्ष तक म्यूनिसिपल कौंसलर रहे हैं।

आपके पुत्र श्री कन्हैयालालजी का शुभ जन्म स० १९७० में हुआ था। आप एक उत्साही नवयुवक हैं। आपने व्यवसाय-क्षेत्र में अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली है। १४ साल से आप म्युनिसिपल कौंसिलर हें और सन् १९५१-५४ में नगरपालिका के नगराध्यक्ष थे। आपने अपनी स्वर्गीय माता 'तीजाबाई बछराज सुराणा' के नाम से सन् १९४३ में बागलकोट में 'मेटरनिटी होम' बनवाकर नगरपालिका के सुपुर्द कर दिया। इसके अतिरिक्त अपने स्व० पिताश्री की पुण्य स्मृति में एक मकान जैन स्थानक के लिए खरीदकर स्थानीय पचो को सुपुर्द कर दिया।

आपने काफी सस्थाओ, स्कूलो तथा कॉलेजो को दान दिया है। आप वर्तमान में व० स्था० श्रावक सघ के अध्यक्ष हैं। जैन समाज तथा व्यापारिक समाज में आपने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। आपकी एक फर्म बागलकोट में 'बछराज कन्हैयालाल' के नाम से रेशमी वस्त्र, रुई और कमीशन एजेण्ट का कार्य कर रही है। इसी प्रकार बागलकोट और बीजापुर में 'कन्हैयालाल केशरीमल सुराणा' के नाम से अनाज व कमीशन का व्यापार होता है। आपकी दूकानो की अच्छी प्रतिष्ठा है।

श्री रतनचन्दजी चौरडिया, वाघली

आपका जन्म स० १६३१ मृत्यु स० १६६५ में हुई। आप वाघली के तेजस्वी, धर्मपरायण, श्रद्धालु और भावुक सुश्रावक थे। महाराष्ट्र प्रान्त में स्थानकवासी जैन धर्म की आपने जागृति कराई। कान्फ्रेंस के आप प्रान्तीय सेक्रेटरी थे। आपकी व्याख्यान-शैली इतनी मधुर एव आकर्षक थी कि हमारे आचार्य और मुनिराज भी आपका व्याख्यान सुनना चाहते थे। सुबोध व्याख्यान माला नाम से आपके व्याख्यानो का सग्रह दो भागो में प्रकाशित हुआ है। आज तक जितने भी कान्फ्रेंस के अधिवेशन हुए अर्थात् रतलाम, हैदराबाद मलकापुर, बम्बई और अजमेर में आप उपस्थित थे और अपने व्यक्तित्व तथा ज्ञान के चमत्कार से अनेक जटिल एव उलझन-भरे प्रश्नो को आपने सुलझाया। ओसवाल समाज के आप प्रसिद्ध एव लोकप्रिय कर्मठ कार्यकर्ता थे। नासिक जिला ओसवाल सम्मेलन के प्रथम अध्यक्ष के रूप में आपने समाज में नवीन चेतना और जागृति कराई।

स्थानकवासी समाज आपके कार्यों से सदैव ऋणी रहेगा।

श्री अमोलकचन्दजी मुणोत, जबलपुर

खादी की धोती पर कुरता तथा सदरी सयुक्त धवल पोशाक से वेष्टित ठिगना कद, हँसमुख किन्तु कठोर, भरे हुए चेहरे पर खडी कटी हुई मूँछें, चमकती हुई दूरदर्शी आँखें, सीधा-सादा सरल व्यक्तित्व ही श्री अमोलकचन्दजी का परिचय है। रहन-सहन का मकान भी सादगी भरे गादी-तकियो शोभित है। आपका जन्म ललितपुर के एक प्रसिद्ध जैन परिवार में सन् १६३१ में हुआ था। २३ वर्ष की अल्पायु मे ही आपने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से आयुर्वेद रत्न, हाईस्कूल परीक्षा, वैद्य विशारद, विद्या विशारद, रामायण विशारद आदि-आदि परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर लीं। तत्पश्चात् जबलपुर में आयुर्वेद की प्रेक्टिस करने लगे। थोडे ही समय में अपनी विचक्षणता से स्थानीय प्रमुख आयुर्वेदिक चिकित्सको में आपकी गणना होने लगी। एक धर्मार्थ दवाखाना भी आपकी सरक्षणता में प्रगति पथ पर अग्रसर है। आप कई सार्वजनिक सस्थाओ के उपाध्यक्ष, प्रधान मत्री, उपमत्री तथा कार्यकारिणी के सदस्य हैं। आप केवल २५ वर्ष की अल्पायु के होते हुए भी वर्तमान समय में लगभग ६ सस्थाओ के प्रमुख पदो पर हैं। स्थानीय वर्धमान स्थानकवासी श्रावक सघ के मत्री भी हैं। इस प्रकार के होनहार उत्साही [illegible] समाज-सेवी नवयुवक से स्थानकवासी समाज को बडी आशाएँ हैं।

सेवाभावी कार्यकर्ता स्व० श्री मुलजी देवजी शाह

आपका जन्म साडात (कच्छ) गाँव में हुआ था। बाल्यावस्था में नागपुर आये। यहाँ शिक्षा प्राप्त की। आपकी तेजस्वी बुद्धि से व्यापार व्यवसाय में विशेष वृद्धि हुई। व्यापार में प्रवृत्त होते हुए भी, सामाजिक क्षेत्रो में भी आपको अग्र स्थान प्राप्त था। सन् १६३२ से नागपुर स्थानकवासी सघ के मन्त्रीपद पर थे और अन्तिम श्वास तक मन्त्रीपद पर रहे। आपके कार्य-काल में श्री सघ के दो भवनो का निर्माण हुआ। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक प्रवृत्तियो में वृद्धि हुई।

श्रीसघ के अतिरिक्त नागपुर की व्यापारिक सस्थाएँ, गुजराती स्कूल, गौरक्षण, इत्यादि सस्थाओ के अग्रगामी थे।

आपका स्वर्गवास दिनाक १६-४-१६५२ को नागपुर में हुआ। आपकी यादगार कायम रखने के लिए नागपुर श्रीसघ ने 'शाह मुलजी देवजी वाचनालय' की स्थापना की है।

● ● ●

श्री भीखमचन्दजी फूसराजजी सखलेचा, नागपुर

आपका जन्म सवत् १६८० में 'अलाय' राजस्थान में हुआ था। आप स्व० सेठ श्री सरदारमलजी नवलचन्दजी पुगलिया की दुकान सँभाल रहे है। इस समय श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ के ३-४ वर्ष से अध्यक्ष पद पर है।

● ● ●

श्री हसराज देवजी शाह, नागपुर

आप श्री मूलजीभाई देवजी के छोटे भाई है। माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर व्यवसाय का कार्य करने लग गये। इस समय आप अपने वडे भाई स्व० श्री मूलजीभाई के स्थान पर व्यापारी सस्थाओ में और श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ के मन्त्री है। प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में आप श्री सघ की सेवा कर रहे हैं।

श्री सम्पतराजजी वाडीवाल, रायपुर

आपके कन्धो पर ही स्थानीय सघ का मन्त्रीत्व का भार है। निरन्तर चार वर्षो से आप इस पद पर विराजमान है। आपकी उदारता, सुशिक्षा, धर्मप्रियता एव श्रद्धा अनुपम और अनुकरणीय है। सघ और शासन की सेवा करने में आपको वडी प्रसन्नता होती है। अदम्य उत्साह से इन कार्यो के लिए आप रात-दिन एक करते पाये गए है।

देशभक्त त्यागमूर्ति श्री पूनमचन्दजी रांका, नागपुर

आपके पिताजी का नाम शम्भुरामजी था। अपने समय में नागपुर में आपकी बडी भारी फर्म थी। किन्तु उस समय महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन ने इस व्यवसायी को गांधीवादी, देशभक्त और कर्मठ कार्यकर्ता बना दिया। नागपुर जिले के आन्दोलन के आप सूत्रधार हो गए—नेतृत्व की बागडोर आपके हाथों में आ गई। कांग्रेस के आन्दोलनों में और उसके रचनात्मक कार्यक्रमों में आपने अपनी समस्त सम्पत्ति अर्पण कर दी और देश के लिए फकीर हो गए। अनेक वर्षों तक आपको जेल-यातना सहन करनी पडी।

सन् १९२३ में मलकापुर में श्री मेघजी भाई थोभण के सभापतित्व में अधिवेशन हुआ। उस समय आप नागपुर के ३ प्रतिनिधियों में से एक प्रतिनिधि होकर गए थे। आपको सब्जेक्ट कमेटी में लिया गया। आपने अधिवेशन में तीन प्रस्ताव इस विषय के रखे—(१) महात्मा गांधी के आन्दोलनों के प्रति सहानुभूति, (२) पोशाक में शुद्ध खादी अपनाई जाय, (३) धर्मस्थानों में छुआछूत का भेद मिटाया जाय। प्रथम के दोनों प्रस्ताव तो जैसे-तैसे स्वीकृत हो गए किन्तु तीसरा प्रस्ताव स्वीकृत नहीं हुआ। आपकी लाचारी पर प्रेसिडेन्ट श्री मेघजी भाई भी बडे दुखी थे। उस समय स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा० का चातुर्मास जलगाँव में था। कॉन्फ्रेंस का डेपुटेशन पूज्यश्री के दर्शनार्थ गया तब अधिवेशन में पारित प्रस्ताव भी बताए गए। पूज्यश्री ने आपके गिरे हुए प्रस्ताव के प्रति पूर्णरूप से नैतिक समर्थन प्रदान किया और फरमाया कि—"धर्म-स्थानों में मनुष्य-मात्र को धर्म-श्रवण करने का अधिकार है।" श्री मेघजी भाई ने तब आप से क्षमा याचना की।

आप इस समय कांग्रेस के विधायक कार्यक्रमों में लगे रहते हैं आप सर्वोदयवादी हैं। और विशुद्ध रूप से राष्ट्रीय दृष्टिकोण के असाम्प्रदायिक विचारधाराओं के हैं, यद्यपि धार्मिक और सामाजिक-क्षेत्र आपका अब नहीं रहा किन्तु निश्चित ही श्री रांकाजी समाज के लिए गौरव हैं कि समाज ने अपनी एक महान् विभूति राष्ट्र को अर्पण की।

श्री गेन्दमलजी देशलहरा गुण्डरदेही (दुर्ग) म० प्रदेश

आपका जन्म संवत् १९५६ के आषाढ शुक्ला नवमी को हुआ था। आपके पिताश्री का शुभ नाम श्री हंसराजजी था। अध्ययन काल से ही आपके हृदय में राष्ट्रीय भावनाएँ जागृत थीं। अतः व्यावसायिक जीवन के साथ-साथ राष्ट्रीय कार्यों में भी पूर्ण मनोयोग से हिस्सा लेने लगे। सन् १९३० के राष्ट्रीय आन्दोलन में आपको कठोर कारावास तथा ५०) रु० जुर्माने की यातनाएँ सहनी पडी। [illegible] वस्तुतः शक्ति एव रचनात्मक कार्यों में पूर्णशक्ति लगाते हैं। ग्रामोद्योग-प्रचार मादक पदार्थ निषेध व बलिदान प्रथा आदि बन्द करवाने में आप सदा अग्रणी रहे हैं। अ० भा० श्वे० सम्मेलन के डेपुटेशन में सम्मिलित होकर आपने [illegible], बरार खानदेश आदि स्थानों का दौरा किया। [illegible] आप खादी भण्डार एव स्वदेशी वस्त्रों के व्यापारी हैं। [illegible] राजनांदगांव के प्रचार कार्य में आपने सक्रिय भाग लिया। [illegible] राजजी और सुपुत्रियां श्री मदनबाई, ताराबाई व [illegible]बाई हैं। समाज को आपसे बडी-बडी आशाएं हैं।

श्री अगरचन्दजी सा० वेद, रायपुर

आप स्थानीय श्रीसघ के उपाध्यक्ष हैं। सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में आपका उत्साह तथा दान गौरव-पूर्ण एव प्रशसनीय हे। आपकी ही प्रेरणा से यहाँ जैन स्कूल की स्थापना हुई। सामाजिक कार्यों में तन-मन-धन से सहयोग औरो के लिए अनुकरणीय है।

श्री गणेशीलालजी चतर, सीवनी (म० प्रा०)

आपका जन्मस्थान मेवाड राज्यान्तर्गत ताल नामक एक छोटे से ग्राम का है। आप होशगावाद मे स्वर्गीय सेठ नेमीचन्दजी के यहाँ दत्तक गए। सीवनी में स्थानकवासी जैन केवल आप ही हैं, पर आपकी धर्मप्रियता ने मन्दिर-मार्गियो को भी इतना प्रभावित किया कि सीवनी के सभी मन्दिरमार्गी भाई स्थानकवासी के रूप में परिवर्तित हो गए आप कांग्रेस के अनन्य भक्त हैं। लगातार २२ वर्षों से शुद्ध खादी धारण करते चले आ रहे हैं। आपकी चार गाँव की जमीदारी होते हुए भी जमीदारी के उन्मूलन सत्याग्रह में आपका प्रमुख हाथ था। धर्म-कार्यों में मुक्त हस्त से दान तथा जैन-सिद्धान्तो का कठोरतम पालन आपकी विशेषता है। आपकी सन्तान में एक पुत्र तमा पुत्रियाँ हैं। जिले का बच्चा-बच्चा आपके नाम से परिचित है।

श्री अगरचन्दजी गुलेच्छा, राजनादगाँव

आप एक उदारमना, शिक्षा-प्रेमी एव अनन्य धर्मश्रद्धालु व्यक्ति थे। दीन-दुखियो के प्रति आपका हृदय सदा ही सदय बना रहता था। समाजहित कार्यो के लिए आप सदैव मुक्तहस्त होकर दान करते थे। आप एक ऐसे लक्ष्मीपति थे, जिन्होंने साधारण व्यवसाय प्रारम्भ कर अपने पुण्य बल एव बुद्धिबल से समय का लाभ उठाया और एक प्रतिष्ठित तथा यशस्वी लक्ष्मीपति वन गए। धन कमाना आसान है किन्तु कमाये गए धन को समाज एव लोकोपकारी कार्यों में लगाना कही अधिक कठिन है। छत्तीसगढ इलाके में जहाँ जैन समाज की बहुत बडी सख्या है, किन्तु समाज की एक भी सस्था न थी। इस अभाव को दूर करने के लिए वह एक मुश्त २१,०००) दान कर राजनादगाँव में श्री देव आनन्द जैन शिक्षण सघ की स्थापना की। आपके वडे सुपुत्र श्री भवरीलालजी गुलेच्छा भी अपने पिता के समान ही धार्मिक और सामाजिक कार्यो में दिलचस्पी लेने वाले नवयुवक हे। अपने पिता के समान आपसे भी समाज को वडी-आशाएँ हैं—जो सहज स्वाभाविक है।

स्व० सेठ श्री चन्दनमलजी मूथा, सतारा

श्री सेठ चन्दनमलजी मूथा का जन्म स० १७८६ आषाढ वदी ६ को हुआ। बचपन से ही आप अपने अग्रज भाई श्री वालमुकुन्दजी मूथा के साथ व्यापार में साथ रहे और काफी धन और कीर्ति सम्पादन की। आपने अपनी शाखा वम्वई और शोलापुर में भी स्थापित की। जिस तरह आपने धन उपार्जन किया उसी तरह आपने मुक्त हाथो से उसका सदुपयोग भी किया।

जैन समाज की धार्मिक या सामाजिक सस्था फिर भले ही वह हिन्दुस्तान के किसी भी भाग में हो, आपकी ओर से गुप्त मदद मिलती ही रहती थी। कॉन्फ्रेन्स के वम्बई अधिवेशन के समय आपने पूना वोर्डिंग को ११ हजार रु०, कॉन्फ्रेन्स को ५ हजार रु०, घाटकोपर जीवदया खाता को ३ हजार रु० और सस्कृत शिक्षण की सुविधा के लिए ५ हजार रु० की उदार भेंट आपकी दानप्रियता के थोडे से उदाहरण मात्र हैं।

आपको आयुर्वेदिक उपचार के प्रति वडा सन्मान था। आपने अपने जीवन में आयुर्वेदिक औषधि के सिवाय अन्य कोई दवा नही ली थी। आयुर्वेदिक पद्धति पर अनहद श्रद्धा तथा प्रेम से प्रेरित होकर आपने सतारा के आर्याग्ल वैद्यक विद्यालय को वडी रकम प्रदान की थी। ७१ वर्ष की उम्र में जव आपकी वर्षगाठ मनाई गई थी तव आपने सतारा के मारवाडी समाज को उनके उत्कर्ष के लिए पाँच हजार रुपये प्रदान किये थे।

जीवन की अन्तिम घडियो में आपने ५० हजार रुपये धार्मिक कार्य के लिए अलग निकाले और १० हजार रुपये विभिन्न सस्थाओ को भेंटस्वरूप प्रदान किये।

अन्तिम समय में आपने सथारा भी कर लिया था। आपकी धार्मिक श्रद्धा, सत्यप्रियता और उदारवृत्ति प्रशसनीय तथा अनुकरणीय थी।

श्रीमान् स्व० उत्तमचन्दजी मुथा, पाथर्डी

मुथाजी एक गम्भीर स्वभावी, मुत्सद्दी कायकर्त्ता के रूप में प्रख्यात थे। आपका जीवन वडा उज्ज्वल था। जैन-अजैन सभी जनसमुदाय आपको अपना नेता मानते थे। अहमदनगर जिले के कार्यकर्त्ताओ में आपका विशिष्ट स्थान था। पाथर्डी की सभी सस्थाओ को आपकी दीर्घदर्शिता एव निष्पक्ष वृत्तिका सदैव वहुमूल्य लाभ प्राप्त होता रहा। श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय की स्थापना के समय से ही आप ऑनरेरी सेक्रेटरी के पद पर अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक तन-मन-धन से जो सेवा करके एक आदर्श उपस्थित कर दिया वह कुछ ही-सस्था सचालको मे पाया जाता है। पाथर्डी सस्थाओ के लिए श्रीमान् गुगले, और मुथाजी कृष्ण और अर्जुन के समान सहयोगी रहे। आपके सत्प्रयास से अन्य भी कई व्यावहारिक सस्थाएँ स्थापित होकर विकास को प्राप्त हुई। स्थानीय श्री तिलोक रत्न स्था० जैन धार्मिक परीक्षा-वोर्ड एव श्री वर्द्धमान स्था० जैन धर्म शिक्षण प्रचारक सभा के आप महामन्त्री थे।
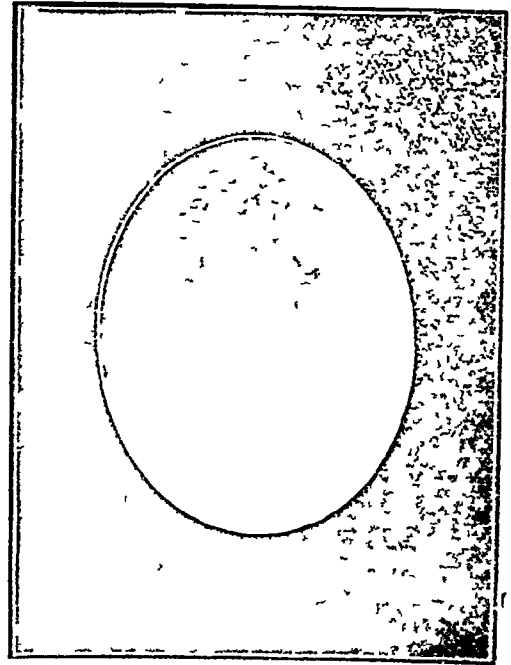
श्रीमान रतनचन्दजी वांठिया, पनवेल

आप सुप्रसिद्ध व्यवहारी एव कुशल-कार्यकर्त्ता के रूप मे प्रसिद्ध हैं। वहुत-सी धार्मिक एव व्यावहारिक सस्थाओ के आप अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, चेयरमन डाइरेक्टर आदि महत्त्वपूर्ण पदो के सफल सचालक है। पाथर्डी परीक्षा-वोर्ड के वर्तमान अध्यक्षपद को आपही सुशोभित कर रहे हैं। आपका स्वभाव अतीव मिलनसार एव हृदय उदार है। आपके आश्रय से कई सस्थाएँ चल रही हैं।
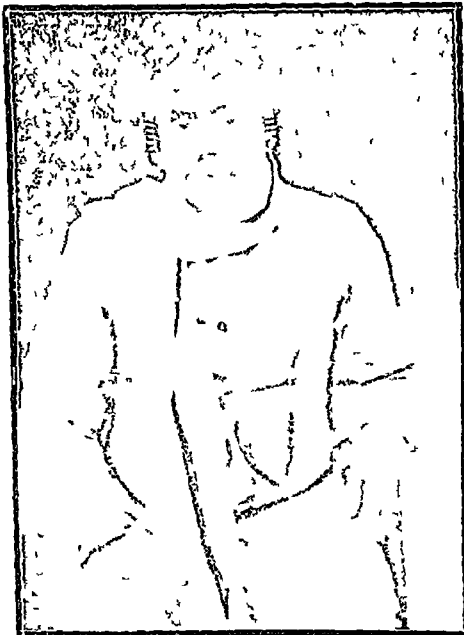
श्रीमान् स्व० सेठ श्री मोतीलालजी गुगले पाथर्डी, (अहमदनगर)

आप पाथर्डी ओसवाल समाज के अग्रगण्य प्रामाणिक सद्-गृहस्थ थे। श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय छात्रालय, एव ट्रस्ट मण्डल के अध्यक्ष पद को अलकृत करते हुए जीवन-पर्यन्त आपने सस्थाओ की बहुमूल्य सेवा की। विद्यालय को १५०००) पन्द्रह हजार रुपये का अनुदान आपने समय-समय पर दिया था। वर्त्तमान विद्यालय भवन के निर्माण में भी आधा हिस्सा आपका ही है। विशाल विद्यालय भवन निर्माण-कार्य प्रारम्भ करने के लिये २५०००) रु० का दान आपने अन्तिम समय में घोषित किया और तत्काल ही वह रकम ट्रस्टियो के सुपुर्द कर दी गई। परीक्षा बोर्ड, सिद्धान्तशाला आदि सस्थाओ को भी आपका सहयोग प्राप्त हुआ है। बाहरी सस्थाओ को भी आप यथाशक्ति सहायता दिया करते थे।

o o o o

श्रीमान् माणकचन्दजी मुथा, अहमदनगर

शास्त्र विशारद स्व० श्रीमान् किसनदास जी मुथा के आप ज्येष्ठ पुत्र है। अहमदनगर ओसवाल समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। अपने स्व० पिता की धार्मिक सेवावृत्ति को आपने भी हृदय से अपनाई है। पाथर्डी हाईस्कूल एव सिद्धान्तशाला के आप अध्यक्ष है। परीक्षा बोर्ड और वर्द्धमान सभा के उपाध्यक्ष तथा सस्थाओ के ट्रस्टी तथा अन्य सम्मानित सदस्य है। अहमदनगर की कई व्यावहारिक एव धार्मिक सस्थाओ के आप पदाधिकारी है। श्री जैन सिद्धान्तशाला, अहमदनगर व घोड नदी की स्थापना आपने ही की है।

श्रीयुत सुगनचन्दजी भण्डारी, इन्दौर

श्रीमान् चुन्नीलालजी गुगले, पाथर्डी

आप स्व० श्रीमान् श्रेष्ठिवर्य मोतीलालजी गुगले, पाथर्डी के सुपुत्र है। अपने पिताश्री के पश्चात् श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय, छात्रालय, धार्मिक परीक्षा बोर्ड आदि जैन एव जैनेतर हिन्द वस्तिगृह आदि सस्थाओ को आप अच्छा सहयोग दे रहे हैं। सेल परचेज एव औद्योगिक सोसायटी के कई वष तक आप चेयरमेन रह चुके है। आप लोकप्रिय गाधीवादी है। आपका स्वभाव मिलनसार हे।

० ० ० ०

श्रीमान् सुवालालजी छाजेड-वालमटाकली

अपने पिताश्री के पश्चात् आप श्री तिलोकरत्न जैन ज्ञान प्रचारक मण्डल के ट्रस्टी होकर वर्तमान में श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय के मन्त्री पद पर काम कर रहे है। आप जैन समाज की उन्नति के लिए अहर्निश चिन्तित रहते हैं। अपने वकीली व्यवसाय के कारण समयाभाव रहते हुए भी यहा की जैन सस्थाओ को पर्याप्त मात्रा में सहयोग देते रहते है।

श्रीमान् चुनीलालजो कोटेचा-नान्दूर, जिला बीड

आप श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय के स्थापना-काल से ट्रस्ट मण्डल के सदस्य हैं। विद्यालय की आर्थिक स्थिति दृढ करने में आपका पूर्ण सहयोग रहा है। आपको शिक्षण विषयक सस्थाओ से काफी प्रेम है। एव उनके लिये अहर्निश तत्पर रहते है।

० ० ० ०

लाला अर्जुनसिहजी जैन जींद

स्व० दी० ब० मोतीलालजी मूथा, सतारा

आप प्रारम्भ से ही कॉन्फरन्स के स्तम्भ रहे हैं। कॉन्फरन्स के जनरल सेक्रेटरी रहे हैं। आपने कॉन्फरन्स तथा स्था० जैन समाज की आजन्म सेवा की है।

स्व० श्री किशनदासजी मूथा, अहमदनगर

आप दक्षिण भारत में शास्त्रो के मर्मज्ञ थे। आप बड़े ही धर्मनिष्ठ और साधु-साध्वियो के मार्गदर्शक थे।
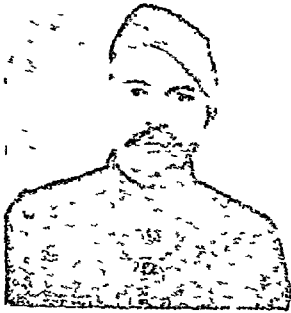
श्री जवाहरलालजी रामावत, हैदराबाद

आप राजा-बहादुर सुख० ज्वाला-प्रसादजी की हैदराबाद फर्म के सचालक है। बडे ही धर्मनिष्ठ और श्रद्धालु श्रावक है।
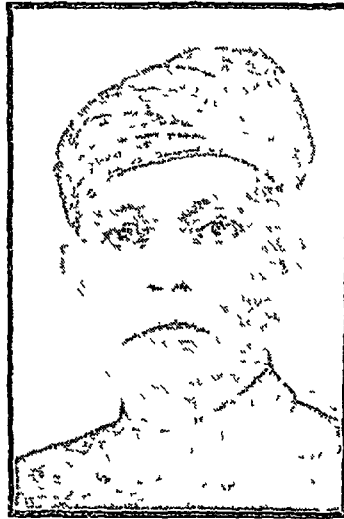
श्री पूनमचन्दजी गाधी, हैदराबाद

आप उदार दिल के प्रभावशाली श्रावक है। समाज और सामाजिक सस्थाओ के प्रति आप बडे उदार है।

स्व० श्री पन्नालालजी बव, भुसावल

आप धर्मप्रेमी, समाज के अग्रगण्य उदारदिल के श्रावक हैं। साधु-साध्वियो के प्रति अनन्य श्रद्धा है।

श्रीमान् नथमलजी रॉका, जामठी

जामठी निवासी —श्रीसम्पन्न नथमलजी राका अति सरल स्वभावी, उदार प्रकृति के सद्गृहस्थ हैं। स्थानीय जनता पर आपका अच्छा प्रभाव है। बोदवड मे हाईस्कूल भवन का निर्माण आपके विद्या-प्रेम एव समाज-सेवा का प्रतीक है। श्री वर्द्धमान जैन धर्म शिक्षण प्रचारक सभा, पाथर्डी की स्थापना-काल से ही आप इसके अध्यक्ष हैं।

श्रीमान हीरालालजी किशनलालजी गाधी

आप एक कुशल व्यवसायी एव समाज-प्रेमी व्यक्ति हैं। आप पारमार्थिक सस्थाओ की स्थापना-काल से आज तक ऑनरेरी सेवा कर रहे हैं। धर्म के प्रति आपकी पर्याप्त अभिरुचि है। आपका स्वभाव सरल एव रहन-सहन सादा है। आप जैसे नि स्वार्थ एव तत्परता से काम करने वाले व्यक्ति समाज में विरले ही देखने को मिलेंगे।

श्री जवाहरलालजी मुणोत, अमरावती

आपका जन्मस्थान मारवाड में पीपाड का है किन्तु इस समय आपका व्यापार अमरावती-मध्यप्रदेश में फैला हुआ है। आपका शिक्षण हाईस्कूल तक हुआ है। बचपन से ही व्यापारिक उत्थान के साथ--साथ धार्मिक एव सामाजिक विकास के लिए आपका मानस मननशील रहा है। मारवाडी समाज की रूढिपरस्त परम्पराओ से आप अविरत सघर्ष करते आ रहे हैं। सौभाग्य से आपकी धर्मपत्नी का भी सभी सामाजिक उत्थान-कार्यो में योगदान बना रहता है। आपने पर्दा आदि कुप्रथाओ को तिलाजली देकर समाज में एक नया अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है।

सामाजिक उत्थान के कार्यों में आपका सदा ही प्रमुखतम भाग रहा है। कॉन्फ्रेन्स के कई वर्षो से आप सतत कार्यकर्त्ता रहे है। इसके साथ-साथ राजस्थान में सम्प्रदायो के आपसी मनमुटाव को मिटाने व जैन समाज में प्रेम भाव व भाईचारे के लिए आपका प्रयत्न अथक व सफल रहा है। कॉन्फ्रेन्स की कार्यकारिणी के कई वर्षों से सदस्य व मानद् मन्त्री है। आप अपने ओजस्वी व प्रभावशाली भाषणो के कारण सारे समाज में अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

आप अमरावती के सुप्रसिद्ध जैन बोर्डिग के सचालको में से एक हैं।

अपने आसपास व दूर-दूर तक की विविध धार्मिक-सामाजिक प्रवृत्तियो के प्रणेता व प्रेरक हैं। अपने जन्मस्थान 'पीपाड' शहर में अपनी माता के नाम पर एक अस्पताल बनवा रहे हैं जो आपकी तरफ से राजस्थान सरकार को भेंट किया जायगा।

व्यावसायिक क्षेत्र मे भी आशातीत सफलता के साथ प्रगति की हे। फिल्म-व्यापार जगत् के 'सी० पी० सी० आई' (मध्यक्षेत्र) सर्किट के अत्यन्त प्रमुख और 'दी कल्याण पिक्चर्स लि० (अमरावती व इन्दौर), के स्थापना काल से मैनेजिंग एजेन्टस् हैं। इस प्रकार सिनेमा-क्षेत्र के सगठनो के आदरप्राप्त सयोजक व निर्देशक रह कर अपनी व्यावसायिक प्रतिभा को और अधिक मुखरित कर रहे हैं।

समाज का यह ज्योतिर्मय नक्षत्र अपने दिव्य तेज से समाज को प्रकाशमान एव छबिमान कर रहा है। आशा और उमगो से भरे हुए इस तेजस्वी युवक से समाज को वडी-वडी आशाएँ होना स्वाभाविक ही है।

आपकी अध्यक्षता में जैन युवक-परिषद् स्थायित्व को प्राप्त कर युवक सगठित समाज को युगानुरूप प्रगतिशील बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

मद्रास के प्रमुख कार्यकर्ता

श्री ताराचन्दजी गेलडा, मद्रास

श्री गेलडाजी का जन्म स० १९४० में मद्रास में ही हुआ। आप मारवाड में कुचेरा के निवासी है। आपके पिताजी का नाम श्री पूनमचन्दजी था। आपके तीन छोटे भाई भी हैं, जिनमें से श्री इन्द्रचन्द्रजी गेलडा का अभी-अभी स्वर्गवास हो गया है। आपके दादा श्री अमरचन्दजी सर्व प्रथम १२५ वर्ष पूर्व पैदल चलकर यहाँ आये थे। प्रारम्भ में आपने नौकरी की और फिर धीरे-धीरे फरमकुण्डा (उपनगर) में रेजिमेंटल बैंकर्स का कामकाज शुरू किया। जिसमें आपने अच्छी सफलता प्राप्त की। आपके पिताजी का स्वर्गवास हो जाने के बाद आप सब भाई अलग-अलग हो गए और आपने पूनमचन्द ताराचन्द के नाम से अपनी स्वतन्त्र फर्म खोली और लाखो की सम्पत्ति पैदा की। आपका विवाह डेह निवासी श्री हसराजजी खीवसरा, जो कि १२ व्रतधारी प्रसिद्ध श्रावक थे की सुपुत्री श्री रामसुखी बाई से हुआ। आपके तीन पुत्र है, जिन्हे आपने अपने स्वतन्त्र व्यवसायो में लगा दिये हैं। श्री भागचन्दजी गेलडा आपके बडे पुत्र हैं जो समाज-सेवा के कार्यो में काफी उत्साह तथा लगन से भाग लेते हैं। श्री नेमीचन्दजी और खुशालचन्दजी भी विनीत और धर्मकुशल हैं जो अपना व्यवसाय सफलता से चला रहे हैं। श्री ताराचन्दजी गेलडा उदार-हृदय के साहसी सज्जन हैं। जिस कार्य को वे हाथ में ले लेते हैं उसे पूरा करके ही चैन लेते हैं। कॉन्फ्रेन्स के ११वें अधिवेशन के आप स्वागतमन्त्री थे। यह अधिवेशन जिस ढग से मद्रास में सम्पन्न हुआ, वैसा पहले कोई अधिवेशन नहीं हुआ। इसका अधिकाश श्रेय आपको ही है। शुभ कार्यो में आप उदारतापूर्वक दान देते हैं। सर्वप्रथम आपने १० हजार रुपयो का एक ट्रस्ट कायम किया था जिसका व्याज १३ वर्ष तक आप शुभ कार्य में लगाते रहे। जब मद्रास में जैन बोर्डिंग की नींव पडी तब आपने यह रुपया बोर्डिंग को दे दिया था। सैदापेठ में आपने अपनी तरफ से महावीर पौषधशाला भवन बनाकर समाज को भेंट किया। शिक्षा के प्रति आपकी अत्यधिक रुचि है। मद्रास में

चलने वाली जैन एज्युकेशनल सोसाइटी की स्थापना में आपका विशेष भाग रहा है। आज इस सोसाइटी के तत्वावधान में, बोर्डिंग, हाईस्कूल, कॉलेज तथा प्रायमरी स्कूल आदि चल रहे हैं। वर्षों तक आप इस सोसाइटी के मन्त्री रहे हैं। और इसका सचालन करते रहे हैं। गत १८ दर्ष से आप गृहभार से मुक्त हो त्यागी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आप सपत्नीक खादी के वस्त्र ही पहनते हैं। अब तो आपने रेल आदि की सवारी का भी त्याग कर दिया है। ११ वर्ष पूर्व आपने ताराचन्द गेलडा ट्रस्ट के नाम से १ लाख रु० का ट्रस्ट किया था जिसमें से २० हजार रु० आपने अपने पिताजी की पुण्य स्मृति में कुचेरा (मारवाड) में मिडिल स्कूल कराने के लिए जोधपुर गवर्नमेंट को दिये हैं। ट्रस्ट में से ५० हजार रु० का व्याज आप प्रति वर्ष कुचेरा बोर्डिंग को सहायतार्थ प्रदान कर रहे हैं। ३१ हजार रु० का व्याज अभी आप प्रायमरी स्कूल मद्रास को दे रहे हैं। ५ हजार रु० आपने महिला विद्यालय, मद्रास को प्रदान किये हैं।

आप स्पष्ट वक्ता तथा नेक दिल सज्जन हैं। स्वभाव से कठोर प्रतीत होने पर भी हृदय से वहुत उदार और योग्य व्यक्ति की कीमत करने वाले हैं। आप इस वृद्ध उम्र में भी समाज सुधार कार्यों में दिनरात सलग्न रहते हैं। सुपुत्र कुँ० भागचन्दजी आदि पर परिवार का बोझ रखकर उत्तरावस्था में निवृत्त होकर आप आदर्श श्रावक जीवन बिता रहे हैं।

सेठ वृद्धिचन्दजी मरलेचा, मद्रास

आपका जन्म स० १९३७ में सोजत (मारवाड) के पास गुण्डागरी नामक ग्राम में हुआ था। आप अपने पिता श्री नवलमलजी मरलेचा के तृतीय पुत्र थे। जब आप १० वर्ष के थे तभी आपके पिता का स्वर्गवास हो गया था। जो-कुछ उनकी सम्पत्ति थी वह आपके बडे भाई ने व्यापार में समाप्त कर दी। १५ वर्ष की वय में आप मद्रास पहुँचे। मद्रास पहुँचकर आपने फरमकुण्डा में ११।) रु० मासिक पर नौकरी की। रसोई बनाने का काम भी किया। स० १९५६ में आपको एक पेढी ने ३००) रु० साल पर नियुक्त किया। उधर मारवाड में अकाल पड जाने से आपने अब तक की सचित पूँजी अपनी माँ के पास मारवाड भेज दी। स० १९५८ में आपके बडे भाई रूपचन्दजी भी अपना विवाह कर मद्रास आये। उस समय आपके पास ३९) रु० शेष रहे थे। दोनो ने मिलकर सैदापैठ में साहूकारी की दुकान की। लेकिन धन्धा ठीक न चलने से आपने रामपुरम में अपनी अलग दुकान कर ली। भाग्य से वहाँ आपको अच्छी आमदनी होने लगी अत आपके बडे भाई रूपचन्दजी भी वहीं आ गए। स० १९६५ में आपका विवाह हुआ। दस वर्षो तक आप दोनो भाई सम्मिलित व्यवसाय करते रहे, बाद में जब अलग अलग हुए तो आपके हिस्से में ८५ हजार रुपये नकद और ५ हजार का जेवर आया। इसके बाद आपने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय शुरू किया जिसमें आपने काफी द्रव्य उपार्जन किया। फलत आपकी गणना मद्रास के अग्रगण्य लक्षाधिपतियो में होने लगी।

मद्रास में जब छात्रालय शुरू करने का प्रश्न आया तो आपने इसके लिए सर्वप्रथम ५० हजार रुपये का दान दिया। आपकी धर्मपत्नी ने कोडम्बाकम् रेलवे स्टेशन के पास २८ ग्राउण्ड जमीन छात्रालय को दान में दी। इस प्रकार आप दोनो ही वडे उदार थे। समाज सुधार की प्रवृत्तियो में आप समय-समय पर भाग लेते रहते थे। कई सस्थाओ को दान देकर वे अपने धन का सदुपयोग किया करते थे।

आपके सुपुत्र श्री लालचन्दजी मरलेचा भी आपकी तरह उदार हैं। मद्रास सघ में, शिक्षण सस्थाओ के तथा मारवाड की शिक्षण सस्थाओ में अच्छा सहयोग दे रहे हैं।

श्री सेठ छगनमलजी सा० मूथा, बैंगलोर

सेठ श्री छगनमलजी सा० समाज के एक रत्न हैं। आपकी सरलता, उदारता, धार्मिकता, शिक्षा तथा साहित्य-प्रेम एव परोपकार-वृत्ति समाज के लक्ष्मी पुत्रो के लिए अनुकरणीय है।

आपका जन्मस्थान मरुभूमि मारवाड में मारवाड जकशन हे। आपके पिताश्री का नाम श्री सरदारमलजी था। श्री छगनलालजी सा० वलून्दा निवासी श्री सेठ शम्भूमलजी के यहाँ गोद चले गए, तव से आप अधिकतर वलून्दा तथा बैंगलोर रहने लगे।

आपने लाखो रुपया अपने हाथो से कमाया और लाखो रुपया अपने हाथो से दान दिया। अनेक दीक्षाएँ तथा अनेक चातुर्मास आपने अपने पास से कराये और अपनी उत्कृष्ट मुनि-भक्ति तथा धर्म-प्रेम का परिचय दिया। दक्षिण प्रान्त में अहिंसा धर्म का प्रचार करने में और जीवो को हिंसा से वचाकर अभय दान देने में आपने अभूतपूर्व परिचय दिया हे।

आपकी ओर से बैंगलोर, खारची जैतारण, वलून्दा आदि स्थानो पर शिक्षण-सस्थाएँ चलती है, जिनमें मैकडो छात्र नि शुल्क शिक्षण प्राप्त करते हैं। स्थानकवासी सार्वजनिक शिक्षण-सस्थाओ में शायद ही कोई ऐसी सस्था होगी जिसमें आपकी सहायता नहीं पहुँची हो। आप अनेक जैन-सस्थाओ के जन्मदाता, सदस्य और ट्रस्टी हैं। शिक्षा के अतिरिक्त अन्य वातो में भी आप काफी खर्च करते है। आपकी उदारता सर्वतोमुखी हे। आपके पास आया हुआ प्रत्येक मनुष्य प्रसन्न तथा सन्तुष्ट होकर ही लौटता है।

आपकी तरफ से खारची, वलून्दा तथा मेडता में तीन औषधालय भी चलते हैं। तीनो ओपधालयो मे लगभग ५-६ सौ रुपया मासिक का खर्च है। हजारो वीमार लाभ उठाते हैं। इस तरह प्रतिवर्ष लगभग ५० हजार रुपया शुभ कार्यों में खर्च कर देते हैं।

आप स्वभाव के सीधे-सादे, अत्यन्त मिलनसार तथा हसमुख हैं। आये हुए व्यक्ति का हृदय से स्वागत करना तथा उन्हे आदर देना आपका स्वभाविक गुण है। छोटे से छोटे आदमी के साथ भी आप प्रेम से मिलते हैं, वातें करते है तथा दु ख दर्द की वातें सुनकर उचित सहयोग देते हैं।

बैंगलोर प्रान्त में सवसे वडी फर्म आपकी है फिर भी इतने सरल हैं कि लोग देखकर आश्चर्य करने लगते हैं। थोडा सा पैसा हो जाने पर आपे से वाहर हो जाने वाले व्यक्तियो के लिये सेठ छगनमलजी आदर्श हैं। आप अपने किये हुए का कभी प्रचार नहीं चाहते। अनेक खर्च तो आपके ऐसे होते हैं कि देने और लेने वाले के सिवाय किसी को मालूम तक नहीं होता।

निस्सदेह सेठ सा० का जीवन लक्ष्मीपतियो के लिये एक दृष्टान्त स्वरूप है। धन सग्रह की वस्तु नहीं किन्तु लोक-कल्याण के लिये लगाने की चीज है, इसे सेठ सा० ने खूव समझा है केवल समझा ही नहीं अपने जीवन में चरितार्थ कर दिखाया है। इस अर्थ में सेठ सा० सच्चे लक्ष्मी पति हैं।

समाज को आपसे वडी-वडी आशाए हैं और ऐसा होना स्वाभाविक भी है।
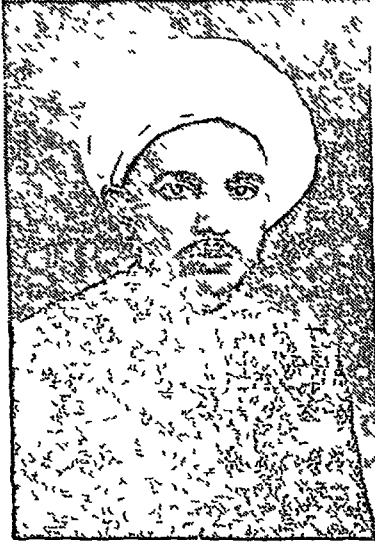
श्री मिश्रीमलजी कातरेला, बेंगलौर
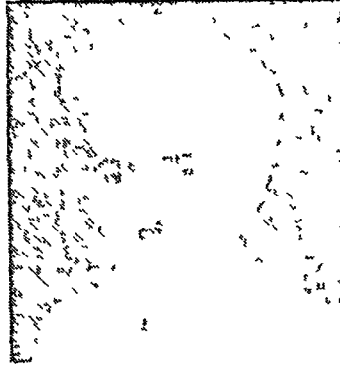
शाह माणिकचन्दजी जडावमलजी बोनाला, बागलकोट
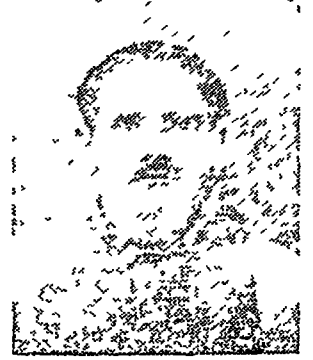
श्री मेघराजजी मेहता, मद्रास

श्री जसवन्तमलजी इन्जीनियर, मद्रास
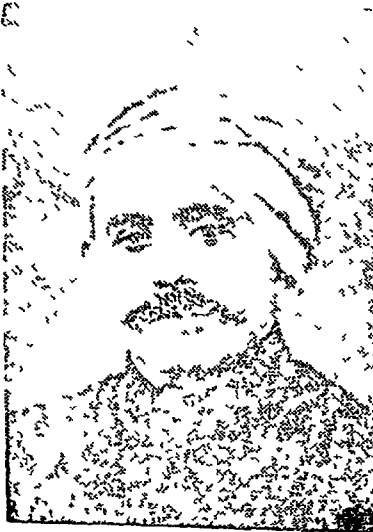
श्री चुन्नीलालजी जैन, बेंगलौर

स्व० श्री इन्द्रचन्द्रजी गेलडा, मद्रास

श्री वनेचन्दजी भटेवडा, वेल्लोर (मद्रास)

आप मारवाड में पीपलिया गाव के निवासी हैं। आपके पूर्वज करीब ६० वर्षों से वेल्लोर (मद्रास) में व्यापार के निमित्त आ गए थे। तभी से आप यहीं व्यापार कर रहे हैं। आपके यहाँ सोने-चादी का व्यापार होता है जिसमें आप कुशल हैं। सामाजिक कार्यों में भी आप सहयोग देते रहते हैं। स्थानीय प्रार्थना-भवन जो दो साल बाद वनकर तैयार हुआ है उसमें भी आपका परिश्रम मुख्य रहा है। यहाँ की गौरक्षा का कार्य आप २ साल से सुचारुरूपेण चला रहे हैं और गाँव वालो की मदद से गौशाला में एक ढालिया भी वनवा लिया है। आप एक धार्मिक प्रवृत्तिवाले सुश्रावक हैं। दक्षिण में विचरण करने वाले तपस्वी मुनि श्री गरणेशीलालजी म० के दर्शन कर आपको तपस्या में अभिरुचि पैदा हो गई। वर्तमान में आपके ३ पुत्र और ३ पुत्रियाँ हैं।

श्री कँवरलालजी चौरडिया कुनुर (मद्रास)

आप वर्तमान में एस० एम० जैन सोसायटी के सभापति हैं। आप स्थानीय स्था० समाज के प्रतिष्ठित और प्रमुख श्रावक हैं। आप प्रकृति से अत्यन्त उदार एव मिलनसार हैं। प्रत्येक सामाजिक कार्य में यथोचित सहयोग देते हैं। आप व्यवसाय-कुशल और प्रामाणिक सज्जन हैं। इन्हीं गुणो के कारण आज आप हजारो की सम्पत्ति के मालिक हैं। यहाँ आपकी 'अलसीदास कँवरलाल' के नाम से फर्म है।

जिसमें एक अस्पताल भी चालू किया गया है जिससे रोगियो को नि शुल्क औषधि मिलती है और दो साल पहले इसी धर्मशाला की तीसरी मजिल पर एक बडा स्थानक व लेक्चर-हॉल बनवाया है। अलवर में डॉ० मथुराप्रसाद के हाथो से आपने ४५० लोगो की नैत्र चिकित्सा कराई। आप ही के प्रयत्नो से हैदराबाद में जैन वोर्डिंग खोला गया है। श्री वर्धमान स्था जैन श्रावक सघ, हैदराबाद के आप अध्यक्ष है। श्री जैन गुरुकुल, व्यावर के वार्षिक महोत्सव के आप सभापति बने थे। इस प्रकार अपनी दानवीरता से समाज, धर्म एव राष्ट्र की दिल खोलकर आपने धन से सेवा की है। आप सच्चे लक्ष्मीपति हैं जो लक्ष्मी को बढाना तथा उसे काम में लगाना जानते हैं। समाज के श्रीमन्त आपके आदर्श का अनुकरण कर अपने धन से अपना गौरव बढावें-इसी में धन की और मानव-जीवन की सार्थकता है।

श्री हस्तीमलजी देवडा, औरंगाबाद

श्री देवडाजी की जन्मभूमि तो मारवाड है परन्तु उनके पूर्वज २-३ पूर्वज पहले व्यापारार्थ हैदराबाद रियासत में आये और औरगाबाद में बस गये। औरगाबाद में देवडा परिवार के १०-१५ घर है। श्री हस्तीमलजी का जीवन सीधा-सादा और वर्तमान तडक-भडक से बिलकुल परे है। वे सामान्य स्थिति के व्यक्ति हैं। श्रीमानो की श्रेणी में उन की गिनती नहीं की जा सकती है, फिर भी उनकी उदारता प्रशसनीय है। धार्मिक पाठ्यपुस्तको के प्रकाशन के लिये उन्होने ५ हजार रुपये कॉन्फरन्स को प्रदान किये। अपनी पुत्री के लग्न-प्रसग पर विविध सस्थाओ को ३ हजार रुपया दान दिया। 'जैनप्रकाश' के महावीर जयती विशेषाक के लिये ५०१) रु० प्रदान किये। आप विशेष पढे-लिखे भी नहीं हैं। परन्तु आपके हृदय में समाजोत्थान के विचार पैदा होते रहते हैं और समय-समय पर आप उन्हे अपनी भाषा में लिखते भी रहते हैं। साहित्य की दृष्टि से वे शून्य हैं, पर भावना की दृष्टि से वे प्रगतिशील हैं। बीच में राजनीतिक वातावरण से वे जोधपुर आ गये थे, पर अब वापिस औरगाबाद चले गये है। औरगाबाद में आप कपडे का व्यापार करते हैं।

० ० ०

समाज के कार्यकर्ता

प० रायावध त्रिपाठी गोरखपुर

श्री तिलोकचन्दजी वरडिया वोदवड

कहैयालालजी कोटेचा वोदवड
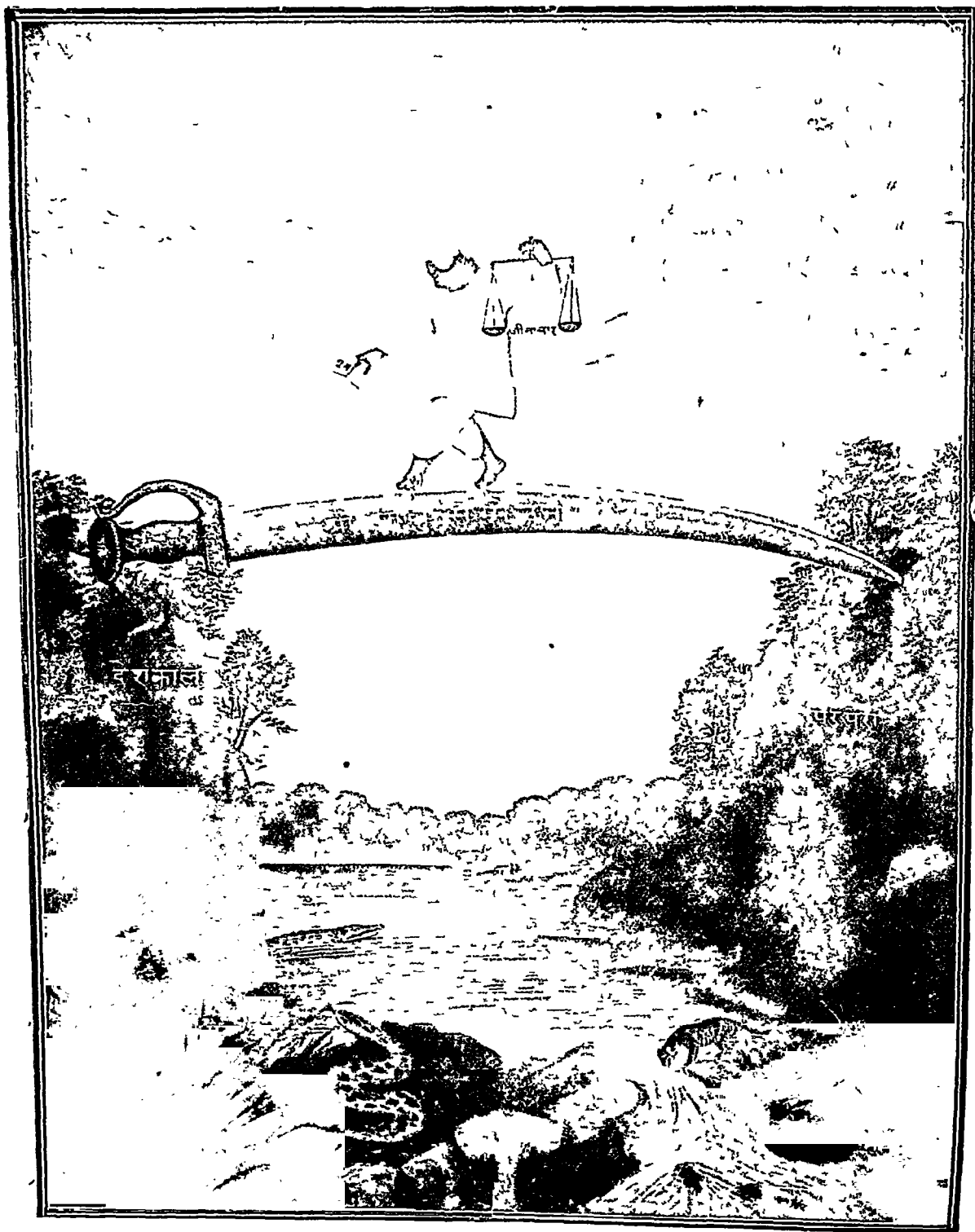
समाज सेवा खाडे की धार है

मोरवी अधिवेशन के अध्यक्ष राय सेठ श्री चाँदमल जी के साथ प्रमुख कार्यकर्त्ता

अजमेर ओफिस समय के कार्यकर्त्ता

मलकापुर अधिवेशन की स्वागत समिति
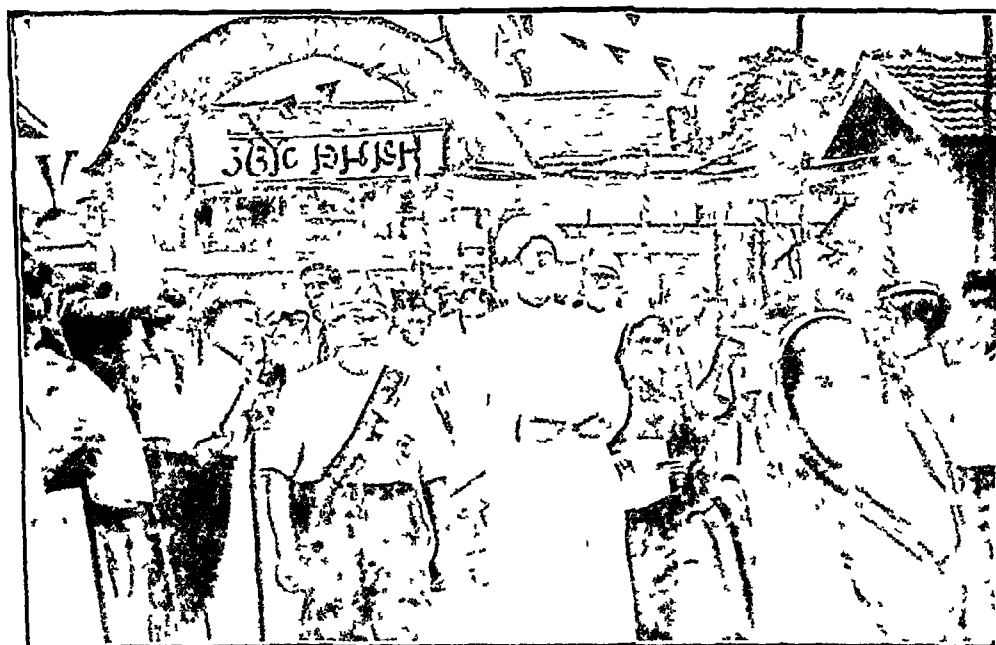
अजमेर अधिवेशन के समय अध्यक्ष श्री० हेमचन्द भाई मेहता का पंडाल-प्रवेश का एक दृश्य

श्री साधु सम्मेलन समिति तथा स्वयंसेवक दल, अजमेर

घाटकोपर अधिवेशन के सभापति सेठ वीरचद भाई का स्वागत

श्री अ. भा. श्वे. स्था. जैन कॉन्फरन्स
दशम अधिवेशन घाटकोपर

घाटकोपर अधिवेशन के अध्यक्ष सेठ वीरचंद भाई के पडाल-प्रवेश का एक दृश्य

घाटकोपर अधिवेशन के मंच का एक दृश्य

* सादड़ी अधिवेशन के भव्य दो दृश्य * *
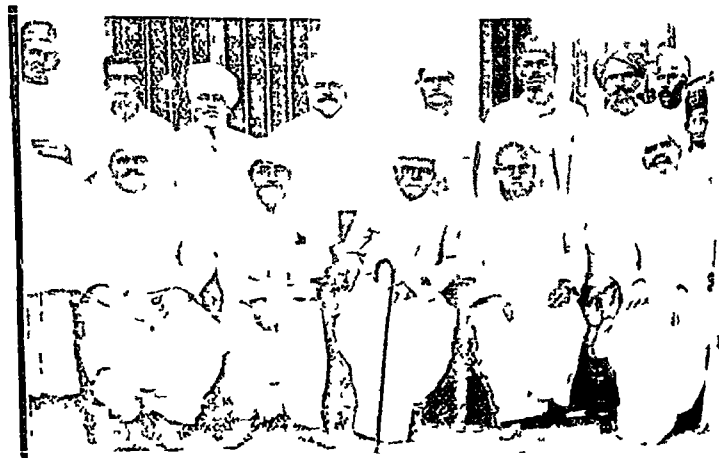
सादडी अधिवेशन के जुलूस का एक दृश्य
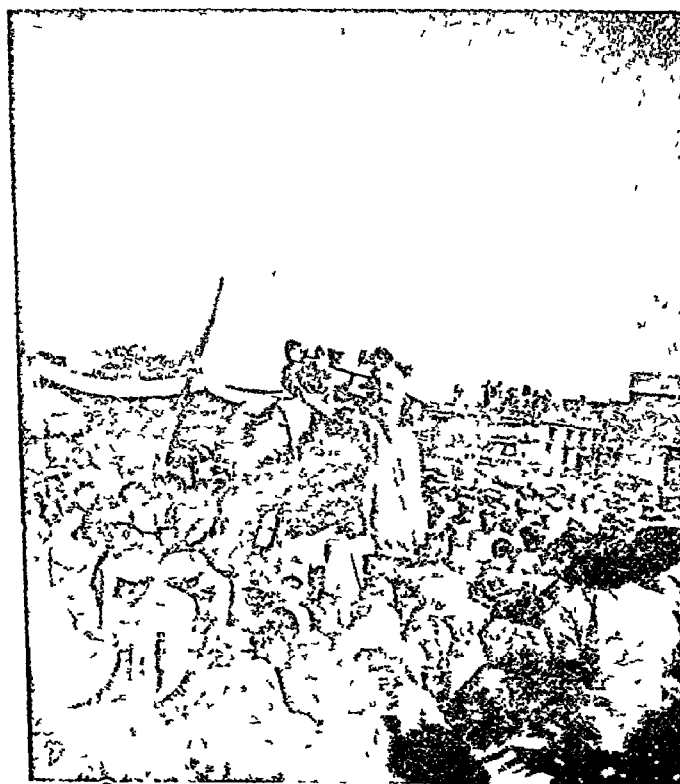
सादडी अधिवेशन के प्रमुख सेठ चपालालजी बाठिया के जुलूस का एक दृश्य

श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फ्रन्स द्वारा स्थापित तथा श्री एज्युकेशन सोसायटी द्वारा सचालित
श्री स्था० जैन बोर्डिङ्ग पूना, (दक्षिण)

श्री श्वे० स्था० जैन बोर्डिङ्ग हाऊस मद्रास जिसके प्रागण मे अधिवेशन हुआ था।

लाला रतनलालजी पारख, देहली

आपका जन्म स० १९४८ मे जोधपुर में हुआ था। स० १९५६ में आप लाला पूरनचन्दजी जौहरी बी० ए० के यहाँ दत्तक लाये गए। आपने भी योग्य उम्र होनेपर जौहरी का व्यवसाय प्रारम्भ किया। आप स्वभाव के वडे नम्र और मिलनसार प्रकृति के हैं। धर्म ध्यान, धर्मक्रिया और तपस्या की वडी रुचि रखते हैं। हर-एक धार्मिक अवसर का आप लाभ लेते है। असाम्प्रदायिक मानस के और श्रद्धालु मुनिभक्त श्रावक है। व्यवसाय और व्यवहार में भी वडे प्रामाणिक है। दिल के भी वडे उदार हैं। स्था० जैन समाज की कई सस्थाओ में आपके दान का प्रवाह पहुँचा होगा। गरीवो के प्रति और जीवदया में आपका हृदय सदा द्रवित रहता है और यथाशक्ति सहायता करते रहते है। आपके ४ पुत्र और वहुत वडा परिवार है। सवमें आपके ही धार्मिक सुसस्कार और धर्मप्रेम ओत-प्रोत हैं।

डॉ० श्री ताराचन्दजी पारख, देहली

आप श्री रतनलालजी जौहरी के सुपुत्र हैं। आपका जन्म स० १९८० में हुआ। तीव्र बुद्धि और गरीवो के प्रति प्रेम वचपन से ही हैं। पढाई के लिए आपको घर से जो खर्च मिलता था, उसमें वचत करके आप गरीवो की दवाई आदि से सेवा करते थे। आप एक सेवाभावी एम० बी० बी० एस० (डॉक्टर) है। आपने अपना घर का ही अस्पताल शुरू किया। गरीवो को आप मुफ्त दवा देते है और उपचार भी करते है। साधु-साध्वियो की सेवाभक्ति और उपचार हार्दिक भाव से करते है। छोटी अवस्था मे भी आपने जीवन की सौरभ फैलाई है।
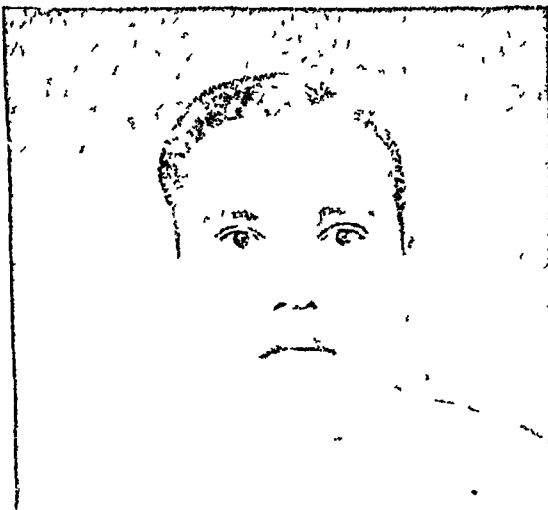
श्री गुलावचन्दजी जैन, दिल्ली

आप दिल्ली के प्रसिद्ध पुराने कमठ कार्यकर्ता है। आप उग्र विचारो के समाज-सुधारक नेता है। अपने विचारो से आपने अपने साथियो और आसपास के लोगो को काफी प्रभावित किया है। आप आल इण्डिया महावीर जयन्ती कमेटी के मन्त्री है। यह कमेटी भगवान् महावीर स्वामी के जन्म-दिन पर केन्द्र की तरफ से सार्वजनिक छुट्टी कराने की कोशिश कर रही है।

श्री गुलावचन्दजी जैन स्थानकवासी जैन कान्फरेन्स के भूतपूर्व मन्त्री भी रह चुके है।

लाला फूलचन्दजी नौरतनचन्दजी चोरड़िया, दिल्ली

श्री नौरतनचन्दजी सा० दिल्ली की ओसवाल समाज के एक रत्न है। आपके यहाँ परम्परा से पगडी का व्यापार चलता आया है। लाला नेमचन्द फूलचन्द के नाम से आपकी एक दुकान उज्जैन में भी है। इस समय आप एस० एस० जैन महावीर भवन (वारहदरी) ट्रस्ट (रजि०) दिल्ली के खजाची है। जैन कन्या पाठशाला के उपप्रधान, श्री जैन तरुण समाज के प्रधान और श्री महावीर जैन औषधालय की कार्यकारिणी के सदस्य हैं। आपके नेतृत्व में उपरोक्त सस्थाएँ उत्तरोत्तर प्रगति कर रही हैं। आप बडे ही मिलनसार एव गुणी व्यक्ति हैं।

श्री लाला कुजलालजी ओसवाल, दिल्ली सदर

आपका जन्म सवत् १९०१ में अमृतसर के प्रतिष्ठित व्यापारी घराने में हुआ है। स्व० पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज तथा स्व० पूज्य श्री काशीरामजी म० सा० के आप अनन्य भक्त रहे है। आपका जीवन प्रारम्भ से ही क्रियाशील रहा है और यही कारण है कि अपनी बाल्यावस्था में आपने जैन कुमार-सभा की स्थापना की। वर्षो तक अमृतसर की जैन कन्या शाला का आपने योग्यतापूर्वक सफल सचालन किया। व्यावसायिक जगत् में भी आपने प्रसिद्धि प्राप्त की है। सूत के गोलो का वडे पैमाने पर आपका व्यापार है।
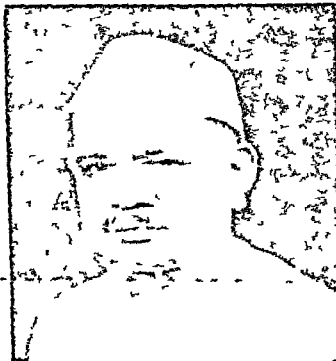
भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के आप कर्मठ कार्यकर्ता है। आपका सादा रहन सहन, आपके सरल और सुधरे हुए विचारो का प्रतिनिधित्व करते हैं। सन्त-मुनि राजो की सेवा-भक्ति तथा ज्ञान-दर्शन-चारित्र का आराधन आपके जीवन के अभिन्न अग है। अपने सुयोग्य पुत्रो को पारिवारिक तथा व्यावसायिक कार्य-भार सौंपकर समाज सेवा में अब आप लगे हुए है।

दिल्ली की प्राय सभी जैन सस्थाओ के माननीय सदस्य, अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, सचालक अथवा सस्थापक कुछ न-कुछ अवश्य रहे है। इस प्रकार अपनी सामाजिक गतिविधियो से तथा सेवा-भावना से अपने जीवन को सुवासित तथा मुखरित कर रहे है। इससे वढकर आप का और क्या गौरव हो सकता है कि आपके नाम से तथा आपके काम से दिल्ली का जैन समाज तथा स्थानीय जैन सस्थाएँ गौरवान्वित होकर समाज के लिए आशीर्वादरूप, सिद्ध हो रही हैं।

लाला रामनारायणजी जैन, दिल्ली B A (Hon) Ll B

आप सुप्रसिद्ध धर्मनिष्ट जैन समाज के अग्रगण्य लाला स्नेहीरामजी के सुपुत्र हैं। आपके पिता श्री श्रीवर्द्धमान स्था० जैन सघ सदर वाजार के उपाध्यक्ष हैं और आप जनरल सेक्रेट्री है। आपने बी० ए०, एल-एल० बी० तक शिक्षा प्राप्त की है। छोटी उम्र में भी आप अनेक सस्थाओ से सम्वन्धित है और मन्त्री या कार्यकारिणी के सदस्य रूप में सेवा दे रहे है। अपनी कॉन्फरन्स की कार्यकारिणी के आप सदस्य रह चुके है। आपकी चावलो की वडी और प्रतिष्ठित दूकान नया वाजार, दिल्ली में 'सनेहिराम रामनरायण जैन' के नाम से चलती है।

आप उदारदिल से गरीवो की सहायता करते है। धर्मकार्यो में खर्च करते है। धर्म-स्थानको में सहायता

करते हैं। आप धर्मप्रेमी शिक्षित और सस्कारी जैन युवक हैं। जैन समाज को आपसे बहुत आशाएँ रखना चाहिए।

लाला विलायतीरामजी जैन, नई दिल्ली

लाला गेंदामलजी जैन के यहाँ नालागढ (पजाब) में आपका जन्म स० १९५० के चैत्र २३ को हुआ था। थोडा व्यावहारिक शिक्षण लेकर आप आपके दादा लाला हीरालालजीने प्ररम्भ की हुई जनरल मर्चन्ट की सीमला दूकान पर काम करने लगे।

आपकी प्राभाविकता और कर्त्तव्यपरायणता से आपकी दूकान खूब प्रतिष्ठित हुई और फलने लगी। आपने सन् १९३५ में कॅनोट सर्कल, दिल्ली में भी जनरल मर्चन्ट का कारोबार शुरू कर दिया। आपके भाई की दूकानें 'गेंदामल हेमराज' के नाम से सन् १९४७ से नई दिल्ली, शिमला, कालका और चण्डीगढ मे चल रही है—

आप बडे विनम्र और श्रद्धालु श्रावक हैं। सामयिक और व्याख्यान-श्रवण आप रोजाना करते हैं। तपस्याएँ भी करते रहते हैं। नई दिल्ली में साधु-साध्वियो को ठहराने का विश्वास स्थान आपका मकान ही है।

आप धर्मप्रेमी हैं। इतना ही नही दानी भी हैं। नालागढ में सघ के रु० १० हजार में अपनी तरफ से शेष २२ हजार रु० लगाकर धर्मस्थानक बनवा दिया। चिराग दिल्ली में धर्मस्थानक बनाने में २०००) देकर पूरा सहयोग दिया। कॉन्फरन्स की मैनेजिंग कमेटी के आप सदस्य हैं। भवन-निर्माण की योजना में आप ने रु० ५०००) दिये हैं। इस प्रकार प्रकट और अप्रकट दान करते ही रहते हैं।

श्री विलायतीरामजी जैन, नई दिल्ली B A

आप नई दिल्ली के उत्साही कार्यकर्ता हैं। गत पाँच साल से "कोपरेटिव स्टोर्स मिनस्ट्री ऑफ फायनेन्स, गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया" के मैनेजर और कोषाध्यक्ष हैं। नई दिल्ली की जैन सभा और उसके नवयुवक सघ के, भारत सेवक समाज, श्री जैन सघ, पजाव और सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली आदि अनेक सस्थाओ के आप सदस्य हैं। जैनेन्द्रगुरुकुल, पचकूला की कार्य-कारिणी समिति के आप पाँच साल तक सदस्य रह चुके हैं।

काम करने में आपको आनन्द आता है और यही कारण है कि दिल्ली में होने वाले सभी सामाजिक कार्यो में आपकी उप-स्थिति अनिवार्य-सी होती है। दिल्ली के जैन समाज को आपके होनहार जीवन मे बडी-बडी आशाएँ हैं।

श्री उल्फतरायजी जैन, नई दिल्ली

आप जिन्द निवासी श्री अर्जुनलालजी के सुपुत्र हैं। आपकी नई दिल्ली में वेयर्ड रोड पर बाईस साल से कपडे की दुकान है। आपकी फर्म का नाम "अर्जुनलाल उल्फतराय जैन" है, जो दिल्ली की प्रसिद्ध फर्मों में से एक है।

प्रारम्भ से ही आपका जीवन विभिन्न प्रवृत्तियो में लगा हुआ रहा है। सेवा करने में आपको आनन्द आता है। यही कारण है कि इस समय गोल मार्केट वेयड रोड की पचायत के सरपच है। कई वर्ष तक नई दिल्ली की जैन सभा के आप कोषाध्यक्ष रहे है। पूज्य श्री काशीराम जी म० सा० की स्मृति-ग्रन्थ माला के आप उपाध्यक्ष रहे हैं। देहली क्लोथ रिटेलर एशोसिएशन के आप उपाध्यक्ष है।

आप सामाजिक कार्यकर्ता है। समाज सेवा का कुछ भी काम क्यो न हो—उसे अपने जिम्मे लेने और यथाशक्य पूरा करने मे आप सदा तत्पर रहते है। मृदु-भाषण, मृदु व्यवहार और सरलता आपके विशिष्ट गुण है। समाज-सेवा के क्षेत्र में हम आपको और अधिक आगे बढा हुआ देखना चाहते है।

लाला गुगनमलजी चौधरी, दिल्ली

आप लाला गगारामजी चौधरी के सुपुत्र है। आपका जन्म स० १९४५ भादवा वदी ५ को घसो (नरवाना पेप्सु) में हुआ। आप अग्रवाल जैन है। स० १९५५ में १० वर्ष की अवस्था में आप दिल्ली पधारे और ननिहाल मे रहे। सन् १९६२ में आपने कपडे का व्यवसाय प्रारम्भ किया जो आपके परिश्रम और प्रामाणिकता के कारण उत्तरोत्तर बढता गया। इस समय आप एसोसिएशन के मैनजिंग सदस्य तथा प्रमुख व्यापारियो में से है।

आप विद्याप्रेमी और सामाजिक कार्यकर्ता है। महावीर जैन हायरकूल, स्थानीय श्रावक सघ और कॉन्फरन्स की मैनेजिंग कमेटी के सदस्य है। आप बडे उदार दिल के है। धर्म कार्यो में तथा सामाजिक कार्यो में हजारो रुपये खचते रहे है। हरेक चन्दे में आप खुद देते है और साथ चलकर दूसरो से भी दिलाते है। धर्म क्रियाओ में अच्छी रुचि रखते है। आपने अपना जीवन श्रावक-मर्यादा के अनुसार बना रखा है। साधु-साध्वियो के प्रति आपकी श्रद्धा और भक्ति प्रशसनीय एव अनुकरणीय है।

डॉ० कैलाशचन्द्र जैन, M B B S दिल्ली

आपका जन्म नवम्बर १९२३ में हुआ था। सामाजिक, साहित्यिक और स्पॉर्टस् का आपको प्रारम्भ से ही प्रेम है। आपका शिक्षण लाहौर में हुआ। १९४२ की मुवमेन्ट में आप प्रमुख विद्यार्थी थे। मेमो हॉस्पीटल और इर्वीन हॉस्पीटल में आपने विशिष्ट सेवाएँ दी है। श्री रामकृष्ण मिशन फ्री टी० वी० क्लीनीक के अफसर और भाकरा डेम डिरेक्टरोरेट (नई दिल्ली) आप रह चुके है।

डॉक्टर साहब अच्छे सोशियल वर्कर है और प्रसिद्ध डॉक्टर है। आप श्री सनातन धर्म युवक मण्डल, धर्म मन्दिर, कला मन्दिर आदि सस्थाओ के कार्यकर्ता है। दिल्ली मेडिकल असोशिएसन की मैनेजिंग कमेटी में आप दो बार चुने गए है। आप दिल्ली म्युनिसिपल कमिश्नर कांग्रेस टिकिट से चुने गए है और चाफ ह्वीप है।

आप कभी-कभी आल इण्डिया रेडियो से स्वास्थ्य विषय में बोलते रहते है। कई सस्थाओ को आपकी सेवाएँ मिल रही है।

जम्मू, पंजाब तथा यू० पी० के प्रमुख कार्यकर्ता

मेजर जनरल रा० ब० दीवान विशनदास जी CSICIE जम्मू (काश्मीर)

लाला विशनदास जी का सन् १८६५ के जनवरी मास में स्यालकोट में जन्म हुआ था। आप जाति से ओसवाल दूगड थे। आप बचपन से ही बडी कुशाग्र बुद्धि वाले थे। प्रारम्भिक शिक्षा आपकी स्यालकोट के हाई स्कूल में ही हुई। आगे आपने लाहौर कालेज में प्रविष्ट हो शिक्षा प्राप्त की। पढने के साथ-साथ आपको घुडसवारी, और अन्य खेलो का भी बहुत शौक था।

सन् १८८६ मे जब आपने कालेज की डिग्री प्राप्त कर ली तब आपको जम्मू काश्मीर नरेश सर रामसिंह जी महाराज ने अपने यहाँ बुला लिया और राजकीय उच्च विभाग में स्थान दे दिया। आप वहाँ ६ वर्ष तक काम करते रहे। बाद में आपकी योग्यता से प्रसन्न हो महाराजा साहिब ने आपको 'चीफ एडवाइजर-मुख्य सलाहकार' के पद पर नियुक्त किया और दीवान का बहुमान सूचक पद प्रदान किया। तीन वर्ष बाद मेजर जनरल बना दिये गए और पैदल सेनापति की स्वर्ण-खचित तलवार आपको भेट की गई।

सन् १८६६ ई० में महाराजा रामसिंह जी के स्वर्गवास हो जाने पर अमरसिंह जी राजगद्दी पर बैठे। आपने गद्दी पर आते ही दीवान विशनदास जी को कमान्डर-इन-चीफ के नीचे सेक्रेटरी नियत कर दिए। बाद में आप इसी विभाग में लेफ्टिनेन्ट कर्नल बना दिए गये। सन् १६१४ में आप होम डिपार्टमेंट के प्रधानमन्त्री बनाए गये। १६१६ में आप रेवेन्यू विभाग के प्रधान मन्त्री बनाए गये। इसके दो वर्ष बाद आप जम्मू और काश्मीर स्टेट के प्रधानमन्त्री बना दिए गये जिस पर आपने बडी योग्यता से पेंशन मिलने तक काम किया।

भारत सरकार द्वारा भी आपको राय बहादुर CIE और CSI की पदवियाँ प्रदान की गई थी।

स्थानकवासी जैन समाज में ही नही, किन्तु समस्त जैन समाज में आपने जो सन्मान प्राप्त किया, वैसा सन्मान और किसी को नही मिला।

इतने विद्वान्, श्रीमान् और राज्य प्रतिष्ठित होने पर भी आपकी समाज सेवा व सरलता उल्लेखनीय थी। आप में अहभाव तो था ही नही। अजमेर साधु सम्मेलन के समय आपने बडी लगन से वहाँ कार्य किया था। समय-समय पर आप कोन्फरन्स के अधिवेशनो में उपस्थित होते थे और सक्रिय भाग लेते थे।

लाला रत्नचन्द्रजी जैन, अमृतसर

लाला रत्नचन्द्र जी का जन्म स १६४५ में अमृतसर में हुआ था। आपके पिताजी का नाम जगन्नाथ जी और माता का नाम जीवन देवी था। आपकी शिक्षा साधारण ही हुई। आपके पिताजी असली मूंगे का व्यापार करते थे। आपका अनुभव विशाल था। सामाजिक सेवाओ का मौका अपने हाथ से जाने नही देते थे। रतलाम अधिवेशन के
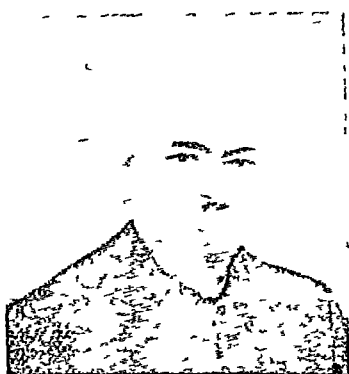
बाद आप प्रत्येक अधिवेशन में भाग लेते रहे। साधु सम्मेलन की आयोजना के लिए जो डेपुटेशन सब स्थानो पर घूमा था, उसके आप भी एक सदस्य थे। श्वे० स्था० जैन सभा पजाब के आप अन्त तक प्रधान रहे। एकता और सगठन में आपका दृढ विश्वास था। स्व० आचार्य श्री सोहनलाल जी की आप पर पूर्ण कृपा थी। स० १९९५ में शतावधानी प० मुनि रत्नचन्द्र जी का अमृतसर में चातुर्मास हुआ था जिसका मुख्य श्रेय आपको ही था। उसी चातुर्मास में स्व० पूज्य श्री सोहनलाल जी के स्मारक रूप में श्री सोहनलाल जैन धर्म प्रचारक समिति का जन्म हुआ जिसकी ओर से बनारस में श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम का प्रादुर्भाव हुआ, जहाँ जैन दर्शन, आगम और इतिहास का उच्चाध्ययन किया जाता है। पार्श्वनाथ विद्याश्रम के मकान के लिए आपने ६२०० रु० का दान दिया था। श्री शतावधानी रत्नचन्द्र पुस्तकालय के लिए आपने १५०० रु० प्रदान किए। समिति के आरम्भ में आपके परिवार ने ५४०० रु० का दान दिया था इससे पूर्व अनाथालय के लिए आपने २५०० रु० प्रदान किए थे। जैन गुरुकुल पचकूला आदि आपकी सहायता के पात्र रहे है।

जैन दर्शन के प्रसार की आपकी हार्दिक इच्छा थी। आप इसका फैलाव सारे विश्व में देखना चाहते थे।

आपको हृदय रोग की बीमारी हो गई थी। अचानक आपको इस रोग का दौरा हुआ और १६ फरवरी १९४२ को प्रात आठ बजे आप इस असार ससार से विदा हो गए।

श्री हरजसराय जैन बी० ए० अमृतसर

आप अमृतसर निवासी श्री लाला जगन्नाथ जी के सुपुत्र है। आप पजाब जैन समाज की प्रवृत्तियो के केन्द्र और वहाँ के प्रमुखतम प्रतिष्ठित कार्यकर्ता है। अमृतसर की श्री रामाश्रम हाई स्कूल के आप सस्थापक और लगातार ३३ वर्ष से मन्त्री हैं। इस विद्यालय में सह-शिक्षा-पद्धति से शिक्षा दी जाती है। इस महाविद्यालय का वार्षिक खर्च ६२,४००) का है। सन् १९३५ में सस्थापित "श्री सोहनलाल जैन धर्म प्रचारक समिति" के आप प्रारम्भ से ही मन्त्री है। आप अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स की व्यवस्थापिका समिति के सदस्य और श्वे० स्था० जैन सभा पजाब के प्रधान है। आपकी फर्मो के नाम उत्तमचन्द जगन्नाथ लाला और रतनचन्द हरजसराय है। दिल्ली, कलकत्ता और बम्बई आपके व्यवसाय के केन्द्र है।
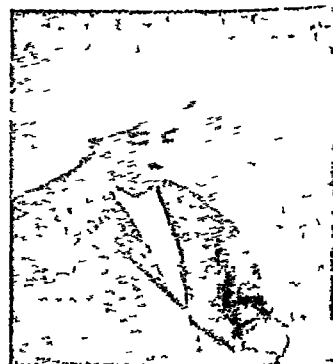
श्री हरजसराय जी एस० एस० जैन सभा, पजाब के वर्षो से प्रमुख है। पनी कॉन्फरन्स के दिल्ली ऑफिस के मानद मन्त्री रह चुके है। घाटकोपर अधिवेशन के समय जैन युवक परिषद् के मनोनीत सभापति थे। बडे सुधारक और अग्रगामी विचारो के होने पर भी शिस्त पालन में चुस्त धर्म श्रद्धालु है। बडे उदारदिल के है। सक्षिप्तमें आप पजाब के गौरव है।

बाबू परमानन्दजी जैन, कसूर (पजाब)

आपका जन्म चैत सुदी १ स० १८३० को कसूर नगर में हुआ। कसूर एक ऐतिहासिक स्थान है। लोग कहते

है कि यह नगर रामचन्द्र जी के लघु पुत्र कुश द्वारा बसाया गया था। आप के दो भाई और थे। बडे का नाम गौरी-शकर जी और छोटे का नाम चुन्नीलाल जी था। दोनो ही आपस में चल बसे थे। आप बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि वाले थे। सन् १८९७ में आपने बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। सन् १९०२ में आपने वकालत की परीक्षा पास की और सन् १९०८ में आप लाहौर के चीफ कोर्ट के प्लीडर नियुक्त किये गए। लाहौर चीफ कोर्ट के सन् १९१९ में हाईकोर्ट बन जाने पर आप भी हाईकोर्ट के वकील बन गये।

आपकी धार्मिक और सामाजिक सेवा भी उल्लेखनीय है। लाहौर में आपने वेजीटेरियन सोसाइटी की स्थापना कराई थी। सन् १९०९ में पजाब प्रान्तीय स्था० जैन कोन्फरन्स की स्थापना हुई। सभा की स्थापना और प्रगति मे आपका बहुत बडा हाथ रहा था।

सन् १९१४ में जब जर्मन प्रोफेसर हर्मन जैकोबी बम्बई आये थे, तब आचारांग सूत्र के अनुवाद में उन्होने जो भूलें की थी उन पर विचार करने के लिए पजाब प्रान्तीय सभा की तरफ से ७ विद्वानो का एक डेपुटेशन भेजा गया था। उस डेपुटेशन के सभापति श्री परमानन्द जी ही थे। आपने अपनी विद्वतापूर्ण दलीलो से प्रो० हर्मन जैकोबी को सन्तुष्ट कर उन्हे अपनी भूल सुधारने के लिए बाध्य किया था।

पजाब प्रान्तीय सभा ने लाहौर में 'अमर जैन होस्टल' की स्थापना की थी। आपने इस छात्रालय को हजारो रुपयो की सहायता दी और अच्छा-सा फण्ड भी एकत्रित कराया। लाहौर में इस छात्रालय की अपनी भव्य इमारत भी थी।

आप विद्यार्थियो को जैन साहित्य के अध्ययनार्थ छात्रवृत्तियाँ भी दिया करते थे। आप स्था० जैन समाज की तरफ से बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के फैलो भी (Fellow) रहे है।

आप बिलकुल सरल स्वभाव के सादा जीवन व्यतीत करने वालो में से थे। बनावटी दिखावे से आपको घृणा सी थी। जातीय भेदभावो को भी आप मानने वाले नही थे।

श्रीमान् लाला गूजरमलजी का सक्षिप्त परिचय

स्वर्गीय ला० गूजरमल जी, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ लुधियाना के एक प्रतिष्ठित एव सम्माननीय श्रावक थे। आप स्वभाव से मृदु, शान्त और गम्भीर थे। आपमें स्पष्टवादिता का विशेष गुण था। सघ-सेवा के कार्यो में आप असाधारण अभिरुचि रखते थे। आजीवन आप समाज-सेवा के कामो में सलग्न रहे। कई बार आप स्थानीय श्रावक-सघ के प्रधान भी बने, परन्तु अधिकतर और अधिक समय तक आप मन्त्री-पद पर ही नियुक्त रहे, इसीलिये यहाँ और बाहिर के दूर-दूर के नगरो में मन्त्री गूजरमल के नाम से आप विशेष रूप से प्रसिद्ध है। दूर-दूर तक आपकी प्रख्याति का एक कारण यह भी है कि स्थानीय श्रावक-सघ की ओर से डाक सम्बन्धी पत्र-व्यवहारादि सभी कार्य प्राय आपके द्वारा ही होते रहे है, और आजकल भी गूजरमल प्यारेलाल अथवा गूजरमल बलवन्तराय के नाम से ही हो रहे हैं। लाला प्यारेलाल जी ला० बलवन्तराय जी, ला० पन्नालाल जी और ला० निक्काराम जी ये चारो आपके सुयोग्य पुत्र हैं, जो यथाशक्ति आपके ही पदचिह्नो पर चल रहे हैं।

अब आगे कुछ अन्य स्थानीय कार्यकर्ताओ और पदाधिकारियो का सक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है—

श्री पन्नालाल जी मालिक फर्म (जिनेन्द्रा होजयरी मिल्स)

आप एस० एस० जैन बिरादरी (रजिस्टर्ड) लुधियाना के प्रधान है। आप जैन समाज के सब कार्यों में बडे प्रेम और उत्साह से भाग लेते हैं। जैन समाज की उन्नति के लिये आपके हृदय मे सच्ची तडप है।

श्री प्यारेलाल जी जैन (मन्त्री) मालिक फर्म (श्री गूजरमल प्यारेलाल जैन लुधियाना)

आप एस० एस० जैन विरादरी के मन्त्री हैं। अपने पूज्य पिता ला० गूजरमल जी की तरह समाज-सेवा के कामो में खास दिलचस्पी रखते हैं। स्थानीय ऐस० ऐस० जैन बिरादरी (श्री वर्धमान स्थानक-वासी जैन श्रावक सघ) के डाक सम्बन्धी पत्र-व्यवहारादि कार्य प्राय आपके द्वारा ही सम्पन्न होते हैं।

श्री सोहनलाल जी जैन मालिक फर्म (श्री मिड्डीमल बाबूलाल जैन रईस लुधियाना)

आप विरादरी में प्रतिष्ठित-सम्मानित श्रावक है। समाज सेवा के सव कार्यो में आप पूर्ण सहयोग देते हैं। आपका स्वभाव वहुत शान्त है। सहनशीलता, गम्भीरता और शिष्टता आपके विशेष गुण हैं। उलझी हुई समस्याओ को सुलझाने में आपका विशेष रूप से परामर्श लिया जाता है।

श्री पन्नालाल जैन मालिक फर्म (जैन निटिग वर्क्स)

आप जैन गर्ल्स हाई स्कूल लुधियाना के प्रधान हैं। स्कूल के सब प्रकार के कार्य आप वडे प्रेम और उत्साह से करते हैं तथा श्रावक-सघ के अन्य कार्यो में भी आप यथाशक्ति सहयोग देते रहते हैं।

लाला प्यारेलाल जी सराफ

आप स्थानीय श्रावक-सघ के उप-प्रधान हैं। प्रत्येक धार्मिक कार्य में आप हर्ष और उत्साह से भाग लेते हैं। आप में पैतृक धर्म सस्कार है। जैन धर्म के आप महान् अनुरागी हैं।

लाला कस्तूरीलाल जी जैन

आप स्थानीय श्रावक-सघ के कोषाध्यक्ष हैं। धर्म में दृढ आस्था रखने वाले हैं और उदार-चेता भी हैं।

लाला रत्नचन्द्र जी जैन जोडयाँ वाले

स्थानीय श्रावक-सघ के आप उपमन्त्री हैं। उत्साही नवयुवक हैं। इनमें समाज-सेवा की वहुत लग्न हैं।

लाला शम्भुनाथ जी जैन जोडयाँ वाले

आपकी प्रतिभा वहुत विलक्षण है। सघ के प्रत्येक कार्य में आपका परामर्श लिया जाता है।

श्री रामलालजी जैन

आप स्थानीय नगरपालिका (म्यूनिसिपैलिटी) के सदस्य है। उत्साही नवयुवक हैं। अपने कर्तव्य का सुचारु रूप से पालन करते है। इनका स्थानीय जैन धर्मशाला के प्रवन्ध में विशेष रूप से भाग है।

श्री कृष्णकान्त जी जैन वकील

वहुत वर्षो तक आप ऐस० ऐस० जैन सभा पजाव के मन्त्री-पद पर नियुक्त रहे। आजकल आप जैन गर्ल्स हाई स्कूल लुधियाना के मैनेजर हैं। आप प्रतिमा-सम्पन्न और स्वतन्त्र विचार रखने वाले हैं। अपने कर्तव्य-पालन का आप खूब ध्यान रखते हैं।

श्री मीठूमल जी जैन

आप नगर के प्रसिद्ध व्यक्ति हैं, दानवीर हैं। धार्मिक कार्यो के लिये यथासमय दान देते रहते हैं।

श्री चमनलाल जी जैन

धार्मिक कार्यो में उत्साह रखने वाले युवक हैं। आजकल आप जैन गर्ल्स हाई स्कूल कमेटी के कोषाध्यक्ष हैं।

श्री प्रेमचन्द जी जैन

आप लाला सलेखचन्द जी के सुपुत्र है। अपने पूज्य-पिता के समान ही धार्मिक कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेते रहते है।

श्री तेलूराम जी (टी० आर० जी) जैन

आप स्थानीय श्रावक-सघ के अत्यधिक उत्साही नवयुवक कार्यकर्ता हैं। समय-समय पर उदारता से दान भी करते रहते है। सगीत कला में भी आप अच्छी कुशलता रखते हैं।

लाला हसराजजी और लाला सोहनलालजी तथा ला० मुनिलालजी लोढ़िया

आप दोनो सगे भाई हैं। स्वर्गीय ला० नगीनचन्द जी के आप सुपुत्र है। ला० नगीनचन्द जी और आपके लघुभ्राता स्वर्गीय ला० कुन्दनलाल जी यहां के प्रसिद्ध दानवीर श्रावक थे। ला० मुनिलाल जी ला० कुन्दनलाल जी के सुपुत्र हैं। श्री हसराजजी, श्री सोहनलालजी और श्री मुनीलालजी भी अपने पूज्य पिताओ के पदचिन्हों पर चलते हुए दानादि धर्म-कार्यो में महत्त्वपूर्ण भाग लेते रहते हैं।

ला० अमरजीत जी जैन वकील

आप ला० हुक्मचन्द जी के सुपुत्र हैं, और स्थानीय श्रावक सघ की कार्यकारिणी-कमेटी के सम्मानित सदस्य हैं। सघीय कार्यो में आप उत्साहपूर्वक भाग लेते रहते हैं।

ला० किशोरीलालजी जैन

आप अत्यधिक दृढधर्मी श्रावक हैं धार्मिक भवनो के निर्माण में विशेष रुचि रखते हैं। जैन धर्मशाला लुधियाना के निर्माण में आपने विशेष रूप से भाग लिया था।

लाला नौहरियामलजी जैन

ला० जी उदारमना दानवीर हैं। अभी-अभी आप ने जैन मॉडल हाईस्कूल की भावी बिल्डिग के लिए २७०० वर्ग गज भूमि का उल्लेखनीय दान दिया है। इस भूमि का वर्तमान मूल्य चालीस हजार रुपये के लगभग है। बहुत वर्ष पहले आपने एक विशाल बिल्डिग बनाई थी, जिस पर आपके लगभग पन्द्रह बीस हजार रुपये खर्च आए थे। इस का धार्मिक कार्यो में ही सदुपयोग हो एतदर्थ आपने एक ट्रस्ट बनाया हुआ है। इस बिल्डिग का नाम जैनशाला है। प्राय महासतियो—आर्यिकाओ के चातुर्मास इसी बिल्डिग में होते हैं।

बाबू रामस्वरूपजी जैन

स्वर्गीय बाबू रामस्वरूप जी जैन यहाँ के प्रसिद्ध श्रावक थे। पुरानी कोतवाली नामक बहुत प्रसिद्ध और बहुत विशाल बिल्डिग के मालिक आप ही थे। पुरानी कोतवालीमें साठ सत्तर साल तक मुनि महाराजो और महासतियो के प्राय निरन्तर चातुर्मास होते रहे हैं। इस प्रकार आपके पूर्वजो और आपने अति दीर्घ-काल तक शय्या (वसति-मकान) का दान दिया था।

प्रोफेसर रत्नचन्द्रजी जैन

आप स्थानीय गवर्नमेंट कालेज में इकनामिक्स के बहुत प्रसिद्ध प्रोफेसर हैं। जैन मॉडल हाई स्कूल के निर्माण में आप का बहुत बडा हाथ है। आप इसे समुन्नत बनाने के लिये भरसक प्रयत्न करते रहते है।

श्री रत्नचन्द्रजी जैन एम० ए०

आप शिक्षण-सस्थाओ के कार्यों में विशेष अभिरुचि रखते है, और यथा-शक्ति समाज सेवा के कामो में भाग लेते रहते हैं।

ला० हरबंसलालजी सूतवाले

आप बहुत वर्षो तक स्थानीय श्रावक सघ के प्रधान पद पर नियुक्त रह चुके हैं। समाज-सेवा के कार्यों को पूरी दिलचस्पी से करने वाले प्रसिद्ध श्रावक हैं।

श्री वेदप्रकाशजी जैन

आप भूतपूर्व प्रधान ला० हरबसलालजी के लघुभ्राता है। आजकल आप जैन मॉडल हाई स्कूल के मैनेजर है। अपने कर्तव्य का अच्छी तरह से पालन कर रहे है। उत्साही नवयुवक है।

ला० मेलारामजी सूत वाले

आप बहुत वर्षो तक जैन गर्ल्स हाई स्कूल के मैनेजर रह चुके हैं। अपने कर्तव्य को बहुत अच्छी तरह से निभाते रहे है।

ला० बनारसीदासजी और ला० मेलारामजी

आप दोनो सगे भाई है। समाज-सेवा के प्राय सभी कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेते रहते हैं।

ला० सीतारामजी और ला० ओमप्रकाशजी

आप दोनो सगे भाई हैं। आपके पूज्य पिता स्वर्गीय ला० सन्तलाल जी और पितामह ला० मल्लीमल जी यहाँ के प्रमुख श्रावक थे। ला० सीताराम जी और ला० ओम्प्रकाश जी सघ के मुख्य कार्यों में यथाशक्य भाग लेते रहते है।

ला० ईश्वरदासजी

यहाँ के प्रसिद्ध स्वर्गीय श्रावक ला० फूलामल जी के आप सुपुत्र है। सघ-सेवा के कार्यों में आप उत्साह के साथ भाग लेते रहते हैं।

बहिन देवकी देवी जी जैन (प्रिंसिपल जैन गर्ल्स हाई स्कूल, लुधियाना) का सक्षिप्त परिचय

बहिन देवकी देवी जी लुधियाना के सुप्रसिद्ध भक्त प्रेमचन्द जी की सुपुत्री है। आप में भक्ति और सेवा के अद्भुत सस्कार है जोकि आपको अपने पूज्य पिता से प्राप्त हुए हैं। आपका चरित्र उच्च-कोटि का है। आपने लगभग अठारह वर्ष की आयु में स्वेच्छा से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अङ्गीकार किया था। आप बाल-ब्रह्मचारिणी हैं। आपके मुखमण्डल पर ब्रह्मचर्य का महान् तेज है। ब्रह्मचर्य के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। आप केवल खादी के वस्त्र पहनती हैं। आप किसी प्रकार का कोई भी आभूषण नही पहनती। विद्या, नम्रता, शिष्टता' पवित्रता और सेवा आदि सद्गुण ही आप के आभूषण हैं।

सन् १९२३ में जैन गर्ल्स स्कूल के साथ एक अध्यापिका के रूप में आपका सम्पर्क स्थापित हुआ था। सन् १९२९ में आप स्कूल की मुख्याध्यापिका बनाई गई। सन् १९४६ तक आप बहुत ही अच्छे ढग से अध्यापन कार्य करती रही। सन् १९४७ में आपकी जैन गर्ल्स हाईस्कूल लुधियाना की प्रिंसिपल के पद पर नियुक्ति हुई। तब से आज तक आप इस पद को बडी ही योग्यता और उत्तमता से निभा रही है। आप यथावकाश पौषध, व्रत, बेला, तेला आदि रूप तपस्या भी करती रहती है, और प्रतिदिन सामायिकादि का अनुष्ठान भी किया करती हैं। आपने आज, तक विद्या-

क्षेत्र तथा अन्य धार्मिक क्षेत्रो मे हजारो रुपयो का दान दिया है और अपनी सारी अचल सम्पत्ति स्थानीय-स्थानकवासी जैन श्रावक-सघ को शिक्षार्थ दान कर दी है। सम्माननीय बहिनजी चिरजीवी हो यही हमारी हार्दिक कामना है।

निवेदक—मन्त्री जैन गर्ल्स हाई स्कूल कमेटी, लुधियाना।

जैन माडल (Model) हाई स्कूल लुधियाना का सक्षिप्त परिचय

इस स्कूल का प्राइमरी विभाग १५ वर्षो से चल रहा है, परन्तु हाई-विभाग इसी वर्ष चालू हुआ है। इस समय दोनो विभागो मे १५ अध्यापक और लगभग ५०० विद्यार्थी हैं। ला० नोहरियामल जी जैन ने अपने बाग में २७०० गज भूमि इस स्कूल की बिल्डिग के लिये दान दी है। वहाँ बिल्डिग बनाने की योजना विचाराधीन है। आशा है कि जैन गर्ल्स हाई स्कूल की तरह जैन माडल हाई स्कूल (Jain Model High School) भी दिन-दिन उन्नति के पथ पर आगे ही आगे बढता रहेगा।

जैन गर्ल्स हाई स्कूल और जैन माडल हाई स्कूल ये दोनो शिक्षण-सस्थाएँ ऐस० ऐस० जैन बिरादरी रजिस्टर्ड (श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक-सघ) की ओर से सुचारु रूप से चलाई जा रही है। इन दोनो शिक्षण सस्थाओ की बिल्डिगें, जैन-धर्मशाला और जैन स्थानक की बिल्डिगे तथा अन्य कई बिल्डिगे स्थानीय श्रावक-सघ के अधिकार में है, और इन सबका यथायोग्य प्रबन्ध भी स्थानीय श्रावक-सघ की ओर से ही किया जाता है।

श्री किशोरीलालजी जैन B A (Hon) LL. B एडवोकेट, फरीदकोट

आपका जन्म सन् १९०३ में हुआ। बचपन में ही विद्योपार्जन के प्रति आपकी तीव्र रुचि थी। सन् १९२५ में अपने B A (Hons) और १९२७ में LL B की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपका विद्याध्ययनकाल बडा ही शानदार रहा। कक्षा के सुयोग्य एव होनहार छात्रो में आप सर्वप्रथम थे। धार्मिक तथा सामाजिक प्रेम बचपन से ही आपमें प्रतीत होने लगता था। तत्कालीन 'आफताब जैन" पत्र के आप वर्षो तक यशस्वी सम्पादक रह चुके हैं। सन् १९२९ से ३० तक रिसाला "जितेन्द्र" का प्रबन्ध करते रहे। जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला के प्रिंसीपल तथा अधिष्ठाता पद पर आप वर्षो तक काम कर चुके हैं। साइमन कमीशन से मिलने वाले 'जैन डेप्युटेशन' के आप भी सदस्य थे। इस समय आप भटींडा जिले के सुयोग्य वकीलो में से है। स्थानीय बार एसोसिएशन के आप सभापति भी रह चुके है। स्थानीय नगरपालिका के सन् ४८ से सन् ५२ तक अध्यक्ष रह चुके है। आप उर्दू के सुयोग्य कवि और लेखक है। आपके विचार धार्मिक किन्तु प्रगतिशील है। आप स्थानीय जैन सभा के प्रधान है। आपके ही भगीरथ प्रयासो से जैन कन्या पाठशाला हाईस्कूल के रूप में परिणित हुई। आपके ही मार्गदर्शन एव नेतृत्व से जैन सभा हर प्रकार से प्रगति कर रही है।

स्व० बाबू जयचन्द्रजी जैन, जालंधर (पजाब)

आपका नाम पजाब जैन समाज के बच्चे-बच्चे की जबान पर है। आप जैन समाज के प्रमुख एव प्रतिष्ठित सज्जन थे। आपकी इग्लिश बहुत ही ऊँची थी। आप दानवीर स्व० श्री कृपारामजी के सुपुत्र थे। आप जैन बिरादरी

गुजरावाला (पाकिस्तान) के गण्यमान व्यक्ति थे। आपकी स्वाभाविक सरलता तथा दयाशीलता उल्लेखनीय है। प्रत्येक समाज सेवा के कार्य में आप सहयोग देते रहते थे। आपकी उदारता आपके उच्च गौरव का प्रथम स्तम्भ है। समाज की एकता और शान्ति का आपको हर समय ध्यान रहता था। आपकी उच्च कोटि की शिक्षा के कारण समाज को बडा लाभ हुआ। आप मत-मतान्तर के झगडो से सदैव दूर रहते थे। आप एक महान् व्यापारी भी थे। अमन-पसन्द से आपका नाम पजाब की हरएक बिरादरी मे अमर हो गया है।

इसके अतिरिक्त आपकी अनन्य गुरुभक्ति भी अनन्य थी। इसीलिए प्रत्येक स्था० जैन साधु आपके नाम से भली भाँति परिचित है। वर्तमान आचार्य श्री आत्मारामजी म० के आप परम श्रद्धालुओ मे से थे। प्रतिदिन सामायिक सवर स्वाध्याय एव धर्मध्यान आदि करना आपका नित्य कर्म था। सैद्धान्तिक बोलचाल तथा उत्तराध्ययन एव कल्प-सूत्र आदि के भी आप भलीभाँति जानकार थे। इस प्रकार से आप एक कट्टर जैन सस्कारो वाले श्रावक थे। आज भी आपकी उच्चशिक्षा का प्रभाव आपके परिवार में पाया जाता है। आप एक उच्च कोटि के हस्तलेखक भी थे। हस्तलिखित कुछ रचनाएँ आज भी प्राप्य हैं। आपने अपनी आयु के करीब २० वर्ष रावलपिण्डी में बिताये थे। वहाँ भी समाज की काफी सेवा की। धर्म एव समाज सेवा करते हुए आपका ता० २२-११-१९४९ को ७४ वर्ष की उम्र में पडित मरण हुआ। मृत्यु के अन्तिम समय तक आपके मुँह पर नमस्कार मन्त्र का उच्चारण था। ऐसे महान् समाज सेवी की देवलोकयात्रा से समाज को भारी क्षति पहुँची है

लेफ्टिनेण्ट श्री अभयकुमारजी जैन, सिरसा

श्रीमान् अभयकुमार जी जैन का जन्म ३१ मई सन् १९३४ को आपका जन्म स्थान सिरसा (पजाब) है। आप के पूज्य पिताश्री का नाम श्री देशराम जी जैन है।

आपने नेशनल डिफेन्स एकाडमी मे ट्रेनिंग पाकर दिसम्बर सन् १९५४ में भारतीय सेना में परमानेण्ट रेग्यूलर कमीशन प्राप्त किया है। आप सुयोग्य एव उत्साही कार्यकर्ता हैं। आपका पूरा पता है—मारफत लाला गगाराम जी प्रभुदयाल जी, रोडी बाजार, सिरसा (पजाब)।

स्व० प्रोफेसर के० एम० लिग्गा बी० ए० एल-एल० बी० स्यालकोट

आप अत्यन्त उत्साही धर्मप्रिय सज्जन थे। उज्जैन में आने के पश्चात यहाँ के धार्मिक क्षेत्र में काफी लगन के साथ कार्य किया। आपने जैन शान्ति सघ छात्रालय को अपनी अवैतनिक सेवाएँ प्रदान कर सुचारु रूप से चलाया तथा इस प्रकार अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी आपने धर्म के प्रति अपने प्रेम का पूर्ण परिचय दिया। कुछ समय के लिए इन्दौर चले जाने के कारण आपके समान सुयोग्य प्रधान कार्यकर्ता सुपरिन्टेन्डेन्ट सस्था को प्राप्त नही हो सका, अत तभी से छात्रालय बन्द रहा। आपका स्वर्गवास २० जून १९५३ में हुआ। आपके निधन से समाज ने अपना सेवाभावी कार्यकर्ता खो देने की क्षति उठाई है।

हकीम बेनोप्रसादजी जैन, रामामण्डी (पंजाब)

आप मुंशीराम कौक के पुत्र हैं। आपकी उम्र ५० वर्ष की है। पिछले ३० वर्षों से वैद्यक का काम कर रहे हैं। साधु-मुनिराज एव स्वधर्मी भाइयो का उपचार बडे तन-मन से करते हैं। आप बडे दानी सज्जन हैं। जो भी रोगी आप से औषधि लेने आता है उससे शराब मास का त्याग कराते हैं।

स्व० मुनि श्री खजानचन्द्र जी महाराज के पाँव की पीडा की शल्य-चिकित्सा बडी भावशक्ति से की थी।

श्री नत्थूराम जी जैन कोचर, रामामंडी

आपका जन्म भाद्रव वदी अमावस सवत् १६८१ में रामामण्डी में हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री दौलतराम जी है। आपका व्यवसाय दलाली है। श्री नत्थूराम जी बडे ही समाजप्रेमी व्यक्ति है, धार्मिक कार्यों में आप सदा अग्रसर रहते हैं। व्रत प्रत्याख्यान, सामायिक प्रतिक्रमण आदि धार्मिक क्रिया-कलाप मे आप बडे ही आस्थावान सुश्रावक हैं। भविष्य में आपके द्वारा समाज तथा धर्म की और भी अधिक सेवा होगी ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

श्री बनारसदासजी लातेड, पक्काकला

आपका पेप्सु राज्य के पक्काकला ग्राम में जन्म हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री खजानचन्द जी है, जो अपने समय के एक कुशल व्यापारी थे। श्री बनारसीदासजी ने अपने माध्यमिक शिक्षा के पश्चात् व्यावसायिक कार्यों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। यद्यपि आपका शिक्षा अधिक नही हुई, किन्तु फिर भी आप सुलझे हुए विचारो के धर्मप्रेमी नवयुवक सज्जन हैं। सन्त-मुनिराजो के सान्निध्य में धर्मकार्यो एव सामाजिक गतिविधियो में आपकी बडी दिलचस्पी रहती है। इस समय रामामडी में बडी दक्षता के साथ अपनी फर्म का सचालन कर रहे हैं। समाज को आपसे बडी-बडी आशाएँ हैं।

श्री श्वे० स्थानकवासी जैन सभा, कलकत्ता

आज से लगभग २८ वर्ष पहले सन् १६२७ ई० में स्व० श्रीमान् मगनलाल जी कोठारी के सभापतित्त्व में श्री फूमराज जी बच्छावत, स्व० श्री नथमल जी दस्साणी, स्व० श्री नेमीचन्द जी सा० बच्छावत आदि प्रमुख सज्जनो के सामूहिक प्रयास से पाचागली में स्थित मकान में इस सस्था की स्थापना हुई। तब से लेकर अब तक इस सस्था ने विभिन्न प्रकार की प्रवृतियो में भाग लिया और अच्छी उन्नति की।

इस सभा के सरक्षण में एक विद्यालय भी खोला गया। स्वर्गीय श्रीमान् किशनलाल जी काकरिया के सभापतित्व में इस सस्था को नवीन रूप दिया गया और सभा का वर्तमान भवन १८६, क्रास स्ट्रीट में ८५०००) रु० में खरीदा गया और इसी में उक्त विद्यालय चलाया गया। वर्तमान में श्री सोहनलाल जी सा० बाठिया इस सभा के सभापति हैं। आप ही की प्रेरणा से सभा-भवन के लिए नई जमीन लगभग १,५०,०००) रु० में खरीदने का निश्चय कर लिया है।

इस सस्था के भूतपूर्व मन्त्री श्री फूसराज जी बच्छावत लगभग २८ वर्ष से इस सस्था की सेवा कर रहे हैं। इस समय आपके सुपुत्र श्री सूरजमल जी बच्छावत सभा के मन्त्री हैं। आप भी अपने पिताश्री के समान सभा की
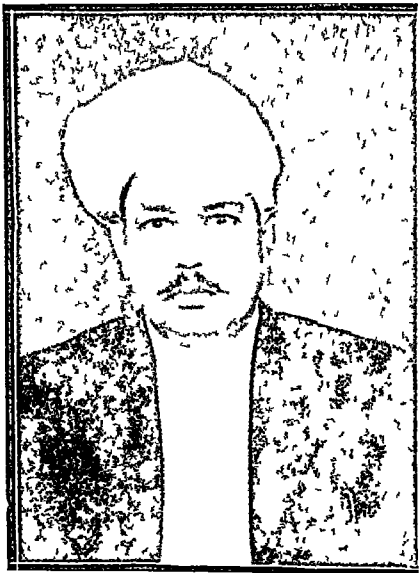
श्री सेठ फूलराजजी बच्छावत, कलकत्ता

सेवा में पूर्ण प्रयत्नशील हैं।

सभा द्वारा जो विद्यालय सचालित है उसमें विभिन्न प्रान्तो के १७५ छात्र विद्याभ्यास करते हैं। विद्यालय में आठ अध्यापक हैं। जैन धर्म को पढाई के लिए भी विशेष व्यवस्था है। शीघ्र ही विद्यालय हाइस्कूल बना दिया जायगा।

स्थानक-भवन

यहाँ के गुजराती स्थानकवासी बन्धुओ के विशेष प्रयास से स्थानक का भव्य भवन बनाया गया है। इसके निर्माण में लगभग ४,००,०००) रु० खर्च हुए हैं। इस स्थानक के बन जाने से कलकत्ता में पधारने वाले मुनिवरो के लिए विशेष सुविधा हो गई है। सवत् २००६ में श्री जगजीवन जी महाराज व जयन्तिलाल जी महाराज का चातुर्मास हुआ। इस चातुर्मास में गुजराती, मारवाडी और पजाबी बन्धु आपस में एक-दूसरे से परिचित हुए। सवत् २००२ और २०१२ में प० मुनि श्री प्रतापमल जी महाराज आदि सात सन्तो का चातुर्मास हुआ। इन महात्माओ के चातुर्मास में कलकत्ता-स्थित स्थानकवासी समाज में बहुत उन्नति हुई। मारवाडी, गुजराती व खासकर पजाबी भाइयो को सगठित करने का श्रेय इन्ही मुनिवरो को है। अब इस समय इन तीनो समाजो में पारस्परिक प्रेम-सम्पर्क स्थापित हो गया है। इन तीनो में सम्मिलित रूप से प्रीति भोज भी हुआ, जिसका बहुत ही सुन्दर प्रबन्ध किया गया था। इस प्रकार कलकत्ता धार्मिक क्षेत्र में भी बहुत बढा-चढा है। गुजराती बन्धुओ का एक भोजनालय है जिसमें केवल १८) रु० मासिक में २०० व्यक्ति भोजन करते हैं।

इसके अतिरिक्त पजाबी बन्धुओ की भी एक सभा है जिसका नाम श्री महावीर जैन सभा है।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, मद्रास

यहां का सघ बडा ही समृद्धशाली, व्यवस्थित और प्रत्येक दिशा में प्रगतिशील है। श्री मोहनमल जी चोरडिया और श्री ताराचन्द जी सा० गैलडा के द्वारा दिये गये दानो से मद्रास का श्री सघ प्रगतिगामी बन गया है। मद्रास सघ द्वारा स्थापित 'जैन एज्युकेशन सोसायटी' के तत्त्वावधान मे निम्नलिखित विशाल पैमाने पर काय हो रहे हैं—

(१) स्थानकवासी जैन बोर्डिंग।
(२) जैन हाईस्कूल।
(३) जैन कॉलेज।
(४) जैन मीडिल स्कूल।
(५) श्री ताराचन्द जैन विद्यालय।
(६) श्री जैन कन्या विद्यालय।

इनके अलावा धार्मिक क्रियाओ के लिये विशाल और सुविधाप्रद स्थानक है। साधु-साध्वियो का यहाँ तक पहुँचना कठिन होता है। महासतिजी श्री सायरकुवरजी द्वारा इस तरफ क्षेत्र में धर्मप्रचार तथा शिक्षा-प्रचार अच्छा हुआ और अभी भी हो रहा है।

यहाँ मारवाडी समाज की सख्या अधिक है। जो इस प्रान्त तथा नगर के प्रमुख व्यापारी हैं। गुजराती समाज कम होते हुए भी दोनो मे घनिष्ट प्रेम है। सभी सामाजिक और धार्मिक कार्य दोनो के सहयोग से होता है।

अपने व्यवसाय में लगी रहने पर भी अपनी जाग्रत तथा समयानुकूल प्रवृत्तियो के कारण यहाँ का स्थानवासी जैन समाज वैभवसम्पन्न होने के साथ प्रतिष्ठा-सम्पन्न भी है।

श्री एस० एस० जैन सोसायटी कुनूर (मद्रास) का सक्षिप्त परिचय

कुनूर का स्थानीय स्था० समाज धर्मकार्य में बहुत पीछे रहा है क्योकि यहाँ पर साधु-साध्वियो का आगमन नही हो सकता है। अत नवयुवको में धर्म के प्रति अरुचि के भाव दिन प्रतिदिन बढते जा रहे थे। किन्तु सन् १९५४ ई० से यहाँ एस० एस० जैन सोसायटी की स्थापना हो गई इससे प्रात काल स्थानक में प्रार्थना और सामयिक होने लगी। इसी सोसायटी की सहायता से यहाँ एस० एस० जैन स्कूल और पुस्तकालय भी चलाता है। स्थानकवासियो के यहाँ केवल १५ घर हैं। अब समाज में जागृति अच्छी है।

श्री स्थानकवासी जैन श्री सघ, अहमदनगर जिले का सक्षिप्त वर्णन

बम्बई राज्य के महाराष्ट्र विभाग का अहमदनगर एक जिला है। रेल के धौंड मनमाड लाइन पर अहमदनगर स्टेशन है। आबहवा की दृष्टि से यह स्थान अनुकूल और प्रशस्त है।

मुनिराजों द्वारा पावन की हुई भूमि

स्थानकवासी साधु-साध्वियो का आवागमन इस तरफ ८० वर्ष पूर्व हुआ। अहमदनगर में प्रथम चातुर्मास भू० पू० कोटा सम्प्रदाय के श्री छगनमल जी म० सा० का हुआ। उसी समय ही ऋषि-सम्प्रदाय के पूज्य श्री तिलोक ऋषिजी म० सा० इधर पधारे थे और उनका प्रथम चातुर्मास अहमदनगर के समीप घोडनदी मे हुआ था। वहाँ का चातुर्मास पूर्ण कर श्री तिलोक ऋषिजी महाराज सा० ने दूसरा चातुर्मास अहमदनगर में किया और बहुत समय तक जिले के अलग-अलग भाग में घूमकर स्थानकवासी लोगो की श्रद्धा दृढ बनाने का बडा श्रेय प्राप्त किया। इसका परिणाम यह हुआ कि जिले भर में अनेक अनुकूल क्षेत्र निर्माण हो गये। इस समय तो अहमदनगर दक्षिण का बडा क्षेत्र माना

जाता है। बडे-बडे मुनिराज जो भी दक्षिण में पधारे उनके द्वारा अहमदनगर पावन हुआ है । स्व० पूज्य श्री जवाहरलाल जी म० सा० जैन दिवाकर चौथमल जी म० सा०, पूज्य श्री काशीराम जी म० सा०, पूज्य श्री अमोलख ऋषिजी म० सा०, पूज्य श्री प्रसन्नचन्द जी म० सा० तथा वर्तमान में सहमन्त्री प० मुनि श्री हस्तीमल जी म० सा० और श्री परपोत्तम जी म० सा० आदि सन्तो ने यह भूमि पावन की है। प्रधान मन्त्री प० रत्न श्री आनन्द ऋषिजी म० सा०, प० मुनि श्री सिरेमल जी म० सा० इनका तो जन्म ही इस जिले का है । उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म० सा० और प० मुनि श्री घासीलाल जी म० सा० का शिक्षा प्रबन्ध भी अहमदनगर में हुआ था। महासतियो में श्री हीराजी, भूराजी, रामकुँवर जी, रभा कुँवर जी, नन्दकुँवर जी आदि अनेक महासतियो ने यहाँ चातुर्मास किये है। वर्तमान में अस्वस्थता के कारण आत्मार्थी श्री मोहन ऋषिजी महाराज तथा विनयऋषि जी म० सा० यहाँ विराजमान है। विदुषी महासति जी श्री उज्ज्वलकुमारी जी म० सा० के भी यहाँ पर अनेक चातुर्मास हुए हैं और अभी आँखो की बीमारी के कारण यहाँ पर विराजमान हैं । जिले भर में अनेक क्षेत्र साधु-साध्वियो के लिए अनुकूल है ।

शास्त्रवेत्ता और कार्यकर्ता

अहमदनगर के श्रावकगण भी धर्मप्रेमी है । श्री किसनदास जी सा० मुथा तथा श्री हणूमल जी सा० कोठारी बडे ही शास्त्रज्ञ श्रावक थे। अभी श्री धोडीराम जी मुथा शास्त्रवेत्ता है। श्री चन्दनमल जी पितलिया यहाँ के बडे सेवाभावी श्रावक थे। इनके अलावा श्री मगनमल जी गाधी, श्री पृथ्वीराज जी चौरडिया, श्री मन्नालाल जी डोसी, माणकचन्द जी मुथा वकील आदि अनेक श्रावक हो गये है जो धर्मप्रेमी और धर्मचुस्त थे ।

वर्तमान में श्री कुन्दनमल जी फिरोदिया वकील, श्री माणकचन्द जी मुथा, श्री किसनदास जी मुथा, श्री पूनमचन्द जी भण्डारी, सुखलाल जी लाढा, डाक्टर भीकमचन्द जी वोरा आदि अनेक श्रावक धर्म की सेवा करते हैं समाज के प्रमुख कार्यकर्ता हैं ।

धार्मिक परीक्षा-बोर्ड और सस्थाएँ

पूज्य मुनिवरो के उपदेश से जिले में कई स्कूलें खुली । पाथर्डी में श्री तिलोक जैन हायस्कूल नाम की सस्था अच्छा कार्य कर रही है । यहाँ पर श्री आनन्द ऋषिजी महाराज सा० के सदुपदेश से सस्थापित धार्मिक परीक्षा बोड और जैन सिद्धान्तशाला-पुस्तक-प्रकाशन विभाग है तथा अहमदनगर घोडनदी में भी श्री जैन सिद्धान्तशाला की व्यवस्था है । अहमदनगर शहर में जैन वोडिंग लगभग ३२ वर्ष से चलता है—जिसमें माध्यमिक से कोलेज तक के विद्यार्थी लाभ लेते हैं । इस वोर्डिङ्ग में धार्मिक पढाई की भी व्यवस्था है । अहमदनगर जिले में पाथर्डी-कडा नाम का ग्राम है । वहाँ पर भी एक जैन स्कूल है, जिसमें गरीब विद्यार्थियो के शिक्षण की व्यवस्था है । शीघ्र ही इस स्कूल को हायस्कूल बना दिया जायगा ।

वात्सल्य फण्ड

स्व० पूज्य श्री काशीराम जी म० सा० के सदुपदेश से यहाँ पर वात्सल्य फड नाम की सस्था स्थापित हुई । पिछले १५ साल से समाज के अपग, अनाथ और असहाय भाइयो की सहायता की जाती है। इस फण्ड में से अब तक लगभग ५०,००० इस कार्य में खर्च हुआ है ।

मण्डल और धर्मशालाएँ

यहाँ महावीर मडल नाम की एक सस्था है, जो समस्त जैन समाज का सगठन करने और पारस्परिक भाई-चारा वढाने का कार्य कर रही है। इस सस्था के स्वयसेवक मडल ने अजमेर के साधु-सम्मेलन के समय अच्छी सेवा की । इसके अतिरिक्त जीव दया मडल सस्था है जिसके द्वारा जीवो की रक्षा का कार्य होता है। यहाँ पर दो धम-

शालाएँ है जो श्री सतोकचन्द जी गुदेचा, सदाबाई चगेडिया, श्री हेमराज जी फिरोदिया के परिवार के लोगो द्वारा निर्माण कराई गई। एक सेवा समिति है जिसके द्वारा गरीब और बीमारो की सेवा की जाती है।

स्थानक

यहाँ पर रम्भाबाई पितलिया के द्वारा प्रदत्त एक स्थानक है। इसी के निकटस्थ जमीन को श्री मोहनलालजी वेद की इस्टेट में से उनके ट्रस्टियो ने ५०००) में खरीदी जिसके कारण बडा भव्य स्थानक बना है। शास्त्रवेत्ता श्री किसनदास जी मुथा ने इस स्थानक की मरम्मत के लिए ३०००) प्रदान किये। इसके अलावा सीताबाई और श्री गेनजी द्वारा दिये गए दो स्थानक है। सघ के द्वारा विनिर्मित एक स्थानक घास गली में है। श्री भीकूबाई कोठारी के द्वारा दिया गया स्थानक के लिए एक मकान है।

लगभग पन्द्रह वर्ष से पहले यहाँ जैन कान्फरस की जनरल कमेटी की बैठक हुई थी।

लगभग २० वर्ष तक यहाँ जैन स्कूल चला परन्तु अब वह बन्द हो गया है और उसके फण्ड में से धार्मिक शिक्षण की व्यवस्था होती है।

छात्रालय

श्री चन्दनमल जी पितलिया के सुपुत्र श्री मोतीलाल जी कुँवरलाल जी ने जैन छात्रालय के लिए दो एकड जमीन लगभग १५,०००) के लागत की दी है। छात्रालय के भवन निर्माण कार्य के लिये सघ के द्वारा ५०,०००) एकत्रित किया गया है। इस छात्रालय में ५० छात्र रह सकेंगे।

श्रावक-सघ

सादडी सम्मेलन के बाद यहाँ पर श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ की स्थापना हुई। श्री कुन्दनमल जी फिरोदिया उसके अध्यक्ष और श्री माणकचन्द जी मुथा व श्री सुखलाल जी लोढा मन्त्री हैं।

सहअस्तित्व और सहवास

अहमदनगर के स्थानकवासी, मदिरमार्गी और दिगम्बर समाज मे प्रेमपूर्वक सम्बन्ध है। श्री महावीर जयती के समान कार्यक्रम सभी के सहयोग से एकत्रित होकर मनाये जाते है।

यहा तेरापथी का घर नही है। मन्दिरमार्गी के लगभग १०६, दिगम्बर ५० तथा स्थानकवासी समाज के ५०० घर होगे जिसमें मारवाडी, गुजराती, कच्छी सभी शामिल है।

जैन धर्म की उन्नति के लिए जो जो प्रयत्न किये जाते है उसमे स्थानीय सघ यथाशक्य सहयोग देता है। जैन सघ में १०-१२ वकील, डाक्टर है तथा अनेक ग्रेज्युएट है। यहाँ शिक्षा का प्रचार अच्छा है। यहाँ सुलझी हुई नवीन विचारधारा के लोग है। सम्प्रदायवाद यहाँ कभी भी नही था और अब भी नही है।

श्री वर्धमान श्रावक सघ घोडनदी का प्रगतिपत्र और सक्षिप्त इतिहास

पूना और अहमदनगर के बीच मे बसा हुआ घोडनदी ग्राम जैन सघ की दृष्टि से अपना विशेष महत्व रखता है। यहाँ जैन समाज के १००-१२५ घर है, जिनमे कुछ व्यापारी है, कुछ नौकरी करते है और कुछ साधारण व्यवसाय से अपना जीवन-निर्वाह करते है। साधारण परिस्थिति वालों की सख्या अधिक है।

धर्मस्थानकों की दृष्टि से घोडनदी का महाराष्ट्र में गौरवपूर्ण स्थान है। स्थानक से सम्बन्धित यहाँ छ मकान है। मुनिराजो के ठहरने-आत्मचिन्तन-आत्मसाधना करने की दृष्टि से घोडनदी के स्थानको की व्यवस्था सर्वांग-

पूर्ण है। इसके अलावा यहाँ मन्दिर-उपाश्रय आदि भी हैं। खर्च की दृष्टि से स्थानीय संघ के मकानात स्वावलंबी हैं। यहाँ एक गौशाला, जैन पाठशाला, जीवदयामण्डल. सार्वजनिक वाचनालय, हाईस्कूल, हैल्थयुनिट और औषधालय आदि सार्वजनिक तथा सरकारी सेवारत संस्थायें है जो अपने-अपने क्षेत्र में विशुद्ध रूप में सेवाकार्य करती हैं।

महाराष्ट्र प्रान्त मे मुनिराजों का सर्वप्रथम चातुर्मास करने-कराने का गौरव भी घोडनदी को ही प्राप्त है। वि० संवत् १९३९ में महाराष्ट्र में मुनिराजों का सर्वप्रथम चातुर्मास हुआ जो घोडनदी में ही हुआ। यह चातुर्मास महान् प्रतापी कविवर पूज्य श्री तिलोक ऋषिजी म० सा० ने किया था। इसके अलावा मुनिराजों मे संस्कृत शिक्षण की प्रणाली का बीजारोपण भी घोडनदी में ही हुआ। महान् प्रतापी पूज्य श्री जवाहरलाल जी म० सा० ने अपने शिष्य और वर्तमान उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म० सा० और प० मुनि श्री घासीलाल जी म० सा० के संस्कृत शिक्षण लेने की यहीं से व्यवस्था करके मुनिराजों में संस्कृत-शिक्षण की प्रणाली का शुभारम्भ किया।

यहाँ मुनिराजो के अनेक चातुर्मास हुए हैं और होते रहते हैं। आजतक जो चातुर्मास हुए हैं उनमें निम्नोक्त चातुर्मास विशेष महत्त्वशाली हैं। पूज्य श्री तिलोक ऋषिजी म० सा० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० मुनि श्री प्रसन्नचन्द्रजी म० सा०, पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म० सा०, मुनि श्री मोहन ऋषिजी म० सा०, पूज्य श्री आणद ऋषिजी म० सा०, मुनि श्री प्रेमराज जी, गणेशलाल जी म० सा०, और महासति जी श्री उज्ज्वलकवर जी म० सा० आदि-आदि संतों-सतियों के चातुर्मास धर्म-प्रभावना की दृष्टि से खूब ही गौरवशाली रहे। धर्मभावना की वृद्धि के कारण आजतक यहाँ अनेक दीक्षाएँ भी हुई हैं। जिनमें प्रमुखत श्रीमान् विरदीचन्द जी दूगड के घराने से श्री विरदीचन्द जी की माताजी, उनकी बहन और दो कन्यायें इस प्रकार चार दीक्षाएँ एक ही घर से हुई। वर्धमान श्रमणसंघ के वर्तमान प्रधान मंत्री श्री आणद ऋषिजी म० सा० के गुरुदेव पूज्य श्री रत्न ऋषिजी म० सा० के दीक्षा महोत्सव का गौरव भी घोडनदी को ही प्राप्त है। पूज्य श्री के साथ ही श्री स्वरूपचन्द जी और महासति जी श्री चम्पाकवर जी तथा महाभाग्यवान् महासति जी श्री रामकँवरजी म० सा० अर्थात् पिता-पुत्र, माता-पुत्री की एक ही साथ दीक्षायें हुईं। ये दीक्षायें वि० स० १९३९ के आषाढ शुक्ला ९ को हुईं।

घोडनदी में श्री वर्धमान श्रमण संघीय श्रावकसंघ बना हुआ है, जिसके अध्यक्ष दानवीर श्रीमान् सेठ हस्तीमल जी दूगड है। आप महासति जी श्री सुमतिकँवरजी के संसारपक्षीय पिताजी हैं। श्रीमान् दूगड जी स्थानीय अनेक संस्थाओं के प्राण हैं। शरीर से दुर्बल, अशक्त और बुढापे से दबे होने पर भी स्थानीय संस्थाओं की सर्वांगीण प्रगति के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।

श्रीमान् डाक्टर साहेब, श्री चुनिलाल जी नाहर शास्त्रो के सूक्ष्म रहस्यो के एक अच्छे ज्ञाता हैं।

घोडनदी श्री संघ की एकता-संगठन अपने एक विशेष आदर्श को रक्खे हुए हैं। क्या सामाजिक और क्या धार्मिक सभी कार्य बडे प्रेम से हिलमिलकर एकमत से होते हैं। आगत मुनिराजों के स्वागत-सत्कार करने की और धर्मलाभ प्राप्त करने की हमेशा भावना रहती है। यही स्थानीय श्री संघ की विशेषता है।

नासिक जिला जैन समाज का परिचय

नासिक जिला १२ तहसीलों मे बँटा हुआ है। इस जिले मे स्था० जैनियो की संख्या लगभग छ हजार हैं। हर तहसील में स्थानक हैं। और चातुर्मास भी हुआ करते हैं। निम्न-स्थानों पर मुख्यत चातुर्मास होते रहते है —

नासिक—यहाँ २०० घर स्थानकवासियों के हैं। समाज के मुख्य कार्यकर्ता हैं श्री चाँदमलजी बरमेचा, श्री हसराज जी सेठिया, श्री भीकमचन्द जी पारख और घेवरचन्दजी पारख आदि हैं।

इगतपुरी—यहाँ समाज के ६० घर हैं। और अग्रणी श्री लादूराम जी बोथरा आदि हैं।

घोटी—यहाँ समाज के ८० घर हैं। और मुख्य कार्यकर्ता श्री कचरदास जी आदि हैं।

लासलगॉव—यहाँ स्था० के १०० घर हैं। जहाँ श्री खुशालचन्द जी बरमेचा आदि मुख्य कार्यकर्ता हैं।

पिपलागॉव—यहॉ समाज के ७६ घर हैं। और अग्रणी है श्री भीकमचन्द जी सेनी श्री भोकमचन्द जी लालचन्द जी आदि।

मनमाड—यहाँ समाज के १०० घर हैं। यहॉ की समाज का सचालन करते हैं श्री गुलाबचन्द्रजी भण्डारी व माणकलाल जी ललवानी आदि।

मालेगॉव—यहाँ स्था० समाज के १०० घर हैं और अग्रणी श्री किशनलाल जी फतहलाल जी मालू व मोतीलाल जी लोढा आदि हैं।

येवला—यहाँ समाज के २५ घर हैं। मुख्य व्यक्ति श्री जुगराज जी श्रीश्रीमाल और हरकचन्द्र जी मण्डलेचा आदि हैं।

निफाड—यहाँ स्था० समाज के ३० घर है। और कार्यकर्ता है श्री सुखराज जी विनायकिया।

चालीस वर्ष पूर्व इस जिले में स्था० समाज के घर बहुत कम थे और धर्म स्थान भी नहीं था। उस समय श्री चाँदमल जी बरमेचा, श्री भीमचन्द जी पारख, श्री हीरालाल जी साखला आदि के अथक परिश्रम से श्री १००८ श्री प्रेमराज जी म० का चातुर्मास हुआ। धार्मिक कार्यों के मुहूर्तस्वरूप म० सा० के उपदेश से श्रीमती सुन्दराबाई ने अपना मकान दे दिया। स्थानक छोटा होने से श्रीमती तोलाबाई व अन्य धर्म बन्धुओं ने बाद में विशाल स्थानक निर्मित कराया। धीरे-धीरे काफी तरक्की होती रही। सन् १९३३ मे रा० ब० स्व० श्री कन्हैयालाल जी भण्डारी इन्दौर निवासी की अध्यक्षता में श्री ओसवाल सम्मेलन हुआ। तब श्री ओसवाल जैन बोर्डिंग की स्थापना हुई। धर्मस्थान में स्थानीय सघ ने जैन पाठशाला स्थापित की। दोनो सस्थाएँ धार्मिक परीक्षा पाथर्डी बोर्ड की देती है। बाद में लासलगाँव में श्री महावीर जैन विद्यालय की स्थापना हुई। चाँदवड में श्री नेमीनाथ जैन गुरुकुल की स्थापना हुई। नासिक शहर में श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ की स्थापना हुई जिसके पदाधिकारी श्री चादमल जी बरमेचा, अध्यक्ष मोहनलाल जी चोपडा, उपाध्यक्ष, घेवरचन्द जी साखला सूरजमल जी बरमेचा मन्त्री है।

श्री महावीर जैन वाचनालय, नासिक

इस वाचनालय और पुस्तकालय के सस्थापक महाराष्ट्र मन्त्री प० मुनि श्री किशनलाल जी म० सा० तथा प्र० वक्ता प० मुनि श्री सौभाग्यमल जी म० सा० है। यह वाचनालय नासिक के रविवार पेठ मे विशाल एव दर्शनीय भवन में है। इस भवन में बडे-बडे चातुर्मास हो चुके है। यह स्थान मुनिराजो के ठहरने के लिए बहुत ही साताकारी है। इस वाचनालय के साथ सलग्न विशाल पुस्तकालय में धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, मराठी और गुजराती आदि भाषा और विषयो को हजारों पुस्तकें है। हजारों की सख्या में लोग वाचनालय और पुस्तकालय का लाभ लेते हैं। इस समय इसकी व्यवस्था श्री धनसुखलाल जी विनायकिया कर रहे है। श्री भँवरलाल जी सांखला तथा श्री देवीचन्द जी सुराना उत्साही युवक हैं जो उत्साहपूर्वक अपनी सेवाए प्रदान कर रहे है।

इसके अतिरिक्त यहाँ एक जैन युवक-मण्डल है जिसके श्री टीपचन्द जी वेदमुथा वकील अध्यक्ष और भँवरलाल जी सांखला सेक्रेटरी है। यहाँ एक जैन पाठशाला भी है जिसमें पाथर्डी के धार्मिक परीक्षा बोर्ड के पाठ्य क्रमानुसार बालकों को धार्मिक शिक्षा दी जाती है।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, नागपुर का परिचय

कई वर्ष पूर्व किसी अज्ञात व्यक्ति ने एक छोटा-सा मकान स्थानक के लिए अर्पण किया था। किन्तु वह मकान उस समय के समस्त श्वेताम्बर बन्धुओं के अन्तर्गत था। सन् १२२ मे श्री न्यायविजय जी महाराज की प्रेरणा से स्थानकवासी बन्धुओं के सरक्षण में आया।

धर्म ध्यान की बढती हुई प्रवृत्ति से पास का मकान खरीदा गया।

प्रथम के पुराने मकान का जीर्णोद्धार करने के हेतु सन् १६३६ में नया मकान बनाया गया।

वर्तमान समय में नागपुर श्रीसघ की वढ़ती हुई जनसख्या फिलहाल १०० घर हैं। सदर में भी २० घर हैं। जहाँ धर्म स्थानक भी बना हुआ है।

वर्तमान प्रवृत्तियाँ

श्रीसघ की वर्तमान प्रवृत्तियो में—

(१) श्री दानवीर सेठ सरदारमलजी पुगलियाँ श्वेताम्बर स्थानकवासी जैनशाला चलती है जिसकी स्थापना सम्त् २००० में नागपुर के अग्रसर श्री सरदारमलजी के स्मारकरूप स्थापन की गई है। जिसकी प्रेरणा प० रत्न श्री आनन्द ऋषिजी महाराज ने की थी। वर्तमान समय १०० विद्यार्थी धार्मिक शिक्षा ग्रहण करते हैं।

(२) शाह मुलजी देवजी वाचनालय—

जिसकी स्थापना सन् १६५२ में हुई। नागपुर श्रीसघ के सेवाभावी मन्त्री श्री मुलजी भाई के स्मरणार्थ उनकी ३० वर्षों की सेवा की स्मृति में की गई है। यह वाचनालय आम जनसमुदाय के लिए खुला है।

(३) श्री स्थानकवासी शिष्यवृत्ति कोष—

स्थानकवासी विद्यार्थियो को शिक्षा की पुस्तकें अथवा फीस के रूप में सहायतार्थ यह कोष स्थापित किया गया है। आज इस कोष में करीब ५०००) पॉच हजार रुपये हैं।

(४) श्रीसघ की वढ़ती हुई प्रवृत्तियो को देखकर विशाल व्याख्यान हॉल बनाने जे लिए अभी श्रीसघ को इम्प्रुवमेन्ट ट्रस्ट का एक प्लोट प्राप्त हुआ है। जिस पर विशाल भवन बनाने के लिए करीब रुपया पचास हजार प्राप्त हो चुके हैं।

इस तरह नागपुर श्रीसघ अपनी प्रवृत्तियो मे सुदृढ आगे कदम बढाता जा रहा है।

श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, रायपुर

यहाँ के श्रावक सघ की स्थापना १३ जुलाई सन् १६५२ में हुई। सघ का कार्य सम्यक् प्रकार से होता रहे, इसके लिए निम्नांकित कार्यकारिणी के पदाधिकारियों का निर्वाचन किया गया—

श्री लक्ष्मीचन्द जी सा धाडीवाल—अध्यक्ष, श्री अगरचन्द जी सा० वेद—उपाध्यक्ष, टीकमचन्द जी सा० डागा—उपाध्यक्ष, सम्पतराजजी सा० धाडीवाल—मन्त्री, भूरचन्द जी सा० देशलहरा और मोहनलाल जी सा० टाटिया—सहमन्त्री, भीखमचन्द जी सा० वेद—कोषाध्यक्ष।

इनके अतिरिक्त अन्य आठ व्यक्ति कार्यकारिणी के सदस्य है। सघ की तरफ से चार गतिविधियाँ गतिमान हैं—

(१) श्री श्वे० स्था० जैन पाठशाला (२) श्री जैन जवाहर ज्ञान प्रचारक मण्डल (३) जीवदया खाता (४) ज्ञान खाता।

श्री श्वे० स्था० जैन पाठशाला

इस संस्था में धार्मिक शिक्षण दिया जाता है। इस वर्ष ४७ छात्र-छात्राएँ पाथर्डी बोर्ड की सिद्धान्त-विशारद तक की परीक्षाओं में सम्मिलित हुए। स्कूल की प्रगति शानदार है। इस पाठशाला को निम्नांकित सज्जनों से इस प्रकार सहायता मिलती है —

श्रीमान् अगरचन्दजी सा० वेद ६००) श्री उत्तमचन्दजी सा० धाडीवाल ३६०) श्री अगरचन्दजी चम्पालालजी सुराणा ३००) श्री अमोलकचन्दजी केवलचन्दजी वेद ३००) श्री अमरचन्दजी जेठमलजी वेद २००)।

इस स्कूल का संचालनकार्य श्री सम्पतराजजी धाडीवाल के अथक परिश्रम द्वारा होता है। श्री सुगनचन्द जी सा० धाडीवाल, श्री महावीरचन्द जैन और श्री जेठमलजी वेद पाठशाला के कार्यों में और शिक्षण मे विशेष दिलचस्पी लेते हैं।

श्री जैन जवाहर ज्ञान-प्रचारक मण्डल

स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० का सत्साहित्य संग्रहीत है। इसके अतिरिक्त जैन संस्कृति को चिरस्थायी बनाने वाला अन्य साहित्य भी प्रचुर मात्रा में है। 'श्रमण वाणी' जो अभी फिलहाल प्रकाशित हुई है मण्डल की तरफ से आधे मूल्य ॥।) में वितरित की जा रही है। इस मण्डल के अध्यक्ष श्री सम्पतराजजी सा० धाडीवाल और मन्त्री श्री महावीरचन्द जी जैन है।

जीव दया खाते में प्रतिवर्ष ३००) ७००) की रकम इकट्ठी हो जाती है जो जीव दया के लिए बाहर भेजी जाती है।

ज्ञान खाते मे एकत्रित होने वाली रकम का पुस्तक-प्रकाशन और शास्त्रादि सुन्दरतम साहित्य मँगाने में उपयोग होता है।
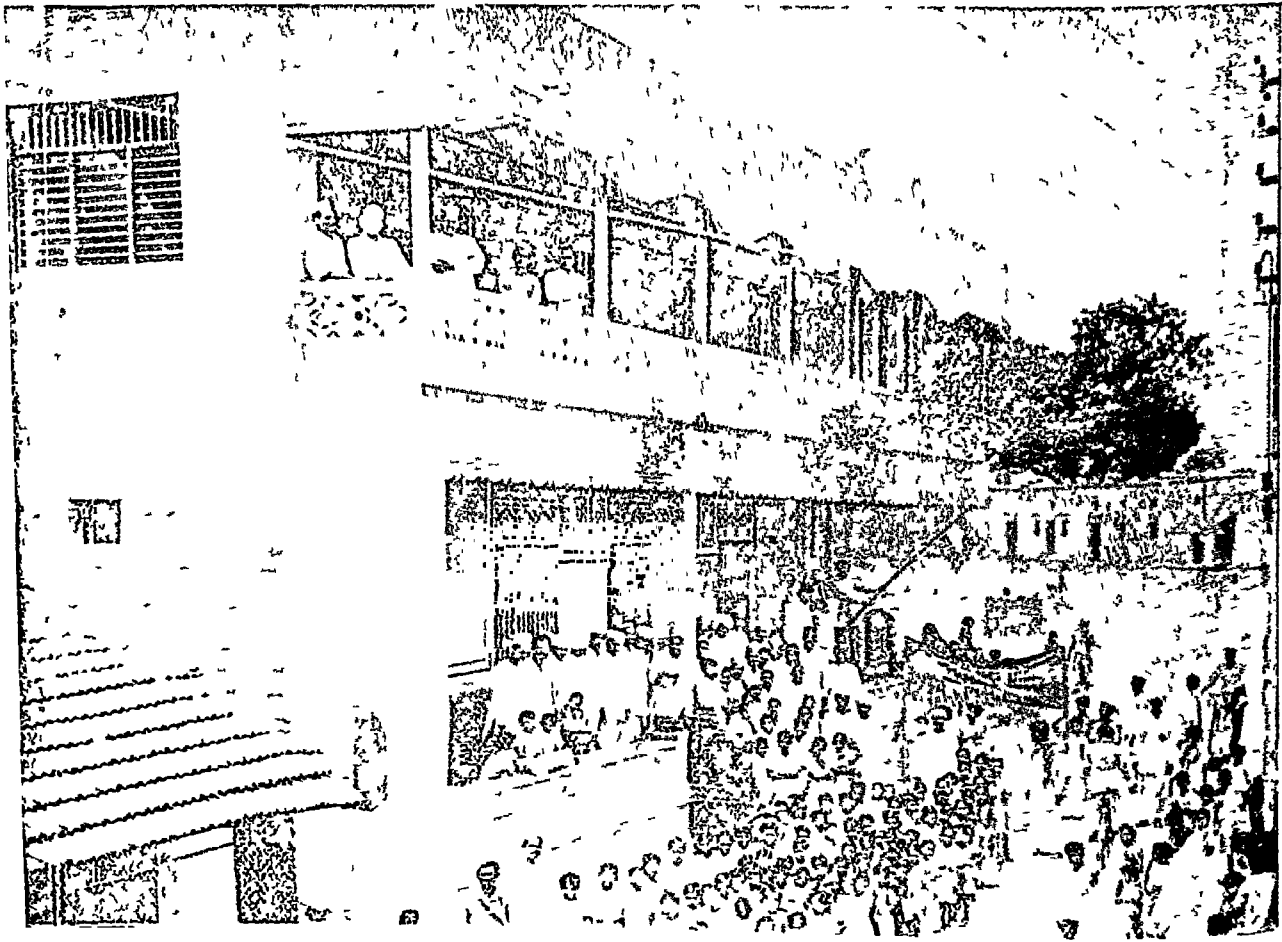
श्री वधमान हिन्दी पाठशाला रायचूर (दक्षिण)

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, इगतपुरी

यह कस्बा बम्बई तथा नासिक के बीच में आगरा रोड पर बसा हुआ है। बीस हजार की जनसख्या है। जिसमें बम्बई तथा नासिक की तरफ विचरने वाले सन्त, सतियाँ अनायास ही पधार जाते हैं। यह क्षेत्र रूपैंठ में बसा हुआ है। हायर पैंठ में यहाँ के सेवाभावी एव उदार सेठ श्री घेवरचन्दजी कु दनलालजी छाजेड ने अपने अथक परिश्रम एव त्याग से धर्मस्थानक बना दिया है। जलवायु की दृष्टि से भी प्रथम साधु लोग यहाँ ठहरते हैं। अपर पैंठ मे नवयुवक सेठ श्री पन्नालालजी लखमीचन्दजी टाटिया ने अपनी जमीन में निजी खर्च से करीब तीस हजार की लागत का एक नवीन सुन्दर धर्म स्थानक बनवाकर सघ के सुपुर्द कर दिया है। लोअर पैंठ में भी सघ की अच्छी प्रोपर्टी है। यहाँ पर सवत् १९९७ से मुनि श्री वर्द्धमान ऋषिजी तथा प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी किशनलालजी म० सा० के उपदेश से स चालित धार्मिक पाठशाला चल रही है। प० दयाशकरजी करीब ४० बालक बालिकाओं को धार्मिक-शिक्षण दे रहे हैं। सादडी सम्मेलन के पश्चात् ही यहाँ भी श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक स घ की स्थापना हो गई। सभी स्थानकों पर श्रावक सघ के बोर्ड लगा दिये गए हैं। श्रावक स घ के पदाधिकारी श्री लादूरामजी मनोरलालजी बोथरा—अध्यक्ष, श्री पन्नालालजी लखमीचन्दजी टाटिया—उपाध्यक्ष, घेवरचन्दजी ची कु दनलालजी छाजेड—मन्त्री, ची भोजराजजी ताराचन्दजी सचेती—उपमन्त्री और श्री पन्नालालजी लखमीचन्दजी लूणावत—कोषाध्यक्ष हैं।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, बालाघाट (म० प्र०)

यहाँ धर्म प्रेमी श्री चुन्नीलालजी बागरेचा के सत् प्रयत्न से धर्म स्थानक और श्री वर्द्धमान श्रावक-स घ की स्थापना हुई। यहाँ स्थानकवासियों के ४०-४५ घर हैं। श्री खुशालचन्दजी जैन भी उत्साही व्यक्ति हैं। आप दोनों का प्रत्येक धर्म कार्य में अच्छा सहयोग रहता है।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, रतलाम

रतलाम स्था० जैनों का बडा केन्द्र है। पहिले तीन सघ थे, परन्तु अब एक ही हो गया है। सघ के अनेक स्थान और जायदादों का एकीकरण कर दिया है।

समस्त भारत में यहाँ का सघ विख्यात हैं। समाज के प्रमुखतम मुनिराजों के पधारने, स्थिरवास करने और चातुर्मास करने के कारण यहाँ का सघ धार्मिक कार्यों में सदा ही जागृत रहा है। सघ की तरफ से निम्नांकित प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं —

जैन-पाठशाला—इसमें लगभग २५० लडके पढ़ते है। धार्मिक-शिक्षण के साथ साथ व्यावहारिक शिक्षण भी दिया जाता है। बच्चों के धार्मिक सस्कारों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

जैन कन्या पाठशाला—इसमें लगभग २०० लडकियाँ शिक्षा प्राप्त करती हैं। पहली से लेकर आठवीं कक्षा तक शिक्षा की समुचित व्यवस्था है। पाठशाला शनै शनै प्रगति पथ पर अग्रसर हो रही है।

आयम्बिल खाता—इसकी स्थापना प० मुनि श्री शेषमलजी म० सा० के चातुर्मास में हुई थी। सघ की तरफ से व्यवस्थित रूप से आयम्बिल खाता चल रहा है। प्रतिदिन आयम्बिल किया जाता है और तपस्या की सुगन्ध से जीवन सुगन्धित किया जाता है।

पुस्तकालय—सघ की तरफ से विशाल पुस्तकालय एव वाचनालय का सचालन किया जा रहा है। प्रतिदिन नियमित रूप से सैकडों पाठक इनसे ज्ञानार्जन करते है। नागरिकों के लिए यह पुस्तकालय तथा वाचनालय अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

पौपधशाला —सघ के कई स्थानक-भवन हैं। एक नव निर्मित पौषधशाला है, जिसके निर्माण मे ६०००८) रु० लगे हैं। जहाँ नित्य व्याख्यान और धर्मध्यान होता रहता है।

इसके अतिरिक्त समस्त सम्प्रदायों की पुरानी मिल्कियत अव सघ की सम्पत्ति है। श्रावक संघ का सगठन हो जाने से स्थानीय सघ एक विशाल दायरे में आ गया है।

इसके अतिरिक्त अजारक्षण सस्था से अमरिए बकरों का रक्षण होता है। एक अन्न क्षेत्र है, जो सार्वजनिक सस्था है किन्तु इसकी कार्यकारिणी के अधिकाश सज्जन स्थानकवासी जैन हैं।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, जावरा (मध्य-भारत)

मध्यभारत में यहाँ का श्रावक सघ अपना अग्रगण्य स्थान रखता है। स्थानकवासी समाज के यहाँ २११ घर हैं जिनकी जन सख्या १००७ है। भारत में सर्व प्रथम यहीं पर ही श्रावक सघ का निर्माण हुआ था। ऐतिहासिक नगर होने के साथ-साथ यहाँ का जैन समाज भी ऐतिहासिक महत्त्व रखता है।

यहाँ छोटे-मोटे ८ स्थानक हैं, जो सभी अच्छी स्थिति मे विद्यमान हैं। सघ की देख-रेख में निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ चल रही हैं —

श्री वर्द्ध० स्था० जैन आयम्बिल खाता

स्वर्गीय सूरजबाई पगारिया की पुण्य-स्मृति में यह खाता चल रहा है। इसके सचालन के लिए एक समिति बनाई गई है—श्री चम्पालालजी पगारिया अध्यक्ष, श्री गेंदालालजी नाहर-उपाध्यक्ष, श्री सुजानमलजी मेहता मन्त्री, श्री सौभाग्यमलजी कोचेटा सयुक्तमन्त्री, श्री राजमलजी पगारिया कोषाध्यक्ष।

श्री वर्द्ध० स्था० जैन कन्या पाठशाला

यह कन्या पाठशाला भी स्व० सूरजबाई पगारिया की पुण्य स्मृति में चलाई जा रही है। इस पाठशाला में छात्राए धार्मिक शिक्षण का लाभ लेती हैं। इस पाठशाला के निम्न पाँच ट्रस्टी सस्था को सँभाल रहे हैं —

श्री गेंदालालजी नाहर, श्री समीरमलजी डफरिया श्री सुजानमलजी मेहता, श्री सौभाग्यमलजी कोचेटा, श्री राजमलजी पगारिया।

श्री वर्धमान स्था० जैन नवयुवक मण्डल

स्थानीय जैन नवयुवकों का एक मण्डल भी व्यवस्थित रूप से बना हुआ है। सामाजिक तथा विभिन्न कार्यक्रमों में यह मण्डल अच्छा भाग लेता है। नवयुवक मण्डल के पदाधिकारी इस प्रकार है —

श्री सुजानमल जी मेहता अध्यक्ष, श्री अभयकुमारजी मास्टर उपाध्यक्ष, श्री समरथमलजी काठड मन्त्री, श्री मगतलालजी उपमन्त्री श्री छगनलालजी काठेड कोपाध्यक्ष।

इन विभिन्न गतिविधियों के अलावा छ काया (प्राणि-दया) व्यवस्था-कमेटी, और महावीर जैन नवयुवक विद्यालय है। यहाँ के सघ के पदाधिकारी इस प्रकार हैं —

श्री चम्पालालजी कोचेटा, अध्यक्ष, श्री सुजानमलजी मेहता, मन्त्री और श्री उम्मेदमलजी मेहता, कोषाध्यक्ष।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, इन्दौर

इन्दौर मे स्थानकवासी जैन समाज के अनुमानत ४०० घर होने पर भी आपस मे सगठन का सर्वथा अभाव

है यह अनुकरणीय है ।

जब सादड़ी में कॉन्फरन्स के श्रावक सघ बनाने की प्रेरणा की तब से ही यहाँ श्रावक संघ कायम हुआ है और उसके अध्यक्ष जैनरत्न श्री सुगनमलजी भण्डारी व प्रधानमन्त्री श्री राजमलजी लोरवा के अतिरिक्त २३ महानुभाव चुने गये हैं । समय-समय पर श्रावक सघ की मीटिंग होकर उसका कार्य सुचारु रूप से चल रहा है ।

यहाँ पर सघ के खास कर तीन स्थानक हैं जिनमे (१) मोरसली गली में, (२) पीपली बाजार में व (३) इमली बजार में (जिसका नाम महावीर भवन) है । इसी महावीर भवन का निर्माण सम्वत् २००१ में हुआ था और वह अभी विशाल भवन के रूप में तैयार हो चुका है व उसके आगे का कार्य चालू है ।

भवन निर्माण कार्यमें जैन रत्न श्री सुगनमलजी भण्डारी व सेठ मागीलालजी मूथा पूर्ण सहयोग दे रहे हैं।

सघ के तत्त्वावधान में निम्नलिखित सस्थाएँ यहाँ पर चालू हैं

आयंबिल खाता—जो श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन सेवा-सदन के नाम से गत आठ वर्ष से प० मु० श्री प्रतापमलजी महाराज की प्रेरणा से चालू हुआ । शुरू में ही उसके सरक्षक श्रीमती केसरबाई भटेवरा व श्री पन्नालालजी भटेवरा हैं । इस सस्था की कार्यकारिणी के अध्यक्ष श्री बक्तावरमलजी साड व केशियर श्री भवरलालजी धाकड हैं । इन्हीं की कोशिश से सस्था का कार्य सुचारु रूप से चालू है । सालाना १४-१५ हज़ार भाई व बहिन (आयम्बिल, एकासन आदि) इस सस्था से लाभ लेते है । समाज की ओर से धान्य व नगदी के रूप में भेंट प्राप्त होती है। इस वक्त सस्था के पास लगभग ८०००)रु० का फण्ड, बर्तन व धान्य आदि सिल्लक में हैं । काम सन्तोष-जनक है । सदन का कार्य श्री वक्तावरमलजी साड के भवन में चालू है ।

श्वेताम्बर जैन लायब्रेरी—३६ वर्ष पहिले स्व० श्री केसरीचन्दजी भण्डारी ने यह सस्था स्थापित की थी । तब से बराबर लायब्रेरी की प्रगति हो रही है । धार्मिक, व्यावहारिक सब प्रकार का साहित्य इसमे मौजूद है, दैनिक साप्ताहिक-पत्र आदि मगवाए जाते है । यह सस्था मित्र मण्डल की देख-रेख मे चलती है । इसके प्रेसिडेन्ट श्री भवरसिहजी भण्डारी हैं । यह सस्था मौरसली गली के स्थानक के नीचे के हिस्से में है । उसका कार्य सुचारु रूप से चालू है । मध्य भारत गवर्नमेन्ट से ४००) रु० सालाना ग्रान्ट भी मिलती है ।

श्री महावीर जैन सिद्धान्त शाला—स्व० श्री छोटेलालजी पोखरना के प्रयत्न से १५ साल से यह कायम हुई । इसमें धार्मिक व व्यावहारिक ज्ञान दिया जाता है । इस वक्त सस्था के अध्यक्ष श्री वक्तावरमलजी साड हैं । इस वक्त बालक-बालिकाएँ मिलकर ८० ८५ की सख्या में लाभ उठा रहे हैं ।

महिला कला-भवन—श्रीमती सौ० हीराबाई बोरुदिया व श्रीमती फूल कँवर बाई चौरडिया की प्रेरणा से गत वर्ष २६ जनवरी १९५५ से इसका कार्य प्रारम्भ हुआ । इससे समाज की बहिनों को सिलाई, कसीदा आदि कार्य सिखलाया जाता है । इसका कार्य बहुत ही सुचारु रूप से चालू है । इसमे प्रतिदिन २५-३० बहिनें लाभ उठाती है । समाज की ओर से इस सस्था को पूर्ण सहयोग है तथा मध्य भारत गवर्नमेन्ट की ओर से ग्रान्ट मजूर की गई है। फिलहाल इस सस्था का कार्य श्री वक्तावरमलजी साड के भवन में चालू है ।

उपरोक्त सभी सस्थाओं के हिसाब हर साल ऑडिट होकर तथा उन्हे छपवाकर समाज के सम्मुख श्री पर्यूषण-पर्व मे पढ़कर कन्फर्म करवाये जाते है ।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, उज्जैन

उज्जैन-अवंतिका का इतिहास सदा ही उज्ज्वल और महान् रहा है । यहाँ के स्थानकवासी जैन समाज ने सामाजिक सगठन के आधार पर समाजोत्थान के उद्देश्य से कई महान् प्रयास किए है । यहाँ श्रावक सघ का निर्माण

किया जा चुका है। स्थानीय संघ को श्री हजारीलालजी भटेवरा, श्री कंवनलालजी भटेवरा श्री बाबूलालजी चौरडिया, श्री नाथूलालजी श्री श्रीमाल और श्री छोटेमलजी सुथा का सहयोग प्रशंसनीय रहा है। तथाकथित महानुभावों के सहयोग से 'महावीर भवन का निर्माण कराया गया जिसमें ६० ०००) लग गया है इसके अतिरिक्त २०,०००) और भी लगने की सम्भावना है। इस भवन में ३००० स्रोता बैठकर प्रवचन का लाभ उठा सकते हैं। इसी भवन में आधुनिकतम ढंग के सुव्यवस्थित पुस्तकालय तथा वाचनालय की व्यवस्था की जा रही है।

वर्तमान समय में श्री संघ के अन्तर्गत स्थायी सम्पत्ति निम्न प्रकार है —

(१) स्थानक फ्रीगंज (२) स्थानक दौलतगंज (३) शान्तिरक्षक संघ भागसीपुरा (४) आयुर्वेद औषधालय भागसीपुरा (५) रतन पाठशाला नमक मंडी (६) महासतियाँजी का स्थानक नमक मंडी और पटनी बाजार स्थित दुकानें।

इस समय संघ के प्रमुख कार्यकर्ताओं के नाम इस प्रकार हैं —

श्री गोकुलचन्दजी श्री दीपचन्दजी जिन्दानी, श्री नाथूलालजी श्री बाबूलालजी चौरडिया, श्री हजारीलाल जी भटेवरा श्री गेंदालालजी।

गत वर्ष का अखिल भारतीय सर्वधर्म सम्मेलन जो यहाँ के संघ द्वारा आयोजित किया गया था उज्जयिनी के परम्परागत गौरव के अनुकूल ही था।

धर्म-स्थानक—यहाँ समाज के तीन स्थानक भवन हैं, जिनमें एक भवन कलात्मक सुन्दर कलशों से सुशोभित हैं। इसके अतिरिक्त दो मकान जीवदया के हैं।

श्रावक सघ—समाज को संगठित बनाये रखने के लिए कान्फ्रन्स की योजनानुसार सन् १६५४ में श्रावक सघ का निर्माण हो चुका है। समाज की उन्नति हेतु श्रावक सघ के अन्तर्गत कई प्रवृत्तियाँ चालू हैं, जो निम्न प्रकार हैं

जीवदया प्रवन्ध—यहाँ करीब ४०० वर्ष पूर्व बादशाही जमाने से एक ऐसा नियम चला आ रहा ह कि यहाँ की गली जो 'वनियावाडी' के नाम से है, जिसमें जैन स्थानक व समाज के घर हैं—इसमें कोई भी पशु यदि वध के लिए ले जाता हुआ पाया जाता है तो उस पशु पर समाज का अधिकार हो जाता है और वह पशु 'अमर' बना दिया जाता है। प्रतिवर्ष पर्यूषण में अगता पलाया जाता है।

महावीर मित्र-मण्डल—इस मण्डल की स्थापना सन् १६२७ में हुई थी। इसके अन्तर्गत एक वाचनालय चल रहा है। अजमेर मुनि सम्मेलन के समय इस मण्डल की ओर से एक स्वयसेवक दल अजमेर मुनि-सम्मेलन के समय पर सेवाकार्य के लिए गया था।

साप्ताहिक सामूहिक प्रार्थना—लगभग १५ वर्ष पूर्व पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज के सदुपदेश से यहाँ सामूहिक प्रार्थना प्रारम्भ की गई थी, जो कि प्रति रविवार को निर्बाधरूप से होती जा रही है।

श्री महावीर जैन पाठशाला—इस सस्था की स्थापना स्वर्गीय जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज के सदुपदेश से सन् १६४५ में हुई थी। प्रारम्भ में केवल १५ छात्र शिक्षा पाते थे किन्तु अब ६ कक्षाओं में १०० विद्यार्थी विद्याध्ययन करते हैं। व्यावहारिक शिक्षा के साथ पाथर्डी बोर्ड की धार्मिक शिक्षा भी होती है। प्रतिवर्ष अनेक समाजोपयोगी और शिक्षोपयोगी कार्यक्रम को लेकर सस्था वार्षिकोत्सव करती है। सस्था की ओर से भगवान महावीर स्वामी आदि महापुरुषों की जयन्तियाँ धूमधाम से मनाई जाती हैं। सस्था में सामायिक-प्रतिक्रमण, व्रत-प्रत्याख्यान आदि आवश्यक धार्मिक क्रियाओं पर विशेषतया ध्यान दिया जा रहा है। सस्था की आथिक व्यवस्था का सचालन तथा सरक्षण ट्रस्ट-मण्डल करता है। सस्था के सचालक इस प्रयत्न में है कि इसे मिडिल स्कूल बना दिया जाय और एक छात्रावास कायम किया जाय। श्री केशरीमलजी जैन M A L L B की अध्यक्षता तथा श्री बाबूलाल जी जैन के मन्त्रीत्व में सस्था प्रगति कर रही है। मध्यभारत की इस प्रगतिशील सस्था की हम और अधिक प्रगति चाहते हैं।

श्री न्यादरमल जी जैन रईस, बिनौली (मेरठ)

आप विनोली के निवासी लाला सौसिहरायजी के सुपुत्र थे और अपने चाचा तुलसीरायजी के यहाँ गोद चले गये। आप कपडे के व्यापारी और जमीदार थे। अपने परिश्रम द्वारा उपार्जित धन को अनेक प्रकार के धार्मिक कार्यो में लगाकर धन का सदुपयोग किया। बचपन से ही आपको धर्म के प्रति प्रगाढ प्रेम था। आपने सोनीपत, सराय लुहारा और अपने ग्राम में इस प्रकार तीन स्थानक बनवाये। सयम और सादगी से जीवन-यापन करना यह आपका गुण था। जीवनभर आप खादी धारण करते रहे। दूर-दूर तक साधु-मुनिराजो के दर्शन करने के लिये जाते रहते थे। सन् १६४० में दो दिन के सथारे के साथ पडित मरण मे आप स्वर्गवासी हुए।

श्री पलटूमलजी सा० को बचपन से ही धार्मिक कार्यो में अत्यन्त दिलचस्पी है। आप १९ वर्ष की अवस्था में ही कॉन्फरन्स की पजाब शाखा के सयुक्त मत्री नियुक्त कर दिए गये। अ० भा० श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस की कार्य-कारिणी के आप सदस्य रह चुके हैं। यू० पी० स्थानक जैन कॉन्फ्रेन्स के आरम्भ से आप ज० सेक्रेट्री हैं। आप अनेक सामाजिक, शैक्षणिक तथा स्थानीय सस्थाओं के विभिन्न पदाधिकारी हैं। आपकी धर्मपत्नी भी समाज की एक आदर्श-महिला हैं। आपके एक बडा कुटुम्ब है जो अत्यन्त ही सुरक्षित एव सुसस्कृत है।

इस समय आपकी उम्र ४७ वर्ष की है। अत्यन्त सुशिक्षित होते हुए भी आप धर्मपरायण हैं। आपको रात्रि-भोजन का त्याग है। उर्दू, हिन्दी, अग्रेजी, फारसी, प्राकृत आदि अनेक भाषाओ का आपको यथेष्ट ज्ञान है और जैन तथा अजैन ग्रन्थो का आपने काफी अध्ययन किया है। आप निर्भीक विचारधारा के कुशल वक्ता हैं। आपके सुपुत्र श्री आदीश्वरप्रसादजी जैन एम० ए० एल-एल० बी० कानपुर में वेलफेयर लेबर ऑफिसर हैं। दूसरे पुत्र श्री अजितप्रसाद जी जैन B sc लखनऊ में एम० बी० बी० एस० कर रहे हैं। श्री जगप्रसादजी जैन बी० कॉम एक होनहार और तेजस्वी युवक है।

श्री रतनलालजी नाहर, बरेली

स्वभाव और वाणी में सरल तथा मधुर, श्रीमत किन्तु गृहस्थ सत, पुरातन किन्तु नवीन, सतत् शिक्षा और सुधार की आग दिल में जलाये हुए, अप्रकट किन्तु ठोस कार्य करते हुए, सामाजिक और राष्ट्रीय शालाओ, गुरुकुलो और विद्यालयो में प्राण फूकते हुए श्रीमान् रतनलाल जी सा० नाहर को हम जब कभी देख सकेंगे।

समाज की ऐसी कौनसी सस्था है जिसकी रिपोर्ट में आज तक आपका नाम न पहुँचा हो। समाज का ऐसा कौनसा समझदार व्यक्ति है जो आपसे परिचित न हो ? जिसको आपका परिचय हुआ—बस वही आपसे प्रभावित हुआ।

पर्यूषण पर्व पर बेले-चौले की कठिन तपस्याएँ करते आप देखे गये हैं। शिक्षण-सस्थाओ मे तन-मन धन से सक्रिय सहायता करते पाए गये हैं। आपकी सरलता, विद्यानुरागिता एव जीवन की पवित्रता और आदर्श अनुकरणीय है।

कानपुर के प्रमुख कार्यकर्ता

श्रीमान् ला० फूलचन्दजी जैन

कानपुर में श्री स्था० जैन समाज के कार्यो की ओर ध्यान आकर्षित करने का श्रेय आपही को है। आपने गत २० वर्ष पहले स्व० जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज का यहाँ आग्रहपूर्ण विनति द्वारा चातुर्मास कराया था। उस चातुर्मास में बाहर से आये हुए दर्शनार्थियो को आज भी यहाँ की सेवा व सत्कार की याद बनी हुई है। आग्रेस कार्य में आपने तन-मन-धन से सेवा की। आपके कार्यो से प्रसन्न होकर विश्ववद्य महात्मा गाधी ने 'यगइडिया' में आप की सराहना की है। इसी सिलसिले में सन् १९३० में एक वर्ष का सपरिश्रम कारावास भी काटा। आपकी ही प्रेरणा से आपके सुपुत्र स्व० मनोहरलालजी जैन ने अपनी माता की स्मृति में "श्री माता रुक्मणी भवन" निर्माण के लिए लगभग ५०,०००) रु० की जमीन समाज को ट्रस्ट बनाकर दी। आप स्था० समाज की आज भी तन-मन-धन से सेवा करते रहते हैं। श्री जैन दिवाकर स्मारक समिति के आप उप-प्रधान हैं।

परामर्श और मार्गदर्शन से लाभान्वित हो रहा है। स्थानीय सघ के आप उपसभापति तथा ट्रस्ट के ट्रस्टी है।

श्रीमान् ला० किशनलालजी जैन

आप कानपुर में गत चालीस वर्ष पहले आये थे। आपके पिताजी का नाम ला० रिखीरामजी था। आपने अपने परिश्रम एव व्यवसाय-कुशलता से धन अर्जित किया तथा धार्मिक कार्यो में भी अत्यधिक रुचि ली। यहाँ पर साधु-सतो का चातुर्मास आदि कराने में आपका विशेष महत्त्वपूर्ण हाथ रहता है। आप पर ही यहाँ के समाज की सर्व-प्रधान जिम्मेवरी है। आपके दो सुपुत्र हैं—श्री पदमकुमारजी और श्री पवनकुमारजी दोनो ही सामाजिक कार्यो में उत्साहित होकर भाग लेते हैं।

श्रीमान् ला० छगामल्जी जैन

आप स्थानीय सघ के सभापति हे। आपके पिता का नाम श्री दौलतराम जी था। आपने अपने परिश्रम से स्थानीय लोहे के बाजार में यश और धन दोनो कमाया। आपने स्थानीय सघ को अपनी स्व० धर्मपत्नी कटोरादेवी की पुण्य स्मृति में एक विशाल भवन स्थानक के हेतु प्रदान किया जिसकी कीमत ५०,०००) रु० है। आपके दो सुपुत्र हैं—श्री त्रिलोकीनाथजी और श्री अमरनाथजी। दोनो ही सामाजिक कार्यो मे दिलचस्पी दिखाते है। समाज को आपसे बडी-बडी आशाएँ है।

श्रीमान् राधाकिशनजी ठेकेदार

आप स्थानीय स्था० समाज में पजाबी भाइयो में सर्वप्रधान है। आपका सहयोग सदैव ही समाज को मिलता रहा है। आपका परिवार भरापूरा है। आपके ही अथक परिश्रम और सहयोग से रुक्मणी भवन का निर्माण हुआ। आप मूल निवासी जिंद (पजाब) के हैं। स्थानीय सघ की कार्यकारिणी समिति के आप सम्मानित सदस्य है।

श्रीमान् मदनसिहजी छाजेड

आप स्था० जैन समाज में मारवाडी भाइयो मे सर्वप्रधान है। आप गत बीस वर्षो से सघ के कार्यो में विभिन्न पदो पर रहकर सहयोग देते रहे है। आप स्थानीय समाज के सक्रिय तथा महत्त्वपूर्ण सदस्य है।

श्रीमान् नरोत्तम भाई

आप यहाँ के समाज में गुजराती युवक कार्यकर्ताओ में सर्व प्रधान है। सुदीर्घकाल से समाज की सेवा करते आ रहे है। आपके सहयोगसे इस समय सघ का कार्य अत्यन्त सुचारु रूप से चल रहा हैं। आप इस समय स्थानीय सघ के सम्मानित कोपाध्यक्ष हे।

श्री वर्द्ध० स्था० जैन श्रावक सघ, राजगढ (धार)

यहाँ श्रावक सघ की स्थापना हो चुकी है। कुछ वर्षों से एक धार्मिक पाठशाला चल रही थी किन्तु वर्तमान में वन्द हो गई है। यहाँ सम्वत् २००५ में श्री लौंकाशाह जैन पुस्तकालय की स्थापना हुई थी और अभी तक सुचारुरूपेण कार्यक्रम चल रहा ह। यह पुस्तकालय दिन-प्रतिदिन उन्नति करता जा रहा है। अभी इसमें ५५० पुस्तकें हैं। अ० भा० स्था० जैन कान्फ्रेन्स के अध्यक्ष श्री चपालालजी वाठिया ने स्व० श्री मज्जैवाचार्य के व्याख्यानो का एक पूरा सेट जिसमें २७ किरणावलियाँ हैं, नि शुल्क भेजी हैं। और श्री पार्श्वकुमारजी चतर काटपाडी वालों ने अपनी भगवती दीक्षा के उपलक्ष्य में पुस्तकालय के लिए एक लोहे की अलमारी तथा २०० पुस्तकें भेंट

कीं। अन्य महानुभावों से भी पुस्तकें भेंट स्वरूप आई। वर्तमान समय में पुस्तकालय की समुचित व्यवस्था वर्द्ध० स्था० श्रावक संघ के मन्त्री श्री बाबूलालजी बाघरेचा करते हैं। निम्नलिखित पदाधिकारी समाज में परमोत्साह से कार्य करते हैं.

श्री नानालालजी बाफना, अध्यक्ष और श्री बाबूलालजी बाघरेचा मन्त्री हैं।

श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, भीलवाडा (राजस्थान)

यह मेवाड राज्य का प्रमुख औद्योगिक तथा व्यापारिक नगर है। यहाँ का संघ भी विशाल है। यहाँ स्थानकवासी समाज के ३०० घर हैं और धर्मध्यान के लिये संघ के पास ५ धर्मस्थानक हैं।

स्थानीय संघ के द्वारा संचालित प्रवृत्तियाँ इस प्रकार है —
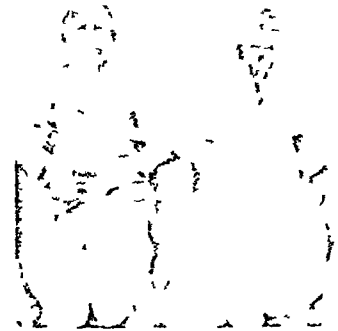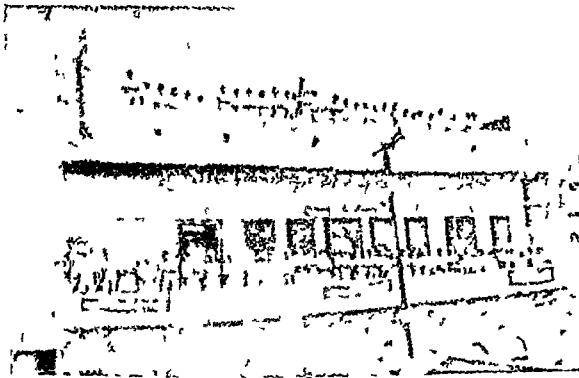
श्री श्वे० स्था० जैन मिडिल स्कूल

इसमें १२५ छात्र और ४ अध्यापक अध्ययन और अध्यापन का कार्य करते हैं। धार्मिक अध्ययन पाथर्डी बोर्ड के पाठ्यक्रम के अनुसार होता है। स्कूल का वार्षिक खर्च ४०००) रु० है जिसे संघ ही वहन करता है। स्कूल के लिये संघ की तरफ से विशाल भवन बनाया हुआ हैं।

पुस्तकालय तथा वाचनालय

संघ की तरफ से एक विशाल पुस्तकालय और वाचनालय संचालित हो रहे हैं। सर्वसाधारण जनता इनसे अच्छा लाभ उठाती है।

यहाँ व्यवस्थित रूप से संघ के पदाधिकारियों का चुनाव हो चुका है।

श्री अर्जुनलालजी डोगी-अध्यक्ष और श्री कन्हैयालालजी मूलावत मन्त्री हैं।

सहयोग देकर सघ भक्ति का सुन्दर परिचय दिया है। भवन-निर्माण का कार्य अभी भी जारी है।

यहाँ एक जैन पाठशाला भी चल रही है। तीस बालक-बालिकाएं इसमें शिक्षा लेती हैं। धार्मिक परीक्षा बोर्ड, पाथर्डी के पाठ्यक्रम का धार्मिक शिक्षण देने की व्यवस्था है। स्थानीय श्रावक संघ ही पाठशाला का व्यय वहन करता है।

यहाँ व्यवस्थितरूप से वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ का निर्माण हो चुका है। यहाँ के प्रमुख कार्यकर्ता निम्न प्रकार हैं —

श्रीमान् सेठ जोधराजजी, श्री फूलचन्दजी, श्री दीपचन्दजी, श्री केशरजी, रतनलालजी, श्री मांगीलालजी।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, झाबुआ (मालवा)

यहाँ एक पुस्तकालय है जिसका नाम है "श्री वर्धमान स्था० जैन पुस्तकालय" दो। स्थानक भी बने हुए हैं। श्रीमती सुन्दर बाई ने १,१००) रु० में एक मकान खरीद कर श्राविकाओं के धर्मध्यान-हेतु दिया है।

यहाँ के निम्नलिखित कार्यकर्ता हैं जो सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में प्रमुखता से भाग लेते हैं —

श्री सूरजमलजी, घासीरामजी कटकानी, श्री वेणीचन्दजी, नन्दाजी रूनवाल, श्री राजमलजी, सौभागमल जी मेहता, श्री रतनलालजी नेमचन्दजी रूनवाल, श्रीमती सुन्दरबाई, नेमचन्दजी, श्री माणकचन्दजी जबरचन्दजी रूनवाल।

श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, कुशलगढ (मालवा)

यहाँ एक पुराना पौषधशाला भवन और श्राविकाओं के धार्मिक कार्यों के लिये एक भवन है, जो चम्पालाल जी गादिया के द्वारा खरीद कर दिया गया है। पुराने पौषधशाला भवन को साताकारी बनाने के लिये २,०००) रु० का चन्दा एकत्रित कर लिया गया है।

यहाँ व्यवस्थित रूप से श्रावक स घ का निर्माण हो चुका है। श्रावक स घ के पदाधिकारी इस प्रकार हैं — श्री चम्पालालजी, देवचन्दजी गादिया अध्यक्ष, श्री नानालालजी, हीराचन्दजी खाबिया, उपाध्यक्ष, श्री प्यारेलाल जी खेंगारजी वोरा, मन्त्री, श्री भैरू लालजी लुणाजी तलेसरा-उपमंत्री, श्री भैरू लालजी कवरजी कोषाध्यक्ष।

इनके अलावा श्री नवलजी उमेदमलजी, श्री चादमलजी जडावचन्दजी, श्री केशरीमलजी थावरचन्दजी आदि सज्जन भी उत्साही तथा धर्म प्रेमी हैं।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, आलोट

यहाँ सम्वत् १६७२ में स्थानकवासी समाज के केवल तीन ही घर थे, किन्तु अब काफी घर बढ़ गये हैं। स घ की तरफ से एक मकान खरीदा गया और उसे ६०००) रु० लगाकर सुधारा गया। इसमें श्री वर्धमान जैन पाठशाला आज नौ वर्ष से चल रही है। स घ के सामाजिक व धार्मिक कार्यों में श्री केशरीमलजी पगारिया का तन मन-धन से सब तरह का सहयोग रहा है। यहाँ पर व्यवस्थित रूप से स घ बन चुका है। श्री रतनलालजी पगारिया अध्यक्ष और श्री बसन्तीलालजी भण्डारी मन्त्री हैं।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, बिलाडा (मारवाड)

राजस्थान प्रान्त के अन्तर्गत जोधपुर डिविज़न में बिलाडा प्राचीन नगर है। चालीस-पचास साल पूर्व

यहाँ जैनों के लगभग ५०० घर थे किन्तु शनै -शनै यह सख्या घटती गई और आज केवल ११० घरो की सख्या रह गई है जिनमें स्थानकवासी जैनों के ६० घर है।

सवत् १९९७ में मरुधर केशरी मन्त्री मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज सा० का चातुर्मास होने के बाद से यहाँ का स्थानकवासी सघ एक सूत्र में सगठित हुआ। तब से सघ दिन प्रतिदिन उन्नति करता आ रहा है और आपसी प्रेम, सगठन व धर्मप्रवृत्ति बढ रही है। यहाँ पर पहिले के दो स्थानक हैं किन्तु वे अपर्याप्त होने से अभी-अभी एक भव्य स्थानक का निर्माण किया जा रहा हैं। बिलाडानगर में यह भवन अपनी सान का एक ही होगा और इसमें ३५,०००) रु० खर्च होंगे। दो तीन माह मे बन कर सम्पूर्ण हो जायगा।

मरुधर केशरी की प्रेरणा से यहाँ सवत् १९९७ मे एक नवयुवक मण्डल "वीर दल मण्डल" की स्थापना हुई थी, जिसने सभी क्षेत्रो में आशातीत उन्नति की है। सघ की तरफ से एक पुस्तकालय भी नियमित रूप से चल रहा है।

सघ का चुनाव बालिग मताधिकार के आधार पर हर तीसरे साल होता है। वर्तमान श्रावक सघ के पदाधिकारी श्री पुखराजजी ललवानी, अध्यक्ष, श्री मोहनलाल जी भडारी, उपाध्यक्ष श्री मोहनलालजी कटारिया, मन्त्री श्री चम्पालालजी जागडा, उपमन्त्री और श्री गेहरालालजी पगारिया कोपाध्यक्ष और अन्य ५ सदस्य हैं।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, जालिया (अजमेर)

स्थानीय सघ के तत्वाधान मे गत पाँच वर्षों से स्वाध्याय सघ चल रहा है, जो प्रान्त-मन्त्री पण्डित मुनि श्री पन्नालालजी म० सा० के सदुपदेश से स्थापित हुआ था। सघ की तरफ से पुस्तकालय भी चलाया जा रहा है। स्थानीय सघ के मुख्य कार्यकर्ता श्री गजराजजी कोठारी हैं जो सघ के मन्त्री है। धार्मिक कार्यों मे निम्नाकित सज्जन बडी दिलचस्पी से भाग लेते हैं —श्री मोतीलाल जी श्री श्रीमाल, श्री शिवदानसिहजी कोठारी, श्री गुलाबचन्दजी लोढा।

यहाँ स्थानकवासियो व ३० घर हैं और धार्मिक कार्यों के लिये तीन स्थानक है। धर्मप्रेम व सामाजिक सगठन खूब अच्छा बना हुआ है।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, कानपुर

गत पचास वर्षों से श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी सघ की एक सर्वस्वीकृत सस्था यहाँ चल रही है। यह रजिस्टर्ड हैं। इन वर्षों मे जो भी कार्य स्था० जैन समाज के हुए हैं-- उनको पूर्ण करने का श्रेय इसी सस्था को है। सघ के पास एक विशाल स्थानक भवन है, जो किराये पर उठा हुआ है।

इसके अतिरिक्त सघ के पास एक और विशाल भवन जिसका नाम "श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी माता रुकमणी भवन" इस भवन का ट्रस्ट बनाया हुआ है।

सघ की तरफ से श्री वर्धमान पुस्तकालय' भी चलाया जा रहा है। इस पुस्तकालय के माध्यम से समाज के नवयुवकों मे धार्मिक जागृति का यथेष्ट प्रचार किया जा रहा है।

सघ की कार्यकारिणी समिति की रचना इस प्रकार की गई है —

श्रीमान् छगामलजी जैन, अध्यक्ष, श्री० किशनलालजी जैन तथा श्री० जगजीवन शिवलाल भाई, उपसभापति हैं। श्री० पवन कुमार जी जैन प्रधान मन्त्री है। बच्चू भाई और श्री० रोशनलालजी जैन, मन्त्री हैं तथा श्री नरोतम भाई कोपाध्यक्ष हैं।

श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, बडी सादडी

यहाँ निम्नाकित प्रमुख कार्यकर्ता हैं, जिनका सामाजिक और धार्मिक कार्यों में प्रमुख भाग रहता है :—

श्री बस्तीमलजी मेहता, श्री सेंसमलजी मेहता, श्री बोतलालजी पित्तलिया, श्री भूरालालजी मारू, श्री विरदीचन्दजी गाग, श्री उदेलालजी मेहता, श्री माधवलालजी नागौरी, श्री कजोडीमलजी नागोरी, श्री फूलचन्दजी जालोरी।

उपरोक्त सभी व्यक्ति अटूट श्रद्धा के साथ समाज की सेवा करते हैं।

कन्या पाठशाला

यहाँ एक कन्या पाठशाला भी चल रही हैं। इसमें दो अध्यापिकायें है। लगभग १०० कन्याएं शिक्षा प्राप्त करती हैं। आपसी चन्दे से खर्च की पूर्ति की जाती है। मासिक खर्च १००) रु० है।

श्री वर्द्ध० श्वे० स्था० जैन श्रावक सघ, देशनोक

यहाँ एक मात्र स्थानकवासी सस्था है जिसका नाम 'श्री जैन जवाहर-मडल देशनोक' है। यहाँ श्रावक सघ की स्थापना हो चुकी है। निम्न मुख्य-मुख्य कार्यकर्ता हैं —

श्री० नेमचन्दजी गुलगुलिया, सभापति, श्री० अबीरचन्दजी भूरा, उपसभापति, श्री० लूनकरजी हीरावत, मन्त्री, श्री० हुलासमलजी सुराना, उपमन्त्री और श्री रामलालजी भूरा कोषाध्यक्ष हैं।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, बारा (कोटा)

यहाँ स्थानकवासी भाइयों के २०-२५ घर हैं। एक धर्मस्थानक भी है जिस पर 'श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ' का बोर्ड लगा हुआ है। वैधानिक चुनाव होता है। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष एव मन्त्रीगण अपना अपना कार्य सुव्यवस्थित रीति से करते हैं।

यहाँ साधु-साध्वी जी का पधारना बहुत कम होता है। कॉन्फरन्स प्रचारक भी कभी नहीं आते हैं। फिर भी स्था० जैन पत्र मगाकर समाज की प्रगति से अवगत होते रहते हैं। यहाँ का सघ अन्यत्र आर्थिक सहायता भी देता रहता है। एक वाचनालय तथा धार्मिक शिक्षण का भी प्रबन्ध हैं।

यहाँ सौराष्ट्र से आए हुए ५-७ कुटुम्ब स्थायी रूप से बस गए हैं। सघ के प्रत्येक कार्य में इनका अच्छा सहयोग प्राप्त है।

प्र० वक्ता, जैनदिवाकर श्री० चौथमलजी म०, व० प० मुनि श्री केवलचन्दजी म० सा० यहाँ शेष काल में पधारे थे। उनके सार्वजनिक व्याख्यानों से जैन-अजैन जनता ने अच्छा लाभ उठाया।

श्री ताराचन्द भाई, श्री मणिलाल भाई आदि-आदि यहाँ के सघ के प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

श्री श्वे० स्था० जैन सभा, पंजाब

एस० एस० जैन सभा, पजाब का जन्म १९११ में गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज की प्रेरणा से हुआ था, कुछ साधुओं के सम्बन्ध में वे लोकमत (Public opinion) की योजना करना चाहते थे। सभा के एकत्रित होते-होते मूल कारण मिट गया तो निमन्त्रण देने वालों ने अपने प्रयास को विफल जाने देने से रोकना और अवसर को प्रयोग में लाना बुद्धिमत्ता समझी। स्व० बाबू परमानन्दजी वकील, कसूर, स्व० रायसाहिब टेकचन्दजी और उनके विद्यमान

नहीं किया। स्व० आचार्य श्री सोहनलालजी म० का सहयोग सभा को सदैव प्राप्त रहा। जब सभा ने उनका ध्यान दीक्षादि महोत्सवों के असीम खर्च और अपव्यय की ओर आकर्षित किया तो उन्होंने सम्मति प्रगट की तथा जीवन पर्यन्त वे इसको कार्यान्वित करते रहे। सभा के विचारों को आचार्य श्री आदर से देखते रहे और आवश्यकता के समय उनसे सलाह-परामर्श भी लेते रहे।

जब समस्या उपस्थित हुई तो १९४१ में सभा ने पूर्व परम्परा के अनुसार समाज के विशेष हित के लिए और दोष को दूर हटाने के लिए साधुवर्ग के प्रश्न में हस्तक्षेप करने में सकोच नहीं किया। सभा के आन्दोलन करने पर कई साधुओं के सम्बन्ध में साधु श्रावक-सयुक्त जॉच कमेटी बनी। जैन-इतिहास में सम्भवतः यह प्रथम सफल प्रयास था।

बँटवारे के बाद पजाब की राजधानी चण्डीगढ बनी है। एक विशाल सुन्दर नगर बसाया जा रहा है। स्वभावत राजकाज के सर्व विभागों का केन्द्र वहीं होगा। यूनिवर्सिटी भी वहीं होगी। हाईकोर्ट भी वहीं होगा। इस प्रकार राजकीय और सास्कृतिक तथा सामाजिक जीवन वहाँ केन्द्रित हो जाएगा। अनेक प्रकार की शिक्षा के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के कॉलेज आदि का विकास सरकार वहीं करेगी। इसलिए विद्यार्थियों को वहाँ जाने और रहने की विशेष जरूरत होगी। बल्कि यूँ कहना चाहिए कि पंजाबवासियो का सम्बन्ध और वास्ता चण्डीगढ, उसके कार्यालयों, न्यायालयों और शिक्षालयों से अवश्य होगा।

इसलिए पजाब की राजधानी चण्डीगढ में जैनों की ओर से वहाँ के सास्कृतिक और सामाजिक जीवन मे पर्याप्त भाग लेने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वहाँ पर जैन विद्यार्थियों के लिए उनकी विशेष जरूरत के अनुसार सुविधाओं से परिपूर्ण होस्टल बनाया जाए। जहाँ कम-से-कम १०० विद्यार्थी रह सकें। वहाँ पर जैनाभ्यास के लिए लायब्रेरी और रीडिंग रूम भी हो। व्याख्यान हॉल भी हो। उपाश्रय (स्थानक) भी हो जिससे साधु-साध्वी अपने भ्रमण में वहाँ भी उपदेशामृत का प्रसार कर सकें। समय आने पर स्कूल, कॉलेज आदि संस्थाएँ भी हों और इन सब के लिए जमीन अभी से ले लेनी चाहिए।

हर्ष की बात है कि पजाब सभा ने वह जमीन ले ली है। जमीन उस खंड में है जहाँ विद्या सम्बन्धी उस नगर की प्रवृत्तियाँ होंगी। प्राय २४००० वर्ग जमीन सभा को सस्ते दामों पर मिली है। पजाब सभा के प्रमुख लाला हरजसरायजी जैन, अमृतसर, ज० से० लाला छज्जूरामजी जैन, पटियाला तथा खजाँची श्री प्यारेलालजी जैन, पटियाला हैं।

श्री एस० एस० जैन सभा अमृतसर

श्री सोहनलाल जैन कन्या पाठशाला

यह अमृतसर की जैन बिरादरी द्वारा स चालित है। इसमे प्रारम्भ से लेकर कुल ६ श्रेणियाँ है। १५,००) रु० खर्च कर दो मकानों को मिलाकर एक नया भवन बना दिया गया है। इस शाला को और अधिक विकसित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

श्री अमरसिंह जीवदया-भण्डार

यह सस्था लगभग ४० वर्ष से कार्य कर रही है। इस सस्था के द्वारा रोगी पक्षियो की चिकित्सा और रक्षा की जाती है। पक्षियो के लिए यह सस्था बडा ही सुन्दर कार्य कर रही है।

स्थानक

यहाँ पर दो पुराने स्थानक है। एक का नाम है धन्न पूजा का स्थानक और दूसरे का नाम है "मानेशाह का स्थानक।" प्रथम में स्व० आचार्य शिरोमणि श्री सोहनलालजी महाराज ने बहुत काल व्यतीत किया और दूसरे में कन्या पाठशाला है।

जैन परमार्थ फण्ड सोसायटी

इस सोसायटी की तरफ से जलयावाला बाग के पास ही में १,००,०००) रु० की लागत का विशाल और ऊँचा भवन बनवाया गया है। साधु-साध्वी प्राय अब इसी भवन में ही ठहरते है। एक ओर जलयावाला बाग होने से भवन बहुत ही हवादार और सुखकर है। यह भवन अब स्थानक के रूप में काम में लाया जाता है। सचालकगण अब इसमें पुस्तकालय खोलना चाहते हैं। अमृतसर में पुस्तकों का पुराना भण्डार है।

श्री मोहनलाल जैन धर्म प्रचारक समिति

इस समिति का प्रमुख कार्यालय यहीं है। इस समिति की प्रवृत्तियाँ और उनकी योजना का स्थान बनारस हिन्दू-यूनिवर्सिटी है। स्व० शतावधानी प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज की कल्पना साहित्य-प्रेम से इसका उदय हुआ। स्व० पूज्य श्री काशीरामजी महाराज शतावधानीजी के सहायक थे। इस समिति के उद्देश्य इस प्रकार है —

(१) शास्त्र, आचार और दर्शन के सम्बन्ध में जैन विचारो का प्रसार करना।

(२) जैन शास्त्रो और साहित्य के प्रामाणिक सस्करण प्रकाशन करना और उसे देशी तथा विदेशी भाषाओ में सब के ज्ञानार्थ प्रसारित करना।

(३) जैन मत के दर्शन, इतिहास और सस्कृति में और उसके सम्बन्धित विषयो मे सशोधन कार्य की व्यवस्था करना और उसे प्रकाशित करना।

(४) उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये शास्त्रार्थ, सस्थाएँ और छात्र वृत्तियाँ आदि स्थापित करना, और उनको कायम रखना।

(५) उपरोक्त कामों के लिये होस्टल, लायब्रेरी, कॉलेज, सस्थाएँ और व्याख्यान स्थान आदि के लिये और समिति के अन्य उद्देश्यो के विकास तथा उन्नति के लिये भूमि या अन्य सम्पत्ति उपार्जन करना।

लिये और जैन साहित्य निर्माण के लिये अपूर्व है। (३) 'श्रमण' मासिक-पत्रिका (४) जैन साहित्य निर्माण-योजना (५) व्याख्यान-माला (६) स्कॉलरशिप एण्ड फैलो शिप्स।

श्री सोहनलालजी दूगड कलकत्ता वालों के २५,०००) रु० के दान से ३,७८ एकड जमीन लेने की व्यवस्था की गई है। इससे पूर्व लाला रतनचन्दजी अमृतसर निवासी और उनके भाइयों आदि की सहायता से जैनाश्रम और उसकी जमीन सन् १९४५ में बनारस में उपार्जन की थी।

प्रज्ञाचक्षु प० सुखलालजी और श्री दलसुख भाई मालवणिया जो हिन्दू-युनिवर्सिटी में जैन धर्माध्यापक हैं, इसके मार्गदर्शक हैं। इस समिति का कार्यवाहक-मण्डल इस प्रकार है—

श्री लाला त्रिभुवननाथ, अध्यक्ष, श्री हरजसरायजी जैन मन्त्री, लाला मुन्नीलालजी खजाची। इसके सहायकर्त्ता पंजाब भर में फैले हुए है। श्री कृष्णचन्द्रजी जैन दर्शनाचार्य 'श्रमण' पत्रिका के सम्पादक हैं।

श्री एस० एस० जैन सभा, नाभा (पेप्सु)

पंजाब के स्थानकवासी मुनिराजों के लिये यह पुराना क्षेत्र है। स्थानकवासियों के यहाँ पहले काफी घर थे किन्तु समय की परिवर्तनशील परिस्थितियों को लेकर अब केवल १५-२० घर ही है। जिसमें ओसवाल और अग्रवाल दोनों शामिल है। लगभग २२ वर्ष से रुग्णावस्था के कारण प० मुनि श्री रामस्वरूपजी महाराज यहाँ विराजमान हैं। आपके सदुपदेश से प्रभावित होकर स्थानीय जैन समाज "रामस्वरूप जैन पब्लिक हाई स्कूल" दस वर्ष से चला रही है।

इतनी छोटी समाज होते हुए भी जैन सभा के पास समाज के कार्यों के लिए चार भवन हैं, एक स्थानक है। इन भवनों में समाज की तरफ से विभिन्न गति-विधियाँ गतिमान हो रही है।

यहाँ की जैन सोसायटी रजिस्टर्ड है। सोसायटी के श्री दीवान मोहनलालजी प्रधान, श्री ज्ञानचन्दजी ओसवाल, उपप्रधान, श्री विद्याप्रकाशजी ओसवाल मन्त्री है।

स्थानीय जैन हाई स्कूल के लिये नवीन भवन का निर्माण-कार्य चालू है।

श्री श्वे० स्था० जैन सभा, फरीदकोट (रजिस्टर्ड)

फरीदकोट मेनलाइन (फिरोजपुर-भटिंडा-देहली) पर एक सुन्दर और रमणिक नगर है। सन् १९४८ से पहले यह फरीदकोट रियासत की राजधानी थी। यह स्थानकवासियों का प्रसिद्ध क्षेत्र हैं। यहाँ स्थानकवासियों के लगभग १२५ घर है जो ३० वर्ष से भी अधिक समय से जैन सभा के रूप में ठीक ढग से सगठित है। यहाँ की जैन सभा यहाँ के समाज को धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में ऊँचा उठा रही है। लगभग ३० वर्ष से यहाँ जैन कन्या पाठशाला चल रही है जो अब (Girls High School) बन चुका है और पेप्सु सरकार से मान्य है। यहाँ दस साल तक जैन कन्या महा विद्यालय भी चलता रहा, जिसमे रत्न, भूषण और प्रभाकर की परीक्षाएँ पास कराई जाती थीं, किन्तु छात्राओं के अभाव के कारण यह विद्यालय बन्द करना पडा और इसका भवन युनिवर्सिटी की परीक्षाओं का कन्याओं के लिए केन्द्र है।

जैन सभा का मन्त्री मण्डल इस प्रकार है —

श्री किशोरीलालजी जैन बी० ए० एल-एल० बी०, प्रधान, श्री कस्तूरीलालजी, उपप्रधान, श्री अमरनाथजी तातेड, विद्यामन्त्री, श्री दीवानचन्दजी बोथरा, अर्थमन्त्री, श्री बृजलालजी बोथरा, महामन्त्री, श्री बाबूरामजी पर्शौरिया, स्थानक मन्त्री, श्री रामलालजी पर्शौरिया, रीतिरिवाज मन्त्री।
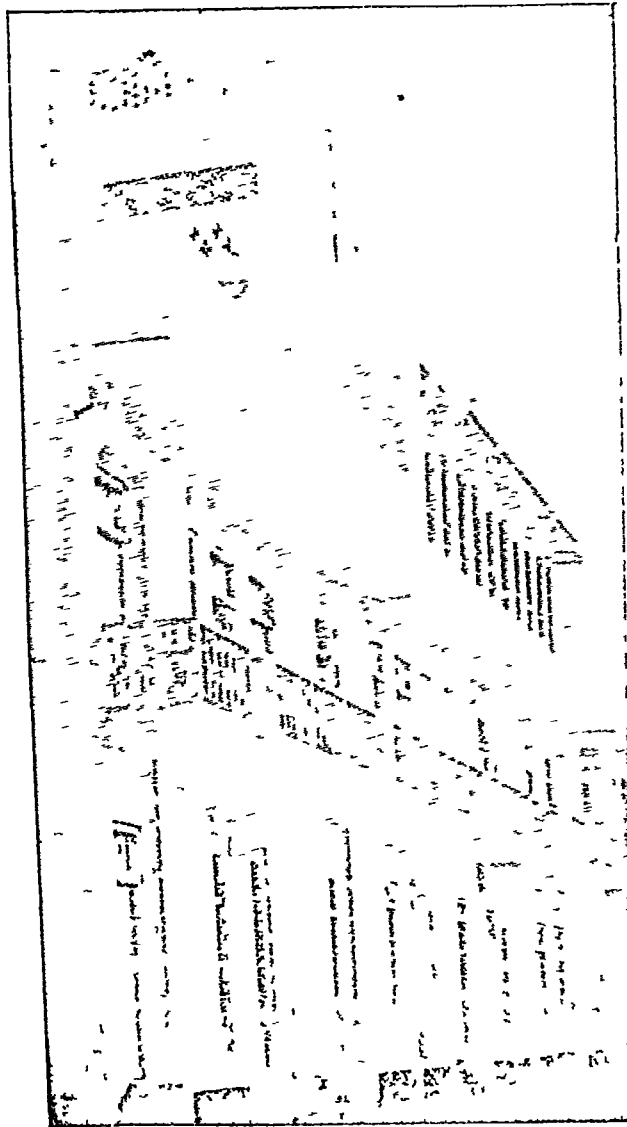
एस० एस० जैन सभा फरीदकोट

श्री किशोरीलालजी जैन सभा के प्रधान और यहाँ के प्रसिद्ध कार्यकर्ता हैं। श्री मुंशीरामजी जैन बी० ए० बी० टी०, जो गवर्नमेंट हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक हैं, प्रोफेसर हसराजजी जैन, एम०ए०, श्री रिखबदासजी जैन बी० ए० बी० टी०, श्री विद्यारतन बी०ए० एस०ए०वी०, श्री दीवान चन्दजी जैन, बी० ए० बी० टी० सभा की विभूति हैं। श्री रोशनलालजी बी० ए० बी० टी० विशेष शिक्षा के लिए लन्दन हो आये हैं। श्रीमती कमला जैन बी० ए० बी० टी० महिला जाति की गौरव हैं। श्री किशोरीलालजी रक व श्री ज्ञानचन्द्रजी सर्राफ सभा के स्तम्भ हैं।

यहां महावीर जयन्ती उत्सव निरन्तर ३० वर्षों से धूमधाम से मनाया जाता है, जो कि फरीदकोट के प्रसिद्ध मेलों में गिना जाता है। महावीर जयन्ती और सवत्सरी की हमेशा सार्वजनिक छुट्टी होती आई है। सवत्सरी के दिन सरकारी आज्ञा से कसाई खाने, मीट मार्किट और बूचडखाने बन्द रहते हैं।

जैन सभा की सम्पत्ति इस प्रकार है —

(१) विशाल स्थानक (बरकतराम जैन हॉल के नाम से), (२) महावीर जैन भवन, (३) जैन गेस्ट हाउस, (४) स्कूल की दो बिल्डिंगें (५) चार दुकाने और एक जगह तथा (६) भूमि २१ एकड

उपरोक्त सम्पत्ति के दाताओं के नाम क्रमश इस प्रकार है —स्वर्गीय बरकत रामजी बोथरा, स्वर्गीय बसतीमलजी बोथरा, स्वर्गीय मुंशीरामजी राका, स्वर्गीय देवीचन्दजी बोथरा, स्वर्गीय श्रीमती बाई बीरो बोथरा, स्वर्गीय श्रीमती चन्दोबाई बोथरा आदि।

जैन सभा, फरीदकोट सरकारी तथा गैर-सरकारी क्षेत्रों में प्रसिद्धि के साथ-साथ प्रतिष्ठा लिये हुए है।

श्री एस० एस० जैन सभा मालेर कोटला (पेप्सू)

उक्त सभा का चुनाव प्रतिवर्ष होता है। बिरादरी में सम्प अच्छा है। यहाँ चार सन्त १४-१५ साल से ठाणापति हैं। दो सौ घरों की आबादी है। निम्न पदाधिकारी है —

लाला अतरचन्दजी जैन प्रधान, ला० टेकचन्दजी जैन उपप्रधान, ला० देवदयालजी जैन मन्त्री, लाला खेमचन्दजी जैन, बी० ए० एल० एल० बी० उपमन्त्री लाला नौहरियामलजी जैन बज़ाज खजान्चीजी, ला० हरीचन्द ओसवाल जैन, ऑडीटर।

श्री एस० एस० जैन गर्ल्स हाई स्कूल चल रहा है। जिसकी व्यवस्था ला० टेकचन्दजी जैन, प्रधान, लाला रतनचन्दजी जैन भालेरी, उपप्रधान, और ला० जसवन्तराजजी जैन मन्त्री करते है।

जैन जनरल स्टोर का कार्य बा० बनारसीदासजी मिश्रा, मैनेजर, बा० देवराजजी जैन, ऑडीटर, ला० पवनकुमारजी ओसवाल जैन खजान्ची और मिस० सुशीला जैन एम० ए० बी० टी० प्रिंसिपल करते हैं।

एस० एस० जैन युवक सभा—का कार्य ला० रतन चन्दजी जैन भालेरी, प्रधान, ला० ज्ञानचन्दजी जैन बजाज, उप प्रधान, बा० प्रेमचन्दजी जैन भालेरी, मन्त्री, मि० ओमप्रकाश जी जैन, उप मन्त्री और ला० दयाराम जो खुनामी खजान्चो और स्टोर कीपर मिलकर करते हैं।

एस० एस० जैन गर्ल्स हाई स्कूल, मालेरकाटला

श्री स्थानकवासी जैन सभा, मेरठ

लाला अतरचन्दजी जैन प्रधान, ला० टेकचन्दजी जैन उपप्रधान, ला० देवदयालजी जैन मन्त्री, लाला खेमचन्दजी जैन, बी० ए० एल० एल० बी० उपमन्त्री लाला नौहरियामलजी जैन बज़ाज खजान्चीजी, ला० हरीचन्द ओसवाल जैन, ऑडीटर।

श्री एस० एस० जैन गर्ल्स हाई स्कूल चल रहा है। जिसकी व्यवस्था ला० टेकचन्दजी जैन, प्रधान, लाला रतनचन्दजी जैन भालेरी, उपप्रधान, और ला० जसवन्तराजजी जैन मन्त्री करते हैं।

जैन जनरल स्टोर का कार्य बा० बनारसीदासजी मित्रा, मैनेजर, बा० देवराजजी जैन, ऑडीटर, ला० पवनकुमारजी ओसवाल जैन खजान्ची और मिस० सुशीला जैन एम० ए० बी० टी० प्रिंसिपल करते हैं।

एस० एस० जैन युवक सभा—का कार्य ला० रतन चन्दजी जैन भालेरी, प्रधान, ला० ज्ञानचन्दजी जैन बजाज, उप प्रधान, बा० प्रेमचन्दजी जैन भालेरी, मन्त्री, मि० ओमप्रकाश जी जैन, उप मन्त्री और ला० दयाराम जो खुनामी खजान्ची और स्टोर कीपर मिलकर करते हैं।
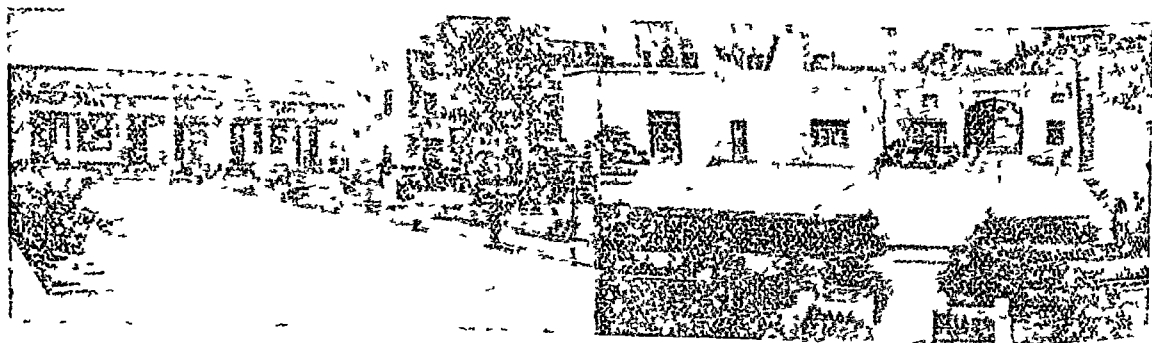
एस० एस० जैन गर्ल्स हाई स्कूल, मालेरकाटला

श्री स्थानकवासी जैन सभा, मेरठ

यह एक नवनिर्मित सभा है। इस संगठित संगठन के निर्माण में पश्चिमी पंजाब की विभिन्न बिरादरियों का मिलन हुआ है। इससे पहले कि जैन बिरादरी, मेरठ का परिचय दें—उसमें सम्मिलित बिरादरियों का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक हो जाता है जिनको कि देश विभाजन के कारण पाकिस्तान से हिन्दुस्तान आना पड़ा था। जो-जो बिरादरियाँ मेरठ में आकर एकत्रित हुई उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है —

१ रावलपिण्डी की जैन-बिरादरी—पचास वर्ष पूर्व ही इस बिरादरी का संगठन हुआ था। यह बिरादरी बड़ी ही सुसंगठित, प्रभावशाली, धर्मज्ञ और साधु-मुनिराजों की अनन्य भक्त तथा सेवा करने का आदर्श उपस्थित करने वाली हुई है। यहां के लोगों की आजीविका का मुख्य साधन जमींदारी, सर्राफी, साहूकारी और कपड़े आदि का था। सन् १९१२ में मुनि श्री धनीरामजी महाराज की प्रेरणा से "श्री सुमति जैन मित्र मण्डल की स्थापना हुई। इस मण्डल के प्रयत्न से जैन कन्या पाठशाला की स्थापना हुई। श्री दीवानचन्दजी तथा श्री चुन्नी लालजी के प्रयत्नों से इस मंडल के पास ५०,०००) रु० एकत्रित हो गए जिनसे अनेक गतिविधियां—जैन औषधालय, महावीर जैन लायब्रेरी आदि स्थापित हुई। श्री जैन सुमति ट्रेक्टमाला प्रारम्भ की गई, जिनसे मांस निषेध आदि

का प्रचार किया गया। स्व० पूज्य श्री खजानचन्दजी महाराज के सदुपदेश से श्री महावीर जैन माडर्न हाई स्कूल स्थापित किया गया। इस हाई स्कूल के लिए लाखों का फण्ड एकत्रित हो गया था। यह हाई स्कूल कॉलेज का रूप धारण करने ही वाला था कि देश का विभाजन हो गया।

इस प्रकार रावलपिण्डी की जैन बिरादरी ने समाज और धर्म की उन्नति के लिए अनेक प्रयत्न किये। श्री पिंडीदासजी जैन बी० ए०, श्री रामचन्द्रजी, श्री धर्मपालजी, श्री शादीलालजी आदि अनेक योग्य कार्यकर्ताओं का इस बिरादरी को नेतृत्व मिला। अब इस बिरादरी का दो तिहाई भाग श्री जैन बिरादरी, मेरठ में सम्मिलित होकर वहाँ की बिरादरी को उन्नतशील बनाने में सहयोग दे रहा है।

स्यालकोट की जैन बिरादरी—यह बिरादरी पंजाब की सबसे बड़ी बिरादरी थी जो अत्यन्त सुसंगठित, प्रभावशाली, धर्मज्ञ तथा व्यापार में अतिकुशल थी। साधु-संतों की सेवा-सुश्रूषा तथा धार्मिक कार्यों में बिरादरी ने प्रशंसनीय कार्य किए। श्री जैन कन्या पाठशाला और औषधालय वहाँ की उन्नत संस्थाएँ थीं। देश विभाजन के कारण यह बिरादरी भारत के अनेक नगरों में अवस्थित हो गई। अनुमानतः ४० घर मेरठ शहर में आकर बसे हैं। इन बिरादरियों के अलावा अन्य नगरों की जैन बिरादरियाँ मेरठ में आकर बस गई हैं, जिससे मेरठ की जैन-बिरादरी का विराट् स्वरूप बन गया है।

जैन बिरादरी, मेरठ—यहाँ की जैन बिरादरी ने "जैन नगर" निर्माण करने में अपनी पूरी शक्ति लगा दी है। यह जैन नगर मेरठ शहर स्टेशन के निकट तथा शहर व सदर के समीप रमणीय स्थान पर श्री जैन पुरुषार्थी कोओपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी के परिश्रम से बसाया जा रहा है। अनुमानतः २५० घर इस नगर में बसेंगे। इस जैन नगर में विशाल श्री जैन उपाश्रय का कुछ भाग बन चुका है। श्री जैन महिला उपाश्रय, श्री जैन औषधालय, पुस्तकालय तथा स्कूल आदि संस्थाओं के प्रारम्भ करने की योजनाएँ विचारणीय हैं।

इस सभा की कार्यकारिणी में १३ सदस्य हैं। श्री मुन्नालालजी अध्यक्ष, श्री चिरंजीलालजी मन्त्री, और श्री अतरचन्दजी कोषाध्यक्ष हैं।

यह सभा मेरठ में जैन समाज में संगठन, प्रेम तथा उन्नति लाने के लिए प्रयत्नशील है। प्रतिवर्ष महावीर जयन्ती, पर्यूषण पर्व तथा संवत्सरी पर्व के अतिरिक्त अन्य छोटे-मोटे उत्सवों को सोत्साह मनाकर समाज में संगठन तथा सामाजिक और धार्मिक उन्नति करने में संलग्न हैं।

रामा मण्डी (पंजाब-पेप्सु)

यहाँ पर अर्से से एस० एस० जैन सभा कायम है। जिसके अधिकारी अध्यक्ष, लाला रौनकलालजी जैन, उपाध्यक्ष, लाला करमचन्दजी जैन, मन्त्री, लाला बनारसीदासजी तातेड़ जैन, उपमन्त्री लाला रूढ़चन्द्रजी जैन और खजान्ची—लाला कुन्दनलालजी जैन हैं।

इन सज्जनों ने तन-मन-धन से जैन समाज की बहुत अधिक सेवाएँ की हैं और आप लोगों के ही प्रयत्नों से इस समय रामामण्डी में समाज की तीन इमारतें हैं।

(१) इमारत—सन् १९३० में खरीद कर सन् १९३३ में बनाई।

(२) इमारत—सन् १९४७ में खरीदकर सन् १९४९ में बनवाई।

(३) इमारत—सन् १९५५ में खरीद की।

श्री श्वे० स्था० जैन संघ बामनौली

यहाँ के संघ के प्रमुख कार्यकर्ता श्री हरदेवसहायजी श्री रामस्वरूपजी, मैनेजर श्री जैन पाठशाला, श्री

सुजानसिंहजी, श्री त्रिलोकचन्दजी और श्री उगरसेनजी हैं।

यहाँ एक जैन पाठशाला प्राइमरी शिक्षण की है जो गवर्नमेन्ट से रिकग्नाइज्ड है। इसके मेनेजर श्री रामस्वरूपजी जैन है। आप हिकमत का कार्य करते हैं। और साधु-साध्वियों की सेवा हार्दिक भाव से करते हैं।

श्री श्वे० स्था० जैन संस्थाएँ एलम (मुजफ्फर नगर)

स्थानीय स्था० समाज की सतत प्रेरणा से संचालित निम्न संस्थाएँ सुचारु रूपेण कार्य कर रही हैं—

जैन स्थानक—तीन मंजिला है। व्याख्यान के लिए दो हॉल है। भव्य भवन है।

श्री ऋषिराज जैन पुस्तकालय—के संस्थापक हैं श्री १००८ श्री श्यामलालजी महाराज। आपने यहाँ कई चातुर्मास कर समाज में अच्छी जागृति की। पुस्तकालय के पूर्वाध्यक्ष श्री मूलचन्दजी जैन थे। पुस्तकालय में करीब १५०० पुस्तके हैं। वर्तमान में इसका संचालन नवयुकों के हाथ में है। इसके मुख्य कार्यकर्ता श्री मोखमदास जी, इन्द्रसेनजी आदि हैं। स्वाध्याय नियमित रूप से होता है।

श्रावक संघ—श्री स्था० श्रावक संघ की भी स्थापना प्रचारक श्री माधोसिंहजी की प्रेरणा से हो गई है आपके प्रभावोत्पादक भाषण का जैन उज्जैन जनता पर अच्छा असर पड़ा। श्री चतरसेनजी अध्यक्ष श्री मोखमदास जी उपाध्यक्ष, श्री जौहरीमल जी मन्त्री, श्री पूर्णमलजी उप-मन्त्री और श्री ज्योतिप्रसादजी कोषाध्यक्ष सेवा कर रहे हैं।

श्री जैन नवयुवक मण्डल, लायब्रेरी—कान्धला निवासी श्री श्रीमालजी तथा श्री महेन्द्रकुमारजी के अथक परिश्रम से प्रथम कान्धला में मण्डल कायम हुआ। बाद में इसकी शाखाएँ पडासौली और एलम में कायम की गई। इसी मण्डल की देख-रेख में एक लायब्रेरी भी एलम में १९ जून सन् १९५१ में कायम की गई जिसके अध्यक्ष श्री मोखमदासजी तथा मन्त्री श्री इन्द्रसेनजी नियुक्त हुए। आप दोनों के सुप्रबन्ध से कई पाठक नित्य प्रति लाभ लेते हैं। श्री गरीबदासजी अपना अधिकांश समय इसकी सेवा में देते हैं।

जैनपाठशाला—इस पाठशाला की स्थापना १ जुलाई सन् १९४४ में हुई थी। इसमें जैन शिक्षा विशेष रूप से दी जाती हैं। लगभग ८० छात्र विद्याभ्यास कर रहे हैं। पहले इसका सुप्रबन्ध न होने से नवयुवक मण्डल ने इसका प्रबन्ध अपने हाथ में लिया। सन् १९५२ मे इसकी प्रबन्ध कार्यकारिणी सभा बनाई गई जिसके श्री चतरसेनजी अध्यक्ष, श्री जोहरीमलजी, उपाध्यक्ष, श्री मोखमदासजी, मन्त्री, इन्द्रसेनजी, उपमन्त्री और श्री ज्योतिप्रसादजी कोषाध्यक्ष है।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, नाथद्वारा

मेवाड मे यह नगर तीर्थ स्थान के रूप में समस्त भारत में प्रसिद्ध है। स्थानीय श्रावकसंघ व्यवस्थित और सुयोजित है। स्थानीय श्रावक संघ के श्री छगनलालजी मुन्शी अध्यक्ष, श्री चौथमलजी उपाध्यक्ष और श्री कन्हैयालालजी सुराणा मन्त्री है। संघ में प्रेम का सम्बन्ध अच्छा है।

धार्मिक कार्यों के लिये संघ के पास एक पक्का स्थानक है। इसी स्थानक भवन में सभी प्रकार की धार्मिक प्रवृत्तियाँ सम्पन्न की जाती है।

स्थानीय समाज मे नव चेतना लाने के लिये यहाँ एक "जैन सेवा समिति" नाम की संस्था है जिसकी देखरेख में लडकों तथा लडकियों के लिये अलग-अलग पाठशालाएँ चलती हैं। इसी समिति की देखरेख में 'मोपेरा' मे एक "महावीर जैन पाठशाला" चलती है जो आज लगातार दस वर्ष से चल रही है। यह पाठशाला पाथर्डी बोर्ड की उच्चतम परीक्षाओं के लिए केन्द्र भी है।

यहाँ स्थानीय स घ की तरफ से वाचनालय तथा पुस्तकालय भी चलाया जाता है। स्थानीय स घ की तरफ से "विधवा सहायक-फड" भी एकत्रित किया गया है जिसके द्वारा आस-पास की विधवा बहिनो की सहायता की जाती है। "श्री जैन रत्न दया फण्ड" द्वारा समय-समय पर दया-दान के लिये लोगों को प्रोत्साहित किया जाता है। इसके मुख्य स चालक वकील श्री मन्नालालजी सिसोदिया हैं।

स्थानीय मुख्य कार्यकर्ता श्री चौथमलजी सुराणा द्वारा समयोचित दान होता रहता है। यहाँ स्थानकवासी जैन समाज के ७० घर हैं।

स्थानकवासी जैन समाज के विद्वान्

किसी भी समाज के विद्वान् और साहित्यकार उस समाज के गौरव होते है क्योंकि इन्हीं विद्वानों के द्वारा समाज का बौद्धिक विकास गतिमान होता है। बौद्धिक विचार धारा समाज के सर्वांगीण क्षेत्र को खींच-खींच कर सुन्दर तम बनाने का प्रयत्न करती है। हमारे समाज में साधु-साध्वियों की अन्य समाजों की अपेक्षा कुछ अधिकता होने से विद्वानों की इतनी कमी खटकती नहीं है किन्तु जिस गति से समाज को प्रगति करनी चाहिये थी उस गति से समाज प्रगति इसलिए नहीं कर पाया कि हमारे समाज मे विद्वानों की कमी है। हमारी समाज में जो कुछ भी इने-गिने विद्वान् है वे या तो कॉन्फ्रेन्स की तरफ से स्थापित किए गये जैन ट्रेनिंग कॉलेज के हैं अथवा श्री गोदावत जैनाश्रम, छोटी सादडी, श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर, श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम बनारस, सेठिया जैन विद्यालय, बीकानेर, जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला, श्री वीराश्रय, ब्यावर आदि के है। इनमें से बहुत सारे विद्वान् ऐसे भी है जो समाज के उदार श्रीमानों द्वारा दी गई छात्रवृत्ति से तैयार हुए हैं। इन सब विद्वानों के नाम हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे है जो समाज की विभिन्न स स्थाओं में कार्य करते हुए पत्र-सम्पादन करते हुए, राष्ट्रीय प्रवृत्तियो में, सामाजिक क्षेत्रो में अथवा व्यावसायिक कार्य करते हुए समाज मे बौद्धिक चेतना जागृत कर रहे हैं:—

डॉ० दौलतसिहजी कोठारी एम० ए० पी० एच डी०, डॉ० अमृतलाल सवचन्द गोपाणी एम० ए० पी० एच डी०, डॉ० इन्द्रचन्द्रजी शास्त्री एम० ए० पी० एच डी०, डॉ० मोहनलाल मेहता एम० ए० पी० एच डी०, डॉ० अमोलकचन्दजी सुरपुरिया, एम० ए० पी० एच डी० पूना, श्री कृष्णकान्तजी, एडवोकेट, श्री रतनचदजी जैन लुधियाना, प० श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री आचार्य।

प० दलसुख भाई मालवणिया 'न्यायतीर्थ', प० हर्षचन्द्रजी, प० कपूरचन्दजी डोसी, प० खुशालचन्द जगजीवन करगथला, एन० के० गाधी, प० शातिलालजी व० सेठ, प० प्रेमचन्दजी लोढा, प० दाऊलालजी वैद्य प० जोधराजजी सुराणा, प० नन्दलालजी सुरपुरिया, वकील सज्जनसिहजी चौधरी, प० केशरीमलजी जैन, प० चिम्मनसिहजी लाढ़ा, प० पूर्णचन्द्रजी दक, प० रोशनलालजी चपलोत बी० ए० एल० एल० बी०, प० श्यामलालजी, प० लालचन्दजी मेहता एम० ए० बी० टी० (जयपुर) श्री जालमसिहजी मेडतवाल, एडवोकेट ब्यावर श्री मोतीलालजी श्रीमाल, श्री मणीलाल शिवलालजी शेठ, श्री प० त्रिलोकचन्दजी जैन, वकील बद्रीलालजी पोरवाल, श्री गोटीलालजी सेठियाँ, श्री रतनलालजी नलवाया, प० घेवरचन्दजी बाठिया, प० जसवतराजजी, प० लालचन्दजी मुणोत, प० चादमलजी जैन।

प० महेन्द्रकुमारजी जैन, प० रतनलालजी सघवी, प० रोशनलालजी जैन प० कन्हैयालालजी दक श्री नानालालजी मत्रा, श्री केशरीकिशोरजी, श्री हीरालालजी डागरिया, श्री समरथमलजी गोरवरू, श्री रमेशचन्द्रजी राका।

श्री लालचन्द्जी कोठारी, प० लचमीलालजी चौधरी, प० बसन्तीलालजी नलवाया, प० धर्मपालजी मेहता, प० चन्दनमलजी कोचर (वनवट) श्री अमृतलाल झवेरचन्द्र मेहता, पं० मुनीन्द्र कुमारजी भंडारी, प० अम्बालालजी नागौरी, श्री भोजराजजी बाफणा, श्री मणीन्द्रकुमारजी, श्री चद्रकातजी, श्री बसन्तीलालजी लोढा, प० हर्षचन्द्रजी बडोला, प० समर्थसिहजी भडकत्या श्री चपालालजी कर्णावट, एम० ए० श्री रिखबराजजी कर्णावट, एडवोकेट, श्री शान्तिचद्रजी मेहता। प० शोभाचन्द्रजी भारिल्ल स्था० जैन धर्म के साहित्य क्षेत्र में बडा योगदान दे रहे हैं। प० बद्रीनारायणजी शुक्ल और प० चन्द्रभूषणजी त्रिपाठी ब्राह्मण कुल में जन्म लेने पर भी परीक्षा बोर्ड पाथर्डी मे बहुत सेवा दे रहे हैं।

भारतव्यापी जैन सस्थाएँ

१ श्री त्रिलोकजैन पाठशाला पाथर्डी।
२ ,, अमोल रत्न जैन सिद्धान्तशाला पाथर्डी
३ ,, रत्न जैन कन्या पाठशाला पाथर्डी
४ ,, शान्तिनाथ जैन पाठशाला कोपरगाव
५ ,, अमोल जैन पाठशाला कडा
६ ,, जैन सिद्धान्तशाला अहमदनगर
७ ,, जैन कन्या पाठशाला अहमदनगर
८ ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला दावडी
९ ,, महावीर जैन पाठशाला वोरी
१० ,, अमोल जैन बोर्डिंग धूलिया
११ ,, ओसवाल जैन बोर्डिंग धूलिया
१२ ,, आदर्श जैन विद्यालय बेलापुर
१३ ,, शातिनाथ जैन पाठशाला कान्हूर
१४ ,, महावीर जैन पाठशाला सोनई
१५ ,, नेमीनाथ जैन ब्रह्मचर्याश्रम चाँदवड
१६, ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला सिकन्द्राबाद
१७ ,, महावीर स्था० विद्यालय जालना
१८ ,, कानजी शिवाजी ओसवाल, जैन बोर्डिंग हाउस जलगाव
१९ ,, जैन धार्मिक पाठशाला खरवण्डी
२० ,, नारायण, तुलसीदास सस्कृत पाठशाला पचवटी
२१ ,, महावीर जैन विद्यालय औरगाबाद
२२ ,, पद्माबाई जैन पाठशाला भुसावल
२३ ,, रत्न जैन पाठशाला वोदड
२४ ,, वर्द्धमान जैन पाठशाला घरणगाँव
२५ श्री महावीर जैन पाठशाला लासलगांव
२६ ,, महावीर जैन पाठशाला जामखेड
२७ ,, जैन ओसवाल बोर्डिंग नासिक
२८ ,, जैनपाठशाला रविवारपेठ नासिक
२९ ,, आनन्द स्था० जैन पाठशाला येवला
३० ,, रत्नानन्द जैन विद्यालय राहू
३१ ,, वर्द्धमान जैन पाठशाला इगतपुरी
३२ ,, स्था० जैन पाठशाला मालेगाव
३३ ,, महावीर जैन पाठशाला लातूर
३४ ,, महावीर जैन पाठशाला जुन्नर
३५ ,, महावीर जैन पाठशाला घोटी
३६ ,, महावीर जैन पाठशाला फत्तैपुर
३७ ,, शान्तिनाथ जैन पाठशाला घोडनदी
३८ ,, अमोल जैन सिद्धान्त शाला घोडनदी
३९ ,, फत्तेचन्द जैन विद्यालय चिचवड
४० ,, ज्ञानोदय जैन पाठशाला जामनेर
४१ ,, महावीर जैन पाठशाला लोनावला

कर्नाटक

१ ,, हस्तीमल जैन पाठशाला शोरापुर
२ ,, जैन रत्न पाठशाला रायपुर
३ ,, महावीर जैन स्कूल सिन्धनूर
४ ,, महावीर जैन विद्यालय कोप्पल
५ ,, पार्श्वनाथ हिन्दी जैन पाठशाला हुबली

सी० पी०

१ ,, रत्नानन्द जैन पाठशाला रालेगांव

२ श्री महावीर जैन पाठशाला कारंजा
३ ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला बडनेरा
४ ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला अमरावती
५ ,, देवआनद जैन विद्याभवन राजनादगाव
६ ,, वर्द्धमान जैन पाठशाला बुलढाणा
७ ,, जैन कन्या पाठशाला द्रुग

मध्यभारत

१ ,, धर्मदास पूनमचन्द जैन पाठशाला रतलाम
२ ,, महावीर जैन पाठशाला महिदपुर
३ ,, मेहता सार्वजनिक जैन बाल-पाठशाला खाचरौद
४ ,, ऋषि जैन पाठशाला नागदा
५ ,, महावीर पाठशाला डग
६ ,, जैन विद्यामन्दिर आष्टा
७ ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला पचपहाड
८ ,, धर्मदास जैन रत्न स्था० पा० उज्जैन
९ ,, श्वे० स्था०जैन पाठशाला पेटलावर
१० ,, कृष्ण ब्रह्मचर्याश्रम बरौली
११ ,, अमोल जैन पाठशाला मगरदा
१२ ,, महावीर जैन पाठशाला रावटी
१३ ,, धर्मदास जैन विद्यालय थान्दला
१४ ,, वर्द्धमान जैन विद्याभवन मन्दसौर
१५ ,, महावीर जैन श्रमण वि० मन्दसौर
१६ ,, चेनराम जैन विद्याभवन मन्दसौर
१७ ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला गगाधर
१८ ,, महावीर स्था० जैन पाठशाला धार स्टेट
१९ ,, लूकड जैन शान्ति कन्या पाठशाला इन्दौर
२० ,, विट्ठलजी चौधरी जैन पाठशाला रामपुरा
२१ ,, वर्द्धमान जैन पाठशाला पपिलोदा
२२ ,, श्वे० स्था० जैन ज्ञा० व० पन्नालाल मेहता पाठशाला करजू
२३ ,, जैन पाठशाला पैंभी
२४ ,, आत्मानन्द वर्द्ध० स्था० जैन पाठशाला शाजापुर
२५ श्री जैन पाठशाला, नगरी
२६ ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला, रायपुर
२७ श्री महावीर जैन पाठशाला, सिगोली
२८ ,, वर्द्धमान जैन पाठशाला, नारायणगढ

राजस्थान

१ ,, विजय जैन पाठशाला, सनवाड
२ ,, शान्ति जैन पाठशाला, पाली
३ ,, जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ
४ ,, महावीर जैन विद्यालय, खीचन
५ ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला, नोरवामण्डी
६ ,, जैठ श्वे० स्था० जैन पाठशाला, डेह
७ ,, श्रमणोपासक जैन धार्मिक रात्रि पाठशाला, अजमेर
८ ,, नानक जैन छात्रालय, गुलाबपुरा
९ ,, महावीर जैन पाठशाला, राणावास
१० ,, जवाहिर विद्यापीठ, कानोड
११ ,, ,, जैन कन्या पाठशाला, कानोड
१२ ,, वर्द्ध० जैन पाठशाला, कुँवारिया
१३ ,, श्वे० स्था० जैन शिक्षण सघ (स स्था), उदयपुर
१४ ,, शम्भूमल गगाराम जैन पाठशाला, जैतारण
१५ ,, जैन गुरुकुल शिक्षण स घ, ब्यावर
१६ ,, मुथा जैन विद्यालय, वलून्दा
१७ ,, जैन पाठशाला, जडक्क
१८ ,, महावीर मिडिल स्कूल, वगडी
१९ ,, सेठिया जैन पारमार्थिक स स्था, बीकानेर
२० ,, श्वे० स्था० जैन शिक्षण स घ, केकडी
२१ ,, लौंकाशाह जैन गुरुकुल, सादडी
२२ ,, मुथा जैन पाठशाला, बडी सादडी
२३ ,, वर्द्ध० जैन पाठशाला, कोठारिया
२४ ,, महावीर जैन पाठशाला, बम्बोरा
२५ ,, ल० क० स० इ० जैन कन्या पाठशाला, बीकानेर
२६ ,, जैन कॉलेज, बीकानेर
२७ ,, महावीर जैन हिन्दी स्कूल, देवगढ
२८ ,, जवाहर विद्यापीठ, भीनासर
२९ ,, गोदावत जैन गुरुकुल, छोटी सादडी
३० ,, महावीर जैन विद्यालय, डूगला
३१ ,, सुबोध जैन हाई स्कूल, जयपुर

३२ श्री वर्द्धमान जैन पाठशाला, मोलेला
३३ ,, फलौदी पार्श्वनाथ महाविद्यालय
३४ ,, श्वे० जैन पाठशाला, भीलवाडा
३५ ,, महावीर जैन पाठशाला, नाथद्वारा
३६ ,, जैन कन्या पाठशाला, कोटा
३७ ,, वर्द्ध० जैन पाठशाला, कोटा
३८ ,, महावीर जैन पाठशाला, चिकारडा
३९ ,, वर्द्धमान जैन कन्या पाठशाला, जोधपुर
४० ,, वीर जैन विद्यालय, अलीगढ
४१ ,, जैन वोर्डिंग, कुचेरा
४२ ,, गुलाबकँवर ओसवाल कन्या पाठशाला, अजमेर
४३ ,, वर्द्धमान स्था० जैन पाठशाला, राजगढ़
४४ ,, दिवाकर जैन वोर्डिंग, किला चितौडगढ
४५ ,, जिनेन्द्र ज्ञानमन्दिर, सिरियारी
४६ ,, शान्ति जैन पाठशाला, अलाय
४७ ,, जैन सभा पाठशाला, बून्दी
४८ ,, वर्द्धमान जैन पाठशाला, रामगंज मण्डी
४९ ,, कुन्दन जैन सिद्धान्तशाला, ब्यावर
५० ,, महावीर जैन मण्डल, आवर
५१ ,, जैन जवाहिर मण्डल, देशनोक
५२ ,, महावीर ब्रह्मचर्याश्रम, देवगढ़-मदारिया
५३ ,, महिला समिति, उदयपुर
५४ ,, जैन कन्या पाठशाला, बडी सादडी
५५ ,, जीवन जैन कन्या पाठशाला, बीकानेर
५६ ,, वर्द्धमान स्था० जैन पाठशाला, नसीराबाद
५७ ,, फूलाबाई जैन श्रमणोपासक पाठशाला, अजमेर
५८ ,, जैन कन्या पाठशाला, वल्लभनगर
५९ ,, वर्द्ध० स्था० जैन धार्मिक शिक्षण स घ, गगापुर
६० ,, स्था० जैन पाठशाला, कजाडी
६१ ,, विजय जैन पाठशाला, सरवाड
६२ ,, जैन इन्द्र पाठशाला, कपासन

गुजरात-काठियावाड

१ श्री महावीर जैन यु०, खम्भात
२ ,, धर्मदास जैन वि०, लीबडी
३ ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला, कलोल
४ ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला, रामनगर
५ ,, स्थानकवासी जैन वि०, जेतपुर
६ ,, स्थानकवासी जैन पाठशाला, अहमदाबाद
७ ,, श्वे० स्था० जैन पा० साबरमती
८ ,, श्वे० स्था० जैन पा०, प्रातिज
९ ,, स्थानकवासी जैन पाठशाला, बोटाद

पजाब

१ ,, जैन कन्या पाठशाला, लुधियाना
२ ,, पू० काशीराम जैन कन्या वि०, अमृतसर
३ ,, पू० काशीराम जैन गर्ल्स हाई स्कूल, अम्बाला सिटी

पेप्सु

१ ,, जैन कन्या म०, फरीदकोट
२ ,, जीतराम जैन कन्या वि०, रोहतक

उत्तर प्रदेश

१ ,, राजधारी त्रिपाठी स० वि०, खैरौंटी
२ ,, पार्श्वनाथ वि० का० हि० वि०, बनारस

मद्रास

१ ,, जैन महिला विद्यालय साहूकार पैंठ, मद्रास
२ ,, एम० एस० जैन वोर्डिंग होम, मद्रास
३ ,, ताराचन्द गेलडा जैन वोर्डिंग, मद्रास
४ ,, श्री जैन स्कूल, कुन्नुर

नोट —जिन जिन स स्थाओं का विशेष वर्णन मिल सका है, उन्हें अगले पृष्ठों पर देखिए।

श्री गोदावत जैन गुरुकुल (हाई स्कूल) छोटी सादडी (राजस्थान)

मेवाड प्रदेश में चलने वाले इस गुरुकुल की स्थापना स्वर्गीय दानवीर सेठ नाथूलालजी सा० गोदावत ने १,२५,०००) एक मुश्त निकालकर की। सेठ सा० द्वारा प्रदत्त इस धन राशि का एक ट्रस्ट बनाया गया। सर्व प्रथम एक आश्रम और एक प्रायमरी स्कूल के रूप में इस सस्था की सवत् १६७६ मे स्थापना हुई। कालान्तर में तथाकथित आश्रम और स्कूल ही विशाल गुरुकुल के रूप में परिरिणत हो गए। इस सस्था को विशाल रूप देने में स्वर्गीय सेठ सा० के पौत्र सेठ छगनलालजी सा० तथा सेठ रिखवदासजी सा० का प्रमुख हाथ रहा है। आज यही गुरुकुल मेवाड भर के सामाजिक व राष्ट्रीय प्रवृत्तियो का केन्द्र स्थान वन गया है। यहाँ विद्यार्थियो को स्थानीन पाठ्यक्रम के अलावा धर्म, न्याय, सस्कृत, हिन्दी, अग्रेजी आदि विषयो को उच्च पढाई कराई जाती है और उनकी परीक्षाएँ दिलाई जाती हैं। जैन समाज की अधिकाश सस्थाओ में व्यवस्थापक, शिक्षक, गृहपति आदि उत्तरदायी स्थानो पर इसी सस्था के स्नातक पाये जायेंगे। आज भी यह सस्था एक हाई स्कूल के रूप में चलती हुई धार्मिक शिक्षरण प्रदान करके विद्यार्थियो के जीवन में उत्तम नागरिकता के सस्कारो का सिंचन करती हुई अदम्य उत्साह एव स्फूर्ति के साथ समाज सेवा कर रही है। गुरुकुल में शिक्षरणकार्य के लिए अपने-अपने विषय के विद्वान व परिश्रमी अध्यापक है। गुरुकुल की सम्पूर्ण प्रवृत्तियाँ तीन भागो में वँटी हुई है—विद्यालय, छात्रालय और जैन सिद्धान्तशाला। छात्रालय में इस समय ६५ छात्र और विद्यालय में १६० छात्र है।

आर्थिक दृष्टि से इस सस्था का इस वडे पैमाने पर स्वतन्त्रतापूर्वक सचालन करने का श्रेय सस्था के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री भूपराजजी सा० नलवाया बी० ए० व मान्य मन्त्री चादमलजी सा० नाहर को है।

इस सस्था के पास अपना निजी भवन है। भवन अति भव्य व शहर से कुछ दूर उत्तम स्थान पर अवस्थित है। जहाँ वगीचा, जलाशय, क्रीडागरण आदि सभी की स्वतन्त्र व उत्तम व्यवस्था है। सस्था में एक उच्च कोटि का पुस्तकालय भी है, जिसमें भिन्न-भिन्न विषयो व भाषाओ की लगभग ७००० पुस्तकें हैं।

इस प्रकार यह सस्था ३६ साल से समाज की सेवा करती चली आ रही है।

श्री जैन गुरुकुल शिक्षरण सघ, व्यावर

स्था० जैन समाज में गुरुकुल प्रणाली की कल्पना भी नही थी उस वक्त आत्मार्थी मोहनऋषिजी और श्री चैतन्यजी के उददेश और प्रेरणा द्वारा स० १६८४ के विजयादशमी (आसोज शु० १०) को श्री जैन गुरुकुल का प्रारम्भ वगडी-सज्जनपुर में हुआ। सेठ मिश्रीलालजी वेद, फलौदी, श्री अमोलकचन्दजी लोढा, वगडी, श्री शकरलालजी गोलेछा आदि अच्छे प्रेरक थे। धर्मवीर दुर्लभजी भाई जौहरी आदि पोषक थे। श्री आरणदराजजी सुरारणा महामन्त्री और श्री धीरजलाल के० तुरखिया इसके अधिष्ठाता थे। ज्ञान पचमी को इसे व्यावर में लाया गया।

स्था० जैन समाज में तथा प्रान्त में राष्ट्रीय चेतना जगाना, समाज में शिक्षरण सस्थाओ का प्रचार और सुसगठता, धार्मिक शिक्षरण का प्रचार, हुन्नर-उद्योग के विविध प्रयोग, वार्षिकोत्सव और परिषदो द्वारा जागृति लाने के लिए इस गुरुकुल ने अनेक प्रयत्न किये। ६ वर्ष वाद गुरुकुल के लिए स्वतन्त्र भवन-निर्मारण हुआ। उपरोक्त नाम से रजिस्ट्रेशन हुआ और विद्यार्थियो के लिए गुरुकुल, साधु-साध्वियो के लिए सिद्धान्तशाला, साहित्य प्रकाशन के लिए आत्मजागृति कार्यालय, उद्योगशाला आदि विविध प्रवृत्तियाँ २५ वर्ष तक उत्तरोत्तर वृद्धिगत होती रही। सघ सेवा में भी सस्था ने सहयोग दिया। सघ-ऐक्य योजना और श्राविकाश्रम की योजनाएँ गुरुकुल की पवित्र भूमि में वार्षिकोत्सव के अवसर पर ही वनी और मूर्तस्वरूप लिया।

भारत स्वतन्त्र होने पर स्वतन्त्र राष्ट्रीय शिक्षरण की आवश्यकता का वातावरण कम हो चला। जिससे उक्त

संघ के अग्रणियो ने भी संस्कृति विभाग और हाई स्कूल विभाग किये। धीरे-धीरे संस्कृति विभाग मे छात्र नहीं आने लगे तो सिर्फ हाई स्कूल विभाग ही रहा। प्रायमरी स्कूल भी प्रारम्भ को और इस रूप में कार्य चल रहा है।

ब्यावर गुरुकुल ने सैकडो नवयुवको को तैयार किये जो आज समाज में विद्वान्, लेखक, संचालक व्यायाम पटु, हुनर ज्ञान, धार्मिक शिक्षण-संस्कृति द्वारा कार्य कर रहे हैं। जीवन यापन के साथ समाज को योगदान दे रहे हैं।

श्री जैनेन्द्र गुरुकुल, पंचकूला (अम्बाला)

यह गुरुकुल स्वामी घनीरामजी तथा पं० कृष्णचन्द्राचार्यजी के अनवरत प्रयत्नो से जैन समाज भूषण स्व० सेठ ज्वालाप्रसादजी के करकमलो द्वारा फरवरी सं० १९०७ में स्थापित किया गया। इसे समाज सेवा करते हुए २५ वर्ष हो चुके हैं। यहाँ धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ प्रायमरी से लगाकर हाई स्कूल तक की व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है। साइंस और ड्राइंग विषयो के लिए यहाँ सुन्दर व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त छात्रो के जीवन को स्वावलम्बी बनाने के लिए टेलरिंग, कारपेन्टरी, वीविंग और टीनस्मिथी आदि अनेक हुनर उद्योगो व कला-कौशलो का व्यापक रूप में समुचित प्रबन्ध है। यहाँ की बनी हुई दस्तकारी की चीजे ऑडर देने पर बाहर भी लागत मूल्य में भेजी जाती हैं।

इस समय गुरुकुल में एक हजार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, जिनमें से लगभग ८०० छात्रो के खाने-पीने आदि की सारी व्यवस्था गुरुकुल के बोर्डिंग हाउस में ही है। ये सभी छात्र वे हैं, जिन्हे पंजाब गवर्नमेंट ने यहाँ की सुव्यवस्थाओ से आकर्षित होकर भेजने का इरादा किया था और जो भारत-विभाजन के बाद सन् १९४८ से यहाँ आने शुरू हो गए। यहाँ की कार्यकारिणी समिति ने भी इस कार्य को भगवान महावीर के पवित्र सन्देश और अहिंसा धर्म के अनुरूप समझकर सहर्ष अपने हाथो में लिया एवं अपने उद्देश्यो के अनुसार आज तक बराबर निभाती आ रही है।

यहाँ की वर्तमान मैनेजिंग कमेटी के ७३ सदस्य हैं जिनके अध्यक्ष—सेठ तेलूरामजी जैन जालन्धर और मन्त्री श्री ओमप्रकाशजी जैन हैं। आप लोगो के सतत् परिश्रम से ही आज यह संस्था जैन समाज के लिए आकर्षक और गौरवपूर्ण बनी हुई है। युनिवर्सिटी की परीक्षाओ का परिणाम भी यहा का प्रति वर्ष ९८ प्रतिशत रहता है। इससे ही इसकी शिक्षा-व्यवस्था का अनुमान लगाया जा सकता है। यहा के छात्रो की खेल के विषय में अभिरुचि, परेड करने का सुन्दर तरीका और व्यायाम के अद्भुत प्रकार वास्तव में वर्णनीय हैं। गृहपतियो, योग्य अध्यापको व वार्डनो की देखरेख में छात्रालय के छात्र रहते हैं। गुरुकुल का अपना अंग्रेजी दवाखाना है, जिसमें सब प्रकार के रोगो का उपचार किया जाता है।

अजमेर वालो के अध्यापकत्व में स्थापित हुई। इस सस्था के आद्य सस्थापको में श्री अनोपचन्दजी पुनमिया, श्री निहालचन्दजी पुनमिया तथा श्री हस्तीमलजी मेहता आदि सज्जन प्रमुख है। दानवीर बलदोटा बन्धुओ ने ५१०००) रु० श्री मोहनमलजी चौरडिया ने ११,१११, रु० तथा श्री केवलचन्द्रजी चौपडा ने ५०००) रु० देकर इस सस्था को सुदृढ बनाया है। सस्था का १,५०,००० रु० की लागत का आकर्षक नवीन और सुन्दर भवन है। इसी गुरुकुल भवन में और इसी के प्रागण में वृहत् साधु सम्मेलन और कान्फरस का अधिवेशन हुआ था जहाँ एक ओर अखण्ड श्रमण सघ और श्रावक सघ का निर्माण हुआ।

इस समय गुरुकुल में ५० छात्र, ३ अध्यापक गण, ६ भृत्यु-वर्ग और एक कन्या पाठशाला की अध्यापिका है।

छात्रो के लिये सभी प्रकार के व्यायाम और खेल-कूद का सर्वोत्तम प्रवन्ध है। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के उद्योग—जैसे सिलाई, कताई, बुनाई, चित्रकला, कृषि, टाइपिंग का भी शिक्षण दिया जाता है। धार्मिक परीक्षा बोर्ड पाथर्डी की विशारद एव प्रभाकर तक की परीक्षाओ में छात्र प्रविष्ट होते है। विभिन्न प्रकार की पुस्तको एव समाचार-पत्रो से यहाँ का पुस्तकालय तथा वाचनालय सुसमृद्ध है। प्रत्येक रविवार को छात्रो की सभा होती है जिसमें वक्तृत्व कला का अभ्यास कराया जाता है।

गुरुकुल से ही सम्बन्धित "श्री जैन हितेच्छु कन्या-शाला" है। जिसमे बालिकाओ को व्यावहारिक एव धार्मि शिक्षण दिया जाता है। गुरुकुल का सचालन कार्यकारिणी समिति द्वारा होता है। इस कार्यकारिणी का चुनाव मत प्रणाली से होता है। इस समय प्रतिष्ठित ३२ सज्जनो की कार्यकारिणी समिति विनिर्मित है।

अपने क्षेत्र में सादडी का यह गुरुकुल विद्या प्रचार के साथ धार्मिक शिक्षा का प्रसार बडे ही सुन्दर ढग से कर रहा है।

श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, भीनासर (बीकानेर)

जैन-जगत् के परम प्रसिद्ध आचार्य पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज का यह स्मारक श्री जवाहर विद्यापीठ सम्वत् २००१ में सस्थापित हुआ था। इसको कार्य करते हुए करीब १२ वर्ष होने आये है। उस महान् मनस्वी का यह स्मारक अविचल रूप मे एकनिष्ठ साधक की तरह उन्ही के चरणचिन्हो का अनुकरण इन वर्षो में करता चला आया है। उस तप पूत युगदृष्टा के शुभाशीर्वाद के फलस्वरूप यह विद्यापीठ अपनी सौरभ से समस्त जैन जगत को सुवासित कर रहा है।

विद्यापीठ आज अपने-आपको विशेष रूप से गौरवान्वित अनुभव कर रहा है कि उसने परम पुनीत प्रागण में अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव एव १३ वा अधिवेशन सम्पन्न होने जा रहा है। साथ ही श्रमण-सघ का सम्मेलन भी यही सम्पादित होने जा जा रहा है, उस महा महिम आचार्य के स्मारक स्थल पर ही उनके सपने साकार होने जा रहे है। हमारे अधिक सौभाग्य और सुयोग का अवसर क्या प्राप्त हो सकता है, यह तो सोने में सुगन्ध है। हम क्राति के किस मार्ग से चलकर अपने लक्ष्य का निर्धारण कर रहे है, उसमें सफलता अवश्यभावी मानी है।

सस्था में छ विभाग है।

१ प्रकाशन विभाग, २ पुस्तकालय, ३ जैन विद्यार्थी निवासुयोग, ४ धार्मिक शिक्षण सदन, ५ उच्च शिक्षण सदन, ६ उपदेशक विभाग।

प्रकाशन व विभाग का कार्य जवाहर साहित्य समिति के कर-कमलो से सुचारु रूप से चल रहा है। इस समिति ने स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज के व्याख्यानो को किरणावलियो के रूप में पुस्तकाकार प्रकाशित करवाया

है। अब तक ३१ किरणावालियाँ प्रकाशित हो चुका है।

पुस्तकालय आधुनिक साधनो से सुशोभित सुन्दर कलापूर्ण भवन है। पुस्तकालय में ३५०० जिल्दो में विविध विषयो की लगभग ६००० पुस्तकें सग्रहीत हैं। साथ ही वाचनालय भी है। वाचनालय में कुल २० समाचार-पत्र-दैनिक, सप्ताहिक, पाक्षिक एव मासिक आते हैं। भारत भर की समस्त स्थानकवासी सस्थाओ में पुस्तकालय अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

इस वर्ष छात्रा-वास में छठी कक्षा से लेकर एम० ए० फाइनल अर्थात् सोलहवी कक्षा तक के १५ छात्र
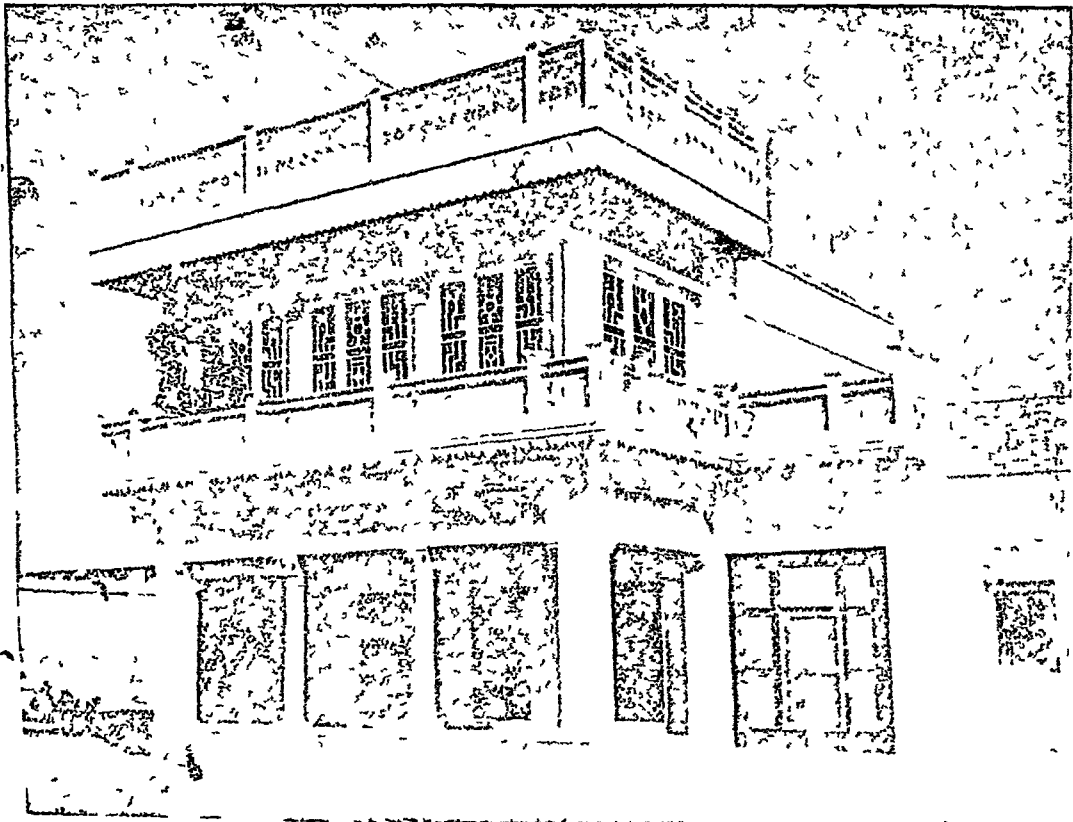
जैन जवाहर विद्यापीठ, भीनासर

हैं। स्वय यहाँ के गृहपति भूपराज जैन भी एम० ए० फाइनल के छात्र हैं। ये यहाँ के स्नातक है और अब गृहपति का कायभार सभाले हुए है।

विद्यालय की परीक्षाओ के अलावा छात्र पाथर्डी वोर्ड की धार्मिक परीक्षाओ में प्रविष्ट होते हैं। इस वप विभिन्न धार्मिक परीक्षाओ में १२ छात्र प्रविष्ट हुए है।

इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष कुछ छात्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की हिन्दी-परीक्षाओ में सम्मिलित होते है।

सस्था की ओर से साधु-साध्वियो के अध्ययन कराने का प्रवन्ध है।

गत वर्षो में अनेक छात्र इस सस्था से अपना अध्ययन समाप्त कर निकले है। ये हमारे समाज की विभिन्न सस्थाओ एवं प्रवृत्तियो का सचालन सफलतापूर्वक कर रहे है।

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ

आज से सत्ताईस साल पूर्व जब कि यहाँ आसपास शिक्षा-प्राप्ति के किसी भी साधन के अभाव के कारण अज्ञान तथा अशिक्षा का अन्धकार छाया हुआ था—ऐसे कठिन समय में स्थानीय नवयुवको के जोश एव निष्ठा से १५ जनवरी सन् १९२९ में इस विद्यालय की पुनीत स्थापना हुई। शनै-शनै इस विद्यालय की सुवास समीपवर्ती ग्रामो में फैल गई जिसके कारण वाहरी छात्र भी विद्यालय मे विद्याध्ययन करने के लिए आकर्षित हुए—जिसके फल स्वरूप "श्री जैनरत्न छात्रालय" की स्थापना करनी पडी। विद्यालय ने अपनी लक्ष्यपूर्ति में गतिशील रहते हुए समाज की सस्थाओ में अच्छा स्थान प्राप्त किया है।

श्री रत्न जैन विद्यालय-भवन भोपालगढ (मारवाड)

सस्था का अपना निजी विशाल भवन भी है। सस्था के प्राण दानवीर सेठ श्री राजमलजी सा० ललवानी व विद्यालय के तत्कालीन अध्यक्ष श्री विजयराजजी सा० काकरिया ने भवन-निर्माण के लिए एक वडी रकम देकर तथा वाहर प्रवास में घूम-घूमकर ६५,०००) की धन-राशि एकत्रित की और भवन निर्माण कराया।

इस विद्यालय में अग्रेजी में मेट्रिक, हिन्दी में विशारद, महाजनी में मुनीमी तथा धर्म में धर्म प्रभाकर की उच्च परीक्षाएँ दिलाकर समाज के सुशिक्षित एव होशियार नागरिक तैयार किये जाते हैं।

इस सस्था की तरफ से सुप्रसिद्ध मासिक धार्मिक पत्रिका 'जिनवाणी' का प्रकाशन कर अन्य सस्थाओ के सम्मुख एक आदर्श उपस्थित किया था।

इस सस्था के तत्त्वावधान में ही 'श्री जैन रत्न कन्या पाठशाला' भी अच्छा कार्य कर रही है, जिससे वर्तमान में ३० कन्याएँ शिक्षा का लाभ ले रही हैं।

छात्रो को पार्लियामेंटरी सिस्टम (ससदीय पद्धति) का ज्ञान देने के लिए, छात्र-मण्डल की भी यहाँ प्रवृत्ति

विद्यमान है । छात्रो के शारीरिक विकास के लिए खेल एव व्यायाम की यहाँ समुचित व्यवस्था है । छात्रालय के छात्रो के वर्तमान सेवाभावी गृहपति एक कुशल वैद्य हैं । उन्ही की देख-रेख मे विद्यालय का अपना निजी औषधालय भी है जिससे सर्वसाधारण जनता भी लाभ उठाती है ।

विद्यार्थियो के बौद्धिक विकास के लिए एक विशाल पुस्तकालय भी है जिसमे लगभग ३००० से भी अधिक पुस्तकें हैं । ससार की विविध हलचलो को जानने के लिये एक वाचनालय भी है जिसमें हर प्रकार के मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक तथा दैनिक (परचा) पत्र आते हैं ।

छात्रो की लेखन-शैली को विकसित करने के लिए छात्रो को ही तरफ से हस्तलिखित मासिक 'विकास' प्रकाशित किया जाता है । वक्तृत्व कला के विकास के लिए साप्ताहिक श्रेणी सभाएँ की जाती हैं जिनमें अन्त्याक्षरी, वादविवाद, निवन्ध, कहानी आदि प्रतियोगिताओ के सुन्दर कार्यक्रम रहते हैं ।

सस्था के अधिकारियो तथा छात्रो का धार्मिक क्षेत्र मे विशेष लक्ष्य रहे—इस ओर विशेष ध्यान रहता है । नियमित सामायिक, अष्टमी-चतुर्दशी को प्रतिक्रमण एव धार्मिक पर्वो पर ये आयोजन किये जाते हैं ।

विद्यालय में औद्योगिक शिक्षण के लिए सिलाई का काम सिखानेकी उत्तम व्यवस्था है। अल्प व्यय में अधिक शिक्षा, महाजनी सवाल, वहीखाता और पुस्तक-रखना और धार्मिक शिक्षण—इस सस्था की विशिष्ट विशेषताएँ हैं ।

इस प्रकार विगत २६ सालो से राजस्थान की यह प्रगतिशील सस्था ज्ञान का प्रचार कर मरुधर के सूखे अचल को ज्ञान-प्रवाह से सीच-सीचकर हरा-भरा वनाने का पूर्ण प्रयत्न कर रही है—जो इस विद्यालय के लिए गौरव और हर्ष का विषय है ।

विद्यालय के सभी विभागो का सचालन करने के लिए २२ सदस्यो की सचालन-समिति है जिसके श्री जालमचन्द्रजी सा० वाफणा—अध्यक्ष,श्री शकुनचन्द्र जी सा० ओसवाल—मन्त्री, श्री मदनचन्द्रजी सा० मेहता—प्रधान मन्त्री, श्री सुगनचन्द्रजी सा० काकरिया—कोषाध्यक्ष हैं ।

श्री जैन शिक्षण सघ, कानौड (राजस्थान)

सन् १९४० में तीन छात्रो से प्रारम्भ हुई, 'विजय जैन पाठशाला' आज शिक्षण-सघ के विराट् रूप में परिवर्तित हो गई है । इस सघ के सचालक श्री 'उदय' जैन हैं । इस शिक्षण-सघ के द्वारा अनेक गतिविधियाँ गतिमान की जा रही हैं । श्री जवाहर विद्यापीठ हाई स्कूल, प्राइमरी स्कूल, श्री जैन जवाहर गुरुकुल (छात्रालय), श्री जैन जवाहर वाचनालय, रात्रि हिन्दी विद्यापीठ, श्री विजय जैन विद्यालय और जैन कन्या पाठशाला आदि सघ की प्रवृत्तियाँ हैं । विद्यापीठ हाई स्कूल में १८ अध्यापक हैं । सदाचारी, निर्व्यसनी और सेवाभावी अध्यापको की सहायता से यह विद्यापीठ अपना गौरव वढा रहा है । ग्रामीण वातावरण से दूर जैन शिक्षण सघ की भव्य इमारत में और ग्राम के दो नोहरो में ये सस्थाएँ चल रही हैं ।

हिन्दी विद्यापीठ द्वारा हिन्दी का प्रचार किया जाता है जिसके लिए प्रथमा और मध्यमा का विद्यार्थियो को अभ्यास कराया जाता है । इन परीक्षाओ का यह सघ केन्द्र भी है ।

श्री विजय जैन पाठशाला में धार्मिक शिक्षण पर विशेष जोर दिया जाता है और प्रतिवर्ष १२५ छात्र धार्मिक परीक्षाओ में सम्मिलित होते हैं । लगभग १५० प्रतिदिन सामायिक होती हैं ।

गुरुकुल (छात्रालय) में वाहर के २५ ३० छात्रो के रहने की समुचित व्यवस्था है । अनुभवी गृहपति की देख-रेख में छात्रालय का सचालन किया जाता है ।

जैन शिक्षण सघ के अन्तर्गत चलने वाली सस्थाओ के लिए ३०,०००) रु० का भवन वन चुका है । एक पक्का कुआँ और सात वीघा जमीन सघ की अचल सम्पत्ति है । इन सस्थाओ का सचालन-खर्च वार्षिक ३५,०००) का है । समाज के अति पिछडे क्षेत्र की यह सस्था विगत १५ वर्षों से विना स्थायी फड के कार्य कर रही है । इस

समय ४०० से भी अधिक छात्र इस सस्था से लाभ ले रहे हैं। इस सस्था की सभी प्रवृत्तियो के सचालन में प्रधान हाथ श्री 'उदय' जैन का है।

श्री वर्धमान स्था० जैन छात्रालय, राणावास (राजस्थान)

काठा प्रान्त में स्थानकवासी समाज की अब तक एक भी सस्था नही थी, जिसका अभाव समाज के समस्त शिक्षाप्रेमियो के हृदय में खटकता था। प्रधानाचार्य श्री प० रत्नमुनि श्री आनन्द ऋषिजी महाराज सा० की प्रेरणा से और श्री चम्पालालजी सा० गुगलिया के प्रयत्न से इस सस्था की स्थापना हुई। सस्था की स्थापना के लिए आसपास के गाँवो से २१,०००) रु० का चन्दा एकत्रित हुआ। छात्रालय में इस समय कुल २४ विद्यार्थी है। भोजन फीस १३) रु० रखी गई है। जिसमें एक पाव दूध के अतिरिक्त स्वास्थ्यप्रद और रुचिप्रद भोजन की उत्तम व्यवस्था है। छात्रालय का भवन स्टेशन के पास ही वना हुआ है। यहाँ का मुक्त और स्वच्छ वातावरण मस्तिष्क और जीवन को स्फूर्ति प्रदान करता है।

सस्था के पदाधिकारियो में श्री लालचन्दजी मुणोत—अध्यक्ष, श्री चम्पालालजी गुगलिया—मन्त्री, श्री फूलचन्दजी कटारिया—कोषाध्यक्ष है। इनके अतिरिक्त ३१ सदस्यो की कार्यकारिणी समिति बनी हुई है। एक वर्ष की अत्यल्प अवधि में सस्था ने आशातीत उन्नति की है।

निरसन्देह राणावास का यह छात्रालय अपने समीपवर्ती इलाके का सुन्दर बालोद्यान है जिसकी सुरभि-सुवास से यह इलाका कालान्तर में सुवासित हो उठेगा।

श्री देव आनन्द जैन शिक्षण संघ, राजनांदगाँव

इस सस्था का सस्थापन दानवीर स्व० श्री अगरचन्दजी गुलेछा के कर-कमलो से हुआ था। यहाँ मेट्रिक तक शिक्षण का प्रवन्ध है। शिक्षण के लिहाज से यहाँ के विद्यार्थी सतोषप्रद परिणाम लाते हैं। सस्था का निजी विद्या भवन है। जिसमें १२५ विद्यार्थियो के निवास का समुचित प्रबन्ध है। वर्तमान में विद्यार्थियो की सख्या १०० से अधिक हो गई है। किन्तु उचित भोजनालय के अभाव के कारण विशेष विद्यार्थी नही रह सकते। आज सस्था के पास कुल ६६ एकड जमीन है। इसका सस्था को कुछ हद तक स्वावलम्बी बनाने में काफी उपयोग हो सकेगा।

इस सस्था की निजी गोशाला भी है। इसमें चार जोडी वैल और तीस-वत्तीस छोटी-वडी गाएँ तथा चार पाँच भैसें भी है। विद्यार्थियो को शुद्ध दूध मिल सके इसी उद्देश्य से यह खोली गई है।

छात्रो का जीवन विशुद्ध एव सयमी वने यही सस्था का एकमात्र लक्ष्य है। अलिप्तता, नियमितता, अनुशासन, स्वावलवन तथा धर्मशीलता ये इस जीवन के लक्ष्य की पूर्ति की अखण्ड धाराएँ है। ज्ञान, दर्शन, चरित्र की सुसगत सीढियाँ निर्माण करने का इस सस्था में भरसक प्रयत्न हो रहा है।

गत चार वर्षो में कई नेताओ तथा समाज-सेवको ने सस्था में पधारने की कृपा की और अपने शुभाशीर्वाद प्रदान किए।

छात्रालय में गृहपति का कार्य श्री मुनीन्द्रकुमारजी सभालते थे। आपका विद्यार्थियो की सर्वतोमुखी जागृति में परम लक्ष्य था आप एक विचारशील, उत्साही एव कर्मठ व्यक्ति है। छात्रालय की प्रगति मे आपका पूरा हाथ रहा और सदैव सस्था को उन्नत शिखर पर पहुँचाने की हार्दिक इच्छा रखते हैं।

श्री जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, पाथर्डी (अहमद नगर)

पाथर्डी की संस्थाएँ

महाराष्ट्र और कर्णाटक प्रान्त के छोटे-मोटे ग्रामो और नगरो मे जैन समाज बहुतायत से फैला हुआ है। सौभाग्य-वश स्व० पूज्य श्री रत्नऋषिजी म० सा० तथा प्रधान मन्त्री प० मुनि श्री आनन्दऋषिजी म० सा० का सन् १९२३ मे इस तरफ पधारना हुआ। शिक्षा की कमी को देखकर महाराज सा० के शिक्षाप्रद ओजस्वी व्याख्यान हुए जिसके फलस्वरूप पाथर्डी मे स्व० पूज्य श्री तिलोकऋषिजी म० सा० की पुण्य-पावन स्मृति मे "श्री तिलोक जैन ज्ञान प्रसारक मण्डल" की स्थापना हुई। इसी मण्डल के तत्त्वावधान में श्री तिलोक जैन विद्यालय और छात्रा-लय स्थापित किये गए। यह विद्यालय आजकल हाई स्कूल बन गया है, जिसका वार्षिक खर्च २५,०००) है। विद्यालय में पुस्तकालय, वाचनालय, वक्तृत्व-विकास के लिए विवाद मण्डल, वस्तु भण्डार आदि की समुचित व्यवस्था है।

छात्रालय में छात्र जीवन-विकास के साथ धार्मिक शिक्षा प्राप्त करते है और जीवन-निर्माण की कला सीखते है। उपरोक्त विद्यालय और छात्रालय के मन्त्री श्रीमान चन्दनमलजी सा० गाधी है।

श्री तिलोकरत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, पाथर्डी

जैन धर्म और जैन सस्कृति के प्रचार और प्रसार की भावना और ध्येय-सिद्धि को लेकर प्रधानमन्त्री प० रत्न मुनि श्री आनन्दऋषिजी म० सा० के सदुपदेश से इस बोर्ड की स्थापना हुई। बोर्ड की परीक्षाओ में जैन-अजैन सभी तरह के परीक्षार्थी सम्मिलित होते है। बोर्ड के उद्देश्यो की पूर्ति के लिए परीक्षण, निरीक्षण, पुस्तक के प्रकाशन, छात्रवृत्तियाँ, सम्बन्धित और निर्वाचित सस्थाओ को सहायताएँ, पदक-पारि-तोषिक, प्रतियोगिता-पुरस्कार आदि विभिन्न योजनाएँ क्रियान्वित की गई। प्रत्येक योजना स्थायी और स्वतन्त्र अस्तित्व रख सके ऐसी व्यवस्था की गई है।

बोर्ड स्थापन के वर्ष में कुल पाच केन्द्रो से ११९ विद्यार्थी परीक्षाओ में सम्मि-लित हुए थे किन्तु बोर्ड की लोकप्रियता की वृद्धि के साथ उसका कार्यक्षेत्र भी बढता

प० बदरीनारायण शुक्ल, पाथर्डी (अहमद नगर)

गया। इस वर्ष ९१ केन्द्रो से ३७०१ परीक्षार्थी विभिन्न परीक्षाओ में सम्मिलित हुए है।

चन्द्रमणिभूषण त्रिपाठी
पाथर्डी
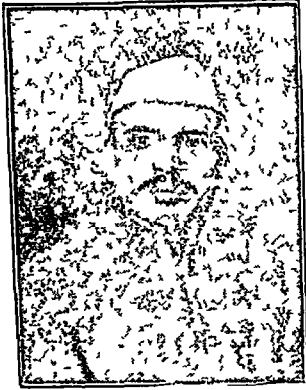
इस परीक्षा-बोर्ड की कार्य-प्रणाली एव प्रगति पर समाधान व्यक्त करते हुए कॉन्फरन्स ने पहले वार्षिक 'एड' देकर इसे सम्मानित किया। तत्पश्चात् सन १९५४ में अपनी मान्यता प्रदान कर इसे कॉन्फरस न मान्य परीक्षा-बोड घोपित किया है।

श्री अमोल जैन सिद्धान्तशाला, पाथर्डी

इस सस्था की स्थापना सवत् १९२३ मे प्रधानमन्त्री प० रत्न आनन्दऋषिजी म० मा० के सदुपदेश से हुई। इसके द्वारा सन्त-सतियो के शिक्षण की समुचित व्यवस्था की जाती है।

श्री रत्न जैन पुस्तकालय, पाथर्डी

इस विशाल पुस्तकालय मे प्राय सभी भारतीय दशनो व भाषाओ का साहित्य सग्रहीत है। इस समय इस पुस्तकालय मे ७००० से भी अधिक पुस्तको का सग्रह विद्यमान है।

इसके अतिरिक्त "श्री देवप्रेम स्था० जैन धार्मिक उपकरण भण्डार" से ओघे पात्रे, पूँजनी, वैठकें, मालाएँ आदि धार्मिक उपकरणो की सुलभता प्राप्त होती है।

इसके अलावा स्थानीय छात्राओ को वोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार धार्मिक शिक्षा देने के लिए कन्या पाठशाला भी स्थापित है। इस कन्याशाला को श्राविकाश्रम के रूप में परिणत करने की योजना विचाराधीन है।
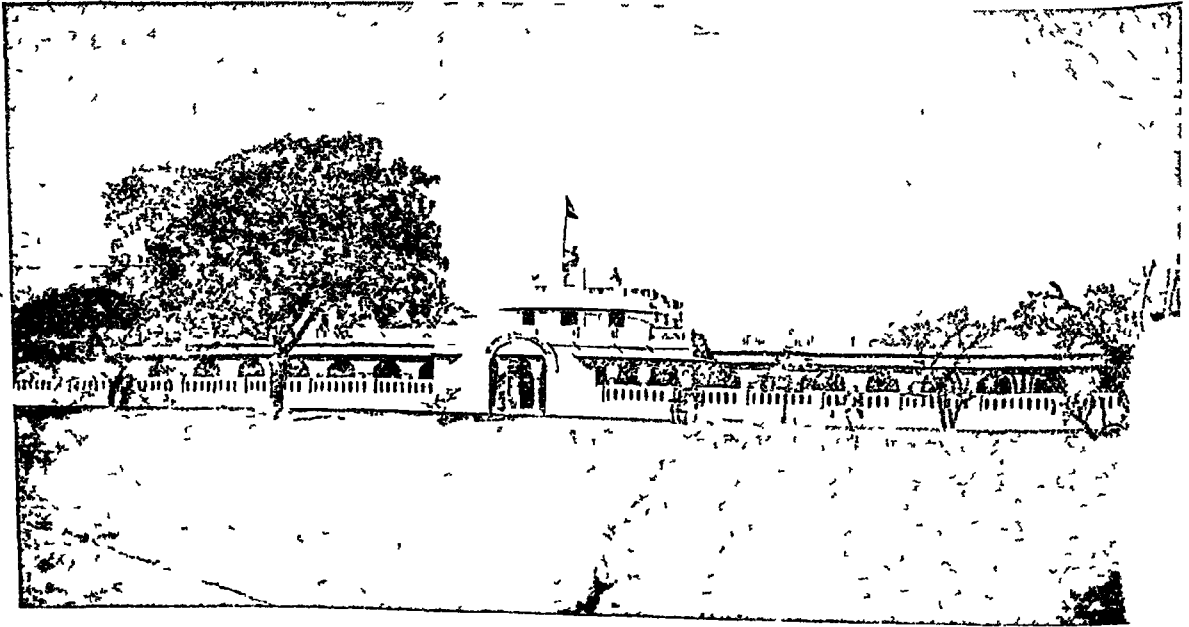
श्री जैन गुरुकुल विद्यामन्दिर भवन, व्यावर (राज्य)

स्व० शेठ शामजी भाई वीराणी, राजकोट

स्था० जैन समाजना दानवीर श्रीमन्तोमा राजकोटना सेठ शामजी भाई वीराणीनु अग्रस्थान छे तेओ परम श्रद्धालु मुनिभक्त अने क्रियारुचि वाला श्रावक हता। गृहस्थाश्रममा मोटा परिवार वाला होवा छता अनासक्त वृत्तिथी जीवन गालता हता। अनेक प्रकारना नियमो अने मर्यादामय जीवन हतु। स्वभावे विनम्र, दयालु अने उदार दिलना हता। राजकोटना 'वीराणी बापा' ने नामे सुप्रसिद्ध हता। लाखो रुपयानु दान अनेक प्रकारे विविध सस्थाओ ने तथा ज्ञाति भाईओ ने गुप्त दान करवामा तेओ सदा तत्पर रहेता। पुण्य योगे वीराणीजी ना सुपुत्रो श्रीमान् रामजी भाई, दुर्लभजी भाई अने, छगनलाल भाई, मणिलाल भाई, बधा सुशील, सुसस्कारी, धर्मप्रेमी उदार अने मातृ-पितृ भक्त छे।

वीराणी भाईओनी उदार सखावतो सौराष्ट्रमा प्रसिद्ध छे। एमनी सखावतो ने लीधेज राजकोटमा अने अन्यत्र भव्य उपाश्रयो, हाईस्कूलो, दवाखानाओ ऊभा थया छे। साहित्य प्रकाशन चाले छे। सैकडो साधर्मीओने सहायता आपे छे अने अनेक विद्यार्थिओने उत्तेजन आपे छे। आरीते सौराष्ट्रमा वीराणी भाइयोनी यशगाथा ए पुण्यवान पुरुष श्री वीराणी बापानो पुण्य प्रताप छे।

श्री जगजीवनदास शीवलाल देशाई, कलकत्ता

सायला (सौराष्ट्र) ना वतनी छे। तेओए विद्याभ्यास कलकत्तामा कर्यो हतो। आप बले आगल वधीने श्री जगजीवन भाई आजे कोलसाना मोटा व्यापारी छे। आर्थिक प्रगति साधवा साथे धर्मप्रेम अने समाज सेवामा पण एमनो आगेवानी भर्यो भाग होय छे। कलकत्ताना गुजराती स्थानकवासी जैन सघना १५ वर्ष थी मानद् मत्री छे। एमना मत्रीत्वमा श्री सघे खूबज प्रगतिसाधी छे। धर्मप्रेम तथा सेवाभाव एमधा विशेषता छे।

श्री धर्मपालजी मेहता, अजमेर

आप मूल निवासी भोपाल के है किन्तु आजकल अजमेर में ही रह रहे हैं। समाज की सुप्रसिद्ध सस्था श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर में अभ्यास करके विभिन्न विद्यालयो में कार्य करते हुए शिक्षा प्रचार में अच्छा योग दान दे रहे हैं। हिन्दी की शॉर्टहैण्ड का आपको अच्छा अभ्यास है। आपने स्व० जैन दिवाकरजी म० कविवर्य श्री अमरचन्दजी म०, उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म० आदि कई बडे-बडे मुनिराजो के व्याख्यानो की चातुर्मास में रिपोर्ट लेकर जैन साहित्य की अभिवृद्धि में सहयोग प्रदान किया है। आपके द्वारा लिखे गए व्याख्यानो से करीब २० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। 'महावीर की अमर-कहानिया' आपकी प्रसिद्ध रचना है। 'सन्तवाणी' मासिक पत्रिका का सचालन और सम्पादन भी कर रहे हैं। आप एक कुशल गायक, कवि तथा लेखक हैं। कॉन्फरस के स्वर्ण-जयती-ग्रन्थ के लेखन प्रूफ-सशोधन और सम्पादन कार्य में आपने अथक परिश्रम किया है। आप सरल स्वभावी तथा सादगी प्रिय धार्मिक व्यक्ति है। समाज को आप से बडी बडी आशाए हैं।

कॉन्फरन्स-स्वर्ण-जयन्ती-ग्रन्थ के लेखन-
सम्पादन-प्रूफ-संशोधन में
सक्रिय सहयोगी

● ● ●

श्री धर्मपालजी मेहता, अजमेर

श्री मुनीन्द्रकुमारजी जैन
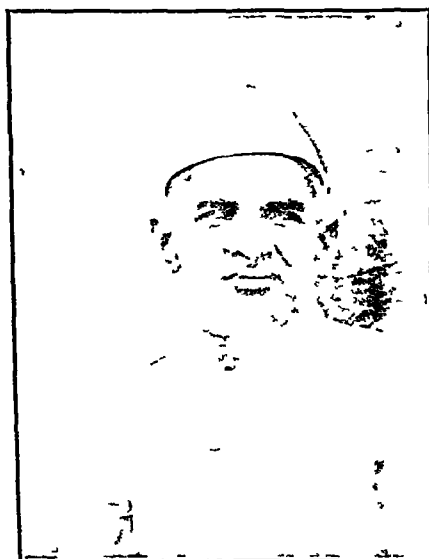
श्री प्राणजीवन भाई नारणजी भाई
पारख, राजकोट

लाला टेकचन्दजी
मालिक फर्म—गेंदामलजी हेमराजजी
नई दिल्ली व शिमला

● ● ●

श्री खेलशंकर भाई दुर्लभजी भाई
जौहरी जयपुर

राय बहादुर श्री मोहनलाल पोपटलाल, राजकोट

जगजीवनदास शिवलाल
सायला निवासी, कलकत्ता
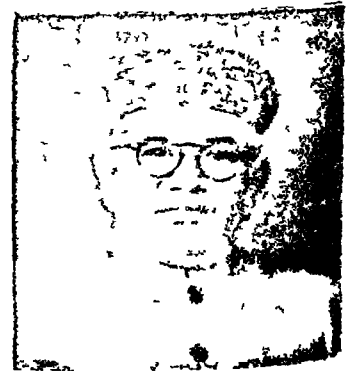
से० केशवजी भाई सवचन्द भाई
कलकत्ता
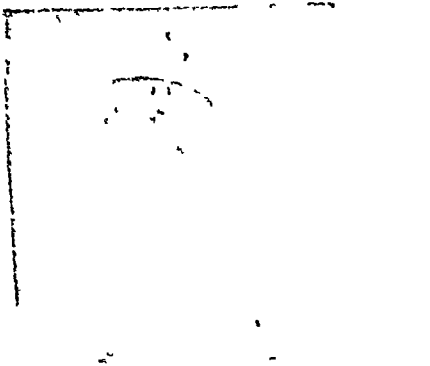
ज० सेक्रेटरी स्व० लाला गोकुल चन्दजी नाहर, दिल्ली

कॉन्फरन्स के पुराने और दीर्घकालीन नेता व सेवक, दिल्ली के अग्रणी जिन्होने 'महावीर भवन', महावीर हाईस्कूल आदि बनाकर दिल्ली का गौरव बढाया है।

श्री रतनलालजी कोटेचा बोदवड

स्व० सेठ चांदमलजी नाहर बरेली

आप धर्म-श्रद्धालु, मुनिभक्त और उत्साही दयावान श्रावक थे। आपने समय-समय पर समाज एव राष्ट्र की सेवा में सक्रिय सहयोग दिया है। बरेली (भोपाल) के जमींदार व श्रीमान् भी थे।
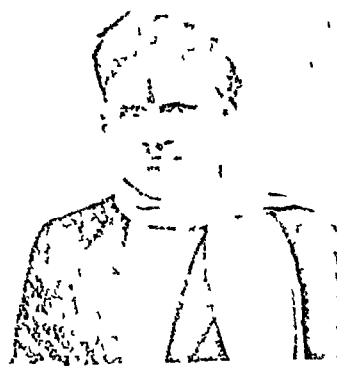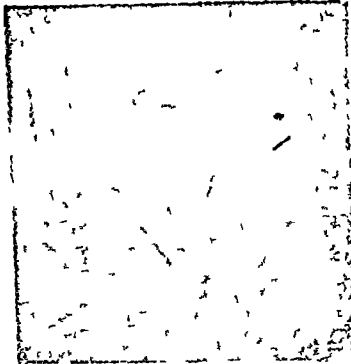
लाला अमरनाथ जी जैन कसूर

लाला नौतारामजी, दिल्ली

आप श्री जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला के भूतपूर्व अधिष्ठाता रह चुके हैं। वर्तमान में निवृत्त धर्ममय जीवन बिता रहे हैं।

मोतीलालजी साड बोदवड

स्व० रा० सा० टेकचन्दजी जेडियाला गुरु

आप पजाव के सुधारक और अग्रणी कार्यकर्ता थे। आपने अजमेर साधु सम्मेलन के समय अमूल्य सेवाएँ दी थीं।
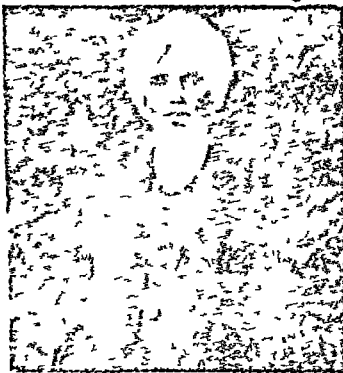
ला० रुपेशाह नत्थुशाह
स्यालकोट
पंजाब के धर्म प्रधान अग्रणी श्रावक

लाला त्रिभुवननाथजी,
कपूरथला
पंजाब के प्रतिष्ठित और अग्रणी सुधारक श्रीमान् हैं। आपने अजमेर सम्मेलन के समय बहुत सेवाएँ की थीं।

लाला मस्तरामजी जैन
वकील M A. अमृतसर
पंजाब के सुधारक, उत्साही अग्रणी कार्यकर्ता

लाला जगन्नाथजी जैन
न्नाग (बम्बई)
पंजाब के सुधारक एवं अग्रणी कार्यकर्ता कॉन्फरन्स की यथावसर सेवा करते रहते हैं।

श्रीरतनलालजी सुराणा बोदवड

स्व० श्री शामजी वेलजी
विराणी राजकोट

मध्यप्रदेश व बरार ओसवाल शिक्षण-समिति, नागपुर

ओसवाल विद्यार्थियो को शिक्षण में आगे बढाने के लिए छात्रवृत्तियाँ और लोन रूप से सहायता प्रतिवर्ष दी जाती है। इसकी कार्यकारिणी २१ सज्जनो की बनाई जाती है। उसमें आये हुए आवेदन पत्रो पर निर्णय होता है। सन् १९५५-५६ के सभापति श्री सुगनचन्दजी लूणावत, धामणगाँव तथा मन्त्री—श्री जेठमलजी कोठारी कामठी व श्री० केशरीचन्दजी धाडीवाल, नागपुर हैं।

श्री वर्द्धमान सेवाश्रम शान्ति भवन, उदयपुर

यह सेवाश्रम वर्षो से समाज की सेवा करता आ रहा है। ज्ञान का प्रचार, अनाथ, अपाहिज और निर्धन व्यक्तियो की सहायता करना आश्रम का मुख्य ध्येय रहा है। इस आश्रम के प्रयत्न से आदिवासियो के लिए 'श्री वर्द्धमान आदिवासी आश्रम' कोटडा (छावनी) में खोला गया है। आदिवासियो के जीवन सुधारने और आदर्श बनाने के लिए इस सस्था से सस्ता और उपयोगी प्रकाशन भी होता है। यहाँ से छोटी-मोटी कुल ७२ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

इस सेवाश्रम के सचालक समाज के पुराने, तपे हुए एव अनुभवी कार्यकर्ता श्री रतनलालजी मेहता हैं।

श्री श्वे० स्था० महावीर जैन पाठशाला, धार

यह सस्था धार (मध्यभारत) में प्रसिद्ध सस्थाओ में से है। यहाँ बालक-बालिकाओ में ठोस धार्मिक सस्कार डाले जाते हैं। कई आगन्तुक निरीक्षको ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशसा की है।

श्री कानजी शिवजी ओसवाल जैन बोर्डिंग, जलगॉव

इस सस्था का बीजारोपण दि० १२-१२-२५ को प्रातस्मरणीय विद्यावारिधि परम पूज्य स्व० मुनि श्री जवाहर लालजी म० के सदुपदेश से हुआ था। साथ ही प्र० वक्ता जैन दिवाकर स्व० प० मुनिश्री चौथमलजी म० के शुभागमन पर उनके स्नेह-सिचन से सिंचित होकर यह नन्हा-सा पौधा फूल उठा। इसकी प्रगतिशीलता से आकर्षित होकर समाज के गण्य मान्य दानवीरो ने आर्थिक सहायता प्रदान की। एक ओर सम्माननीय स्व० सेठ श्री सागरमलजी सा० लूकड सदृश इस सस्था के जनरल सेक्रेटरी पद पर सुशोभित होकर कई वर्षों तक कार्य करते रहे और दूसरी ओर श्री कानजी शिवजी एण्ड क० बम्बई वालो ने १५००१) रु० देकर सस्था के भाग्याकाश को और भी आलोकित कर दिया। परिणामस्वरूप सस्था का भव्य भवन भी बन गया। सस्था निरन्तर प्रगतिशील पथ पर बढ रही है।

श्री सेठ सागरमलजी लूकड चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा सचालित विभिन्न सस्थाएँ

१—श्री सागर जैन हाई स्कूल, २—श्री सागर धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय
३—श्री सागर-भवन ४—श्री सागर पार्क ५—श्री सागर व्यायामशाला

वर्तमान में उपरोक्त समस्त सस्थाओ का सचालन सुचारु रूपेण श्रीमान् स्व० श्री सागरमलजी सा० के ज्येष्ठ पुत्र श्री सेठ नथमलजी लूकड ने अपने अन्य तीनो भाइयो (श्री पुखराजजी, श्री मोहनलालजी तथा श्री चन्दनमलजी) के पूर्ण सहयोग से बडी योग्यता, दक्षता तथा दूरदर्शिता से कर रहे हैं। आप एक उत्साही, होनहार तथा कर्मठ नेता हैं। इस समय आप अन्य भी कितनी ही सामाजिक, धार्मिक तथा व्यापारिक सस्थाओ का सचालन बडी योग्यता से कर रहे हैं।

श्री जैन छात्रालय, अमरावती

मध्य प्रदेश के विदर्भ विभाग में अमरावती शिक्षा का बहुत बडा केन्द्र है। यहा पर लॉ, साइन्स, कॉमर्स, आर्ट, एग्रीकल्चर और आयुर्वेदिक कॉलेज भी हैं। अत विविध भागो से यहा छात्र शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते हैं,

जिनमें से कई छात्र जैन भी होते है। अत जैन विद्यार्थियो की सुविधा के लिए अमरावती के कुछ उदार सज्जन सन् १६४५ से एक बोर्डिग चला रहे थे। किंतु मकान की व्यवस्था ठीक न होने से लोगो का ध्यान इस ओर आर्काषित हुआ और श्री जैन शिक्षण समिति की स्थापना हुई। उसी समय स्व० सेठ श्री केसरीमलजी गुगलियाने अमरावती में माल टेकडी रोड पर स्थित अपने बगले के मैदान की जमीन जो २६५०० रकबे फीट है—बोर्डिंग भवन के लिए दे दी। और ट्रस्टडीड भी लिख दिया। वर्तमान में जो ८५ हजार की लागत का जैन बोर्डिग का भव्य भवन है उसके सस्थापक श्रीमान् गूगलियाजी ही है। ६ सज्जन इसके ट्रस्टी हैं जिन्होंने परिश्रम पूर्वक धन एकत्रित किया है — (१) श्री राजमलजी ललवानी, (२) श्री सुगनचन्दजी लूणावत (३) श्री केसरीमलजी गूगलिया (४) श्री ऋषमदासजी राका (५) श्री जवाहरलालजी मुणोत (६) श्री रघुनाथमलजी कोचर (७) श्री मिश्रीमलजी सामरा (८) श्री पीरचन्दजी छाजेड आदि-आदि। वर्तमान में बोर्डिग के व्यवस्थापक व गृहपति का कार्य रत्नकुमारजी कर रहे हैं।

स्थानकवासी जैन समाज के समाचार-पत्र

किसी भी राष्ट्र, समाज अथवा जाति के समाचार-पत्र उन्हे उठाने वाले अथवा गिराने वाले होते है। समाचारपत्रो का दायित्व महान् है। हमारी समाज में सामाजिक अथवा साहित्यिक पत्र-पत्रिकाए पढने की दिलचस्पी बहुत कम है। हम चाहते हैं कि अपनी समाज में सामाजिक पत्रो का विकास हो, उनका क्षेत्र महान् हो और वे सच्चे रूप में समाज का प्रतिनिधित्व करने वाले हो। हम अपनी समाज में अगुलियो पर गिनने लायक ही समाचारपत्र पाते हैं—इनमें मासिक हैं, पाक्षिक हैं, साप्ताहिक हैं।

१ जैन प्रकाश—अ० भा० श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फरस का यह मुखपत्र है। यह साप्ताहिक पत्र है और हिन्दी तथा गुजराती भाषा में १३६० चादनी चौक दिल्ली से प्रकट होता है।

सम्पादक—श्री धीरजलाल के० तुरखिया, श्री खीमचन्द भाई म० वोरा और प० शातिलाल व० शेठ हैं।

२ स्थानकवासी जैन —पाक्षिक-गुजराती भाषा में पचभाई की पोल, अहमदावाद से प्रकट होता है।

सम्पादक—श्री जीवनलाल छगनलाल सघवी।

३ रत्न ज्योत—शतावधानी प० श्री रत्नचन्दजी जैन ज्ञानमदिर का मुखपत्र, पाक्षिक गुजराती भाषा में सुरेन्द्रनगर (सौराष्ट्र) से प्रकट होता है। सपादक—"सजय" हैं।

४ तरुण जैन—साप्ताहिक, हिन्दी भाषा में, महावीर प्रेस, जोधपुर से प्रकट होता है।

सम्पादक—वाबू पदमसिंह जैन हैं।

५ जैन जागृति—पाक्षिक, गुजराती भाषा में राणपुर (सौराष्ट्र-झालावाड) से प्रकट होता है।

सम्पादक—श्री महासुखलाल जे० देसाई तथा श्री वचुभाई पी० दोशी हैं।

६ जिन वाणी—श्री सम्यक्-ज्ञान प्रचारक-मडल की तरफ से मासिक हिन्दी भाषा में चौडा बाजार, लालभवन, जयपुर से प्रकट होता है —

सम्पादक—श्री चपालालजी कर्नावट B A LL B, श्री शशिकान्त झा शास्त्री हैं।

७ जैन सिद्धान्त—जैन सिद्धान्त सभा का मुख पत्र, मासिक, गुजराती भाषा में शाति सदन, लेमिंगटन रोड, वम्वई से प्रकट होता है।

सम्पादक—श्री नगीनदास गि० शेठ हैं।

८ सम्यग्दर्शन—मासिक हिन्दी भाषा में सेलाना (म० भा०) से प्रकट होता है। सम्पादक श्री रतनलाल जी डोसी है।

९ श्रमण—श्री जैन सांस्कृतिक-मंडल का मुख-पत्र, मासिक हिन्दी भाषा में पार्श्वनाथ, जैनाश्र हिन्दू यूनिवर्सिटी, बनारस से प्रकट होता है। सम्पादक—प० श्री कृष्णचन्द्रजी शास्त्री है।

१० संत वाणी—मासिक पत्रिका हिंदी भाषा में अजमेर से प्रगट होती है। इसमें विद्वद् मुनिराजो तः त्यागी सन्तो के ही लेख प्रकाशित होते है। संचालक—प० श्री धर्मपालजी मेहता है।

प्रकाशन-संस्थाएँ

१ सेठिया जैन ग्रन्थमाला, बीकानेर
२ आत्म-जागृति-कार्यालय (श्री जैन गुरुकुल) ब्यावर
३ जवाहर साहित्य माला, भीनासर
४ जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति, रतलाम
५ अमोल जैन ज्ञानालय, धुलिया (पू० अमोलकऋषिजी म० के प्रकाशन)
६ स्थानकवासी जैन प्रकाशन, अहमदाबाद
७ शता रत्नचन्द्रजी महाराज के प्रकाशन, सुरेन्द्र नगर
८ लींबडी सम्प्रदाय के प० नानचन्द्रजी म० छोटालालजी म० के प्रकाशन
९ कच्छ के प्रकाशन—नागजी स्वामी, रत्नचन्दजी स्वामी इत्यादि के
१० लींबडी छोटे सिंघाडे के प्रकाशन पू० मोहनलालजी, मणीलालजी म० आदि के
११ प० मुनि श्री हस्तीमलजी म० सा० के प्रकाशन
१२ पूज्यश्री आत्मारामजी महाराज के प्रकाशन
१३ डॉ० जीवराज घेला भाई के प्रकाशन
१४ वालाभाई छगनलाल ठि० कीकाभ, अहमदाबाद
१५ दरियापुरी प० मुनिश्री हर्षचन्द्रजी म० आदि के प्रकाशन
१६ बोटाद सम्प्रदाय के मुनियो के प्रकाशन
१७ गोंडल सिंघाडे के मुनियो का प्रकाशन
१८ बरवाला सिंघाडे के मुनिवरो का प्रकाशन
१९ श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह के प्रकाशन
२० जैन कल्चरल सोसाइटी, बनारस के प्रकाशन
२१ सन्मति ज्ञानपीठ, लोहामण्डी, आगरा के प्रकाशन
२२ जैन गुरुकुल प्रेस, ब्यावर के प्रकाशन
२३ श्री महावीर प्रि० प्रेस, ब्यावर के प्रकाशन
२४ श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फरस के प्रकाशन
२५ प० शुक्लचन्दजी म० के प्रकाशन
२६ मरुधर प० मुनि मिश्रीमलजी म० और प० कन्हैयालालजी म० के प्रकाशन

२७ महासति पार्वतीजी म० सा० के प्रकाशन
२८ जैन सिद्धान्त सभा, बम्बई के प्रकाशन
२९ श्री रतनलालजी डोशी, सैलाना के प्रकाशन
३० जिनवाणी और सम्यक्-ज्ञान, प्रचारक समिति के प्रकाशन
३१ श्री मोतीलालजी राका, ब्यावर के प्रकाशन
३२ श्री वीराणी ट्रस्ट, राजकोट के प्रकाशन
३३ श्री ज्ञानोदय सोसाइटी, राजकोट के प्रकाशन
३४ श्री शास्त्रोद्धार प्रकाशन समिति के प्रकाशन
३५ प० मुनिश्री पुप्फभिक्खु के प्रकाशन
३६ श्री हितेच्छु श्रावक मण्डल, रतलाम के प्रकाशन

स्था० जैन समाज में मुख्यत उक्त सस्थाओ द्वारा प्रकाशन और साहित्य प्रचार का कार्य हो रहा हे। अन्य प्रकाशन भी होते रहते है। अनेक विद्वान् मुनिवरो का अप्रकट साहित्य भी मुनिवरो-महासतियाँजी और श्रावको के पास पडा है।

प्रकाशन की सूचियाँ जो मिल सकी है, वे उपर्रिलिखित है।

स्वर्ण-जयन्ती के अग्रिम ग्राहक वनने वालों की शुभ नामावली

१५) श्री कन्हैयालालजी भटेवडा, विजयनगर (राज०)
१५) ,, मनोहरलालजी पोखरना, चित्तौडगढ
१५) ,, रिखवचन्दजी सन्तोषचन्दजी, रामपुरा
१५) ,, खीमचन्दभाई मूलजी भाई, बुलसर
१५) ,, मोहनलाल पानाचन्द खोखानी, बरवाला
१५) ,, श्वे० स्था० जैन सघ, बोरवाड
१५) ,, श्वे० स्था० जैन सघ, बेरावल
१५) , त्रिकमजी लाधाभाई, जूनारदेव (इटारसी)
१५) , सेठ धारसीभाई भवेरचन्दभाई, अहमदावाद
१५) ,, सेठ लखमीचन्द भवेरचन्द, अहमदाबाद
१५) ,, केशवचन्द हरीचन्दभाई मोदी ३ प्रतियो के लिये, अहमदावाद
१५) ,, हीरालाल भाई लालचन्द भाई, अहमदावाद
४५) ,, श्वे० स्था० जैन सघ, मणीलार
१५) ,, जयदेवमलजी माणकचन्दजी, वागलकोट
१५) ,, हिम्मतलाल कस्तूरचन्द, वम्वई
१५) ,, चुन्नीलाल कल्याणजी कामदार, वम्वई
१५) ,, बापालाल रामचन्दभाई गाधी, घाटकोपर
१५) श्री ठाकरशीभाई जसराजभाई वीरा, वम्वई
१५) ला० मुसद्दीलाल ज्योतीप्रसादजी जैन, वम्वई
१५) सेठ लालचन्दजी चुन्नीलालजी, वम्वई
१५) सी० एम० जैन, वम्वई
१५) श्री श्वे० स्था० नर्धमान जैनसघ, भीम
१५) ,, रतनचन्दजी शेषमलजी, कन्दरा
१५) ,, नन्दलाल पोपटलाल, घाटकोपर
१५) ,, रमणीकलाल जेठालाल पारख, घाटकोपर
१५) ,, मगनलाल पी० डोशी, वम्वई
१५) ,, चुन्नीलालजी सौभाग्यचन्दजी, वम्वई
१५) मणीलाल भाई शाह,वम्वई
१५) विट्ठलदास पीताम्वरदास' वम्वई
१५) श्री वेस० श्या० जैन श्रावक सघ, कोट
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, वम्वई
१५) ,, गिरधरलाल हीराचन्द, वम्वई
१५) ,, सेठ लखमशी ओधाभाई, वम्वई
१५) ,, डॉ० वाडीलाल डी० कामदार, वम्वई
१५) मेसर्स हेमचन्द एण्ड कम्पनी, वम्वई

१५) सेठ अमोलकभाई अमीचन्द, बम्बई
१५) श्री मफतलाल ठाकरशी शाह, बम्बई
१५) ,, हिम्मतलाल जादवजी भाई कोठारी, मलाड
१५) ,, जया बहन, जामनगर
१५) ,, सेठ वल्लभजी खेताशीभाई, जामनगर
१५) ,, कालूभाई नवलभाई, जामनगर
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, ताल (राज०)
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, विजयनगर
१५) शाह भाईलाल मोहनलाल, बम्बई
१५) श्री भीखालाल मोतीचन्द सिघवी, बम्बई
१५) ,, रायचन्दभाई जगजीवनदास पारिख, बम्बई
१५) सेठ शातिलाल हेमचन्द सिघवी, बम्बई
१५) श्री केवलचन्दजी चौपडा, बम्बई
१५) मेसर्स शान्तिलाल रूपचन्द, बम्बई
१५) सेठ नागरदास नानजी भाई, बम्बई
१५) श्री रामजी भाई केशवजी भाई शाह, बम्बई
१५) श्री नाथालाल मानकचन्द पारिख, माटुगा
१५) ,, रामजी भाई इन्दरजी भाई, माटुगा
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन सघ, माटुगा
१५) ,, केशवलाल मूलचन्द भाई, माटुगा
१५) ,, सेठ लालदास भाई जमनादास भाई, बम्बई
१५) ,, सेठ वारीलाल अमरसी भाई, बम्बई
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन सघ, बम्बई
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन सघ, विले पारले (बम्बई)
१५) ,, गिरजाशकर उमाशकर मेहता, दादर
१५) ,, गिरधर दामोदर दफ्तरी, बम्बई
१५) ,, पोपटलाल पानाचन्द, बम्बई
१५) ,, वीरचन्द मेघजी भाई, बम्बई
१५) ,, मणीलाल वीरचन्द, बम्बई
१५) ,, अमृतलाल रायचन्द जौहरी, बम्बई
१५) ,, जमनादास हरकचन्द, बम्बई
१५) ,, मणीलाल केशवजी भाई, वाडिया
१५) ,, रामजी भाई हसराज भाई कमाणी, बम्बई
१५) ,, छोटालाल केशवजी भाई, बम्बई
१५) ,, जयचन्द भाई जमनादास भाई, बम्बई
१५) ,, प्राणलाल छगनलाल गोडा, बम्बई
१५) श्री मनसुखलाल विक्रमशीशाह, बम्बई
१५) ,, कोरशी भाई हीरजी भाई, बम्बई
१५) ,, लीलाचन्द प्रेमचन्द भाई, बम्बई
१५) ,, छोटालाल जगजीवनदास भाई, बम्बई
१५) ,, कामजी भाई लक्ष्मीचन्द, बम्बई
१५) ,, हरकचन्द त्रिभुवनदास, बम्बई
१५) ,, जयचन्द हसराज, बम्बई
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, बम्बई, २१
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, राती (मारवाड)
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, निम्बोल
१५) ,, बागमलजी जडावचन्दजी जैन, उमरकोट
१५) ,, स्थानकवासी जैन सघ, बिलरवा
१५) ,, वर्धमान श्रावक सघ, जोगीनगरा
१५) ,, वनिता बहन, जामबथली (सौराष्ट्र)
१५) ,, प्रीतमलाल पुरसोत्तम सेठ, जामनगर
१५) ,, वीसा श्रीमाली स्था० जैन सघ, जाम खम्भालिया (सौराष्ट्र)
१५) ,, सिंघवी विशनजी नारायणजी, जाम खम्भालिया
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, फूलिया (अजमेर)
१५) ,, टी० जी० शाह, बम्बई ३
१५) ,, रमणीकलाल दलीचन्द भाई, बम्बई
१५) ,, सेठ मनसुखलाल अमीचन्द, बम्बई
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, अन्धेरी (बम्बई)
१५) ,, हिम्मतलाल मगनलाल तुरखिया, बम्बई
१५) ,, जयचन्द भाई जसराज भाई वोरा, बम्बई
१५) ,, मागीलाल सेठिया, भीनासर
१५) ,, पोपटलाल कालीदास, राजकोट
१५) ,, उधवजी तलशी भाई डोसी, ध्रोल (सौराष्ट्र)
१५) ,, गाधी हीराचन्द नत्थूभाई, ध्रोल
१५) ,, महेता ऊधवजी भाई नारायणजी भाई, राजकोट
१५) ,, जेठाचन्द पानाचन्द पटेल, पडधरी
१५) ,, मनसुखलाल भाईचन्द भाई, बम्बई
१५) ,, गोकुलदास शिवलाल अजमेरा, बम्बई
१५) ,, हरजीवनदास त्रिभुवनदास, बम्बई
१५) ,, खीचन्दभाई सुखलाल भाई, दादर
१५) ,, रसिकलाल प्रभाशकर, बम्बई

१५) श्री अर्जुनलालजी भीमराजजी डागी, भीलवाडा
१५) ,, सेठ नागरदास त्रिभुवनदास, बम्बई
१५) ,, हरजीभाई उमरशीभाई, बम्बई
१५) ,, मणीलाल भाई शामजी भाई विराणी, बम्बई
१५) ,, हकीम बेनीप्रसादजी जैन, रामामण्डी
१५) ,, रत्न जैन पुस्तकालय, बोदवड
३०) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, बोदवड
१५) ,, फौजराजजी चुन्नीलालजी बागरेचा, बालाघाट
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन सघ, निम्बाहेडा
१५) ,, स्था० जैन सघ, लीवडी (सौराष्ट्र)
१५) ,, स्था० बडा उपाश्रय जैन सघ, लीवडी
१५) ,, सेठ जवानमलजी चादमलजी दुगड, जैतारण
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, इगतपुरी
१५) ,, कन्हैयालालजी साहूकार, आरकोनाम
६०) ,, वर्धमान स्था० जैन सघ, नागपुर
१५) ,, रूपचन्दजी चौधरी, रामपुरा
१५) ,, जैन जवाहर मडल, देशनोक
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, विलाडा
१५) ,, मन्त्रीजी श्री जैन गुरुकुल, राजनोदगाव
१५) ,, शिवचदजी अमोलकचदजी कोटेचा, शिवपुरी
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, शिवपुरी
१५) ,, जौहरी केसरीमलजी घीसूलालजी, जयपुर
१५) ,, हजारीलालजी रामकल्याणजी जैन, सवाई माधोपुर
१५) ,, मागीरामजी छगनलालजी, कोटा
१५) ,, नाथूसिहजी बछराजजी, कोटा
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन सघ, रायचूर
१५) ,, सम्पतराजजी सिंघवी, वकाती
१५) ,, चादमलजी सा० जैन, वकाती
१५) ,, गुलाबचन्दजी पूनमचन्दजी सा० जैन, रायपुर
१५) , रमेशचन्द दयाचन्दभाई जैन, रामगज मडी
१५) ,, कन्हैयालालजी बोहरा, भिवानीगज मडी
१५) ,, सम्पतराजजी धारीवाल, रायपुर
१५) श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, गगाधर
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन सघ, आलोट
१५) ,, मेसर्स मोतीरामजी केवलरामजी, महीदपुर
१५) , वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, नागदामडी
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन सघ, उन्हेल (उज्जैन)
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन सघ, उग (झालावाड)
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन सघ, नलखेडा
१५) ,, दलीचन्दजी ओकारचन्दजी राका, सैलाना
१५) श्री वर्धमान स्था० जैन सघ, वारा (राजस्थान)
१५) ,, पारख ब्रदर्स नासिक सिटी
१५) ,, शभुलाल कल्याणजी भाई, माटु गा
१५) ,, मलूकचद झवेरचद मेहता, बम्बई
१५) ,, चिमनलाल अमरचद सिघवी, दादर
१५) ,, उम्मेदचद काशीरामभाई, बम्बई
१५) ,, खुशालदासभाई खगारभाई, बम्बई
१५) ,, चिमनलाल पोपटलाल शाह, बम्बई
१५) ,, जगजीवनलाल सुखलाल अजमेरी, बम्बई
१५) ,, हरीलालभाई जयचदभाई डोशी, घाटकोपर
१५) ,, शादीलालजी जैन, बम्बई
१५) , नथमलजी बाठिया, बीकानेर
१५) ,, प्रतापमलजी फूलचन्दजी बनवट, आष्टा (भोपाल)
१५) ,, चादमलजी मिश्रीलालजी, भोपाल
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन सघ, बडोद
१५) ,, विलायतीरामजी जैन, नई दिल्ली
१५) ,, घासीलालजी पाचूलालजी, उज्जैन
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन सघ, उज्जैन
१५) ,, सुगनचन्दजी चुन्नीलालजी लुनावत, धामणगाव
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन सघ, कुशलगढ
१५) ,, जोरावरमलजी प्यारेलालजी, थादला
१५) ,, रिखबचन्दजी दौलाजी घोडावत, थादला
१५) ,, जेठमलजी बक्तावरमलजी साड, इन्दौर
१५) ,, सोहनलालजी भूरा, मोरियावाडी (आसाम)

मुद्रक

पेज नं० १ से ७०० तक एशियन प्रेस, फैज बाजार, दिल्ली। गुजराती, जन्मभूमि प्रेस, बम्बई। पेज नं० १ से १६०+७६ तक नवीन प्रेस, दिल्ली।

प्रकाशक

आनन्दराज सुराना एम० एल० ए०, प्रधानमंत्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स, १३६० चाँदनी चौक दिल्ली।
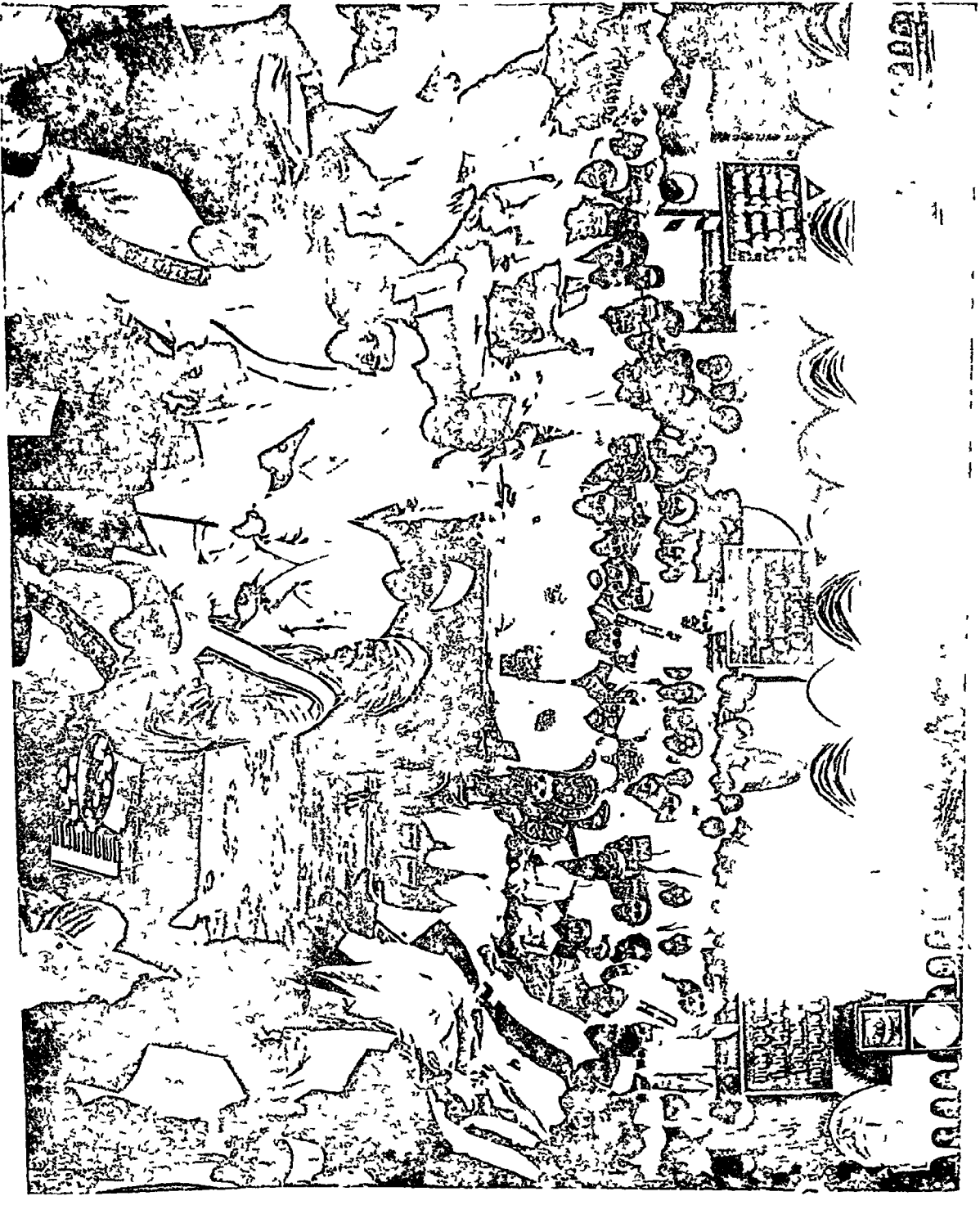
श्री भैरोंदान जी सेठिया की अध्यक्षता में बम्बई (माधव बाग) के अधिवेशन का एक दृश्य

बबई मे हुई कान्फरन्स की जनरल कमिटी की एक बैठक
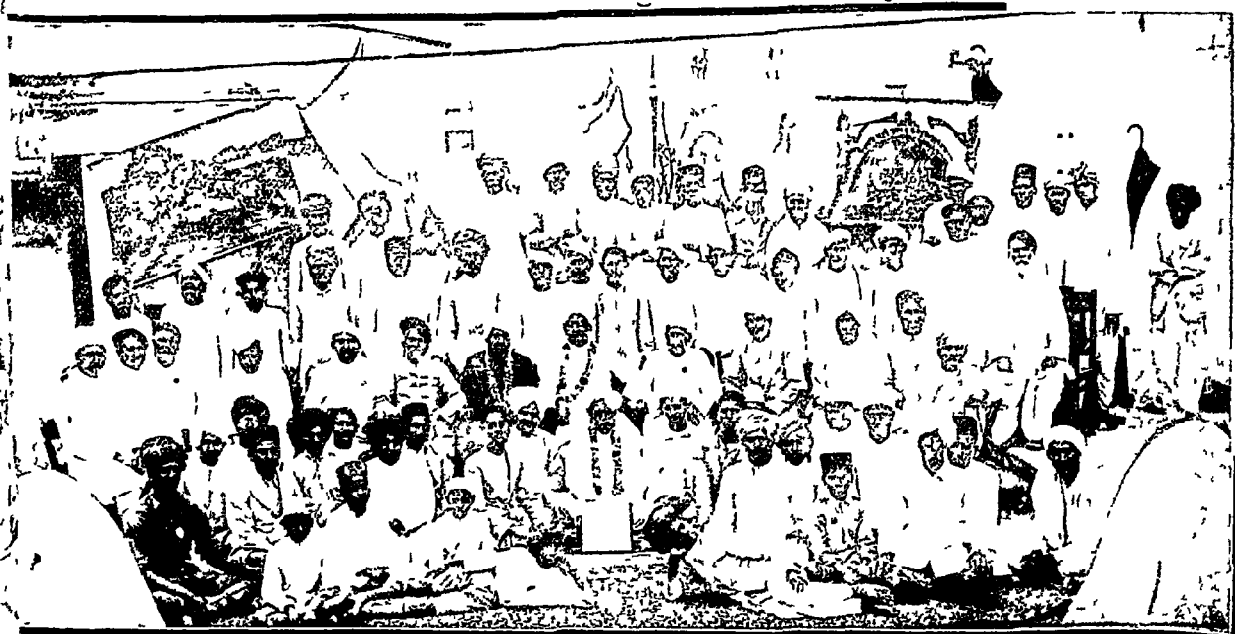
श्री हेमचंद्र भाई मेहता के नेतत्व मे कान्फरन्स का एक शिष्ट मण्डल

શ્રી અખિલ ભારતવર્ષીય શ્વે. સ્થા જૈન કોન્ફરન્સ

સુવર્ણ-જયન્તી ગ્રંથ

ગુજરાતી વિભાગ

આમુખ

શ્રી અખિલ ભારતવર્ષીય શ્વેતામ્બર સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સના પચાસવર્ષીય સ્વર્ણ-જયન્તી અધિવેશનના શુભ પ્રસંગે કોન્ફરન્સના સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ-ગ્રન્થને પ્રકાશિત કરતા અમોને ઘણો જ હર્ષ થાય છે આ ઇતિહાસના પ્રકાશનનો પણ એક નાનકડો ઇતિહાસ છે આજથી લગભગ ૭ મહિના પહેલાં કોન્ફરન્સના ઇતિહાસને પ્રકાશિત કરવાનો વિચાર ઉત્પન્ન થયો અને ત્યારે જ તે વિચારને મૂર્તરૂપ આપવાનો નિર્ણય પણ કરવામાં આવ્યો કોઇ પણ ઇતિહાસના આલેખનને માટે હોવી જોઇતી લેખન-સામગ્રી, વ્યવસ્થિત સંપાદિત કરવાની સમય-મર્યાદા તથા જૈન સંઘોની સહાનુભૂતિ હોવી નિતાન્ત આવશ્યક છે, પરંતુ સમયાભાવ તથા કાર્યાધિક્યને કારણે આ સ્વર્ણ જયન્તી-ગ્રન્થને જોઇએ તેવો સમૃદ્ધ અને જ્ઞાનસભર-માહિતીપૂર્ણ બનાવી શકયા નથી, એ માટે અમને ખેદ થાય છે, છતા પણ અમે આ ગ્રન્થને વિશેષ ઉપયોગી બનાવવા માટે યથાશકય પ્રયત્ન અવશ્ય કર્યો છે અમે જાણીએ છીએ કે આ સ્વર્ણ જયન્તી-ગ્રન્થને ચિરસ્મરણીય બનાવવા માટે તેની અન્તર્ગત અનેક વિષયોનો સમાવેશ કરવો અત્યાવશ્યક હતો, પરંતુ અમને યથાસમય શ્રાવક-સંઘો, શ્રીમંતો, વિદ્વાનો, સંસ્થાઓના પરિચયપત્રો ન મળવાને કારણે અમે બધાનો યથાસ્થાને સમાવેશ કરી શકયા નથી, એ માટે અમે ક્ષમાર્થી છીએ. અમને વિશ્વાસ છે કે આ નાનકડો સ્થા. સમાજનો ઐતિહાસિક ગ્રન્થ સ્થાનકવાસી જૈન સમાજનો સર્વાંગસુંદર ભાવિ માહિતી ગ્રન્થ તૈયાર કરવામા ઉપયોગી સિદ્ધ થશે.

આ ગ્રન્થ નીચે જણાવેલ પરિચ્છેદોમાં વિભક્ત કરવામા આવેલ છે —

(૧) જૈન સંસ્કૃતિ, ધર્મ, તત્ત્વજ્ઞાન આદિનો સંક્ષિપ્ત પરિચય
(૨) સ્થા જૈન ધર્મનો સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ.
(૩) સ્થા જૈન કોન્ફરન્સનો સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ.
(૪) સ્થા જૈન કોન્ફરન્સની વિશિષ્ટ પ્રવૃત્તિઓ.
(૫) સ્થા. જૈન સાધુ-સમ્મેલનનો સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ
(૬) સ્થા જૈન ધર્મના ઉન્નાયક મુનિરાજો
(૭) સ્થા જૈન ધર્મના શ્રાવકો
(૮) સ્થા. જૈન સંસ્થાઓ તથા સંઘો.

સંક્ષેપમાં આ સ્વર્ણ-જયન્તી-ગ્રન્થમા સ્થાનકવાસી જૈન સમાજના ચતુર્વિધ શ્રીસંઘનો સંક્ષિપ્ત પરિચય આપવાનો યથાશકય પ્રયત્ન કરવામા આવ્યો છે

આ ગ્રન્થમા સારસારનો હંસબુદ્ધિથી વિવેક કરવાની તથા સાર-વસ્તુને ગ્રહણ કરી, રહી ગએલી ત્રુટિઓ કે સ્ખલનો માટે યોગ્ય સૂચનો મોકલવાની વિનમ્ર પ્રાર્થના છે, જેથી ભવિષ્યમા તેનો સદુપયોગ કરી શકાય

જે જે ધર્મપ્રેમી બંધુઓએ આ ગ્રન્થનુ ગૌરવ વધારવામા પોતાનુ નામ અગ્રિમ-ગ્રાહક શ્રેણીમા લખાવી તથા લેખન, સંશોધન તથા પ્રકાશન આદિ કાર્યોમા સક્રિય સહકાર આપ્યો છે તે સર્વેના આભાર માનવાની આ તક લઇએ છીએ

ચાંદની ચોક,
દિલ્હી, તા. ૨૯-૩-૫૬

નિવેદકો —
ભીખાલાલ ગિરધરલાલ શેઠ
ધીરજલાલ કે તુરખિયા

અનુક્રમણિકા

વિષય	પૃષ્ઠ

જૈન ધર્મનો સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ

૧. આદિ યુગ

આદિ યુગનો પ્રારભ પ્રાચીનતમ છે. તે જેટલો પ્રાચીન છે તેટલો જ અજ્ઞાત પણ છે માનવ-સભ્યતાનો અરુણોદય થયો તે દિવસને આદિકાળનો પ્રથમ દિવસ માની લઇએ તો તે અનુચિત નથી

આ યુગનુ નામ ભગવાન આદિનાથના નામ ઉપરથી આદિ યુગ રાખવામા આવ્યુ છે

ભગવાન આદિનાથ, આર્ય સસ્કૃતિના સૃષ્ટા, વર્તમાન અવસર્પિણી કાળમા જૈન-ધર્મના પ્રથમ સસ્થાપક, પરમ દાર્શનિક અને માનવ સભ્યતાના જન્મદાતા તરીકે પ્રસિદ્ધ છે

વર્તમાન ઇતિહાસ ભગવાન ઋષભદેવ (આદિનાથ)ના વિષયમા મૌન છે. કારણ કે ઇતિહાસકારની દૃષ્ટિ ૨૪૦૦૦ વર્ષથી પહેલાના સમયમા પહોચી શકવા અસમર્થ છે

આથી ઋષભદેવના વિષયમા જાણવા માટે આપણે જૈન શાસ્ત્રો, વેદ, પુરાણ અને સ્મૃતિગ્રથોનો આશ્રય લેવો પડે છે

ભગવાન ઋષભદેવના સબધમા વૈદિક સાહિત્યમાથી ઘણા ઉલ્લેખ પ્રાપ્ત થાય છે શ્રીમદ્ ભાગવતના પાચમા અને બારમા સ્કધમા તેમના વિષે વિસ્તૃત ઉલ્લેખ છે આ પ્રસગમા ભગવાન ઋષભદેવને મોક્ષ ધર્મના આદ્ય પ્રવર્તક માનવામા આવ્યા છે

ભગવાન ઋષભદેવના સમયને જૈન ધર્મમા 'યુગલિયા-કાળ' કહેવામા આવ્યો છે પુરાણોમા પણ એમજ કહેવામા આવ્યુ છે વેદમા યમ-યમીના સવાદથી પણ જૈન ધર્માનુકુળ વર્ણનની સત્યતા સાબિત થાય છે

તે યુગના માનવીઓ પ્રાકૃતિક જીવન જીવતા અને તેમનુ મન પ્રકૃતિજન્ય દશ્યો અને સમૃદ્ધિઓમા જ રાચતુ તે વખતના મનુષ્યો સરળ-સ્વભાવી હતા અને તેમની વ્યવસ્થા ઘણીજ સરળ હતી તેમનો નિર્વાહ પ્રકૃતિએ પેદા કરેલા કલ્પવૃક્ષો વડે થતો એક જ માબાપથી જોડલા રૂપે જન્મતા પુત્ર-પુત્રીઓ દપતી બનતા અને જીવન વહન કરતા

ધીમે ધીમે કલ્પવૃક્ષો અલ્પ ફળદાયી બનવા લાગ્યા અને યુગલિયાઓમા કલહ અને અસતોષ ફેલાવા માડયો આ સમયમા ભગવાન ઋષભદેવનો જન્મ થયો તેમણે લોકોને માત્ર કુદરતના આધારે ન બેસી રહેતા, સ્વાવલબી થવાનો ઉપદેશ આપ્યો લોકોને અસિ, મસિ, અને કૃષિ, આદિ જીવનનિર્વાહના સાધનો અને જીવનને ઉપયોગી ચીજો બનાવવાનુ શીખવ્યુ મતલબ કે યુગલિયા-યુગનુ નિવારણ કર્યું.

એક જ માબાપના સતાનો વચ્ચે જે દાપત્યજીવન જીવાતુ તેનુ પણ નિવારણ કરી ભગવાન ઋષભદેવે લગ્નપ્રથા દાખલ કરી. તેમની સાથે જોડલે જન્મેલી સુમગલા નામની સહોદરા તો તેમના દામ્પત્યજીવનની ભાગીદાર હતી જ, પરતુ વ્યવસ્થિત લગ્નપ્રથાને જન્મ આપવા અને તેને વ્યાપકરૂપ આપી વસુધૈવ કુટુમ્બકમ્‌ની ભાવનાને વિકસાવવા, એક સુનદા નામની કન્યા સાથે તેમણે વિધિપુરસર લગ્ન કર્યા આ કન્યા પોતાના જન્મ સાથીના અવસાનને લીધે હતોત્સાહ અને અનાથ બની ગઇ હતી આ કાળમા, આ ક્ષેત્રમા વિધિસરના લગ્ન પ્રથમ આ જ હતા.

આ બન્ને સ્ત્રીઓથી તેમને ભરત અને બાહુબલિ આદિ સો પુત્રો અને બ્રાહ્મી અને સુદરી નામની બે કન્યાઓની પ્રાપ્તિ થઇ

વર્તમાન સસ્કૃતિના આદ્ય પુરુષને પ્રાપ્ત થએલ આ પરમ સૌભાગ્યને લીધે આજે પણ 'શત પુત્રવાન્ ભવ'નો આશીર્વાદ આપવામા આવે છે

ભગવાન ઋષભદેવનુ જન્મસ્થાન અયોધ્યા નગરી હતુ જેનુ બીજુ નામ વિનીતા પણ હતુ તેમનો જન્મ ત્રીજા આરાના અત ભાગે ચૈત્ર વદી અષ્ટમીના રોજ મધ્ય રાત્રિએ, ઉત્તરાષાઢા નક્ષત્રમા નાભિકુલકરની રાણી મરુદેવાની કુક્ષિએ થયો હતો

ભગવાન ઋષભદેવના રાજ્ય-અમલનો સમય નિર્માણ કાળ કહી શકાય કારણ કે તેમના જ્યેષ્ટ પુત્ર ભરત યૌવનાવસ્થામા હોઇ રાજ્યાધિકારી બનવાના માર્ગે અગ્રેસર બની રહ્યા હતા અને રાજ્ય નીતિમા નિપુણ હતા બાહુબલિની શારીરિક બલિષ્ઠતા તે સમયના વીરોમા સ્પર્ધાનો વિષય બની ચૂકી હતી

ભગવાન ઋષભદેવની પુત્રી બ્રાહ્મીએ બ્રાહ્મી-લિપિનો આવિષ્કાર કર્યો હતો અને સુદરીએ ગણિત વિદ્યાનુ પ્રચલન કર્યું હતુ

ભગવાન ઋષભદેવ, આત્મદર્શી અને વસ્તુ તત્ત્વવિજ્ઞાતા હતા ભારતમા કલ્યાણકારી લોકો માટે એક સુયોજિત મોક્ષ-માર્ગ સ્થાપિત કરવા ચાહતા હતા આથી તેમને

સસાર પ્રત્યે વૈરાગ્યભાવ પ્રગટ થાય એ સ્વભાવિક છે તેમણે પોતાનુ રાજ્ય પોતાના પુત્રોને વહેચી આપ્યુ અને સસારનો ત્યાગ કરી ચાર હજાર પુરુષો સાથે સયમ અગીકાર કર્યો

એક હજાર વર્ષ સુધી આત્મસાધના અને તપશ્ચર્યા કરતા એક સ્થળેથી બીજે સ્થળે અને જનપદ વિહાર કરતા છેવટે પુરિમતાળ નગરમા તેઓને કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત થયુ કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ બાદ તેમણે ચતુર્વિધ સઘરૂપી તીર્થની સ્થાપના કરી આ કારણે આ સવસર્પિણી કાળમા તેઓ આદિ તીર્થંકર કહેવાયા, વૈદિકશાસ્ત્રો મુજબ તે પ્રથમ 'જિન' બન્યા અને ઉપનિષદો મુજબ તેઓ બ્રહ્મા તથા ભગવાન પદના અધિકારી તથા પરમપદ પ્રાપ્ત કરનાર સિદ્ધ, બુદ્ધ અને અજર–અમર પરમાત્મા થયા

છદ્મસ્થાવસ્થા અને કેવળજ્ઞાનીપણે મળી કુલ એક લાખ પૂર્વ જેટલા દીર્ઘ સમય પર્યંત સયમ પાળી અષ્ટાપદગિરિ ઉપર પદ્માસને સ્થિત થઇ અભિજીત નક્ષત્રમા તેઓ પરિનિર્વાણને પામ્યા

૨. ભરત અને બાહુબલિ

ભગવાન ઋષભદેવના આ બને પુત્રોના નામ જૈન ગ્રથોમા ઘણા સુવિખ્યાત છે

ભરતના નામ ઉપરથી આ ક્ષેત્રનુ નામ 'ભરત' યા ભારત પડયુ છે ભરત આ અવસર્પિણી કાળના સર્વપ્રથમ ચક્રવર્તી રાજા હતા તેમની સત્તા સ્વીકારવા તેમના ભાઇ બાહુબલિ તૈયાર નહોતા બાહુબલિ પોતાના બળ ઉપર મુસ્તાક હતા આને પરિણામે બને વચ્ચે યુદ્ધ થયુ આ યુદ્ધ જૈન શાસ્ત્રોમા સૌથી પ્રાચીન યુદ્ધ–ઘટના ગણાય છે

આ સમયે જો કે સેનાઓનુ નિર્માણ થઇ ચૂકયુ હતુ, તો પણ માનવજાતિનો નિરર્થક વિનાશ કરવાનુ તે વખતે મનુષ્યો યોગ્ય સમજતા ન હતા

આથી પાચ પ્રકારના યુદ્ધ નક્કી થયા હતા જેવા કે ૧ દૃષ્ટિયુદ્ધ ૨ નાદયુદ્ધ ૩ ભૂમિયુદ્ધ ૪ ચક્રયુદ્ધ અને ૫ મુષ્ટિયુદ્ધ

દૃષ્ટિયુદ્ધમા જે પહેલા આખ બધ કરે તે હારી જાય

નાદ–યુદ્ધમા જેનો અવાજ નિર્બળ હોય તે હારી જાય, યથા જેનો અવાજ મોટો અને વધુ વખત ટકે તે જીતે

વિશ્વના લોકો વૈજ્ઞાનિક શોધખોળોનો આશ્રય લઇ અગણિત માનવસહાર યુદ્ધમા કરે છે, તેને બદલે આવા નિર્દોષ યુદ્ધ થાય તો માનવજાતનુ શ્રેય થાય! ભૂમિયુદ્ધ, ચક્રયુદ્ધ અને મુષ્ટિયુદ્ધ જેવા હિસક યુદ્ધો તે કાળે પણ જો કે હતા ખરા, પણ તેનો આશ્રય છેક છેલ્લે અને ન છૂટકે જ લેવામા આવતો

ચોથા યુદ્ધમા ભરતે ચક્ર છોડયુ, પરતુ ભાઇઓમા તેની અસર થાય નહિ એટલે તે પાછું ફર્યું

છેલ્લા યુદ્ધમા બાહુબળીએ ભરતને મારવા માટે મુઠ્ઠી ઉગામી, પરતુ તુરત તેને વિવેક જાગ્રત થયો અને ઘડે સમજાવ્યા એટલે તેમણે મુઠ્ઠી ઉપર જ રોકી લીધી. જો એ મુષ્ટિનો પ્રહાર થયો હોત તો ભરત કયા લુપ્ત થઇ જાત તેનો પત્તો પણ લાગત નહિ, એવુ બાહુબળીનુ અમાપ બળ હતુ, એમ કહેવાય છે

બાહુબળી માટે ઘા કરવા માટે ઉપાડેલો હાથ એમને એમ પાછો ફરે એ પણ અસહ્ય હતુ તેથી તેમણે સામાનો કે પોતાનો ઘાત કરવા કરતા તે મુષ્ટિનો ઉપયોગ અભિમાનનો ઘાત કરવામા કર્યો તેમણે તે હાથે કેશ લુચન કર્યું અને સાધુવ્રતી બન્યા

આમ આ ક્ષેત્રના સર્વપ્રથમ સમ્રાટ્ બનવાનુ સૌભાગ્ય ભરતને મળ્યુ.

ભરતને અગેનુ વિસ્તૃત વર્ણન જૈન જનતાના ગ્રથોમા મળી આવે છે

૩. ઋષભદેવ પછીના બાવીસ તીર્થંકરો

ભગવાન ઋષભદેવ પછીના બાવીસ તીર્થંકરોનો ઇતિહાસ બનવાજોગ છે કે ઘણો મહત્ત્વપૂર્ણ હોય, પરતુ તે સબધમા વિસ્તૃત હકીકતો મળી શકતી નથી એટલે તેમના નામો અને સામાન્ય હકીકત જ અત્રે આપવામા આવે છે.

	નામ	પિતા	માતા	સ્થાન
૨	અજીતનાથ	જિતશત્રુ	વિજયાદેવી	અયોધ્યા
૩	સભવનાથ	જિતારિરાજા	સેનાદેવી	શ્રાવસ્તી
૪	અભિનદન	સવરરાજા	સિદ્ધાર્થરાણી	વિનિતા
૫	સુમતિનાથ	મેઘરથરાજા	સુમગલા	કચનપુરી
૬	પદ્મપ્રભુ	ધરરાજા	સુસિમા	કૌશામ્બી
૭	સુપાર્શ્વનાથ	પ્રતિષ્ઠેન	પૃથ્વી	કાશી
૮	ચદ્રપ્રભુ	મહાસેન	લક્ષ્મા	ચદ્રપુરી
૯	સુવિધિનાથ	સુગ્રીવ	રામાદેવી	કાકદી
૧૦	શીતલનાથ	દૃઢરથ	નદારાણી	ભદ્દીલપુર

	નામ	પિતા	માતા	સ્થાન
૧૧	શ્રેયાંસનાથ	વિષ્ણુસેન	વિષ્ણુદેવી	સીંહપુર
૧૨	વાસુપૂજ્ય	વસુપૂજ્ય	જયાદેવી	ચંપાપુરી
૧૩	વિમળનાથ	કૃતવર્મ	શ્યામા	કંપિલપુર
૧૪	અનંતનાથ	સિંહસેન	સુયશા	અયોધ્યા
૧૫	ધર્મનાથ	ભાનુરાજા	સુવ્રતા	રત્નપુર
૧૬	શાંતિનાથ	વિશ્વસેન	અચિરા	હસ્તિનાપુર
૧૭	કુંથુનાથ	સુરરાજા	શ્રીદેવી	,,
૧૮	અરનાથ	સુદર્શનરાજા	શ્રીદેવી	,,
૧૯	મલ્લિનાથ	કુંભરાજા	પ્રભાદેવી	મિથિલાનગરી
૨૦	મુનિસુવ્રત	મિત્રરાજા	પદ્માવતી	રાજગૃહી
૨૧	નમિનાથ	વિજયસેન	વપ્રા	મિથિલા-મથુરા
૨૨	નેમનાથ (અરિષ્ટનેમી)	સમુદ્રસેન	શિવાદેવી	દ્વારિકા
૨૩	પાર્શ્વનાથ	અશ્વસેન	વામાદેવી	બનારસ

આ બાવીસ તીર્થંકરો પૈકી ૧૬ મા શાંતિનાથ, ૧૭ મા કુંથુનાથ અને ૧૮ મા અરનાથ–આ ત્રણ તીર્થંકરો તેમના રાજ્યકાળ દરમ્યાન ચક્રવર્તી હતા

૧૯ મા મલ્લિનાથ સ્ત્રી રૂપે હતા. જૈન ધર્મમા સ્ત્રીઓ પણ તીર્થંકર થઇ શકે છે, એ સત્યનુ આ સર્વશ્રેષ્ઠ પ્રમાણ છે જગતના કોઇપણ ધર્મમા સ્ત્રીને ધર્મ સંસ્થાપક તરીકેનુ મહત્ત્વ અપાયુ નથી આ એક જૈન ધર્મની ખાસ વિશિષ્ટતા છે

૨૦ મા મુનિસુવ્રત તીર્થંકરના સમયમા શ્રીરામ અને સીતા થયા હતા

બાવીસમા અરિષ્ટનેમી (નેમનાથ)ના વખતમા નવમા વાસુદેવ શ્રીકૃષ્ણ થયા હતા

અરિષ્ટનેમી લગ્ન કરવા જતા હતા ત્યારે રસ્તામા ભોજનને માટે લાવવામા આવેલા પશુઓનો કરુણ ચિત્કાર સાભળી, પશુઓને બચાવવા, લગ્નના માંડવેથી પાછા ફર્યા અને પરમકલ્યાણકારી સંયમ ધર્મ અંગીકાર કર્યો

તેમની અને કૃષ્ણ વાસુદેવ વચ્ચેની વાતચીતના પ્રસંગો જૈનાગમોમા ઘણા મળી આવે છે

ત્રેવીસમા તીર્થંકર પાર્શ્વનાથે પશુ સંરક્ષણ અને જીવદયા કેટલી આવશ્યક છે તે બતાવ્યુ. તેમનો અને કમઠ તાપસનો પ્રસંગ જૈન ધર્મગ્રંથોમા સુપ્રસિદ્ધ છે

૪. ભગવાન મહાવીર

ભગવાન પાર્શ્વનાથ પછી ૨૫૦ વર્ષે આજથી ૨૫૫૩ વર્ષ પૂર્વે ચોવીસમા પરમ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીરનો જન્મ ચૈત્ર શુક્લા ત્રયોદશીના દિવસે, ક્ષત્રિયકુંડ નગરના રાજા સિદ્ધાર્થની રાણી ત્રિશલાદેવીની કુક્ષિએ થયો હતો. તેમનુ જન્મનુ નામ વર્દ્ધમાન હતુ

બાલસુલભ ક્રિડાઓ કરતા કરતા તેઓ યુવાવસ્થાને પામ્યા તેમના લગ્ન યશોદા નામની એક રાજકન્યા સાથે કરવામા આવ્યા હતા લગ્નના ફળરૂપે પ્રિયદર્શના નામની એક કન્યાની તેમને પ્રાપ્તિ થઇ હતી

તેમના માતપિતા દેવલોક પામ્યા પછી તેઓ દીક્ષા લેવા તૈયાર થયા પરંતુ તેમના મોટા ભાઇ નંદીવર્ધને થોડોક વખત રોકાઇ જવાનુ કહ્યુ. પિતાની ગેરહાજરીમા મોટા ભાઇની આજ્ઞાનુ પાલન નાના ભાઇએ કરવુ જોઇએ, એ આદર્શને મૂર્તિમંત બનાવવા શ્રી વર્દ્ધમાન બે વરસ સુધી રોકાઇ ગયા, અને તે સમય દરમ્યાન સચિત્તજળ ત્યાગ આદિ તપશ્ચર્યા આદરી, સંયમ માટેની પ્રાથમિક તૈયારીઓ કરતા રહ્યા છેવટે, એક વર્ષ સુધી વાર્ષિક દાન દઇ તેઓએ દીક્ષા અંગીકાર કરી

દીક્ષા લીધા બાદ સાડાબાર વર્ષ અને એક પક્ષ સુધી મહાવીરે ઘોર તપશ્ચર્યાઓ કરી, તેને પરિણામે ચાર ઘનઘાતી કર્મોનો ક્ષય થઇ, જૃંભિયા નગરીની બહાર, ઋજુવાલિકા નદીને ઉત્તર તીરે સામાધિક ગાથાપતિ કૃષ્ણીના ખેતરમા, ચૌવિહારો છઠ્ઠ કરી, શાલવૃક્ષ નજીક દિવસના પાછલા પહોરે, ગોદોહન (ઉકડા) આસને બેઠા હતા ત્યારે ધર્મધ્યાનમા પ્રવર્તતા થકા વૈશાખ સુદી દશમીને દિવસે મહાપ્રકાશમય કેવળજ્ઞાન અને કેવળ દર્શન પ્રગટ થયુ

કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ પછી ધર્મ દેશના દેતા પ્રભુ ૩૦ વર્ષ સુધી ગ્રામાનુગ્રામ વિચરતા રહ્યા

હુંડાવસર્પિણી કાળના પ્રભાવે ભગવાન મહાવીરની પ્રથમ દેશના ખાલી ગઇ, કારણ તે દેશના વખતે કેવળ દેવતા જ હાજર હતા, મનુષ્યો ન હતા, પણ બીજી દેશના વખતે તેમણે વેદ–વેદાંતના પારગામી એવા બ્રાહ્મણ પંડિતોને શિષ્ય બનાવ્યા તેમા ઇન્દ્રભૂતિ (ગૌતમ) પ્રથમ હતા

ભગવાન મહાવીરના સમયમા સમાજનુ અધઃપતન થયેલુ હતુ, તે સમયે મનુષ્ય જાતિની એકતાને બદલે ઊંચનીચની ભાવનાનુ ભૂત જાતિવાદના નામે ઊભુ કરવામા આવ્યુ હતુ સ્ત્રીઓ અને શૂદ્રોને ધર્મ અને પુણ્ય કાર્યના લાભથી વંચિત રાખવામા આવતા હતા

ધર્મના સુખો એ મૃત્યુ પછીની અવસ્થાની વાત ગણાતી સ્વર્ગની ચાવી યજ્ઞો અને યજ્ઞની ચાવી તેના અધિકારી બ્રાહ્મણોના યજ્ઞોપવિતને જ બાંધેલી હતી યજ્ઞોમા પશુઓની હિંસા અને સોમરસના પાન થતા કોઇક વળી નરમેધ યજ્ઞો પણ કરતા અને આ વૈદિક હિંસા, હિંસા ન ગણાતા સ્વર્ગાધિકાર આપનારી મનાતી

આ બધા ધર્મને નામે ચાલતા વાસ્તવિક ધર્મથી વિરુદ્ધના ક્રિયાકાંડો સામે ભગવાન મહાવીરે વિપ્લવ જગાવ્યો ધર્મની માન્યતાઓના મૂલ્યાંકનો બદલવા એક અજબ ક્રાંતિ શરૂ કરી

"ધર્મનું મૂળ અહિંસા, સંયમ અને તપ છે માનવ માત્ર માનવતાના સબંધે એકસરખા છે સ્ત્રી હોય કે પુરુષ હોય, ગમે તે હોય તેને ધર્મારાધાનના સમાન અધિકાર છે" આ તેમના ઉપદેશનો મુખ્ય સાર હતો

બીજી દેશના વખતે ઇંદ્રભૂતિ આદિ મુખ્ય અગીઆર પંડિતો અને તેમની સાથે ૪૪૦૦ બ્રાહ્મણો કે જેઓ ભગવાન મહાવીર સાથે વાદવિવાદ કરી તેમને પરાજિત કરવા આવ્યા હતા, તેમણે ભગવાનનો ઉપદેશ સાંભળ્યો અને તેની યથાર્થતા સમજાતા તેઓ તેમના શિષ્ય બની ગયા આ અગીઆર પંડિતો જૈન શાસ્ત્રોમા અગીઆર 'ગણધરો' તરીકે પ્રસિદ્ધ છે તેમના નામો નીચે પ્રમાણે છે

૧ ઇંદ્રભૂતિ ૨ અગ્નિભૂતિ ૩ વાયુભૂતિ ૪ વ્યક્ત ૫ સુધર્મા ૬ મંડિત ૭ મૌર્યપુત્ર ૮ અકંપિત ૯ અચલભ્રાતા ૧૦ મેતાર્ય અને ૧૧ પ્રભાસ

પ્રભુની વાણીના ઉપદેશક તત્ત્વોને સૂત્રોરૂપે ગૂંથી દ્વાદશાંગને વ્યવસ્થિત રીતે જાળવી રાખવાનુ કાર્ય આ ગણધરોએ કર્યું છે

જૈનાગમોમા મહાવીર અને ગૌતમ તથા પંચમ ગણધર સુધર્મા અને જંબુસ્વામી વચ્ચેના વાર્તાલાપના પ્રસંગો ખૂબ મળી આવે છે

ભગવાન મહાવીરના ત્રીસ વર્ષના ધર્મોપદેશ દરમ્યાન તેમના ચતુર્વિધ સંઘમા ૧૪૦૦૦ સાધુ શિષ્યો અને ૩૬૦૦૦ સાધ્વી શિષ્યાઓ થયા તેમજ લાખોની સંખ્યામા જૈન ધર્મ અંગીકાર કરનાર શ્રાવકો અને શ્રાવિકાઓ મળ્યા હતા

સાધ્વીઓમા જેમ ઇન્દ્રભૂતિ જ્ઞાનમાં હતા તેમ સાધ્વી- ના મહાસતી ચંદનબાળા અગ્રપદે હતાં

છદ્મસ્થાવસ્થા અને કેવળપર્યાયનાં મળી બેતાળીસ વર્ષના દીક્ષાપર્યાય દરમ્યાન તેમણે એક અસ્થિગ્રામ, એક વાણિજ્યગ્રામ, પાંચ ચંપા નગરીમા, પાંચ પૃષ્ઠચંપામા ચૌદ રાજગૃહીમા, એક નાલંદાપાડામા, છ મિથિલામાં બે ભદ્રિકા નગરીમા, એક આલંભિયામા, એક સાવથ્થીમા, એક લાઢદેશ (અનાર્ય દેશ)મા અને ત્રણ વિશાળા નગરીમા એમ એકતાળીસ ચાતુર્માસ કર્યા અને બેતાળીસમા ચાતુર્માસ માટે તેઓ પાવાપુરીમા પધાર્યા.

પાવાપુરી કે જેનું બીજું નામ અપાપાપુરી હતુ ત્યાંનુ ચાતુર્માસ ભગવાન મહાવીરનુ ચરમ ચાતુર્માસ હતુ આ ચાતુર્માસ તેમણે પાવાપુરીના રાજા હસ્તિપાળની વિનંતિથી તેની શાળામા વિતાવ્યુ ભગવાનનો મોક્ષ-સમય નિકટમા હતો આથી તેઓ પોતાની પુણ્યમયી, સર્વ જગતના જીવોને હિતકારી વેગવંત વાગ્ધારા અવિરતપણે વહાવતા રહ્યા કે જેથી ભવ્ય જીવોને યથાર્થ માર્ગની પ્રાપ્તિ થઇ શકે

આયુષ્ય કર્મનો ક્ષય નજીકમા જાણી પ્રભુએ આસો વદ ચતુર્દશીના રોજ સંથારો કર્યો પોતાના શિષ્ય ગૌતમ સ્વામીને નજીકના ગામે દેવશર્મા નામના એક બ્રાહ્મણને બોધ આપવા મોકલ્યા ચતુર્દશી અને અમાવાસ્યાના બે દિવસના સોળ પ્રહર સુધી પ્રભુએ સતત ઉપદેશ આપ્યો જીવનના ઉત્તર ભાગમા આપેલ આ ઉપદેશ 'ઉત્તરાધ્યયન' સૂત્રમા સંગ્રહીત છે આમ ઉપદેશ દેતા દેતા આજથી ૨૪૮૧ વર્ષ ઉપર, જ્યારે ચોથા આરાના ત્રણ વર્ષ અને સાડાઆઠ મહિના બાકી હતા ત્યારે આસો વદી અમાવાસ્યા (દિવાળી)ની રાત્રે ભગવાન મહાવીર નિર્વાણ પામ્યા

ગૌતમસ્વામી જે દેવશર્માને પ્રતિબોધવા ગયા હતા, તેઓ પાછા ફર્યા અને તેમણે ભગવાન મહાવીરના નિર્વાણના સમાચાર જાણ્યા ત્યારે ઘણા જ આર્દ્ર બની ગયા, કારણ ભગવાન પ્રત્યે તેમના દિલમા અત્યંત સ્નેહ હતો, પરંતુ મહાપુરુષોમા પ્રવેશેલી નિર્બળતા ક્ષણિક જ હોય છે ગૌતમસ્વામીને પણ તુરત સત્યનો પ્રકાશ મળ્યો. તેમણે જાણી લીધુ કે પ્રભુ ઉપરનો પ્રશસ્ત સ્નેહ પણ કેવળ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવામા વિઘ્નરૂપ છે તેમની વિચારશ્રેણીએ રૂપ બદલ્યુ—ખરેખર હુ મોહમા પડ્યો છુ પ્રભુ તો વીતરાગ હતા દરેક આત્મા એકલો હોય છે, હુ એકલો છુ, મારૂ કોઇ નથી, હુ કોઇનો નથી"

એ પ્રમાણે એકત્વ ભાવના ચિંતવવા લાગ્યા ક્ષપક શ્રેણીમાં આરૂઢ થયેલા ગૌતમ સ્વામીએ તત્ક્ષણ ઘનઘાતી કર્મોનો નાશ કરી દીધો અને તેમને પ્રભુ નિર્વાણ પધાર્યા તે જ રાત્રિએ અર્થાત આસો વદી અમાવાસ્યાની પાછલી રાત્રે લોકાલોક–પ્રકાશક કેવળ જ્ઞાન અને કેવળદર્શન પ્રાપ્ત થયા

૫. બુદ્ધ અને મહાવીર

ભગવાન મહાવીર અને બુદ્ધ બન્ને સમકાલીન હતા બુદ્ધ, શાકયગોત્રીય, કપિલવસ્તુના રાજા શુદ્ધોદનના પુત્ર હતા તેમણે પણ સંસારની નિ:સારતાનો ભાસ થતા સંસારનો ત્યાગ કર્યો, અને તપશ્ચર્યા આદરી, બોધિસત્વ બન્યા તે પણ પોતાને 'આર્હંત' મનાવતા (ભગવાન મહાવીરનો વધારેમાં વધારે સામનો બુદ્ધે કર્યો)

મહાવીર અને બુદ્ધની તુલના નીચે મુજબ થઇ શકે

	મહાવીર	બુદ્ધ
પિતા	સિદ્ધાર્થ	શુદ્ધોદન
માતા	ત્રિશલા	મહામાયા
સ્થળ	ક્ષત્રિયકુંડ ગ્રામ	કપીલવસ્તુ
જન્મ	ઇ સ પૂર્વે ૫૯૮	ઇ સ પૂર્વે ૫૬૫ યા ૫૭૫
સ્ત્રીનું નામ	યશોદા	યશોધરા
સંતાન	પ્રિયદર્શના (પુત્રી)	રાહુલ (પુત્ર)
આદિ તપ	૧૨।। વર્ષ	૬ વર્ષ
નિર્વાણ	વિ સ ની પૂર્વે ૪૭૦ વર્ષ	વિ સ પૂર્વે ૪૮૫
આયુષ્ય	૭૨ વર્ષ	૮૦ વર્ષ
વ્રતો	પંચ મહાવ્રત	પંચશીલ
સિદ્ધાંત	અનેકાન્તવાદ	ક્ષણિકવાદ
મુખ્ય શિષ્ય	ગૌતમ	આનંદ

એમ મહાવીર અને બુદ્ધમાં જેમ વિભિન્નતા છે તેમ સમાનતા પણ છે

અહિંસા, સત્ય, અસ્તેય, બ્રહ્મચર્ય, અપરિગ્રહ તથા તૃષ્ણાનિવૃત્તિ આદિમાં, મહાવીરની માફક બુદ્ધની દૃષ્ટિ પણ ઘણી ઉંચી હતી બ્રાહ્મણ સંસ્કૃતિની સામે આ બન્ને શ્રમણ–સંસ્કૃતિના ઝળકતા નક્ષત્રો હતા

જીવન શોધન, અહિંસા પાલન અને શ્રમણો માટેના જરૂરી નિયમોમાં પણ બન્ને મહાપુરૂષોના વિધાનોમાં ઘણું સામ્ય છે.

સંસાર ત્યાગ પછી બુદ્ધે પણ કઠોર તપશ્ચર્યાઓ કરી હતી, પરંતુ પાછળથી તેમને તેના તરફ ઘૃણા થઇ અને 'મધ્યમ પ્રતિપદા'નો માર્ગ સ્વાર્યો

૬. ભ. મહાવીરની શિષ્ય પરંપરા

ભગવાન મહાવીરના નિર્વાણ બાદ ગૌતમ સ્વામીને કેવળજ્ઞાન થયું, તે આપણે જોઇ ગયા તેઓ બાર વર્ષ સુધી કેવળજ્ઞાનીપણે વિચર્યા અને ધર્મપ્રચાર તથા સંઘ વ્યવસ્થા આદિનું નિર્વહન કર્યું

૧ **સુધર્મા સ્વામી:** ગૌતમસ્વામી કેવળજ્ઞાની થવાને લીધે આચાર્ય પદવિભૂષિત, ભગવાન મહાવીરના પ્રથમ પટ્ટધર થવાનું અદ્વિતીય ગૌરવ શ્રી સુધર્મા સ્વામીને મળ્યું તેમણે બાર વર્ષ સુધી સંઘની બાહ્ય અને આંતરિક બન્ને પ્રકારે રક્ષા, પોષણ અને સંવર્ધન કર્યું ૯૨ વર્ષની ઉમરે તેમને કેવળજ્ઞાન થયું, ત્યારે સંઘ–વ્યવસ્થાનો ભાર તેમના શિષ્ય જંબુસ્વામીને સોંપ્યો ત્યાર બાદ આઠ વર્ષ સુધી તેઓ કેવળીપણે વિચર્યા અને ૧૦૦ વર્ષનું આયુષ્ય પૂર્ણ કરી નિર્વાણ પામ્યા

૨ **જંબૂસ્વામી** સુધર્મા સ્વામીને કેવળજ્ઞાન થયા પછી જંબુસ્વામી પાટે આવ્યા

જંબુસ્વામી એક વણિક શેઠના પુત્ર હતા અખૂટ સંપત્તિ, હોવા છતા તેમને વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન થવાથી લગ્નના બીજે જ દિવસે, આઠ સ્ત્રીઓનો ત્યાગ કરી દીક્ષા લીધી તેમની સાથે તેમને વરેલી આઠે સ્ત્રીઓ, તે સ્ત્રીઓના માતાપિતા, પોતાના માતાપિતા અને તેમને ત્યાં ચોરી કરવા આવેલ પ્રભવાદિ ૫૦૦ ચોરો એમ કુલ ૫૨૭ વિરક્ત આત્માઓએ ભાગવતી દીક્ષા અંગીકાર કરી જીવન સફળ કર્યું

શ્રી સુધર્માસ્વામીના નિર્વાણ બાદ શ્રી જંબૂસ્વામીને કેવળજ્ઞાન થયું તેઓ ૪૪ વર્ષ સુધી કેવળજ્ઞાનીપણે વિચરી મોક્ષે સિધાવ્યા

જૈન પરંપરામાં આ અવસર્પિણી–કાળમાં કેવળજ્ઞાનનો સ્રોત ભગવાન શ્રી ઋષભદેવથી શરૂ થાય છે, તેના અંતિમ કેવળી ભગવાન જંબૂસ્વામી હતા તેમના નિર્વાણ સાથે દસ વિશેષતાઓનો લોપ થયો –

૧ પરમ અવધિજ્ઞાન, ૨ મન પર્યવજ્ઞાન, ૩ પુલાક લબ્ધિ, ૪ આહારિક શરીર, ૫ ક્ષાયિક સમ્યક્ત્વ, ૬ કેવળજ્ઞાન, ૭ જિન કલ્પી સાધુ, ૮ પરિહાર

વિશુદ્ધ ચારિત્ર્ય, ૯ સૂક્ષ્મ સંપરાય ચારિત્ર્ય અને ૧૦ યથાખ્યાત ચારિત્ર્ય.

આમ ભગવાન મહાવીરના નિર્વાણ પછી ૬૪ વર્ષ કેવળજ્ઞાન રહ્યું

૩ **પ્રભવ સ્વામી** જમ્બૂસ્વામીને કેવળજ્ઞાન થયા પછી પ્રભવસ્વામી આચાર્યપદે બિરાજમાન થયા

તેઓ જયપુરના રાજા જયસેનના કુમાર હતા પ્રજાને કષ્ટ આપવાને કારણે તેમને દેશવટો મળ્યો આથી તેઓ ભીમસેન નામના એક ચોરના સાથી બન્યા ભીમસેનના મરણ પછી ૫૦૦ ચોરોના સરદાર થયા.

જમ્બૂસ્વામી લગ્ન કરી ઘેર પાછા ફર્યા ત્યારે તેમને ૯૯ કરોડનો કરિયાવર મળેલો આ વાત સાભળી પ્રભવ પોતાના સાથીઓને લઇ ત્યા ચોરી કરવા ગયો તેની એક વિશેષતા હતી કે તે જ્યા ચોરી કરવા જાય ત્યા ઘરના માણસોને મંત્રબળે નિદ્રાધીન બનાવી દેતો આમ સેવકો અને ચોકીદારોને નિદ્રાધીન બનાવી, તેણે ધનના પોટલા બાધ્યા અને ચાલવા માડયુ પણ તેના પગ ઉપડતા નહોતા તે વિચારમા પડયો કે આમ કેમ બન્યુ ? આવો કોણ પ્રભાવશાળી છે કે જેના પ્રભાવથી મારૂ મંત્ર-બળ નિષ્ફળ થયુ ?

આ બાજુ જમ્બૂસ્વામી મહાસંયમી અને બાળબ્રહ્મચારી હતા લગ્નની પ્રથમ રાત્રિએ આઠ સ્ત્રીઓની વિનવણીઓ અને સમજાવટ છતા વ્રત ભંગ કરવાનો વિચાર સુદ્ધા તેમને આવતો નહોતો પ્રભવ તેમના ઓરડાની નજીક આવ્યો અને અંદર ચાલતો વાર્તાલાપ સાભળ્યો જમ્બૂસ્વામીની વાણી અને ચારિત્ર્યથી તે પ્રભાવિત થયો અને પ્રાતઃકાળે તેણે પણ પોતાના સાથીઓ સહિત જમ્બૂસ્વામી સાથે સંયમ અંગીકાર કર્યો આ વખતે પ્રભવજીની ઉમર ૩૦ વર્ષની હતી વીસ વર્ષ સુધી તેમણે જ્ઞાન–સાધના આદિ કરી ૫૦ વર્ષની ઉમરે તેઓ સમસ્ત જૈન સંઘના આચાર્ય બન્યા

૪ **શય્યંભવ આચાર્ય** પ્રભવસ્વામી પછી શય્યંભવ આચાર્ય થયા

તેઓ રાજગૃહીના બ્રાહ્મણ કુળમા ઉત્પન્ન થયા હતા અને વેદ–વેદાંગના નિષ્ણાત હતા એક સમયે તેમને પ્રભવસ્વામીનો ભેટો થયો પ્રભવસ્વામીએ તેમને દ્રવ્ય ને ભાવયજ્ઞના વિલક્ષણ સ્વરૂપની સમજ પાડી તેઓ ત્યાગી અને સાધુ બન્યા

શય્યંભવ સ્વામીને 'મનક' નામે એક પુત્ર હતો. તેણે પણ દીક્ષા લીધી હતી આચાર્યવર્યે જ્યારે જ્ઞાનથી જાણ્યુ કે તેનો અંતકાળ સમીપમા છે, ત્યારે અલ્પ સમયમા જિનવાણીના રહસ્યોનુ જ્ઞાન કરાવવા શાસ્ત્રોનુ મંથન કરી તેના નવનીત રૂપે 'દશ વૈકાલિક સૂત્ર'ની રચના કરી.

૫ **યશોભદ્ર** વીર નિર્વાણ સં ૯૮મા યશોભદ્ર આચાર્ય પદ પર પ્રતિષ્ઠિત થાયા.

વીર નિર્વાણ ૧૦૮મા સંભૂતિવિજયે દીક્ષા લીધી.

૬ **યશોભદ્ર અને સંભૂતિવિજય** બન્ને સંઘના આચાર્યો હતા તેઓએ બહુ જ કુશળતાપૂર્વક સંઘની વ્યવસ્થા જાળવી

૭. ભદ્રબાહુ યુગ

ભદ્રબાહુ સ્વામીની દીક્ષા વીર નિ સં ૧૩૯ પછી આચાર્ય યશોભદ્ર પાસે થઇ હતી અને સ્થૂળિભદ્રની દીક્ષા વીર નિ સં ૧૪૬ અગર ૧૫૦ મા થઇ હતી ભદ્રબાહુ સ્વામી ૪૫ વર્ષ ગૃહસ્થાવાસમા રહ્યા. સત્તર વર્ષ ગુરૂની સેવાસુશ્રુષા કરી ચૌદ પૂર્વની વિદ્યા સંપાદન કરી ચૌદ વરસ સુધી તે સંઘના એકમાત્ર આચાર્ય રહ્યા વીર નિ ૧૭૦ મા ૬૬ વર્ષની ઉમરે તેઓ કાળધર્મ પામ્યા

ભદ્રબાહુ સ્વામીના સમયની મોટામા મોટી ઘટના દુકાળ પડવાની બની એક વખત કાર્તિક શુકલ પૂર્ણિમાના રોજ મહારાજા ચંદ્રગુપ્તે પૌષધ કર્યો હતો, ત્યારે રાત્રિના છેલ્લા ભાગમા તેમણે સોળ સ્વપ્નો દેખ્યા, તેમા એક સ્વપ્નમા બાર ફેણવાળો નાગ જોવામા આવ્યો આનુ ફળ જણાવતા ભદ્રબાહુ સ્વામીએ બાર વર્ષનો ભયંકર દુકાળ પડશે એવી આગાહી કરી

દુષ્કાળની ભય કરતા ફેલાતા તેનણે મહારાજા ચંદ્રગુપ્તને દીક્ષા આપી અને દક્ષિણમા કર્ણાટક તરફ વિહાર કરી ગયા

શ્રુત કેવળી ભદ્રબાહુ સ્વામીના જવા પછી સંઘને ખૂબ ક્ષોભ થયો દુષ્કાળનુ ભયાનક તાડવ પણ વધવા લાગ્યુ શ્રાવકો ભદ્રબાહુ સ્વામીને યાદ કરવા લાગ્યા.

ભદ્રબાહુ સ્વામીના જવા પછી સંઘની સત્તાનો દોર સ્થૂળિભદ્રના હાથમા આવ્યો, પરંતુ તેઓ શાસ્ત્રો અને પૂર્વોના પૂર્ણ જ્ઞાતા નહોતા આથી શ્રાવક સંઘ ભદ્રબાહુ સ્વામીને પાછા પધારવા વિનંતી કરવા દક્ષિણમા ગયો આ વખતે ભદ્રબાહુ સ્વામી 'મહાપ્રાણ' નામના મૌન વ્રતમા હતા તેથી તેમણે શ્રાવક સંઘ સાથે વિચાર વિનિમય કરી

પોતે પાછા કરી શકે તેમ નથી એમ જણાવ્યુ ત્યારે શ્રાવક સઘે ભદ્રબાહુ સ્વામીને, ૧૪ પૂર્વનુ જ્ઞાન, દ્રવ્ય-ક્ષેત્રાનુસાર સ્થૂળિભદ્રજીને આપવા સમજાવ્યા

શ્રી સઘે પાછા મગધમા આવી સ્થૂળિભદ્રજીને સર્વ વૃત્તાત જણાવ્યો સ્થૂળિભદ્રજી અને બીજા કેટલાક સાધુએ વિહાર કરી, ભદ્રબાહુસ્વામી પાસે આવ્યા વિદ્યાની પ્રાપ્તિમા રહેલ કઠિનતાઓને લીધે બીજા સાધુઓ તો અભ્યાસમા આગળ ન વધી શકયા, પરતુ સ્થૂળિભદ્ર સારી પ્રગતિ કરી એક વખત રૂપપરાવર્તિની વિદ્યાનો નિર્ણય કરવા તેમણે સિહનુ સ્વરૂપ ધારણ કર્યુ, તેથી નજીકમા રહેલા સાધુઓ ભય પામ્યા, એટલે તુરત જ તેમણે પોતાનુ વાસ્તવિક સ્વરૂપ ધારણ કર્યુ

આ સમાચાર ભદ્રબાહુ સ્વામીને મળતા તેમને ઘણો ઉદ્વેગ થયો અને અત્યાર સુધી ભણાવેલ દસ પૂર્વો ઉપરાતની વિદ્યા શીખવવાનો તેમણે ઇન્કાર કર્યો આમ ચૌદ પૂર્વમાથી ચાર પૂર્વ વિચ્છેદ ગયા

સ્થૂળિભદ્રજી ત્યાથી પાછા ફર્યા અને સમસ્ત સઘનો ભાર તેમના ઉપર મૂકવામા આવ્યો

૮. શ્રી સ્થુળિભદ્રજી

સ્થૂળિભદ્ર, નવમા નદરાજાના, નાગર બ્રાહ્મણ મહા મત્રી શકડાલના જ્યેષ્ઠ પુત્ર હતા. વી ની સ. ૧૫૬મા તેમણે દીક્ષા લીધી હતી.

સસારાવસ્થામા સમસ્ત કુટુબને છોડી, બાર વર્ષ સુધી તેઓ કોશા નામની વેશ્યાને ઘેર રહ્યા હતા તેમના પિતાના મૃત્યુ પછી રાજાએ તેમને મત્રી પદ સ્વીકારવા બોલાવ્યા, પરતુ પિતાના મૃત્યુથી તેમની વૈરાગ્યભાવના જાગૃત થઇ હોઇ રાજખટપટ તેમને અકારી થઇ પડી તેઓ દરબાર છોડી ચાલી નીકળ્યા રસ્તામા તેમને સભૂતિ વિજય આચાર્યનો ભેટો થયો આચાર્યના ચરણોમા તેમને શાતિ પ્રાપ્ત થઇ અને દીક્ષિત થયા

દીક્ષા લીધા પછી તેમણે ગુરુની આજ્ઞા લઇ કોશા વેશ્યાના ઘરમા ચાતુર્માસ કર્યુ જરા પણ ચલાયમાન ન થતા વૈરાગ્યમા તેઓ તલ્લીન રહ્યા

ભદ્રબાહુ સ્વામીના અતેવાસી વિશાખાચાર્ય, ભદ્રબાહુ સ્વામીના કાળધર્મ પામ્યા બાદ મગધ પાછા આવ્યા તેમણે જોયુ કે, સ્થૂળિભદ્રજીના સાધુઓ વનો અને ઉદ્યાનોને બદલે હવે શહેરોમા રહે છે તેથી તેમને બહુ ખરાબ લાગ્યુ સ્થૂળિભદ્રજી સાથે આ સબધમા તેમને ચર્ચા થઇ, પરતુ બનેની વચ્ચેનુ અતર ઘટયુ નહિ

આવી બન્નેના સાધુઓ અલગ વિચરવા લાગ્યા

અહીથી જૈન સઘમા બે શાખાઓ જુદી પડી પણ અલગ સપ્રદાયો બન્યા નહોતા

સ્થૂળિભદ્રજી પાસે વીર નિ સ ૧૭૫મા આર્ય મહાગિરિએ દીક્ષા લીધી

સ્થૂળિભદ્રજી, સઘ વ્યવસ્થા, ધર્મપ્રચાર તથા આત્મસિદ્ધિની આરાધના કરતા વીર નિ સ. ૨૧૫મા કાળધર્મ પામ્યા.

૯. શ્રી સ્થૂળિભદ્રજીથી લોંકાશાહ સુધીના સમયનુ વિહગાવલોકન

શ્રી સ્થૂળિભદ્રજી પછી આર્ય મહાગિરિ અને આર્ય સુહસ્તિ સ્વામીના નામો આચાર્ય તરીકે આવે છે

ભદ્રબાહુસ્વામી અને સ્થૂળિભદ્રજીના સમયમા સચેલત્વ અને અચેલત્વના પ્રશ્ન ઉપર શરૂ થયેલ મતભેદ સમય જતા ઉગ્ર બનતો ગયો અને તેમાથી જૈન ધર્મમા બે સપ્રદાયો ખડા થયા સચેલત્વને અપનાવનાર શ્વેતાબર કહેવાયા અને અચેલત્વને માનનાર દિગબર કહેવાયા

આર્ય મહાગિરિ, આર્ય સુહસ્તિ, આર્ય સુપ્રતિબદ્ધ, ઉમાસ્વામીજી, આચાર્ય ગુણસુદરજી, કાલિકાચાર્યનો સમય વિક્રમની પૂર્વેનો છે વીર નિર્વાણ પછી ૪૭૦ વર્ષે વિક્રમ સવત શરૂ થયો ત્યાર પછી શ્રી વિમલસૂરિ, આર્યદિન્ન અથવા સ્કદિલાચાર્ય અને પાદલિપ્ત સૂરિ થયા આ સમય દરમ્યાન ભગવાન મહાવીરે અપનાવેલ લોકભાષા અર્ધમાગધીમાથી ધીમે ધીમે જૈનાચાર્યો પડિતોની ભાષા સસ્કૃત તરફ વળ્યા મૂળ આગમોને આધારે સસ્કૃતમા મહાન ગ્રથોની રચના થવા માડી

આ પછી આચાર્ય વૃદ્ધવાદિ તથા કલ્યાણ મદિર સ્તોત્રના રચયિતા શ્રી સિદ્ધસેન દિવાકર અને બીજા ભદ્રબાહુ સ્વામીનો સમય આવ્યો

વીર સ ૯૮૦ વિ સ ૫૧૦મા દેવર્દ્ધિ ગણિ ક્ષમા શ્રમણે શ્રુત-રક્ષાર્થે વલ્લભીપુરમા સાધુઓની એક પરિષદ મેળવી, જેમા જે આગમ સાહિત્ય આજ સુધી કઠસ્થ જ રહેવાને કારણે વિલુપ્ત થતુ જતુ હતુ, તેને લિપિબદ્ધ કર્યુ

ગણ્ય નાયકોમાં વીર લોંકાશાહ ફક્ત ધાર્મિક જ નહિ, પરંતુ, સામાજિક અને રાજકીય ક્ષેત્રમાં પણ મહત્વ ધરાવે છે.

૧૧. ધર્મપ્રાણ લોંકાશાહ

સ્થાનકવાસી સમાજ વીરવર્ય લોંકાશાહના પુણ્ય પ્રયત્નોનું પવિત્ર પરિણામરૂપ પુષ્પ છે. જૈન સમાજની રૂઢિવાદિતા અને જડતાનો નાશ કરવા માટે તેમણે પોતાના પ્રાણપ્રદીપને પ્રજ્વલિત કર્યો અને જડપૂજાને સ્થાને ગુણ-પૂજાની પ્રતિષ્ઠા કરી, જડતા માત્ર સ્વરૂપને જાણતી હતી જ્યારે, ગુણે સ્વરૂપને છોડી, આકાર અને પ્રકારને ત્યાગી, ઉપયોગિતા અને કલ્યાણકારિતાને બળ આપી માનવ માત્રને મહત્વ આપ્યું.

શક્રેન્દ્રે જ્યારે ભગવાન મહાવીરને પૂછ્યું હતું કે 'ભગવન્! આપના જન્મ નક્ષત્ર પર મહાભસ્મ નામનો ગ્રહ બેઠો છે તેનું ફળ શું?'

ત્યારે ભગવાને કહ્યું હતું કે હે ઇન્દ્ર! આ ભસ્મ-ગ્રહને લીધે બે હજાર વર્ષો સુધી સાચા સાધુસાધ્વીઓની પૂજા મંદ થશે બરાબર બે હજાર વર્ષ પછી આ ગ્રહ ઉતરશે ત્યારે ફરીથી જૈન ધર્મમાં નવચેતના જાગૃત થશે અને યોગ્ય પુરુષો અને સંતોનો યથોચિત સત્કાર થશે.'

ભગવાન મહાવીરની આ ભવિષ્યવાણી અક્ષરે અક્ષર ખરી પડી. વીર નિર્વાણ બાદ ૪૭૦ વર્ષે વિક્રમ સંવત શરૂ થયો અને વિક્રમના ૧૫૩૧મા વર્ષમાં એટલે (૪૭૦+૧૫૩૧=૨૦૦૧) બરાબર વીર સં. ૨૦૦૧ના વર્ષમાં વીર લોંકાશાહે ધર્મના મૂળ તત્વોને પ્રકાશિત કર્યાં અને ગુણ પૂજક-ધર્મ વિસ્તાર પામવા લાગ્યો.

ધર્મપ્રાણ લોંકાશાહના જન્મ સ્થળ, સમય અને માતપિતાના નામ વિગેરે વિષયોમાં જુદા જુદા અભિપ્રાયો મળે છે, પરંતુ વિદ્વાન સંશોધકોના આધારભૂત નિર્ણય અનુસાર શ્રી લોંકાશાહ, અરહટ્ટવાડામાં ચૌધરી ગોત્રના, ઓસવાલ ગૃહસ્થ, શેઠ હેમાભાઇની પવિત્ર, પતિપરાયણ-ભાર્યા ગંગાબાઇની કુક્ષિએ વિ. સંવત ૧૪૭૨ના કારતક શુદ ૧૫ને શુક્રવાર તા. ૧૮મી ઓક્ટોબર સને ૧૪૧૫ના રોજ જન્મ્યા હતા.

લોંકાશાહનું મન તો પ્રથમથી જ વૈરાગ્યમય હતું, પરંતુ માતાપિતાના આગ્રહને વશ થઇ તેમણે સં. ૧૪૮૭માં સિરોહીના સુપ્રસિદ્ધ શાહ ઓધવજીની વિચક્ષણ વિદુષી પુત્રી સુદર્શના સાથે લગ્ન કર્યાં હતાં.

લગ્નના ત્રણ વર્ષ બાદ તેમને પૂર્ણચંદ્ર નામના પુત્ર-રત્નની પ્રાપ્તિ થઇ.

તેમની ત્રેવીસ વરસની ઉમરે તેમની માતાનું અને ચોવીસમે વર્ષે પિતાનું અવસાન થયું.

શિરોહી અને ચંદ્રાવલિના રાજ્યો વચ્ચે યુદ્ધજનક સ્થિતિને લીધે અરાજકતા અને વ્યાપારિક દુર્વ્યવસ્થાને કારણે તેઓ અમદાવાદ આવ્યા અને અમદાવાદમાં ઝવેરાતનો ધંધો શરૂ કર્યો. થોડા જ વખતમાં તેમની પ્રામાણિકતા અને કુનેહને લીધે તેઓએ ઝવેરાતના ધંધામાં નામના મેળવી.

તે વખતના અમદાવાદના બાદશાહ મહમદશાહ ઉપર પણ તેમના 'બુદ્ધિચાતુર્ય'નો ઘણો પ્રભાવ પડયો અને તેમણે લોંકાશાહને પોતાના ખજાનચી બનાવ્યા.

એક વખત મહમદશાહના પુત્ર કુતુબશાહને પોતાના પિતા સાથે મતભેદ થવાથી પુત્રે પિતાને ઝેર આપી મારી નાખ્યો. સંસારની આવી વિચિત્રતા અનુભવવાથી લોંકા-શાહનું વૈરાગ્યપ્રિય હૃદય હાલી ઉઠ્યું અને તેમણે સંસારથી વિરક્ત થવા રાજ્યની નોકરીનો ત્યાગ કર્યો.

તેઓ મૂળથી જ તત્વશોધક તો હતા. તેમણે એક લેખક મંડળ સ્થાપ્યું અને ખૂબ લહિયાઓ રાખી પ્રાચીન શાસ્ત્રો અને ગ્રંથોની નકલો કરાવતા, અને અન્ય ધાર્મિક કાર્યોમાં પોતાનું જીવન વિતાવતા.

એક વખત જ્ઞાનસુંદરજી નામના એક યતિ તેમને ત્યાં ગોચરીએ આવ્યા. તેમણે લોંકાશાહના સુંદર અક્ષરો જોઇ પોતાની પાસેના શાસ્ત્રોની નકલો કરી આપવા કહ્યું. લોંકાશાહે શ્રુતસેવાનું આ કાર્ય સહર્ષ સ્વીકારી લીધું.

જેમ જેમ તેઓ શાસ્ત્રોની નકલો કરતા ગયા, તેમ તેમ તેમને શાસ્ત્રોની ગહન વાતો અને ભગવાનની પ્રરૂપણાનું હાર્દ સમજાતા ગયા. તેમની આંખો ઉઘડી ગઇ. સંત અને સમાજમાં પ્રવર્તતી શિથિલતા અને આગમ-અનુકૂળ વર્તનનો અભાવ તેમને દૃષ્ટિગોચર થવા માંડયો, જ્યારે તેઓ ચૈત્યવાસીઓના શિથિલ આચાર અને અપરિગ્રહી નિર્ગ્રંથોના અસિધારાવત્ પ્રખર સંયમનનો તુલનાત્મક વિચાર કરતા ત્યારે તેમણે મનમાં ક્ષોભ થતો.

મંદિરો, મઠો અને પ્રતિમાગૃહોને આગમની કસોટીએ કસી જોતા, મોક્ષોપાયમાં, ક્યાંય પણ પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠાનું વિધાન મળતું નહોતું. તેમને શાસ્ત્રનું વિશુદ્ધ જ્ઞાન

પ્રાપ્ત થવાથી, પોતાના સમાજની અંધ–પરંપરા પ્રત્યે ગ્લાનિ ઉત્પન્ન થઇ શુદ્ધ જૈનાગમો પ્રત્યે તેમને અડગ શ્રદ્ધા પ્રગટી તેમણે દૃઢપણે ઘોષિત કર્યું કે શાસ્ત્રમાં બતાવેલ નિર્ગ્રંથ ધર્મ આજના સુખશીલ અને સંપ્રદાયવાદને પોષણ આપનારાઓના કલુષિત હાથોમાં જઇ લાંછન વાળો અને વિકૃત થઇ ગયો છે મોક્ષની સિદ્ધિ માટે મૂર્તિઓ કે મંદિરોની જડ ઉપાસના આવશ્યક નથી, પરંતુ તપ, ત્યાગ, સંયમ અને સાધના દ્વારા આત્મશુદ્ધિની આવશ્યકતા છે

આમ પોતાનો દૃઢ નિશ્ચય થવાથી તેમણે શુદ્ધ શાસ્ત્રીય ઉપદેશ દેવો શરૂ કર્યો પ્રભુ મહાવીરના ઉપદેશોનું હાર્દ સમજી તેના સાચા પ્રતિનિધિ બની જ્ઞાન દિવાકર ધર્મપ્રાણ લોકાશાહ પોતાની સમસ્ત શક્તિનો ઉપયોગ કરીને મિથ્યાત્વ અને આડંબરના અંધકારની વિરુદ્ધ સિંહગર્જના કરતા ઉભા થયા ઘણા ટૂંકા સમયમાં તેમને અદ્ભૂત સફળતા સાંપડી લાખો લોકો તેમના અનુયાયીઓ બન્યા આથી સત્તાના કામી વર્ગે એવા સમાચારો વહેવડાવવા માંડયા કે અમદાવાદમાં લોકાશાહ નામનો એક લહિયો શાસનનો વિદ્રોહ કરી રહ્યો છે તેમની સામે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણાનો અને ધર્મભ્રષ્ટતાનો આક્ષેપ કરવામાં આવ્યો

આ બધી વાતો અણહિલપુર પાટણવાળા શ્રાવક લખમશીભાઇએ સાંભળી ભાઇ લખમશી તે વખતે સમાજમાં પ્રતિષ્ઠિત, સત્તાશાળી અને સાધનસંપન્ન શ્રાવક હતા લોકાશાહને સુધારવાના ઇરાદાથી તેઓ અમદાવાદ આવ્યા તેમણે લોકાશાહ સાથે પુષ્કળ વાર્તાલાપ કર્યો અંતે તેમને પણ સમજાયું કે લોકાશાહની વાત યથાર્થ છે અને તેમનો ઉપદેશ શાસ્ત્રાધારે છે

૧૨. મૂર્તિપૂજા વિષે લોંકાશાહ

મૂર્તિપૂજા સંબંધમાં શ્રી લખમશીના પ્રશ્નોના જવાબ આપતા લોકાશાહે સમજાવ્યું કે–

જૈનાગમોમાં ક્યાંય પણ મૂર્તિપૂજાનું વિધાન નથી ગ્રંથો અને ટીકાઓ કરતા આગમો પર અમે વધુ વિશ્વાસ ધરાવીએ છીએ અને જે ટીકા કે ટિપ્પણી શાસ્ત્રના મૂળભૂત હેતુને સાનુકૂળ હોય તેટલી જ ટીકા કે, ટિપ્પણીને માન્ય કરી શકાય કોઇ પણ મૂળ આગમમાં મોક્ષની પ્રાપ્તિને માટે પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠા તથા પ્રતિમાનો ઉલ્લેખ તેમ દાન, શીલ, તપ અને ભાવના અગર જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને તપ એ ધાર્મિક અનુષ્ઠાનોમાં મૂર્તિપૂજા અંતર્નિહિત થઇ શકતી નથી

શાસ્ત્રોમાં પાંચ મહાવ્રત, શ્રાવકના બાર વ્રત, બાર પ્રકારની ભાવના તથા સાધુની દૈનિક ચર્યા–અર્ચનું સવિસ્તૃત વર્ણન છે, પરંતુ પ્રતિમા પૂજનનું મૂળ આગમોમાં કોઇ પણ જગાએ વર્ણન આવતું નથી

જ્ઞાતા સૂત્ર તથા રાયપસેણીય સૂત્રમાં અન્ય ચૈત્યોના વંદનનું વર્ણન આવે છે, પણ કોઇ જૈન સાધુ કે જૈન શ્રાવકે મોક્ષની સાધના માટે નિત્ય કર્મની માફક તીર્થંકર પ્રતિમાનું પૂજન કર્યું હોય એવું એક પણ જગાએ લખેલું નથી

લખમશી તો લોકાશાહને સમજાવવા આવ્યા હતા, પણ તે પોતે જ સમજી ગયા લોકાશાહની નીડરતા અને સત્યપ્રિયતા તેમને હૈયે વસી ગઇ અને તેઓ તેનાથી ઘણા પ્રભાવિત થયા અને તેમના શિષ્ય બની ગયા

લખમશી લોકાશાહના શિષ્ય થયા એ વાતને આખાય યતિ અને સાધુવર્ગે એક ભયંકર ઘટના માની અને ગભરાઇ ગયા ધીમે ધીમે લોકાશાહનો પ્રભાવ ચોમેર વધવા લાગ્યો

એક વખત, અરહટ્ટવાડા, શિરોહી, પાટણ તથા સુરત એમ ચાર શહેરોના સંઘો યાત્રાએ નીકળેલા તે અમદાવાદ આવ્યા તે વખતે વર્ષાનું જોર હોવાથી તેમને ત્યાં રોકાઇ જવું પડયું આથી ચારે સંઘના સંઘવીઓ નાગજી, દલીચંદ, મોતીચંદ અને શંભુજીને લોકાશાહ સાથે વિચાર વિનિમય કરવાનો અવસર પ્રાપ્ત થયો

લોકાશાહનો ઉપદેશ, તેમનું જીવન, વીતરાગ–પરમાત્માઓ પ્રત્યેની સાચી ભક્તિ અને આગમિક પરંપરાની તેમના ઉપર ખૂબ ઊંડી અસર થઇ ચારે સંઘો ઉપર આ અસર એટલી સચોટ પડી કે તેમાંથી પિસ્તાળીસ શ્રાવકો લોકાશાહની પ્રરૂપણા અનુસાર સાધુ બનવા તૈયાર થઇ ગયા

આ વખતે જ્ઞાનજી મુનિ હૈદ્રાબાદ તરફ વિહાર કરી રહ્યા હતા તેમને લોકાશાહે બોલાવ્યા અને સં ૧૫૨૭ના વૈશાખ સુદ ૩ના રોજ ૪૫ જણાને દીક્ષા આપી

આ ૪૫ જણાએ પોતાના માર્ગદર્શક ઉપદેશક પ્રત્યે શ્રદ્ધા દર્શાવવા, પોતાના સંઘનું નામ 'લોકાગચ્છ' રાખ્યું અને પોતાના નિયમો વગેરેનો કાર્યક્રમ લોકાશાહના ઉપદેશ પ્રમાણે બનાવ્યો

૧૩. લોંકાશાહનો ધર્મપ્રચાર અને સ્વર્ગવાસ

આગળ જોઇ ગયા તેમ લોંકાશાહની આગમિક માન્યતાને ખૂબ ટેકો મળવા માંડયો અત્યાર સુધી તેઓ પોતાની પાસે આવનારાઓને જ સમજાવતા અને ઉપદેશ આપતા પરંતુ જ્યારે તેમને લાગ્યું કે ક્રિયોદ્ધારને માટે જાહેર રીતે ઉપદેશ કરવાનું અને પોતાના વિચારો જનતા સમક્ષ રજૂ કરવાનું જરૂરી છે, ત્યારે તેમણે સં ૧૫૨૯ના વૈશાખ સુદ ૩, તા ૧૧-૪-૧૪૭૨ના રોજથી જાહેર રીતે ઉપદેશ દેવા માંડયો

તેમના અનુયાયીઓની સંખ્યા દિવસે દિવસે વધવા લાગી મૂળથી જ તેઓ વૈરાગ્યપ્રિય તો હતા જ પરંતુ અત્યારસુધી એક યા બીજા કારણે દીક્ષા લઇ શકયા નહોતા. ક્રિયોદ્ધારને માટે પોતે પ્રત્યક્ષ ચારિત્ર્યનું પાલન કરી બતાવવું એ ઉપદેશક માટે જરૂરી છે આથી તેમણે સં ૧૫૩૬ના માગશર સુદી ૫ના રોજ જ્ઞાનજી મુનિના શિષ્ય, સોહનજી પાસે દીક્ષા અંગીકાર કરી

ટૂંકા સમયમાં જ તેમના ૪૦૦ શિષ્યો બની ગયા અને લાખો શ્રાવકો તેમના પ્રત્યે શ્રદ્ધા ધરાવતા થયા

તેમણે અમદાવાદથી માંડીને છેક દિલ્હી સુધી ધર્મનો જયઘોષ ગજાવ્યો અને આગમ-માન્ય સંયમધર્મનું યથાર્થ પાલન કર્યું અને ઉપદેશ કર્યો

પ્રત્યેક ક્રાંતિકારની કદર કોઇ દિવસ તેના જીવન દરમ્યાન થતી નથી સામાન્ય માનવીઓ તેના જીવનકાળ દરમ્યાન તેને ગાંડોઘેલો માને છે જો તે શક્તિશાળી હોય તો લોકો તેની પ્રત્યે ઇર્ષાથી ઉભરાતા ઝેરની દૃષ્ટિએ જુએ છે અને તેને દુશ્મન માને છે

લોંકાશાહના સંબંધમાં પણ આમ જ બન્યું તેઓ દિલ્હીથી પાછા ફરતા હતા ત્યારે અલ્વર આવી પહોંચ્યા તેમને અટ્ઠમ (ત્રણ દિવસના ઉપવાસ) નું પારણું હતું

સમાજના દુર્ભાગ્યે, તેમના શિથિલાચારી અને ઇર્ષ્યાળુ વિરોધીઓ કે જેઓ તેમનો પ્રતાપ સહન કરી શકતા નહોતા, તેઓએ એક ષડ્યંત્ર રચ્યું ત્રણ ત્રણ દિવસના ઉપવાસીને પારણાને દિવસે કોઇ દુષ્ટબુદ્ધિ, અભાગીએ વિષયુક્ત આહાર વહોરાવી દીધો મુનિશ્રીએ તે આહાર વાપર્યો

ઔદારિક શરીર અને તે પણ વન વટાવી ગયેલું તેના પર એકદમ વિષની પ્રતિક્રિયા થવા માંડી વિચક્ષણ પુરુષ તુરત સમજી ગયા કે અંત સમીપમાં છે, પણ મહા માનવીઓને મૃત્યુ ગભરાવી શકતું નથી તેઓ શાંતિથી સૂઇ ગયા અને ચોરાશી લાખ જીવયોનિને ખમાવી શુભ ધ્યાનમાં લીન બની સં ૧૫૪૬ ના ચૈત્ર સુદ ૧૧ તા ૧૩મી માર્ચ ૧૪૮૯ના રોજ નશ્વર દેહનો ત્યાગ કરી સ્વર્ગે સિધાવ્યા.

૧૪. લોંકાશાહનો વારસો અને સ્થાનકવાસી સંપ્રદાય

લોંકાશાહના વારસાને સંભાળનારાઓનું એક વિશાળ દળ તો તેમની હયાતી દરમ્યાન જ ઉત્પન્ન થયું હતું, પરંતુ તેને કોઇ વિશેષ નામ આપ્યાનો ઉલ્લેખ પ્રાપ્ત થતો નથી

લોંકાશાહના ઉપદેશથી જે પિસ્તાળીસ શ્રામણોએ દીક્ષા લીધી હતી તેમણે પોતાના ધર્મોપદેશક પ્રત્યે કૃતજ્ઞતા પ્રગટ કરવા પોતાના ગચ્છનું નામ 'લોંકાગચ્છ' રાખ્યું, પરંતુ તેઓએ યતિધર્મના માધ્યમને જ સ્વીકારી તેનું નવસંસ્કરણ કર્યું હતું તેઓ દયા ધર્મને સર્વોત્કૃષ્ટ માનતા અને સાધુઓને નિમિત્તે ઉપાશ્રયો સુદ્ધા બનાવવાનો, આરંભ-સમારંભનો નિષેધ કરતા કેટલાકના માનવા મુજબ લોંકાશાહની પરમ સત્યશોધક ઢુંઢક-વૃત્તિને કારણે તેમને ઢુંઢિયા કહેવામાં આવતા અને તેમના નામે બનેલ ગચ્છને ઢુંઢિયા સંપ્રદાય તરીકે ઓળખવામાં આવતો કેટલાક ઢુંઢિયા શબ્દને તિરસ્કાર સૂચક વિશેષણ પણ માને છે

શિથિલાચારી ચૈત્યવાસીઓને ધર્મપ્રાણ લોંકાશાહના વિશુદ્ધ શાસ્ત્રસંમત નિર્ગ્રંથ ધર્મના સ્પષ્ટીકરણથી પ્રદ્વેષ પ્રગટયો અને તેમના ઉપદેશોના શુદ્ધ સનાતન ધર્મનું પાલન કરનારા સર્વને પ્રદ્વેષવશ 'ઢુંઢિયા' કહેવા લાગ્યા, પરંતુ શુદ્ધ સનાતન ધર્મનું આચરણ કરનાર સહિષ્ણુ શ્રાવકોએ સમભાવથી એવું વિચાર્યું કે વાસ્તવમાં ઢુંઢિયા શબ્દ ક્ષુદ્રતા નિર્દેશક (Humiliating) નથી ધર્મની ક્રિયાઓના આડંબર પૂર્ણ આવરણોને ભેદીને તેમાંથી અહિંસામય સત્ય ધર્મનું શોધન (ઢુંઢન) કરનારાઓને અપાયેલું 'ઢુંઢિયા'નું બિરુદ ગૌરવ લેવા જેવું છે

આ સંબંધમાં સ્વ શ્રી વાડીલાલ મોતીલાલ શાહે પણ સમભાવ દર્શાવી પોતાની ઐતિહાસિક નોંધમાં લખ્યું છે કે-મૂળે તો એ શબ્દનું રહસ્ય આ છે

'ઢૂંઢત ઢૂંઢત ઢૂંઢ લિયો સબ, વેદ-પુરાણ કીતાબમેં જોઇ,
[illegible] માંહિ માખણ ઢૂંઢત, ઐસો દયામેં લિયો ઢૂંઢ જોઇ,
ઢૂંઢન [illegible] ચીજ પાવત, બીન ઢૂંઢે નહીં પાવત કોઇ'
"ઐસો દયા [illegible] ઢૂંઢો, 'જીવદયા' બીન ધર્મ ન હોઇ"

ત્યારે ગુરુએ કહ્યુ કે–"હુ તો જે માર્ગે ચાલુ છુ તે જ માર્ગે ચાલી શકીશ, પરતુ તારી ઇચ્છા હોય તો તુ આગમાનુસાર સયમ માર્ગનુ વહન કર"

છેલ્લા સાત સાત વર્ષથી ચાલી રહેલા વૈચારિક દ્વદ્વનો આજે આમ અત આવ્યો

સ ૧૬૦૮મા તેમણે પાચ સાધુઓ સાથે પચમહાવ્રતયુકત આર્હત દીક્ષા ગ્રહણ કરી

સાધુ ધર્મની દીક્ષા લીધા પછી શાસ્ત્રાનુસાર વેશનો તેમણે સ્વીકાર કર્યો આજે સ્થાનકવાસી સમાજના સાધુઓનો જે વેશ છે તેનુ પ્રમાણિકરૂપે પુન પ્રચલન શ્રી. જીવરાજજી મહારાજથી થયુ

ભદ્રબાહુ સ્વામીના યુગથી સ્થવિર કલ્પમા આવનાર સાધુઓએ વસ્ત્ર અને પાત્ર ગ્રહણ કર્યા હત ધીમે ધીમે દુષ્કાળની ભીષણતાને કારણે દડ આદિ પણ રાખવા લાગી ગયા હતા

શ્વેતાબર પરપરામા સાધુઓના ચૌદ ઉપકરણો ગ્રહણ કરવામા આવે છે, તેથી આગળ વધીને આકર્ણ પર્યત દડ, સ્થાપનાચાર્ય, સિદ્ધચક્ર વિગેરે ક્યારે બન્યા અને કેવી રીતે આવ્યા તે માટે તો એટલુ જ કહી શકાય તેમ છે કે મુખવસ્ત્રિકા, રજોહરણ, ચાદર અને ચોલપટ્ટ આદિ વસ્ત્રો સિવાયની વસ્તુઓ તો પરિસ્થિતિવશ ઘુસી ગયેલી છે

જીવરાજજી મહારાજે આ બધા ઉપકરણોમાથી વસ્ત્ર, પાત્ર, મુહપત્તી, રજોહરણ, રજસ્ત્રાણ, પ્રમાર્જિકા સિવાયના ઉપકરણોનો ત્યાગ કર્યો અથવા જરૂર પડે તેને ઐચ્છિક વસ્તુઓનુ રૂપ આપ્યુ તેમા પણ દડ, સ્થાપનાચાર્ય અને સિદ્ધચક્ર વિ ને તો અનાવશ્યક જણાવી સાધુજનોને નિર્લોભતાનો માર્ગ બતાવ્યો ઉપકરણોના સબધમા આ બધી પ્રથમ વ્યવસ્થા હતી

૧૬. સાધુમાર્ગીઓની ત્રણ માન્યતાએ

૧ બત્રીસ આગમ ૨ મુહપત્તી ૩ ચૈત્ય પૂજાથી સર્વાશે વિમુક્તિ

૧ જીવરાજજી મહારાજે આગમોના વિષયમા લોકાશાહની વાતનો સ્વીકાર કર્યો, પરતુ આવશ્યક સૂત્રને પ્રામાણિક માની એકત્રીસ આગમના બત્રીસ આગમ માન્યા લોકાશાહની માફક જ તેમણે અન્ય ટીકાઓ અને ટિપ્પણીઓ કરતા મૂળ આગમોને જ શ્રદ્ધાપાત્ર માન્યા આ પરપરા આજ સુધી સ્થાનકવાસી સમાજે માન્ય રાખી છે સ્થાનકવાસી સમાજ નીચે પ્રમાણે આગમોને પ્રમાણભૂત માને છે

૧૧. **અગસૂત્રો** ૧ આચારાગ, ૨ સૂત્રકૃતાગ, ૩ સ્થાનાગ ૪ સમવાયાગ, ૫ વ્યાખ્યા પ્રજ્ઞપ્તિ (ભગવતી) ૬ જ્ઞાતા ધર્મ કથાગ, ૭. ઉપાસક દશાગ, ૮ અતકૃત દશાગ, ૯ અનુત્તરોપ પાતિક દશાગ, ૧૦. પ્રશ્ન વ્યાકરણ અને ૧૧ વિપાક સૂત્ર

૧૨ **ઉપાંગ સૂત્રો** ૧. ઉવવાઇ ૨ રાયપસેણી ૩ જીવાભિગમ, ૪ પન્નવણા, ૫ સૂર્યપ્રજ્ઞપ્તિ, ૬ જમ્બુદ્વિપ પ્રજ્ઞપ્તિ, ૭ ચદ્ર પ્રજ્ઞપ્તિ, ૯ નિરયાવલિકા, ૯ કલ્પાવતસિકા, ૧૦ પુષ્પિકા, ૧૧ પુષ્પ ચૂલિકા, ૧૨ વન્હિદશા

૪ **મૂળ સૂત્રો** ૧ દશવૈકાલિક, ૨ ઉત્તરાધ્યયન, ૩. નદી ૪ અનુયોગ દ્વાર

૪. **છેદ સૂત્રો**: ૧. બૃહત્કલ્પ, ૨ વ્યવહાર, ૩ નિશીથ ૪ દશાશ્રુતસ્કધ

૧ આવશ્યક આ પ્રાચીન શાસ્ત્રોમા જૈન પરપરાની દૃષ્ટિએ આચાર, વિજ્ઞાન, ઉપદેશ, દર્શન, ભૂગોળ, ખગોળ આદિના વર્ણનો છે આચાર માટે આચારાગ, દશવૈકાલિક આદિ ઉપદેશાત્મક ઉત્તરાધ્યયન વિ દર્શનાત્મક સૂત્રકૃતાગ, પ્રજ્ઞાપના, રાયપસેણી, નદી, ઠાણાગ, સમાવાયાગ, અનુયોગદ્વાર વિ ભૂગોળ ખગોળ માટે જબુદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિ, ચદ્રપ્રજ્ઞપ્તિ, સૂર્ય પ્રજ્ઞપ્તિ વિ પ્રાયશ્ચિત વિશુદ્ધિ માટે છેદસૂત્રો અને આવશ્યક જીવનચરિત્રોનો સમાવેશ ઉપાસક દશાગ, અનુત્તરોવવાઇ વિ મા છે જ્ઞાતા ધર્મ કથાગ, આખ્યાનાત્મક છે, વિપાક સૂત્ર કર્મવિષયક અને ભગવતી સવાદાત્મક છે.

જૈન દર્શનના મૌલિક તત્ત્વોની પ્રરૂપણા આ સૂત્રોમા વિસ્તૃત રૂપે દેખાય છે અનેકાત દર્શન આદિના વિચાર, અગ અને દૃષ્ટિ-બધા વિષયો જૈનાગમોમા સગ્રથિત છે

૨ જૈન ધર્મની બધી શાખાઓમા સ્થાનકવાસી શાખાની બે ખાસ વિશેષતાઓ છે ૧ સ્થાનકવાસીઓ મુહપત્તીને આવશ્યક અને ૨ મૂર્તિપૂજાને આગમ-વિરુદ્ધ હોવાથી અનાવશ્યક માને છે

જૈન સાધુઓનુ સર્વાધિક પ્રચલિત અને પરિચિત ચિહ્ન છે "મુહપત્તી" પરતુ દુર્ભાગ્યવશાત્ જૈન મુનિઓના

શાસ્ત્રોના પ્રમાણોને સ્વીકારીએ તો દિગંબર અને શ્વેતાંબરના શાસ્ત્રોનો મેળ ખાતો નથી, પણ સૈદ્ધાંતિક દૃષ્ટિથી જૈન સાધુના આદર્શના સંબંધમાં, ભગવાન મહાવીરના અહિંસાના સિદ્ધાંતના આધારે આપણે વિચાર કરી શકીએ તેમ છીએ શ્વેતાંબર શાસ્ત્રોમાં મુહપત્તીનું આવશ્યક વિધાન છે સાધુના ચૌદ ઉપકરણોમાં મુહપત્તીને મુખ્ય ઉપકરણ ગણવામાં આવેલ છે

ભગવતી સૂત્રના ૧૬મા શતકના બીજા ઉદ્દેશામાં ભગવાને કહ્યું છે કે –

“ गोयमा। जाहेण सक्के देविंदे देवराया, सुहुम काय अणिज्जुहित्ताण भास भासति, ताहेण सक्के देविंदे देवराया सावज्ज भास भासई। ”

અર્થાત્-હે ગૌતમ! શક્રદેવેન્દ્ર જ્યારે વસ્ત્રાદિકથી મુખ ઢાંકયા સિવાય (ઉઘાડે મોઢે) બોલે છે, ત્યારે તેની ભાષા સાવદ્ય હોય છે

અભયદેવ સૂરિએ તેમની વ્યાખ્યામાં મુખ ઢાંકવાનું વિધાન કરેલું છે તેમણે લખ્યું છે કે-વસ્ત્રાદિકથી મુખ ઢાંકીને બોલવું તેજ સૂક્ષ્મકાય જીવોનું રક્ષણકર્તા છે

યોગશાસ્ત્રના તૃતીય પ્રકાશના સત્તાશીમા શ્લોકનું વિવરણ કરતા હેમચંદ્રાચાર્ય લખે છે કે

मुखवस्त्रमपि सम्पतिम जीव रक्षणादुष्ण मुख वात विराध्य-मान बाह्य वायुकाय जीव रक्षणात् मुखे धूलि प्रवेश रक्षणा-च्चोपयोगीति।

हस्ते पात्रं दधानश्च तुण्डे वस्त्रस्य धारकः

मलिनान्येव वस्त्राणि, धारयन्तोऽल्प-भाषिणः

અર્થાત્ —જૈન સાધુ હાથમાં પાત્ર રાખે છે, મો ઉપર વસ્ત્ર ધારણ કરે છે, વસ્ત્રો મલિન હોય છે અને અલ્પ ભાષણ કરે છે

પુરાણો ગમે તેટલા અર્વાચીન હોય પણ મુહપત્તી મોઢે બાંધવી કે હાથમાં રાખવી એ વિવાદ કરતા તો ઘણા પ્રાચીન છે એટલે સ્થાનકવાસીઓની મોઢે મુહપત્તી બાંધવાની રીત પ્રાચીન છે

હિત શિક્ષા રાસ, ઉપદેશ અધિકારમાં કહ્યું છે કે –

મુખ બાંધી તે મુહપત્તી, હેઠી પાટો ધાર,
અતિ હેઠી દાઢી થઈ, જોતર ગળે નિરધાર
એક કાને ધ્વજ સમ કહી, ખભે પછેડી ઠામ,
કેડે ખોસી કોથળી, નાવી પુણ્યને કામ

જૈનાગમોમાં તથા જૈન સાહિત્યમાં મુહપત્તીને વાચના, પૃચ્છના, પરાવર્તના તથા ધર્મકથાના સમયે આવશ્યક ઉપકરણ કહ્યું છે

વસતિ પ્રમાર્જન, સ્થંડિલ ગમન વ્યાખ્યાન પ્રસંગ તથા મૃતક પ્રસંગમાં મુહપત્તીનું આવશ્યક વિધાન કરવામાં આવ્યું છે

પંન્યાસજી મહારાજ, શ્રી રત્ન વિજયજીગણિએ “મુહપત્તી ચર્ચા-સાર” નામના એક પુસ્તકનો સંગ્રહ કર્યો છે, જે આ વિષય ઉપર ખાસ પ્રકાશ ફેંકે છે.

માત્ર સ્થાનકવાસીઓથી જુદા પડવાની ખાતર જ મૂર્તિપૂજકો મો ઉપર મુહપત્તી બાંધતા નથી, એમ શ્રી વિજયાનંદસૂરિ (આત્મારામજી) મહારાજે સં. ૧૯૬૭ના કાર્તક વદિ ૦))ને બુધવારે સૂરતથી મુનિશ્રી આલમચંદજીને પત્ર લખ્યો છે તે ઉપરથી જાણી શકાય છે સ્વ શ્રી વિજયવલ્લભસૂરિજી કે જે તે વખતે શ્રી વલ્લભવિજયજી હતા, તેમના હસ્તાક્ષરે લખાયેલ તે પત્રમા નીચે પ્રમાણે લખેલ છે

"मुहपत्ती विशे हमारा कहना इतनाहि है कि मुहपत्ती बंधनी अच्छी है और घणे दिनोसे परंपरा चली आई है, इनको लोपना अच्छा नहि है। हम बंधनी अच्छी जाणते है, परंतु हम ढुंढीए लोकमेसे मुहपत्ती तोडके नीकले है ईस वास्ते हम बंध नही सकते है। और जो कदी बंधनी ईच्छीए तो गहा बडी निंदा होती है।"

— જીવરાજજી મહારાજે પણ શાસ્ત્રોના પ્રમાણો અને ઉભય પક્ષના તર્કોનો વિચાર કરીને મુહપત્તીને મુખ ઉપર બાંધવાનુ નક્કી કર્યું

સાપ્રદાયિકતા માનવીના માનસને ગુલામ બનાવી મૂકે છે મુહપત્તીની ઉપયોગિતા સ્વીકારનારા પણ મુહ-પત્તીમા વપરાતા દોરાના ઉપયોગ સામે વાંધો લે છે પરંતુ એક કાનથી બીજા કાન સુધી મુહપત્તી બાંધવામા કપડુ વધારે વાપરવુ પડે તેના કરતા માત્ર દોરાથી જ ચાલી શકતુ હોય તો એટલો પરિગ્રહ ઓછો થાય ધર્મ પરિગ્રહ વધારવામા છે કે ઘટાડવામા ! આમ બધી દૃષ્ટિએ વિચારી જીવરાજજી મહારાજે દોરા સાથે મુહપત્તી બાંધવાનુ સ્વીકાર્યું

૩ મૂર્તિપૂજાના સબંધમા અગાઉ લોકાશાહના વિચારો આપણે જોઇ ગયા છીએ, તે જ તેમણે માન્ય રાખ્યા અને મૂર્તિપૂજાને ધર્મ વિધિમા અનાવશ્યક માની

જીવરાજજી મહારાજ જ્યારે યતિ ધર્મમાથી અલગ થયા ત્યારે તેમની સાથે બીજા પાંચ યતિઓ પણ નીકળ્યા અને તેમને સહકાર આપ્યો

* તેમનો શુદ્ધ સંયમ જોઇને લોકોનો તેમના પ્રત્યે ભાવ વધવા લાગ્યો આથી યતિવર્ગે તેમની સામે વિરોધ જગાવવા માડ્યો, પરંતુ આ બધાથી જરા પણ ગભરાયા વિના અહિંસાના સજાગ પ્રહરી બનીને ઘૂમતા રહ્યા માલવ પ્રદેશમા ધર્મ-જાગૃતિ લાવવાનુ માન પણ તેમના ફાળે જાય છે

પ્રાતે પ્રાતમા વિચરતા તેઓ આગ્રા આવ્યા ત્યા તેમનુ શરીર નિર્બળ બનવા લાગ્યુ અંત સમય નજીક સમજી, સંપૂર્ણ આહારનો પરિત્યાગ કરી તેઓ સમાધિ-પૂર્વક કાળધર્મ પામ્યા

તેમના સમયમા જ તેમના અનુયાયીઓની સખ્યા ઘણી મોટી બની ગઇ હતી. તેમના દેહાત પછી આચાર્ય ધનજી, વિષ્ણુજી, મનજી તથા નાથુરામજી થયા

કોટા સપ્રદાય, અમરસિહજી મ નો સપ્રદાય, સ્વામીદાસજી મ નો સપ્રદાય, નાથુરામજી મ નો સપ્રદાય આદિ દસ અગિયાર સપ્રદાય તેમને પોતાના મૂળ પુરુષ માને છે

૧૭—ધર્મસિંહજી મુનિ

લોકાશાહે જડવાદ અને આડબરના વિરોધમા મોરચો માડ્યો હતો, તે પ્રમાણે ધર્મસિહજી મહારાજે લોકાગચ્છમા પેસી ગયેલી કુરીતિઓનો નાશ કરવા માટે ઉદ્‌ઘોષણા કરી

લોકાશાહની સેનાની આતરિક સ્થિતિને સુદૃઢ કરનાર સ્થાનિકવાસી સમાજના મૂળ પ્રણેતાઓમાથી બીજા નબરે તેઓ આવે છે

શ્રી ધર્મસિહજીનો જન્મ સૌરાષ્ટ્રના હાલાર પ્રાંતના જામનગરમા થયો હતો દશા શ્રીમાળી જિનદાસ તેમના પિતા અને શિવાદેવી તેમની માતા હતા

એક વખત લોકાગચ્છી યતિ શ્રી દેવજીનુ વ્યાખ્યાન સાભળી તેમને સસાર પ્રત્યે વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન થયો અને દીક્ષા લેવાનો નિર્ણય કર્યો પદર વર્ષના કુમાર ધર્મસિહે માતપિતાની આજ્ઞા માગી માતપિતાએ ઘણા સમજાવ્યા, પણ પ્રબળ વૈરાગ્યભાવના આગળ તેમને નમતુ આપવુ પડ્યુ એટલુ જ નહિ પણ તેમના ઉપદેશથી પ્રભાવિત થઇ તેમના પિતાએ પણ તેમની સાથે દીક્ષા લીધી

ધર્મસિહજી મુનિને અપૂર્વ બુદ્ધિ તથા વિલક્ષણ પ્રતિભાની ખરેખર કુદરતી બક્ષિસ હતી તેમણે થોડા જ વખતમા બત્રીસ આગમો, તર્ક, વ્યાકરણ સાહિત્ય તેમ જ દર્શનનુ જ્ઞાન ઉપાર્જન કર્યું.

ધર્મસિહજી મુનિ એક સાથે બન્ને હાથે લખી શકતા અને અવધાન કરી શકતા

સામાન્ય રીતે વિદ્વાનોની સાથે ચારિત્રનો મેળ ઓછો હોય છે ત્યારે ધર્મસિહજીમા વિદ્વાની ચારિત્ર પણ ઘણા જ ઊંચા પ્રકારનુ હતુ

તેમના હૃદયમા યતિઓના શિથિલાચારી જીવન પ્રત્યે અસતોષ જાગ્યો તેમણે નમ્રતાપૂર્વક પૂજ્ય યતિશ્રી શિવજીની પાસે ખુલાસો કર્યો અને કહ્યુ

"ગુરુદેવ! પાચમા આરાના બહાના નીચે શિથિલાચારનુ આજે જે પોષણ થઇ રહ્યુ છે, તે જોઇને આપના જેવા નરસિહ પણ જો વિશુદ્ધ મુનિ ધર્મનુ પાલન નહિ કરે તો પછી કોણ કરશે? આપ મુનિધર્મનુ પાલન કરવાની પ્રતિજ્ઞા કરો હુ પોતે આપની સાથે આગમાનુસાર સયમ પાલન કરીશ"

ગુરુએ ઘણા જ પ્રેમપૂર્વક શિષ્યની વાત સામળી અને થોડો વખત રાહ જોવા કહ્યુ

ધર્મસિહજીએ ગુરુની વાત સ્વીકારી અને શ્રુતધર્મની સેવા કરવા તેમણે સૂત્રો ઉપર ટબ્બા લખવાનો આરભ કર્યો તેમણે સત્તાવીસ સૂત્રોના ટબ્બા લખ્યા આ ટબ્બા એવી સરસ રીતે લખાયા છે કે આજ સુધી આ ટબ્બાઓને સ્થાનકવાસી સાધુઓ પ્રમાણિક માનતા આવ્યા છે અને તેને લીધે જ ગુજરાતી ભાષા સ્થાનકવાસી સાધુઓને જાણવી પડે છે

આ પછી ફરીથી તેમણે ગુરુદેવને વિનતિ કરી કે–"હવે વિશુદ્ધ સયમના પાલનાર્થે નીકળી પડવાની મારી તીવ્ર ઇચ્છા છે આપ જો નીકળો તો આપણે બન્ને જણા શુદ્ધ ચારિત્રને માર્ગે વળીએ"

ગુરુએ કહ્યુ "હે દેવાનુપ્રિય! તુ જોઇ શકે છે કે હુ તો આ ગાદી અને વૈભવને ત્યાગી શકુ તેમ નથી છતા તારા કલ્યાણના માર્ગમા હુ આડે આવવા ઇચ્છતો નથી તારી ઇચ્છા હોય તો તુ આગમાનુસાર ચારિત્ર્યનુ પાલન કર પરતુ અહીથી ગયા પછી તારી સામે વિરોધના વટોળ ઊભા થશે તેની સામે ટકી શકવાની તારામા શક્તિ છે કેમ? તે જાણવા માટે મારે તારી પરીક્ષા કરવી પડશે માટે આજે રાતના દિલ્હી દરવાજા બહાર (અમદાવાદમા) દરિયાખાનનો ઘુમ્મટ છે, ત્યા આજની રાત રહી, કાલે સવારે મારી પાસે આવજે

ધર્મસિહજી ગુરુની આજ્ઞા શિરોધાર્ય કરી ત્યા ગયા ત્યાના અધિકારી પાસે રાતવાસો કરવાની આજ્ઞા માગી તે વખતે અમદાવાદ શહેરનો આટલો વિકાસ થયો નહોતો રાતના કાઇથી શહેરની બહાર નીકળી શકાતુ નહિ અને દરિયાખાનના ઘુમ્મટમા તો રાતના કોઇથી રહી શકાતુ નહોતુ, આથી ત્યાના મુસલમાનોએ તેમને કહ્યુ –"મહારાજ! અહી કોઇ રાત્રે રહી શકતુ નથી જે રાત્રે અદર જાય છે, તેનુ સવારે શબ જ હાથ લાગે છે. આપ નાહક મરવાનુ શુ કરવા ઇચ્છો છો?

ધર્મસિહજીએ કહ્યુ "મને મારા ગુરુની આજ્ઞા છે કે રાતના અહી રહેવુ એટલે આપ મને આજ્ઞા આપો"

ત્યાના લોકોએ વિચાર્યુ કે આ કોઇ અજબ માણસ છે! આટલી જીદ કરે છે તો ભલે મરતો. તેમણે કહ્યુ 'મહારાજ! આપ રહો તેમા અમને કાઇ વાધો નથી, પરતુ આપને કાઇ થાય તો તેનો દોષ અમને ન દેતા"

ધર્મસિહજીએ કહ્યુ કે તેઓ કોઇપણ પ્રકારે કોઇને પણ દોષિત માનશે નહિ

તેઓ ઘુમ્મટમા પહોચ્યા. સધ્યા સમય થતા તેઓ પોતાના ધ્યાન, કાર્યોત્સર્ગ અને શાસ્ત્ર સ્વાધ્યાયમા લાગી ગયા એક પ્રહર રાત્રિ વીતી ગઇ ત્યારે દરિયાખાન પીર પોતાની કબર ઉપર આવ્યો તેણે જોયુ કે એક સાધુ સ્વાધ્યાયમા બેઠેલ છે તેણે શાસ્ત્રોની વાણી સાભળી આજ સુધી આવી વાણી તેણે કદી સાભળી નહોતી સાધુ તરફ નજર કરી તો તેઓ સ્વાધ્યાયમા લીન હતા તેમણે તો પોતાની દૃષ્ટિ સુદ્ધા ફેરવી નહિ યક્ષનુ હૃદય પલટાઇ ગયુ જે આજ સુધી મળે તે માનવીનો સહાર કરતો તે આ સાધુની સેવા–સુશ્રૂસા કરવા લાગી ગયો ધર્મસિહજીએ તેને ઉપદેશ આપ્યો અને તેણે કોઇને પણ હેરાન ન કરવાની પ્રતિજ્ઞા લીધી

જે લોકોએ આગલે દિવસે સાધુને અદર જતા જોયેલા તેઓ સવારમા તેમનુ શબ નિહાળવાની કુતૂહળતાથી પ્રેરાઇને બહાર ભેગા થયેલા ત્યા તો સૂર્યોદય થતા ધીર, ગભીર, પ્રતાપી ઓજસ્વી શ્રી ધર્મસિહજી મુનિ બહાર પધાર્યા લોકો આશ્ચર્યચકિત થઇ ગયા

શ્રી શિવજી ઋષિએ આ વાત સાભળી ઘણી જ પ્રસન્નતા અનુભવી અને ધર્મસિહજીને શાસ્ત્ર સમત શુદ્ધ સયમના માર્ગે વિચારવા આજ્ઞા આપી

શ્રી ધર્મસિહજી ગુરુના આશિર્વાદ મેળવી તેમનાથી છૂટા પડી અમદાવાદ પધાર્યા તે વખતે અમદાવાદમા ચૈત્યવાસીઓનુ બળ વધુ અને યતિઓ તો અનેક સારી જગ્યા એટલે સપૂર્ણ સયમીને યોગ્ય એવી જગ્યા ક્યાથી મળે? આથી તેમણે દરિયાપુર દરવાજાની ઉપરની ગએવાળની કોટડીમા રહી, દરવાજા ઉપરથી ઉપદેશ દેવા માડયો

આમ યતિવર્ગનું ષડ્યંત્ર નિષ્ફળ જવાથી તેઓએ એક યા બીજી રીતે તેમને દુઃખ દેવા માંડ્યું, પરંતુ લવજીઋષિ તો મનમાં પણ ક્રોધ લાવ્યા સિવાય પોતાના કાર્યમાં મગ્ન રહેતા

અમદાવાદમાં એકવાર લવજીઋષિ બિરાજતા હતા ત્યારે યતિવર્ગે કાવતરૂ રચી તેમના ત્રણ શિષ્યોનો ઘાત કરાવ્યો આ બાબતની ફરિયાદ લવજીઋષિના શ્રાવકોએ દિલ્હીના દરબારમાં પહોંચાડી તેની તપાસ થતા એક મંદિરમાંથી તેમના શબો દાટી દેવામાં આવેલા તે મળી આવ્યા આથી કાજીએ તે મંદિર તોડી પાડવાનો હુકમ આપ્યો

આથી લવજીઋષિના પચ્ચીસ શ્રાવકો કે જેઓ ધર્મના ઉપાસકો હતા તેમણે કાજીને વિનંતિ કરી કે "ભલે આ લોકો માર્ગ ભૂલ્યા અને ગમે તેવું ખરાબ કામ કર્યું છતાં તેઓ અમારા ભાઈઓ જ છે અમે મૂર્તિપૂજાને નથી માનતા પણ તેઓ મૂર્તિપૂજા દ્વારા જિનેશ્વર દેવોનું જ આરાધન કરે છે જો મંદિર તોડી

પૂજ્ય શ્રી ધર્મસિંહજી મુનિની પરંપરા ખૂબ વિશાળ છે. આજે પણ સ્થાનકવાસી સમાજના ખંભાત સંઘાડો ગુજરાતમાં ઋષિ સંપ્રદાય માળવા તથા દક્ષિણમાં અને પંજાબમાં પૂજ્ય અમરસિંહજી મહારાજનો સંપ્રદાય આદિ તેમના અનુયાયિ સંપ્રદાયો મોટી સંખ્યામાં છે,

૧૯–શ્રી ધર્મદાસજી મહારાજ

પૂજ્ય શ્રી ધર્મદાસજી મહારાજનો જન્મ અમદાવાદ પાસેના સરખેજ ગામમાં, સંઘપતિ જીવણલાલ કાળિદાસની ધર્મપત્ની હીરાબાઈની કુક્ષિએ સં. ૧૭૦૧ના ચૈત્ર સુદિ ૧૧ને દિવસે થયો હતો તેઓ જાતના ભાવસાર હતા સરખેજમાં તે વખતે ભાવસારોના સાતસો ઘર હતા આ બધા લોંકાગચ્છી હતા

સરખેજમાં તે વખતે લોંકાગચ્છના કેશવજી યતિના પક્ષના શ્રી પૂજ્ય તેજસિંહજી બિરાજતા હતા તેમની પાસે ધર્મદાસજીએ ધાર્મિક જ્ઞાન શીઘ્ર પ્રાપ્ત કર્યું

એક વખત એકલપાત્રિયા પંથના એક અગ્રેસર કલ્યાણજીભાઈ પોતાના પંથના પ્રચારાર્થે સરખેજ આવ્યાં

મળથી જ વૈરાગ્યમય ધર્મદાસજી પર તેમના ઉપદેશનો ઠીક ઠીક પ્રભાવ પડયો

શાસ્ત્રોમા વર્ણવેલ શુદ્ધ સયમી જીવનના આચારો સાથે સરખાવતા, યતિઓના શિથિલચારી જીવનથી તેઓને દુખ થતુ આથી તેઓ યતિઓની પાસે દીક્ષા લેવા ઇચ્છતા નહિ કલ્યાણજીભાઇના ઉપદેશથી પ્રભાવિત થઇ માતપિતાની સમતિ પ્રાપ્ત કરી ધર્મદાસજી તેમના શિષ્ય બન્યા

એક વર્ષ સુધી તેમના સપર્કમા રહી શાસ્ત્રાભ્યાસ કર્યો શાસ્ત્રોનો અભ્યાસ કરતા તેમની એકલપાત્રિયા પથની શ્રદ્ધા હટી ગઇ તેમણે એ અજ્ઞાનમૂલક માન્યતાનો ત્યાગ કર્યો અને વિ સ ૧૭૧૬મા અમદાવાદમા દિલ્હી દરવાજા બહાર આવેલી પાદશાહની વાડીમા શુદ્ધ દીક્ષા અગીકાર કરી

એમ કહેવાય છે કે અમદાવાદમા એક વખત તેમની અને પૂજ્ય શ્રી ધર્મસિહજી મુનિ વચ્ચે વિચાર વિનિમય થયો હતો, પરતુ આઠ કોટિ અને આયુષ્ય તૂટવાની માન્યતા ઉપર બને સમત થઇ શક્યા નહિ

આવી રીતે લવજીઋષિ સાથે પણ તેમને વાર્તાલાપ થયેલો પરતુ તેમા પણ સાત મુદ્દાઓ ઉપર સમાધાન ન થઇ શકવાથી તેમણે સ્વતત્ર રીતે દીક્ષા લીધી છતા ધર્મસિહજી મુનિ અને ધર્મદાસજી મહારાજ વચ્ચે ખૂબ જ પ્રેમ હતો.

દીક્ષાને પ્રથમ દિવસે તેઓ શહેરમા ગોચરી કરવા ગયા અકસ્માત તે એવા ઘેર પહોચ્યા કે જ્યા સાધુ માર્ગીઓના દ્વેષીઓ વસતા હતા તેમણે મુનિને આહારના સ્થાને રાખ વહોરાવી પવનને લીધે રાખ પવનમા ઊડી ગઇ અને થોડીક પાત્રમા રહી ધર્મદાસજી આ રાખ લઇ શહેરમા બિરાજતા ધર્મસિહજી મુનિ પાસે આવ્યા અને ભિક્ષામા વિભૂતિ પ્રાપ્ત થયાની હકીકત કહી સભળાવી

ધર્મસિહજી મુનિએ કહ્યુ –"ધર્મદાસજી ! આ રાખનુ ઊડવુ એમ સૂચવે છે કે તેની માફક આપની કીર્તિ ફેલાશે અને આપની પરપરા પણ ખૂબ જ વિકાસ પામશે જેવી રીતે રાખ વિનાનુ કોઇ ઘર હોતુ નથી, તેવી રીતે તમારા ભક્તો સિવાયના કોઇ ગામ કે પ્રાત રહેશે નહિ".

આ ઘટના વિ સ. ૧૭૧૬ની છે. તેમના ગુરુદેવનો સ્વર્ગવાસ તેમની દીક્ષા પછી એકવીસ દિવસે માગશર વદિ ૫ ના રોજ થયો હતો આથી લોકોમા એવો ભ્રમ ફેલાયો કે ધર્મદાસજી સ્વયબોધી છે

ધર્મદાસજી ઉપર સમસ્ત સપ્રદાયની જવાબદારી હતી અને તે તેમણે ઘણી જ કુશળતાપૂર્વક અદા કરી ભારતના ઘણા પ્રાતોમા વિચરી તેમણે ધર્મનો પ્રચાર કર્યો

તેમના ગુણોથી આકર્ષાઇ તેમના અનુયાયી સઘે સ ૧૭૨૧ મા માલવાના પાટનગર ઉજ્જૈનમા ભવ્ય સમારોહ વચ્ચે તેમને આચાર્ય પદવીથી વિભૂષિત કર્યા

પૂ ધર્મદાસજી મહારાજે કચ્છ, કાઠિયાવાડ, વાગડ, ખાનદેશ, પજાબ, મેવાડ, માળવા, હાડૌતી, ઢુઢાર આદિ પ્રાતોમા પ્રચાર કર્યો લગભગ અર્ધ ઉપરાતના ભારતમા નિર્ગ્રથ ધર્મનો પ્રચાર કરતા તેઓ ઘૂમી વળ્યા હતા

ધર્મસિહજી મુનિ અને લવજીઋષિ સાથે તેમને અનુક્રમે એકવીસ અને સાત બોલના અતર હોવા છતા પણ પરસ્પર સ્નેહસબધ ગાઢ હતો ધર્મસિહજી મહારાજ તો તેમને પોતાના શિષ્યો કરતા પણ વધુ ચાહતા હતા

ધર્મદાસજી મહારાજની શિષ્યપરપરા તે વખતના સર્વ મહાપુરુષો કરતા અધિક છે તેમને ૯૯ શિષ્યો હતા, જેમાના ૩૫ તો સસ્કૃત અને પ્રાકૃતના પડિતો હતા. આ પત્રીસ પડિતોની સાથે તો શિષ્યોની એકેક ટોળી બની ગઇ હતી

આમ શિષ્યો અને પ્રશિષ્યોના મોટા પરિવારની વ્યવસ્થા તથા શિક્ષણનો પ્રબધ કરવો એ એક વ્યક્તિ માટે મુશ્કેલ હતુ આથી પૂજ્ય ધર્મદાસજી મહારાજે ધારાનગરીમા બધા શિષ્યો પ્રશિષ્યોને એકત્ર કરી સ ૧૭૭૨ના ચૈત્ર સુદિ ૧૩ ના રોજ બાવીસ સપ્રદાયમા વહેચી નાખ્યા

સ્થાનકવાસી જૈન સમાજમા બાવીસ સપ્રદાયનુ નામ ખૂબ પ્રચલિત છે. તે બાવીસ ટોળાને નામે પણ ઓળખાય છે કારણ કે એક જ ગુરુના પરિવારની બાવીસ અલગ અલગ ટોળીઓ છે આ બાવીસ સપ્રદાયના નામો નીચે મુજબ છે

(૧) પૂજ્યશ્રી ધર્મદાસજી મ નો સપ્રદાય, (૨) પૂજ્યશ્રી ધનાજી મ નો સપ્રદાય, (૩) પૂજ્યશ્રી લાલચદજી મ નો સપ્ર (૪) પૂજ્યશ્રી મનાજી મ નો સપ્ર. (૫) પૂજ્યશ્રી મોટા પૃથ્વીરાજજી મ નો સપ્ર (૬) પૂજ્યશ્રી નાના પૃથ્વીરાજજી મ નો સપ્ર (૭) પૂજ્યશ્રી બાલચદજી મ નો સપ્ર (૮) પૂજ્યશ્રી તારાચદજી મ નો સપ્ર (૯) પૂજ્યશ્રી

પૂજ્યશ્રી ખૂબ ઝડપથી વિહાર કરી આજના 'નવા-નગરીમા પહોંચ્યા ક્ષુધાતુર ઉદર અને તૃષાતુર ગાત્ર-વાળા શિષ્ય–મુનિ અન્નજળ માગી રહ્યા હતા પૂજ્યશ્રીએ તેમને પ્રતિજ્ઞાનુ પાલન કરવા સમજાવ્યા પરંતુ મુનિની સાહસશક્તિ તૂટી પડી હતી તેમના પર ઉપદેશની અસર ન થઈ

પૂજ્યશ્રીએ ઝટપટ પોતાનો બોજો ઉતારી નાખ્યો સંપ્રદાયની જવાબદારી મૂળચંદજી મહારાજને સોંપી, સંઘને પોતાના મંતવ્યની જાણ કરી તુરત જ ધર્મની જ્યોતને ઝળહળતી રાખવા પોતે શિષ્યના સ્થાને સંથારો આદરી બેસી ગયા

શરીરનો ધર્મ તો વિલય થવાનો જ છે ધીમે ધીમે શરીર કૃશ થતુ ગયુ અને એક દિવસ શાંત વાતાવરણમા વર્ષાના ઝીણા ઝીણા ફોરાં પડતા હતા એવા સમયે દેહત્યાગ કરી તેમનો આત્મા સ્વર્ગે સંચર્યો

સં ૧૭૬૯ કે ૧૭૭૨મા, ધર્મની કીર્તિની રક્ષાને કાજે તેમણે આમ પોતાના દેહનુ બલિદાન દીધુ

ધન્ય હો, આવા મહાન આત્માને!!

કોન્ફરન્સની સ્થાપના કરી અને ૧૯૦૨ મા મૂર્તિપૂજક ભાઈઓએ પણ શ્રી શ્વેતાંબર મૂર્તિપૂજક કોન્ફરન્સનુ નિર્માણ કર્યુ

આપણા સમાજમા ખંભાત સંપ્રદાયના ઉત્સાહી મુનિશ્રી છગનલાલજી મહારાજે સ્થાનકવાસી સમાજના સંગઠન પ્રત્યે ધ્યાન ખેંચ્યુ અને જૈન સમાજના સુવિખ્યાત લેખક, નિડર વક્તા, જાણીતા ફિલસૂફ, અને સ્વતંત્ર વિચારક સ્વ શ્રી વાડીલાલ મોતીલાલ શાહને શ્રાવક સમાજના એકીકરણની પ્રેરણા આપી

શ્રાવકો સામાજિક કાર્યોમા તો એકરૂપ જ હતા પરંતુ ધર્મકાર્યમા સંપ્રદાયોના નામે વહેંચાઈ ગયેલા હતા સમયને સમજીને, કલહના પરિણામો નિહાળીને દરેકે એકીકરણની યોજનાને આવકારી અને સને ૧૯૦૬મા "શ્રી અખિલ ભારતીય શ્વેતાંબર સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સ"ની સ્થાપના થઈ

કોન્ફરન્સનુ પહેલુ અધિવેશન મોરબીમા સને ૧૯૦૬મા બીજુ, સને ૧૯૦૮મા રતલામમા, ત્રીજુ, સને ૧૯૦૯મા અજમેરમા, ચોથુ, સને ૧૯૧૦મા જલંદર (પંજાબ)મા, પાંચમુ, સને ૧૯૨૩મા સિકંદ્રાબાદમા, છઠ્ઠુ, સને ૧૯૨૪મા

સૌન્દર્યને બતાડવા માટે ઘૂમટાની પ્રથા દાખલ થયેલી. પરન્તુ આજે તેનું કોઈ પ્રયોજન નથી એટલું જ નહી પરન્તુ એ પ્રથા સ્ત્રીના વિકાસને રૂંધનારી અને કુટુંબની ખટપટમાં ઘણી જ મુશ્કેલીઓ ઊભી કરનારી હોઈ, તેનો સદંતર ત્યાગ કરવા અને કરાવવા જોરશોર પ્રયત્ન કરવો જોઈએ

મૃત્યુ પાછળની ક્રિયાઓ

પ્રસ્તાવ નં. ૬ : કોઈનું મૃત્યુ થતાં તેની પાછળ રોવું, કૂટવું, પછાડો ખાવી, રાજિયા ગાવા અને યુવાન યા યુવતીના અરેરાટીભર્યા મૃત્યુ પછી ચીમા જમોળેથી રોટલી,-દાળ-ભાત,-શાક વગેરે જમવા તથા વૃદ્ધની પાછળ જમણ કરવા એ ઘણો જ ખોટો રિવાજ છે આ પ્રથા સદંતર બંધ કરી તથા પ્રત્યેક મરનારના આત્માની શાંતિ ખાતર તેના આપ્તજનોએ મળી દિવસના અમુક વખત નવકાર મંત્રનો મૌન જાપ કરવો

લગ્ન સંબંધો માટેની સંકુચિત મર્યાદાને વિસ્તૃત બનાવવી

પ્રસ્તાવ નં. ૭. લગ્ન એ પ્રત્યેક વ્યક્તિનો અંગત પ્રશ્ન હોવા છતાં સમાજજીવન સાથે તે એટલો બધો ઓતપ્રોત થઇ ગયો છે કે, આપણે તેમાં સમયાનુસાર ફેરફાર કરવા જ જોઇએ આપણે જૈન છીએ, ભગવાન મહાવીરના એટલે કે શ્રમણ સંસ્કૃતિના ઉપાસક છીએ, તેથી એક જ પ્રકારના સંસ્કારો ધરાવનાર વર્તુળ સુધી, એટલે કે સમગ્ર ભારતના જૈન સુધી લગ્નની મર્યાદા વિસ્તારાય તો આપણા પુત્ર-પુત્રીઓને માટે યોગ્ય વર કે કન્યા મેળવવાનું સરળ થાય આ કાર્યમાં આજે સમાજ કે રાજ્યનું કોઇ બંધન નડતું નથી, માત્ર મનના બંધનોને તોડનારૂં આંદોલન જગાવવું જોઇએ

વિધવાની કરૂણ હાલતના અસરકારક ઉપાયો

પ્રસ્તાવ નં. ૮ : સમાજની એકેએક સમજદાર વ્યક્તિને વિધવાના દારૂણ દુઃખ તરફ જરૂર કરૂણા આવતી હશે, પરંતુ માત્ર સુખી કરૂણાથી શું થાય? તેના દુઃખના નિવારણનો માર્ગ શોધવો જોઇએ. તેના બે માર્ગ છે

અ વૈધવ્ય ફરજિયાત નહિ, પણ મરજિયાત હોવું જોઇએ,

બ સ્વેચ્છાએ વૈધવ્ય પાળવા ઇચ્છતી બહેનોમાથી જેમને કૌટુમ્બિક સહાય ન હોય તેમને સમાજે સહાય આપવી જોઇએ

વધતી જતી આત્મહત્યાઓનું મૂળ શોધી તેને અટકાવવી

પ્રસ્તાવ નં. ૯ અ. સાસરે દુઃખ હોય છતાં આબરૂને હાનિ પહોંચવાના કે લોકટીકાના ભયે પિયરમાં રહી શકે નહી ત્યારે આવી બહેનો મરણનું શરણ શોધે છે આવી બહેનો માટે સમાજ તરફના નિર્ભય આશ્રયસ્થાનની જરૂર છે

બ. આવા મૃત્યુ પ્રસંગે સમાજે માત્ર અલ્પકાળ અફસોસી કરી, બેસી ન રહેતા, એ મૃત્યુમાં જે કારણભૂત હોય તેમને સખ્ત નસિયત આપવી તથા પતિના દુઃખે મરનારને કરી કોઇએ પોતાની કન્યા ન આપવી

સંઘ-ઐક્યની યોજનામાં બહેનોએ પોતાનો ફાળો આપવા બાબત

પ્રસ્તાવ નં. ૧૦. સંપ્રદાયના વાડાઓ ભૂલી સંઘ-ઐક્યની યોજના માટે આપણી કોન્ફરન્સ તરફથી જે પ્રયત્નો ચાલી રહ્યા છે તેમાં પુરૂષોની સાથે બહેનોએ પણ પોતાનો સહકાર આપવો અને એ યોજનાનો ભંગ કરનારને સહકાર આપવો નહિ

બહેનોએ શરીર સુદૃઢ બનાવવાં ઘટે

પ્રસ્તાવ નં. ૧૧ : શરીરની શક્તિ પર જીવનની બધી પ્રગતિ યા ઉન્નતિનો આધાર છે, ખાસ કરીને સ્ત્રીએ તો માતા બનવાનું હોઇ, તેના શરીરના બાંધાની અસર તેના સંતાન પર થાય છે માટે સુકોમળતાના ખોટા ખ્યાલો છોડી દઇ, બહેનોના શરીર કસાયેલા અને મજબુત બને તે જાતના પ્રયત્નો દરેક ઘરમાં થવા જોઇએ

દાનના પ્રવાહની ગતિ બદલવાની જરૂર

પ્રસ્તાવ નં. ૧૨ : કોઇ પણ સમાજ યા રાષ્ટ્રની ઉન્નતિનો આધાર કેળવણી પર છે સૌ જાણે છે કે આપણ સમાજનો સ્ત્રીવર્ગ કેળવણીની દિશામાં ખૂબ પછાત છે. જ્યાં સુધી સ્ત્રીઓ નહી કેળવાય ત્યાં સુધી સમાજદેહનું અર્ધું અંગ પાંગળું રહેશે, માટે સમાજોન્નતિ ખાતર સમાજના ધનિકોએ પોતાનો ધનપ્રવાહ અને વિદ્વાનોએ પોતાની બુદ્ધિશક્તિ, સ્ત્રીઓ માટેના સરસ્વતી મંદિરો ખોલવા અને તેને પોષવા પાછળ વહેવડાવવો જોઇએ

સમાજમાં સ્ત્રીઓનો સમાન દરજ્જો

પ્રસ્તાવ નં. ૧૩ : સ્વતંત્રતા, સમાનતા અને ન્યાયની ઘોષણા કરતું આઝાદ હિંદનું નવું બંધારણ

ઘડાઈ ગયુ છે અને તેમા કાયદાની દૃષ્ટિએ તમામ પ્રજાજનોને સમાન લેખવામા આવ્યા છે, તેથી જીવનના પ્રત્યેક વ્યવહારમા અને સામાજિક ક્ષેત્રોમા એકેએ, પ્રમ ગે પુરુષે એ સ્ત્રીઓને સમાન સ્થાન આપવાની પ્રથા પાડવી જોઈએ અને બહેનોએ એ સ્થાનને શોભાવવાની તમન્ના સેવવી જોઈએ

આભાર-પ્રદર્શન

કાર્યવાહીને અતે મહિલા પરિષદના પ્રમુખ, સ્વાગત સમિતિના પ્રમુખ, કોન્ફરન્સ અધિવેશનના યોજકો અને ઉપસ્થિત બહેનોનો આભાર માનવામા આવ્યો હતો

અધિવેશન બારમુ

સ્થળ: સાદડી (મારવાડ)

તા ૪, ૫, ૬ મે ૧૯૫૨

પ્રમુખ: શેઠ ચપાલાલજી બાંઠિયા

સ્વા. પ્રમુખ: શ્રીમાન શેઠ દાનમલજી બલદોટા

શ્રી અ ભા શ્વે સ્થા જૈન કોન્ફરન્સના ઇતિહાસમા આ બારમુ અધિવેશન ઐતિહાસિક છે આ અધિવેશનની સાથે બૃહદ સાધુ-સમેલન પણ મળેલુ જે વખતે જુદા જુદા સપ્રદાયોનુ વિલીનીકરણ કરી શ્રી વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રમણ સઘની સ્થાપના કરવામા આવી

આ અધિવેશનમા મુખ્યત્વે નીચેના પ્રસ્તાવો પસાર થયા, જે નોધપાત્ર છે

પ્રસ્તાવ ન. ૩: (૧) ૧૯૪૦ની સરકારી વસતી ગણતરી અનુસાર ભારતના જૈનોની સખ્યા ૧૧ લાખની અદાજે, છે, પરતુ વસ્તુત તો ભારતમા જૈનોની વસતી તેથી ઘણી વધારે હોવાની જૈનોની ત્રણે મુખ્ય સસ્થાઓની માન્યતા છે જૈન સમાજ હમેશા રાષ્ટ્રવાદી રહ્યો છે, એટલુ જ નહિ પરન્તુ આઝાદીની લડતમા પણ હમેશા આગળ રહ્યો છે આઝાદી મળ્યા બાદ પણ જૈનોએ કદી વિશિષ્ટાધિકારોની માગણી કરી નથી, એટલુ જ નહિ પરતુ અલગ અધિકારોની લડત સામે પોતાનો વિરોધ પ્રદર્શિત કર્યો છે. જૈન સમાજ ભારત સરકાર સમક્ષ માત્ર એટલી જ માગણી કરે છે કે જે અહિંસા શસ્ત્ર દ્વારા આઝાદી પ્રાપ્ત થઈ છે તે અહિંસાના પ્રવર્તક ભગવાન મહાવીરના જન્મદિન ચૈત્ર સુદ ૧૩ને ૫બ્લિક હોલીડે જાહેર તહેવાર તરીકે માન્ય કરવામા આવે

(૨) આ અધિવેશન જૈન સમાજને પણ સાગ્રહ અનુરોધ કરે છે કે તેઓ મહાવીર જયતિ દિને પોત પોતાના વેપાર આદિ કામકાજ બધ રાખે

(૩) મુબઈ સરકાર, રાજસ્થાન સરકાર અને અન્ય જે જે પ્રાન્તિક સરકારોએ "મહાવીર જયતિ દિન" જાહેર તહેવાર તરીકે મજુર કરેલ છે તેમનો આ અધિવેશન આભાર માને છે

કોન્ફરન્સ પ્રકાશિત ધાર્મિક પાઠ્યપુસ્તકો શાળાઓમાં દાખલ કરવા અંગે

ત્યાર બાદ કોન્ફરન્સ પ્રકાશિત ધાર્મિક પાઠ્યપુસ્તકોને જૈન શાળાઓ પાઠશાળાઓ અને વ્યવહારિક શાળાઓમા પોતપોતાના પાઠ્યક્રમમા દાખલ કરવાનો અનુરોધ કરતો પ્રસ્તાવ શ્રી ચુનીભાઈ કામદારે રજૂ કર્યો હતો, જેનુ પ્રો ઇન્દ્ર તેમ જ શ્રી રાજમલજી ચોરડીઆએ અનુમોદન કર્યું હતુ આ પ્રસ્તાવ સર્વાનુમતે મજૂર થયો હતો

પ્રસ્તાવ ન. ૪: સ્થાનકવાસી જૈન સમાજની ધાર્મિક તેમ જ વ્યવહારિક શિક્ષણ શાળાઓમા વિદ્યાર્થીઓને ધાર્મિક શિક્ષણ આપવા માટે કોન્ફરન્સે વિદ્વદ સમિતિના સહકાર વડે અગ્રેજી ધોરણ એકથી મેટ્રિક સુધીના ધોરણ માટે જે પાઠ્યપુસ્તકો તૈયાર કર્યા છે, તેમાથી ચાર ભાગ ગુજરાતીમા અને પાચ ભાગ હિન્દીમા પ્રગટ થઈ ગયેલ છે આ કાર્ય પ્રતિ આ અધિવેશન સતોષ પ્રગટ કરે છે અને સમગ્ર હિન્દની પ્રત્યેક જૈન શાળાઓ, પાઠશાળાઓ અને વ્યવહારિક શાળાઓને તેમ જ શ્રી સઘના સચાલકોને અનુરોધ કરે છે કે તેઓ આ પાઠ્યપુસ્તકોને સર્વે શિક્ષણ શાળાઓમા પાઠ્યક્રમ તરીકે મજૂર કરે

પ્રસ્તાવ ન. ૬: પશુપક્ષીઓની નિકાસ અન્ય દેશોમા વેકિસનેશન તેમ જ અન્ય પ્રયોગો માટે થઈ રહેલ છે તે તથા પ્રાન્તિક સરકારો દ્વારા સમય સમય પર વાદરાઓ આદિ મૂક પ્રાણીઓ મારવાના જે હુકમો કાઢવામા આવે છે તે રાષ્ટ્રપિતા મહાત્મા ગાધીની માન્યતા, અહિંસાના સિદ્ધાતો તથા રાષ્ટ્રીય સરકારની શાનની વિરુદ્ધ છે, તેથી કોન્ફરન્સનુ આ બારમુ અધિવેશન ભારત સરકારને અનુરોધ કરે છે કે આ નિકાસ જલ્દીમા જલ્દી રોકવામા આવે તેમ જ વાદરાઓ આદિ મારવાના હુકમો જે પ્રાતમા હજુ ચાલુ છે તે હુકમો ત્યાની પ્રાન્તિક સરકારો

પાત્રા ખેંચી લે દેવદેવીઓ નિમિત્તે જે લાખો પશુઓનો વધ થાય છે તે વધ બધ કરવાનો પણ આ અધિવેશન રાષ્ટ્રીય સરકાર તેમ જ પ્રાતિક સરકારોને અનુરોધ કરે છે

પ્રસ્તાવ ન. ૭ ભારતની બિનસામ્પ્રદાયીક વર્તમાન રાજનીતિને લક્ષમા લેતા, જૈન સમાજના સર્વ ફિરકાઓની એકતા આજે સમગ્ર જૈન સમાજના સામુદાયિક હિત માટે અત્યત આવશ્યક છે જૈન સમાજના સર્વ ફિરકાઓમા મુખ્યત ક્રિયા ભેદ સિવાય કોઇ ખાસ મતભેદ નથી, આ દૃષ્ટિએ સામ્પ્રદાયિક મતભેદોને બાજુએ રાખીને, જૈન સમાજે સર્વગ્રાહી પ્રશ્નોમા સાથે રહીને કાર્ય કરવુ જોઇએ એમ આ અધિવેશન માને છે તેથી જ્યારે જ્યારે સમગ્ર જૈન સમાજને સ્પર્શતા પ્રશ્નો ઉપસ્થિત થાય ત્યારે ત્યારે જૈન સમાજના સર્વે ફિરકાઓને, હિદભરના શ્રી સઘોનો સહકાર લઇને કાર્ય કરવાનો આ અધિવેશન અનુરોધ કરે છે

મુનિરાજો પ્રતિ આ અધિવેશન સપૂર્ણ શ્રદ્ધા અને આદર પ્રદર્શિત કરે છે અને બહુમાનની દૃષ્ટિએ જુએ છે. ભગવાન મહાવીરના શાસનમા બૃહદ્ સાધુ–સમેલન એક અદ્વિતીય અને અભૂતપૂર્વ ઘટના છે– જે જૈન શાસનના ઇતિહાસમા સુવર્ણાક્ષરે ચિરસ્મરણીય સ્થાન પ્રાપ્ત કરશે.

(બ) શ્રી બૃહદ્ સાધુ સમેલન–સાદડીમા થયેલ કાર્યવાહીનુ આ અખિલ ભારતવર્ષીય શ્રી શ્વે સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સનુ બારમુ અધિવેશન હાર્દિક અનુમોદન કરે છે અને સમેલનના પ્રસ્તાવોના પાલનમા શ્રાવકોચિત સર્વાંગી અને હાર્દિક સહકાર દૃઢતાપૂર્વક આપવાની પોતાની સર્વ પ્રકારની જવાબદારી સ્વીકારે છે, તે માટે હિન્દભરના સર્વ સ્થાનકવાસી જૈન સઘોને આ અધિવેશન અનુરોધ કરે છે કે સાધુ–સમેલનના પ્રત્યેક પ્રસ્તાવોનુ પૂર્ણ પાલન કરાવવા માટે સૌ પોતપોતાની જવાબદારીપૂર્વક સક્રિય કાર્ય કરે.

મહિલા પરિષદ

છઠ્ઠું અધિવેશન-સાદડી

રાવબહાદુર શ્રી મોતીલાલજી મુથાની પ્રેરણાથી ને શ્રી લીલાવતીબેન કામદાર તથા શ્રી કેસરબેન ઝવેરીના પ્રયત્નથી તા ૬-૫-'૫૨ના રોજ સાદડી મુકામે "મહિલા સમેલન" ભરવામા આવ્યુ હતુ સમેલનનુ પ્રમુખસ્થાન શ્રીમતી તારાબેન બાઠિયાએ સ્વીકાર્યું હતુ. મગલાચરણમા શ્રી કમળાબેને સસ્કૃતમા મહાવીરાષ્ટક ગાયુ હતુ. તે પછી બાળાઓએ રાષ્ટ્રગીત ગાયા બાદ સમેલનનુ કાર્ય શરૂ કરવામા આવ્યુ હતુ

પ્રમુખશ્રીની ઓળખાણ આપતા શ્રી. લીલાવતીબેન કામદારે કહ્યુ હતુ કે, "આજના આપણા સંમેલન માટે સુશિક્ષિત, પ્રાગતિક વિચારો ધરાવનાર, સ્ત્રીજાતિની ઉન્નતિમા ઊંડો રસ લેનાર અને જનહિતના કાર્યોમા સક્રિય ભાગ લઇ સેવાર્થે ધન અને બુદ્ધિને વાપરનાર શ્રીમતી તારાબેન બાઠિયા જેવા પ્રમુખ આપણને મળ્યા છે, તે આપણા સમેલનનુ સૌભાગ્ય ગણાય

ત્યાર પછી અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સ, સતારાવાળા રા. બ શ્રી મોતીલાલજી મુથાના ધર્મપત્ની શ્રી સજ્જનબાઇ, શ્રી. સ્થા જૈન યુવક મડળ વગેરે તરફથી સમેલનને સફળતા ઇચ્છતા સદેશાઓ આવ્યા હતા તે વાચી સભળાવવામાં આવ્યા હતા. એ પછી પ્રમુખસ્થાનેથી શ્રી. તારાબેને મનનીય પ્રવચન કર્યુ હતુ

મુખ્ય વકતા તરીકે શ્રી લીલાવતીબેન કામદાર હતા. તેમણે 'સ્ત્રીજાતિની પ્રગતિ' વિષે જે પ્રેરક વિચારો રજૂ કર્યા હતા તેનો સારાશ નીચે પ્રમાણે છે "વર્તમાન ભારતમા સ્ત્રીઓ સામાજિક, રાજકીય શિક્ષણવિષયક ને એવા જીવનને સ્પર્શતા એકએક ક્ષેત્રમા કાર્ય કરી રહી છે, ભારતની નારીશક્તિ આજે જાગી ઊઠી છે જીવનનુ એક પણ ક્ષેત્ર આજે તેનાથી અણસ્પર્શ્યું રહ્યુ નથી આજે એક બાજુથી ભારતની મહિલા ગવર્નરપદે આવી આખા પ્રાતનો વહીવટ ચલાવી શકે છે, મધ્યસ્થ કે પ્રાતીય સરકારમા પ્રધાનપદે આવી મહત્વના ખાતાઓની જવાબદારી ઉપાડી શકે છે, લોકસભા કે ધારાસભાના સભ્યસ્થાનેથી પ્રજાજીવનને માટે ઉપયોગી કાયદા ઘડવામા મદદ કરી શકે છે, પરદેશના મોટા રાજ્યોમા એલચી તરીકેનો હોદ્દો સફળતાપૂર્વક સભાળી શકે છે, ત્યારે બીજી બાજુથી મારી અહીં બેઠેલી બહેનોમાથી મોટા ભાગની બહેનોને એક ગામથી બીજે ગામ જવુ હોય તો પણ તેમને મૂકવા જનાર એક માણસ સાથે જોઇએ! એવી પણ સ્થિતિ તેઓ ભોગવે છે બહેનો! જરા વિચારો ખરા કે આનુ કારણ શુ? તમોને નથી લાગતુ કે શિક્ષણનો અભાવ એ જ આ સ્થિતિનુ મૂળ છે? શિક્ષણ એ જીવનવિકાસ માટે અનિવાર્ય વસ્તુ છે શિક્ષણથી સ્વશક્તિ વિષેની શ્રદ્ધા પ્રગટે છે સત્યાસત્યને સમજવાની વિવેકશક્તિ શિક્ષણથી જ આવે છે સુષુપ્ત દશામા પડેલી સર્વ માનવીશક્તિઓ શિક્ષણથી જ જાગ્રત થાય છે શિક્ષણથી ઉચ્ચ સસ્કારો ખીલે છે માટે બહેનો જો તમે તમારી અને તમારા બાળ સતાનોની ઉન્નતિ ચાહતા હો તો પ્રથમ પગથિયા તરીકે શિક્ષણને જીવનમા સ્થાન આપજો તમારામાથી જેઓ તદ્દન અભણ હોય તેઓ ગમે તેટલી ઉમ્મરના હોય છતા કુટુબીજનો કે પડોશીની મદદ લઇ અવશ્ય લખતાં-વાચતા શીખે પ્રૌઢ શિક્ષણનો આજે સારો એવો પ્રચાર થઇ રહ્યો છે તેનો લાભ જરૂર લો, અને અહી બેઠેલી દરેક બહેન મનમા,

હજારોની સખ્યામાં 'મહિલા સમેલન'માં હાજર રહેલ બહેનોએ સર્વાનુમતે પસાર કરેલ ઠરાવ:

"આ મહિલા સમેલન સાધુ સમેલનની સફળતા માટે ઊંડો હર્ષ વ્યકત કરે છે અને મુનિ મહારાજો તથા સાધ્વીજીઓ ઉગ્ર વિહાર કરી અત્રે પધાર્યા છે તેમને ભાવભર્યા વદન કરે છે સમગ્ર જૈન જગતમા જ નહિ, પરતુ ભારતના વિવિધ ધર્મગુરુઓ સમક્ષ સ્થા. જૈન સમાજના મુનિરાજોએ એકતાનો જે અપૂર્વ દાખલો બેસાડયો છે તેને માટે સમસ્ત સ્થા જૈન સમાજની બહેનો તેઓશ્રીને હાર્દિક ધન્યવાદ અર્પે છે અને તેમના ત્યાગની પ્રશસા કરે છે

નિર્ણય કરે કે મારી પુત્રીને હુ જરૂર જ આ પ્રકારનુ શિક્ષણ આપીશ

બહેનો ! રૂઢિની ગુલામી હવે તમારે છોડવી જોઈએ વર્ષો પહેલા તે યુગની જરૂરિયાત પ્રમાણે જે રૂઢિઓ પડી હોય તેમા સમય બદલાતા આવશ્યક પરિવર્તન કરવાની ખાસ જરૂર છે દાખલા તરીકે ઘુમટા તાણવાનો રિવાજ આ રિવાજે સ્ત્રીની પ્રગતિના દ્વાર રૂધી નાખ્યા છે ઘુમટાને કારણે બહારના જગત સાથેનો તેનો સબધ લગભગ તૂટી જાય છે ને તેથી તેનુ માનસ અત્યત સાકડુ બની જાય છે આપણે માત્ર જગત્ પર એક કુટુબ પૂરતુ જ કાર્ય કરી મરી જવા માટે જન્મ્યા નથી કુટુબ તરફની આપણી જવાબદારી બરાબર અદા કરવી, પણ આપણા જીવનનુ ક્ષેત્ર માત્ર એટલુ જ ન રાખતા વિશાળ બનાવવાની જરૂર છે સ્ત્રી પોતે એક સ્ત્રી છે એ ખ્યાલ છોડી દઈ પોતે એક વ્યક્તિ છે એમ સમજશે, ત્યારે જ તે ખરી પ્રગતિ સાધી શકશે. સ્ત્રી પણ પુરુષ જેટલી જ મનુષ્ય છે તેને વિકાસની તક મળે તો તે પણ પુરુષના જેટલુ જ કાર્ય કરવાને શક્તિમાન છે, તેના અનેક ઉદાહરણો વર્તમાન દુનિયામા આપણે પ્રત્યક્ષ જોઈએ છીએ

જેના નામથી જૈન શાસન ચાલે છે તે ચરમ તીર્થંકર પ્રભુ મહાવીરે પણ સ્ત્રીને પુરુષસમોવડી ગણીને તીર્થસ્થાપનામા સાધુ સાથે સાધ્વીને અને શ્રાવક સાથે શ્રાવિકાને સ્થાન આપ્યુ છે અન્ય ધર્મના નિયમ પ્રમાણે સ્ત્રીથી વેદોનુ અધ્યયન નહોતુ થઈ શકતુ, પણ જૈન ધર્મે તો તીર્થંકર જેવા મહત્ પદમાથી પણ સ્ત્રીને બાકાત રાખી નથી, એને માટે ૧૯ મા તીર્થંકર શ્રી મલ્લીનાથનુ દૃષ્ટાત મોજુદ છે જાતિવ્યવસ્થા, વર્ણવ્યવસ્થા, વગેરે દરેક બાબતોમા જૈનધર્મ પ્રથમથી જ ઉદાર છે આપણી કોન્ફરન્સ સમગ્ર સ્થાનકવાસી જૈનોનુ પ્રતિનિધિત્વ ધરાવે છે છતા તેમા તેણે સ્ત્રીનુ સ્થાન ગૌણ રાખ્યુ છે પૂ ગાધીજીએ અસહકાર યજ્ઞની શરૂઆત કરતા જ બહેનોને હાકલ કરી સાથ આપવા કહ્યુ અને જગત આશ્ચર્યચકિત નજરે જોઈ રહ્યુ કે ભારતની બહેનોમા શી શક્તિ છે અને તેમણે તે લડત વખતે કેટલુ કામ આપ્યુ હતુ ! આજનુ આ મહિલા સમેલન કોન્ફરન્સના અગ્રણીઓને આ વસ્તુ તરફ લક્ષ દઈ સમાજોન્નતિના કાર્યોમા બહેનોને આગળ કરી તેમનો સાથ લેવાની ખાસ ભલામણ કરે છે.”

એ પછી શ્રી. કમળાબેન બલદોટાએ “આપણા દેશની ૯૯ % સ્ત્રીની સ્થિતિ” એ વિષય પર હૃદયસ્પર્શી વક્તવ્ય કર્યુ હતુ. શ્રી મદનકુવરબેન પારેખ, કુમારી વિમલબેન મુણોત, શ્રી. વસતબેન શાહ તથા મિસિસ શ્રીમલે “આપણી પડદાપ્રથા અને તેનાથી થતા નુકસાનો” પર પોતપોતાના વિચારો જોરદાર રીતે રજૂ કરતા કહ્યુ હતુ કે, પડદાથી સ્ત્રી કે પુરુષ, દેશ કે સમાજ કોઈને કશો લાભ નથી, છતા આજે આપણે તેને પકડીને બેઠા છીએ એ આપણી કેટલી નબળાઈ! વર્તમાનમા પડદો તદ્દન અનાવશ્યક છે. ઘૂમટાથી સ્ત્રીશક્તિનુ રૂધન થાય છે ઘૂમટો તાણવાથી જ મર્યાદા સચવાય છે એ માન્યતા ખોટી છે, માટે દેશકાળને સમજી એ પ્રથાનો સત્વર ત્યાગ કરવો જોઈએ

ત્યાર બાદ શ્રી સુશિલાબેન વોરાએ કહ્યુ કે, સાદડીમા પૂ મુનિરાજોનુ આ સમેલન એ જૈન સમાજમા એક શુભ ચિહ્ન છે. બહેનો ! આપણે પણ આપણા સમાજની ઉન્નતિને માટે પ્રયત્ન કરવો જોઈએ. માત્ર ઘરમા બેસી રહી રસોઈ કરવાથી આપણી ફરજ પૂરી થતી નથી. ઘરની વ્યવસ્થા કરવાની જવાબદારી આપણે બરાબર બજાવવી જોઈએ એમ હુ ચોક્કસપણે માનુ છુ. જેમ પુરૂષોને શિરે કમાવાનો બોજ છે, તેમ સ્ત્રીઓને શિરે ગૃહવ્યવસ્થા અને બાળઉછેરનો બોજ છે આ બોજ તેણે ઉઠાવવો જ જોઈએ, પણ એટલાથી જ સતોષ માનીને બેસી રહેવુ એ બરાબર નથી. આપણે સમાજની ઉન્નતિના દરેક કામમા પુરૂષની સાથે ઊભા રહેવુ જોઈશે આજે સમાજમા આપણુ સ્થાન નહિ જેવુ છે, તેનુ કારણ આપણે બાહ્ય જીવનની જવાબદારીથી અલગ રહીએ છીએ એ જ છે. જેટલી આપણી લાયકાત વધશે તેટલુ આપણુ સ્થાન આગળ આવશે, પણ બહારના જીવનમા કામ કરવા માટે આ ઘૂમટા પદ્ધતિ આપણને આપણા વિકાસમા ખૂબ વિઘ્નરૂપ થઈ પડે છે માટે બહેનોને મારી એક જ વિનતિ છે કે તેમણે થોડીક હિમ્મત કેળવી પોતના કુટુબના માણસોને સમજાવી, તેમનો સહકાર લઈ ઘૂમટો દૂર કરવો જોઈએ આ કામ સારૂ છે. બહેનોની ઉન્નતિમાં મદદરૂપ છે. તે કરવા માટે થોડા જૂનવાણી માનસવાળાની નિદા સહેવી પડશે, પરન્તુ તે સહન કરવાની શક્તિ કેળવીને પણ આપણે ઘૂમટો

ઉપર બોલતા સ્ત્રીજાતિની ઉન્નતિના પ્રથમ સોપાન તરીકે એમણે શિક્ષણને ગણાવ્યુ હતુ એમણે કહ્યુ હતુ કે આંખોવાળો માનવી પણ અંધકારમા વસ્તુને જોઈ શકતો નથી તેમ શિક્ષણ વિના જીવન અને જગતને જોવાની દૃષ્ટિ સાંપડતી નથી કન્યાઓને બને તેટલુ વધારે શિક્ષણ આપી, તેમના જીવનને સુખી કરવાનો અને રાષ્ટ્ર તથા સમાજને ઉપયોગી બનાવવાનો તેમણે ઉપસ્થિત રહેલી બહેનોને અનુરોધ કર્યો હતો

શ્રી પારસદેવીએ કેટલાક દૃષ્ટાંતો દ્વારા સ્ત્રીશક્તિનો પરિચય આપી નારીની ઉન્નતિમા જ સમાજ અને રાષ્ટ્રની ઉન્નતિ સમાયેલી છે એમ કહ્યુ હતુ

શ્રી શાન્તાદેવીએ મહિલા જગતનો સર્વાંગી વિકાસ સાધવા માટે પ્રથમ પડદાનો ત્યાગ, ઊંચા પ્રકારનુ શિક્ષણ, ધાર્મિક સસ્કારો દ્વારા સુસસ્કારોની ખિલાવટ અને આ માટે બાલ્યકાળથી જ માતાપિતાએ રાખવી જોઈતી જવાબદારી ઉપર ભાર મૂકયો હતો

શ્રીભૂરીબેન ગોળવાળાએ કહ્યુ હતુ કે, સ્ત્રી તો માતા છે. માતા જેવી હશે તેવી તેની ભાવિ પ્રજા થશે આજની નાની દેખાતી બાળા આવતી કાલની માતા છે માતા સમર્થ હશે તો બાળક તેજસ્વી અને પરાક્રમી થશે તીર્થંકરો અને ચક્રવર્તીને પણ જન્મ આપનાર માતા જ હતી. માતાની કિંમત સૌથી મોંઘી છે માટે સમાજની, દેશની કે વિશ્વની

સમ્મેલન [illegible] પોતાના વિચાર વ્યક્ત કરવા માગતી બહેનોને તક આપવાની માગણી કરવામાં આવી હતી, પરન્તુ તા ૯-૫-'૫૨ ને દિવસે ૧।। વાગે પૂજ્ય આચાર્યશ્રીના ચાદર ઓઢાડવાની મગળવિધિ સમાપ્ત થતા મોટા ભાગના લોકો પોતપોતાને સ્થાને જવાના હોઈ, બહેનોની એ માગણીનો સ્વીકાર થઈ શક્યો નહોતો, તે માટે સમ્મેલનના યોજક બહેનોને દિલગીરી થઈ હતી.

આ સમ્મેલનમા એટલુ તો ચોક્કસ દેખાઈ આવતુ હતુ કે જાગૃતિનો જુવાળ સર્વત્ર પહોંચી વળ્યો છે ઘૂમટામા મો છુપાવતી બહેનો પણ સ્ટેઈજ પર જ્યારે સ્ત્રી-જાતિની ઉન્નતિ માટેના પોતાના વિચારો જોશભેર પ્રકટ કરતી હતી, ત્યારે જરૂર એમ લાગતુ હતુ કે, મારવાડની ભુમિમા પણ સૈકાઓથી ઘર કરીને બેઠેલા એ ઘૂમટાને હવે અલ્પ સમયમા જ વિદાય લેવી પડશે માત્ર તેર જ વર્ષની એક બાળાએ જે ભાવમય રીતે પોતાના વિચારો દર્શાવ્યા હતા તે જોઈ સભા મુગ્ધ બની હતી ત્યાની સ્ત્રીશક્તિ પણ જાગી ઊઠી છે રૂઢિના કપરા બધનો તેમના માર્ગની આડે આવે છે, છતા જ્યા આત્મશક્તિનુ ભાન થયુ છે, ત્યા માર્ગ ખુલ્લો થતા કેટલો વખત?

ત્યાર બાદ સાધુ સમેલનની કાર્યવાહીને આવકારતો પ્રસ્તાવ સર્વાનુમતે નીચે મુજબ પસાર થયો હતો

"આ મહિલાસમેલન સાધુ સમેલનની સફળતા

માટે ઊડો હર્ષ વ્યક્ત કરી, મુનિમહારાજો તથા સાધ્વીજીઓ ઉગ્ર વિહાર કરી અત્રે પધાર્યા છે તેમને ભાવભર્યા વંદન કરે છે સમગ્ર જૈન જગતમા જ નહિ, પરંતુ ભારતના વિવિધ ધર્મગુરુઓ સમક્ષ સ્થા. જૈન સમાજના મુનિરાજોએ એકતાનો જે અપૂર્વ દાખલો બેસાડ્યો છે તેને માટે સમગ્ર સ્થા જૈન સમાજની બ્હેનો તેઓશ્રીને હાર્દિક ધન્યવાદ અર્પે છે અને તેમના ત્યાગની પ્રશસા કરે છે."

આપણા સમાજમા પતિના મૃત્યુ બાદ કાળી કાચળી અને કાળી સાડી તેની વિધવાને પહેરાવવાની જે પ્રથા છે તેને બદલવાની જરૂર છે અને વિધવા તરફ સમાજે માનભર્યું વર્તન રાખી તેના ભરણપોષણમા મદદ કરવાની, તેને શિક્ષણ આપવાની અને તેના બાલબચ્ચા હોય તો તેને ઠેકાણે પાડવામા સહાય કરવી જોઇએ, એવી માગણી એક બહેન તરફથી આવી હતી

અતમા શ્રી કેસરબેન ઝવેરીને હાથે પ્રમુખશ્રીને સોનેરી હાર અર્પણ કરવામા આવ્યો હતો, ને આવડી જગી સભાનુ સુદર અને વ્યવસ્થિત સચાલન કરવા માટે શ્રી કેસરબેન ઝવેરીએ પ્રમુખશ્રીનો, મારવાડની ભૂમિનો બપોરના ત્રણ વાગ્યાનો ધીખતો તાપ વેઠીને ૩ હજારથી પણ વધારે સખ્યામા હાજર રહી લાબા સમય સુધી શાન્તિપૂર્વક જુદા જુદા વકતા બહેનોને સાભળવા માટે ઉપસ્થિત રહેલ બહેનોનો, સ્વયસેવકોની મદદ આપવા માટે સાદડી મુકામની સ્વાગત સમિતિનો, પેન્ડાલ, લાઉડસ્પીકર વગેરેની સગવડ આપવા માટે અ ભા. શ્વે સ્થા જૈન કોન્ફરન્સનો, સમેલનની ફિલ્મ લેવાની જહેમત ઉઠાવવા માટે શ્રી કિશોરભાઇ તથા શ્રી સુરેન્દ્રભાઇનો આભાર માન્યો હતો

એ પછી પ્રમુખશ્રી તારાબહેન બાહિયાએ કોન્ફરન્સ તરફથી ચાલતા 'શ્રી કેળવણી અને વિધવા સહાયક ફડ'મા રૂા ૨,૫૦૦) જેટલી મોટી રકમની ઉદાર સખાવત જાહેર કરી હતી જે તાળીઓના ગડગડાટ સાથે વધાવી લેવામા આવી હતી

છેવટે વદે માતરમ્ ગવાયા બાદ 'જય મહાવીર, જય ભારત'ના મગળ નાદ સાથે સમેલનની સફળ પૂર્ણાહુતિ થઇ હતી

શ્રી અખિલ હિંદ સ્થા. જૈન યુવક સંમેલન

આપણી કોન્ફરન્સના અધિવેશનોની સાથે જ યુવક પરિષદો તેમ જ સમેલનો યોજાય છે, કોન્ફરન્સનુ બારમુ ઐતિહાસિક અધિવેશન સાદડી (મારવાડ) મુકામે યોજવાનુ નક્કી થયુ, ત્યારે યુવક પરિષદ ભરવી કે ન ભરવી? તે જાતની વિચારણા ચાલુ હતી સમય ઘણો જ ઓછો હતો, એટલે આ વખતે અધિવેશનની સાથે સમયની અનુકૂળતા હોય તો યુવક સમેલન યોજવાનુ નક્કી કર્યું હતુ

કોન્ફરન્સના અધિવેશનમા લગભગ ૨૫ થી ૩૦ હજાર ભાઇબહેનોએ ભાગ લીધો હતો તેમા સેકડો નવયુવાનો હતા દેશના ખૂણેખૂણેથી, પ્રાતેપ્રાતેથી પ્રગતિશીલ વિચારના નવયુવાનોએ આ અધિવેશનમા હાજરી આપી હતી

અધિવેશનની [illegible] આગલા દિવસોમા યુવક સમેલન ભરવા માટે વિચારવિનિમય [illegible] છેવટ તા. ૬ ઠ્ઠી મે ને મગળવારના રોજ બપોરના 'દલ બાદલ'ના મડપના યુવક સમેલન ભરવાની જાહેરાત થઇ સવારમા હાજર રહેલા નવયુવાનોની સભા થઇ, પ્રસ્તાવો માટે, યુવક પરિષદના આયોજન માટે અને તેને કાયમી સ્વરૂપ આપવા માટેની યોજનાઓ રજૂ થઇ, છેવટ વધુ પડતા ઠરાવો ન કરવાનુ નક્કી થયુ. આજ સુધીમા જે જે ઠરાવો થયા છે તેને અમલી સ્વરૂપ આપવાનુ વિચારાયુ

કોન્ફરન્સનુ ઐતિહાસિક અધિવેશન જે મહત્ત્વના કામ માટે એકત્ર થયુ હતુ તે 'શ્રી વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રમણ સઘ'ની યોજનાને યુવક સમેલને હાર્દિક ટેકો આપવાનુ નક્કી કર્યું.

બનારસ હિંદુ વિદ્યાપીઠના પ્રાધ્યાપક ઇન્દ્રચન્દ્રજી એમ એ.ના પ્રમુખપદે યુવક સમેલન યોજાયુ હતુ

નીચેના યુવક કાર્યકરોએ આ સમેલનમા ભાગ લીધો હતો શ્રી જવાહરલાલજી મુણોત (અમરાવતી), શ્રી નથમલજી લુકડ (જલગાવ), શ્રી ટેકચદ મહેતા (ભુસાવળ), શ્રી હિમતલાલ ખધાર (મુબઇ), શ્રી બબુભાઇ દોશી (મુબઇ), શ્રી જીવણલાલ મરની (આનદ)

સાદડી સમ્મેલનના સમયનું

એક ભવ્ય દર્શન

માનવજીવન સર્જનની કલ્પના અને રૂપરેખા ... મહામાનવ કલ્પના સર્જનને સુંદર અને તાદૃશ સત્‌સ્વરૂપ આપવાના પ્રયત્નમાં સફળ બને ... માનવીની મહત્તા, તેની ભાવનાની સર્વાંગસ્વરૂપ ગહનતા અને રમણીયતા કોઇ પણ લોકનયનના માર્ગના ... દર્શન આપે છે, ત્યારે વિશ્વના સર્વ પ્રાણીઓમાં માનવીની શ્રેષ્ઠતા પૂરવાર કરવાની એક નાનકડી તક પણ આપે છે બુદ્ધિવાદના આ પ્રખર યુગમાં માનવજીવનમાં એકલપેટાપણું, સ્વાર્થાંધપણું અને સ્વયં સત્યની ક્લિષ્ટતા પ્રગટ થતી જાય છે, તેવે સમયે કોઇ પણ એક સમાજ પોતાની એકતાનું સુંદર દર્શન આપે તે ખરે જ પ્રશંસનીય અને આવકારપાત્ર છે

પ્રખર તાપ મરૂભૂમિનું ઉજ્જડ સ્થાન, ધુળ-માટી ભર્યું ન્હાનકડું ગામ-જ્યાં શહેરની સગવડતા કે રોશનીનો અભાવ હોય તેવા સાદડી સમ્મેલનની સફળતા વિષે અનેક આશંકા પ્રકટે તે સહજ છે "આ સાદડી કોણે પસંદ કર્યું ? સાદડી પસંદ કરવામાં કાર્યકરોએ ભયંકર ભૂલ કરી છે, સાધુ-સમ્મેલન ભરવામાં અત્યંત ઉતાવળ કરવામાં આવી છે, આવા ભર ઉનાળામાં દૂર દૂરના પગપાળા પ્રવાસો કરાવી શું તપસ્વી મુનિરાજોને તમારે મારી નાખવા છે ?" ઇત્યાદિ ઉપાલંભો વચ્ચે ભરાએલ મુનિ સમ્મેલનના સર્વ સંયોગો તો ખરેખર જ બુદ્ધિને ડરમાવી દે તથા કાર્યને ગુંગળાવી નાખે તેવા જ હતા પરંતુ એક

ન્હાના અને મોટા, વિદ્વાન અને તપસ્વી, તેજસ્વી પ્રભાવ અને ... મનોબળવાળા સેંકડો મુનિવરોને એક સાથે, એકત્ર મળી પરસ્પર, ન્હાના મોટાના ભેદભાવો ભૂલી, ભગવાન મહાવીરના મહાન સમોસરણમાં બેઠા હોય તેવો એ પ્રસંગ હતો એ મુનિરાજોના મુખ પર પ્રવાસના થાક પછી પણ ઉત્સાહ, ઉલ્લાસ અને હૃદય પ્રસન્નતાના સ્પષ્ટ ચિન્હો દૃષ્ટિગોચર થતા હતા. જે એકતા અને સમાનતા સાધવા માટે આ સમ્મેલન યોજાયું હતું તે જાણે ત્યાં શરૂ થતા પહેલાં જ આચાર જીવનમાં ઉતાર્યું હોય તેવા સર્વ મુનિરાજોના કપાળો તેજપૂર્ણ દેખાતા હતા વર્તમાન સમયમાં મુનિરાજોએ ઘણું શીખવા જેવું છે, એમ સદા કહેનાર શ્રાવક કાર્યકરોને પણ મુનિરાજોની પ્રથમ દિવસની શિસ્ત તથા કાર્યરીતિથી આનંદ થયો તેઓને લાગ્યું કે જૈનસમાજના ભાગ્યનો સિતારો હજુ આથમ્યો નથી-નહિ તો મુનિરાજોમાં આવી અજોડ શિસ્ત, શાન્તિ અને સમતાના દર્શન થવા દુર્લભ કહેવાય 'એક આચાર્ય'ની સમાચારી શબ્દોથી નહિ પણ આદર્શ દૃષ્ટાંત દ્વારા રચવા બેઠા હોય તેવો ભવ્ય અને ગૌરવપૂર્ણ એ પ્રસંગ હતો કોન્ફરન્સના પ્રમુખ અને મુંબઈ ધારાસભાના અનુભવી સ્પીકર શ્રીમાન કુંદનમલજી ફિરોદિઆ જેવા પીઢ અને પ્રશાન્ત કાર્યકરથી બોલાઇ જવાયું કે 'અમારી ધારાસભાઓના કદી પણ દર્શન ન કરનારા આ મુનિરાજોની સભાનું કાર્ય મોટા

વિદ્વાન, પડિત અને વાચસ્પતિ ધારાસભ્યો પણ નથી ચલાવી શકતા, તેટલી શિસ્ત અને વ્યવસ્થાથી ચાલે છે ” સ્થાનકવાસી જૈન મુનિરાજોના કાર્યને આ શુ ઓછી અજલિ હતી? જે સમાજના મુનિરાજો આવા વિચારશીલ અને શિસ્તબદ્ધ હોય તે સમાજની પ્રગતિ અને એકતા થાય તો તેમા કશુ જ વધુ પડતુ નથી ભગવાન મહાવીર સ્વામીની મગળ કાર્યને સફળ કરવાની પ્રાર્થના જયારે હાજર રહેલા સર્વે મુનિરાજોએ ગાઇ, ત્યારે જે મહાન કાર્ય માટે મુનિરાજો લાબા અને ઉગ્ર પ્રવાસ કરી આવેલ હતા તેની સફળતાનો પડઘો પડતો હતો, મુનિરાજોની કાર્યપ્રણાલી વિષે, તેમના મમત્વની ઉગ્રતા વિષે, તેમની વચ્ચેના અગણીત નાના નાના મતભેદોની પૂર્વ સમાલોચનાનો ઇતિહાસ કઇક જુદી જ ઝાખીની અપેક્ષા કરાવતો હતો, જયારે વાસ્તવમા જે સપ, સ્નેહ અને કાર્ય પ્રતિની નિષ્ઠાના દર્શન થાય તે ખરે જ આવકારદાયી અને અભિનદનીય જ હતા

અરે! સૌભાગ્યની પરમ માત્રા તો જુઓ!! જે મુનિરાજો કોઇપણ સયોગો વચ્ચે વૈશાખ સુદ ત્રીજને દિવસે–એટલે કે સાધુ સમ્મેલનને શુભ દિવસે સાદડી સ્થાને પહોચવાની અપેક્ષા ન હોતી, તેઓ પણ તેજ દિવસે વહેલી શીતળ પ્રભાતે, શાસનદેવના બળ અને શક્તિનો સકેત લઇ, જાણે પવનવેગે આવી પહોચ્યા હતા અને જે ઘડી, સમય અને પળ શુભ-કાર્યની શરૂઆત માટે નિશ્ચિત થયા હતા તેજ સમય ઐક્યના આ મહાન શુભ કાર્યની શરૂઆત થઇ

ઓના વૃદો આવતા હતા. સાદડી જેવુ દૂર દૂરનુ ન્હાનકડુ ગામ, સખત તાપ અને ધુળ, ચોમેર વેગન, અને હજારો લોકો માટે તબુઓની હારકતાર લગાવેલી– તેવા તબુઓમા હજારો નરનારીઓ આવા ઉનાળાના તાપમા રહ્યા તે નાનીસુની હકીકત નથી ગામના પાકા મકાનમા તો માત્ર લગભગ સાતેક હજાર માણસો રહ્યા હશે પણ બાકીના ત્રીસ હજાર સ્ત્રી-પુરૂષો તો કાપડના તબુઓમા રહ્યા હતા જેમા સગવડતાની દૃષ્ટિએ જોઇએ તો કઇ જ ન ગણાય, પરન્તુ જયારે અમે આ સર્વ ભાવિક યાત્રિકોની સુખદુખની તપાસ કરવા જાતે જતા, ત્યારે આ હજારો સ્ત્રી–પુરૂષોના વૃન્દો આનદ અને સ્નેહભર્યા અવાજે કહેતા કે ‘ભાઇજી, અમને સર્વ સગવડ મળે છે, પાણી પણ ચિક્કાર અને ઠડુ મળે છે, આવા મુનિરાજોના દર્શનનો લાભ મળે તેથી વધુ શુ જોઇએ’ ઇત્યાદી શબ્દોથી આનદ વ્યક્ત કરતા હતા શહેરોની સગવડ-તાથી ટેવાએલા, શરીરની વધુ પડતી પાતળી સભાળ લેનાર થોડાક અત્યત શ્રીમન્ત અને માદા માણસો સિવાયના સર્વ કોઇ ભાગે પ્રસન્ન ચિત્તે રહેતા હતા હા’ સાદડી એ ન્હાનુ ગામ હતુ, રેલ્વે સ્ટેશનથી દૂર દૂરનુ સ્થળ હતુ, એટલે સ્વાગત સમિતિ ગમે તેટલા પ્રમાણિક પ્રયત્નો કરે તો પણ બધી સગવડો મળવાની હતી જ નહિ અને તેટલા માટે જ કોન્ફરન્સ ઓફીસે પ્રથમથી જ લોકોને ચેતવણી આપી હતી, પરન્તુ શ્રદ્ધા ભાવિકતા અને સમાજોન્નતિની ભાવનાના બળને આધારે અનેક કઠિનાઇઓ હોવા છતા પણ હજારો લોકો રોજ રોજ આવતા હતા

લે કરે તે માટે મહિલા સમ્મેલન પણ ઉત્સાહી કાર્યકરોએ યોજવાની તક લીધી હતી તથા ચારપાંચ હજાર બહેનોએ આ સમ્મેલનમા ભાગ લઇ કોન્ફરન્સના કાર્યમા પોતાનો સૂર પૂરાવ્યો હતો તેવી જ રીતે યુવકોએ પરસ્પરની નિકટ આવવાની આ તકનો લાભ લઇ યુવક સમ્મેલન પણ યોજ્યુ હતુ તથા વિચારોની આપ-લે કરી હતી

ઉત્સાહ, આશા, કઇક કરવાની મનોવૃત્તિ અને સફળતાના હર્ષનાદો વચ્ચે સાધુ સમ્મેલન તથા યુવક સમ્મેલન પાર પડયા હતા અને હાજર રહેલ હજારો લોકોના હર્ષનાદ વચ્ચે જૈન સમાજનુ ઐતિહાસિક મહાન કાર્ય પાર પડયુ હતુ ભગવાન મહાવીર પછીથી ઉત્તરોત્તર જે ભાગલાની પરિસ્થિતિ જૈન સમાજમા પ્રવર્તતી, તેને સ્થાને જૈન સમાજે એકતાના શુભ પગરણ માડવા શરૂ કર્યા છે એ હકીકત જૈન સમાજ માટે ભારે મહત્ત્વની તથા ગૌરવપૂર્ણ છે સ્થાનકવાસી સમાજે મુનિરાજોની એકતા સાધી સર્વ ફિરકાઓની એકતાના દ્વારો ખુલ્લા મૂકયા છે એમ કહી શકાય ભગવાન મહાવીરની અહિ-સાનો સૂર્ય જૈન સમાજના ઇતિહાસમા આકાશમા ચમકી ઊઠયો છે અને જો સમાજનુ વિચારક બળ મક્કમપણે પણ ધૈર્યપૂર્વક પ્રગતિ પન્થે પોતાની કૂચ ચાલુ રાખશે તો માત્ર જૈન સમાજનુ જ નહિ, કિન્તુ જે વિશાળ રાષ્ટ્રના પોતે અગ છે તેનુ પણ હિત સાધી શકાશે તેમા શકા નથી

जैनम् जयति शासनम् ! એ શુભ ભાવના !

—ચુનીલાલ કામદાર

શ્રાવિકાશ્રમ, ઘાટકોપર (મુંબઈ)

આપણા સમાજની, વિધવા, ત્યક્તા, અનાથ તથા આર્થિક સાધનોના અભાવે જેનો વિકાસ રૂંધાઇ ગયો હોય તેવી બહેનોને સર્વપ્રકારે સહાય મળી શકશે શ્રાવિકાશ્રમમ દાખલ થવા ઇચ્છા રાખતી બહેનેએ નિચેના સરનામેથી ફોર્મ મગાવી નાગરિક ભરી મોકલવા વિનતિ છે જગાઓ પરિમિત છે, માટે ત્વરાએ લખો —

શ્રી. ટી. જી. શાહ

મત્રી, અભિનદન,

પાયધુની, મુબઇ-૩

જૈન ધર્મના ઉન્નાયકો (બૃહદ્ ગુજરાત)

પૂજ્યશ્રી ધર્મસિંહજી મહારાજનો સંપ્રદાય

(દરિયાપુરી સંપ્રદાય)

પૂજ્યશ્રી ધર્મસિંહજી મહારાજ સં. ૧૬૮૫ માં યતિઓથી જુદા પડયા અને તેમણે શુદ્ધ સાધુધર્મની દીક્ષા લીધી. તેઓ સં. ૧૭૨૮ના આસો સુદ ૪ ના રોજ ૪૩ વર્ષની દીક્ષા પાળી, સ્વર્ગવાસ પામ્યા.

તેમની પાટે તેમના શિષ્ય સોમજી ઋષિ થયા, ત્યાર પછી અનુક્રમે મેઘજીઋષિ દ્વારકાદાસજી, મોરારજી, નાથાજી, જયચંદજી અને મોરારજી ઋષિ થયા.

મોરારજીઋષિના શિષ્ય સુંદરજીને ત્રણ શિષ્યો–નાથાઋષિ, જીવણઋષિ અને પ્રાગજીઋષિ હતા. આ ત્રણે સંતો પ્રભાવિક હતા. સુંદરજીઋષિ, મોરારજીઋષિના જીવનકાળ દરમિયાન ગુજરી ગયા હોવાથી નાથાજીઋષિ તેમની પાટે બિરાજ્યા. નાથાજીઋષિને ચાર શિષ્યો હતા શંકરજી, નાનચંદજી, ભગવાનજી.

નાથાજીઋષિની પાટે તેમના ગુરુભાઇ જીવણજીઋષિ આવ્યા અને તેમની પાટે પ્રાગજીઋષિ આવ્યા.

પ્રાગજી ઋષિ

પ્રાગજીઋષિ, વિરમગામના ભાવસાર રણછોડદાસના પુત્ર હતા. પ્રથમ શ્રી સુંદરજી મહારાજના ઉપદેશથી બોધ પામી શ્રાવકના બાર વ્રતો અંગીકાર કર્યાં. કેટલાક વર્ષ પર્યંત શ્રાવકના વ્રતો પાળ્યા પછી તેઓ દીક્ષા ગ્રહણ કરવા તૈયાર થયા. પરંતુ તેમના માતાપિતાએ આજ્ઞા ન આપી. આથી તેમણે ભિક્ષાચરી કરવા માંડી. એએક માસ આમ કર્યાં પછી માબાપની સંમતિ મેળવી સં. ૧૮૩૦માં વિરમગામ મુકામે ભારે ઠાઠથી તેમણે દીક્ષા લીધી. તેઓ સૂત્રસિદ્ધાંતના અભ્યાસી અને પ્રતાપી સાધુ હતા. તેમને પંદર શિષ્યો હતા.

અમદાવાદથી નજીકના વિસલપુરના શ્રાવકોએ વિનતી કરવાથી તેઓ ત્યાં પધાર્યા. તેમણે પ્રાંતીજ, વીજાપુર, ઇડર, એગાળુ વિગેરે ક્ષેત્રો ખોલી ત્યાં ધર્મનો ખૂબ ફેલાવો કર્યો. તેમના પગમાં દર્દ હોવાને લીધે પચ્ચીસ વર્ષ તેઓએ વીસલપુરમાં સ્થિરવાસ કર્યો.

તેમના સમયમાં અમદાવાદમાં સાધુમાર્ગી સંતો બહુ ઓછા પધારતા. કારણ કે તે સમયે ત્યાં ચૈત્યવાસીઓનું ઘણું જોર હતું. અને તેમના તરફથી ઘણા ઉપદ્રવો થતા. આ પરિસ્થિતિ સુધારવા માટે પ્રાગજીઋષિ અમદાવાદ આવ્યા. અને સારંગપુર તળિયાની પોળમાં ગુલાબચંદ હીરાચંદના મકાનમાં ઊતર્યા.

તેઓશ્રીના ઉપદેશથી અમદાવાદમાં શા. ગિરધર શંકર, પાનાચંદ ઝવેરચંદ, રાયચંદ ઝવેરચંદ, ખીમચંદ ઝવેરચંદ વગેરે શ્રાવકોને શુદ્ધ સાધુમાર્ગી જૈનધર્મની શ્રદ્ધા થઇ. આમ અમદાવાદમાં આ ધર્મનો પ્રચાર કરવાનું શ્રેય શ્રી પ્રાગજીઋષિને છે.

આ શુદ્ધ ધર્મના પ્રચારને લીધે સં. ૧૮૭૮ માં સાધુમાર્ગી પ્રત્યે મંદિરમાર્ગી શ્રાવકોને ઇર્ષ્યા થવા લાગી. છેવટે આ ઝઘડો કોર્ટમાં પહોંચ્યો.

સાધુમાર્ગીઓ તરફથી પૂજ્યશ્રી રૂપચંદજીના શિષ્ય શ્રી જેઠમલજી વિગેરે સાધુઓ તથા સામા પક્ષ તરફથી વીરવિજય વિગેરે મુનિઓ અને શાસ્ત્રીઓ કોર્ટમાં હાજર રહ્યા હતા.

સં. ૧૮૭૮માં માહ વદ ૩ના રોજ આ ખટલાનો ચૂકાદો ન્યાયાધિશ જ્હોન સાહેબે આપ્યો. અને તેમાં સાધુમાર્ગીઓનો વિજય થયો.

આ ઝઘડાના સ્મારકરૂપે સાધુમાર્ગીઓના સરદાર જેઠમલજી મહારાજે "સમકિત સાર" નામનો શાસ્ત્રીય ચર્ચા કરતો ગ્રંથ રચ્યો છે, અને સામા પક્ષે ઉત્તમવિજયે 'ઢુંઢકમત ખંડનરાસ' નામે ૯૭ કડીનો એક રાસ લખ્યો છે, જેમાં સાધુમાર્ગીઓને પેટ ભરીને ગાળો જ દેવામાં આવી છે. આ રાસમાં લખ્યું છે કે

> "જેઠો રીખ આવ્યો રે, કાગળ વાંચી કરી,
> પુસ્તક બહુ લાવ્યો રે, ગાડું એક ભરી."

વિરોધ પક્ષના પ્રતિસ્પર્ધીઓ જ્યારે આમ લખે છે, ત્યારે એ સ્પષ્ટ થાય છે કે તે જમાનામાં જ્યારે મુદ્રણકળાનો વિકાસ થયો નહતો ત્યારે પણ આટલા બધા ગ્રંથો અદાલતમાં રજૂ કરનાર શ્રી જેઠમલજીનું વાચન કેટલું વિશાળ હશે! ખરેખર તેઓ શાસ્ત્રજ્ઞાનના મલ્લ અને જ્યેષ્ટ મલ્લ જ હશે એમ સાધારણ રીતે માનવું જ પડે તેમ છે.

આ પછી સ. ૧૮૯૦મા શ્રી પ્રાગજીઋષિ વિસલપુર મુકામે કાળધર્મ પામ્યા

પ્રાગજીઋષિ પછી તેમની પાટે શ્રી શંકરઋષિ, શ્રી ખુશાલજી, શ્રી હર્ષસિંહજી, શ્રી મોરારજીઋષિ થયા.

ઝવેરઋષિજી

શ્રી મોરારજીઋષિ પછી તેમની પાટે શ્રી ઝવેરઋષિ આવ્યા

તેઓ વિરમગામના દશાશ્રીમાળી વણિક કલ્યાણભાઇના પુત્ર હતા. તેમણે સ. ૧૮૬૧ના માહ સુદ ૫ના તેમના ભાઇ સહિત શ્રી પ્રાગજીઋષિ પાસે દીક્ષા લીધી હતી.

પૂજ્ય પદવી પર આવ્યા પછી તેઓએ જાવજીવ સુધી છઠ છઠના પારણા કર્યા હતા

સ. ૧૯૨૩મા તેઓ વિરમગામ મુકામે કાળધર્મ પામ્યા

શ્રી પૂજાજીસ્વામી

શ્રી ઝવેરઋષિજીની પાટે શ્રી પૂજાજીસ્વામી આવ્યા તેઓ કડીના ભાવસાર હતા તેમણે શાસ્ત્રાભ્યાસ બહુ સારો કર્યો હતો તેઓ બીજા સંઘાડાના સાધુઓને પણ ભણાવતા હતા

તેઓ સ. ૧૯૧૫ના શ્રાવણવદિ ૫ ના રોજ વઢવાણ મુકામે કાળધર્મ પામ્યા.

ત્યાર પછી તેમની પાટે નાના ભગવાનજી મહારાજ આવ્યા. તેઓ સ ૧૯૧૯મા કાળધર્મ પામ્યા

ત્યાર પછી પૂજ્ય શ્રી મુલુકચંદજી મહારાજ ૧૯મી પાટે આવ્યા. તેઓએ તેમના કુટુંબના ચાર જણાની સાથે દીક્ષા લીધી હતી. તેઓ સ ૧૯૨૬ ના જેઠ વદ ૦))ના રોજ સ્વર્ગવાસી થયા

શ્રી હીરાચંદજીસ્વામી

શ્રી મુલુકચંદજી મહારાજની પાટે પૂજ્યશ્રી હીરાચંદજીસ્વામી બેઠા

તેઓ અમદાવાદ નજીકના પારડી ગામના આંજણા કણબી હતા તેમના પિતાશ્રીનુ નામ હીમાજી હતુ તેમણે માત્ર તેર વરસની ઉમરે શ્રી ઝવેરઋષિ પાસે સ ૧૯૧૧ના ફાગણ સુદ ૭ના રોજ દીક્ષા લીધી હતી તેઓ ઘણા વિદ્વાન હતા તેમને તેર શિષ્યો હતા. તેમણે સ. ૧૯૩૯ના આસો સુદ ૧૧ના રોજ વિસલપુર મુકામે કાળ કર્યો

પૂજ્યશ્રી રઘુનાથજી મહારાજ

પૂજ્યશ્રી રઘુનાથજી મહારાજ વિરમગામના ભાવસાર ડાહ્યાભાઇ અને તેમની સહધર્મચારિણી જવલબાઇના પુત્ર થાય તેમનો જન્મ સ. ૧૯૦૪મા થયો હતો તેમણે સ ૧૯૨૦ના માહ સુદ ૧૫ના રોજ પૂજ્યશ્રી મુલુકચંદજીસ્વામી પાસે કલોલમાં દીક્ષા અંગિકાર કરી

પૂજ્યશ્રી હીરાચંદજીના કાળધર્મ પછી પૂજ્યશ્રી રઘુનાથજીને સ ૧૯૪૦ના ફાગણ વદ ૧ ને બુધવારે આચાર્ય પદવી અર્પણ કરવામા આવી

તેઓશ્રી યુગને ઓળખનાર હતા તેમણે સમય પલટાતો જોઇ દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવને અનુરૂપ ધાર્મિક ઉન્નતિ માટે ધારાધોરણો ઘડવા સ ૧૯૬૫મા સાધુ સમેલન મેળવી કેટલાક સુધારાઓ કર્યા તેઓ સ ૧૯૭૨મા કાળધર્મ પામ્યા તેમની પાટે પૂજ્યશ્રી હાથીજી મહારાજ આવ્યા.

પૂજ્યશ્રી હાથીજી મહારાજ

પૂજ્યશ્રી હાથીજી મહારાજ, ચરોતરના પાટીદાર હતા. તેઓ શાસ્ત્રના અભ્યાસી અને લેખક તથા કવિ પણ હતા પ્રકૃતિના ભદ્રિક અને શાત, સરળ સ્વભાવી મહાત્મા હતા તેમના સમય દરમિયાન શ્રી દિવાળીબાઇ મહાસતીજી તથા રૂક્ષ્મણિબાઇ મહાસતીજીએ અમદાવાદમા છીપાપોળના ઉપાશ્રયે સંથારા કર્યા હતા તેઓએ અમદાવાદમા સરસપુર મુકામે સ્વર્ગગમન કર્યું

તેમની પછી ઉત્તમચંદજી મહારાજ પૂજ્ય પદવી પર આવ્યા તેઓ આજીવન બ્રહ્મચર્યપાલક હતા

પૂજ્યશ્રી ઇશ્વરલાલજી મહારાજ

પૂજ્યશ્રી ઉત્તમચંદજી મહારાજ પછી પૂજ્યશ્રી ઇશ્વરલાલજી મહારાજને પૂજ્ય પદવી અર્પણ કરવામા આવી. તેઓશ્રી ચરોતરના પાટીદાર છે શાસ્ત્રોનો ખૂબ ઊંડો અભ્યાસ અને બુદ્ધિ તેમ જ તર્કના ધણી છે આજે લગભગ ૮૮ વર્ષની ઉમરે પણ તેમનામા તેજસ્વી બુદ્ધિ અને અજેય દલીલો જોઇ શકાય છે તેમની અત્યંત વૃદ્ધાવસ્થા અને ગળાના દર્દને કારણે અમદાવાદમા શાહપુરના ઉપાશ્રયે તેઓ કેટલાક વખતથી સ્થિરવાસ કરી રહ્યા છે

શ્રી હર્ષચંદજી મહારાજ

આ સંપ્રદાયમા મુનિશ્રી હર્ષચંદજી એક સમર્થ

શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈન કૉન્ફરન્સના તેરમા અધિવેશનના પ્રમુખ તરીકે જેમની વરણી થઇ છે

શ્રી વનેચંદભાઇ દુર્લભજી ઝવેરી
જયપુર મોર્વી

શ્રી અને સરસ્વતીનો સંગમ

શેઠ શાંતિલાલ મંગળદાસ
અમદાવાદ

સેવા, નિડરતા અને અજોડ પત્રકારિત્વ

સ્વ. શ્રી અમૃતલાલ દલપતભાઇ
શેઠ
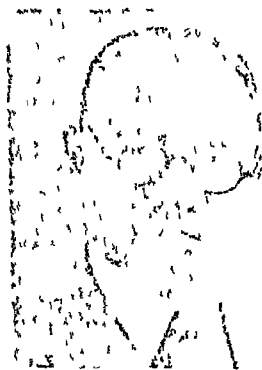
વ્યવસ્થા કરશે, કોન્ફરન્સની સંપૂર્ણ સત્તા જનરલ કમિટી હસ્તક રહેશે,

૨. કાર્યવાહક સમિતિ કોન્ફરન્સના અધિવેશન તેમજ જનરલ કમિટીના પ્રસ્તાવોને આધીન રહીને કોન્ફરન્સની સંપૂર્ણ પ્રવૃત્તિઓ અમલમાં લાવવા માટે યોગ્ય કાર્યવાહી કરશે અને તેને માટે જવાબદાર રહેશે

૩ આ બંધારણ અમલમા મૂકવા અને આ બંધારણમા ઉલ્લેખ થયો ન હોય તેવી સર્વે બાબતો સંબંધે, આ બંધારણથી વિરોધી ન હોય તેવા ધારાધોરણ ઘડવાની અને વખતો વખત પ્રાંતિક અને બીજી સમિતિઓને આદેશ આપવાની અને તેમા વખતો વખત ફેરફાર કરવાની કાર્યવાહક સમિતિની સત્તા રહેશે. કાર્યવાહક સમિતિ, પ્રાંતિક અને બીજી સમિતિઓના કામકાજ ઉપર દેખરેખ અને કાબૂ રાખશે અને તેનો હિસાબ તપાસશે

(૯) સમિતિની બેઠકો

૧ પ્રમુખ અને મંત્રીઓને જરૂર જણાય ત્યારે અથવા કાર્યવાહક સમિતિના સાત સભ્યોની લેખીત માગણીથી, કાર્યવાહક સમિતિની બેઠક અને કાર્યવાહક સમિતિને જરૂર જણાય ત્યારે અથવા જનરલ કમિટીના ૨૫ સભ્યોની લેખિત માગણીથી જનરલ કમિટીની બેઠક બોલાવવામા આવશે,

લેખિત માગણીથી બોલાવવામા આવેલ કાર્યવાહક સમિતિ અને જનરલ કમિટીની બેઠક માટે, તે માગણીઓમા બેઠક બોલાવવાના હેતુઓ સ્પષ્ટપણે દર્શાવેલા હોવા જોઈએ

કાર્યવાહક સમિતિની બેઠક માટે ૭ દિવસ અને જનરલ કમિટીની બેઠક માટે ૧૪ દિવસ પહેલા ખબર આપવી પડશે, પ્રમુખ અને મંત્રીઓને તાત્કાલિક જરૂરીઆત લાગે તો તેથી ટૂંકી મુદતે બેઠક બોલાવી શકશે

૩. જનરલ કમિટીની બેઠક વર્ષમા ઓછામા ઓછી એક વાર, વર્ષ પૂરૂ થયા પછી ત્રણ માસમા બોલાવવી જોઈશે અને તે બેઠકમા બીજા કાર્યો ઉપરાત નીચે મુજબ કામકાજ કરવામા આવશે –

અ. કાર્યવાહક સમિતિની ચુટણી,

બ. કાર્યવાહક સમિતિ એક વર્ષનો પોતાના કામકાજનો અહેવાલ રજુ કરશે,

ક ઓડિટ થયેલ હિસાબ મંજુરી માટે રજુ કરવામા આવશે.

ડ. આગામી સાલનુ બજેટ મંજુરી માટે રજૂ કરવામા આવશે,

૪ અધિવેશન પહેલા ઓછામા ઓછા એક દિવસ અને અધિવેશન બાદ યથાશીઘ્ર જનરલ કમિટીની બેઠક બોલાવવામા આવશે,

(૧૦) અધિવેશન

૧. કાર્યવાહક સમિતિ નક્કી કરે તે સમયે અને સ્થળે કોન્ફરન્સનુ અધિવેશન થશે,

૨ જે સંઘ તરફથી અધિવેશનનુ આમંત્રણ મળે તે સંઘ અધિવેશનના ખર્ચ માટે જવાબદાર રહેશે અને અધિવેશન માટે સઘળો પ્રબંધ કરશે,

કાર્યવાહક સમિતિની દેખરેખ નીચે અને સૂચનાનુસાર આમંત્રણ આપનાર સંઘ સ્વાગત સમિતિની રચના કરશે અને અધિવેશનની સંપૂર્ણ વ્યવસ્થા કરશે,

અધિવેશનનુ ખર્ચ બાદ કરતા, વધારો રહે તેના ૨૫% આમંત્રણ આપનાર સંઘને રહેશે અને બાકીની રકમ કોન્ફરન્સને રહેશે,

અધિવેશન બાદ ત્રણ માસમા સ્વાગત સમિતિએ અધિવેશનનો સંપૂર્ણ હિસાબ કાર્યવાહક સમિતિ પાસે

૬ અધિવેશનની **વિષય વિચારિણી સમિતિની** રચના આ પ્રકારે થશે —

અ જનરલ કમિટીના ઉપસ્થિત સભ્યોના ૨૫%

બ પ્રત્યેક પ્રાંતના પાંચ સભ્ય

ક સ્વાગત સમિતિના સભ્યોમાંથી ૨૫ સભ્ય.

ખ અધિવેશનના પ્રમુખ તરફથી ૫ સભ્ય,

ગ કોન્ફરન્સના વર્તમાન સર્વ અધિકારીઓ

ઘ ભૂતકાળના પ્રમુખો

(૧૧) અધિવેશનના પ્રમુખની સમયમર્યાદા

અધિવેશનના પ્રમુખ ત્યાર બાદ બે વર્ષ સુધી કોન્ફરન્સ તેમજ જનરલ કમિટીના પ્રમુખ રહેશે, બે વર્ષમાં અધિવેશન ન થાય તો ત્યારબાદ મળનારી જનરલ કમિટીની બેઠકમાં બે વર્ષ માટે પ્રમુખની ચૂંટણી થશે

(૧૨) વિશિષ્ટ ફંડ

વિશિષ્ટ ઉદ્દેશ્ય વડે કોન્ફરન્સને મળેલ ફંડોમાંથી કોન્ફરન્સના ખર્ચ માટે કાર્યવાહક સમિતિ નિશ્ચિત કરે તે મુજબ ૧૦% સુધી લેવાનો કોન્ફરન્સને અધિકાર રહેશે,

વિશિષ્ટ ઉદ્દેશ માટે મળેલ ફંડોનો ઉપયોગ તે ઉદ્દેશ માટે નિરૂપયોગી અથવા અશક્ય જણાય તો શ્રી કોન્ફરન્સના બીજા ઉદ્દેશ માટે તે ફંડ અથવા તેની આવકનો ઉપયોગ કરવાની સત્તા જનરલ કમિટીની ખાસ બેઠકને રહેશે

(૧૩) ટ્રસ્ટીઓ

પોતાની પ્રથમ બેઠક વખતે જનરલ કમિટી આજીવન સભ્યો, પેટ્રન અને વાઇસ પેટ્રનોમાંથી પાંચ ટ્રસ્ટીઓની ચૂંટણી કરશે, ત્યાર બાદ દર પાંચ વર્ષે જનરલ કમિટી ટ્રસ્ટીઓની ચૂંટણી કરશે,

ટ્રસ્ટીની કોઈ પણ જગ્યા ખાલી પડે ત્યારે જનરલ કમિટી ચૂંટણી કરશે

(૧૪) કોન્ફરન્સની મિલ્કત

૧ જનરલ કમિટીએ મંજૂર કરેલ બજેટ અનુસાર આવશ્યક રકમ કોન્ફરન્સના મંત્રીઓ પાસે રહેશે, તે ઉપરાંતની કોન્ફરન્સની રોકડ, જામીનગીરીઓ, જરૂરી ખત, દસ્તાવેજો, વગેરે કોન્ફરન્સના ટ્રસ્ટીઓ પાસે રહેશે,

૨ જનરલ કમિટી અથવા કાર્યવાહક સમિતિના પ્રસ્તાવ અનુસાર, ટ્રસ્ટીઓ કોન્ફરન્સના મંત્રીઓને આવશ્યક રકમ આપશે,

(૧૫) સ્થાવર મિલ્કત

કોન્ફરન્સની બધી સ્થાવર મિલ્કત ટ્રસ્ટીઓના નામે રહેશે,

(૧૬) કરાર, વગેરે

કોન્ફરન્સ વતી સ્થાવર મિલકત સાથે સંબંધ ન હોય તેવા ખતપત્રો, લખાણો અને કરારો કોન્ફરન્સના મંત્રીઓના નામે થશે, કોન્ફરન્સને દાવો કરવો પડે તો કોન્ફરન્સના મંત્રીઓના નામે થશે

(૧૭) કાર્યાલય

કોન્ફરન્સનું કાર્યાલય જનરલ કમિટી નક્કી કરે તે સ્થાન પર રહેશે

(૧૮) વહીવટી વર્ષ

કોન્ફરન્સનું વહીવટી વર્ષ તા ૧ જુલાઈથી તા ૩૦ જુન સુધીનું રહેશે

(૧૯) ચૂંટણી અને મતાધિકાર સંબંધી મતભેદ અંગે

ચૂંટણી અથવા મતાધિકાર સંબંધી કોઈ મતભેદ અથવા તકરાર હોય અથવા નિર્ણયની આવશ્યકતા હોય ત્યારે કાર્યવાહક સમિતિનો નિર્ણય છેવટનો ગણાશે.

(૨૦) બંધારણમાં ફેરફાર

આ બંધારણમાં ફેરફાર કરવાની સત્તા જનરલ કમિટીને રહેશે, બેઠકમાં ઉપસ્થિત સભ્યોની ૩/૪ બહુમતિથી બંધારણમાં ફેરફાર થઈ શકશે બંધારણમાં ફેરફારની સ્પષ્ટ વિગત કાર્ય વિવરણ (Agenda) માં દર્શાવવી જોઈશે

(૨૧) મધ્યકાલીન વ્યવસ્થા

૧ આ બંધારણને અમલમાં લાવવા માટે અને તે મુજબ પ્રથમ જનરલ કમિટી અને કાર્યવાહક સમિતિની રચના કરવા માટે જે કંઈ પગલા લેવા પડે તે કરવાની સત્તા આ અધિવેશનના પ્રમુખને આપવામાં આવે છે.

૨ આ બંધારણને અમલમાં લાવવામાં કાંઈ પણ મુશ્કેલી અથવા અસુવિધા માલૂમ પડે તો તે દૂર કરવા માટે યોગ્ય પગલા લેવાની સત્તા આ અધિવેશનના પ્રમુખને રહેશે

૩ આ બંધારણ ચૈત્ર શુદ ૧૩ સં ૨૦૦૬ (ચૈત્રી સં ૨૦૦૭)થી અમલમાં આવશે.

નોંધ —કોઈ કારણસર આ સમય દરમ્યાન, આ બંધારણ અનુસાર સભ્ય બનાવવાનું અને જનરલ કમિટી તેમજ કાર્યવાહક સમિતિની રચના કરવાનું ન બની શકે તો ત્યાં સુધી જુના બંધારણ અનુસાર સભ્યો, જનરલ કમિટી અને કાર્યવાહક સમિતિ ચાલુ રહેશે,

આ સિવાયની બાબતમાં આ બંધારણ અમલમાં આવશે અને આ બધી કલમોમાં બતાવાયેલ સર્વ બાબતનો નિર્ણય આ અધિવેશનના પ્રમુખ કરશે.

શ્રી અખિલ ભારતીય શ્વેતાંબર સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સ સંચાલિત પ્રવૃત્તિઓનો

સંક્ષિપ્ત પરિચય

કોન્ફરન્સ તરફથી પ્રગટ થએલું સાહિત્ય

(૧) અર્ધમાગધી કોષ—આગમ તથા માગધી ભાષામાં આ કોષ પ્રમાણભૂત મનાય છે. શતાવધાની પં. મુનિશ્રી રત્નચંદ્રજી મ. કૃત આ શબ્દકોષ ૫ ભાગમાં પ્રગટ થએલ છે. દરેક ભાગની છૂટક કિંમત રૂા. ૫૦) છે. પાંચેય ભાગના એકી કિંમત રૂા. ૨૫૦) છે.

ઇંગ્લેંડ, ફ્રાન્સ, જર્મની વિગેરે પશ્ચિમના ઘણા દેશોમાં આ કોષ મોકલાવેલ છે અને અત્યારે પણ ત્યાંથી આ કોષ માટે માગણીઓ ચાલુ છે.

(૨) ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર—શ્રી સંતબાલજી કૃત હિન્દીમાં અનુવાદ પૃ. ૪૫૪ કિંમત રૂા. ૨)

(૩) દશવૈકાલિક સૂત્ર—શ્રી સંતબાલજી કૃત હિન્દીમાં અનુવાદ પૃ. ૧૯૦ કિંમત રૂા. ૦ાા

(૪) આચારાંગ સૂત્ર—શ્રી. ગો. જી. પટેલ કૃત છાયાનુવાદ હિન્દીમાં પૃ. ૧૪૪ કિંમત રૂા. ૦ાા

(૫) સૂત્ર કૃતાંગ સૂત્ર—શ્રી ગો. જી. પટેલ કૃત છાયાનુવાદ હિન્દીમાં પૃ. ૧૪૨ કિંમત ૦ાા

(૬) સામાયિક-પ્રતિક્રમણ સૂત્ર—સામાયિક અને પ્રતિક્રમણ સરળ અને શુદ્ધ ભાષામાં અર્થ સહિત પ્રગટ કરેલ છે. ગુજરાતી આવૃત્તિની કિંમત રૂા. ૦-૧૦-૦ પોસ્ટેજ

બાદમાં અને ૧૯૨૫માં મલકાપુરમાં છઠ્ઠું અધિવેશન થયું. પછી કોન્ફરન્સ ઓફિસ મુંબઇમાં આવી. મુંબઇ ઓફિસના પ્રયત્નથી સન ૧૯૨૬માં મુંબઇમાં, ૧૯૨૭માં બીકાનેરમાં, ૧૯૩૩માં અજમેરમાં, ૧૯૪૧માં ઘાટકોપરમાં, ૧૯૪૯માં મદ્રાસમાં, અને ૧૯૫૨માં સાદડીમાં બારમું અધિવેશન કરવામાં આવ્યું. આ અધિવેશન દરેક રીતે પૂર્ણ સફળ થયું. સ્થાનકવાસી જૈન સમાજમાં ક્રાન્તિની ચિનગારી પ્રગટ કરનાર અજમેરનું અધિવેશન હતું. બીજા શબ્દોમાં કહેવામાં આવે તો અજમેરમાં સ્થાનકવાસી જૈન સમાજના અભ્યુદયનું બીજારોપણ થયું કે જે આગળ વધી ઘાટકોપરમાં નવપલ્લવિત થયું. મદ્રાસમાં તેનો પૂરો વિકાસ થયો અને સાદડીમાં તો સમાજે તેના મધુર ફળોનું આસ્વાદન પણ કર્યું.

લગભગ ૨૭ વર્ષ સુધી કોન્ફરન્સની ઓફિસ મુંબઇમાં રહી. ઇ. સ. ૧૯૫૩માં કોન્ફરન્સની જનરલ કમિટીએ ઓફિસ દિલ્હી લઇ જવાનો નિર્ણય કર્યો અને તે પ્રમાણે ફેબ્રુઆરી ૧૯૫૩માં કોન્ફરન્સ ઓફિસ મુંબઇથી દિલ્હી આવી.

દિલ્હી ભારતની રાજધાની હોવાથી અને તટસ્થ જાહેર હોવાથી સર્વત્ર આ નિર્ણયનું સ્વાગત થયું.

કોન્ફરન્સનાં રચનાત્મક કાર્યો

સ્થાન પર પહોંચાડયા આ ફંડમાથી લગભગ (રૂા ૧,૫૦,૦૦) એક લાખ પચાસ હજાર ચોન અને પુનર્વાસના કાર્યમા વપરાયા

બાકીના રૂપિયા સ્વધર્મી સહાયક ફંડમા (અધિવેશનના આદેશાનુસાર) જમા કરવામા આવ્યા, જેમાથી આજે પણ ગરીબ ભાઇ બહેનોને સહાયતા આપવામા આવે છે

આ ફંડમાથી મુખ્યત સ્થાનકવાસી જૈન ભાઇઓ સિવાય શ્વેતામ્બર તથા દિગમ્બર જૈન ભાઇઓને અને જૈનેતર ભાઇઓને પણ કાઇ પણ ભેદભાવ ગણ્યા વિના સહાયતા અપાય છે તે ખાસ ઉલ્લેખનીય વાત છે

વિભાજનના સમયે તો ૫ નહેરૂ, ડૉ. જૈન સથાર શ્રીમતિ જૈન સથાર અને તે વખતના પુનર્વાસ મત્રી શ્રી મોહનલાલ સકસેનાની વિશેષ સૂચનાઓથી પણ ઘણા જૈનેતર ભાઇઓને સહાયતા આપવામા આવી હતી તે વખતે આપણા આ રાષ્ટ્રનેતા કોન્ફરન્સના આ કાર્યથી ઘણા પ્રભાવિત થયા હતા

(૨) શ્રાવિકાશ્રમ ફંડ

સમાજની દુ:ખી અને ગરીબ બહેનોને શિક્ષા આપી તથા હુન્નરઉદ્યોગ શીખવાડી સ્વાવલમ્બી બનાવવા માટે કોન્ફરન્સે શ્રાવિકાશ્રમનો પાયો નાખ્યા હતો તેને માટે સવાલાખ રૂપિયાથી પણ વધારે ફંડ કરવામા આવ્યુ હતુ મુબઇના ઉપનગર ઘાટકોપરમા ૮૫ હજાર રૂપિયામા એક મકાન ખરીદ કરવામા આવ્યુ, પરતુ તે ખાલી કરાવી શકાયુ નહિ તેથી તેની ઉપર એક બીજો નવો માળ લગભગ ૪૫ હજાર રૂપિયાને ખર્ચે બનાવવામા આવ્યો છે

(૩) સઘ ઐક્ય યોજના

કોન્ફરન્સની સ્થાપના થયાને આજે ૪૬ વર્ષ વીતી ચુક્યા છે આ લાબી અવધિમા કોન્ફરન્સે કાઇ પણ અપૂર્વ અને અદ્વિતીય કાર્ય કર્યું હોય તો તે સઘ ઐક્યયોજનાનુ છે આ કાર્ય માત્ર રચનાત્મક જ નહિ પરતુ ક્રાન્તિકારી અને આધ્યાત્મિક ઉન્નતિનુ પોષક પણ કહી શકાય તેમ છે વર્ષોના પ્રયત્નોથી આ યોજના દ્વારા સાદડી (મારવાડ)મા શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રમણ સઘની સ્થાપના થઇ લગભગ બત્રીસમાથી બાવીસ સપ્રદાયોનુ એકીકરણ થયુ સપ્રદાયોના ઉપસ્થિત સાધુઓ પોતપોતાની શાસ્ત્રોક્ત પદવીઓ છોડીને શ્રમણ-સઘમા સમ્મિલિત થયા આપણા સમાજના ઇતિહાસ ક્ષેત્રમા જેમ ખાતના સમ્યાન મિલીનીકરણ થઇ સયુક્ત રાજ્યોની સ્થાપના થઇ, તેવી જ રીતે લગભગ દોઢ હજાર સાધુ સાધ્વીઓનુ એક જ આચાર્યની નેશ્રાયમા સગઠન થયુ, સ્થા જૈન સમાજની આ અજોડ સિદ્ધિ કહી શકાય તેમ છે ગુજરાત, સૌરાષ્ટ્ર અને કચ્છના સપ્રદાયોનુ એકીકરણ થવાનુ હજુ બાકી છે તેને માટે પ્રયત્નો ચાલે છે આ બધા સપ્રદાયો શ્રમણ સઘમા ભળી જશે ત્યારે શ્રમણ સઘ આપણી સ્થા જૈન સમાજની એકતાનુ એક અપૂર્વ પ્રતીક બની જશે

શ્રમણ સઘની પેઠે શ્રાવકોની પણ એકતા થવી જરૂરી છે, કેમકે શ્રાવકોના સગઠન ઉપર જ શ્રમણ સઘનો પાયો અવલમ્બિત છે તેને માટે દરેક જગ્યાએ શ્રાવક સઘોની સ્થાપના કરવાના પ્રયત્નો ચાલુ છે

(૪) ધાર્મિક પાઠ્ય પુસ્તક પ્રકાશન

સમસ્ત ભારતની સ્થાનકવાસી જૈન પાઠશાળાઓમા એક જ પ્રકારનુ ધાર્મિક શિક્ષણ આપવામા આવે તે માટે કોન્ફરન્સે પાઠ્યાવલીના ક્રમશ સાત ભાગો તૈયાર કરાવ્યા છે તેમાથી પાચ ભાગ તો હિદી અને ગુજરાતી બને ભાષામા પ્રગટ થઇ ચૂક્યા છે આ પુસ્તકોની અત્યધિક માગણી થવાથી પહેલા ભાગની સશોધિત તૃતીયાવૃત્તિ અને બીજા ભાગની દ્વિતીયાવૃત્તિ પ્રગટ કરવામા આવી છે. આગળના બાકી બે ભાગો પણ યથાસમય જલ્દી પ્રગટ કરવામા આવશે

જો આ પુસ્તકો મોટી સખ્યામા છપાવવામા આવે અને આર્થિક સહયોગ માટે દાનવીર શ્રીમતોની સહાયતા પ્રાપ્ત થાય તો વિદ્યાર્થીઓને ઓછી કિમતે આ પાઠાવલી ક્રમ મળી શકે તેમ છે અમે ઇચ્છીએ છીએ કે આપણા દાનવીર શ્રીમતો આર્થિક સહયોગ આપે કે જેથી બાળકોના હૃદયમા ધાર્મિક સસ્કારોનુ સિંચન કરવા માટે આ પાઠાવલીનો બહોળો પ્રચાર થઇ શકે.

હિન્દી અને ગુજરાતી પાઠાવલીના પાચ ભાગોની કિમત આ પ્રમાણે છે —

		રૂા. આ. પા
જૈન પાઠાવલી	ભાગ ૧ લો	૦—૬—૦
,,	ભાગ ૨ જો	૦—૧૪—૦
,,	ભાગ ૩ જો	૧—૦—૦
,,	ભાગ ૪ થો	૧—૨—૦
,,	ભાગ ૫ મો	૧-

(૫) આગમ બત્રીસી

સ્થાનકવાસી જૈન સમાજમા એવી કેઈ આગમ બત્રીસી નથી કે જે પ્રમાણભૂત કહી શકાય થોડા વર્ષો પહેલા સ્વ પૂજ્યશ્રી અમોલકઋષિજી મહારાજે ઘણો પરિશ્રમ લઈ એક આગમ બત્રીસી તૈયાર કરી હતી, તેમા ઘણી ત્રુટિઓ રહી જવા પામી છે અને તેની છપાઈ પણ સારી નથી ત્યાર બાદ અન્ય મુનિરાજોએ કેટલાક સૂત્રોનુ સપાદન કર્યું છે અને તે પ્રગટ પણ થયા છે, પરતુ સપૂર્ણ આગમ બત્રીસીની આવશ્યકતા તો હજુ પણ એમ ને એમ ચાલુ રહી છે. આની પૂર્તિ માટે કોન્ફરન્સે સ્થા જૈન સમાજના અગ્રગણ્ય બહુશ્રુત વિદ્વાન મુનિરાજોની અને શાસ્ત્રજ્ઞ શ્રાવકોની એક સમિતિ બનાવી, આગમસપાદનનુ આ મહાન કાર્ય શરૂ કરી દીધુ એકી સાથે સાત વર્ષો સુધી આ કાર્ય ચાલુ રહ્યુ ફલત આજે આગમ બત્રીસીનુ સપાદન કાર્ય પૂરૂ થઇ ગયુ છે આજ સુધીમા તો એક બે સૂત્ર છપાઈને પણ પ્રગટ થઇ ગયા હોત, પરતુ સાદડી અધિવેશનમા એવો નિર્ણય લેવાયો કે આગમ પ્રકાશનનુ કાર્ય શ્રમણ સઘના સાહિત્ય મત્રી–મુનિરાજોને બતાવીને જ કરવામા આવે તેથી આ કાર્યમા વિલબ થઇ રહ્યો છે શ્રમણ સઘના મુનિરાજો પોતાની ગુત્ય ઉકેલવામા પડી ગયા, જેથી આજ સુધી તેઓશ્રી એક પણ સૂત્ર જોઇ શક્યા નથી તેમના જોઇ ન શકવાથી જ પ્રકાશનમા વિલબ થઇ રહેલ છે અમારી ધારણા છે કે હવે આ કાર્યમા વધારે વિલબ થશે નહિ

આગમ પ્રકાશનનુ કાર્ય વિશાળ છે કાર્ય શરૂ કરતેમા જરા વિલબ થયો છે તો ક્ષન્ત્ય સમજશો જોઇએ શ્રમણસઘના સાહિત્ય મત્રી–મુનિરાજોના તપાસ્યા બાદ આ કાર્ય શીઘ્ર શરૂ કરવામા આવશે

હિન્દુસ્તાનમાથી સેકડો અરજીઓ આવે છે, કે જે લગભગ બધી સ્વીકારવામાં આવે છે અને ફડના પ્રમાણમા દરેકને યથાયોગ્ય સહાયતા મોકલવામા આવે છે

પુષ્પાબેન વીરચદ મોહનલાલ વિદ્યોત્તેજક ફડ

આ ફડમાથી મેટ્રીક સુધીના વિદ્યાર્થીઓને દર વર્ષે સ્કુલની ફી અને પુસ્તકો માટે સહાયતા આપવામા આવે છે દરેક પ્રાતના વિદ્યાર્થીઓ આ યોજનાનો લાભ લે છે

શ્રી આર. વી. દુર્લભજી છાત્રવૃત્તિ ફડ

આ ફડમાથી કોલેજોમા અભ્યાસ કરનાર વિદ્યાર્થીઓને દર વર્ષે લગભગ રૂા ૩૦૦૦) સ્કોલરશીપ અપાય છે

સ્વધર્મી સહાયક ફડ

આ ફડમાથી ગરીબ ભાઇ–બહેનોને તાત્કાલિક સહાયતા આપવામા આવે છે

ઉપરોક્ત ફડમાથી સહાય મેળવવા માટે અરજીઓની સખ્યા ઘણી હોય છે, પરતુ ફડોમાં વિશેષ રકમ ન હોવાથી અને આપવામા આવતી રકમ ઘણી થોડી હોવાથી દરેકને વધારે પ્રમાણમા યોગ્ય સહાયતા મોકલી શકાતી નથી કેટલાક ફડો તો લગભગ પૂરા થવા આવ્યા છે, તેથી દાનવીર શ્રીમતોએ ઉદારતા પ્રદર્શિત કરીને આ ફડોની રકમમાં વધારો કરવો જોઇએ જેથી સમાજના દીન દુખી ભાઇ બહેનોને થોડી ઘણી પણ મદદ પહોચતી રહે

પરિસ્થિતિઓથી પરિચિત રહેવા માટે "જૈન પ્રકાશ"ના ગ્રાહક થવુ અત્યાવશ્યક છે

કોન્ફરન્સના સભ્યો

કોઇ પણ સ્થાનકવાસી જૈન ભાઇ કે બહેન, જે ૧૮ વર્ષથી ઉપરના હોય તે કોન્ફરન્સના સભ્ય બની શકે છે પહેલા સભ્ય ફી રૂપિયા ૧૦) જ હતી જેથી દરેક ભાઇ તેના સભ્ય બની શકતા ન હતા પરતુ ત્યાર બાદ મદ્રાસ અધિવેશનમા નવુ બધારણ પાસ કરી સભ્ય ફી રૂા ૧) પણ કરવામા આવેલ છે તેથી દરેક વ્યક્તિ તેના સભ્ય બની શકે છે. કોન્ફરન્સના સભ્યો વધારેમા વધારે સખ્યામા હોય અને તે સ્થાનકવાસી જૈનોની સાચી પ્રતિનિધિ સસ્થા બની શકે તેટલા માટે જ ઉપરોક્ત પરિવર્તન કરવામા આવ્યુ છે

કોન્ફરન્સના સભ્યો જેટલા વધુ બનશે તેટલી કોન્ફરન્સની શક્તિ વધતી જશે તેથી કોન્ફરન્સની શક્તિમા વધારો કરવા માટે, તેની પ્રવૃત્તિઓને વિકસાવવા માટે દરેક ભાઇ બહેનો તેના મેમ્બર બને એવી અમારી વિનતિ છે

કોન્ફરન્સના મેમ્બર નીચે પ્રમાણે બની શકાય છે

રૂા ૫૦૧) એક જ વખતે આપનાર કોન્ફરન્સના 'પ્રથમ શ્રેણીના આજીવન સદસ્ય' ગણાશે

રૂા ૨૫૧) એક જ વખતે આપનાર 'દ્વિતીય શ્રેણીના આજીવન સદસ્ય' ગણાશે.

રૂા ૧૦) વાર્ષિક આપનાર "સહાયક સદસ્ય" બનશે

ઉપરના ત્રણે પ્રકારના સભ્યોને "જૈન પ્રકાશ" કાઇ પણ લવાજમ લીધા વિના મોકલવામા આવે છે

આજીવન સભ્યોને "જૈન પ્રકાશ" જીવન પર્યન્ત મોકલવામા આવશે અને રૂા ૧૦) વાળા સહાયક સભ્યોને તેઓ જ્યા સુધી સભ્ય તરીકે ચાલુ રહેશે ત્યા સુધી મોકલવામા આવશે

રૂા ૧) વાર્ષિક આપનાર "સામાન્ય સભ્ય" ગણાશે આવા સભ્યો "જૈન પ્રકાશ" મગાવવા ઇચ્છતા હોય તો તેમણે રૂા. ૬) લવાજમ વધારે ભરવુ પડશે

શક્તિ અનુસાર દરેક ભાઇ બહેને કોન્ફરન્સના સભ્ય બની સમાજ-સેવાના કાર્યમા પોતાનો સક્રિય સહયોગ દેવો જોઇએ.

પ્રાંતીય શાખાઓ

કોન્ફરન્સના પ્રચાર અને સેવાક્ષેત્રો વધારવા માટે પ્રાતીય શાખાઓ ખોલવાનો નિર્ણય થયો છે, તે પ્રમાણે મુબઇ, મધ્યભારત, મહારાષ્ટ્ર અને રાજસ્થાનમા પ્રાતીય શાખાઓ ખોલવામા આવી છે કલકત્તા (બગાલ, બિહાર, આસામ માટે), મદ્રાસ (મદ્રાસ પ્રાત, મૈસુર, કેરલ માટે), રાજકોટ (કચ્છ, સૌરાષ્ટ્ર, ગુજરાત માટે), અને પજાબ વિગેરેમા પણ પ્રાતીય શાખાઓ ખોલવાના પ્રયત્નો ચાલુ છે

જે પ્રાતોમા પ્રાતીય શાખાઓ ખૂલી નથી ત્યાના આગેવાન ગૃહસ્થોએ પોતપોતાના પ્રાતમા કોન્ફરન્સની પ્રાતીય શાખા ખૂલે એવા પ્રયત્ન કરવા જોઇએ

કોન્ફરન્સની કાર્યવાહક સમિતિ (મેનેજીગ કમિટી)

૧ શેઠ શ્રી ચમ્પાલાલજી બાઠીયા ભીનાસર (બીકાનેર) પ્રમુખ

૨ ડૉ શ્રી દૌલતસિહજી કોઠારી M Sc Ph D દિલ્હી, ઉપપ્રમુખ

૩ શ્રી આનદરાજ સુરાણા M L A ,, માનદમત્રી
૪ ,, ભીખાલાલ ગિરધરલાલ શેઠ ,, ,,
૫ ,, ધીરજલાલ કે તુરખિયા ,, ,,
૬ ,, ઉત્તમચદ જૈન B A LL B ,, ,,
૭ ,, ગિરધારીલાલ જૈન M A ,, ,,
૮ ,, કુદનમલજી ફિરોદિયા B.A, LL B અહમદનગર સદસ્ય
૯ ,, શેઠ મોહનમલજી ચોરડિયા મદ્રાસ ,,
૧૦ ,, ,, અચલસિહજી જૈન આગ્રા ,,
૧૧ ,, વનેચદ દુર્લભજી ઝવેરી જયપુર ,,
૧૨ ,, ચીમનલાલ ચકુભાઇ શાહ M P મુબઇ ,,
૧૩ ,, દુર્લભજી કેશવજી ખેતાણી ,, ,,
૧૪ ,, ચીમનલાલ પોપટલાલ શાહ ,, ,,
૧૫ ,, ગિરધરલાલ દામોદર દફતરી ,, ,,
૧૬ ,, હરજસરાય જૈન B A અમૃતસર ,,
૧૭ ,, જવાહરલાલ મુણોત અમરાવતી ,,
૧૮ ,, નાથુલાલજી સેઠિયા રતલામ ,,
૧૯ ,, કાનમલજી નાહટા જોધપુર ,,
૨૦ ,, દુર્લભજી શામજી વિરાણી રાજકોટ ,,
૨૧ ,, ફુસરાજજી બચ્છાવત કલકત્તા ,,

૨૨ શેઠ રામાનંદજી જૈન B.A LL B દિલ્હી ,,
૨૩ ,, ભિખુરામજી જૈન ,, ,,
૨૪ ,, મનોહરલાલજી જૈન એડવોકેટ દિલ્હી સદસ્ય
૨૫ ,, રતનલાલજી પારખ ,, ,,
૨૬ ,, ગુગનમલજી જૈન ,, ,,
૨૭ ,, નવીનચંદ્ર રામજીભાઇ કામાણી ,, ,,
૨૮ ,, વિલાયતીરામ જૈન ન્યુ દિલ્હી ,,
૨૯ ,, પન્નાલાલજી જૈન (સબ્જીમંડી) દિલ્હી ,,
૩૦ ,, જસવંતસિંહજી જૈન ,, ,,
૩૧ ,, ડૉ. ઇન્દ્રચંદ જૈન M. A. Ph D ,, ,,

જૈન પ્રકાશના ગ્રાહક બનો

વાર્ષિક લવાજમ રૂા ૬) પરદેશમા રૂા ૭)

જૈન પ્રકાશ આપની પાસે નવા સ્વરૂપે આવે છે, આપને સ્ફૂર્તિ તેમજ નવી પ્રેરણા આપનારી વાચન સામગ્રી તેમા મળશે, ભગવાન મહાવીરની વાણી તેમજ પરપરાનુ તેમા યથાર્થ ચિત્ર મળશે, સ્થાનકવાસી સમાજે પોતાની પ્રગતિ માટે જે ક્રાતિ કરી છે, સાપ્રદાયિક સીમાને ત્યાગીને અખડ એકતા પ્રત્યે કદમ ઉઠાવેલુ છે તેનુ સાચુ દિગ્દર્શન કરાવશે તેના ગ્રાહક આપ બનો અને અન્ય મિત્રોને બનાવો, તેમ જ ધર્મ અને સમાજની જાગ્રતિમા સહયોગ આપો

જૈન પ્રકાશમાં જાહેર ખબર આપીને લાભ ઉઠાવો

"જૈન પ્રકાશ" ભારતના એક ખૂણાથી બીજા ખૂણા સુધી પહોંચે છે, કાશ્મીરથી શરૂ કરીને મદ્રાસ સુધી અને સૌરાષ્ટ્ર તેમ જ કચ્છથી બગાળ સુધી 'જૈન પ્રકાશ' વચાય છે

'જૈન પ્રકાશ' ભારતના મુખ્ય વ્યાપારી સમાજનુ મુખપત્ર છે તેમા વિજ્ઞાપન આપીને વ્યાપારની વૃદ્ધિ કરો

નોંધ —'જૈન પ્રકાશ મા અશિષ્ટ જાહેરખબર લેવામા આવતી નથી

વધુ માહિતી માટે નીચેને સ્થળે પત્રવ્યવહાર કરો

વ્યવસ્થાપક. "જૈન પ્રકાશ"
૧૩૯૦. ચાંદની ચોક. દિલ્હી–૬

શ્રી સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ-સંઘ

૧. લીંબડી સંપ્રદાય— (મોટો)—તપસ્વી મહારાજ શ્રી શામજી સ્વામી, કવિવર્ય પૂ મહારાજશ્રી નાનચંદજી સ્વામી

૨. ગોંડળ સંપ્રદાય—પૂ સાહેબશ્રી પુરૂષોત્તમજી સ્વામી

૩. બોટાદ સંપ્રદાય—પૂ. મહારાજશ્રી શિવલાલજી મહારાજ

૪ લીંબડી સમ્પ્રદાય—(નાનો) પૂ મહારાજશ્રી કેશવલાલજી સ્વામી.

બાકી રહેલ બરવાળા સંપ્રદાયની સંમતિ મેળવી લઈશું અને સાયલા સંપ્રદાયનું પ્રતિનિધિત્વ લીંબડી મોટા સંપ્રદાયને મળ્યું છે. સુરેન્દ્રનગરમાં સ્થપાએલ "શ્રી સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘ" ના પ્રવર્તક મુનિરાજોની અહીં હાજરી છે વધારામાં આજે અહીં પૂ. મહારાજ શ્રી કેશવલાલજી સ્વામીને પ્રવર્તક તરીકે સામેલ કરવામાં આવેલ છે એટલે નીચે મુજબ ચાર પ્રવર્તક મુનિરાજોએ આ સંમેલનનું સફળ સંચાલન કરેલ છે

૧—કવિવર્ય પૂ શ્રી નાનચંદજી સ્વામી (લીંબડી સંપ્રદાય)
૨—પૂજ્ય સાહેબ શ્રી પુરૂષોત્તમજી સ્વામી (ગોંડલ સંપ્રદાય)
૩—પૂ મહારાજ શ્રી શીવલાલજી સ્વામી (બોટાદ સંપ્રદાય)
૪—પૂ શ્રી કેશવલાલજી સ્વામી (લીંબડી નાનો સંપ્રદાય)

(૨) સંપ્રદાયોનું અસ્તિત્વ કાયમ રાખી સમીકરણ કરવું સમીકરણ કરવું એટલે સંપ્રદાયમોહ છોડી દઈ પરસ્પર આત્મીયતા કેળવવી

અમો એમ ભારપૂર્વક માનીએ છીએ કે, સંપ્રદાયોનું વિલીનીકરણ સૌથી વિશેષ જરૂરનું છે અને તે થવું જ ઘટે, પરંતુ તેવું વિલીનીકરણ થવા પહેલાં, દરેક સંપ્રદાયના શ્રાવકસંઘનું એકીકરણ અનિવાર્ય છે એવા નિર્ણય ઉપર અમો આવેલ છીએ એટલે કે દરેક સંપ્રદાયના આગેવાન શ્રાવકો પોતપોતાના સંઘને લગતું વહીવટી તંત્ર એક જ સંસ્થાના નામે કરે એમ અમે શ્રીસંઘોને ભલામણ કરીએ છીએ અને તેઓ એવું વહીવટી તંત્ર જ્યાં સુધી ન કરે ત્યાં સુધી અમારો અનુભવ અમોને કહે છે કે સૌરાષ્ટ્રના સાધુ-સમ્પ્રદાયોનું વિલીનીકરણ અમલી બનવું શક્ય નથી હવે જ્યાં સુધી આ રીતે દરેક સંપ્રદાયના શ્રાવકસંઘો પોતાના વહીવટી તંત્રનું એકીકરણ કરીને અમોને ખાતરી ન આપે ત્યાં સુધી અમારા માટે (સાધુ-સંસ્થા માટે) સમીકરણની યોજનાનો અમલ કરવાનો છે

(૧) સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણસંઘના કોઈ પણ સમ્પ્રદાય સાધુ કે સાધ્વીએ ચોથા વ્રતના ખંડન રૂપ મહાન દોષ સેવ્યો છે એવી તે તે સમ્પ્રદાયના શ્રી પ્રવર્તક મુનિરાજને જાણ થાય ત્યાર યોગ્ય તપાસ કરતાં, પોતાના અભિપ્રાયમાં તે સાધુ કે સાધ્વી દોષિત લાગે તો સમ્પ્રદાયના રિવાજ પ્રમાણે જે પ્રાયશ્ચિત્ત આપવું ઘટે તે આપવું અને આપેલ પ્રાયશ્ચિત્ત જો દોષિત સાધુ કે સાધ્વી ન સ્વીકારે તો પ્રવર્તક મુનિરાજે આગેવાન શ્રાવકોની હાજરીમાં એવા દોષિતનો વેષ ઉતરાવી લેવો.

(૨) સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘના કોઈ પણ સમ્પ્રદાયો પોતાના સાધુ કે સાધ્વીને દોષિત તરીકે જાહેર કરેલ હોય, અગર સમ્પ્રદાયમાંથી અલગ કર્યાં હોય અગર કોઈ સાધુ કે સાધ્વી સ્વેચ્છાએ છૂટા થયેલ હોય તો એવા સાધુ કે સાધ્વીને શ્રી ચતુર્વિધ સંઘ પ્રાયશ્ચિત્ત આપવાની શરતે યોગ્ય લાગે તો સમ્પ્રદાયમાં ભેળવવા પ્રયત્ન કરે છતાંય જો એવા દોષિત સાધુ સાધ્વી સમ્પ્રદાયમાં ભળવા ના પાડે, તો તેઓને શ્રી ચતુર્વિધ સંઘે કોઈ પણ પ્રકારની સહાયતા આપવી નહિ

(૩) સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણસંઘના કોઈ પણ સમ્પ્રદાયમાંથી કોઈ પણ સાધુ કે સાધ્વીને ભૂતકાળમાં સમ્પ્રદાય બહાર કરેલ હોય અગર ભવિષ્યમાં સમ્પ્રદાય બહાર કરવામાં આવે તો એવા સાધુ કે સાધ્વીને કોઈ પણ ગામના સંઘે પીઠબળ રૂપે કોઈ પણ જાતનો સહકાર આપવો નહિ છતાં પણ જો કોઈ ગામનો સંઘ કોઈ પણ જાતનું પીઠબળ આપે છે તેવું જણાશે તો તે ગામનો શ્રી સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણસંઘના સાધુ-સાધ્વીજીઓ બહિષ્કાર કરશે એટલે કે તે ગામમાં જવું-આવવું બંધ કરશે.

અપવાદ—જો તે જ ગામમાં કોઈ અશક્ત સાધુ-સાધ્વીજી બિરાજતા હોય તો તેનો આગાર છે

(૪) સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણસંઘના કોઈ પણ સાધુ સાધ્વીજી પ્રત્યે કોઈ પણ ગામનો શ્રાવક-સમૂહ અપમાન-જનક અનુચિત વર્તન કરે અને સમ્પ્રદાયના પ્રવર્તક મુનિરાજ તરફથી તેની જાણ થાય તો જ્યાં સુધી તે ગામના શ્રીસંઘ સાથે સંતોષકારક સમાધાન ન થાય ત્યાં સુધી સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘના કોઈ પણ સાધુ-સાધ્વીજીએ તે ગામમાં ચાતુર્માસ કરવું નહિ

(૫) પરિગ્રહવૃત્તિનો ત્યાગ કરવા ખાતર, સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘના કોઈ સાધુ-સાધ્વીજી પાસે છાપેલ પુસ્તકોનો ભંડાર હોય તો તેમાંથી પોતાને જરૂરના પુસ્તકો રાખી બાકીના, પોતાની મરજી મુજબ કોઈ પણ ગામના શ્રીસંઘને સદુપયોગ માટે અર્પણ કરી દેવા.

(૬) વસ્ત્ર, પાત્ર, ઉપધિ જેની પાસે જે જે હોય તે જ્યાં સુધી ચાલે ત્યાં સુધી નવા લેવા નહિ કોઈ વસ્તુ ન હોય તે જરૂર પડયે લેવી પડે તો જુદી વાત છે પરંતુ સંગ્રહબુદ્ધિથી લેવું નહિ.

(૭) જ્યાં સુધી શ્રી વર્દ્ધમાન શ્રમણ સંઘ તરફથી કોઈ પણ જાતનો નિર્ણય બહાર પડે નહિ ત્યાં સુધી શ્રી સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘના સાધુ-સાધ્વીજીએ ધ્વનિવર્ધક યંત્ર (લાઉડ-સ્પીકર) નો ઉપયોગ કરવો નહિ

(૮) જે સ્થાનમાં કે ઉપાશ્રયમાં સાધુ-સાધ્વીજી બિરાજતા હોય ત્યાં વીજળીની બત્તી કે કોઈ બીજી બત્તીનો ખાસ કારણ સિવાય ઉપયોગ થવા દેવો નહિ.

(૯) સૂર્યાસ્ત પછી, સ્થાનક કે ઉપાશ્રયના કમ્પાઉન્ડમાંથી બહાર જઈ ખાસ અપવાદ સિવાય જાહેર પ્રાર્થના કે પ્રવચન કરવા નહિ

(૧૦) આપણા બત્રીસ સિદ્ધાન્ત પૈકી કોઈ સિદ્ધાન્ત શ્રાવકો છપાવે તો તેમાં સાધુ-સાધ્વીજીના ફોટા ન હોવા જોઈએ

(૧૧) દીક્ષા વખતે સમવસરણમાં સંતનો ખરડો કરવો નહિ આગળ થયો હોય (પર્સ નિમિત્તે) તો તેને રકમની વ્યવસ્થા જો દીક્ષા પોતની ઘરથી આપવાની હોય તે તેના વડીલો પોતાની ઇચ્છા પ્રમાણે તેનો ઉપયોગ કરે અને જો સંઘ તરફથી દીક્ષા આપવાની હોય તો તેની વ્યવસ્થા સંઘ કરે

(૧૨) સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘમાં સકળ મેળ માટે સંપ્રદાયના તમામ સાધુ સાધ્વીઓએ બાર સંભોગ (વ્યવહાર) પૈકી બે સિવાય (૧ આહાર-પાણી તથા ૨ શિષ્ય લેવા-દેવા)

બાકીના દસ સંભોગો પરસ્પર ખુલ્લાં રાખવા—તે દસ સંભોગ નીચે મુજબ છે:—

૧. વસ્ત્ર ઉપધિ પાત્ર લેવું દેવું.
૨. સૂત્ર સિદ્ધાન્તની વાચણી લેવી દેવી
૩. નમસ્કાર કરવા કે ખમાવવું
૪ બહારથી આવ્યે ઊભા થવું
૫. વૈયાવચ્ચ કરવી
૬ એક ઠેકાણે ઉતરવું.
૭ એક આસને બેસવું
૮ સાથે વ્યાખ્યાન આપવું
૯ સાથે સાથે સ્વાધ્યાય કરવો
૧૦. પ્રતિક્રમણ સાથે કરવું.

(૧૩) સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણસંઘના સાધુ–સાધ્વીજીએ પાટ, ગાદી, પગલાં, ફોટા વગેરેની જડ માન્યતા કરવી–કરાવી નહિ તેમ જ પણ લાગતું નહિ. તેમ જ શ્રાવકોને આવી પ્રવૃત્તિ કરતા રોકવાનો બોધ કરવો.

(૧૪) કોઈ ગામ અથવા નગરમાં સાધ્વીજીનું ચાતુર્માસ નિશ્ચિત થાય અને પછી તે ગામ અથવા નગરમાં બિમારીના કારણે મુનિરાજને રોકાવું પડે અથવા ત્યાં સ્થવિર સાધુજી બિરાજતા હોય ત્યારે આર્યાજી પોતે વ્યાખ્યાન વાંચવાની અરજ કરે તો મુનિશ્રીએ આર્યાજીને વ્યાખ્યાન વાંચવાની આજ્ઞા આપવી.

(૧૫) દોરા, તાવીજ, જડી, બુટીનો ઉપયોગ સાધુ–સાધ્વીજીએ કરવો નહિ, તથા જ્યોતિષ, ઔષધાદિ ક્રિયાનો ઉપયોગ ગૃહસ્થ માટે કરવો નહિ, ખાસ કરીને સાધુ જીવનને દૂષણ લાગે તેવા પ્રયોગ ન કરવા.

(૧૬) ક્ષેત્ર-સ્પર્શના પ્રમાણે, અનુકૂલ સમય પ્રવર્તક મુનિરાજોએ ત્રણ ત્રણ વર્ષે ભેગા થવું છતાં પણ કોઈ સંજોગમાં ટૂંકી મુદ્દતમાં ભેગા થવાની મુખ્ય પ્રવર્તક મુનિરાજને જરૂર જણાય ત્યારે તેઓના આદેશ મુજબ ભેગા થવું.

સુધારો

પૃષ્ઠ સાત ઉપર કોલમ પહેલામાં છેલ્લા બે પેરેગ્રાફ—"અહિંસા સત્ય-વગેરે" ભૂલથી છપાયા છે તેને બદલે આ પ્રમાણે વાંચવું—"અહિંસા, સત્ય, અસ્તેય, બ્રહ્મચર્ય, અપરિગ્રહ, તૃષ્ણા-નિવૃત્તિ વગેરે માટે શ્રી બુદ્ધ ઉપદેશ આપતા હતા, કિંતુ તેમની દૃષ્ટિ ભગવાન મહાવીર જેવી ગહન ન હતી.